मत्ती रचित सुसमाचार

का विस्तृत अध्ययन

Dr. John Phillips

JOHN PHILLIPS
MINISTRIES International

mylibrary

EXPLORING

GOSPEL OF MATHEW

Dr. John Phillips

JOHN PHILLIPS MINISTRIES International

myownlibrary

जॉन फिलिप्स बाइबल-टीका श्रृंखला

मत्ती के सुसमाचार की खोज

जॉन फिलिप्स द्वारा

एक व्याख्यात्मक टिप्पणी

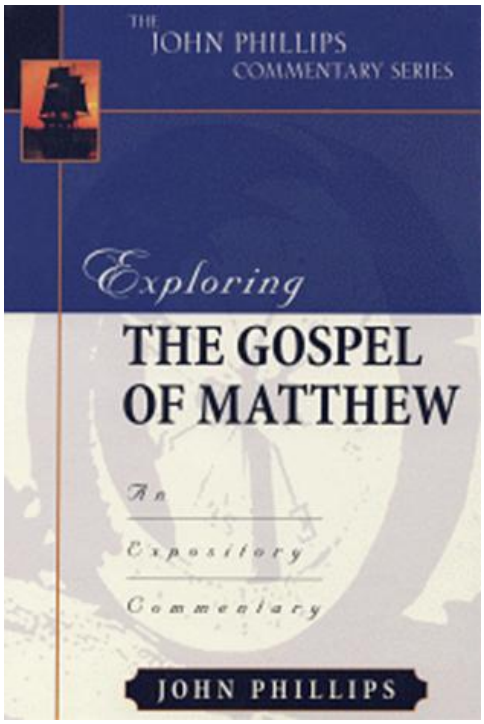

©1999 by John Phillips. Database © 2014 WORD*search*.

मत्ती रचित सुसमाचार की संक्षिप्त रूपरेखा

भाग एक: राजा प्रकट होता है (1:1-9:38)

खंड 1: राजा का व्यक्तित्व (1:1-4:11)

1. राजा की वंशावली (1:1-17)
    1. यीशु मसीह की वंशावली की पुस्तक (1:1)
    2. यीशु मसीह की वंशावली में रक्त-संबंध (1:2-17)
2. राजा का आगमन (1:18-2:23)
    1. मनुष्य (1:18-19)
    2. संदेशवाहक (1:20-23)
    3. विवाह (1:24-25)
    4. ज्योतिषी (2:1-12)
        1. वे क्या ढूँढ रहे थे (2:1-8)
        2. वे क्या लेकर आये (2:9-12)
    5. नरसंहार (2:13-18)
    6. अगला कदम (2:19-23)
3. राजा का राजदूत (3:1-17)
    1. यूहन्ना का आगमन (3:1-12)
    2. यीशु का आगमन (3:13-17)
4. राजा का विरोधी (4:1-11)

खंड 2: राजा का उद्देश्य (4:12-7:29)

1. राजा की विधि को प्रकट किया गया (4:12-25)
    1. राजा का कार्य (4:12-16)
    2. राजा का संदेश (4:17)
    3. राजा के लोग (4:18-22)
    4. राजा की सेवकाई (4:23a-b)
    5. राजा के आश्चर्यकर्म (4:23c-25)
2. राजा का आदेश प्रकट किया गया (5:1-7:29)
    1. चेले और उसकी आशीषें (5:1-16)
    2. चेले और उसके विश्वास (5:17-20)
    3. चेले और उसकी बाइबल (5:21-48)
        1. जीवन को चोट पहुँचाने का प्रश्न (5:21-24)
        2. व्यवस्था को लागू करने का प्रश्न (5:25-26)
        3. अभिलाषा में लिप्त होने का प्रश्न (5:27-32)
        4. अनुचित भाषा का प्रश्न (5:33-37)
        5. अवर्णनीय प्रेम का प्रश्न (5:38-48)

4. चेले और उसका बोझ (6:1-34)
    1. आराधना से जुड़े बोझ (6:1-18)
        1. जीवन के कर्तव्य (6:1-4)
        2. जीवन की भक्ति (6:5-15)
        3. जीवन के अनुशासन (6:16-18)
    2. धन से जुड़े बोझ (6:19-24)
    3. चिंता से जुड़े बोझ (6:25-34)
5. चेले और उसका व्यवहार (7:1-29)
    1. मूर्खता का प्रदर्शन (7:1-5)
    2. पिता की प्रशंसा (7:6-12)
    3. भविष्य की व्याख्या (7:13-14)
    4. धोखाधड़ी का पर्दाफाश (7:15-23)
        1. झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहें (7:15-20)
        2. झूठे पेशे से सावधान रहें (7:21-23)
    5. बुनियाद की जाँच (7:24-29)

खंड 3: राजा की सामर्थ्य (8:1-9:38)

1. निराशा पर सामर्थ्य (8:1-4)
2. दूरी पर अधिकार (8:5-13)
3. बीमारी पर सामर्थ्य (8:14-17)
4. विपत्ति पर अधिकार (8:18-27)
5. दुष्टात्माओं पर सामर्थ्य (8:28-34)
6. कठिनाई पर अधिकार(9.1-8)
7. तिरस्कार पर सामर्थ्य (9:9-17)
    1. सामाजिक तिरस्कार (9:9-13)
    2. आत्मिक तिरस्कार (9:14-17)
8. मृत्यु पर सामर्थ्य (9:18-26)
9. संदेह पर सामर्थ्य (9:27-31)
10. मूर्खता पर सामर्थ्य (9:32-34)
11. अविश्वास पर अधिकार(9:35-38)

भाग दो: राजा का विरोध किया जाता है (10:1-16:12)

खंड 1: प्रतिरोध की भविष्यद्वाणी (10:1-42)

1. सेवा के लिए तैयारी (10:1-15)
    1. स्वामी (10:1)
    2. पुरुष (10:2-4)

3. मिशन (10:5-6)
4. सन्देश (10:7)
5. चमत्कार (10:8)
6. धन (10:9-10)
7. विधि (10:11-15)

2. पीड़ाओं के लिए तैयारी (10:16-42)
    1. प्रेरितों के शत्रु (10:16-25)
    2. प्रेरितों के डर (10:26-39)
    3. प्रेरितों के अनुयायी (10:40-42)

खंड 2: विरोध महसूस किया गया (11:1-30)

1. यूहन्ना की सेवकाई (11:1-15)
2. यीशु की सेवकाई (11:16-30)
    1. दृष्टांत (11:16-19)
    2. अभियोग (11:20-24)
    3. पुकार (11:25-27)
    4. निमंत्रण (11:28-30)

खंड 3: विरोध पर ध्यान केंद्रित (12:1-14:36)

1. फरीसियों की दुष्टता (12:1-50)
    1. सब्त को पुनर्स्थापित करना (12:1-14)
    2. पवित्रशास्त्र की पुष्टि करना (12:15-24)
    3. उपहास करने वालों का खंडन करना (12:25-37)
    4. चिह्न को अस्वीकार करना (12:38-50)
        1. राष्ट्रीय मूर्खता (12:38-45)
        2. नया परिवार (12:46-50)
2. राज्य के रहस्य (13:1-52)
    1. सार्वजनिक रूप से कहे गए दृष्टांत (13:1-35)
        1. भीड़ (13:1-2)
        2. रहस्य (13:3-35)
            1. बीज बोनेवाले का दृष्टांत—उद्धार का संदेश—स्वभावगत पहलू पर जोर (13:3-23)
            2. जंगली पौधों का दृष्टांत—शैतान की दुष्टता—शैतानी पहलू पर जोर (13:24-30)
            3. राई के दाने का दृष्टांत—सर्वोच्चता का मिथक—व्यवस्था के पहलू पर जोर (13:31-32)

4. खमीर का दृष्टांत—विध्वंस का रहस्य—सैद्धांतिक पहलू पर जोर (13:33-35)

2. निजी तौर पर कहे गए दृष्टांत (13:36-52)

1. एक व्याख्या (13:36-43)

2. विस्तार (13:44-52)

1. छिपे हुए धन का दृष्टांत—एक राष्ट्रीय स्थगन—इब्रानी लोग (13:44)

2. बहुमूल्य मोती का दृष्टांत—एक नई सम्पत्ति—स्वर्गीय लोग (13:45-46)

3. बड़े जाल का दृष्टांत—एक आवश्यक प्रक्रिया—अन्यजातीय लोग (13:47-50)

4. बुद्धिमान गृहस्थ का दृष्टांत—एक ज़रूरी समझ (13:51-52)

3. यूहन्ना की हत्या (13:53-14:36)

1. घर और उसके आलोचक (13:53-58)

2. हेरोदेस और उसका विवेक (14:1-12)

3. मनुष्यत्व और उसकी चिंताएँ (14:13-36)

1. मनुष्यजाति के मेज़बानों के प्रति उसकी तरस (14:13-14)

2. मनुष्यजाति की भूख के प्रति उसकी तरस (14:15-21)

3. मनुष्यजाति की असहायता के प्रति उसकी तरस (14:22-33)

4. मनुष्यजाति के दुखों के प्रति उसकी तरस (14:34-36)

खंड 4: विरोध का सामना (15:1-16:12)

1. एक विरोधाभास (15:1-20)
2. एक विपरीतता (15:21-39)
    1. ज़रूरतमंद अन्यजातीय माँ—यीशु ने उसकी कैसे सराहना की (15:21-28)
    2. ज़रूरतमंद अन्यजातीय भीड़—उन्होंने यीशु की कैसे सराहना की (15:29-39)
3. टकराव (16:1-12)

भाग तीन: राजा का तिरस्कार किया गया (16:13-27:66)

खंड 1: उसके तिरस्कार की छाया (16:13-25:46)

1. निजी चर्चा (16:13-20:34)
    1. राज्य के मील के पत्थर (16:13-28)
        1. पतरस और मसीह (16:13-20)
        2. पतरस और क्रूस (16:21-28)
    2. राज्य की अभिव्यक्तियाँ (17:1-23)
        1. दर्शन (17:1-2)
        2. अतिथि (17:3)

3. आवाज़ें (17:4-8)
4. घाटी (17:9-23)

3. राज्य के सदस्य (17:24-18:35)
1. सांसारिक रिश्ते (17:24-27)
2. आत्मिक रिश्ते (18:1-35)
1. विश्वासियों को स्वीकार करना (18:1-11)
2. पीछे हटे हुओं को पुनर्स्थापित करना (18:12-14)
3. भाइयों का मेल-मिलाप (18:15-35)

4. राज्य में विवाह (19:1-15)

5. राज्य में उद्देश्य (19:16-20:16)
1. एक प्रस्ताव (19:16-22)
2. एक समस्या (19:23-30)
3. एक दृष्टान्त (20:1-16)

6. राज्य में सेवकाई (20:17-34)
1. मूल्य प्रकट हुआ (20:17-19)
2. मार्ग प्रकट हुआ (20:20-28)
3. सामर्थ्य प्रकट हुई (20:29-34)

2. सार्वजनिक विवाद (21:1-23:39)

1. संकट (21:1-22)
1. भविष्यद्वाणी की गई विजय का चिह्न (21:1-17)
2. फलरहित पेड़ का चिह्न (21:18-22)

2. कारण (21:23-22:14)
1. ज़िम्मेदारी का दृष्टांत (21:23-32)
2. पलटा लेने का दृष्टान्त (21:33-46)
3. तिरस्कार का दृष्टांत (22:1-14)

3. विषय (22:15-46)
1. योजना बनाई गई (22:15)
2. योजना विकसित की गयी (22:16-45)
1. राजभक्त प्रभु को फँसाने का प्रयास करते हैं (22:16-22)
2. तर्कवादी प्रभु को फँसाने की कोशिश करते हैं (22:23-33)
3. धार्मिक अगुवे प्रभु को फँसाने की कोशिश करते हैं (22:34-45)
3. योजना विफल कर दी गई (22:46)

4. शाप (23:1-39)
1. प्रभु द्वारा यहूदी धर्म को अस्वीकार करना (23:1-36)
1. सम्मान का स्थान (23:1-3)
2. पाखंड का अभ्यास (23:4-36)
1. अगुवों ने क्या चाहा (23:4-12)
2. अगुवों ने क्या सिखाया (23:13-22)
3. अगुवों ने क्या किया (23:23-28)

4. अगुवों ने क्या सोचा (23:29-36)

2. प्रभु द्वारा यरूशलेम का तिरस्कार किया जाना (23:37-39)

3. भविष्यद्वाणी का उपदेश (24:1-25:46)

1. अन्त समय के बारे में प्रभु की धारणा (24:1-3)

2. अंत समय के बारे में प्रभु की भविष्यद्वाणी (24:4-51)

1. संसार के राष्ट्र (24:4-14)

2. इस्राएल राष्ट्र (24:15-31)

3. स्वर्ग के नागरिक (24:32-51)

3. प्रभु के अंत समय के दृष्टांत (25:1-46)

1. इस्राएल राष्ट्र के लिए: कुँवारियों का दृष्टान्त (25:1-13)

2. स्वर्ग के नागरिकों के लिए: तोड़ों का दृष्टान्त (25:14-30)

3. पृथ्वी के राष्ट्रों के लिए: भेड़ों और बकरियों का दृष्टांत (25:31-46)

खंड 2: उसके तिरस्कार का स्वरूप (26:1-27:66)

1. जाल (26:1-5)
2. सत्य (26:6-13)
3. पकड़वानेवाला (26:14-16)
4. मेज़ (26:17-29)
5. आँसू (26:30-46)
6. मुकद्दमें (26:47-27:26)

1. गिरफ़्तारी (26:47-56)

2. अभियोग (26:57-27:26)

1. यहूदियों के धार्मिक अगुवों के सामने (26:57-75)

2. यहूदियों के रोमी शासकों के सामने (27:1-26)

7. पेड़ (27:27-56)
8. कब्र (27:57-66)

भाग चार: राजा का जी उठना (28:1-20)

1. ज्योति फैल उठी (28:1-10)
2. झूठ बिखर गया (28:11-15)
3. प्रभु ने हस्तक्षेप किया (28:16-20)

परिचय

मत्ती का सुसमाचार मसीह को राजा के रूप में प्रस्तुत करता है। यह मुख्य रूप से एक यहूदी द्वारा यहूदी लोगों के लिए लिखा गया था, जो वायदा किए गए मसीहा के आने की बाट जोह रहे थे। यह मसीहा उनके राज्य की पूर्व महिमा को पुनर्स्थापित करेगा, इस्राएल को राष्ट्रों के अगुवे के रूप में ऊंचा करेगा, और "समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा" (भजन 72:8)। यह राजा अन्यजातियों के प्रभुत्व को समाप्त कर देगा, दुनिया को उसके अदन युग के वैभव में बहाल करेगा, और सभी मनुष्य जाति को आशीष प्रदान करेगा। यरूशलेम उसके वैश्विक साम्राज्य की राजधानी और यहोवा की सार्वभौमिक आराधना का केंद्र होगा। पुराने नियम की कई भविष्यवाणियों ने इन मान्यताओं को प्रोत्साहित किया है।

हालाँकि, यहूदियों ने उन भविष्यवाणियों के आत्मिक पहलू को अनदेखा कर दिया। वे मसीह के आने की प्रतिज्ञा से इतने अधिक डूब गए कि वे मसीहा के छुटकारे (उद्धार) के वायदों को पूरी तरह से भूल बैठे। वे एक क्रांतिकारी राजा की अपेक्षा कर रहे थे जो रोमी साम्राज्य की सामर्थ्य को उखाड़ दे और यहूदी धर्म पर आधारित और यरूशलेम में केंद्रित एक नई वैश्विक व्यवस्था का आरंभ करे। लेकिन परमेश्वर ने उनके लिए एक विनम्र राजा को भेजा। यहूदी संप्रभुता चाहते थे; लेकिन परमेश्वर ने उनके लिए एक उद्धारकर्ता को भेजा।

यूहन्ना बपतिस्मादाता की जबरदस्त बेदारी की सेवकाई और यीशु की असाधारण शिक्षा और चमत्कारों द्वारा कई यहूदी हृदयों में मसीह की आशा की लौ ज्वलंत की गई। शुरू में अटकलें लगाई गई कि वादा किया गया राज्य स्थापित होने वाला है, लेकिन जल्द ही उनकी आशा खत्म हो गई। जैसे ही मसीह की सेवकाई के आत्मिक आयाम स्पष्ट हुए, यहूदी उसके विरूद्ध हो गए। वह उस तरह का राजा नहीं था जिसे वे चाहते थे; वह उस तरह का मसीहा भी नहीं था जिसकी वे अपेक्षा कर रहे थे।

मसीह द्वारा अपने ही लोगों से सामना करने वाले विरोध में यही धार्मिक अगुवे सबसे प्रथम पंक्ति में थे, क्योंकि उसने इन अगुवों की लगभग हर बात का खंडन किया था। स्पष्टतः यीशु जैसा राजा उन्हें उनके पद के विशेषाधिकारों में पुष्ट नहीं करने वाला था या उन्हें उनके सपनों के राज्य में प्रभावशाली पदों पर आगे नहीं बढ़ाने वाला था। साधारण लोगों को भी उससे निराशा ही हाथ लगी, खासकर तब जब उसने उसे राजा बनाने के उनके प्रयासों को दृढ़ता से अस्वीकार कर दिया। बरअब्बा जैसा व्यक्ति, एक साहसी विद्रोही, जो रोम की घृणास्पद सामर्थ्य को चुनौती देने के लिए तैयार था, उन्हें अपेक्षाकृत अधिक पसंद आया।

इसलिए, वैधानिकता की आड़ लेकर, यहूदियों ने अपने परमेश्वर द्वारा भेजे गए मसीहा को मार डाला, लेकिन उसने मुर्दों में पड़े रहने से इनकार कर दिया। जल्द ही एक नया आंदोलन पूरे इलाके में फैल गया। यह यरूशलेम में शुरू हुआ, जल्दी ही आस पास के प्रांतों में फैल गया, राष्ट्रीय सीमाओं को पार करके सामरिया में पहुँच गया, और अब यहूदी प्रवासियों पर अपना प्रभाव डाल रहा था और साथ ही अन्यजातीय दुनिया में भी अपनी दृढ़ता को स्थापित कर रहा था। ये दृढ़ता यहूदियों के लिए आश्चर्यजनक और बेहद संदेहास्पद थी।

जिस व्यक्ति ने यहूदियों को यह समझाने का जिम्मा उठाया कि इन सभी घटनाओं का क्या मतलब है, वह मत्ती था, जिसे लेवी भी कहा जाता था। उसके सुसमाचार से पता चलता है कि उसे पुराने नियम का अच्छा ज्ञान था। निस्संदेह वह अरामी और यूनानी दोनों भाषाओं में निपुण था, क्योंकि वह हेरोदेस अन्तिपास के

इलाके में रोमी शासन के लिए चुंगी वसूल करता था। जब मत्ती दमिश्क से भूमध्य सागर की ओर जाने वाले मार्ग पर कफरनहूम के पास अपने चुंगी नाके पर बैठा था, तब यीशु ने उसे उसके चेले के रूप में पीछे चलने को बुलाया। इसके बाद उसने अपने घर में एक भोज रखा और अपने साथी चुंगी-लेने वालों (एक तुच्छ समझी जाने वाली बिरादरी) को अपने स्वामी (गुरु) से मिलाने के लिए आमंत्रित किया।

ऐसा लगता है कि मत्ती ने अपना सुसमाचार 70 ईस्वी में यरूशलेम के पतन से ठीक पहले या उसके तुरंत बाद ही लिखा था। उस समय तक मसीहत दुनिया में अच्छी तरह से स्थापित हो चुकी थी और कई नए नियम की पुस्तकें लिखी जा चुकी थीं। मत्ती के "महाराजा का नगर" (5:35), मंदिर, पवित्र स्थान और संकट के आने के समय आदि के संदर्भ से यरूशलेम के पतन से ठीक पहले की तारीख के पक्ष में इसके अनुमान को अधिक सार्थक बनाते हैं। उस स्थिति में, उसने अपने सुसमाचार को संभवतः फिलिस्तीन में या संभवतः यरूशलेम में ही रहते हुए लिखा था।

चूँकि मत्ती ने मुख्य रूप से यहूदियों को यह विश्वास दिलाने के लिए लिखा था कि यीशु नासरी ही वास्तव में उनके लिए वायदा किया हुआ मसीहा था, इसलिए यह स्वाभाविक है कि उसका सुसमाचार यहूदी पवित्रशास्त्रीय आयतों से भरा हुआ है। 39 पुस्तकों में से 25 से लिए गए 129 पुराने नियम के संदर्भ (53 प्रत्यक्ष हवाले और 76 संकेत) हैं। 129 संदर्भों में से, 89 संदर्भ स्वयं प्रभु द्वारा बोले गए थे (35 उद्धरण और 54 संकेत)। मत्ती ने यहूदी धर्मग्रन्थ के हर हिस्से से अनुच्छेद लिया: व्यवस्था, भविष्यद्वक्ता और लेखनियाँ। कुछ उद्धरण यहूदी लेखों से लिए गए थे, लेकिन अधिकांश सेप्टुआजेंट, अर्थात् पुराने नियम के यूनानी संस्करण से लिए गए थे।

मत्ती का एक उद्देश्य यह दिखाना था कि पुराने नियम की भविष्यद्वाणी यीशु में पूरी हो चुकी थी - कि वही वास्तव में मसीह था। मत्ती की एक पसंदीदा अभिव्यक्ति इस प्रकार थी, "यह इसलिये हुआ, कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो" (21:4)। इस आशय के वचन उसके सुसमाचार में लगभग सोलह बार आते हैं।

प्रभु के एक चेले के रूप में मत्ती, यीशु द्वारा कही गई बातों और किए गए कार्यों के बारे में अपनी यादों के आधार पर काफी हद तक जानकारी प्राप्त करने में सक्षम था। संभवतः उसने उन असाधारण वर्षों के दौरान घटित हुई घटनाओं के बारे में विस्तृत लेख बनाए थे जो उसने प्रभु यीशु की संगति में रहते हुए बिताए थे।

मत्ती के विवरण में लगभग इकतीस ऐसे अनुच्छेद हैं जो उसके सुसमाचार को अद्वितीय बनाते हैं। इनमें प्रभु के बचपन से जुड़ी कुछ घटनाएँ, दस दृष्टांत, दो चमत्कार, नौ उपदेश और प्रभु की मृत्यु, गाड़ना और पुनरुत्थान से जुड़ी छह घटनाएँ शामिल हैं।

मत्ती को कलीसिया में विशेष रुचि थी और केवल वही इसका उल्लेख करने वाला एकमात्र सुसमाचार लेखक था; दो अवसरों पर उसने कलीसिया का प्रत्यक्ष और सार्थक संदर्भ दिया और अन्य अवसरों पर उसने इसका संकेत दिया।

मत्ती की अद्वितीय अभिव्यक्तियों में से एक है "स्वर्ग का राज्य।" यह अनुच्छेद बत्तीस बार दोहराया गया है और राज्य की स्थिति को तब संदर्भित करता है जबकि राजा स्वर्ग में ही है। अन्य सुसमाचारों में पाई जाने वाली आम अभिव्यक्ति "परमेश्वर का राज्य" मत्ती में केवल पाँच बार पाई जाती है।

जैसे-जैसे हम मत्ती के सुसमाचार का विश्लेषण और व्याख्या करते जाएंगे, वैसे वैसे कलीसिया और राज्य के बीच का अंतर अधिक स्पष्ट होता जाएगा। कलीसिया राज्य नहीं है; हालाँकि, कलीसिया राज्य में है। हमें हमेशा वहाँ अंतर करना आना चाहिए जहाँ परमेश्वर अंतर करते हैं।

हालाँकि मत्ती ने मुख्य रूप से यहूदियों के लिए लिखा था, लेकिन उसके सुसमाचार में कोई विशिष्टता नहीं है। उसने कलीसिया को इस्राएल से परे देखा, जो पहले से ही उसके लेखन के समय दुनिया में एक सामर्थ्य के रूप में उभर चुकी थी। उसने देखा कि प्रभु यीशु में विश्वास करने के द्वारा अन्यजातियों को परमेश्वर की आशीष प्राप्त हो रही है।

मत्ती की पुस्तक, जो यहूदी विचारों की संकीर्ण सीमाओं के भीतर शुरू होती है, वह जल्द ही बाहर के लिए खुल जाती है, जब दूसरे अध्याय में पूर्व दिशा से आए बुद्धिमान (ज्योतिषियों)लोगों का परिचय दिया जाता है जो मसीह की आराधना करने वहाँ आए थे। और पुस्तक का समापन प्रभु के महान-आदेश के साथ होता है कि सुसमाचार को पूरी दुनिया में पहुँचाया जाए। जब मत्ती ने इसे लिखा, तो वह इतना लंबा समय जी चुका था कि वह देख सकता था कि परमेश्वर के अनुग्रह का दायरा, महासभा के अदूरदर्शी सीमित उद्देश्यों से कहीं अधिक व्यापक था।

भाग 1: राजा का प्रकट होना

मत्ती 1:1-9:38

खंड 1

राजा का व्यक्तित्व (1:1-4:11)

1. राजा की वंशावली (1:1-17)
    1. यीशु मसीह की वंशावली की पुस्तक (1:1)
        1.राजकीय परिवार (1:1a)
        2. नस्लीय परिवार (1:1b)
    2. यीशु मसीह की वंशावली में रक्त-संबंध (1:2-17)
        1. श्रृंखला (1:2-16)
            1. पहले चौदह

            कुलपिताओं (पूर्वजों) की वंशावली—ईश्वरतन्त्र (1:2-6a)
                1. देश (भूमि) में तीर्थयात्री
                    1. अब्राहम
                    2. इसहाक
                    3. याकूब
                    4. यहूदा और उसके भाई
                    5. फिरिस और जेरह, तामार के जुड़वां बच्चे
                2. भूमि से अलग हुए
                    1. हिस्रोन
                    2. एराम
                    3. अम्मीनादाब
                    4. नहशोन
                3. भूमि के स्वामी (अधिकारी)
                    1. सलमोन
                    2. राहाब से बोअज़
                    3. रूत से ओबेद
                    4. यिशै
                    5. राजा दाऊद

            2. आगे के चौदह

            राजकुमारों की वंशावली—राजतंत्र (1:6b-11)
                1. पहला धर्मत्याग

                सुलैमान की कमज़ोरी के कारण राज्य में धर्मत्याग का प्रवेश

1. बतशेबा का सुलैमान
2. रहबाम
3. अबिय्याह
4. आसा
5. यहोशाफात

2. आगे और अधिक धर्मत्याग

योराम की पत्नी की वजह से राज्य में धर्मत्याग तेज़ हो गया

1. योराम
2. उज्जियाह
3. योताम
4. आहाज
5. हिजकिय्याह

3. घातक धर्मत्याग

मनश्शे की दुष्टता के कारण राज्य में धर्मत्याग लाइलाज है

1. मनश्शे
2. आमोन
3. योशिय्याह

4. अंतिम धर्मत्याग

यकुन्याह और उसके भाई

3. अंतिम चौदह

लोगों की वंशावली—निर्भरता (1:12-16)

1. बाधित वंशावली
    1. यकुन्याह
    2. शालतिएल
    3. जरुब्बाबिल
2. घटती हुई कुलीनता
    1. अबीहूद
    2. इल्याकीम
    3. अजोर
    4. सदोक
    5. अखीम
    6. इलीहुद
    7. इलियाजार
    8. मत्तान
    9. याकूब
3. ईश्वरीय पितृत्व

1. यूसुफ, मरियम का पति
2. यीशु

2. सारांश (1:17)

2. राजा का आगमन (1:18-2:23)

1. पुरुष (1:18-19)

1. यूसुफ की दुविधा (1:18)

1. मरियम से उसकी मंगनी (1:18a)
2. मरियम से यूसुफ का अलगाव (1:18b)

2. यूसुफ का निर्णय (1:19)

1. उसका चरित्र प्रकट हुआ (1:19a)
2. उसकी करुणा प्रकट हुई (1:19b)

2. संदेशवाहक (1:20-23)

1. सब ठीक था (1:20)
2. सब कुछ अद्‌भुत था (1:21-23)

1. संभावना (1:21)

1. पुत्र के विषय में (1:21a)
2. एक उद्धारकर्ता के विषय में (1:21b)

2. भविष्यद्वाणी (1:22-23)

3. विवाह (1:24-25)

1. यूसुफ का कर्तव्य उसकी इच्छा से मेल खाता था (1:24)
2. यूसुफ की इच्छा उसके कर्तव्य के साथ-साथ थी (1:25)

4. ज्योतिषी (2:1-12)

1. वे क्या ढूँढ रहे थे (2:1-8)

1. उनकी खोज (2:1)
2. उनका प्रश्न (2:2)
3. उनकी दुविधा (2:3-8)

1. हेरोदेस की चिंता (2:3)
2. हेरोदेस के सलाहकार (2:4-6)

1. मांग (2:4)
2. विवरण (2:5-6)

3. हेरोदेस की चालाकी (2:7-8)

1. उसने उनकी सहायता कैसे की (2:7)
2. उसने उन्हें क्या आश्वासन दिया (2:8)

2. वे क्या लेकर आये (2:9-12)

1. उन्हें उनके मार्ग पर पुनः निर्देशित किया गया (2:9-10)

1. हेरोदेस की अंतिम कथा (2:9a)

2. स्वर्ग से प्रकाश (2:9b-10)

2. वे अपनी आराधना में निष्ठावान थे (2:11-12)

1. उनका लक्ष्य (2:11a)

2. उनकी भेंटें (2:11b)

1. सोना—मसीह की राजकीय सत्ता और सामर्थ्य के प्रति एक श्रद्धा भेंट

2. लोबान - मसीह के परमेश्वरत्व और पुरोहिताई के प्रति एक श्रद्धा भेंट

3. गन्धरस - मसीह की सेवकाई और जुनून के प्रति एक श्रद्धा भेंट

3. उनका मार्गदर्शन (2:12)

5. नरसंहार (2:13-18)

1. स्वर्ग से चेतावनी (2:13-15)

1. ईश्वरीय चितौनी (2:13-14)

1. सुना गया (2:13)

2. ध्यान दिया गया (2:14)

2. ईश्वरीय भविष्यद्वाणी (2:15)

2. हेरोदेस की दुष्टता (2:16-18)

1. एक शैतानी नीति (2:16)

1. हेरोदेस ने क्या खोजा (2:16a)

2. हेरोदेस ने क्या आदेश दिया (2:16b)

2. एक ईश्वरीय भविष्यद्वाणी (2:17-18)

6. अगला कदम (2:19-23)

1. एक बदलाव (2:19a)

2. एक आदेश (2:19b-20)

3. एक विकल्प (2:21-23)

1. यूसुफ के कदम प्रभु के द्वारा निर्देशित थे (2:21-23a)

2. यूसुफ का रुकना प्रभु द्वारा निर्धारित किया गया (2:23b)

3. राजा का राजदूत (3:1-17)

1. यूहन्ना का आगमन (3:1-12)

1. कालावधि (3:1a)

2. स्थान (3:1b)

3. योजना (3:2)

4. भविष्यद्वक्ता (3:3)

5. व्यक्ति (3:4)

6. लोग (3:5-6)

1. वे कहां से आये (3:5)
2. उन्होंने क्या अंगीकार किया (3:6)

7. उद्घोषणा (3:7-12)
1. इस्राएल के अगुवों का भ्रष्टाचार (3:7-9)
1. उनका विष (3:7)
2. उनकी व्यर्थता (3:8-9)
1. धार्मिक (3:8)
2. नस्लीय (3:9)
2. इस्राएल की भूमि के विजेता (3:10)
3. इस्राएल के प्रभु का आगमन (3:11-12)
1. उसकी सामर्थ्य (3:11a)
2. उसकी सेवकाई (3:11b-12)
1. बपतिस्मा देने की सेवकाई (3:11b)
2. एक ज्वलंत सेवकाई (3:11c-12a)
3. एक आशीष की सेवकाई (3:12b)

2. यीशु का आगमन (3:13-17)
1. उस आगमन के विषय में एक कर्म (3:13-15)
1. यूहन्ना का स्पष्टीकरण (3:13-14)
2. यीशु का स्पष्टीकरण (3:15)
2. एक अनुभव जो उस आगमन की पुष्टि करता है (3:16-17)
1. आत्मा का अभिषेक (3:16)
2. पिता की घोषणा (3:17)

4. राजा का विरोधी (4:1-11)
1. युद्ध की तैयारी (4:1-2)
1. यीशु को कहाँ जाना था (4:1)
2. यीशु को क्या करना था (4:2)
2. युद्ध में विजय प्राप्त करना (4:3-10)
1. परमेश्वर के प्रबन्धन के अनुसार परीक्षा
अपने आप को देखो, तुम्हारे पास भोजन नहीं है! (4:3-4)
1. शैतान ने क्या सुझाव दिया (4:3)
2. पवित्रशास्त्र में क्या कहा गया है (4:4)
2. परमेश्वर की सुरक्षा के वायदे की परीक्षा
अपनी ओर देखो, तुम्हारा कोई नाम नहीं है! (4:5-7)
1. प्रलोभन का स्वरूप (4:5-6)
1. शैतान द्वारा तैयार की गई स्थिति (4:5)
2. शैतान द्वारा प्रस्तुत सुझाव (4:6)

1. स्पष्ट फंदा (4:6a)
2. बाइबल अनुच्छेद (4:6b)

2. प्रलोभन की असफलता (4:7)

3. परमेश्वर की योजना के अनुसार परीक्षा ली गई

अपने आप को देखो - तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है! (4:8-10)

1. सुझाव दिया गया (4:8-9)
    1. मुकुट (4:8-9a)
    2. कीमत (4:9b)
2. सुझाव भी दिया गया (4:10)
    1. प्रभु की इच्छा (4:10a)
    2. अंतिम वचन (4:10b)

3. युद्ध से आगे बढ़ना (4:11)
    1. शत्रु की पकड़ से बाहर निकलो (4:11a)
    2. स्वर्गदूतों का प्रवेश (4:11b)

I. राजा की वंशावली (1:1-17)

क. यीशु मसीह की वंशावली की पुस्तक (1:1)

“अब्राहम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली” यह किसी भी पुस्तक को शुरू करने का कितना ही असामान्य और, हमारे विचार से, अरुचिकर तरीका है! क्या मत्ती को मनोविज्ञान का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था? क्या वह नहीं जानता था कि एक लेखक को अपने पाठकों का ध्यान पहली कुछ पंक्तियों में ही आकर्षित करना होता है? यकीनन वह जानता था और इसीलिए उसने इस तरह से इसकी शुरुआत की।

याद रखें, मत्ती के पाठक मुख्य रूप से यहूदी थे। जब पीलातुस ने यीशु की ओर इशारा करते हुए यहूदी लोगों से कहा, "देखो, तुम्हारा राजा!" तो उन्होंने व्यंग्य और कुटिलता के साथ ऐसा जवाब दिया, जिसका वर्णन लज्जाजनक है, "कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं..." (यूहन्ना 19:14-15)। मत्ती ने अपने श्रोताओं को तुरंत यह कहकर आकर्षित किया, "यह यीशु की वंशावली है। वह तुम्हारा राजा था और तुम्हारा कोई अन्य राजा नहीं होगा। राजकीय वंशावली उसी में आकर समाप्त होता है।"

यहूदी धर्मग्रन्थ में वही किताबें हैं जो हमारे पुराने नियम में मौजूद हैं, लेकिन उन्हें एक अलग क्रम में व्यवस्थित किया गया है - संभवतः मलाकी के अंत में पवित्र लेखनी को शाप के साथ समाप्त होने से बचाने के लिए। यहूदियों ने इतिहास को अंत में रखा, और यह व्यवस्थाक्रम महत्वहीन नहीं है, क्योंकि 1 इतिहास के पहले नौ अध्याय केवल नामों की लंबी सूचियाँ हैं।

जब एज्रा नामक शास्त्री ने अपना इतिहास लिखा, तो उसके मन में एक विशेष श्रोतागण और विशेष उद्देश्य थे। उसने उन अग्रदूतों के लिए लिखा जो बेबीलोन की गुलामी से वापस लौटे थे। वे मसीहा के आने के लिए

वादा किए गए देश में दावा करने आए थे, जिसकी घोषणा भविष्यद्वक्ता जकर्याह ने बहुत जोर देकर की थी, लेकिन इसमें एक बहुत बड़ी समस्या थी। देश अभी भी "अन्यजातियों द्वारा रौंदी जा रहा था; यहूदिया फारसी साम्राज्य में केवल एक छोटा सा प्रांत था। इसके अलावा, वापस लौटकर आए हुए यहूदियों को एक मंदिर बनाने का आदेश था, महल नहीं; एक वेदी स्थापित करने का आदेश था, सिंहासन नहीं। विचारशील लोग पूछ रहे थे, "परमेश्वर द्वारा दाऊद से किए गए वादे का क्या हुआ?" एज्रा ने उन्हें आश्वस्त करने के लिए लिखा कि यद्यपि उनके राष्ट्रीय पापों और उनके राजाओं के व्यभिचार के कारण सिंहासन चला गया था, लेकिन दाऊद का राजवंश अभी भी वहाँ विद्यमान था।

फिर खामोशी की सदियाँ आईं। मलाकी और मत्ती के बीच चार सौ सालों तक परमेश्वर ने अपने लोगों से कुछ भी नहीं कहा। फिर से विचारशील लोग पूछ रहे थे, "अब दाऊद के राजवंश का क्या हुआ?" वे इतिहास को देखते और महसूस करते कि नामों की सूची अधूरी थी। यह वादा कि राजवंश में दाऊद के सिंहासन पर बैठने के लिए कभी भी किसी व्यक्ति की कमी नहीं होगी, उनका मज़ाक उड़ाता हुआ प्रतीत होता था। सुलैमान के द्वारा चले आ रहे राजवंश को यिर्मयाह द्वारा यकुन्याह (जिसे यकोनिय्याह, यकोन्याह और तिरस्कारपूर्वक कोन्याह भी कहा जाता है) के पापों के कारण शापित किया गया था। ऐसा लग रहा था मानो परमेश्वर अपना वादा भूल गया हो।

लेकिन मत्ती की पुस्तक ने यहूदियों को बताया कि राजकीय वंश अभी भी जीवित था - जब तक कि यह यीशु मसीह के व्यक्ति में पूर्ण और स्थायी रूप से समाहित नहीं हो गया।[1] मत्ती को इससे अधिक आकर्षक प्रारंभिक वाक्य नहीं मिल सकता था: "अब्राहम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली [पीढ़ी या वंशज] की पुस्तक।"

ऐसा लगता है कि "यीशु मसीह की वंशावली की पुस्तक" यहूदी अभिलेखों में दिखाई देने वाली यीशु की वंशावली का शीर्षक था। "वंशावली की पुस्तक" अभिव्यक्ति ने यहूदियों को एक और कारण से हृदयचस्पी प्रदान की होगी। पुराने नियम में बारह बार इस रूप में यह अभिव्यक्ति आती है, "ये इनकी वंशावली हैं...," और यह अभिव्यक्ति एक बार इस रूप में आती है, "यह आदम की वंशावली की पुस्तक है।" इसलिए मत्ती 1:1 में की यह अभिव्यक्ति चौदहवें स्थान पर है।[2] यहूदी पाठक, जो बाइबल में संख्यात्मक प्रारूप के महत्व के आदी थे, वे इसके विषय में उत्सुक होने से अपने आप को रोक नहीं पाए।

यहूदियों को आश्चर्य हुआ होगा कि यीशु मसीह के संबंध में "वंशावली" का उपयोग एकवचन में क्यों किया गया है जबकि पूरे पुराने नियम में बहुवचन "वंशावलियाँ" का उपयोग किया गया था। पुराने नियम में परमेश्वर लगातार सब कुछ फिर से शुरू कर रहा था, पहले इस परिवार के साथ और फिर उस परिवार के साथ। उसे बार बार फिर से शुरू करने की आवश्यकता थी क्योंकि वे पुराने पारिवारिक इतिहास अनिवार्य रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी पतन की ओर ही बढ़ते रहे। लेकिन यीशु के आने के साथ एक नई पीढ़ी अस्तित्व में आएगी जो अपने पुत्रों और उत्तराधिकारियों को नए जन्म के नाम से जाने जाने वाले एक नए सिद्धांत के आधार पर नामांकित करेगी। प्रभु ने यूहन्ना 3:3 में नीकुदेमुस के संमुख इस नए सिद्धांत की घोषणा की।

मत्ती 1:1 में "वंशावली" शब्द का महत्व यहूदियों से छिपा नहीं रहा होगा। वे आदम की वंशावलियों की पुस्तक के साथ इसके जुड़ाव को पहचान गए होंगे। अपनी इस पहली पंक्ति में मत्ती दरअसल यहूदी लोगों से इस प्रकार कह रहा था, "यहाँ वह है, जो एक नए परिवार का संघीय मुखिया है।"

"और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे..." (1 कुरिन्थियों 15:22)। आदम गिरे हुए मनुष्यत्व का संघीय मुखिया था; जबकि मसीह छुटकारा पाए हुए मनुष्यत्व का संघीय मुखिया है। "इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया।.... क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।" (रोमियों 5:12,19)। कोई ऐसा भी सोच सकता है कि मत्ती ने रोमियों को लिखी पौलुस की पत्री पढ़ी होगी, जो शायद उसने पढ़ी भी होगी। खैर, हमारे लिए महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अपने नाम आदम की पुस्तक से निकालकर मसीह की पुस्तक में जोड़ें।

दो वाक्यांशों "दाऊद का पुत्र, अब्राहम का पुत्र" का महत्व यहूदियों से भी छिपा नहीं होगा। पहला वाक्यांश मसीह का यहूदी राजकीय परिवार से संबंध को दर्शाता है; दूसरा वाक्यांश यहूदी नस्लीय परिवार से उसके संबंध को दर्शाता है। कोई भी पवित्रशास्त्रीय साक्षर यहूदी संभवतः ऐसे मसीहा पर विचार नहीं कर सकता था जो शुद्ध यहूदी न हो या जो दाऊद तक एक अखंड वंश स्थापित करने में असमर्थ हो।

लेकिन, फिर भी सच्चे मसीहा को अस्वीकार करने के बाद, यहूदियों ने झूठे-मसीहाओं के एक उत्तराधिकार को स्वीकार कर लिया - और वे शानदार लेकिन अंत में खेद पैदा करने वाले धोखेबाज़ निकले।[3] एक दिन यहूदी अंतिम झूठे मसीहा का स्वागत करेंगे और वह उन सभी में सबसे बुरा होगा जो अब तक हुए हैं: अर्थात् स्वयं मसीही-विरोधी (यूहन्ना 5:43)।

ख. यीशु मसीह की वंशावली में रक्त-संबंध (1:2-17)

1. श्रृंखला (1:2-16)

प्रभु यीशु की वास्तविक वंशावली चौदह पीढ़ियों की तीन श्रृंखलाओं में विभाजित है (शायद पवित्रशास्त्र की संरचना में निहित चौदह पीढ़ियों से किसी तरह से संबंधित है)। यह व्यवस्था स्पष्ट रूप से दाऊद के नाम पर आधारित एक स्मृति-सहायक उपकरण (याद रखने में सहायक) है। इब्रानी में, "दाऊद" को DWD लिखा जाता है, जिसमें स्वरों को अनदेखा किया जाता है। चूँकि यहूदी वर्णमाला का प्रत्येक अक्षर एक संख्या का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए "दाऊद" को संख्यात्मक रूप से 4+6+4 (D+W+D) के रूप में व्यक्त किया जाता है; दूसरे शब्दों में, नाम का संख्यात्मक मूल्य चौदह था, जो मत्ती 1 में वर्णित मसीह की वंशावली की संख्यात्मक व्यवस्था का आधार था।

हर कोई जानता है कि प्रभु की वंशावली को चौदह नामों वाले तीन बराबर खंडों में विभाजित करने में कितना तनाव आवश्यक रहा होगा। उदाहरण के लिए, योराम और उज्ज़ियाह के बीच, अहज्याह, योआश और अमस्याह के नाम को जानबूझकर वंशावली से वंचित रखा गया हैं (मत्ती 1:8)। तीनों की मृत्यु हिंसक तरीके से हुई थी। अहज्याह को येहू ने मारा (2 राजाओं 9:27) योआश की हत्या उसके सेवकों ने की (12:20), और अमस्याह को यरूशलेम के लोगों ने मौत के घाट उतार दिया (14:19)। तीनों राजा दुष्ट थे।

तीनों ही योराम और उसकी पत्नी अतल्याह के वंशज थे, जो अहाब और ईज़ेबेल की दुष्ट बेटी थी। अहाब के दामाद के रूप में, योराम अहाब और उसके घराने पर परमेश्वर के शाप से बच नहीं पाया। योराम "अत्यन्त पीड़ित हो कर मर गया" (2 इतिहास 21:19)। बाद में यह अतल्याह ही था जिसने इज़ेबेल द्वारा इस्राएल में

शुरू किए गए भयानक धर्मत्याग को यहूदा में फिर से बहाल किया। मत्ती द्वारा राजा अहज्याह, योआश और अमस्याह को छोड़ देने में हम देखते हैं कि मूर्तिपूजा के कारण परमेश्वर का "न्याय" वस्तुतः "तीसरी और चौथी पीढ़ी तक" जाकर पूरा हुआ (निर्गमन 20:4-5)। उनके नाम व्यवस्था के अनुसार मिटा दिए गए (व्यवस्थाविवरण 29:20)।

इसी तरह योशिय्याह और यकुन्याह के नामों के बीच यहोयाकीम का नाम छोड़ दिया गया है (मत्ती 1:11)। कुछ लोगों का मानना है कि यह चूक नकल करने वालों की गलती थी, क्योंकि यकुन्याह का निंदित नाम दूसरी और तीसरी दोनों सूचियों में इस्तेमाल किया गया था, ताकि प्रत्येक सूची में चौदह नाम हों। सिदकिय्याह का नाम भी छोड़ दिया गया है। वास्तव में योशिय्याह एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में यहूदा का अंतिम राजा था; मगिद्दो की लड़ाई के बाद देश मिस्र के नियंत्रण में आ गया और बाद में यहूदा बेबीलोन के नियंत्रण में आ गया।

2. सारांश (1:17)

मत्ती ने अपनी सूची का समापन एक संक्षिप्त बयान के साथ किया:

अब्राहम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ी हुई और दाऊद से बेबीलोन को बन्दी होकर पहुंचाए जाने तक चौदह पीढ़ी और बन्दी होकर बेबीलोन को पहुंचाए जाने के समय से लेकर मसीह तक चौदह पीढ़ी हुई॥

यह कथन वास्तव में ऐसा नहीं है, परन्तु ईश्वरीय प्रेरणा से इन पीढ़ियों को इस प्रकार दर्ज किया गया था, ताकि पूर्णता को दर्शाया जा सके, अन्यथा अन्य सभी असफल ही थे।

पुराने नियम में गोत्रों की सूची में हम ईश्वरीय चयन की एक समान प्रक्रिया को देख पाते हैं। वास्तव में तेरह गोत्र थे, क्योंकि यूसुफ का प्रतिनिधित्व एप्रैम और मनश्शे द्वारा किया गया था। लेकिन जब भी गोत्रों को सूचीबद्ध किया जाता है, तो उन्हें बारह गोत्रों के रूप में दिखाया जाता है। बाइबल में बारह की संख्या आधिकारिक पूर्णता की गिनती है (उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 21-22 में नए यरूशलेम के वर्णन में बारह की गिनती प्रमुख है); और तेरह विद्रोह और धर्मत्याग की गिनती है। परमेश्वर अपने लोगों को उनकी पूर्णता में देखता हैं, इसलिए वह उन्हें बारह गोत्रों के रूप में सूचीबद्ध करता है; जबकि वास्तव में वे तेरह थे, लेकिन वास्तव में वे विद्रोही और हठी लोग थे।

प्रभु यीशु की वंशावली इस तथ्य को दर्शाती है कि मानवीय विफलताओं के बावजूद, परमेश्वर ने सदियों तक अपनी सिद्ध योजनाओं को पूर्ण किया। उसने कभी भी उस महीन बैंगनी धागे को नहीं छोड़ा। कभी-कभी इसे शाही वस्त्र के कपड़े में बुना जाता था; कभी-कभी इसे बंधुआ दास के टाट में सील दिया जाता था; कभी-कभी यह किसान के ताने के कपड़े में पाया जाता था। लेकिन शाही बैंगनी धागा हमेशा वहाँ मौजूद था।

यीशु की वंशावली में पाँच स्त्रियाँ भी पाई जाती हैं। उनमें से तीन दागदार चरित्र वाली स्त्रियाँ थीं: तामार (मत्ती 1:3); राहाब (1:5); और बतशेबा ("वह जो उरिय्याह की पत्नी थी" 1:6)। तामार एक क्रोधित विधवा थी जिसने यहूदा से अपने अधिकारों को हासिल करने का दृढ़ निश्चय किया, भले ही इसका मतलब यह हो कि स्वयं को और उसको दोनों को खुलेआम शर्मिंदा करना पड़े (उत्पत्ति 38:6-30)। राहाब एक त्यागी हुई स्त्री थी, यरीहो की एक आम वेश्या, लेकिन उसने अब्राहम के समान ही एक महान विश्वास का प्रदर्शन

किया। उसने यहूदा के शाही परिवार में विवाह किया और इब्रानियों 11:31 (अपने विश्वास के लिए) और याकूब 2:25 (अपने कार्यों के लिए) दोनों में सम्मानित दर्जा प्राप्त किया। बतशेबा एक व्यभिचारणी पत्नी थी, लेकिन वह दाऊद की एक विश्वासयोग्य पत्नी बन गई और सुलैमान के लिए उसके सिंहासन को सुरक्षित करने के लिए बड़ी निडरता से कदम उठाए। नासरत का बढ़ई यूसुफ सुलैमान का वंशज था; और मरियम, यीशु की माँ, नातान की वंशज थी, जो दाऊद और बतशेबा का दूसरा जीवित पुत्र था।

यीशु की वंशावली में अन्य दो स्त्रियाँ उत्कृष्ट चरित्र वाली स्त्रियाँ थीं: मोआबिन रूत (मत्ती 1:5) और कुंवारी मरियम (1:16)। रूत एक "भली स्त्री" थी, बाइबल में वर्णित इस तरह की एकमात्र स्त्री थी (रूत 3:11)। उसका चित्र नीतिवचन 31:10-31 (यहूदी वर्णमाला के अक्षरों पर आधारित एक काव्य) में पाया जाता है। मरियम कुंवारी माँ थी जिसे परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस दुनिया में लाने के लिए मानवीय माध्यम के रूप में चुना था।

ध्यान दें कि परमेश्वर ने जानबूझकर अपने पुत्र की वंशावली में किन लोगों को शामिल किया: गहरे रंग के पापी; स्त्रियाँ, जबकि यहूदी राष्ट्रीय जीवन में स्त्रियों को आम तौर पर कुछ भी दर्जा नहीं दिया जाता था (अपनी सुबह की प्रार्थना में एक यहूदी पुरुष आमतौर पर परमेश्वर को धन्यवाद देता था कि उसने उसे अन्यजाति, गुलाम या स्त्री नहीं बनाया); और मूर्तिपूजक जैसे कि कनानी राहाब और मोआबी रूत (दोनों ही परमेश्वर द्वारा शापित जातियों के सदस्य थे)। पहले से ही - नए नियम के पहले पृष्ठ पर ही - पवित्र आत्मा एक नए युग की तैयारी कर रहा था। यहूदी और गैर-यहूदी, पुरुष और स्त्री, पवित्र और पापी - सभी को मसीह में नया दर्जा मिलेगा, जिसकी ओर नामों की यह लंबी सूची ले जाती है।

सूची के अंत में हम बड़ी सावधानी से लिखे गए शब्दों के कथन को पाते हैं, "और याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ; जो मरियम का पति था जिस से यीशु जो मसीह कहलाता है उत्पन्न हुआ" (मत्ती 1:16)। "जिस से" यूनानी *एक्स हेस* का अनुवाद है; चूँकि *एक्स हेस* एक स्त्रीलिंग रूप है, इसलिए यह स्पष्ट रूप से मरियम को संदर्भित करता है। "उत्पन्न हुआ" मुख्यतः यूनानी *गेनाओ* का अनुवाद है। अध्याय में इस बिंदु तक, *गेनाओ* का उपयोग पिता के लिए जन्म देने या उत्पन्न करने के सामान्य अर्थ में किया गया है। यहाँ अचानक शब्द के रूप में परिवर्तन होता है, क्योंकि यह मसीह को दुनिया में लाने के अर्थ में माँ को संदर्भित करता है। इस प्रकार मत्ती ने अपनी प्रारंभिक वंशावली में कुंवारी जन्म के तथ्य और इस बात पर जोर दिया कि यूसुफ यीशु का पिता नहीं था।

जब मत्ती ने यीशु की वंशावली का पता लगाया, तो उसने स्त्रियों के नाम बताए। वह किसी बात की ओर इशारा कर रहा था, लेकिन क्या यहूदी इसे समझ पाएंगे? पवित्रशास्त्र के पहले वादे और भविष्यद्वाणी में एक ऐसे कुटुम्बी-छुड़ानेवाले के आने की भविष्यद्वाणी की गई थी जो स्त्री का वंश होगा (उत्पत्ति 3:15)। अब वह यूसुफ के बेटे के रूप में नहीं, बल्कि स्त्री के वंश के रूप में आया था।

अतः, केवल नामों की सूची देकर, मत्ती ने यहूदियों को इस तथ्य से परिचित कराया कि जिसको उन्होंने मार डाला था वह वास्तव में दाऊद का पुत्र था - प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा, कुंवारी स्त्री से जन्मा वंश, दाऊद के सिंहासन का वास्तविक वारिस।

मत्ती द्वारा दी गई वंशावली दाऊद से लेकर सुलैमान और फिर नासरत के यूसुफ तक जाती है। वह एक राजा हो सकता था; इसके बजाय वह एक गाँव का बढ़ई था, क्योंकि राजा यकुन्याह के सभी वंशजों को ईश्वरीय

निषेधाज्ञा द्वारा सिंहासन से वंचित कर दिया गया था। यूसुफ की सामाजिक स्थिति यिर्मयाह की भविष्यद्वाणी की विश्वसनीयता की मौन पुष्टि थी। जाहिर है कि दाऊद का कोई अन्य पुत्र, जो शापित यकुन्याह का वंशज नहीं था, सिंहासन पर बैठने के लिए अवश्य ही पाया जाना चाहिए था। वह पुत्र यीशु था, मरियम का पुत्र, जो नातान के द्वारा सीधे दाऊद का वंशज था। यूसुफ ने मरियम से विवाह करने के बाद यीशु को अपने कानूनी पुत्र और वैध उत्तराधिकारी के रूप में गोद लिया था। इस प्रकार दोनों वंश एक साथ आए और यीशु मसीह के व्यक्तित्व में हमेशा के लिए समाहित हो गए।[4]

सदियों से चली आ रहे यहूदी राजतंत्र के दौरान, शैतान ने सुलैमान के राज वंश पर भारी आक्रमणों का इस्तेमाल किया ताकि शाही वंश को भ्रष्ट किया जा सके और परमेश्वर को उसे शाप देना पड़े और दाऊद के साथ विश्वासघात करना पड़े। जब हम मत्ती द्वारा दी गई वंशावली पर नज़र डालते हैं, तो हम देख सकते हैं कि शैतान ने अपने काम को कैसे अंजाम देने की कोशिश की।

शैतान द्वारा दाऊद को बदनाम करने का प्रयास विफल हो गया। दाऊद ने बतशेबा के साथ भयानक तरीके से पाप किया, लेकिन परमेश्वर के अनुग्रह और दया की जीत हुई और दाऊद को पुनर्स्थापित कर दिया गया। इसके अलावा, अब विवाहित दाऊद और बतशेबा से जन्मे सुलैमान को परमेश्वर ने दाऊद के सिंहासन का उत्तराधिकारी चुना।

लेकिन सुलैमान अपनी वासना और उदारता से काफी भ्रष्ट हो गया और उसने यरूशलेम को इतना भ्रष्ट कर दिया कि यह शहर परमेश्वर के शहर से ज़्यादा बेबीलोन जैसा दिखने लगा। इस बार शैतान को यकीन था कि परमेश्वर दाऊद के वंश को शाप अवश्य देगा। और वास्तव में न्याय हुआ भी, लेकिन केवल आंशिक रूप से। परमेश्वर के क्रोध की ख़बर के साथ एक भविष्यद्वक्ता को सुलैमान के पास भेजा गया, लेकिन दाऊद के प्रति सम्मान के कारण परमेश्वर का दण्ड सुलैमान की मृत्यु के बाद तक के लिए टाल दिया गया। दाऊद का सिंहासन, जो बहुत कमजोर स्थिति में पहुँच चुका था, फिर भी दाऊद के वंश के लिए सुरक्षित था।

सुलैमान का बेटा रहबाम एक मूर्ख व्यक्ति था। उसके दिनों में और उसकी मूर्खता के परिणामस्वरूप, अब तक रूका हुआ न्याय पारित हुआ। राज्य का बड़ा हिस्सा दाऊद के सिंहासन से अलग कर दिया गया और उत्तर में एक प्रतिद्वंद्वी आकांक्षी व्यक्ति को सौंप दिया गया। हालाँकि, यहूदा और बिन्यामीन के गोत्रों की वफ़ादारी के कारण, राजघराने के एक या दो गोत्रों को रहबाम के लिए बख्श दिया गया। इसके अलावा, उत्तर से कुछ भटके हुए लोग नए उत्तरी राजा द्वारा आरंभ किए गए और समर्थित धर्मत्यागों के विरुद्ध दृढ़ विश्वास और विरोध के कारण दाऊद के राज्य में फिर से बस गए।

रहबाम के बाद हम राज वंश में एक विचित्र प्रारूप को देखते हैं: एक अच्छे राजा के बाद कभी-कभी एक बुरा राजा आता था; एक बुरे राजा के बाद कभी-कभी एक अच्छा राजा आता था; एक अच्छे राजा के बाद कभी-कभी एक अच्छा राजा आता था; एक बुरे राजा के बाद कभी-कभी एक बुरा राजा आता था। दाऊद के सिंहासन का भाग्य आगे-पीछे होता रहा, लेकिन बुरे राजा अधिक बार आए और धर्मत्याग अधिक और अधिक मजबूत होते गए। आसा यहोशाफात, उज्जियाह और योशिय्याह जैसे अच्छे राजाओं के लिए सतही सुधारों से ज़्यादा कुछ भी करना मुश्किल होता चला गया।

कुछ अच्छे राजा खुद भी आधे-अधूरे मन के थे। अहाब और इज़ेबेल के प्रति अपने बढ़ते आकर्षण के शिकार के कारण यहोशाफात ने अपने बेटे यहोराम की शादी उनकी दुष्ट बेटी अतल्याह से करवाने की अनुमति दे दी। इसमें कोई शक नहीं कि शैतान को लगा कि उसने यहीं जीत हासिल कर ली है। यहोराम की मृत्यु के बाद, अतल्याह ने सिंहासन के हर संभावित दावेदार का कत्लेआम करवा दिया, जिस पर वह अपना हाथ रख सकती थी। वह राजवंश को लगभग मिटाने में सफल हो गई थी - लगभग! जैसा कि उल्लेख किया गया है, शैतान ने मत्ती द्वारा संरक्षित पवित्र आत्मा से प्रेरित वंशावली से अगली तीन पीढ़ियों को मिटाने में सफलता प्राप्त की।

हिजकिय्याह ने राष्ट्र को पुनः प्राप्त करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया, लेकिन वह शुरू से ही अपंग था। उसका पिता आहाज, यहूदा के सबसे कमज़ोर राजाओं में से एक, अपने पूरे जीवन में अश्शूर के भय में रहता था और उसने परमेश्वर की वेदी के स्थान पर एक मूर्तिपूजक वेदी (अश्शूर के राजाओं द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली वेदी के समान) स्थापित की। यहाँ तक कि हिजकिय्याह का परमेश्वर पर बहुत भरोसा और यशायाह की बेदारी सेवकाई को उसका पूरा समर्थन भी धर्मत्याग की लहर को लंबे समय तक रोक नहीं सका। हिजकिय्याह की सबसे बड़ी गलती यह थी कि उसने परमेश्वर से एक घातक बीमारी से उबरने की अनुमति मांगी; परमेश्वर ने उसे वह दिया जो उसने माँगा था - और उसकी आत्मा में कड़वाहट भर दी। यह उन अतिरिक्त वर्षों के दौरान था जब "हिजकिय्याह से मनश्शिह उत्पन्न हुआ" जैसा कि मत्ती ने बहुत संक्षेप में कहा (1:10)। उन पाँच शब्दों में कितना वजन हैं!

मनश्शिह सबसे बुरा और सबसे दुष्ट राजा था। उसके दिनों में यहूदा अनैतिकता और मूर्तिपूजा के दलदल में इतना डूब गया था, जिससे राज्य कभी उबर नहीं पाया। यहूदा के सभी राजाओं में से, मनश्शे सबसे लंबे समय तक जीवित रहा - इतना लंबा कि उसके जीवन के अंत में उसके देर से किए गए पश्चाताप का भी कोई खास असर नहीं हुआ। उसके बाद आमोन सिंहासन पर बैठा, जो अपने पिता के पापों का अनुकरण करता रहा।

फिर योशिय्याह आया। उसने और उसके मित्र यिर्मयाह ने राष्ट्र को वापस परमेश्वर की ओर ले जाने की कोशिश की, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। योशिय्याह को उसके यौवन काल में ही मौत के घाट उतार दिया गया और उसके बाद आने वाले राजाओं ने यिर्मयाह का विरोध किया और उसे झूठा और देशद्रोही कहकर उसे उत्पीड़ित किया। शैतान ने खुशी से अपने हाथ मलते हुए अपने प्यारे बेबीलोनियों को दाऊद के राज्य पर आने वाले हमले के लिए तैयार किया होगा।

योशिय्याह की मृत्यु के साथ ही अंत नज़र आने लगा था। उसके बेटे यहोआहाज (जिसका उल्लेख मत्ती ने भी नहीं किया) को राजगद्दी पर बैठे हुए सिर्फ़ तीन महीने ही हुए थे जब उसे फिरौन बंदी बनाकर मिस्र ले गया। योशिय्याह के भाई इल्याकीम (जिसे वंशावली में भी अनदेखा किया गया है) को फिरौन ने कठपुतली की तरह स्थापित किया, जिसने उसका नाम बदलकर यहोयाकीम रख दिया। जिसे बाद में बेबीलोन ले जाया गया।

यहोयाकीम के बेटे यकुन्याह ने उसकी जगह सिंहासन संभाला। तीन महीने और दस दिन में यकुन्याह ने सुलैमान के वंश पर परमेश्वर का श्राप लाने में सफलता प्राप्त की। यकुन्याह का कोई भी बेटा कभी सिंहासन पर नहीं बैठा। उसे भी बेबीलोन निर्वासित कर दिया गया और उसके चाचा मत्तन्याह (सिदकिय्याह), जो

योशिय्याह के भाइयों में से एक था, को राज्य के अंतिम विघटन की अध्यक्षता करने के लिए नियुक्त किया गया।

लेकिन जब शैतान इस दाऊद के वंश पर अपना हमला केंद्रित कर रहा था, तो एक और वंश (जिसे लूका ने दर्ज किया है) सिंहासन की रोशनी से दूर, इतिहास की पिछली गलियों और रास्तों से भटक रहा था। यह दूसरा वंश दाऊद और बतशेबा से नातान के द्वारा मरियम नामक एक गाँव की युवती तक चलता गया। और यूसुफ से नहीं, बल्कि उस मरियम के द्वारा वादा किया गया वंश उत्पन्न हुआ जो दाऊद का पुत्र और दाऊद का प्रभु दोनों एक साथ था।

II. राजा का आगमन (1:18-2:23)

क. पुरुष (1:18-19)

अब कहानी यूसुफ की ओर मुड़ती है। यह स्पष्ट था कि जब कुंवारी मरियम के लिए परमेश्वर के पुत्र की माँ बनने का समय आया, तो उसे एक संरक्षक, एक पति की आवश्यकता होगी जो उसे मूसा की व्यवस्था की अनिवार्य प्रक्रिया से बचा सके। वह व्यवस्था उसे अपमानित करेगी, भले ही उसकी परिस्थिति को देखते हुए उसके लिए मृत्यु की पूरी सजा पर रोक लगा दी गई हो। यह भी स्पष्ट था कि उस पवित्र शिशु को अपने शुरुआती वर्षों में पिता की भूमिका निभाने के लिए किसी पुरुष की आवश्यकता होगी।

परमेश्वर ने जो व्यक्ति चुना वह यूसुफ था, जो राज परिवार का वंशज था और अब काफ़ी मुश्किल दौर से गुज़र रहा था। देश के उत्तरी भाग में एक तिरस्कृत प्रांतीय शहर में रहने वाला एक मेहनती बढ़ई, जो सबसे असंभावित विकल्प था। हम होते तो सोचते कि कम से कम परमेश्वर के पुत्र में जन्मे बालक को एक महल में तो पाला जाना चाहिए था, जो सत्ता के साज-सामान और साज-सज्जा से घिरा हो, और उसे राजकाज की कला और राजाओं के तौर-तरीकों में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए था। लेकिन यीशु को ऐसी किसी भी शिक्षा की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि उसका राज्य अलग ही ताने-बाने से बुना हुआ था।

जब सही समय आएगा तब उसका राज्य इस संसार पर लागू होगा (यह दो हज़ार साल पहले भी हो सकता था अगर यहूदियों ने उसके आगमन के समय को पहचान लिया होता), लेकिन इस बीच परमेश्वर को एक ऐसे पुरुष की ज़रूरत थी जो उस घर में पिता की भूमिका निभा सके जहाँ मरियम अपने बेटे का पालन-पोषण करेगी। अब तक जितने भी लाखों पुरुष हुए हैं, उनमें से परमेश्वर ने यूसुफ को चुना। नासरत का वह बढ़ई ज़रूर एक असाधारण व्यक्ति रहा होगा।

1. यूसुफ की दुविधा (1:18)

क. मरियम से उसकी मंगनी (1:18a)

"मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई।" यहूदी विवाह पद्धति में तीन चरण होते हैं। सबसे पहले वह आता है जिसे हम मंगनी कहते हैं। अक्सर यह माता-पिता द्वारा तय किया जाता था; कभी-कभी आधिकारिक मध्यस्थ के द्वारा भी। कई मामलों में मंगनी तब की जाती थी जब दूल्हा और दुल्हन अभी छोटे बच्चे ही होते थे। अक्सर मंगनी करने वाले जोड़े एक-दूसरे को जानते भी नहीं थे। जीवन साथी का चयन भावनात्मक जुड़ाव पर आधारित गंभीर मामले से बढ़कर माना जाता था।

दूसरा चरण था विवाह की तैयारी, जो विवाह समझौते की औपचारिक पुष्टि होती है। तैयारी एक साल तक चलती है, जो पूरी तरह से बाध्यकारी होती है, और मंगनी करने वाले जोड़े को एक-दूसरे को जानने का मौका देती है। उन्हें इस हद तक पति-पत्नी माना जाता था कि यह रिश्ता केवल तलाक के द्वारा ही खत्म किया जा सकता था। हालाँकि, जोड़े को तीसरे चरण: विवाह तक पति-पत्नी को वैवाहिक अधिकार नहीं दिए जाते थे। विवाह समारोह मंगनी के वर्ष के अंत में होता है और विवाह की मंजिल तक पहुँचती थी। मरियम और यूसुफ का रिश्ता दूसरे चरण में था।

मंगनी के इस चरण के दौरान एक चौंकाने वाली खबर आई: मरियम ने यूसुफ को बताया कि वह एक बच्चे को जन्म देने वाली है। यूसुफ को अपने कानों पर यकीन ही नहीं हुआ। मरियम के बेदाग चरित्र के बारे में उसे जो कुछ भी पता था, वह इस तरह के अंगीकार के अनुरूप नहीं था। वह अन्दर से टूट गया।

फिर एक और भी चौंकाने वाली घोषणा हुई। मरियम ने उसे बताया कि सब कुछ ठीक है; वह अभी भी कुंवारी है। एक स्वर्गदूत ने उससे भेंट की थी; वह पवित्र आत्मा द्वारा अलौकिक रूप से गर्भवती हुई थी; वह इस्राएल के मसीहा को जन्म देने वाली थी!

ख. मरियम से उसका अलगाव (1:18b)

स्वाभाविक तौर से यूसुफ ने मरियम की बात पर विश्वास नहीं किया। अगर हम उसकी जगह होते, तो क्या हम ऐसी कहानी पर विश्वास करते?

उसकी दुविधा तीन गुनी थी। सबसे पहले, वह विश्वास नहीं कर पा रहा था कि मरियम जैसी पवित्र, अच्छी और आत्मिक लड़की वह कर सकती है जो उसे करना चाहिए था अगर वह वास्तव में गर्भवती थी - और जल्द ही इसके संकेत स्पष्ट भी हो गए। वह अच्छी तरह से जानता था कि वह इस बच्चे का पिता नहीं था। दूसरा, यूसुफ उस कहानी पर विश्वास नहीं कर सकता था जो मरियम ने उसे बताई थी। यह बहुत दूर की बात थी। तीसरा, वह नहीं जानता था कि उस स्थिति में उसे क्या करना है। अगर उसे अपना अच्छा नाम बचाना था, तो उसे कुछ करना ही था, संभवतः अपनी जान भी जोखिम में डालनी थी।

2. यूसुफ का निर्णय (1:19)

अंत में यूसुफ इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि उसे वह मंगनी तोड़ देनी होगी।

क. उसका चरित्र प्रकट हुआ (1:19a)

हमें परमेश्वर द्वारा अपने प्रिय पुत्र के सांसारिक पिता के रूप में चुने गए व्यक्ति के चरित्र की एक दुर्लभ झलक देते हुए, पवित्र आत्मा यूसुफ को "एक धर्मी" व्यक्ति कहता है। जिस अभिव्यक्ति का अनुवाद "धर्मी व्यक्ति" के रूप में किया गया है, उसका अनुवाद "एक धार्मिक व्यक्ति" के रूप में भी किया जा सकता है। यह वाक्यांश हमें उदासीन बनाता है और हमें किसी कठोर व्यक्ति के बारे में सोचने पर मजबूर करता है। कैंपबेल मॉर्गन ने एक और अनुवाद सुझाया: "एक भला (सीधा) व्यक्ति, एक सच्चा व्यक्ति।" इस अभिव्यक्ति के पीछे का विचार यह है कि यूसुफ एक ऐसा व्यक्ति था जो सही काम करना चाहता था। वह हर कीमत पर परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहता था। उसके बारे में कुछ भी कुटिल या कपटपूर्ण नहीं था। उस पर भरोसा किया जा सकता था।

उन सभी अच्छे चारित्रिक लक्षणों ने यूसुफ को उसके इस निर्णय पर पहुँचाया। वह वही करेगा जो सही था। उसे केवल मरियम से अलग होना था क्योंकि हालाँकि वह यह विश्वास नहीं कर पा रहा था कि वह अनैतिकता की दोषी है, बल्कि वह अपनी स्थिति के बारे में उसके द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण पर भी विश्वास नहीं कर पा रहा था। भले ही इससे उसका और मरियम का हृदय टूट जाए, लेकिन उसे इस चरम सीमा पर उसके साथ अपनी भावनात्मक भागीदारी से नहीं, या किसी क्रोध या आक्रोश से नहीं जो उसे विश्वासघात के कारण स्वाभाविक रूप से महसूस हो सकता है, बल्कि परमेश्वर के वचन से मार्गदर्शन लेना होगा।

जब मरियम को अपनी स्थिति का एहसास हुआ, तो उसने वह भजन गाया जिसे हम मैग्निफिकैट अर्थात् मरियम (बड़ाई) का गीत (लूका 1:46-55) कहते हैं, जिसमें उसने पवित्र शास्त्र से बार-बार हवाला दिया। जब यूसुफ को उसकी स्थिति का सामना करना पड़ा, तो उसने अपनी चोट और घबराहट में मार्गदर्शन के लिए उसी स्रोत की ओर रुख किया। एकमात्र पवित्रशास्त्र अनुच्छेद जो उसे याद आया वह था व्यवस्थाविवरण 24:1, जिसमें उसे "उसके लिए त्यागपत्र लिखकर देने" का निर्देश दिया गया था।

ख. उसकी करुणा प्रकट हुई (1:19b)

यूसुफ ने जितना हो सके उतना दयालुता से काम करने का फैसला किया और त्यागपत्र उसके हाथ में निजी तौर पर रख दिया, बजाय इसके कि उसे सार्वजनिक मुकदमे की शर्मिंदगी और आधिकारिक सजा के खतरे में डाला जाए। हो सकता है कि उसने पत्र में कोई भी कारण न लिखने की योजना बनाई हो, ताकि उसे दोषी ठहराने के लिए कोई सार्वजनिक सबूत न हो।

यूसुफ को तुरंत कुछ करने की ज़रूरत नहीं थी। लूका के विवरण से हमें पता चलता है कि मरियम को स्वर्गदूत द्वारा यह सन्देश मिलने के बाद, वह अपनी चचेरी बहन इलीशिबा से मिलने के लिए घर से निकल पड़ी, जो जकर्याह की पत्नी थी, जो प्रभु के नियुक्त याजकों में से एक था और यरूशलेम में सेवा-टहल करता था। मरियम वहाँ तीन महीने तक रही, निस्संदेह अपने ही गाँव में लोगों की नज़रों और निंदा से दूर रहने में वह यहाँ खुश थी। जब वह वापस लौटी, तो यूसुफ को पता था कि अब उसके लिए कुछ करने का समय आ चुका है।

ख. संदेशवाहक (1:20-23)

1. सब ठीक था (1:20)

"जब वह इन बातों के सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा; हे यूसुफ दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है।" यह कैसा स्वप्न था! जब यूसुफ नींद से जागा, तो उसे एहसास हुआ कि यह केवल एक स्वप्न नहीं, बल्कि उससे कहीं बढ़कर था। इसका अर्थ था कि उसके सभी स्वप्न सच हो सकते थे। आखिरकार वह अपनी प्रेमिका से विवाह कर सकता था। वह स्वर्ग की पूर्ण स्वीकृति के साथ उससे विवाह कर सकता था, जो मनुष्य की ओर से मिलने वाले तिरस्कार से कहीं अधिक था। छोटे शहर के लोगों की संकीर्ण सोच इस जल्दबाजी में की गई शादी को निश्चित रूप से सबसे बुरा अनुभव बना देगी।

"प्रभु का स्वर्गदूत" जो यूसुफ से मिलने आया था, वह यहोवा परमेश्वर का दूत था जो पहले उस कंगाल, गर्भवती, भागी हुई हाजिरा के सामने प्रकट हुआ था जब वह मिस्र की सीमा पार करके "हमेशा के लिए

अंधकार की काली छाया" में समा जाने वाली थी (उत्पत्ति 16:7; यहूदा 13)। "प्रभु का स्वर्गदूत" कोई और नहीं बल्कि परमेश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति था, जो समय-समय पर पुराने नियम के समय में विभिन्न मानवीय संतानों के सामने इस रूप में प्रकट हुआ था।

स्वर्गदूत ने यूसुफ को "दाऊद की सन्तान" कहकर पुकारा। दाऊद के नाम ने यूसुफ को इस्राएल के राजकीय वंश के संस्थापक से किए गए परमेश्वर के वादों को याद दिलाया होगा (2 शमूएल 7:11-16; 1 इतिहास 17:11-14; भजन 110:1)। दिलचस्प तरीके से, बाइबल में दाऊद को किसी भी अन्य चरित्र (व्यक्ति) की तुलना में अधिक बार वर्णित किया गया है और प्रभु के अलावा यह नाम नये नियम में पहला और अंतिम नाम है।

2. सब कुछ अद्भुत था (1:21-23)

क. संभावना (1:21)

(1) एक पुत्र के विषय में (1:21a)

स्वर्गदूत ने यूसुफ से कहा, "वह एक पुत्र जनेगी" - यूसुफ का पुत्र नहीं, बल्कि परमेश्वर का पुत्र होगा। परमेश्वरत्व के दूसरे व्यक्ति को एक पवित्र संतान के रूप में जन्म लेना था और यूसुफ के घर में उसका पालन-पोषण होना था। उसे ब्रह्मांड के सृष्टिकर्ता के मानवीय बढ़ोतरी और विकास की देखरेख करने की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी जानी थी। यह कार्य हिलेल या गमलीएल या किसी अन्य रब्बी को नहीं सौंपा जाना था। यह नीकुदेमुस या अरमतियाह के यूसुफ जैसे अमीर और प्रभावशाली व्यक्ति को नहीं दिया जाना था। परमेश्वर ने यूसुफ बढ़ई को चुना था, जो कम आय और सीमित शिक्षा वाला एक साधारण मजदूरी करने वाला मनुष्य था। वह भी मरियम की तरह ही चुना हुआ एक पात्र था।

इस बात में कोई संदेह नहीं रह गया था कि इस बेटे को क्या नाम दिया जाना चाहिए। स्वर्गदूत ने यूसुफ को निर्देश दिया, "तू उसका नाम यीशु रखना," यीशु सैकड़ों यहूदी लड़कों द्वारा धारण किया जाने वाला एक साधारण नाम था। यह पुराने नियम के यहोशु (होशे के साथ याह उपसर्ग) के समान था, जिसका अर्थ है "हमारा उद्धारकर्ता परमेश्वर" या "परमेश्वर जो उद्धार देता है।" उसके लिए इससे अधिक उपयुक्त कोई नाम नहीं चुना जा सकता था। एक बार जब वह नाम परमेश्वर के पुत्र के साथ जुड़ गया, तो यह एक सामान्य नाम नहीं रह गया और मानवीय होठों द्वारा कभी भी बोला गया सबसे अद्भुत, महत्वपूर्ण और महिमामय नाम बन गया।

(2) एक उद्धारकर्ता के विषय में (1:21b)

संभावना अब एक पुत्र से बढ़कर एक उद्धारकर्ता की ओर बढ़ गई। स्वर्गदूत ने समझाया कि बच्चे को यीशु कहने का कारण यह था कि वह "अपने लोगों को उनके पापों से छुड़ाएगा।" यह नए नियम में पाप का पहला उल्लेख है। स्वर्गदूत ने हमर्शिया शब्द का इस्तेमाल किया, जिसका शाब्दिक अर्थ है "लक्ष्य को प्राप्त करने से चूकना" और यह स्पष्ट रूप से व्यवस्था का पालन करने में विफल होने को संदर्भित करता है - विचार, वचन या कर्म में चूक द्वारा किया गया पाप। हमर्शिया का उपयोग पापबलि के संबंध में भी किया जाता है (जैसा कि इब्रानियों 10:6 में है)।

यीशु के नाम के साथ जुड़ा हुआ शब्द है उद्धार। जब पतरस ने महासभा पर मसीह का तिरस्कार करने का आरोप लगाया, तो उसने कहा, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें" (प्रेरितों के काम 4:12)। मान लीजिए कि मैं आपको दस लाख डॉलर का चेक लिख दूं। आपको इससे कुछ भी लाभ होने वाला नहीं है, क्योंकि मेरे पास इतनी रकम नहीं है। लेकिन अगर एक करोड़पति में से कोई आपको उस राशि का चेक लिखकर दे, तो आप दस लाख डॉलर की मालिक हो जाएंगे। यहाँ किस बात का फर्क है? केवल नाम का।

ऐसे लोग हैं जो अपने खुद के नाम से, या मुहम्मद या कुंवारी मरियम के नाम से, या किसी और नाम से परमेश्वर के पास आते हैं। वे पहले की तरह ही खोये हुए हैं। उदाहरण के लिए मुहम्मद और मरियम अन्य सभी नाम पापी हो चुके हैं। स्वर्ग के बैंक में उद्धार के लिए परमेश्वर केवल एक ही नाम का सम्मान करता है: वह है यीशु का अनमोल नाम।

ख. भविष्यद्वाणी (1:22-23)

मत्ती 1:23 में की गई भविष्यद्वाणी यशायाह द्वारा की गई थी। अपने मूल संदर्भ में यह दुष्ट राजा आहाज के लिए की गई थी, जब उसके विरूद्ध अरामी-एप्रैमी गठबंधन बनाया गया था और उसने अपनी घोर मूर्खता में अश्शूरियों से मदद की अपील करने का फैसला किया था। वह एक बिल्ली को बुला सकता था और दो बंदरों के बीच शांति बनाए रख सकता था। यशायाह ने आहाज को इस तरह के आत्मघाती कदम के विरूद्ध चेतावनी दी थी और उसे अपने विश्वास को प्रोत्साहित करने के लिए एक चिह्न माँगने का अनुरोध करने का अवसर दिया था। आहाज ने जिद्दी होकर एक चिह्न मांगने से इनकार कर दिया था, लेकिन उसे वैसे भी एक दिया गया था, जिसे मत्ती ने वर्णित किया है (यशायाह 7:14)।

एक कुंवारी द्वारा बेटे को जन्म देने की भविष्यद्वाणी के बारे में बहुत बहस हुई है। चाहे लोग यशायाह के वचनों पर विश्वास करें या न करें, यह तथ्य कि मत्ती ने उन्हें यहाँ शामिल किया है, यह दर्शाता है कि पवित्र आत्मा का मकसद क्या था। उसने मसीह के कुंवारी स्त्री से जन्म की भविष्यद्वाणी के रूप में यशायाह के वचनों को उद्धृत किया।

मसीह का कुंवारी स्त्री से जन्म विश्वास की एक वैकल्पिक प्रस्तुति नहीं है। यह सुसमाचार के लिए आवश्यक है। यदि यीशु कुंवारी से पैदा नहीं हुआ होता, तो उसका एक मानवीय पिता होता। यदि उसका एक मानवीय पिता होता, तो वह परमेश्वर नहीं होता। यदि वह परमेश्वर नहीं होता, तो बाइबल झूठी होती, यीशु स्वयं भ्रमित होता, और हमारे पास पाप से मुक्ति पाने के लिए कोई पर्याप्त उद्धारकर्ता नहीं होता। यदि यीशु देह में प्रकट परमेश्वर नहीं होता, तो क्रूस पर समर्पित किया गया जीवन केवल एक मानवीय जीवन होता और वह कभी भी दुनिया के पाप को दूर नहीं कर सकता था। मनुष्य के रूप में, वह केवल एक जीवन के बदले एक जीवन दे सकता था। जबकि परमेश्वर के रूप में, उसने एक अनंत जीवन दिया जो किसी भी सीमित जीवन को छुड़ाने के लिए पर्याप्त से भी अधिक था।

"वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे," मत्ती ने कहा, "अर्थात् परमेश्वर हमारे साथ।" इससे बहस सुलझ जानी चाहिए थी। जिसे कुंवारी मरियम के द्वारा इस संसार में लाया गया वह परमेश्वर ही था - देह में प्रकट परमेश्वर।

स्वर्गदूत के वचन यूसुफ की आत्मा में स्वर्ग से आए संगीत की तरह महसूस हुए होंगे। निश्चित रूप से उसे केवल यही अफ़सोस रहा होगा कि उसने पहले मरियम पर संदेह किया था। लेकिन अब सभी संदेह दूर हो गए थे।

ग. विवाह (1:24-25)

बिना किसी देरी के, यूसुफ ने अपने हृदय की इच्छा के मुताबिक मरियम से विवाह कर लिया। वह "प्रभु के दूत की आज्ञा अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया" (1:24)। यूसुफ का कर्तव्य उसकी इच्छा के साथ मेल खाता था। पवित्र भय के साथ, उसने अपनी स्वाभाविक इच्छाओं को तब तक नियंत्रित किया जब तक कि वायदा किया गया बच्चा पैदा नहीं हो गया। उसने “जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया” (1:25)। यूसुफ की इच्छा उसके कर्तव्य के साथ मेल खाती थी।

पद 25 इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि मरियम हमेशा कुंवारी नहीं रही। हमें मत्ती 12:46-50 और 13:55-56 से ज्ञात होता है कि परिवार में कई स्वाभाविक रूप से जन्मे कई अन्य बेटे और बेटियाँ भी शामिल हुईं। "धन्य कुंवारी मरियम" के इर्द-गिर्द बनी रोमी कैथोलिक इमारत झूठ पर आधारित है। मरियम, प्रभु की माँ, आगे कुंवारी नहीं रही; वह और यूसुफ परमेश्वर के पुत्र के चमत्कारी जन्म के बाद एक सामान्य पति-पत्नी के रिश्ते में आ गए।

स्वर्गदूत के वचन के अनुसार, यूसुफ ने उस बालक का नाम यीशु रखा। युगों-युगों से अनगिनत लाखों लोगों के लिए, यीशु "मनुष्य की ज़ुबान पर सबसे मधुर नाम" बन गया है, "अब तक गाया गया सबसे मधुर गीत भी।"[5]

मसीह के जन्म के समय, यीशु नाम ने पृथ्वी पर बहुत कम हलचल मचाई। कुछ एक साल के बाद ही हेरोदेस को इसके बारे में पता चला। वास्तव में, बैतलहम के आस-पास की पहाड़ियों पर कुछ चरवाहों को इसके बारे में पहले से पता था, और मंदिर में एक बूढ़ा आदमी और एक बूढ़ी औरत इस बात को जानकार आश्चर्य से भर उठे थे। लेकिन कोई खास हलचल नहीं हुई थी। हालाँकि, स्वर्ग में, काफी हलचल थी (लूका 2:13-14)। हम स्वर्गदूतों के उत्साह की कल्पना कर सकते हैं। "और वे इस अद्भुत बच्चे को क्या नाम देंगे?" किसी ने पूछा होगा, "यीशु, बेशक," किसी ने जवाब दिया होगा। महिमा के साथ एक नया नाम लिखा गया था, परमेश्वर के लिए एक नया नाम। स्वर्गदूत उसे एलोहिम, यहोवा, एडोनाई, अल- शद्दाई और एलयोन के रूप में जानते थे। अब वे उसे उसके बेटे के व्यक्तित्व में यीशु के रूप में जानते थे।

घ. ज्योतिषी (2:1-12)

1. वे क्या ढूँढ रहे थे (2:1-8)

क. उनकी खोज (2:1)

"हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो देखो, पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे..." ज्योतिषियों ने कहा कि दूर पूर्व दिशा में उन्होंने आकाश में एक नई घटना देखी है। ज्योतिषियों की चौंकाने वाली खबर ने पूरे यरूशलेम शहर में हलचल मचा दी, खास तौर पर राजा हेरोदेस को।

खगोलशास्त्री हमें आश्वस्त करते हैं कि यीशु के जन्म से दो साल पहले बृहस्पति और शनि ग्रहों का एक अद्‌भुत संयोग हुआ था। अगले वर्ष मंगल भी इस संयोग में शामिल हो गया। यह घटना हर आठ सौ साल में एक बार ही होती है। प्रसिद्ध खगोलशास्त्री केपलर ने 1603 और 1604 ईस्वी में इसी तरह के संयोग को देखकर इन तथ्यों की खोज की। उन्होंने देखा कि जब तीन ग्रह संयोग में आए, तो बृहस्पति और शनि के बीच एक नया, असाधारण, चमकीला तारा दिखाई दिया। केपलर का मानना था कि यीशु के जन्म से पहले भी ऐसी ही परिस्थितियों में एक ऐसा ही तारा दिखाई दिया था और यह वही तारा था जिसे ज्योतिषियों ने देखा था।[6]

जो भी हो, ज्योतिषियों का ध्यान कुछ ऐसे ही आकाशीय दृश्य पर गया होगा - इतना कि उन्होंने यकीन कर लिया कि एक राजा का जन्म हुआ है और उन्होंने उस बच्चे को खोज निकालने के लिए एक लंबी और खतरनाक यात्रा करने का फैसला किया। चूँकि प्रवासी लोग पूर्व के सभी देशों में फैल चुके थे, इसलिए ज्योतिषियों जैसे पढ़े-लिखे लोग शायद आने वाले मसीहा में यहूदी विश्वास से परिचित थे। इसलिए उन बुद्धिमान लोगों ने अपनी खोज शुरू की।

ख. उनका प्रश्न (2:2)

जब उनका मार्गदर्शक तारा उन्हें यहूदिया ले आया, तो ज्योतिष सीधे यरूशलेम की ओर चल पड़े, जो राजा के जन्म के लिए सबसे संभावित स्थान था। तुरही की ध्वनि की तरह, उनके प्रश्न ने पूरे नगर को चौंका दिया: "यहूदियों का राजा कहाँ पैदा हुआ है?" - राजकुमार नहीं, बल्कि राजा! सिंहासन पर विराजमान हेरोदेस के कार्यकाल को स्वर्ग में अनदेखा कर दिया गया है। "जन्म से राजा" आदि शब्दों ने उसकी भ्रष्ट आत्मा में भय की एक सिहरन पैदा कर दी होगी।

वह एदोमी हड़पनेवाला, जिसे इतिहास में हेरोदेस महान के नाम से जाना जाता है, दाऊद के सिंहासन पर बैठा था जब वे ज्योतिषी लोग यरूशलेम पहुंचे। दाऊद के शाही घराने का भाग्य कभी इतना नीचे नहीं उतरा था: उसका सीधा वारिस एक मामूली गाँव का बढ़ई था और देखो अभी उस दाऊद के सिंहासन पर एक एदोमी बैठा था। एसाव और याकूब के बीच लंबा संघर्ष चरम पर पहुँचने वाला था क्योंकि एदोमी हेरोदेस रूपी उस साँप के सपोले ने खुद को प्रभु के अभिषिक्त के विरूद्ध खड़ा कर लिया था।

रोमी सेनापति पोम्पी ने 63 ईसा पूर्व में यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लिया था, जिससे यरूशलेम और यहूदिया दोनों रोम के अधीन हो गए थे। हेरोदेस, पक्ष बदलने और अपनी स्थिति सुधारने में माहिर था, उसने उस समय की फिसलन भरी राजनीति का सफलतापूर्वक लाभ उठाया, जब पोम्पी को जूलियस कैसर ने हराया, जब कैसर की हत्या हुई, जब मरकुस एंटनी कुछ समय के लिए सत्ता में आया, और जब ऑक्टेवियस ने एंटनी की जगह ली। जल्द ही पूरा फिलिस्तीन हेरोद के क्रूर लेकिन सक्षम हाथों में था। उसका शासन नरसंहार, कटु घृणा, संदेह और भयानक अत्याचारों से भरा हुआ था। जब तक यहूदिया के परेशानीग्रस्त देश पर उनका शासन लोहे के हाथ से चलता रहा, तब तक रोमी शासन को इसकी कोई परवाह नहीं थी।

हेरोदेस ने यरूशलेम को विदेशी भाड़े के सैनिकों से और फिलिस्तीन के शहरों को जासूसों से भर दिया। हेरोदेस के शासनकाल में कोई भी पुरुष या स्त्री सुरक्षित नहीं थे। उसने एक-एक करके सिंहासन के हर प्रतिद्वंद्वी दावेदारों की हत्या कर दी थी। उसने हसमोनियों को खत्म कर दिया; उसने अपनी पत्नी के भाई, सत्रह वर्षीय लड़के की हत्या कर दी थी, क्योंकि वह यहूदियों के बीच लोकप्रिय था; उसने मरियम्ने की

हत्या कर दी, जो मैकाबीन की खूबसूरत राजकुमारी थी, जिससे उसने विवाह किया था, क्योंकि उसे उस पर शक था, और उसने उसके दोनों बेटों की भी हत्या कर दी थी; अपनी मृत्यु से पाँच दिन पहले उसने अपने बेटे और वारिस की हत्या कर दी। हेरोदेस ने अपने शासन काल में छह से आठ हज़ार बेहतरीन लोगों की हत्या करके अपना रास्ता बनाया। कैसर अगस्तुस के बारे में कहा जाता है कि उसने व्यंग्यात्मक रूप से कहा था, "मैं हेरोदेस का बेटा बनने की बजाय हेरोदेस का सूअर बनना पसंद करूँगा।"

हेरोदेस के अपराधों ने उसके मस्तिष्क को प्रभावित किया। मरियम्ने की हत्या के बाद, वह पागल हो गया। अपनी पत्नियों, रखैलों और दासियों के बीच में घुसकर, वह इस और उस पर इशारा करता और चिल्लाता, "तुम मरियम्ने नहीं हो!" फिर एक दिन जब वह कैसरिया के घाट पर टहल रहा था, तो उसने एक स्त्री को देखा जो उसे उसके मारे गए प्रेम की याद दिलाती थी। अपने जुनून से ग्रस्त होकर, उसने उसे पकड़ लिया। उसने इस तथ्य की अनदेखी की कि वह एक आम वेश्या थी और बाद में उसे एक गंदी बीमारी ने अपनी जकड़ में ले लिया। वह चिल्लाया, "मुझे पता था कि यह मरियम्ने थी। वह मुझे शाप देने के लिए वापस आई है!" इसके बाद उसकी नसों में एक नई आग दौड़ गई, पागलपन की आग जो उसकी मोहग्रस्त अवस्था में हुए गंदे संक्रमण से पैदा हुई थी।

यह वही व्यक्ति है जो इस्राएल के वैध राजा के जन्म के समय दाऊद के सिंहासन पर बैठा था और यह वही व्यक्ति है जिसके सामने ज्योतिषी आकर प्रस्तुत हुए थे: एक खतरनाक, संदिग्ध, चालाक, बेईमान तानाशाह।

ग. उनकी दुविधा (2:3-8)

(1) हेरोदेस की चिंता (2:3)

हम पढ़ते हैं, "हेरोदेस राजा और उसके साथ सारा यरूशलेम घबरा गया।" यहूदियों को पता था कि जब हेरोदेस परेशान होता है तो उन्हें क्या उम्मीद करनी चाहिए, खासकर अगर परेशानी ऐसी हो जैसी कि ज्योतिषी लाए थे - एक प्रतिद्वंद्वी राजा की खबर। जल्द ही खून की नदी बहेगी। एक और कत्लेआम होगा।

इस आदमी के लिए दोपहर का आम मनोरंजन शहर के बीच में स्थापित एक सार्वजनिक मंच पर अपने सात या आठ सौ लोगों को सूली पर चढ़ाए जाते देखना था। वह अपनी रखैलियों के साथ शराब पीता था और वे मिलकर इस भयानक दृश्य का आनंद लेते थे। उसकी पसंदीदा चालों में से एक यह थी कि वह अपने दुश्मनों को, निहत्थे, एक संकरी जगह में घेर लेता था और फिर अपने सैनिकों को पूरी लड़ाई के लिए दरवाजे से दहाड़ता हुआ भेजता था, जबकि वह उन्हें आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करता था। उस जगह पर मौजूद हर शत्रु की हत्या कर दी जाती थी। और इतिहास उसे हेरोदेस महान कहता है!

यरूशलेम में (बैतलहम के बजाय) उन बुद्धिमान लोगों के आगमन ने उन्हें एक दुविधा में डाल दिया जिसके बारे में वे तब तक अनभिज्ञ रहे जब तक कि बहुत देर नहीं हो गई। उन्होंने एक बाघ को जगाया था। लेकिन शैतानी चालाकी से, वह दहाड़ नहीं रहा था; बल्कि वह गुर्रा रहा था।

(2) हेरोदेस के सलाहकार (2:4-6)

हेरोदेस ने बिना समय गवाएं अपने सभी मुख्य याजकों और शास्त्रियों को बुलाया और एक धार्मिक प्रश्न पूछा। पूरी जिज्ञासा के साथ उसने पूछा, "तुम लोग कहते हो कि तुम एक मसीहा की प्रतीक्षा कर रहे हो।

ऐसा कोई कहाँ पैदा होगा?" उस प्रश्न का उत्तर उसे यह जानने में सक्षम करेगा कि उसे इस अवांछित राजा की तलाश कहाँ करनी चाहिए। उसने ज्योतिषियों से यह भी पूछा कि वह रहस्यमयी तारा पहली बार कब दिखाई दिया था। उनके उत्तर से उसे यह अनुमान लगाने में मदद मिलेगी कि उसे अपनी जाँच को आगे बढ़ाने के लिए कितनी दूर तक जाना होगा। जब तक कोई भी ऐसा जीवित रहेगा जो तारा पहली बार दिखाई देने और यरूशलेम में उन बुद्धिमानों के प्रवेश करने के बीच पैदा हुआ था, तब तक वह अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं करेगा।

हेरोदेस के सलाहकारों को यह बताने में कोई परेशानी नहीं हुई कि इस राजा को कहाँ ढूँढ़ना है। मीका 5:2 के अनुसार, उसका जन्म बैतलहम में होना था।

(3) हेरोदेस की चालाकी (2:7-8)

एक बार जब हेरोदेस को पता चल गया कि उसे अपने प्रतिद्वंद्वी को कहाँ ढूँढना है, तो उसने छल का सहारा लिया। उसने ज्योतिषियों से "चुपके से" (सटीक रूप से, 2:7) पूछताछ की थी और अब उसने उन्हें नवजात राजा का पता लगाने के लिए अपनी यात्रा जारी रखते हुए उसके बारे में "ठीक ठीक मालूम" (2:8) करने के लिए कहा। इसके अलावा, उसने उनसे आग्रह किया कि वे वापस आएँ और अपनी खोज के परिणाम के विषय में उसे बताएँ। "ताकि मैं भी आकर उस को प्रणाम करूं," उसने प्रभावी रूप से कहा। पद 2 और 8 में "प्रणाम" का अनुवाद प्रोस्केन्यूओ है, जिसका अर्थ है "दंडवत करना।"

2. वे क्या लेकर आये (2:9-12)

क. उन्हें उनके मार्ग पर पुनः निर्देशित किया गया (2:9-10)

जैसे ही बुद्धिमान लोगों ने अपने तर्क पर भरोसा करना बंद कर दिया, तुरंत वही रहस्यमयी तारा फिर से प्रकट हुआ और उन्हें उनके रास्ते पर पुनः आगे निर्देशित किया गया। तारा उन्हें न केवल बैतलहम ले गया, जिसे अब वे जन्मस्थान के रूप में जानते थे, बल्कि उस घर तक भी ले गया जहाँ बालक यीशु था।

यरूशलेम और राजमहल में ज्योतिषियों के संक्षिप्त भ्रमण ने स्थिति को बहुत जटिल बना दिया था। उस समय उन्हें इसका पता नहीं था, लेकिन उन्होंने बच्चे के जीवन को बहुत खतरे में डाल दिया था। शैतान उस दुष्ट हेरोदेस का उपयोग करने वाला था, जिसे ज्योतिषियों ने अनजाने में जगा दिया था, ताकि एक बार फिर से स्त्री के वादा किए गए वंश से छुटकारा पाने की कोशिश की जा सके।

ख. वे अपनी आराधना में निष्ठावान थे (2:11-12)

(1) उनका लक्ष्य (2:11a)

हेरोदेस की खतरनाक उपस्थिति से आखिरकार छुटकारा पाने के बाद, ज्योतिषियों ने आकाश में दिखे चिह्न का अनुसरण किया और बालक राजा की उपस्थिति की ओर अपना मार्ग पाया। "उस घर में पहुंचकर उस बालक को उस की माता मरियम के साथ देखा, और मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया" ध्यान दें कि उन्होंने यीशु की आराधना की, न कि मरियम की। मरियम के लिए हमारा सम्मान बड़ा होना चाहिए, लेकिन हमें सावधान रहना चाहिए कि उसे वह स्थान न दें जो परमेश्वर ने उसे नहीं दिया है। कुछ क्षेत्रों में मरियम

की मूर्तिपूजक आराधना को देखते हुए, इस कथन पर विशेष जोर देने की आवश्यकता है: उन्होंने यीशु की आराधना की।

(2) उनकी भेंटें (2:11b)

ज्योतिषियों के इर्द-गिर्द कई परंपराएँ विकसित हुई हैं। उदाहरण के लिए, अधिकांश लोगों द्वारा यह मान लिया जाता है, हालाँकि बाइबल ऐसा नहीं कहती है, कि तीन बुद्धिमान पुरुष वहाँ आए थे। यह विचार निस्संदेह इस तथ्य से विकसित हुआ कि उन्होंने नवजात राजा को तीन प्रकार के उपहार दिए, जिनके चरणों में वे प्रणाम करने को झुके थे। एक किंवदंती कहती है कि दरअसल वे बुद्धिमान लोग राजा थे। एक अन्य कहती है कि ज्योतिषि मनुष्यजाति की तीन जातियों का प्रतिनिधित्व करते थे: जैफ़ेटिक, हैमिटिक और सेमिटिक। एक परंपरा के अनुसार ज्योतिषियों के नाम कैस्पर, मेल्चियोर और बाल्थाजार थे। एक अन्य कहानी में एक बुद्धिमान व्यक्ति को युवा, एक को मध्यम आयु वर्ग और एक को बहुत बूढ़े के रूप में चित्रित किया गया है।

एफ.डब्लू. बोरहम ने अपनी कहानी "द लॉस्ट क्रॉनिकल्स ऑफ़ सूफी-अब्बास" में एक दिलचस्प सुझाव दिया:[7]

तीन बुद्धिमान व्यक्तियों में से एक को यकीन था कि दुनिया को एक राजा की ज़रूरत है, जो अधिकार और सामर्थ्य के साथ राष्ट्रों पर शासन कर सके, अधर्म को खत्म कर सके और मनुष्यजाति के लिए समृद्धि और शांति ला सके। इसलिए, यह निश्चित था कि तारा उन्हें राजा के पास ले जाएगा, इसलिए वह एक शाही उपहार, सोने का उपहार, राजाओं का अनोखा खजाना लेकर आया।

दूसरे बुद्धिमान व्यक्ति ने, यह जानते हुए कि परमेश्वर के बारे में दुनिया की धारणाएँ विकृत थीं, सोचा कि परमेश्वर को मनुष्य रूप में यहाँ आना चाहिए और दुनिया को दिखाना चाहिए कि वह वास्तव में कैसा है। इसलिए, वह चाहता था कि परमेश्वर देह में प्रकट हो, इसलिए वह लोबान लाया, जो देवताओं पर अर्पित करने की एक भेंट थी क्योंकि धूप का उपयोग आराधना के लिए किया जाता था।

तीसरे को उम्मीद थी कि तारा उन्हें एक उद्धारकर्ता के पास ले जाएगा। यह बुद्धिमान व्यक्ति जानता था कि संसार एक पापी स्थान है, दुख की बात है कि उसे एक ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो मनुष्यजाति के पापों का भार और अपराध अपने ऊपर ले और उनके लिए प्रायश्चित करे। इसलिए, यह मानते हुए कि ऐसा महान उद्धारकर्ता एक महान पीड़ित भी होना चाहिए, वह गन्धरस लाया, एक ऐसे व्यक्ति के लिए उपहार जो मरने के लिए नियत था क्योंकि इस सुगंधद्रव्य का उपयोग मृतकों के शरीर को सुगंधित करने के लिए किया जाता था।

बोरहम ने लिखा, "वे बैतलहम पहुँचे।" "और जब उन्होंने देखा कि तारा उन्हें एक स्त्री की गोद में एक बच्चे के पास ले आया था, तो वे तीनों पहले तो निराशा और निरुत्साह से अभिभूत हो उठे।"[8] फिर उन्होंने मरियम को लूका द्वारा दर्ज किया गया गीत गाते हुए सुना "मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है। और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करने वाले परमेश्वर से आनन्दित हुई..." (लूका 1:46-47)।

"प्रभु!" तब पहले बुद्धिमान व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा। "अब मुझे मेरा राजा मिल गया है!" और उसने सोने की भेंट उसे अर्पण की।

"परमेश्वर से!" दूसरे बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा। "अब मैंने अपना परमेश्वर पा लिया है!" और उसने लोबान की भेंट उसे अर्पण की।

"मेरे उद्धार करने वाले!" तीसरे बुद्धिमान व्यक्ति ने एक स्वर में कहा। "अब मुझे मेरा उद्धारकर्ता मिल गया है!" और उसने गन्धरस का उपहार अर्पण किया।

कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है कि बोरेहम की कहानी एक सुन्दर विचार है।

(3) उनका मार्गदर्शन (2:12)

उनका मिशन पूरा हुआ! ज्योतिषियों को अपने मूल क्षेत्रों में लौटने से पहले केवल एक और कर्तव्य निभाना था। उन्हें यरूशलेम वापस जाना था और अपने निष्कर्षों की रिपोर्ट वर्तमान राजा को देनी थी ताकि वह भी आकर उस नवजात मसीह की आराधना कर सके। आखिर कौन सा राजा, परमेश्वर, उद्धारकर्ता की आराधना नहीं करना चाहेगा? कौन प्रणाम करने और दंडवत करने में विलम्ब करना चाहेगा? निश्चित रूप से यहूदियों का कोई भी सही सोच वाला राजा आकर उसके शिशु चरणों में मुकुट, वस्त्र और राजदंड रखना चाहेगा। क्या हेरोदेस ने यह नहीं कहा था, “जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो ताकि मैं भी आकर उस को प्रणाम करूं” (मत्ती 2:8)?

ज्योतिषियों को शायद ही इस बात का पता था कि हेरोदेस की योजना इस प्रतिद्वंद्वी शासक को तलवार से मार डालने की थी। लेकिन परमेश्वर इसे जानता था। उन्हें "स्वप्न में परमेश्वर की ओर से चितौनी दी गई" (2:12) और, ज्योतिषी होने के नाते, उन्होंने इस बात को महत्व दिया और अपने घर लौटने के लिए दूसरा रास्ता चुना, एक ऐसा रास्ता जो यरूशलेम और उसके भयानक राजा को दरकिनार कर देता है।

ङ) नरसंहार (2:13-18)

1. स्वर्ग से चेतावनी (2:13-15)

क. ईश्वरीय चेतावनी (2:13-14)

स्वर्ग से एक और चेतावनी आई। यूसुफ को एक स्वप्न में बताया गया कि अब वह, मरियम और खास तौर पर शिशु मसीह किस खतरे में हैं। परमेश्वर हेरोदेस के मन को जानता था और उसके गुप्त उद्देश्य को जानता था। दुष्ट राजा ने "चुपके से" (गुप्त रूप से, 2:7) बुद्धिमान लोगों को अपने निर्देश दिए थे। अपने आस-पास के सभी लोगों पर शक करते हुए, वह नहीं चाहता था कि कोई भी उसकी चिंता और छिपे हुए संकल्प पर किसी प्रकार का कोई संदेह करे। लेकिन वह अपने अंतरात्मा के विचारों को परमेश्वर से छिपा नहीं सकता था।

खतरे की चेतावनी सुनकर, यूसुफ ने प्रभु के दूत की बातों पर तत्काल अमल (पालन) किया। उसने जल्दी से अपना सामान बांधा और अपने छोटे से परिवार के साथ मिस्र की ओर चल पड़ा। परमेश्वर ने अपने पुत्र को शरण देने के लिए मसीह के सहस्राब्दी शासनकाल के दौरान मिस्र को आशीष देने की योजना बनाई है (यशायाह 19:23-25)। अक्सर पवित्रशास्त्र में मिस्र को परमेश्वर के लोगों के शत्रु के रूप में दिखाया गया है, लेकिन मसीह को प्रदान की गई शरण को परमेश्वर कभी नहीं भूलेगा या अनदेखा नहीं करेगा। परमेश्वर किसी भी व्यक्ति या राष्ट्र का ऋणी नहीं है।

ख. ईश्वरीय भविष्यद्वाणी (2:15)

हेरोदेस के युद्ध के रास्ते पर होने के कारण, मिस्र ही पवित्र शिशु के लिए एकमात्र सुरक्षित स्थान था। वह "हेरोदेस की मृत्यु तक वहाँ रहा" और इस प्रकार एक प्राचीन भविष्यद्वाणी पूरी हुई, जैसा कि मत्ती ने यहूदियों को तुरंत बताया। मत्ती 2:15 में उस बात का उल्लेख है जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता होशे के द्वारा कही थी: "मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया है" (देखें होशे 11:1)। इस कथन को पवित्र आत्मा ने भविष्यद्वाणी और ऐतिहासिक महत्व दोनों से युक्त किया है।

2. हेरोदेस की दुष्टता (2:16-18)

हेरोदेस की दुष्टता पूरी तरह से अपनी चरम पर पहुँच गई। इतिहासकारों ने हमें इस निर्दयी व्यक्ति की एक स्पष्ट तस्वीर दी है: हेरोदेस के कई युद्धों के एक अनुभवी ने एक बार उससे यह कहने की हिम्मत की, "सेना आपकी क्रूरता से घृणा करती है। सावधान रहें, मेरे स्वामी। ऐसा कोई आम सैनिक नहीं है जो आपके बेटों का पक्ष न ले, और कई अधिकारी खुलेआम आपको कोसते हैं।" क्रोधित होकर, हेरोदेस ने बूढ़े सैनिक को लकड़ी के पट्टे पर लटका दिया और तब तक प्रताड़ित किया जब तक कि वह अर्थहीन अंगीकार और देशद्रोह के आरोप नहीं लगाने लगा। हेरोदेस ने यातना देने वालों को और उकसाया। उस बेचारे व्यक्ति ने नाम लेकर अधिक से अधिक अधिकारियों पर आरोप लगाया और उसे तब तक मरोड़ा और फाड़ा गया जब तक कि उसके जोड़ अलग नहीं हो गए और उसकी हड्डियाँ टूट नहीं गईं। हेरोदेस ने आरोपी अधिकारियों को बुलाया और उन पर भीड़ को छोड़ दिया। क्रोध से आगबबूला होकर, वह संदिग्ध देशद्रोहियों की मौत के लिए चिल्लाते हुए उछल-कूद करने लगा।

क. एक शैतानी नीति (2:16)

"जब हेरोदेस ने यह देखा, कि ज्योतिषियों ने उसके साथ धोखा किया है, तब वह क्रोध से भर गया।" एक बार जब उसका संदेह और ईर्ष्या जागृत हो उठे, तो वह छोटे बच्चों के नरसंहार से भी नहीं रूका। इसलिए एक बहुत ही भयानक काम किया गया। उसने “बैतलहम और उसके आस-पास के सभी इलाकों में रहने वाले दो साल या उससे कम उम्र के सभी बच्चों को मार डाला।”

ख. एक ईश्वरीय भविष्यद्वाणी (2:17-18)

मत्ती ने यहूदियों के सामने एक और भविष्यद्वाणी की याद दिलाई। उसने उन्हें यिर्मयाह द्वारा रामाह और "राहेल का अपने बच्चों के लिए विलाप करने" (मत्ती 2:18; यिर्मयाह 31:15) के बारे में बताया। यिर्मयाह की भविष्यद्वाणी, पुराने नियम की कई भविष्यवाणियों की तरह, दोहरा पूर्तिकरण था।

पहली और तत्काल पूर्तिकरण बेबीलोन के आक्रमण और यहूदियों की बंधुआई के समय हुई थी। रामाह बिन्यामीन का एक शहर था, जो यरूशलेम से सिर्फ़ पाँच मील उत्तर में था। जब यरूशलेम का पतन हुआ, तो यिर्मयाह और घेराबंदी के अन्य बचे हुए लोगों को बंदी बना लिया गया और नबूकदनेस्सर द्वारा यिर्मयाह की रिहाई के आदेश से पहले रामाह तक ले जाया गया (यिर्मयाह 39:11-12; 40:1)। रामाह में, यिर्मयाह ने दुखी बंदियों को बेबीलोन की ओर जंजीरों में बांधकर ले जाते हुए देखा। उसने उनके कड़वे आँसू देखे। उसने उन गरीब शोकग्रस्त असहाय लोगों के दुख को भी देखा जो एक उजाड़ भूमि में पीछे रह गए थे। यिर्मयाह ने भविष्यद्वाणी करते हुए पूरे दृश्य को "राहेल अपने लड़कों के लिये रो रही है" के रूप में चित्रित

किया, शायद इसलिए क्योंकि राहेल प्रसव के दौरान मर गई थी। इसके अलावा बिन्यामीन गोत्र के लोग (अब बंदियों में से) उसके वंशज थे। उसकी कब्र बहुत दूर नहीं थी (1 शमूएल 10:2)।

यिर्मयाह की यह सजीव कल्पना कि गोत्र की माता अपनी कब्र से उठकर रो रही है और अपने बच्चों के गुजर जाने के कारण सांत्वना लेने से इनकार कर रही है, बड़ी ही करुणा और दर्द से भरी हुई तस्वीर है। हालाँकि, इस भविष्यद्वाणी की आगे चलकर सम्पूर्ण पूर्तिकरण बैतलहम के बच्चों के नरसंहार में हुई।

च. अगला कदम (2:19-23)

1. एक बदलाव (2:19a)

पद 19 एक महत्वपूर्ण परिवर्तन को दर्शाता है: "हेरोदेस मर गया।"

इतिहास में हेरोदेस महान की मृत्यु से अधिक भयानक दृश्य कहीं और दर्ज नहीं है। उसकी सुन्दरता चली गई थी। वह मोटा, भारी और लगभग गंजा हो गया था। उसके सामने के तीन दाँत टूट गए थे। पश्चाताप की भयावहता से पीड़ित होकर, वह अपनी प्यारी और हत्या की गई पत्नी मरियम्ने और उसके मारे गए बेटों के लिए चिल्लाता रहता था। इसके अलावा हेरोदेस एक घिनौनी बीमारी की चपेट में था। उसके पैर बड़े-बड़े ठूँठ बन गए थे, टखनों पर नौ इंच मोटे थे। वह घावों से भरा हुआ था और देखने में वे भयानक घाव थे। वह बिना पीड़ा के खा नहीं सकता था। बार-बार उसके पहरेदारों को बदलना पड़ता था क्योंकि वे उसके सड़े हुए पेट से निकलने वाली बदबू को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। उसकी साँस से शवगृह की तरह बदबू आती थी। हेरोदेस के पिछले वर्षों के सभी अपराध उसके सत्तर वर्षीय शरीर पर आ गए थे। मृत्यु जीवित व्यक्ति के शरीर पर इस तरह काम कर रही थी मानो वह पहले ही मर चुका हो।

हेरोदेस अपनी मृत्युशय्या पर पीड़ा में कराह रहा था, उसके मन में हत्या के विचार आ रहे थे। वह जानता था कि यहूदी उसकी मृत्यु की खबर सुनकर खुश होंगे, लेकिन वह उन्हें खुश नहीं होने देगा! उसने अपने भाड़े के सैनिकों (अफ्रीकी, सिलिशियन, मिस्री, फारसी) को बुलाया, जिन्होंने वर्षों से यहूदियों के अगुवों को बेरहमी से मार डाला था, और उन्हें यहूदिया के हर शहर, कस्बे और गाँव में जाने, प्रमुख नागरिकों को गिरफ्तार करने, उन्हें जेल में डालने और उनकी अच्छी तरह से रखवाली करने का आदेश दिया। उन सभी कैदियों को खाना खिलाया जाना था और उनकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखा जाना चाहिए था, लेकिन जिस दिन हेरोदेस की मृत्यु होगी, उस दिन उन भाड़े के सैनिकों को उन सभी कैदियों को मार डालना था। "जब मैं मर जाऊँगा," वह चिल्लाया, "तो यहूदी मेरा शोक नहीं मनाएँगे, लेकिन देवताओं के लिए वे अवश्य शोक मनाएँगे।" इसलिए यहूदियों के अगुवों को काल-कोठरियों में बंद कर दिया गया और हेरोदेस की मृत्यु की उल्टी गिनती शुरू हुई।

अपनी मृत्यु से पाँच दिन पहले नारकीय खुशी की एक किरण ने उसके दुखों को हल्का कर दिया। अगस्तुस से हेरोदेस को एक पत्र मिला जिसमें उसके बेटे एंटिपेटर को मृत्युदंड देने का आदेश दिया गया था; और पिता ने बिना समय गँवाए बेटे की मृत्यु का आदेश दे दिया।

फिर से गुस्से ने अंत को तेज कर दिया और फिर खबर आई: हेरोदेस मर चुका है। उसने पैंतीस साल तक अत्याचार और खून-खराबे के साथ शासन किया था। शलोमी (हेरोदेस की बहन) और उसके पति, जिन्हें

भाड़े के सैनिकों को काल-कोठरी में यहूदियों की हत्या करने का संकेत देना था, ने जेल के दरवाजे खोले और बंदियों को आज़ाद कर दिया।

2. एक आदेश (2:19b-20)

मिस्र में यूसुफ को एक काम सौंपा गया था। प्रभु के स्वर्गदूत ने उसे खुशखबरी सुनाई और उसके कदमों को वापस इस्राएल की भूमि की ओर निर्देशित किया। वहाँ पहुँचने पर, पूरा देश उसके सामने था। उसे ईश्वरीय मार्गदर्शन की आवश्यकता थी कि उसे कहाँ बसना चाहिए, अपना घर बनाना चाहिए और अपने व्यवसाय को स्थापित करना चाहिए।

3. एक विकल्प (2:21-23)

वादा किए गए देश में वापस आकर, यूसुफ ने एक और खबर सुनी जिसने उसे फिर से भयभीत कर दिया: हेरोदेस का बेटा अर्खिलाउस अब सिंहासन पर था। हेरोदेस ने अपनी अंतिम इच्छा और वसीयतनामा के द्वारा अपने राज्य को अपने तीन बेटों के बीच विभाजित कर दिया था। अर्खिलाउस को यहूदिया, इदुमिया और सामरिया का हाकिम बनना था; अन्तिपास को गलील और पेरिया का हाकिम बनना था; फिलिप को ट्रैकोनिटिस, इटूरिया, बटेनिया और ऑरानिटिस का हाकिम बनना था। कैसर ने इस व्यवस्था को मंजूरी दे दी।

अर्खिलाउस, जिसने अपने पिता की मृत्यु की रात दोस्तों के साथ मौज-मस्ती करते हुए बिताई थी, ने फसह के समय मंदिर में तीन हज़ार यहूदियों का कत्लेआम करके अपने शासन की शुरुआत की थी। कत्लेआम का कारण यह था कि यहूदियों ने हेरोदेस महान के समय में अत्याचार करने वालों के लिए सज़ा की मांग की थी। नरसंहार के जवाब में, यहूदियों ने रोम से तत्काल अपील की कि अगस्तुस अर्खिलाउस को हटा दे और यहूदिया को रोमी प्रांत बना दे। नौ साल के शासन के बाद अर्खिलाउस को गॉल के विएने में निर्वासित कर दिया गया, जहाँ 6 ईस्वी में उसकी मृत्यु हो गई।

अर्खिलाउस के बाद, यहूदिया को एक रोमी प्रांत घोषित किया गया और क्विरिनियस कैपोनियस, अम्बिवियस, एनियस रूफस, वैलेरियस ग्रेटस और पिन्तेस पिलातुस ने बारी-बारी से शासन किया। यहाँ तक कि, राजदंड की छाया भी यहूदा से दूर हो गई थी।

अर्खिलाउस से भयभीत होकर, यूसुफ थोड़ा हिचकिचाया, फिर से ईश्वरीय मार्गदर्शन प्राप्त किया, फिर गलील की ओर चल पड़ा जहाँ वह नासरत में अपने परिवार समेत बस गया। मत्ती ने इस स्थान के चयन में इस भविष्यद्वाणी को पूरा होते हुए देखा: "वह नासरी कहलाएगा" (2:23)। इसके लिए कुछ स्पष्टीकरण की आवश्यकता है, क्योंकि पुराने नियम में ऐसी कोई प्रत्यक्ष भविष्यद्वाणी नहीं पाई जाती है।

"नासरत" नाम यहूदी शब्द “नेटज़र” से लिया गया है, जिसका अर्थ है "एक अंकुर।" नेटज़र तिरस्कार का एक शब्द था। जब एक पेड़ को काटा जाता है, तो उसके तने से एक छोटा हरा अंकुर फूट निकलता है। एक यहूदी व्यक्ति ऐसी शाखा को देखकर नेटज़र शब्द का इस्तेमाल करता है। "यह केवल एक अंकुर है," वह कहता। "पेड़ चला गया है। यह अंकुर किस काम का है?" इसी तरह नासरत पंद्रह ऊंची पहाड़ियों से घिरा एक छोटा सा शहर था। यह गलील का एक शहर था, एक ऐसा क्षेत्र जिसकी आबादी मिश्रित थी और जिसे यहूदी अक्सर तिरस्कारपूर्वक "अन्यजातियों का गलील" कहते थे।

स्कोफील्ड का कहना है कि संभवतः मत्ती 2:23 में यशायाह 11:1 का संदर्भ शामिल है: “यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकल कर फलवन्त होगी।” “शाखा” उसी शब्द का अनुवाद है जिससे “नासरत” शब्द बना है (नेटज़र)। इस प्रकार नासरी यीशु की पहचान न केवल नासरत से की जाती है, बल्कि पुराने नियम में एक मसीहा की उपाधि से भी की जाती है।[9] हालाँकि यीशु बैतलहम का निवासी था, लेकिन उसने अपने साथ नासरत का नाम रखा, एक ऐसा नाम जो उन लोगों की अवमानना को व्यक्त करता था जिन्होंने उसका तिरस्कार किया और उसे अस्वीकार कर दिया।

गलील हरे-भरे चरागाहों, मुस्कुराते परिदृश्यों, समृद्ध कृषि भूमि और भरपूर आबादी वाला देश था। जोसेफस ने इस क्षेत्र में 240 शहरों और गांवों की गिनती की, जिनमें से प्रत्येक में लगभग पंद्रह हज़ार निवासी रहते थे। उस समय के सभी ज्ञात व्यापार वहाँ फलते -फूलते गए। गलील की सुंदर झील मछुआरों को आकर्षित करती थी, और बहुत से लोग इसकी ढलानों पर रहते थे।

रब्बीवाद की जड़ें गलील में उतनी गहरी नहीं थीं जितनी यरूशलेम में थीं। रब्बीयुक्त मंडलियों में गलील की सभी चीज़ों के लिए एक जानबूझकर की गई अवमानना थी, विशेष रूप से वहाँ बोली जाने वाली बोली, जिसे त्रुटि और गलत उच्चारण की विशेषता के रूप में तिरस्कृत किया जाता था। यहूदियों के बीच एक आम कहावत थी "यदि कोई व्यक्ति धनी बनना चाहता है, तो उसे उत्तर की ओर जाना चाहिए; यदि वह बुद्धिमान बनना चाहता है, तो उसे दक्षिण की ओर आना चाहिए।"

गलील अन्यजातीय दुनिया के करीब था। विदेशियों का एक निरंतर जुलूस दुनिया के मुख्य राजमार्गों में से एक के बाद एक इस क्षेत्र से होकर गुजरता था। यह क्षेत्र उस महान दुनिया का एक किनारा था, और नासरत गलील का एक सुनसान कोना था। उस संकीर्ण नासरत में यीशु वयस्क हुआ। उसने अपने शुरुआती जीवन का लगभग नौ-दसवाँ हिस्सा वहाँ बिताया, लेकिन मत्ती ने पूरे कालखंड को एक ही वाक्य में व्यक्त किया: "और नासरत नाम नगर में जा बसा; ताकि वह वचन पूरा हो, जो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था, कि वह नासरी कहलाएगा॥" (2:23)।

III. राजा का राजदूत (3:1-17)

क. यूहन्ना का आगमन (3:1-12)

1. कालावधि (3:1a)

मसीह के जन्म और बपतिस्मा के बीच की खामोशी, जो सिर्फ़ एक बार टूटी, पूरी तरह से अपने आप में सम्पूर्ण थी। उस खामोशी में कुछ अद्भुत है, कुछ ऐसा जो सुसमाचार के अभिलेख पर परमेश्वर के हस्ताक्षर के साथ अंकित है।

मनुष्य मसीह के जीवन के उन तीस वर्षों के बारे में चुप नहीं बैठ सकता था। वास्तव में वह चुप बैठा भी नहीं। उसने झूठे सुसमाचार की पुस्तकें गढ़ी हैं और उनके बेकार पन्नों को चिन्हों और चमत्कारों से भर दिया है।

उन तीस वर्षों के दौरान एक नई पीढ़ी का उदय हुआ। 17 अगस्त, 14 ईस्वी को कैसर अगस्तुस की मृत्यु हो गई और तिबेरियस, अपने शाही सौतेले पिता के साथ दो साल तक सत्ता साझा करने के बाद, साम्राज्य

का एकमात्र शासक बन गया। तिबेरियस का जन्म 42 ई.पू. में हुआ था और 16 मार्च, 37 ईस्वी में उसकी मृत्यु हो गई। एक निजी नागरिक के रूप में उसने एक योग्य वक्ता, सैनिक और सरकारी सेवक के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई; जब वह कैसर था, तो उसने खुद को आलसी, अनैतिक, दुर्भावनापूर्ण, क्रूर और धोखेबाज़ दिखाया। फिलिस्तीन में कैसरिया फिलिप्पी और तिबेरियस के शहरों का नाम उसके नाम पर रखा गया है।

पवित्रशास्त्र में इस अवधि को प्रभु यीशु के चचेरे भाई, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के आगमन द्वारा चिह्नित किया गया।

2. स्थान (3:1b)

यूहन्ना यहूदिया के जंगल में प्रकट हुआ, जो मृत सागर की पूरी लंबाई तक फैला एक निर्जन क्षेत्र है। हमने शायद सोचा होगा कि ऐसा जंगली स्थान एक ऐसा मुश्किल इलाका रहा होगा जहाँ सुसमाचार प्रचार का मिशन चलाया जा सके।

3. योजना (3:2)

मत्ती ने यूहन्ना का जो पहला शब्द लिखा था वह था "मन फिराओ"! पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता की तरह, यूहन्ना ने राष्ट्रीय विवेक पर प्रहार किया। सदियों की खामोशी एक उपस्थिति, एक घोषणा, एक विधि और एक सेवकाई द्वारा तोड़ी गई जो एलिय्याह की तरह ही चौंकाने वाला था। उस एक शब्द से सभी मतभेद समाप्त हो गए। याजक और चुंगी लेने वाला, अमीर और गरीब, फरीसी और सदूकी, विद्वान रब्बी और साधारण सैनिक - सभी को एक ही तरह के आधार पर रखा गया। पापियों के रूप में, उनके पास परमेश्वर की ओर से केवल एक ही वचन था: "मन-फिराओ: क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।"

नए नियम में 119 अनुच्छेद स्वर्गराज्य का संदर्भ देते हैं। राज्य कलीसिया नहीं है, हालाँकि कलीसिया इसमें शामिल है। यहूदी कलीसिया की तलाश नहीं कर रहे थे; वे एक शाब्दिक राज्य की तलाश कर रहे थे। मत्ती हमेशा राज्य को "स्वर्ग के राज्य" के रूप में संदर्भित करता है। अन्य स्थानों पर इसे "परमेश्वर का राज्य" कहा गया है। इस अंतर का कारण देखने के लिए, हमें अलग हटकर "राज्य" को देखना चाहिए जैसा कि पवित्रशास्त्र में हमारे लिए इसे प्रस्तुत किया गया है, विशेष रूप से नए नियम और मत्ती के सुसमाचार में। (पाठक को यहाँ पर एक बुकमार्क रखना और समय-समय पर निम्नलिखित चर्चा को संदर्भित करना उपयोगी साबित होगा।)

परमेश्वर का हमेशा से यह इरादा रहा है कि वह धरती पर एक राज्य स्थापित करे। जब उसने पृथ्वी बनाई और मनुष्य को अपने स्वरुप और अपनी समानता में बनाया, तब उसने कहा, "वे सब पर अधिकार रखें" (उत्पत्ति 1:26)। मनुष्य के पतन के परिणामस्वरूप उस अधिकार का हस्तांतरण उसके हाथों से शैतान के पास चला गया, जिसे हमारे सामने "इस संसार का सरदार" के रूप में प्रस्तुत किया गया है (यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11)। उसी क्षमता से उसने इस पृथ्वी के राज्यों को मसीह के सामने - एक कीमत पर - देने की पेशकश की थी (मत्ती 4:8-10)।

मूसा की व्यवस्था में राज्य की आशा की गई थी (व्यवस्थाविवरण 17:14-20)। इस्राएल ने इसलिए पाप नहीं किया क्योंकि वे एक राजा चाहते थे, बल्कि इसलिए क्योंकि वे गलत उद्देश्य से ऐसा चाहते थे और परमेश्वर के समय से पहले पृथ्वी पर राजतंत्र को स्थापित करना चाहते थे (1 शमूएल 8)।

समय आने पर दाऊद के द्वारा राज्य स्थापित हुआ, जिसके साथ परमेश्वर ने एक वाचा बाँधी (2 शमूएल 7)। इसका सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा यह बताता है कि दाऊद के वंश से परमेश्वर का सच्चा राजा आएगा (7:12-13)।

दाऊद और सुलैमान की मृत्यु के बाद, पतन तेज़ी से शुरू हुआ। दाऊद का राज्य विभाजित हो गया और अंततः उत्तरी और दक्षिणी दोनों भाग आक्रमणकारियों के हाथों में चले गए। राज्य लगभग समाप्त हो गया, लेकिन वाचा कायम रही। सदियों तक चुप्पी रही और फिर यूहन्ना बपतिस्मादाता स्वर्ग के राज्य के बारे में प्रचार करते हुए आया।

राज्य का वर्णन करने के लिए मत्ती का विशिष्ट वाक्यांश "स्वर्ग का राज्य" (शाब्दिक रूप से, "स्वर्गों का राज्य") है। यह वाक्यांश, जिसे उसने इकतीस बार इस्तेमाल किया, दानिय्येल की पुस्तक से लिया गया है, जहाँ हम पढ़ते हैं कि नबूकदनेस्सर को यह सिखाया गया था कि "स्वर्ग शासन करता है" (दान 4:26)। (नबूकदनेस्सर वह राजा था जिसने इस्राएल पर अन्यजातियों के प्रभुत्व की अवधि की शुरुआत की थी जिसे "अन्यजातियों का समय" [लूका 21:24] के रूप में जाना जाता है।) उसे पहले ही बता दिया गया था कि जब पृथ्वी पर अन्यजातियों का कुशासन अंततः मसीह विरोधी के शासनकाल के दौरान चरम पर पहुँच जाएगा, तो "स्वर्ग का परमेश्वर" पृथ्वी पर एक राज्य स्थापित करेगा (दानिय्येल 2:44-45)। दानिय्येल को स्वयं इस राज्य का एक प्रमाणिक दर्शन दिया गया था (दान 7:13-14,27)।

इसलिए आने वाला सहस्त्राब्दी राज्य ही वह "स्वर्ग का राज्य" है, वह समय जब स्वर्ग से परमेश्वर का न्यायसंगत राजा पृथ्वी के राष्ट्रों पर शासन करेगा, जब यरूशलेम एक सच्चे वैश्विक साम्राज्य की राजधानी होगा, और जब इस्राएल के गोत्र मसीह और उसके प्रेरितों के अधीन प्रशासक होंगे (मत्ती 19:28; लूका 22:30)। सहस्त्राब्दी राज्य में पृथ्वी को उसके अदन के वैभव में पुनःस्थापित किया जाएगा, जिसे आदम के पतन के कारण खो दिया गया था (इब्रानियों 2:5-9)। यह पुराने नियम के विभिन्न भविष्यद्वक्ताओं का पसंदीदा विषय है। आने वाले सहस्त्राब्दी राज्य को "स्वर्ग का राज्य" इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह पृथ्वी पर स्वर्ग के शासन का समय है।

मत्ती में इस राज्य के दो चरण देखे जा सकते हैं। सबसे पहले राजा को प्रस्तुत किया गया। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने घोषणा की कि स्वर्ग का राज्य निकट है (3:2)। प्रभु यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई शुरू करते ही इस तथ्य की पुष्टि की थी (4:17)।

यदि यहूदियों ने यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार कर लिया होता, तो राष्ट्रीय की पुनर्स्थापना हो जाती। यीशु द्वारा हमें सिखाई गई प्रार्थना का तुरंत उत्तर मिल जाता: “तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे ही पृथ्वी पर भी हो” (6:10)। इसमें कोई संदेह नहीं कि यहूदा ने फिर भी मसीह को धोखा दिया होता, लेकिन रोमियों के लिए, जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया होता। तीन दिन बाद उनका सामना एक पुनरुथानित राजा से होता जो अन्य-जातियों के कुशासन को शीघ्र समाप्त करने के लिए दृढ़ संकल्पित था। दानिय्येल द्वारा वर्णित अंतिम समय की घटनाएँ तेजी से पूरी होतीं और राज्य की स्थापना हो जाती।

हालाँकि, यहूदियों ने राजा को स्वीकार नहीं किया। उनका तिरस्कार एक परिवर्तन ले आया, जिसे परमेश्वर ने पहले से ही देख लिया था, लेकिन जरूरी नहीं कि वह अनिवार्य हो। राज्य के सुसमाचार का प्रचार अब नहीं किया जाता।

आज हम जो सुसमाचार प्रचार करते हैं (पौलुस ने रोमियों 2:16 में इसे "मेरा सुसमाचार" कहा है) वह राज्य का सुसमाचार नहीं है, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार है अर्थात् यीशु मसीह का सुसमाचार है (प्रेरितों के काम 20:24; 1 कुरिन्थियों 9:17-18; 2 कुरिन्थियों 4:4)। मसीह की मृत्यु के बाद प्रेरितों ने कभी भी राज्य के सुसमाचार का उल्लेख नहीं किया। लेकिन जैतून पहाड़ी के उपदेश में यीशु ने भविष्यद्वाणी की थी कि राज्य का सुसमाचार अंत से पहले फिर से प्रचारित किया जाएगा।

मत्ती 24:14 में "अंत" के लिए अनूदित शब्द टेलोस है, जिसका अर्थ है "बिल्कुल अंत।" उस समय तक कलीसिया हटा दी जाएगी और अनुग्रह के इस वर्तमान युग में परमेश्वर के उद्देश्य पूरे हो चुके होंगे। महाक्लेश के काल के दौरान यह शुभ समाचार घोषित किया जाएगा कि शैतान का शासन मिटा दिया जाएगा और स्वयं मसीह राज्य करने वाला है। वह शुभ समाचार ही राज्य का सुसमाचार है। इसका सीधा संदर्भ मेम्ने के लहू द्वारा उद्धार से नहीं, बल्कि उस उद्धार के परिणाम से है।

यीशु के दिनों के यहूदियों ने अपने राजा का तिरस्कार कर दिया था। उनके अगुवे स्पष्ट रूप से इस गलत विचार के अंतर्गत काम कर रहे थे कि राज्य के आने का अर्थ मौजूदा यहूदी व्यवस्था की निरंतरता होगी। उन्हें यकीन था कि मसीहा उन्हें उनके पदों पर स्थापित करेगा और उनके प्रशासकों के रूप में एक वैश्विक साम्राज्य स्थापित करके उनके प्रभाव और सामर्थ्य का विस्तार करेगा।

यहूदी अगुवे यूहन्ना की इस मांग से अचंभित थे कि वे सभी मन फिराएँ। वे निश्चित रूप से नए आदेश की अनिवार्य आत्मिक प्रकृति के लिए तैयार नहीं थे। मत्ती, क्रूस के ओर से तथा यरूशलेम के आने वाले विनाश और यहूदी राष्ट्रीय जीवन के सदियों पुराने विघटन के करीब से लिखते हुए, स्पष्ट रूप से देख सकता था कि यूहन्ना और यीशु अपने विध्वसंक शब्द "मन-फिराव" के साथ किस बात का न्यौता दे रहे थे।

जब यहूदियों ने आधिकारिक तौर पर राजा को अस्वीकार कर दिया, तो राज्य को स्थगित कर दिया गया (स्वर्ग के राज्य का दूसरा प्रत्यक्ष चरण)। मत्ती 13 भेद के दृष्टांतों को दर्ज करता है, जो अनुग्रह के वर्तमान युग (एक राष्ट्र के रूप में यहूदी लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार का एक हिस्सा) के साथ राज्य के संबंध को दर्शाता है। स्वर्ग राज्य से संबंधित कई अन्य दृष्टांत (उदाहरण के लिए मत्ती 25 में) इसके पीछे दिए गये हैं, लेकिन उनका संबंध वर्तमान युग के दौरान मसीही सेवकाई के क्षेत्र से है।[10]

वर्तमान कलीसियाई युग के दौरान अनुग्रह के अंतर्गत परमेश्वर के उद्देश्यों की पूर्णता के साथ, परमेश्वर इस्राएल राष्ट्र के साथ अपने प्रत्यक्ष व्यवहार को फिर से आरंभ करेगा और अपने राज्य के उद्देश्यों को पूरा करेगा। स्वर्ग का राज्य आएगा, क्योंकि सहस्राब्दी राज्य के परमेश्वर के वायदे रद्द नहीं किए गए हैं; उन्हें केवल स्थगित कर दिया गया है। परमेश्वर उन सभी "अत्यंत महान और बहुमूल्य वादों" को शाब्दिक रूप से पूरा करने का इरादा रखता हैं जो मसीह के दूसरे आगमन पर केंद्रित हैं, ठीक उसी तरह जैसे उसने शाब्दिक और ऐतिहासिक रूप से उन भविष्यवाणियों को पूरा किया, जैसा कि हम अब देख सकते हैं, जो मसीह के पहले आगमन पर केंद्रित थे।[11]

इसके समानार्थी अभिव्यक्ति "परमेश्वर का राज्य" पर कुछ टिप्पणी की यहाँ आवश्यकता है। यह मत्ती में केवल पाँच बार पाया जाता है, लेकिन अन्य स्थानों में राज्य के लिए सामान्य वाक्यांश दिए गए है। "परमेश्वर का राज्य" "स्वर्ग के राज्य" की तुलना में कहीं अधिक व्यापक शब्द है, जिसका उपयोग केवल मत्ती ने किया था, और यह उचित भी है क्योंकि वह मुख्य रूप से यहूदियों के लिए लिख रहा था।

स्वर्ग के राज्य के विपरीत परमेश्वर के राज्य के बारे में तीन बातें कही जा सकती हैं। सबसे पहले, परमेश्वर का राज्य सार्वभौमिक है, जिसमें वे सभी सृजे गए प्राणी शामिल हैं जो स्वेच्छा से परमेश्वर के शासन और संप्रभुता को अपनाते हैं: स्वर्गदूत; अन्य युगों के संत; और विश्वासी जो इस युग में परमेश्वर के अनुग्रह से बचाए गए हैं और पवित्र आत्मा द्वारा मसीह की रहस्यमय देह, अर्थात् कलीसिया में बपतिस्मा लेते हैं (लूका 13:28-29; इब्रानियों 12:22-23)। इसके विपरीत, स्वर्ग का राज्य मसीहा और सहस्राब्दी से संबंधित है और इसका लक्ष्य इस पृथ्वी पर परमेश्वर के वास्तविक राज्य की स्थापना करना है।

चूँकि स्वर्ग का राज्य परमेश्वर के सार्वभौमिक राज्य का सांसारिक क्षेत्र है, इसलिए दोनों में बहुत कुछ समानता भी है। इस प्रकार मत्ती में स्वर्ग के राज्य से संबंधित कुछ दृष्टांत मरकुस और लूका में परमेश्वर के राज्य के संबंध में बताए गए हैं।[12]

दूसरा, परमेश्वर का राज्य - प्रेरितों के उपदेश का विषय (प्रेरितों के काम 28:31) - आत्मिक है और इसमें केवल नए जन्म के द्वारा ही प्रवेश किया जा सकता है (यूहन्ना 3:3-7)। राज्य बाहरी दिखावे से नहीं आता (लूका 17:20), बल्कि यह आंतरिक है (रोमियों 14:17)। दूसरी ओर, स्वर्ग के राज्य में शारीरिक और सांसारिक तत्व शामिल हैं, जैसा कि मत्ती 13 के दृष्टांतों से स्पष्ट होता है।

तीसरा, परमेश्वर का राज्य अनंत है। मसीह के शासन के विरुद्ध सार्वभौमिक विद्रोह के साथ सहस्राब्दी युग के अंत में सांसारिक चरण समाप्त हो जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:1-10)। स्वर्ग का राज्य परमेश्वर के राज्य में विलीन हो जाएगा और उसकी जगह अनंत राज्य ले लेगा (1 कुरिन्थियों 15:24-28)।

स्वर्ग के राज्य का लक्ष्य पृथ्वी पर ईश्वरीय अधिकार की पुनर्स्थापना करना है, जो परमेश्वर के सार्वभौमिक साम्राज्य में एक विद्रोही प्रांत है। पुनर्स्थापना अनंत काल से उस उद्देश्य के लिए निर्धारित समय अवधि में होगी।

कलीसिया सार्वभौमिक, आत्मिक और अनंत है, लेकिन यह परमेश्वर के राज्य से अलग है। हम कलीसिया में जन्म से नहीं, बल्कि बपतिस्मा द्वारा आते हैं (1 कुरिन्थियों 12:13)। आज विश्वासी परमेश्वर के राज्य और कलीसिया दोनों में हैं।

4. भविष्यद्वक्ता (3:3)

यूहन्ना बपतिस्मादाता की आवाज़ ने चार सौ साल की खामोशी को भंग कर दिया। वह एलिय्याह की आत्मा, सामर्थ्य और स्वरुप के साथ आया। यूहन्ना, जिसके आने की भविष्यद्वाणी भविष्यद्वक्ता यशायाह ने (यशायाह 40:3) की थी, दावा किया कि वह "जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द" है (मत्ती 3:3)। किसी अन्य भविष्यद्वक्ता ने जंगल को अपने प्रचार का स्थल नहीं बनाया। आज कोई भी सार्वजनिक प्रचारक लोगों के निवासस्थान से दूर प्रचार करना कभी शुरू नहीं करेगा, लेकिन यूहन्ना ने ऐसा किया। वह लोगों के पास नहीं

गया; उसका आकर्षण और उसके संदेश की सामर्थ्य और अधिकार इतना महान था कि लोग उसके पास खुद चलकर आए।

यशायाह की भविष्यद्वाणी में आने वाले विजयी मसीह के मार्ग से सभी बाधाओं को हटाने की कल्पना की गई थी (यशायाह 40:4)। इसमें कोई संदेह नहीं कि पहाड़ों को समतल करने और घाटियों को भरने का संदर्भ नैतिक था। यूहन्ना को सुनने आए सैकड़ों लोग - परिष्कृत उपनगरीय से लेकर देहाती प्रांतीय क्षेत्र तक - प्रचारक द्वारा उनकी ऊबड़-खाबड़ आत्मिक आवश्यकता के एक ही स्तर पर आ पहुँचे।

5. व्यक्ति (3:4)

जब लोग वहाँ पहुँचे तो उन्होंने एक तपस्वी को देखा, जो ऊँट के रोम का वस्त्र पहने हुए था। ऊँट के मोटे बालों का इस्तेमाल आम तौर पर तंबू और खुरदरे लबादे बनाने के लिए किया जाता था। एलिय्याह ने सांसारिक विलासिता के विरूद्ध विरोध के तौर पर ऐसे कपड़े पहने थे जो उसके दिनों में इस्राएल के चरित्र को कमज़ोर कर रहे थे। यूहन्ना ने इसे यूनानी संस्कृति के व्यापक प्रभाव के विरूद्ध विरोध के तौर पर पहना था, जिसने इस तरह की तबाही मचाई थी, खास तौर पर इस्राएली समाज के उच्च वर्ग के यूनानीकरण (हेलेनाइज़ेशन) में। यूहन्ना ने अपनी कमर के चारों ओर चमड़े का पटुका पहन रखा था। उस समय के धनवान लोग महंगे सन या रेशम के कमरबंद पहनते थे, जो अक्सर चांदी या सोने से बने होते थे। यूहन्ना ने इस तरह के अलंकरणों का तिरस्कार किया।

वह एलिय्याह जैसा एक भविष्यद्वक्ता था जो टिड्डियाँ (मूसा की व्यवस्था के अंतर्गत शुद्ध था; लैव्यव्यवस्था 11:22 देखें) और जंगली मधु खाकर अपना पेट भरता था। यूहन्ना के दिन उपवास और प्रार्थना में बीतते थे, और वह जो खाना खाता था - सबसे गरीब लोगों का साधारण भोजन - वह भी शासक वर्ग की समृद्धि के विरूद्ध एक और विरोध था।

यूहन्ना केवल और केवल एक ही चीज़ के लिए जिया: अपने युग के लोगों की विवेक (अंतरात्मा) को जगाने की आवाज़ बनना। उसकी आवाज़ में सच्चाई की ऐसी झलक थी और उसके जीवन में ईमानदारी का ऐसा प्रमाण था कि लोग उसकी बात पर प्रतिक्रिया देते थे।

उसका जन्म लेवी के गोत्र के हारून के घराने के याजकीय परिवार में हुआ था। यूहन्ना अपनी लगन और दृढ़ विश्वास के साथ, इस्राएल के महायाजक के पद पर शीर्ष पर पहुँचने के लिए विवश हो सकता था। लेकिन जीवन के आरंभ में ही उसने रब्बियों के स्कूलों और कठोर याजकीय प्रशिक्षण को त्याग दिया। उसने फैसला किया कि इस्राएल को हारून के क्रम के अनुसार किसी अन्य याजक की नहीं, बल्कि एलिय्याह के व्यवस्था के अनुसार किसी भविष्यद्वक्ता की आवश्यकता है। और वह ऐसा ही एक व्यक्ति बन गया।

6. लोग (3:5-6)

भीड़ की भीड़ यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के ऊपरी और निचने स्थानों से उसके पास आती थी - अर्थात्, वे यहाँ, वहाँ और हर जगह से उसके पास आते थे। यूहन्ना शहर और देश में चर्चा का विषय बन गया था। यह अनुमान लगाया गया है कि कम से कम दस लाख लोग उसे सुनने के लिए आए थे। जो लोग

पाप के व्यक्तिगत बोध के कारण आए थे और मसीह के आगमन के निकट होने के बारे में आश्वस्त थे, उन्होंने अपने पापों का अंगीकार किया और यरदन नदी में बपतिस्मा लिया।

7. घोषणा (3:7-12)

यूहन्ना के आने और यहूदियों के उसके पास आने का वर्णन करने के बाद, मत्ती ने हमें यूहन्ना के संदेश का एक नमूना देने के लिए एक विराम लिया। यह तीन गुना घोषणा थी।

क. इस्राएल के अगुवों का भ्रष्टाचार (3:7-9)

(1) उनका विष (3:7)

घोषणा का पहला पहलू इस्राएल के अगुवों के भ्रष्टाचार से संबंधित था। उन्हें "सांप के बच्चों..." कहते हुए, यूहन्ना ने फरीसी और सदूकी दोनों के कान को दाग दिया। वे विष से भरे हुए लोग थे।

मत्ती 3:7 में हम इन महत्वपूर्ण संप्रदायों का पहला उल्लेख पाते हैं, जो पुराने नियम के समय में अज्ञात थे। फरीसियों का संप्रदाय मैकाबीन काल में उभरा था। उन्हें उनके शत्रुओं द्वारा अलगाववादी कहा जाता था क्योंकि उन्होंने खुद को हेलेनाइजर्स अर्थात् अपने समय के राजनीतिक अवसरवादी और उदारवादियों से अलग कर लिया था। फरीसी खुद को व्यवस्था और उसकी परंपराओं के संरक्षक के रूप में देखते थे। वे तथाकथित मौखिक व्यवस्था के बारे में भी उतने ही उत्साही थे - रीति-रिवाजों का एक निरंतर बढ़ता हुआ, बोझिल और लगभग बेकार इकाई जो उनके विचार से अपने महत्व में तेजी से बाइबल का स्थान ले रहा था।

सदूकियों का महत्व भी मैकाबीज़ के समय में ही बढ़ा। वे यहूदियों के बीच कुलीन और राजनीतिज्ञ थे। सदूकियों, जो उस समय के धार्मिक उदारवादी और मानवतावादी थे, ने यहूदी धर्म को धर्मनिरपेक्ष बना दिया होता, उसे मूर्तिपूजक बना दिया होता और अगर उनका प्रभाव होता तो उसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया होता। उन्होंने आत्माओं के अस्तित्व, पुनरुत्थान और आत्मा की अमरता को नकार दिया और मौखिक व्यवस्था को अस्वीकार कर दिया। आम तौर पर वे उच्च पद के धनी व्यक्ति थे और अक्सर वे याजकीय वर्ग के सदस्य होते थे। वास्तव में उच्च महायाजकीय परिवार पार्टी समूह से संबंधित थे। यूनानियों के हेलेनाइजिंग प्रभाव के आगे झुकने और अरस्तू के दर्शन के सिद्धांतों को अपनाने के बाद, सदूकियों ने किसी भी सिद्धांत को स्वीकार करने से इनकार कर दिया जिसे वे शुद्ध तर्क से साबित नहीं कर सकते थे। उनका एकमात्र निहित स्वार्थ मंदिर था।

सुसमाचारों में हम देखते हैं कि फरीसी परमेश्वर के पुत्र को अस्वीकार करने में अग्रणी भूमिका निभाते हैं, हालाँकि दोनों पक्ष सामान रूप से दोषी थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम देखते हैं कि सदूकियों ने परमेश्वर के आत्मा को अस्वीकार करने में अग्रणी भूमिका निभाई। दोनों को यूहन्ना बपतिस्मादाता ने "साँप" कहा था। साँप शैतान का प्रतीक है; वास्तव में यीशु ने यहूदी अगुवों से कहा कि वे शैतान के बच्चे हैं (यूहन्ना 8:44)। यूहन्ना बपतिस्मादाता ने उन्हें "आने वाले क्रोध" की याद दिलाई।

(2) उनकी व्यर्थता (3:8-9)

पुराने नियम के कई भविष्यद्वक्ताओं ने चेतावनी दी थी कि प्रभु के आगमन के साथ दुष्टों पर क्रोध का प्रकोप भी पड़ेगा, लेकिन यहूदियों ने सुविधापूर्वक इस तरह के सभी प्रकोपों को अन्यजातियों की ओर मोड़ दिया। स्व-धर्मी फरीसी और तिरस्कार करने वाले सदूकी इस नए भविष्यद्वक्ता को चेतावनी देते हुए सुनकर हैरान रह गए। क्या वे अब्राहम की संतान नहीं थे? क्या इससे उन्हें राज्य में स्वतः ही विशेष दर्जा नहीं मिल गया? यूहन्ना ने उस स्थिति को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया: "अपने मन में यह न सोचो कि हमारा पिता अब्राहम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिए सन्तान उत्पन्न कर सकता है" (मत्ती 3:9)। कई वर्षों बाद पौलुस ने अपने "देह पर भरोसा" का वर्णन किया और बताया कि मसीह की एक झलक ने उसके सभी नस्लीय और धार्मिक अनुमानों को कैसे खत्म कर दिया (फिलिप्पियों 3:4-9)।

ख. इस्राएल की भूमि के विजेता (3:10)

यूहन्ना की घोषणा का दूसरा पहलू इस्राएल की भूमि के विजेताओं से संबंधित था। मत्ती 3:10 में यशायाह 10:33-11:1 का एक संकेत हो सकता है। पेड़ों को काटने के इस संदर्भ में, यहूदी टिप्पणीकारों ने यरूशलेम के विनाश की भविष्यद्वाणी देखी, जिसका उन्होंने अनुमान लगाया कि यह मसीहा के आने से तुरंत पहले होगा। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जकर्याह 12:1-14 यरूशलेम को घेरने वाली अंतिम समय की विपत्तियाँ और शहर को उसके अंतिम छोर पर बचाने के लिए मसीहा के आने की भविष्यद्वाणी करता है; उस समय यहूदी उसे देखेंगे "जिसे उन्होंने बेधा था" (12:10)।

जब मत्ती ने यूहन्ना बपतिस्मादाता के इन कठोर वचनों को याद किया और लिखा- “और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है” - रोम की लोहे की एड़ी के नीचे भूमि उजाड़ पड़ी थी, जो यहूदी विद्रोह का बदला ले रही थी। यरूशलेम को भी घेर लिया गया था और लूट लिया गया था। राजा के शासन में आने से पहले वही सब फिर से होगा, जैसा कि जकर्याह ने भविष्यद्वाणी की थी। इसलिए जबकि यूहन्ना निस्संदेह यहूदी अगुवों के कठोर विवेक और पेड़ की तरह, ऊँचे, हरे-भरे गर्व को निशाना बना रहा था, लेकिन उसके वचनों में एक अशुभ भविष्यद्वाणी भी थी।

ग. इस्राएल के प्रभु का आगमन (3:11-12)

(1) उसकी सामर्थ्य (3:11a)

यूहन्ना की घोषणा का तीसरा पहलू इस्राएल के प्रभु के आगमन से संबंधित था। यूहन्ना ने कहा, “जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है।” यूहन्ना अपने तरीके से सामर्थ्यशाली था। उसने देश की कल्पना और विवेक पर कब्ज़ा कर लिया था। उसने इस्राएल में मसीहा की आशा को फिर से जगाया जो सदियों से उपेक्षा की राख में दबी पड़ी हुई थीं।

मलाकी और मत्ती के बीच चार सौ साल तक कई आक्रमण, सताव, उपद्रव और अपमान का दौर आया और चला गया। फारसियों ने यूनानियों के सामने हार मान ली थी। फिर यूनानी साम्राज्य ढह गया। वादा किया गया देश मिस्र और सीरिया के राजाओं की भयंकर प्रतिद्वंद्विता में कराहता हुआ, खून से लथपथ युद्ध का मैदान बन गया था। एंटिओकस एपिफेन्स यहूदियों के लिए वास्तव में एक मसीह-विरोधी बन गया था। मैकाबीज़ आए - हसमोनियों ने इस्राएल की भूमि पर शासन किया और उस युग की भावना के आगे

नतमस्तक हो गए। फिर रोमी आए। हेरोदेस आया। रब्बियों की व्याख्यात्मक बेतुकी बातें प्रतिक्रियावादी हेलेनिस्टिक तर्कवाद के साथ-साथ अपनी जड़ें जमा चुकी थीं।

अब उग्र कट्टरपंथी वहाँ के निराश और हताश किसानों के साथ कंधे से कंधा मिला रहे थे। एक पीढ़ी पहले, हेरोदेस के जानलेवा संदेह और बैतलहम में एक राजा के जन्म की अफवाहों पर केंद्रित रुचि की झड़ी लग गई थी। लेकिन वह तीस साल पहले की बात है; लोगों की उम्मीदें धरी की धरी रह गई थीं। यहूदी कह सकते थे, "उसके आने की प्रतिज्ञा कहां गई? क्योंकि जब से बाप-दादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है, जैसा सृष्टि के आरम्भ से था?" (2 पतरस 3:4)।

यूहन्ना बपतिस्मादाता ने अपनी घोषणा से पूरे देश में हलचल मचा दिया। यूहन्ना सामर्थी था, लेकिन जिसकी उसने घोषणा की वह उससे कहीं ज़्यादा सामर्थी था - जैसे आकाश पृथ्वी से ऊँचा है और जैसे सृष्टिकर्ता अपनी सबसे सामर्थी सृष्टि से भी ज़्यादा सामर्थी है।

(2) उसकी सेवकाई (3:11b - 12)

यूहन्ना ने आने वाले प्रभु की त्रिगुणात्मक सेवकाई की भी घोषणा की।

(क) बपतिस्मा देने की सेवकाई (3:11b)

मसीहा के बारे में बोलते हुए, जो अब प्रकट होने ही वाला है, यूहन्ना ने कहा, “मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु ...वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।” यूहन्ना को खुद भी इस बात का अंदाजा नहीं था कि उस कथन में मनुष्यों के साथ परमेश्वर के व्यवहार में कितनी क्रांतिकारी अवधारणा शामिल थी।[13] पुराने नियम के समय में कभी किसी को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा नहीं दिया गया था। लोगों को पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किया गया था, आत्मा द्वारा अभिषिक्त किया गया था, आत्मा द्वारा अगुवाई दी गई था, और आत्मा द्वारा सशक्त किया गया था, लेकिन पवित्र आत्मा में बपतिस्मा नहीं दिया गया था। हालाँकि, आने वाला राजा पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा। यह उसकी सेवकाई में से एक होगा।

(ख) एक ज्वलंत सेवकाई (3:11c-12a)

यूहन्ना ने कहा कि मसीह "आग से" बपतिस्मा देगा (3:11c)। पूरा मसीही युग बपतिस्मा और आग के बीच में है। मत्ती ने इस अवधारणा को समझा, लेकिन यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने नहीं, और मत्ती यूहन्ना के उपदेश को दर्ज कर रहा था। पुराने नियम के कई भविष्यद्वक्ताओं की तरह, यूहन्ना मसीह के दो आगमनों को एक साथ लेकर आया, इस साधारण कारण से कि बीच का कलीसिया युग न तो उसे और न ही पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को प्रकट किया गया था। यदि यहूदियों ने यीशु को अपना मसीहा स्वीकार कर लिया होता, तो बपतिस्मा और आग के बीच कोई कलीसियाई युग नहीं डाला जाता।

(ग) एक आशीष की सेवकाई (3:12b)

बपतिस्मा देने और आग की सेवकाई के अलावा, मसीहा के पास आशीष देने वाली सेवकाई भी होगी। भूसी तो हटा दी जाएगी, लेकिन गेहूँ को उसके खत्ते में इकट्ठा किया जाएगा।

ख. यीशु का आगमन (3:13-17)

1. उस आगमन के विषय में एक अभ्यास (3:13-15)

क. यूहन्ना का स्पष्टीकरण (3:13-14)

यूहन्ना का बपतिस्मा डुबकी द्वारा दिया जाता था, जो कि नए नियम में ज्ञात एकमात्र प्रकार का जल-बपतिस्मा है। "बपतिस्मा" के लिए अनूदित यूनानी शब्द बपतिज़ो है, जो कि एक अन्य यूनानी शब्द, बप्तो से संबंधित है। बप्तो का उपयोग लोहार द्वारा लोहे के टुकड़े को ठंडे पानी की बाल्टी में डुबोकर उसे सख्त करने, या कपड़े के टुकड़े को रंग के टब में डुबोने, या डूबे हुए जहाज के वर्णन के संदर्भ में किया जाता है। बप्तो का अर्थ है "डुबोना, डुबाना।" इसका उपयोग कभी भी "छिड़कने" के अर्थ में नहीं किया जाता है; यूनानियों के पास उस विचार को व्यक्त करने के लिए एक और शब्द, रैन्टिज़ो था।

यूहन्ना का बपतिस्मा परमेश्वर द्वारा स्थापित किया गया था (यूहन्ना 1:33), ठीक वैसे ही जैसे मसीही बपतिस्मा बाद में यीशु मसीह द्वारा स्थापित किया गया था (मत्ती 28:19)। यूहन्ना ने यरदन में मन फिराने वाले पापियों को बपतिस्मा दिया, जो पवित्रशास्त्र के अनुसार मृत्यु की नदी के सदृश्य है। लेबनान के पहाड़ों में अपने स्रोत से, यरदन एक टेढ़ी-मेढ़ी घाटी से होकर दक्षिण की ओर बहती है जब तक कि यह मृत सागर (समुद्र तल से लगभग चौदह सौ फीट नीचे) के शुष्क जल में समा नहीं जाती, जहाँ से वाष्पीकरण के अलावा इसका कोई निकास नहीं है। नासरत से यरदन के घाट तक सत्तर या अस्सी मील की दूरी थी - नदी का वही हिस्सा जो कभी वादा किए गए देश में इस्राएल के चमत्कारी मार्ग के लिए खुला था।

अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए जो करना था (देखें यूहन्ना 8:29), इसलिए यीशु यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के स्पष्ट उद्देश्य से "गलील से यरदन" आया (मत्ती 3:13)। यीशु किसी भावना में आकर काम नहीं कर रहा था; यरदन में बपतिस्मा लेना "पिता के कार्य" (लूका 2:49) का हिस्सा था जो हमेशा प्रभु यीशु के मन में रहता था। वह जानबूझकर किए गए हृदय अभ्यास - जानबूझकर किए गए मनन, प्रार्थना और परमेश्वर की इच्छा के प्रति संवेदनशीलता के परिणामस्वरूप आया था।

यूहन्ना ने तुरंत विरोध किया। मत्ती 3:14 कहता है, "यूहन्ना उसे रोकने लगा।" "रोकने" का अनूदित शब्द डायकोलू है, जिसका केवल यहीं पर इस्तेमाल होता है। कुछ लोगों ने इसका अनुवाद "बाधा उत्पन्न कर रहा था" के रूप में किया है। यूहन्ना, जो कि परमेश्वर का पवित्र जन था, जानता था कि वह देहधारण किए हुए और पूर्ण पवित्रता की उपस्थिति में था। वह यह नहीं देख सकता था कि जो व्यक्ति "पवित्र, निष्कलंक, निर्दोष, पापियों से अलग" (इब्रानियों 7:26) था, वह पश्चाताप के बपतिस्मा में यरदन में कैसे डुबकी लगा सकता है। यूहन्ना, जो कि आत्मिक रूप से संवेदनशील व्यक्ति था, ने यीशु की उपस्थिति में पाप और अयोग्यता के बारे में एक गहरी आंतरिक बोध को महसूस किया। "मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यक्ता है," उसने अंगीकार किया। लेकिन पवित्र आत्मा कहता है कि यूहन्ना यीशु को "रोकने लगा"। यहां तक कि परमेश्वर के सभी संतों में से सबसे महान व्यक्ति भी रास्ते में आ सकते हैं। यूहन्ना का सविनय प्रतिवाद पाप था और "परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा" को पूरा करने में बाधा पैदा कर रहा था (रोमियों 12:2)।

ख. यीशु का स्पष्टीकरण (3:15)

यीशु का स्पष्टीकरण दया से भरा लेकिन दृढ़ था: “अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।” प्रभु का बपतिस्मा लेने का उद्देश्य दो बातों को पूरा करना था। इसका प्रारंभिक उद्देश्य पापियों के उद्धारकर्ता की पहचान उन लोगों के साथ करना था जिन्हें वह बचाने के लिए आया था। वह स्वयं पाप रहित था, लेकिन एक पापी व्यक्ति के हाथों पश्चाताप का बपतिस्मा स्वीकार करके, उसने स्वेच्छा से खुद को आदम के पतन में गिरी मनुष्यजाति के साथ अपनी पहचान कराई।

यरदन के ठंडे पानी में प्रभु के डूबकर बपतिस्मा लेने का दूसरा उद्देश्य मृत्यु की बर्फीली नदी में उसके अंतिम विसर्जन को चित्रित करना था। बाद में, आखिरी बार यरूशलेम जाते समय, प्रभु ने अपनी मृत्यु को बपतिस्मा के रूप में संदर्भित किया (मत्ती 20:22-23)। जिस तरह वह यरदन के जल में डूबा था, उसी तरह वह अपनी पीड़ा से अभिभूत होकर मृत्यु में डूबेगा। और जिस तरह बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति को पानी से बाहर निकाला जाता है, उसी तरह वह मृतकों में से फिर से जी उठेगा।

2. एक अनुभव जो उस आगमन की पुष्टि करता है (3:16-17)

इसलिए यीशु यरदन में अपनी बात पर दृढ़ रहा और यूहन्ना ने उसे पानी में डुबकी का बपतिस्मा दिया। जब वह पानी से बाहर आया तो उसे दोहरा पुष्टिकरण का अनुभव दिया गया।

क. आत्मा का अभिषेक (3:16)

सबसे पहले, पवित्र आत्मा कबूतर की नाई उस पर उतरा और उस पर ठहर गया। यह मसीह का उसकी सार्वजनिक सेवकाई के लिए अभिषेक था। वही आत्मा "जल के ऊपर" मंडरा रहा था (उत्पत्ति 1:2)। और मनुष्य के पतन के बाद से, वह मनुष्यों के पुत्रों के ऊपर मंडला रहा था और ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहा था जिस पर वह विश्राम कर सके। नूह ने, न्याय के जल के कम होने के बाद, एक कबूतर भेजा जो शांत-घटते पानी के ऊपर इधर-उधर उड़ता रहा, लेकिन कोई ठिकाना न पाकर, जहाज़ में वापस लौट आया। इसी तरह सदियों से, परमेश्वर के आत्मा रूपी कबूतर को मनुष्य जाति के अशांत जल के ऊपर कोई ठिकाना नहीं मिला जब तक कि वह परमेश्वर के सच्चे जहाज़, प्रभु यीशु मसीह पर नहीं उतर गया।

मसीह पर ठहरने पर, आत्मा ने उसे उस कार्य के लिए अभिषिक्त किया जो अब आगे होने वाला था। मसीह ने एक भी शब्द नहीं कहा, एक भी कदम नहीं उठाया, अपने सार्वजनिक सेवकाई में उसने तब तक थोड़ा सा भी कदम नहीं उठाया जब तक कि उस पर यह पवित्र अभिषेक नहीं हो गया। ऐसा कोई समय नहीं था जब प्रभु यीशु आत्मा से भरे न हों, लेकिन उसके बपतिस्मा के समय उसका अभिषेक किया गया।

पुराने नियम में, याजकों, राजाओं और भविष्यद्वक्ताओं को उनकी सेवकाई के लिए अभिषेक किया जाता था। उनके प्रतीकात्मक अभिषेक ने पवित्र आत्मा द्वारा प्रभु यीशु के अभिषेक में अपना अंतिम प्रतिरूप पाया। मसीहा या मसीह नाम का अर्थ "अभिषिक्त व्यक्ति" है और यह उसके अभिषेक की सामर्थ्य में ही था कि उसने मनुष्य के स्वरूप में परमेश्वर के मसीह के रूप में अपनी सेवकाई के प्रत्येक पहलू को निभाया।

ख. पिता की घोषणा (3:17)

इस दोहरी पुष्टि का दूसरा भाग पिता की घोषणा थी। आत्मा के अभिषेक ने प्रभु को अगले साढ़े तीन साल के लिए तैयार किया, ताकि वह उन लोगों की ज़रूरतों को पूरा कर सकें, जिनके साथ उसने अभी-अभी

अपनी पहचान कराई थी। लेकिन स्वर्ग से आई घोषणा ने पिछले तीस वर्षों को पीछे की ओर देखा: “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ॥” यह नासरत के घर में छिपे हुए वर्षों के लिए परमेश्वर का सार्वजनिक समर्थन था।

परमेश्वर ने अपनी "अच्छा किया" की सराहना का उच्चारण किया, जब उसने 10,900 या उससे ज़्यादा दिनों तक प्रभु को हमेशा वही काम करते देखा, जो पिता को प्रसन्न था। मरियम के वस्त्र को पकड़े हुए एक बच्चे के रूप में, उसके खिलौनों से खेलते हुए एक लड़के के रूप में, स्थानीय आराधनालय स्कूल में एक युवा के रूप में जाते हुए, बढ़ई की मेज़ पर एक आदमी के रूप में, उसने अपने पिता के मन में प्रसन्नता के अलावा कुछ नहीं दिया। उसने जो कुछ किया, जो कुछ उसने कहा, जो कुछ उसने सोचा, जो वह था, उन सब में मसीह स्वर्ग के साथ पूर्ण तरह से सामंजस्य में रहा। और तब परमेश्वर ने घोषणा की कि वह उससे "अत्यंत प्रसन्न है।"

लाखों लोग पहले ही धरती पर रह चुके थे और परमेश्वर की सर्वज्ञ दृष्टि के सामने से गुजर चुके थे, लेकिन पिता ने अपने पुत्र के अलावा किसी और को नहीं पाया, जो उसका पूर्ण आनंद था। उसने मसीह की पापहीनता और उसके पुत्र होने के तथ्यों की घोषणा संसार के सामने की। कितने ही कम ऐसे लोग थे जिनके पास सुनने के लिए कान थे!

IV. राजा का विरोधी (4:1-11)

क. युद्ध की तैयारी (4:1-2)

अपने जन्म और बपतिस्मा के बीच, यीशु ने तीस साल अच्छे, दयालु, प्रेमपूर्ण, खुश, शांतिपूर्ण, धैर्यवान और विनम्र रहते हुए बिताए। वह पूरी तरह से संयमित था क्योंकि वह पूरी तरह से पवित्र आत्मा के द्वारा नियंत्रित था। वह पूरी तरह से स्वाभाविक लेकिन पूरी तरह से एक अच्छा छोटा लड़का था, एक पूरी तरह से सामान्य लेकिन बिल्कुल पवित्र बेटा, भाई, पड़ोसी, दोस्त, छात्र और कारीगर था। दूसरे शब्दों में, उसने अपना समय वैसा ही बिताया जैसा परमेश्वर ने हमेशा एक इंसान के लिए अपेक्षा की थी।

अब यीशु को “आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो” (4:1)। प्रभु को अपने जीवन के पिछले तीस वर्षों में बुराई के साथ कई बार संघर्ष करना पड़ा होगा। शायद स्कूल में कोई बदमाश रहा होता - हर स्कूल में एक न एक तो होता ही है। शायद कोई ईर्ष्यालु भाई था - कई घरों में एक तो होता ही है। शायद कोई जिद्दी रब्बी था - कई कलीसियाओं में एक होता है। शायद कोई बेईमान व्यापारी रहा होगा - अधिकांश शहरों में एक होता ही है। शायद कोई द्वेषपूर्ण पड़ोसी रहा होगा - कई समुदायों में एक होता ही है। लेकिन पल-पल, कदम-दर-कदम, परिस्थिति-दर-स्थिति, यीशु आत्मा से भरता गया, और उसने वही सोचा, कहा और किया जो पिता चाहते थे कि वह सोचे, कहे, और करे। यीशु ने खुद को पूरी तरह से परमेश्वर के लिए उपलब्ध कराया ताकि वह एक ऐसा माध्यम बन सके जिसके द्वारा उनकी बुद्धि, प्रेम और सामर्थ्य मनुष्य जीवन के संदर्भ में पूर्ण रूप से व्यक्त हो सके।

1. यीशु को कहाँ जाना था (4:1)

अब समय आ चुका था कि यीशु को किसी और के द्वारा नहीं बल्कि स्वयं शैतान के द्वारा नए और ज़हरीले तरीके से परीक्षा में होकर गुजारा जाए। इस प्रकार, यीशु को अपने अभिषेक और ईश्वरीय स्वीकृति के बाद पहला अनुभव पवित्र आत्मा के द्वारा जंगल में ले जाया जाना था। यहूदिया का जंगल एक बहुत ही भयानक उजाड़ इलाका था जो मृत सागर के पश्चिमी तट से पीछे की ओर फैला हुआ था। इससे अधिक किसी भयानक भू-दृश्य की कल्पना करना मुश्किल ही होगा। यहीं वह स्थान था जहाँ उसे जाना था।

2. यीशु को क्या करना था (4:2)

उसे उस जंगल में बहुत लंबे समय तक उपवास करना था: चालीस दिनों तक। मरकुस के सुसमाचार में हमें बताया गया है कि अकेलेपन और अलगाव की इस अवधि के दौरान, यीशु जंगली जानवरों के बीच था। मरकुस और लूका के वृत्तांतों से पता चलता है कि यह पूरी की पूरी अवधि प्रलोभन और परीक्षण की थी, जो उपवास के अंत में भयंकर हमले के लिए यीशु को तैयार कर रही थी। जब शैतान अंततः व्यक्तिगत रूप से उसके सामने प्रकट हुआ, तो मुठभेड़ छोटी लेकिन अत्यंत गंभीर थी।

मत्ती 4:2 कहता है कि अंत में यीशु को "भूख लगी।" ऐसा कहा जाता है कि लंबे उपवास के दौरान, भूख की तड़प तीन या चार दिनों के बाद मिट जाती है, लेकिन तीस या चालीस दिनों के अंत में नए सिरे से बल के साथ लौट आती है। बार-बार भूख लगने का यह अचानक हमला ही उसकी पहली परीक्षा का आधार बन गया।

ख. युद्ध में विजय प्राप्त करना (4:3-10)

1. परमेश्वर के प्रबन्धन के अनुसार परीक्षा (4:3-4)

क. शैतान ने क्या सुझाव दिया (4:3)

शैतान ने शुरू किया, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है..." शैतान जानता था कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है, क्योंकि उस सत्य की घोषणा हाल ही में यरदन नदी पर पिता द्वारा सार्वजनिक रूप से की गई थी। परमेश्वर के प्रिय पुत्र की सार्वजनिक सेवकाई उसके कानों में गूंजने वाले शैतानी शब्दों के साथ शुरू और समाप्त हुई (मत्ती 4:3; 27:40)। हम शैतान को यहाँ जोर देते सुन सकते हैं - "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है"; यह ऐसा था मानो वह कह रहा हो, "तू, एक गरीब, भूखा, दुर्बल प्राणी, भूख से मर रहा है? क्या तू परमेश्वर का पुत्र है?"

फिर सुझाव दिया गया, उसकी भूख मिटाने का उपाय दिया गया: तत्काल खाना। उसने कहा, "कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।" बेशक, यीशु ऐसा कर सकता था। वह जल को दाखरस में बदल सकता था। वह कुछ ही रोटियों और मछलियों को बढ़ाकर हज़ारों लोगों को खिला सकता था। लेकिन परीक्षण के पीछे का गलत उद्देश्य यह बताना था कि यीशु को इतने लंबे समय तक भूखा रहने देने के लिए परमेश्वर कितना निर्दयी था।

भूखा रहना और उस स्वाभाविक भूख को संतुष्ट करने की इच्छा रखना गलत नहीं था। लेकिन उस सुझाव में बुराई यह थी कि मसीह को उस पवित्र आत्मा की आधीनता से हटकर कार्य करना पड़ता जो उसे जंगल में ले आया था, और पिता की आधीनता से हटकर भी जिसने उसे शारीरिक पोषण से वंचित होने की अनुमति दी थी। शैतान सुझाव दे रहा था कि यीशु अपने पुत्रत्व के संसाधनों का उपयोग अपने पुत्रत्व की

जिम्मेदारी का उल्लंघन करने के लिए करें। जिम्मेदारी कभी भी अपने पिता की आधीनता से हटकर कार्य करने की नहीं थी। (संयोग से, एक लंबे उपवास को धीरे-धीरे और शुरू में तरल पदार्थों से तोड़ना होता है; ठोस भोजन घातक हो सकता है।)

ख. पवित्रशास्त्र में क्या कहा गया है (4:4)

इस प्रलोभन को विफल करने में, यीशु ने शैतान के सुझाव को पवित्रशास्त्र में कही गई बातों के साथ जोड़ दिया। पूरे प्रलोभन के दौरान प्रभु का एकमात्र संसाधन परमेश्वर का वचन था, वह हथियार जिससे शैतान इस दुनिया में किसी भी चीज़ से अधिक भय खाता है। मसीह ने कहा, "लिखा है" और व्यवस्थाविवरण 8:3 का हवाला देता है।

यीशु का यह पहला सेवकाई कथन, उसके अभिषेक के बाद का यह पहला कथन, जीवित परमेश्वर के आधिकारिक वचन के रूप में पवित्रशास्त्र के लिखित आयतों पर उसके पूर्ण विश्वास को दर्शाता है। त्रुटि या अप्रासंगिकता का प्रश्न उसके मन में कभी नहीं आया। वे धारणाएँ शैतानी मूल की हैं (उत्पत्ति 3:1)। हव्वा को लुभाने में, शैतान ने उसे परमेश्वर के वचन पर अविश्वास करने या उसे तोड़ने-मरोड़ने के लिए उकसाया। लेकिन यीशु ने उस हथियार को उठाया और उसका इस्तेमाल किया जिसकी हव्वा ने परखनेवाले के साथ अपने संघर्ष में इतनी मूर्खता से उपेक्षा कर दी थी।

जब शैतान ने कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है," तो यीशु ने उत्तर दिया, “मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा” (मत्ती 4:3-4)। प्रभु शैतान के हमलों का सामना करने के लिए उस वीरान स्थान में परमेश्वर के रूप में नहीं, बल्कि मनुष्य के रूप में था। यीशु ने अपने पिता के अनुग्रह और भलाई पर अपने भरोसे से डगमगाने या परमेश्वर के लिखित वचन में पाए गए आधार के अलावा किसी अन्य आधार का सहारा लेने से इनकार कर दिया।

मसीह का यह पहला प्रलोभन हमारे उन पापों को करने के प्रलोभनों को दर्शाता है जो भूख से संबंधित हैं, ऐसे पाप जिन्हें हम वासना से जोड़ते हैं। ये पाप अनिवार्य रूप से शारीरिक हैं। शारीरिक इच्छाएँ गलत नहीं हैं; वे जीवन के संरक्षण के लिए आवश्यक हैं। लेकिन उन्हें कभी भी नियंत्रण से बाहर नहीं होने देना चाहिए या हमारे जीवन को नियंत्रित नहीं करने देना चाहिए।

2. परमेश्वर की सुरक्षा के वायदे की परीक्षा (4:5-7)

क. प्रलोभन का स्वरूप (4:5-6)

(1) शैतान द्वारा तैयार की गई स्थिति (4:5)

इसके बाद शैतान ने यीशु को "मंदिर के कंगूरे" पर पहुँचाया - संभवतः मंदिर के दक्षिण-पूर्वी कोने में हेरोदेस के शाही बरामदे के शीर्ष पर। यह शिखर मंदिर के चारों ओर सबसे ऊँचा था और 450 फीट नीचे किद्रोन घाटी तक दिखाई देता था।

(2) शैतान द्वारा प्रस्तुत सुझाव (4:6)

(a) स्पष्ट फंदा (4:6a)

शैतान ने यीशु को तुरंत भोजन देने की पेशकश की थी; अब उसने उसे तत्काल प्रसिद्धि देने की पेशकश की। यह दूसरा प्रलोभन पहले से ज़्यादा धूर्ततापूर्ण था। शैतान ने प्रभावी रूप से कहा:

तुम कहीं नहीं पहुँच पाओगे। तुम यहाँ हो, तीस साल के और तुम्हारे पास एक भी दर्शक नहीं है, कोई अनुयायी नहीं है, कोई प्रशंसा करने वाला नहीं है। तुम्हें कोई नहीं जानता। अगर तुम मेरी बात सुनो और जो मैं कहता हूँ, वही करो, तो तुम तुरंत प्रसिद्ध हो सकते हो, रातों-रात सेलिब्रिटी बन सकते हो। तुम्हारा नाम हर किसी की जुबान पर होगा। तुम पहले पन्ने की खबर बनोगे। मैं देखूँगा कि तुम बड़ी भीड़ जुटा सको। अब योजना यह है: मैं तुम्हें यहाँ मंदिर के कँगूरे पर खड़ा करूँगा। तुम यहाँ यरूशलेम में उससे अधिक ऊँचे स्थान पर नहीं जा सकते। मंदिर के प्रांगण में लोग चींटियों जितने छोटे लगते हैं। देखो! तुमने पहले ही उनका ध्यान आकर्षित कर लिया है। एक पल में तुम उनकी वाहवाही पा सकते हो। तुम अब वहीं हो जहाँ तुम्हें कई साल पहले होना चाहिए था - यानि लोगों की नज़रों में। अब, मैंने तुम्हें ऊपर उठाया है; तुम खुद को नीचे गिरा दो।

शैतान मसीह पर अपने मीठी बातों के फंदे की सामर्थ्य का प्रयोग कर रहा था, ठीक वैसे ही जैसे वह हमें फँसाने के लिए करता है। हमें याद रखना चाहिए कि वह निवेदन तो कर सकता है, लेकिन दबाव नहीं बना सकता। वह केवल प्रलोभन पैदा करता है; हम अपराध पैदा कर देते हैं।

(b) बाइबल अनुच्छेद (4:6b)

मसीह को अभी भी समझाने की कोशिश करते हुए शैतान ने प्रभावी ढंग से कहा:

तुम्हें कुछ साहसिक, कुछ असाधारण कार्य करना चाहिए। तुम कहते हो कि तुम अपने स्वर्गीय पिता पर भरोसा करते हो। अच्छा, तो इसे साबित करो। अपने विश्वास का प्रयोग करो। खुद को नीचे गिराकर अपना विश्वास प्रदर्शित करो। परमेश्वर के वचन पर आधार बना कर रखो। देखो, परमेश्वर का वचन खुद कहता है, “वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा; और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।” वहाँ लिखा है! यह बाइबल में है। तुमने मुझे याद दिलाया कि बाइबल क्या कहती है - अब मैं तुम्हें याद दिला रहा हूँ। तुम बाइबल पर विश्वास करते हो - फिर वही करो जो वह कहती है। इसे परख कर देख लो। दुनिया एक ऐसे व्यक्ति को देखने का इंतज़ार कर रही है जो परमेश्वर के साथ पूरी तरह से चलने वाला हो, जो वैसा ही व्यवहार करेगा जैसा वह कहता है कि वह विश्वास करता है।

शैतान दरअसल प्रभु पर भरोसा न करके, अहंकारी बनने के लिए उकसा रहा था। परमेश्वर पर भरोसा करने और परमेश्वर की परीक्षा लेने के बीच एक महीन रेखा मौजूद है। प्रभु के स्पष्ट निमंत्रण पर उस नाव से बाहर निकलना और लहरों पर चलना पतरस की ओर से एक शानदार विश्वास का प्रदर्शन था। अगर उसने किसी अन्य परिस्थिति में ऐसा किया होता, तो यह अहंकार होता, क्योंकि यह परमेश्वर की किसी तरह की परीक्षा या उसके विश्वास का प्रमाण होता।

शैतान ने भजन 91:11-12 को मूल यहूदी पांडुलिपियों से नहीं, बल्कि सेप्टुआजेंट अर्थात् यूनानी अनुवाद से उद्धृत किया, वही संस्करण जिसका उपयोग यीशु ने पहले प्रलोभन को हराने में किया था। इस दूसरे प्रलोभन में सेप्टुआजेंट शैतान के लिए विशेष रूप से उपयोगी था क्योंकि अनुवादकों ने "किसी भी समय" शब्द जोड़ दिए थे। शैतान ने न केवल उस अनुचित जोड़ का लाभ उठाया; बल्कि वह कुछ छोड़ने के प्रति भी सावधान

रहा: "तेरे सब मार्गों में तेरी रक्षा करेंगे।" और उसने भजन 91:13 को छोड़ दिया, जिसमें प्रभु द्वारा सिंह और नाग को रौंदने और युवा सिंह और अजगर को अपने पैरों तले रौंदने की बात कही गई है। स्वाभाविक रूप से शैतान उस पद के बारे में सोचना भी नहीं चाहता था!

इस प्रकार पवित्रशास्त्र को पेश करने में शैतान ने एक सुविधाजनक अनुवाद का उपयोग किया, अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसका संक्षिप्त रूप प्रस्तुत किया, जानबूझकर एक अतिरिक्त अंश को स्वीकार किया, जानबूझकर कुछ अंश छोड़ दिया, और संदर्भ को अनदेखा किया। प्रभु अपनी बाइबल को शैतान के एक महान और बहुत ही प्रिय मसीहा के भजन के विकृत संस्करण से प्रभावित होने से बेहतर जानते था।

ख. प्रलोभन की असफलता (4:7)

प्रभु ने शैतान के साथ बाइबल के संस्करणों पर बहस करने में कोई समय बर्बाद नहीं किया। उसने खुद सेप्टुआजेंट का इस्तेमाल किया। यीशु ने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से एक और हवाले के साथ शैतान के हमले का जवाब दिया: "तू अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न लेना" (व्यवस्थाविवरण 6:16)। प्रभु ने संदर्भ को अनदेखा नहीं किया, क्योंकि उस पद के अगले शब्द “जैसे कि तुम ने मस्सा में उसकी परीक्षा की थी”) निर्गमन 17:7 को दर्शाते हैं, जो इस्राएल द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति और देखभाल पर संदेह करने की बात करता है।

मसीह का दूसरा प्रलोभन पाप करने के हमारे प्रलोभनों को दर्शाता है जो स्वीकृति, प्रसद्धि और सराहना से संबंधित हैं। पहला प्रलोभन शारीरिक था; दूसरा मनोवैज्ञानिक था। हम सभी में स्वीकार किए जाने की एक वैध मनोवैज्ञानिक आवश्यकता और सराहे जाने की एक इच्छा होती है। लेकिन हैरानी की बात यह है कि लोग इन इच्छाओं को पूरा करने के लिए क्या-क्या करते हैं। यहाँ तक कि एक छोटा बच्चा भी ध्यान आकर्षित करने या अपनी ओर दूसरों का ध्यान खींचने के लिए बुरे व्यवहार तक में लिप्त हो जाता है। कुछ वयस्क उन लोगों की स्वीकृति पाने के लिए असाधारण हद तक चले जाते हैं जिनकी प्रशंसा उनके लिए महत्वपूर्ण होती है। मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को कभी भी नियंत्रण से बाहर नहीं जाने देना चाहिए।

3. परमेश्वर की योजना के अनुसार परीक्षा ली गई (4:8-10)

क. सुझाव दिया गया (4:8-9)

(1) मुकुट (4:8-9a)

तीसरे प्रलोभन के लिए यीशु को एक ऊँचे पहाड़ी पर ले जाया गया। इस ऊँचाई से, इस संसार के हाकिम के रूप में शैतान ने प्रभु को इस संसार के सभी राज्यों और उनकी महिमा का दर्शन कराया - लूका 4:5 हमें बताता है कि वह भी "पल भर में"। (शैतान को अपने प्रलोभन की संभावनाओं को दिखाने में अधिक समय नहीं लगता।) शैतान ने प्रभु को तत्काल भोजन और तत्काल प्रसिद्धि की पेशकश की थी; अब उसने उसे तत्काल भाग्य अर्थात् बिना क्रूस की पीड़ा के संसार के सिंहासन को देने की पेशकश की।

(2) कीमत (4:9b)

इस संसार के साम्राज्यों की महिमा और विलासिता प्रभु के सामने प्रदर्शित की गई: सीरिया, बेबीलोन और फारस की सामर्थ्य; ग्रीस की प्राचीन वैभव; साम्राज्यवादी रोम की महिमा, सबकुछ...काफ़ी प्रभावशाली तरीके से शैतान ने कहा:

मैंने यह संसार सिकंदर को दिया; मैंने इसे कैसर को दिया है। लेकिन तुम उन दोनों से कहीं ज़्यादा बड़े इंसान हो - एक बेहतर इंसान हो। सोचो कि दुनिया तुम्हारे जैसे राजा के लिए कितनी तरसती है। तुम एक राजा हो; तुम्हें केवल एक सिंहासन की ज़रूरत है। सोचो तुम कितना अच्छा कर सकते हो। तुम नई व्यवस्था ला सकते हो और अपने कार्यक्रम को लागू कर सकते हो। इसके बारे में ज़रा सोचो: नासरत के बढ़ई को संसार का सम्राट बनाया जाएगा। यह सब तुम्हारा हो सकता है - सिर्फ़ रोम ही नहीं, बल्कि फ़रात नदी के पार, नील नदी के पार, हरक्यूलिस के खंभों के पार...सबकुछ।

मैं तुमसे केवल कैसर की वेदी पर नमक की एक छोटी-सी चुटकी भर माँगता हूँ, केवल एक बार मेरे सामने घुटना टेक दो। तुमको मुझे एक बार दंडवत करना है। अपनी ओर देखो! तुम्हारे पास न तो भोजन है, न ही प्रसिद्धि, न ही धन। मैं तुमको इस दुनिया में मौजूद हर चीज़ प्रदान करता हूँ: राज्य, सामर्थ्य और महिमा। और इसके साथ कोई क्रूस नहीं होगा!

ख. सुझाव भी दिया गया (4:10)

(1) प्रभु की इच्छा (4:10a)

प्रभु अब तक उसे बहुत सहन कर चुका था। इसलिए अब उसने कहा, "हे शैतान दूर हो जा।" यीशु को शैतान के कार्यक्रमों में से कुछ भी आकर्षक नहीं लगा। मसीह के पवित्र स्वभाव को पाप किसी भी तरह से आकर्षक नहीं लगा; वास्तव में यह उसे घृणित लगा। वह हर उस सुझाव से पीछे हट गया जो उसे पाप करने और परमेश्वर से स्वतंत्र होकर कुछ कार्य करने को प्रेरित कर रहा था।

(2) अंतिम वचन (4:10b)

तीसरी और आखिरी बार यीशु ने परमेश्वर के लिखित वचन का हवाला दिया। व्यवस्थाविवरण 6:13 का हवाला देते हुए उसने कहा, "क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।" उस दिन उसके सभी हवाले व्यवस्थाविवरण 6 और 8 से थे। क्या ऐसा हो सकता है कि उस सुबह प्रभु का मनन परमेश्वर के वचन के इसी भाग पर था?

मसीह का तीसरा प्रलोभन महत्वाकांक्षा से जुड़े पाप करने के हमारे प्रलोभनों को दर्शाता है। ये पाप अनिवार्य रूप से आत्मिक हैं, क्योंकि महत्वाकांक्षा जल्दी से घमंड पैदा कर सकती है (मूल पाप, जो शैतान में ही पाया जाता है, यशायाह 14:12-15 को देखें) और हमें परमेश्वर के सिंहासन के किसी प्रतिद्वंद्वी को ऊंचा उठाने के लिए प्रेरित कर सकती है। शैतान ने उसकी आराधना के बदले में यीशु को संसार का वैभव देने की पेशकश की थी।

सारा मुद्दा अधिकार (सामर्थ्य) का है। हर कोई अधिकार पाना चाहता है, लेकिन यह एक मादक शराब की तरह है। जैसा कि लॉर्ड एक्टन ने कहा, "अधिकार भ्रष्ट करता है और पूर्ण अधिकार पूरी तरह से भ्रष्ट कर देता है।" किसी व्यक्ति के लिए अपनी स्थिति में सुधार की इच्छा रखना गलत नहीं है, लेकिन उसे इस बात

के प्रति सावधान रहना चाहिए कि वह अपने लक्ष्य क्यों निर्धारित करता है और उन्हें कैसे प्राप्त करता है। मैंने एक बड़े व्यवसायिक प्रतिष्ठान में अपनी उम्मीदों से भरा करियर छोड़ दिया क्योंकि मुझे लगा कि वहाँ सफलता पाने की कीमत बहुत अधिक है। वह संस्थान मेरी आत्मा को खरीदना चाहता था।

ग. युद्ध से आगे बढ़ना (4:11)

1. विरोधी को निकालना (4:11a)

शैतान के पास अब देने के लिए और कुछ नहीं था। उसने यीशु की भी परीक्षा ली - जैसे उसने हव्वा को प्रलोभित किया था - वह भी पाप के तीन बड़े स्रोतों के द्वारा: “शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड” (1 यूहन्ना 2:16)। शैतान ने पाया कि मसीह की पवित्रता का अभेद्य कवच उसके सभी प्रलोभनों के लिए अभेद्य साबित हो चुका था। पूरी तरह से पराजित होकर, शैतान वहाँ से चला गया।

2. स्वर्गदूतों का प्रवेश करना (4:11b)

युद्ध तो जीत लिया गया, लेकिन यीशु थक चुका था। प्रलोभन उस समय आए थे जब वह शारीरिक रूप से कमज़ोर था। शैतान हमेशा ऐसे समय में फ़ायदा उठाने की कोशिश करता है, क्योंकि वह पूरी तरह से लज्जाहीन है।

तत्पश्चात “स्वर्गदूत आकर उस की सेवा करने लगे।” दूसरे प्रलोभन में शैतान ने यीशु को सुझाव दिया था कि वह उन पवित्र स्वर्गदूतों का लाभ उठाए; अब परमेश्वर के अच्छे समय और उद्देश्य के अंतर्गत, वे उसके पास आ चुके थे। यह परमेश्वर के उद्देश्य का हिस्सा नहीं था कि यीशु भूख से मर जाए, या थकावट से मर जाए, या पाप के सबसे सूक्ष्म और ज़हरीले रूप से संघर्ष करने के बाद गिरके मर जाए।

खंड 2

राजा का उद्देश्य (4:12-7:29)

1. राजा के तरीके को प्रकट किया गया (4:12-25)
    1. राजा की चाल (4:12-16)
        1. एक समझदारी भरा कदम (4:12)
        2. एक दूसरा कदम (4:13)
        3. एक पवित्रशास्त्र-आधारित कदम (4:14-16)
            1. भविष्यद्वक्ता (4:14)
            2. स्थान (4:15)
            3. उद्देश्य (4:16)
    2. राजा का संदेश (4:17)
    3. राजा के लोग (4:18-22)
        1. किनारे पर जो दो लोग थे— अपने जाल डाल रहे थे (4:18-20)
            1. मसीह ने क्या देखा (4:18)
            2. मसीह ने क्या प्रस्ताव दिया (4:19-20)
                1. चुनौती (4:19)
                2. विकल्प (4:20)
        2. नाव पर सवार दो लोग - अपने जालों की देखभाल कर रहे थे (4:21-22)
            1. मसीह ने कैसे बुलाया (4:21)
            2. वे कैसे आये (4:22)
    4. राजा की सेवकाई (4:23a-b)
        1. चलना-फिरना (4:23a)
        2. उपदेश देना (4:23b)
    5. राजा के आश्चर्यकर्म (4:23c-25)
        1. उसे कितनी परवाह थी (4:23c-24)
        2. कितने लोग थे जो वहाँ आये (4:25)
2. राजा का आदेश प्रकट किया गया (5:1-7:29)
    1. चेले और उसकी आशीषें (5:1-16)
        1. मंच की तैयारी (5:1-2)
        2. उपदेश (5:3-12)
            1. हम कौन हैं (5:3-5)
                1. मन के दीन (5:3)
                2. शोक करने वाले (5:4)

3. संघर्ष में धैर्यवान (5:5)

2. हमारा लक्ष्य क्या है (5:6)

3. हमारे कार्य करने के तरीके (5:7-9)

1. उपद्रव का सामना करते समय (5:7)

2. भ्रष्टाचार का सामना करते समय (5:8)

3. संघर्ष का सामना करते समय (5:9)

4. हम क्या स्वीकार करते हैं (5:10-12)

1. अत्यधिक सताव का प्रश्न (5:10-11)

2. सताव पर विजय पाने का प्रश्न (5:12)

1. इससे आनन्दित होना (5:12a)

2. इसके लिए पुरस्कृत (5:12b)

3. परिणाम (5:13-16)

1. सड़न को रोकना (5:13)

2. अंधकार को दूर करना (5:14-16)

1. ज्योति की स्थिति (5:14)

2. ज्योति का उद्देश्य (5:15)

3. ज्योति की क्षमता (5:16)

2. चेले और उसकी मान्यताएं (5:17-20)

1. परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति व्यक्तिगत सहमति (5:17-18)

1. व्यवस्था और उसकी पूर्णता (5:17)

2. व्यवस्था और उसका भविष्य (5:18)

2. परमेश्वर की नियम व्यवस्था का व्यक्तिगत अमलीकरण (5:19-20)

1. एक गहन परीक्षा (5:19)

2. एक कटु निंदा (5:20)

3. चेले और उसकी बाइबल (5:21-48)

1. जीवन को चोट पहुँचाने का प्रश्न (5:21-24)

1. हत्या और उसके परिणाम (5:21)

2. उद्देश्य और उसके परिणाम (5:22)

3. नैतिकता और उसके परिणाम (5:23-24)

1. अनुस्मरण (5:23)

2. मेलमिलाप (5:24)

2. व्यवस्था लागू करने का प्रश्न (5:25-26)

1. एक बुद्धिमानी भरा मार्ग (5:25a)

2. एक दुःखद परिणाम (5:25b-26)

3. वासना में लिप्त होने का प्रश्न (5:27-32)

1. एक अशुद्ध विवाह (5:27-30)

1. परमेश्वर का दण्ड देने का नियम (5:27)
2. मनुष्य की भ्रष्ट करने वाली वासना (5:28-30)
1. ग़लत मनोभाव (5:28)
2. एक गलत जीवन (5:29-30)
1. ग़लत नज़र से निपटना (5:29)
2. गलत मनोभाव से निपटना (5:30)

2. एक दोषपूर्ण विवाह (5:31-32)
1. व्यवस्था और उसकी स्थिति (5:31)
2. प्रभु और उसका निषेध (5:32)

4. अनुचित भाषा का प्रश्न (5:33-37)
1. टूटे हुए वचन का खतरा (5:33)
2. बेहतर तरीके की मांग (5:34-37)
1. लापरवाही से शपथ खाना (5:34-36)
2. दृढ़ता से बोलना (5:37)

5. अवर्णनीय प्रेम का प्रश्न (5:38-48)
1. पलटा लेने का नियम (5:38-42)
1. व्यवस्था का मार्ग (5:38)
2. प्रभु का मार्ग (5:39-42)
1. जब लोग हमपर उपद्रव करते हैं (5:39)
2. जब लोग हम पर मुकदमा करते हैं (5:40)
3. जब लोग हमें पकड़ लेते हैं (5:41)
4. जब लोग हमसे मदद माँगते हैं (5:42)

2. मेलमिलाप का नियम (5:43-48)
1. नियम की व्याख्या (5:43-44)
1. जो आज्ञा परमेश्वर ने दी (5:43)
2. जो परमेश्वर को प्रिय है (5:44)
2. नियम मी मिसाल दी गई (5:45-47)
1. एक तुलना (5:45)
2. एक विरोधाभास (5:46-47)
3. नियम का विस्तार (5:48)

4. चेले और उसका बोझ (6:1-34)
1. आराधना से जुड़े बोझ (6:1-18)
1. जीवन के कर्तव्य (6:1-4)
1. अपने भले कामों का प्रचार करना (6:1-2)
1. भुगतान (6:1)
2. अभ्यास (6:2)

2. अपने भले कामों को छिपाना (6:3-4)
    1. निजी गतिविधि (6:3)
    2. सार्वजनिक स्वीकृति (6:4)

2. जीवन की भक्ति (6:5-15)
    1. प्रार्थना में दिखावा (6:5)
        1. एक कपटी प्रार्थना (6:5a)
        2. एक खोखली प्रार्थना (6:5b)
    2. प्रार्थना का स्थान (6:6)
    3. प्रार्थना का सिद्धांत (6:7-8)
        1. व्यर्थ दोहराना (6:7)
        2. महत्वपूर्ण एहसास (6:8)
    4. प्रार्थना का तरीका (6:9-15)
        1. प्रभु ने क्या सुझाव दिया (6:9-13)

        ध्यान दें:

            1. पिता का व्यक्तित्व (6:9)
            2. पिता का उद्देश्य (6:10)
            3. पिता का प्रावधान (6:11)
            4. पिता की क्षमा (6:12)
            5. पिता का मार्ग (6:13a)
            6. पिता की सुरक्षा (6:13b)
            7. पिता की सामर्थ्य (6:13c)
            8. पिता का स्थायित्व (6:13d)

        2. प्रभु ने जो दोहराया (6:14-15)
            1. एक कर्तव्य (6:14)
            2. एक खतरा (6:15)

3. जीवन के अनुशासन (6:16-18)
    1. भूख का सवाल (6:16a)
    2. दिखने का प्रश्न (6:16b-18a)
        1. उपवास की घोषणा (6:16b-c)
            1. पाखण्डी लोग उपवास से क्या चाहते हैं (6:16b)
            2. पाखंडियों को उपवास से क्या लाभ होता है (6:16c)
        2. अपना उपवास छिपाना (6:17-18a)
            1. कोई दिखावा नहीं होना चाहिए (6:17)
            2. कोई प्रदर्शन नहीं करना चाहिए (6:18a)

3. प्रशंसा का प्रश्न (6:18b-c)
1. हमारे पिता द्वारा देखी गई वास्तविकता (6:18b)
2. हमारे साथियों द्वारा देखा गया प्रतिफल (6:18c)

2. धन से जुड़े बोझ (6:19-24)
1. प्रेम का चुनाव (6:19-21)
1. अपना धन (6:19-20)
1. सांसारिक धन (6:19)
1. जहाँ कीड़े नष्ट करते हैं (6:19a)
2. जहाँ जंग नष्ट करती है (6:19b)
3. जहाँ चोर लूट जाता है (6:19c)
2. अनन्त धन (6:20)
2. हृदय (6:21)
2. रूप का चुनाव (6:22-23)
1. जहाँ उजियाले को ऊंचा किया जाता है (6:22)
2. जहाँ उजियाले को बाहर रखा गया है (6:23)
3. स्वामियों का चयन (6:24)
1. विकल्प की व्याख्या (6:24a)
2. चुनाव का उदाहरण (6:24b)

3. चिंता से जुड़े बोझ (6:25-34)
1. दैनिक जीवन (6:25-26)
1. इसका दबाव स्वीकार किया गया (6:25a)
1. भोजन की चिंताएँ
2. वस्त्र की चिंताएँ
2. इसका परिप्रेक्ष्य बदल गया (6:25b-26)
1. जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण (6:25b)
2. जीवन का नया मूल्य (6:26)
2. ईश्वरीय तर्क (6:27-32)
1. हमारा मानवीय ढाँचा (6:27)
2. हमारा रुका हुआ विश्वास (6:28-30)
1. सोसन के फूलों की महिमा (6:28-29)
1. उन पर विचार करें (6:28)
2. उनकी तुलना में (6:29)
2. प्रभु की महिमा (6:30)
1. उसकी पूर्ण विश्वसनीयता (6:30a)
2. हमारे अनुचित संदेह (6:30b)
3. हमारा स्वर्गीय पिता (6:31-32)

1. एक आदेश (6:31)
2. एक तुलना (6:32a)
3. एक सांत्वना (6:32b)

3. अलग-अलग नियम (6:33-34)

1. सबसे पहले क्या होना चाहिए (6:33)

1. हमारे जीवन की महान प्राथमिकताएँ (6:33a)

1. परमेश्वर के शासन का क्षेत्र
2. परमेश्वर की धार्मिकता का क्षेत्र

2. हमारे प्रभु की महान प्रतिज्ञाएँ (6:33b)

2. किसके लिए संघर्ष करना चाहिए (6:34)

1. कल की चिंताएँ (6:34a)
2. आज की दुष्टता (6:34b)

5. चेले और उसका व्यवहार (7:1-29)

1. मूर्खता का प्रदर्शन (7:1-5)

1. तर्कपूर्ण वचन (7:1-2)

1. आलोचक क्या करता है (7:1)
2. आलोचक को क्या मिलना चाहिए (7:2)

2. उपहास का एक शब्द (7:3-4)

1. हास्यास्पद प्रश्न (7:3)
2. मूर्खतापूर्ण खोज (7:4)

3. फटकार का एक शब्द (7:5)

2. पिता की सराहना (7:6-12)

1. पिता का प्रेम प्रकट हुआ (7:6-11)

1. एक चेतावनी भरा वचन (7:6)
2. एक अद्‌भुत वचन (7:7-11)

1. आमंत्रण का विस्तार (7:7)
2. आमंत्रण का विस्तार (7:8)
3. आमंत्रण की व्याख्या (7:9-11)

1. एक मानवीय पिता की भलाई (7:9-10)

1. क्या वह पत्थर देगा? (7:9)
2. क्या वह साँप देगा? (7:10)

2. हमारे स्वर्गीय पिता की भलाई (7:11)

1. तुलनात्मक (7:11a)
2. अतिशयोक्ति (7:11b)

2. पिता के प्रेम की पुनः प्रस्तुत (7:12)

1. स्वर्णिम नियम (7:12a)

2. महान प्रकाशन (7:12b)

3. भविष्य की व्याख्या (7:13-14)

1. नर्क का रास्ता (7:13)

2. स्वर्ग का मार्ग (7:14)

4. धोखाधड़ी का पर्दाफाश (7:15-23)

1. झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहें (7:15-20)

1. झूठे भविष्यद्वक्ता क्या दिखावा करते हैं (7:15)

1. वे कितने धोखेबाज़ हैं (7:15a)

2. वे कितने विनाशकारी हैं (7:15b)

2. झूठे भविष्यद्वक्ता क्या उत्पन्न करते हैं (7:16-20)

1. उनके फल (7:16-18)

1. अभिशाप पर जोर (7:16)

2. विरोधाभास पर ज़ोर दिया गया (7:17-18)

1. अपरिवर्तनीय जीवन (7:17)

2. अनिवार्य व्यवस्था (7:18)

2. उनका भविष्य (7:19-20)

1. धिक्कार (7:19)

2. भेदभाव (7:20)

2. झूठे व्यवसाय से सावधान रहें (7:21-23)

1. एक परीक्षा (7:21)

2. एक त्रासदी (7:22-23)

1. खोए हुए लोग क्या दावा करेंगे (7:22)

1. भविष्यवाणी करने का वरदान (7:22a)

2. दुष्टात्माओं को भगाने का वरदान (7:22b)

3. चमत्कार करने का वरदान (7:22c)

2. प्रभु किस बात का न्याय करेगा (7:23)

1. खोए हुओं के विषय में उसकी अज्ञानता प्रकट हुई (7:23a)

2. प्रभु के प्रति उनकी अज्ञानता की निन्दा (7:23b)

5. बुनियाद की जाँच (7:24-29)

1. संदेश का अमलीकरण (7:24-27)

1. मज़बूत नींव

जिनके लिए प्रभु का वचन ही सब कुछ का आधार हैं (7:24-25)

1. संरचना का पूरा होना (7:24)

2. आँधी का आना (7:25)

2. बालू पर बनी नींव

जिनके लिए प्रभु के वचन किसी बात का आधार नहीं हैं (7:26-27)

1. संरचना का पूरा होना (7:26)
2. आँधी का आना (7:27)

2. भीड़ का आश्चर्य (7:28-29)

1. उपदेश की विषय-वस्तु (7:28)
2. शास्त्रियों के साथ तुलना (7:29)

I. राजा की विधि को प्रकट किया गया (4:12-25)

क. राजा का कार्य (4:12-16)

1. एक समझदारी भरा कदम (4:12)

यूहन्ना बपतिस्मादाता की सेवकाई चार से अठारह महीने के बीच चली, जिस दौरान उसने वह मिशन पूरा किया जिसके लिए परमेश्वर ने उसे बुलाया था। उसने राष्ट्र का ध्यान आकर्षित किया, उनकी अंतरात्मा (विवेक) को जगाया, और बपतिस्मा दिया और मसीहा से उनका परिचय कराया। यूहन्ना ने हेरोदियास और हेरोदेस के अवैध विवाह की निंदा करके उनके क्रोध को भी भड़काया।

अब घोषित मसीहा प्रचार कर रहा था और बपतिस्मादाता जेल में कैद था – उसकी निडर सेवकाई का यह सबसे अप्रत्याशित अंत था, लगभग उसने तो ऐसा ही सोचा होगा। उसकी रिहाई सुनिश्चित करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया। उसे मृत सागर के पूर्वी किनारे पर मैकेरस के किले में कैद कर दिया गया था। मत्ती ने बाद में इस सब के बारे में और वर्णन किया है, लेकिन यहाँ उसने कैद का उल्लेख किया ताकि यह दिखाया जा सके कि इसका मसीह पर क्या प्रभाव पड़ा: वह यहूदिया छोड़कर गलील चला गया, और खुद को हेरोदेस की पहुँच से बाहर कर दिया। यह एक समझदारी भरा कदम था।

यूहन्ना की सेवकाई समाप्त हो चुकी थी, लेकिन उसे त्यागा नहीं गया था। जल्द ही वह शहीद का मुकुट पाएगा और अपने अनन्त प्रतिफल में प्रवेश करेगा। मसीह इस दुनिया के हेरोदेस से उनकी शर्तों पर लड़ने नहीं आया था। यीशु के पास हेरोदेस, उसके किले और उसकी सेना के हर सैनिक को नष्ट करने की सामर्थ्य थी, लेकिन वह इस बार ऐसी चीजें करने नहीं आया था।

2. एक दूसरा कदम (4:13)

जब यीशु गलील में पहुंचा, तो उसने एक अन्य कदम उठाया। उसने नासरत में अपना बचपन का घर छोड़ दिया और गलील की झील के पास कफरनहूम चला गया। हम कल्पना कर सकते हैं कि वह अपने पारिवारिक व्यवसाय को अपने भाइयों को सौंप रहा है, अपनी माँ को अलविदा कह रहा है, अपनी बहनों को गले लगा रहा है, स्थानीय आराधनालय में पड़ोसियों, दोस्तों और ग्राहकों से विदा ले रहा है। हम उसे उस घाटी पर एक आखिरी नज़र डालते हुए देख सकते हैं जो इतने लंबे समय से उसका घर था।

जब से वह यरदन में यूहन्ना बपतिस्मादाता द्वारा बपतिस्मा लेने के लिए दक्षिण की ओर गया था, तब से बहुत कुछ घटित हो चुका था। प्रेरित यूहन्ना ने अपने सुसमाचार में इन विवरणों को भरा है। यूहन्ना ने गलील में प्रभु की प्रारंभिक गतिविधियों के बारे में बताया: चेलों की बुलाहट, काना में पहला चमत्कार, और कफरनहूम की पहली यात्रा (यूहन्ना 1:35-2:12)। यूहन्ना ने प्रभु की प्रारंभिक यहूदी सेवकाई, उसके अभिषेक के बाद उसका पहला फसह, मंदिर का शुद्धिकरण, नीकुदेमुस के साथ बातचीत, प्रभु द्वारा अपने चेलों का बपतिस्मा, और यूहन्ना बपतिस्मादाता की विश्वासयोग्यता (यूहन्ना 2:13-3:36) के बारे में बताया। और प्रेरित ने प्रभु के यहूदिया से गलील जाने, सामरिया में उसके छोटे से पड़ाव, और कुएँ पर एक स्त्री से उसकी मुलाकात (यूहन्ना 4:1-42) के बारे में बताया।

ऐसी घटनाओं की ख़बर ने नासरत के लोगों को चर्चा करने पर मजबूर कर दिया होगा, और उन्हें बहुत अधिक आश्चर्य हुआ होगा जब अब यह प्रसिद्ध स्थानीय लड़का घर लौट आया और उसने घोषणा की कि वह कफरनहूम जा रहा है। उनकी गपशप ने शायद एक दुर्भावनापूर्ण मोड़ लिया होगा जिसमें आक्रोश और छोटे शहर की संकीर्णता शामिल थी।

गलील पहुँचने के लिए एक आधार के रूप में कफरनहूम नासरत से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण था। गलील के समुद्र के किनारे स्थित, कफरनहूम नासरत से लगभग पच्चीस मील और तिबेरियास से दस मील की दूरी पर था, जो एक महत्वपूर्ण शहर है जिसका उल्लेख नए नियम में नहीं किया गया है। तिबेरियास में रोमियों का एक प्रसिद्ध कुंड था; इसके गर्म स्नान ने कई बीमार लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया।

गलील को यरूशलेम के धार्मिक गढ़ से अलग कर दिया गया था। यह जिला कभी भी पूरी तरह से यहूदी नहीं रहा था, क्योंकि सुलैमान ने सोर के राजा हीराम को बीस गलीली शहर भेंट दिए थे। गैर-यहूदियों द्वारा लगातार आक्रमण और बसावट ने इस क्षेत्र को एक मिश्रित आबादी प्रदान की; गलील के समुद्र के पश्चिमी तट पर कई शहर और मछली पकड़ने वाले गाँव थे, जहाँ बड़ी गिनती में गैर-यहूदी लोग रहते थे। यहूदिया के नस्लीय रूप से अधिक शुद्ध शहर गलील को घृणा की दृष्टि से देखते थे और गलील के उच्चारण का उपहास उड़ाते थे। यहूदिया को छोड़कर गलील में बसने से, यीशु ने एक महत्वपूर्ण संकेत दिया। यह उसके विश्वव्यापी उद्देश्य का संकेत था, जो हमेशा उसकी सोच का एक हिस्सा रहा, यहाँ तक कि जब वह "इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों" की सेवा भी कर रहा था।

गलील को उत्तर से दक्षिण तक सैन्य राजमार्गों और पूर्व से पश्चिम तक प्राचीन कारवां मार्गों द्वारा पार किया गया था। इस व्यस्त अंतरराष्ट्रीय गलियारे में कोई भी व्यक्ति रोमी पत्राचार या यूनानी वास्तुकला से आसानी से यहूदी कर संग्रहकर्ता या यहूदी किसान के रूप में मिल सकता था।

गलीली सागर दरअसल पहाड़ों से घिरी एक झील से बढ़कर ज़्यादा कुछ नहीं है। पश्चिमी तट पर पहाड़ उपजाऊ थे और यीशु के दिनों में बागों, खेतों और गांवों से पूरी तरह से ढके हुए थे। झील के उस पार रेगिस्तान की भयानक भू-संराचना दिखाई देती थीं, जो उस श्रृंखला का हिस्सा हैं जो यरदन के साथ दक्षिण में मृत सागर और अकाबा की खाड़ी तक चलती है। उत्तर में लेबनान के पहाड़ थे, जिन पर वैभवशाली हरमोन का प्रभुत्व था, जिसकी चोटी कभी बर्फ से मुक्त नहीं होती। समुद्र तल से लगभग 680 फीट नीचे गलील का सागर उष्ण-कटिबंधीय जलवायु में स्थित है।

यीशु के दिनों में झील के किनारे नौ शहर थे और इसके चारों ओर एक व्यस्त जीवन था। हरी पश्चिमी पहाड़ियों के तलहटी के पास बस्तियां फैली हुई थी, और किनारे पर गोदी और बंदरगाह थे। किसान मछुआरों को कोहनी मारते थे; गोदी के कामगार मजदूरों और जहाज़ बनाने वालों से धक्का-मुक्की करते थे। मछली पकड़ना और मछली बेचना एक बड़ा व्यवसाय था, जो हज़ारों परिवारों को रोज़गार देता था और सुसमाचार लिखे जाने से बहुत पहले ही जिसने गलील को रोमी दुनिया में काफ़ी मशहूर बना दिया था। जलसेतुओं की एक जटिल प्रणाली खेतों और बागों तक पानी पहुँचाती थी। मगदला में रंगाई के कारखाने और कफरनहूम में भूमि के बर्तन बनाने की भट्टियाँ और जहाज़ बनाने के कारखाने मौजूद थे। पूरे परिदृश्य पर राजसी शहर तिबेरियस का प्रभुत्व था, जिसमें शानदार हेरोदियन महल भी स्थित था, जहाँ यूनानी मूर्तियाँ धूप में चमकती थीं और यहूदियों को याद दिलाती थीं कि उनकी ज़मीन अन्यजातियो के हाथों में है।

गलील की सड़कों पर चलते हुए, एक यहूदी को यरदन के घाटों की ओर दक्षिण दिशा की तरफ जाने वाले लंबे कारवां मिल जाते थे। उसे सहज ही वहाँ लोहे की कवच पहने रोम के परेड़ करते सैनिकों की टुकड़ियाँ मिल जाती थी, और उनके अधिकारी बैंगनी और सोने से सजे कवच से सुसज्जित होते थे। उसकी भेंट यहाँ फोनीशियन व्यापारियों से भी होती थी जो समुद्र के पार की भूमि के खजाने को सौ शहरों के बाज़ारों और लेन-देन के स्थलों में लाते थे। वह कैसरिया, तिबेरियास और दिकापुलिस के महानगरों के सामने खेलने के लिए आने वाले धनी लोगों के रथ, तलवारबाजों की टुकड़ियाँ और घूमते-फिरते मनोरंजन करने वालों के दल को देख सकता था। यह "अन्य-जातियों का गलील" था (मत्ती 4:15), जैसा कि अहंकारी यहूदी लोग उपहासपूर्वक इसे कहते थे। यह वह जगह थी जहाँ यीशु ने रहने के स्थान के रूप में चुना था।

गलील के व्यस्ततम क्रियाकलापों के केन्द्रों में से एक कफरनहूम था, जहाँ पतरस और अन्द्रियास रहते थे, जो याकूब और यूहन्ना से बहुत दूर नहीं थे। वहाँ मत्ती ने एक चुंगी लेने वाले के रूप में अपना काम किया था, जो देश के अन्यजातीय अधिपतियों के लिए एक देशद्रोही चुंगी-लेनेवाला था।

3. एक पवित्रशास्त्र-आधारित कदम (4:14-16)

क. भविष्यद्वक्ता (4:14)

कफरनहूम की ओर जाना पवित्रशास्त्र के अनुसार ही था - “ताकि जो यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो।” मत्ती ने यहाँ यशायाह 9:1-2 का हवाला दिया, जहाँ भविष्यद्वक्ता ने उस स्थान की ओर इशारा किया था जहाँ मसीहा आकर अपना निवास बनाएगा।

ख. स्थान (4:15)

यह स्थान भूमध्य सागर की ओर जबूलून (ज़बुलोन) और नप्ताली (नेफ़थलीम) के गोत्रों का क्षेत्र और यरदन से पार का इलाका था - दूसरे शब्दों में, इस्राएल के उत्तरी राज्य का इलाका, जो सुलैमान की मृत्यु के बाद दाऊद के सिंहासन से अलग हो गया था। शुरू से ही, उत्तरी राज्य ने मूर्तिपूजा और धर्मत्याग में अग्रणी भूमिका निभाई थी।

यह विशेष क्षेत्र ईश्वरीय अप्रसन्नता के हाथ को महसूस करने वाला पहला इलाका था। सीरिया और अश्शूर के साथ युद्ध के बाद सामरिया का पतन हुआ और गोत्रों को निर्वासित कर दिया गया (1 राजा 15:20; 2

राजा 15:29; 17:6; 1 इतिहास 5:26)। अश्शूरियों ने बंजर भूमि को फिर से आबाद करने के लिए विदेशियों को लाकर यहाँ बसाया।

ग. उद्देश्य (4:16)

यशायाह ने न्याय की भविष्यद्वाणी की थी और उसने यह भी वादा किया था कि यह तबाह क्षेत्र मसीहा के शानदार उजियाले में जगमगा उठेगा। यशायाह 9:2 को याद करते हुए, मत्ती ने लिखा, “जो लोग अंधकार में बैठे थे उन्होंने बड़ी ज्योति देखी; और जो लोग घोर मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी।” "अन्य-जातियों का गलील" जल्द ही दूसरी दुनिया की ज्योति से जगमगा उठा, जहाँ अब परमेश्वर की शेकिना महिमा यीशु मसीह के व्यक्तित्व में होकर उनके बीच निवास कर रही थी।

प्रभु का कफरनहूम की ओर जाना उसे दुनिया की सारी हलचल के ठीक मध्य में ले आया, जहाँ यहूदी और अन्यजाति एक दूसरे से मिलते और घुलते-मिलते थे, जैसा कि इस वादा किए हुए भूमि के अलावा कहीं और नहीं था।

ख. राजा का संदेश (4:17)

यूहन्ना जेल में था और यीशु कफरनहूम में था। “उस समय से यीशु प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।” हेरोदेस ने एक आवाज़ को चुप करा दिया था और अब एक और अधिक सामर्थ्यशाली आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह आवाज़ ठीक वहीं से शुरू हुई जहाँ दूसरी आवाज़ बंद हो गई थी। लेकिन संदेश वही था।

इस दुनिया के हेरोदेस कभी भी परमेश्वर की आवाज़ को दबा या चुप नहीं करा सकते। वे प्रचारकों को मार डाल सकते हैं, लेकिन वे प्रचार को नहीं मार सकते। जैसा कि पुराने अमेरिकी उन्मूलनवादियों ने कहा, "उसका सत्य आगे बढ़ता ही रहता है।"[1]

आने वाले दिनों में भी ऐसा ही होगा। मसीह-विरोधी अंततः दो गवाहों को चुप करा देगा (प्रकाशितवाक्य 11) और उसे पता चलेगा कि अब दो गवाहों के बजाय उसे 144,000 गवाहों से जूझना पड़ेगा।

यह ख़बर कि मसीहा जिसकी घोषणा यूहन्ना ने की थी, वह वास्तव में आ चुका है, अवश्य ही वहाँ के धनी और सामर्थ्यशाली लोगों के सभाओं में प्रवेश कर गई होगी। यरूशलेम मंदिर के शुद्धिकरण ने काफी हलचल मचा दी थी, क्योंकि इसने प्रभावशाली सदूकियों के निहित स्वार्थों को चुनौती दी थी। अब खबर आई कि मसीहा साहसपूर्वक यूहन्ना के संदेश का प्रचार कर रहा था और हम यकीन के साथ कह सकते हैं कि उत्तर में हेरोदेस इस नई आवाज़ से काफ़ी चिंतित था।

ग. राजा के लोग (4:18-22)

वह दिन आ गया था जब प्रभु उन लोगों को अपने पास इकट्ठा करना शुरू करने वाला था जो पूर्ण-कालिक समर्पण के साथ उसके चेले बनने वाले थे। हम यूहन्ना 1:35-42 से इस बात को जान पाते हैं कि यूहन्ना, अन्द्रियास और पतरस ने पहले ही यीशु के साथ समय बिताया था, लेकिन उन्होंने अभी तक यह नहीं सीखा था कि उसके पीछे चलना कोई बार-बार शुरू होने या फिर बंद होने वाला मामला नहीं था। इस दिन, उनकी बुलाहट के दिन, वे तीनों, यूहन्ना के भाई याकूब के साथ, अपने पिता के व्यवसाय में व्यस्त थे।

परमेश्वर हमेशा व्यस्त लोगों को बुलाता है। प्रभु की सेवा में आलसी लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है। सुसमाचार का एक आलसी सेवक परमेश्वर के उच्च बुलाहट के लिए एक अपमान है। ऐसे सभी लोगों को एली याजक का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना चाहिए (1 शमूएल 1:9; 3:2-4; 4:13)। हम इस पुराने नियम के चरित्र से तीन बार मिलते हैं। पहली बार वह तम्बू के एक खंभे के सहारे टिका हुआ है; दूसरी बार वह बिस्तर पर है और एक छोटे लड़के को उसे यह बताने के लिए बार-बार जगाना पड़ता है कि कोई बुला रहा है; तीसरी बार एली सड़क के किनारे एक कुर्सी पर बैठा हुआ है - बुरी खबर सुनने पर, वह उस कुर्सी से गिर पड़ा और उसकी गर्दन टूट गई।

हम प्रभु यीशु को गलील के तट पर चलते हुए देख सकते हैं। उसकी नज़र में जो दृश्य आया वह एक साथ शांतिपूर्ण और व्यस्त दोनों थे। सूरज की रोशनी ने नाशपति के आकार की झील को नीलम की तरह चमका रखा था, जो आसपास की पहाड़ियों के बीच छह सौ से एक हज़ार फ़ीट तक ऊँची थी। एक हल्की हवा आग और मछली की गंध लेकर उन लोगों तक पहुँची जो इधर-उधर भाग-दौड़ रहे थे, जो अपने काम में लगे हुए थे। हवा में खुशी की अभिव्यक्ति से लेकर गुस्से से भरी चीखें, भजनों के अंशों से लेकर शापों तक, भिखारियों की कराह से लेकर सूबेदारों के आदेशों तक की आवाज़ें भरी हुई थीं।

1. किनारे पर जो दो लोग थे — अपने जाल डाल रहे थे (4:18-20)

क. मसीह ने क्या देखा (4:18)

दृढ़ता के साथ यीशु उन दो भाइयों के पास गया, "शमौन जो पतरस कहलाता है, और दूसरा अन्द्रियास।" जिस प्रकार का जाल वे इस्तेमाल कर रहे थे वह एक गोलाकार, घंटी के आकार का जाल था, जिसे इस तरह फेंका जाता था कि वह पानी की सतह पर फैल जाता था और जब वह डूबता था तो उसके नीचे की हर चीज़ उसमें फंस जाती थी।

ख. मसीह ने क्या प्रस्ताव दिया (4:19-20)

(1) चुनौती (4:19)

यीशु ने पतरस और अन्द्रियास को उनके नियमित काम पर इतनी आसानी से लौटने के लिए कभी डांटा नहीं। यह बेकार बैठे रहने से कहीं उत्तम था। हालाँकि, उनके लिए स्वामी के प्रति अपने जीवन में समर्पित होने का समय आ गया था। “मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊंगा” उसने उनके व्यवसाय का उपयोग उसी तरह के काम को आगे ले जाने की चुनौती के रूप में दी।

(2) विकल्प (4:20)

उन दोनों व्यक्तियों को किसी और के द्वारा समझाए जाने की आवश्यकता नहीं थी। वे यीशु को पहले ही इतना देख चुके थे कि उन्हें यकीन हो गया था कि वह वास्तव में मसीहा है। यह जीवन भर का एक अवसर था कि उन्हें आने वाले राज्य के प्रमुख सदस्य बनने के लिए बुलाया जा रहा था। उस समय उन्हें इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि प्रभु सिंहासन की ओर नहीं, बल्कि कब्र की ओर जा रहा था; वे नहीं जानते थे कि उनके आगे जो है वह दरअसल मुकुट नहीं बल्कि एक क्रूस था।

2. नाव पर सवार दो लोग - अपने जाल की देखभाल कर रहे थे (4:21-22)

झील के पास याकूब और यूहन्ना भी थे, जो जब्दी के पुत्र थे। जब्दी एक काफी समृद्ध मछुआरा था जिसके पास कई मजदूर थे (देखें मरकुस 1:20)। इस तथ्य से कि महायाजक अन्ना को यूहन्ना जानता था (देखें यूहन्ना 18:15), हम अनुमान लगा सकते हैं कि यह परिवार काफी संपन्न था। मत्ती 4:21 पवित्रशास्त्र में एकमात्र स्थान है जहाँ हम जब्दी से व्यक्तिगत रूप से मिलते हैं। उसने अपने दो बेटों के पारिवारिक व्यवसाय को छोड़ने पर कोई आपत्ति नहीं जताई - उन्होंने तुरंत व्यवसाय छोड़ दिया, और कभी वापस नहीं लौटे - ताकि नासरत के बढ़ई का अनुसरण कर सके जिसने इस्राएल का मसीहा होने का दावा किया था। वह कितना ही नेक इंसान रहा होगा!

हम उसकी पत्नी शलोमी से कई बार मिलते हैं। उसने एक बार यीशु से अपने दोनों बेटों को उसके राज्य में सम्मानित स्थान देने के लिए कहा था (मत्ती 20:20-21); वह क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय मौजूद थी (मरकुस 15:40); वह उन स्त्रियों में से एक थी जो यीशु के जी उठने के समय कब्र पर गई थी (मरकुस 16:1)। कुछ लोग सोचते हैं कि शलोमी और प्रभु की माँ बहनें थीं (यूहन्ना 19:25)। यदि ऐसा है, तो शलोमी और जब्दी प्रभु के चाची और चाचा थे, और याकूब और यूहन्ना उसके चचेरे भाई थे। और यह समझाने में मदद कर सकता है कि जब्दी अपने दो लड़कों को जाने देने के लिए इतना इच्छुक क्यों था। उसे यीशु के जन्म की चमत्कारी परिस्थितियों के बारे में सब पता होगा।

अन्द्रियास और पतरस की तरह, याकूब और यूहन्ना ने भी प्रभु के पूर्ण-कालिक सेवा की बुलाहट के प्रति प्रतिक्रिया देने में कोई समय बर्बाद नहीं किया। शायद यह महत्वपूर्ण है कि शमौन और अन्द्रियास जब बुलाए गए थे, तब वे मछलियाँ पकड़ने के लिए अपने जाल बिछा रहे थे और याकूब और यूहन्ना अपने जाल सुधार रहे थे। अन्द्रियास और पतरस महान आत्मा-विजेता बन गए; याकूब और यूहन्ना - विशेष रूप से यूहन्ना - पास्टर-शिक्षक के रूप में अधिक उभर के आया। (याकूब कलीसिया के इतिहास के आरंभ में जल्दी शहीद हो गया; प्रेरितों के काम 12:2 देखें।)

घ. राजा की सेवकाई (4:23a-b)

1. चलना-फिरना (4:23a)

मत्ती ने लिखा, “यीशु सारे गलील में फिरता हुआ...” उत्तर से दक्षिण तक, गलील लगभग 63 मील लंबा और पूर्व से पश्चिम तक लगभग 33 मील चौड़ा था। जोसेफस के अनुसार, इसकी आबादी लगभग 30 लाख थी।

2. उपदेश देना (4:23b)

प्रभु ने आराधनालयों पर ध्यान केंद्रित किया। यहूदी धार्मिक जीवन में यह नया व्यवहार बेबीलोन के निर्वासन की अनिवार्यताओं से उत्पन्न हुआ, जब नियमित पुराने नियम की आराधना, जो बलिदान और मंदिर पर निर्भर थी, सुलैमान के मंदिर के विनाश के साथ बाधित हुई थी। बन्धुआई के बाद आराधना का नया रूप फिलिस्तीन में अपनाया गया और जल्द ही हर जगह, देश और विदेश में आराधनालय स्थापित किए गए। तल्मूड के अनुसार यरूशलेम के विनाश से पहले वहाँ 480 थे (टी.जे. मेगिल्लाह 73 द)। कुछ लोग इस गिनती को अतिशयोक्ति मानते हैं, लेकिन एडर्सहेम ने इसकी पुष्टि की कि इनकी संख्या सैकड़ों में थी।[2]

आराधनालयों में यीशु ने "स्वर्गराज्य का सुसमाचार" की घोषणा की, इस अच्छी खबर के साथ कि स्वर्गराज्य के युग की शुरुआत हो चुकी है, कि पुराने नियम में आम तौर पर बताए गए सहस्राब्दी युग का वायदा अब पूरा होने को तैयार हैं। लोग उसकी सेवाओं में उमड़ पड़े।

ङ. राजा के आश्चर्यकर्म (4:23c-25)

1. उसे कितनी परवाह थी (4:23c-24)

प्रभु की सेवकाई में असाधारण तरीके के चमत्कार हुए, न केवल उनकी प्रकृति में बल्कि उनकी गिनती में भी। मत्ती ने कहा कि वह “हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।" यीशु के चारों ओर बीमार, दुष्टात्मा से ग्रस्त और दुर्बल लोग उसे घेरे रहते थे। "दुर्बलता" शब्द का अनुवाद सेलेनियाज़ो का एक रूप है, जिसका अर्थ है “चंद्रमा से प्रभावित होना”; शायद यह संदर्भ मिर्गी के रोगियों के लिए है, क्योंकि बाइबल के समय में मिर्गी को चंद्रमा से प्रभावित माना जाता था। मत्ती की सरल गवाही थी कि - "उसने उन्हें चंगा किया।”

सभी सुसमाचारों में कुल मिलाकर यीशु के केवल पैंतीस चमत्कार दर्ज हैं - प्रभु के सार्वजनिक सेवकाई के साढ़े तीन वर्षों के दौरान औसतन एक महीने से भी कम। मत्ती के सारांश कथन से यह साबित होता है कि यीशु ने स्पष्ट रूप से इससे कहीं अधिक चमत्कार किए, लेकिन बाइबल चमत्कारों को दर्ज करने में धीरज धरती है। चमत्कारों पर आधारित विश्वास शायद ही कभी एक मज़बूत विश्वास होता है। परमेश्वर आम तौर पर हमें अपने लिखित वचन के लिए प्रतिबद्ध करता हैं।[3]

प्रभु यीशु के आश्चर्यकर्म ने उसे तुरंत यूहन्ना बपतिस्मादाता से अलग कर दिया, जिसने कभी कोई चमत्कार नहीं किया था। लेकिन मसीह के लिए यूहन्ना की गवाही सामर्थ्यशाली और प्रभावी थी (यूहन्ना 10:41-42), वचन के मूल्य के प्रति एक महत्वपूर्ण गवाही। यीशु अद्भुत चमत्कार करते हुए आया, लेकिन इससे लोगों को उसके विरूद्ध जाने और अंत में यह उसे क्रूस पर चढ़ाने से नहीं रोका जा सका।

2. कितने लोग थे जो वहाँ आये (4:25)

हालाँकि, कुछ समय के लिए, प्रभु यीशु के चमत्कारों के कारण उसके पीछे चलने वाले अनुयायियों की एक बड़ी गिनती सुनिश्चित हो चुका थी। मत्ती ने कहा कि वे “गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से” उसके पास आए। दिकापुलिस (शाब्दिक रूप से "दस शहर") गलील के समुद्र के पूर्व, दक्षिण-पूर्व और दक्षिण में स्थित एक जिला था।[4] दिकापुलिस के शहर, जिनके बारे में माना जाता है कि मूल रूप से सिकंदर महान की सेना के योद्धाओं द्वारा उपनिवेश बनाए गए थे, ने अपने यूनानी चरित्र को वहाँ बरकरार रखा। कहा जाता है कि टॉलेमी ने उन्हें एक शासक इकाई में संगठित किया। “यरदन के पार” का जिला गलील की दक्षिणी रेखा से शुरू होकर और मृत सागर के पूर्वी तट के मध्य में पुरानी मोआबाइट सीमा तक जाता था। इसे आम तौर पर पिरीया कहा जाता है।

II. राजा का आदेश प्रकट किया गया (5:1-7:29)

अब हम पहाड़ पर दिए गए प्रसिद्ध उपदेश पर पहुँच चुके हैं। दुनिया के किसी भी साहित्य में इसकी तुलना करने लायक कुछ भी नहीं है। दुनिया के सबसे महान नैतिक, धार्मिक और दार्शनिक कथन भी इस उत्कृष्ट उपदेश के सामने फीके और डगमगाते हुए लगते हैं।

जब तक यीशु ने इस महान उपदेश की घोषणा की, तब तक यूनानी दार्शनिक आकर चले गए थे, और दुनिया को नैतिक रूप से उतना ही दिवालिया बना दिया था, जितना उन्होंने इसे स्वयं पाया था। इसी तरह पूर्व के धर्मों का भी समय बीत चुका था। उन्होंने लोगों को घोर अंधकार में टटोलते हुए छोड़ दिया था, जो कि पूर्ण शून्यता के परम आनंद या किसी काल्पनिक भविष्य के अवतार में बेहतर जीवन की आशा कर रहे थे। उनके दार्शनिकों ने पहले से ही सावधानी से झुके हुए जीवन पर धार्मिक बोझ डालने के अलावा कुछ और नहीं किया। पूर्व की तथाकथित पवित्र पुस्तकें - ब्राह्मणों के वेद, शिव और विष्णु के पुराण, मुसलमानों के कुरान, पारसियों के ज़ेंद-अवेस्ता, बौद्धों के त्रिपिटक - सभी विफल हो गए और पहाड़ी उपदेश के सामने बहुत ही कम महत्व के रह गए। तल्मूड के लिए, एडर्सहेम ने कहा:

तल्मूड के किसी भी भाग के लगातार आधा दर्जन पृष्ठ पढ़ने वाला कौन है, जो चौंकने, दुखी होने, खुश होने या चकित होने के अलावा कुछ और महसूस कर सकता है? यहाँ बुद्धि और तर्क, तीव्रता और तत्परता, ईमानदारी और जोश व्याप्त है, लेकिन इसके साथ ही भयंकर अपवित्रता, अशुद्धता, अंधविश्वास और मूर्खता भी शामिल है। समग्र रूप से देखा जाए तो यह न केवल पूरी तरह से आध्यात्महीन है, बल्कि आध्यात्म-विरोधी भी है... यह नए नियम से इतना अलग और असीम रूप से अलग है कि यह निर्धारित करना आसान नहीं है कि, जैसा भी मामला हो, कौन बड़ा है, अज्ञानता या उन लोगों की धारणा जो उन्हें एक साथ रखते हैं।[5]

पहाड़ी उपदेश सांसारिक आशाओं के बजाय स्वर्गीय आशा रखने वाले लोगों को संबोधित करता है। यह प्रवचन, राज्य के नियमों को मूर्त रूप देता है, जैसा कि मूसा की संहिता में इस्राएल के राष्ट्रीय कानूनों को मूर्त रूप दिया गया था, लेकिन यहूदियों के लिए नहीं था। यह उन लोगों के लिए था जिन्हें पवित्र आत्मा द्वारा पुनर्जीवित किया गया था। कोई भी सांसारिक व्यक्ति - चाहे वह कितना भी मधुर स्वभाव वाला, कितना भी उत्साही और ईमानदार और नेक इरादे वाला क्यों न हो - इस तरह का पहाड़ी उपदेश नहीं दे सकता। केवल यीशु ने ही ऐसा किया है।

यीशु ने मूसा की व्यवस्था को लिया, उसे अपने महिमामय मन के काँच से गुज़ारा, और व्यवस्था के प्रकाश को उसके आदिम रंगों में बिखेर दिया। फिर उसने सांसारिक से लेकर स्वर्गीय, प्राकृतिक से लेकर आत्मिक तक सब कुछ उठा लिया, और उसे सभी मानवीय पहुँच से बहुत दूर रख दिया। "इस तरह लोगों को राज्य में रहना चाहिए," उसने प्रभावी रूप से कहा। स्पष्ट रूप से केवल पवित्र आत्मा के द्वारा नए सिरे से जन्मे लोग, पवित्र आत्मा द्वारा वास किए जाने वाले और उसके द्वारा सशक्त किए गए लोग ही इस तरह का जीवन जी सकते हैं। “मसीह जो महिमा की आशा है” वही इसकी कुंजी है (कुलुस्सियों 1:27)।

सुसमाचार का गौरव इस तथ्य में निहित है कि जैसे मसीह ने एक बार हमारे लिए अपना जीवन दिया, वैसे ही अब वह अपना जीवन हमें प्रदान करता है। उसने स्वयं साढ़े तैंतीस साल तक जीवन जिया और अब वह समर्पित विश्वासियों के जीवन में उस जीवन को जीना जारी रखता है। सहस्राब्दी युग के दौरान जब

पहाड़ी उपदेश के नियम दुनिया के कानूनी नियम बन जाएंगे, तब भी लोगों को उन्हें व्यवहार में लाने के लिए फिर से जन्म लेने की आवश्यकता होगी।

हालाँकि यह सच है कि पहाड़ी उपदेश में सहस्राब्दी के संकेत छिपे हैं, लेकिन इसका मुख्य अमलीकरण उन लोगों पर है जिन्हें संबोधित किया गया था: अर्थात् इस युग में जी रहे प्रभु के लोगों के लिए। यह उन लोगों के लिए दिए गए निर्देशों से स्पष्ट है जो सताव का सामना कर रहे हैं (मत्ती 5:11-12)। सहस्राब्दी के दौरान किसी को भी सताव का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यह उपदेश प्रभु के चेलों को दिया गया था, वही चेले जो पिन्तेकुस्त के दिन ऊपरी कोठरी में कलीसिया के केंद्र थे। अपने उपदेश में मसीह ने उद्धार के नियम नहीं बताया; उसने उन लोगों के लिए जीने के नियम बताए जो उद्धार पा चुके हैं। उसने उन सभी के लिए एक संपूर्ण आचार संहिता दी जो परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं। बहुत से लोग इन नियमों को अव्यावहारिक मानते हैं, लेकिन प्रभु की आज्ञाओं के साथ हमेशा उसकी सशक्त करने वाली सामर्थ्य भी निहित होती है।

क. चेले और उसकी आशीषें (5:1-16)

पहाड़ी उपदेश धन्य लोगों की सूची के साथ शुरू होता है (5:1-12), जो कथनों की एक श्रृंखला है जो उन लोगों पर आनंद का आह्वान करती है जो इसमें वर्णित विशेषताओं को अपनाते हैं।

1. मंच की तैयारी (5:1-2)

ऐसा लगता है कि यह उपदेश कफरनहूम के ऊपर की ढलानों पर दिया गया होगा। यीशु के आश्चर्यकर्मों से आकर्षित होकर लोगों की भारी भीड़ उसके पीछे-पीछे पहाड़ की ढलान तक चली गई। वे यह सुनकर हैरान रह गए, क्योंकि जिस तरह के राज्य का वह वर्णन करने वाला था, उसकी कल्पना भी उन्होंने कभी नहीं की थी। यहूदी शिक्षकों की रीति का पालन करते हुए, यीशु बैठ गया और बोलना शुरू कर दिया। उपदेश उसके चेलों को संबोधित था, लेकिन इसे सभी ने सुना। उसके वचन पहाड़ की ढलानों पर एक सामर्थी अधिकार के साथ गूंज उठा, जो रब्बियों की तुच्छ शिक्षाओं में कभी नहीं दिखता था। उसने ऐसे सिद्धांतों को व्यक्त किया, जो स्पष्ट होते हुए भी, उसके उत्सुक श्रोताओं की उच्चतम आकांक्षाओं से कहीं बढ़कर थे। “पहाड़ी उपदेश,” ऐसा कहा जाता है कि, “कलीसिया के कानों में बोला गया और संसार ने इसे सुना।”

2. उपदेश (5:3-12)

इस संबोधन के कुछ हिस्से समकालिक सुसमाचारों में अन्यत्र पाए जाते हैं, विशेष रूप से लूका रचित सुसमाचार में। हालाँकि, लूका के अभिलेख में केवल 30 अलग-अलग पद हैं (मत्ती के अभिलेख में 107 हैं) और इसमें न तो कथनों को उनके कालानुक्रमिक आधार में दोहराने का दावा किया गया है और न ही उपदेश को उसकी संपूर्णता में दोहराया गया है।

मत्ती 5:3-12 में कही गई बातें आठ धन्य वचनों से मिलकर बनी हैं, जो उन आठ श्रापों के बिल्कुल विपरीत हैं जो प्रभु की सार्वजनिक सेवकाई को समापन की ओर ले आते हैं (मत्ती 23)।

क. हम कौन हैं (5:3-5)

पहले के तीन धन्य वचन मुख्य रूप से इस बात से संबंधित हैं कि हम कौन हैं। हम जो हैं, वह वास्तव में हम जो करते हैं, उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। हम जो करते हैं, वह इसलिए करते हैं क्योंकि हम वही हैं जो हम हैं। प्रत्येक आशीष का परिचय देने वाला शब्द- "धन्य" - दरअसल माकारियोस का अनुवाद है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "आनन्दित"। यहाँ प्रभु ने सुखी जीवन, सुखी मृत्यु और सुखी अनंत काल के लिए सुझाव दिया है। उसके वचन सभी मानवीय दर्शन की जड़ों पर प्रहार करते हैं। नया जन्म न पाने वाला व्यक्ति यह समझने में असमर्थ होता है कि इन आशीषों में व्यक्त सत्य किस प्रकार आनंद का आधार हो सकते हैं।

(1) मन के दीन (5:3)

धन्य वचन के आरंभ में हम पढ़ते हैं, "धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।" तो सबसे पहली मांग सच्ची विनम्रता है, आत्मिक अभाव की भावना के लिए जो पवित्र आत्मा द्वारा जागृत होती है जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के सामने अपनी शून्यता को देखता है। यशायाह ने कराहते हुए कहा, "हाय उन पर," जब उसने इस्राएल पर एक दृढ़ विश्वास की भावना उंडेली (यशायाह 5:8-23), लेकिन जब उसने खुद को एक पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में पाया तो वह पुकार उठा, "हाय मुझ पर" (6:1-5)। परमेश्वर की उपस्थिति की भावना उस अभिमानी भावना से तुरंत निपटती है जिसकी दुनिया बहुत सराहना करती है।

यदि विश्वासियों के पास ऐसे बदले हुए स्वभाव नहीं होते, तो वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की घातक बुराइयाँ परमेश्वर के राज्य में फिर से प्रकट हो जातीं। इसलिए पहाड़ी उपदेश की दहलीज पर प्रभु ने विनम्रता का द्वार सबसे पहले रखा।

(2) शोक करने वाले (5:4)

जबकि पहला धन्य वचन इस बात से संबंधित है कि जब पवित्र आत्मा अपना कार्य आरंभ करता है और हमें परमेश्वर की उपस्थिति में नग्न और दीन छोड़ देता है, तो हमारी आत्मा में क्या होता है, दूसरी आशीष इस बात से संबंधित है कि जब हमारी आत्मिक नग्नता और दीनता प्रकट होती है, तो हम अपनी आत्मा में क्या होते हैं। हम अपने पाप के प्रति शोक में डूब जाते हैं। यह दुःख हमारे द्वारा किए गये पाप और उस पाप के प्रति होता है जिसे हम अपने चारों ओर देखते हैं, पाप जो परमेश्वर के हृदय के साथ-साथ उसकी व्यवस्थाओं को भी तोड़ता है, वह पाप जो हमारे हृदय को भी तोड़ता है। जो लोग इस प्रकार शोक करते हैं, उनसे आश्वासन का वादा किया गया है।

(3) संघर्ष में धैर्यवान (5:5)

तीसरा धन्य वचन यह संकेत देता है कि जो लोग अपनी परिस्थितियों के संबंध में धीरजवंत होते हैं, उनके लिए एक आशीष सुरक्षित रखी गयी है: "धन्य हैं वे जो नम्र हैं: क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।" नम्र बनना - कमज़ोर नहीं। मूसा नम्र था (गिनती 12:3)। प्रभु यीशु नम्र था (मत्ती 11:29)। कोई भी उन्हें कमज़ोर नहीं कहेगा। नम्र होने का अर्थ है कोमल, धैर्यवान होना, क्रोध या आक्रोश से दूर रहना। प्रभु ने नम्रता तब प्रकट की जब वे युद्ध के घोड़े पर सवार होने के बजाय गधे के बच्चे पर सवार होकर यरूशलेम में विजयी प्रवेश करते हैं।

नम्रता एक ऐसा गुण है जिसकी दुनिया में बहुत प्रशंसा नहीं की जाती। दुनिया सोचती है कि नम्र व्यक्ति निरुत्साही, रीढ़विहीन और गुलाम होता है। लेकिन यीशु ने नम्र लोगों से वादा किया कि "वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।" जब पृथ्वी सहस्राब्दी युग के दौरान प्रभु की विजय का दृश्यमान क्षेत्र बन जाएगी, तो नम्र लोग इसके राजकीय वर्ग में गिने जाएंगे। ऑगस्टीन ने चेतावनी दी, "क्या तुम पृथ्वी पर अधिकार करना चाहते हैं? तो सावधान रहें कि यह तुम्हें अपने वश में न कर ले।" परमेश्वर की बुद्धि में मुकुट से पहले क्रूस आता है - और इस तरह की बुद्धि मनुष्यों के सामने मूर्खता है (1 कुरिन्थियों 1:18-20)।

ख. हमारा लक्ष्य कहाँ है (5:6)

चौथा धन्य वचन हमें बताता है कि हमें धार्मिक होने का लक्ष्य रखना चाहिए। हममें "धार्मिकता के लिए भूख और प्यास" होनी चाहिए। जो व्यक्ति बहुत भूखा या प्यासा होता है, वह किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोच सकता। भूख और प्यास हमारी शारीरिक प्रकृति की सबसे बुनियादी और मांग करनेवाली प्रेरक शक्तियाँ हैं। कोई भी व्यक्ति उन्हें लंबे समय तक अनदेखा नहीं कर सकता। वही व्यक्ति आनंदित रहता है जिसके पास परमेश्वर जैसा बनने की उतनी ही प्रबल इच्छा होती है।

संसार का कोई भी धर्म मनुष्य की अच्छा बनने की लालसा को संतुष्ट नहीं कर सकता। धर्मी होना मनुष्य के पतित स्वभाव के द्वारा संभव नहीं है, और सभी धर्म केवल उसके पतित स्वभाव को अधिक विकसित ही कर सकते हैं। हम व्यावहारिक रूप से पवित्र आत्मा के द्वारा ही धर्मी बनाए गए हैं।

रोमियों को लिखी पत्री के अनुसार, धार्मिकता पहले प्रकट होती है, फिर आवश्यक होती है, फिर इसे प्राप्त किया जाता है, और उसके बाद ही प्रकट होती है। (रोमियों में "धार्मिकता" शब्द तैंतीस आयतों में आता है।) मसीह की धार्मिकता को अपना मानकर हम स्थितिगत रूप से धार्मिक बनते हैं। इस प्रकार परमेश्वर के सामने हमारी स्थिति परिपूर्ण बनती है। हम व्यावहारिक रूप से धार्मिक बनते हैं - और धार्मिकता व्यावहारिक मसीहत की कुंजी है - हमारे भीतर निवास करने वाले पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा, जो हमें ईश्वरीय प्रकृति प्रदान करता है और हमें हमारे पुराने आदम के स्वभाव पर विजय पाने में सक्षम बनाता है। यह कार्य हमारी स्थिति से संबंधित है, जो अक्सर अपूर्ण होती है। जब हम अपने पुनरुत्थानित शरीर को प्राप्त करेंगे तो हमारी पहुँच और स्थिति अपने पूर्ण सामंजस्य में होगी। तब हम अनंत काल तक के लिए उसके समान हो जाएंगे।

इस बीच, नया जन्म लेने वाला व्यक्ति धार्मिकता के लिए भूखा और प्यासा रहता है, इस सुखद आशा में कि यह इच्छा अधूरी नहीं रहने वाली है। नरक की भयानकताओं में से एक यह तथ्य है कि परमेश्वर अंततः खोए हुए लोगों से कहेगा, "जो अन्याय [अधर्म] करता है, वह अन्याय [अधर्म] ही करता रहे" (प्रकाशितवाक्य 22:11)। खोए हुए लोग पूरी तरह से आशाविहीन होकर धार्मिकता की लालसा करेंगे। लेकिन जीवन के जल की एक भी बूँद उन तक नहीं पहुँच पाएगी जहाँ वे हैं।

ग. हमारे कार्य करने के तरीके (5:7-9)

पांचवां, छठा और सातवां धन्य वचन यह बताता है कि क्रूरता, भ्रष्टाचार और संघर्ष का सामना करते समय हमें कैसा व्यवहार करना है।

(1) उपद्रव का सामना करते समय (5:7)

क्रूरता, अन्याय, चोट और अन्याय का सामना करते वक्त, हमें पाँचवां धन्य वचन याद रखना चाहिए: "धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।" व्यवस्था का हृदय और आत्मा न्याय था; जबकि सुसमाचार का हृदय और आत्मा दया है। जो दया नहीं दिखाता वह उस पुल को नष्ट कर देता है जिस पर से उसे खुद गुजरना होता है। बाइबल के बाहर, शेक्सपियर ने दया की सबसे अच्छी प्रशंसा की, विशेष रूप से पोर्टिया के शाइलॉक को दिए गए महान भाषण में। शाइलॉक एंटोनियो से सचमुच एक पाउंड मांस की मांग करता है, और पोर्टिया उस अडिग साहूकार को दयालु होने के लिए मनाने की कोशिश करती है:

दया की गुणवत्ता पर कोई दबाव नहीं होता,

यह स्वर्ग से कोमल वर्षा की तरह गिरता है

निचले स्थान पर: यह दुगुनी आशीष है;

यह देने वाले और लेने वाले दोनों को आशीष देता है:

यह सामर्थ्यशाली में सबसे सामर्थ्यशाली बन जाता है

सिंहासन पर बैठे सम्राट और उसके मुकुट से भी बेहतर है।

यह स्वयं परमेश्वर का गुण है।[6]

(2) भ्रष्टाचार का सामना करते समय (5:8)

छठा धन्य वचन कहता है, "धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।" यीशु यहाँ न केवल जीवन की शुद्धता की शिक्षा दे रहा था, बल्कि हृदय की शुद्धता भी सिखा रहा था। ऐसी शुद्धता कितनी दुर्लभ है! हमें भीतर से शुद्ध होना चाहिए, जहाँ जीवन के सभी मुख्य स्रोत पाए जाते हैं। हमें जीवन को उसके सभी भ्रष्टाचार और बुराई के साथ देखने में सक्षम होना चाहिए, और अपने आप को इनसे दूषित होने से बचाए रखना चाहिए। हृदय को शुद्ध बनाना किसी कोढ़ी को शुद्ध करने या मृतकों को जीवित करने से भी बड़े चमत्कार की मांग करता है।

मध्यकालीन युग के भिक्षु संसार के भ्रष्टाचार से भागकर मठों और मंदिरों में चले गए, जो अक्सर एकांत, दुर्गम स्थानों पर बनाए गए थे और कठोर तपस्वी नियमों का पालन करना पड़ता था। इस तरह की पवित्रता की खोज शुरू होने से पहले ही बर्बाद हो जाती थी, क्योंकि भिक्षु अपने मनों के भ्रष्टाचार को अपने साथ ले जाते थे।

बाइबल में अलग रहने का मतलब एकांकी जीवन नहीं, बल्कि अलगाव है। यीशु ने पूरी तरह से एक अलग जीवन जिया। वह संसार में था, लेकिन वह संसार का नहीं था। वह एक ही समय में संसार की ज़रूरतों और स्वर्ग की सामर्थ्य के संपर्क में था। उस सामर्थ्य का कोई 'शॉर्ट सर्किट' नहीं था, क्योंकि वह एक अभेद्य पवित्रता के भीतर सुरक्षित था। हमारे लिए, उद्धार करने वाले, पवित्र करने वाले अनुग्रह और पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के रूप में मसीह की वास्तविक उपस्थिति के बिना मन की शुद्धता पाना असंभव है।

शुद्ध मन वाले ही परमेश्वर को देख सकते हैं। केवल शुद्ध मन वाले ही उनकी पवित्रता की प्रज्वलित चमक को सहन कर सकते हैं। टी. बिन्नी ने इस विचार को गीत के निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त किया है:

अनन्त प्रकाश, अनन्त प्रकाश, आत्मा कितनी शुद्ध होगी;

जब तेरी खोजी नज़रों के सामने रखा गया,

यह सिकुड़ता नहीं, बल्कि शांत प्रसन्नता के साथ,

आपको निहारते हुए जी सकते हैं।

(3) संघर्ष का सामना करते समय (5:9)

संघर्ष का सामना करते समय, हमें शांति स्थापित करने वालों के रूप में कार्य करना चाहिए। सातवाँ धन्य वचन कहता है, “धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।”

पाप ने इस दुनिया में संघर्ष की शुरुआत की। पहला पाप मनुष्य को परमेश्वर से अलग करता है; दूसरा पाप, कैन द्वारा हाबिल की हत्या, अर्थात् मनुष्य को मनुष्य से अलग करता है। यीशु शांति लाने के लिए इस पृथ्वी पर आया। मसीहा के उसके शीर्षकों में से एक "शांति का राजकुमार" है (यशायाह 9:6)। जब उसका जन्म हुआ, तो स्वर्गदूतों ने यहूदिया की पहाड़ियों पर यह गीत गाया, “आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर...शान्ति हो” (लूका 2:14)। जब वह फिर से आएगा, तो वह "तलवारों को हल के फाल" और "भालों को हंसिया" (यशायाह 2:4) में बदल देगा और शांति का शासन स्थापित करेगा। इस बीच जो लोग ईश्वरीय स्वभाव के भागीदार बन गए हैं, वे सुसमाचार के द्वारा लोगों को स्वर्ग के साथ तालमेल बैठाने के लिए और सभी अलग-अलग क्षेत्रों में एक-दूसरे के साथ मेल स्थापित कराने के लिए जो कुछ भी कर सकते हैं, उसे करते रहेंगे, जहां जुनून की गर्मी क्रोध और संघर्ष को भड़काते हैं।

मेल करानेवाला कभी एक शांतिवादी नहीं होता। शांतिवादी किसी भी कीमत पर शांति चाहता है। हिटलर को शांत करने के लिए नेविल चेम्बरलेन के प्रयास हमें शांति की मूर्खता का एक स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। शांति के राजकुमार की उपस्थिति के बिना विश्व शांति हासिल नहीं की जा सकती। यहां तक कि वह स्वयं युद्ध, न्याय और "लोहे के डंडे" (भजन 2:9) के साथ राष्ट्रों पर शासन किए बिना विश्व शांति प्राप्त नहीं कर सकता।

सच्ची शांति धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित होती है। मनुष्य और मनुष्य के बीच सच्ची शांति तभी प्राप्त की जा सकती है जब मानव हृदय में मनुष्य और परमेश्वर के बीच मेल हो। इसलिए मेल कराने वाले का लक्ष्य लोगों को परमेश्वर के साथ सही मेलमिलाप स्थापित करना है; तब वे जल्दी ही एक दूसरे के साथ सही संबंध स्थापित कर लेंगे।

घ. हम क्या स्वीकार करते हैं (5:10-12)

आठवां धन्य वचन सताव को स्वीकार करने से संबंधित है।

(1) अत्यधिक सताव का प्रश्न (5:10-11)

प्रभु यीशु एक यथार्थवादी था। उसे पता था कि उसका कार्यक्रम लोगों को उतना रास नहीं आएगा। उसे पता था कि यह आगे चलकर उसकी खुद की मृत्यु और उसके चेलों के प्रति कटु शत्रुता की ओर ले जाएगा। प्रभु ने निश्चित रूप से अपने कार्यक्रम की कल्पना नहीं की थी कि सदियों तक राष्ट्रों के बीच प्रेम, आनंद, शांति, भलाई और मसीही भावना का क्रमिक विकास होता जाएगा जब तक कि समाज अंततः सिद्ध न बन जाए। उस उत्तर-सहस्राब्दीवादी का सपना इतिहास के तथ्यों या शास्त्रों के पूर्वानुमानों पर आधारित नहीं है। प्रभु ने जो भविष्यद्वाणी की थी वह उसके लोगों के लिए कटु शत्रुता, घृणा और घोर सताव का था। सुसमाचार के प्रति दुनिया की प्रतिक्रिया और परमेश्वर के लोगों के प्रति उसकी घृणा पर आश्चर्यचकित होने की बजाय, हमें हमेशा इसकी अपेक्षा करनी चाहिए।

(2) सताव पर विजय पाने का प्रश्न (5:12)

जब हम पर अत्याचार होता है, तो हमें प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए, बल्कि आनन्दित होना चाहिए! यीशु ने कहा, “क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है...”

प्रभु एक दिन अपने तिरस्कार के क्षेत्र में विजय प्राप्त करेगा। सभी विपरीत दिखावे के बावजूद, उसके लिए सताए गए लोग अपने अधिकार में आ जाएँगे, “क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है” (5:10)। स्वर्ग के राज्य का महानगर स्वर्गीय यरूशलेम में सबसे श्रेष्ठ है, वह शानदार शहर जो पृथ्वी के राष्ट्रों पर शासन करेगा। वह शासन विकास से नहीं, बल्कि क्रांति से आएगा। मसीह का शासन परमेश्वर द्वारा मनुष्यजाति पर तब स्थापित की जाएगी जब “अन्यजातियों का समय” पूरा हो जाएगा (लूका 21:24)। तब जिन लोगों ने उसके साथ दुख उठाया है, वे उसके साथ राज्य करेंगे (2 तीमुथियुस 2:12)। यह भविष्यद्वाणी के वचन की एक समरूप शिक्षा है।

3. अगली कड़ी (5:13-16)

आशीर्वचनों के अगले भाग में प्रभु ने दो दृष्टांत दिए हैं, जिनसे पता चलता है कि हम जो हैं उसका दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। हम जो "पृथ्वी के नमक" और “जगत की ज्योति” हैं, एक भ्रष्ट और अंधकार से भरी दुनिया में जी रहे हैं, और हमें इन दोनों स्थितियों पर अपना प्रभाव डालना है।

ध्यान दीजिए कि प्रभु ने कहा कि हम पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति हैं। उनकी बौद्धिक श्रेष्ठता हमें यहाँ दो अलग-अलग शब्दों के उपयोग में उनकी पूर्ण सटीकता पर निर्विवाद रूप से भरोसा करने में सक्षम बनाती है, और हमें उन्हें मिलाना नहीं चाहिए। हम जगत के नमक और पृथ्वी की ज्योति नहीं हैं; हम पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति हैं।

क. सड़न को रोकना (5:13)

नमक के रूप में हमारा कार्य सड़न को रोकना है। नमक सड़न-रोधी है। यह सड़न को असड़न में नहीं बदल सकता, लेकिन यह सड़न को फैलने से रोकता है। इसका उपयोग सड़न और सड़न को दूर रखने के लिए किया जाता है। फ्रिज आदि उपकरण के दिनों से पहले, यही सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला परि-रक्षक था।

नमक एक चमत्कार है। यह रासायनिक रूप से सोडियम और क्लोराइड से बना होता है। अपने हाथ पर थोड़ा सा हाइड्रोक्लोरिक एसिड डालें और यह आधे मिनट में जल जाएगा। हाइड्रोक्लोरिक एसिड पीकर देखें और आप कुछ ही मिनटों में तड़प-तड़प कर मर जाएंगे। हाइड्रोक्लोराइड में सोडियम मिलाएं और आपको नमक मिलेगा, जो पृथ्वी पर सबसे आम, सबसे उपयोगी पदार्थों में से एक है, जो जीवन के लिए आवश्यक पदार्थ है। इसी तरह, जब परमेश्वर हमारे जीवन के हाइड्रोक्लोराइड में अपने अनुग्रह को उंडेलते हैं, तो इसका परिणाम एक चमत्कार होता है: एक नए सिरे से जन्मा व्यक्ति जिसे सभी मनुष्यजाति की आशीष के लिए पृथ्वी पर रखा गया है।

यीशु ने कहा, "तुम पृथ्वी के नमक हो।" 'पृथ्वी' का अनूदित शब्द 'जीई' है, जो स्वर्ग से अलग पृथ्वी को दर्शाता है। जीई एक संकीर्ण शब्द है जो अन्य देशों से अलग एक विशेष भूमि या देश का भी सुझाव देता है। जीई भूमि को भी दर्शाता है और जीवन के भौतिक पक्ष का विचार व्यक्त करता है। लोगों को पृथ्वी के रूप में देखा जाता है और मसीही पृथ्वी के नमक हैं। जहाँ हम रहते हैं, जो कि भौतिक चीजों और सांसारिक विचारों में व्यस्त लोगों से घिरे हुए हैं, हमें नमक के समान होना चाहिए। हमें समाज में सामान्य रूप से बढ़ते भ्रष्टाचार पर एक निरोधक प्रभाव डालना है।

पृथ्वी, स्वर्ग से अलग होने के कारण भ्रष्ट है। हमें वह माध्यम बनना है जिसके द्वारा चीजों का स्वर्गीय पक्ष सांसारिक चीजों पर अपना प्रभाव डालता है। हमें सांसारिक वातावरण में स्वर्गीय लोगों की तरह रहना है। जिस तरह नमक भोजन में तीखापन और स्वाद को जोड़ता है, उसी तरह हमें अपने ईश्वरीय प्रभाव को तीखे, आकर्षक तरीके से डालना है। हम अक्सर मसीहत के बारे में गलत धारणा देते हैं। ओलिवर वेंडेल होम्स - अमेरिकी चिकित्सक, कवि और हास्यकार - ने एक बार इस प्रकार टिप्पणी की, "मैं सेवकाई में प्रवेश कर सकता था यदि मेरे कुछ पादरी जिन्हें मैं जानता था वे मल्लयुद्ध करने वालों की तरह नहीं दिखते और व्यवहार नहीं करते।"

यीशु ने चेतावनी देते हुए कहा: "यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इस के कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।" यह कथन निश्चित रूप से किसी के उद्धार को खोने का नहीं, बल्कि किसी की गवाही और प्रभाव को खोने का संदर्भ देता है। यदि कभी ऐसा दिन था जिसमें पृथ्वी को अपनी गवाही और प्रभाव को बनाए रखने के लिए मसीहियों की आवश्यकता थी, तो वह एक्स-रेटेड होम मूवी, इंटरनेट पोर्नोग्राफ़ी और बढ़ते समलैंगिकता का दिन है।

ख. अंधकार को दूर करना (5:14-16)

हमें ज्योति के रूप में भी कार्य करना है। नमक नैतिकता से संबंधित है, जबकि ज्योति आत्मिकता से संबंधित है। नमक हमारे चरित्र से संबंधित है, लेकिन ज्योति हमारे व्यवहार से संबंधित है। नमक इस बात से संबंधित है कि व्यक्ति क्या है; ज्योति इस बात से संबंधित है कि व्यक्ति क्या करता है। हम जानते हैं कि ज्योति क्या करती है - यह अंधकार को दूर करती है। लेकिन हम नहीं जानते कि ज्योति क्या है। ज्योति एक चमत्कार है।

यीशु ने कहा, "मैं जगत की ज्योति हूँ" (यूहन्ना 9:5)। उसने यह भी कहा, "तुम जगत की ज्योति हो" (मत्ती 5:14)। इन दोनों कथनों को एक साथ लेने पर इसका अर्थ है कि हमें उसके जैसा बनना है।

यहाँ "जगत" का अनुवाद किया गया शब्द कोस्मोस है, जो वस्तुओं के संपूर्ण सृजित क्रम से संबंधित है। कोस्मोस का मूल अर्थ है "नक्काशी करना, समतल करना, चमकाना" और यह व्यवस्था और सुंदरता दोनों को दर्शाता है। ज्योति के रूप में हमारे कार्य में, हमें लोगों को सृजित व्यवस्था के प्रति उनके संबंध के बारे में उन्हें जागरूक करना है और परमेश्वर के सिंहासन के अधीन सृजित ब्रह्मांड के सामंजस्य और सुंदरता के बारे में जागरूक करना है। विद्वानों ने इस सत्य को परमेश्वर-तिरस्कृत, आत्मा को नष्ट करने वाले, मनुष्य को नीचा दिखाने वाले, सत्य की अनदेखी करने वाले यांत्रिक विकास के सिद्धांत के प्रति अपने मोह में दफन कर दिया है।

हमें लोगों को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन जीने और यीशु के समान बनने के द्वारा परमेश्वर के अस्तित्व और अधिकार की याद दिलानी है। जिस तरह "पहाड़ पर बसा शहर छिप नहीं सकता", उसी तरह परमेश्वर के लिए दी जाने वाली हमारी गवाही सुसंगत, नियमित और बिल्कुल स्पष्ट होनी चाहिए।

प्रभु ने ज्योति के रूप में हमारे कार्य को समझाने के लिए दो दृष्टांतों का इस्तेमाल किया: एक दीपक और एक नगर। नगर बाहरी महान दुनिया पर हमारे प्रभाव को दर्शाता है; दीपक हमारे प्रभाव को दर्शाता है जो अंदर चल रहा है। दीपक व्यक्तिगत गवाही को दर्शाता है। मसीही घरों में चमकती हुई सभी व्यक्तिगत मोमबत्तियों से रात में जगमगाता शहर, सामूहिक गवाही को दर्शाता है, जो कि सभी छोटी व्यक्तिगत मोमबत्तियों का सामूहिक प्रभाव है।

सबसे बढ़कर, इसके प्रभाव के दायरे की परवाह किए बिना, एक दीपक का उद्देश्य केवल चमकना है। कोई भी दीपक को बांस की बनी टोकरी के नीचे नहीं रखता। यदि दीपक को कोई अच्छा काम करना है, तो उसे ऐसी जगह पर रखना चाहिए जहाँ से उसे देखा जा सके। लूका 8:16 में पलंग के नीचे दीपक रखने का एक उदाहरण दिया गया है। टोकरी और पलंग एक आदर्श जोड़ी बनाते हैं। बांस (व्यापारियों और किसानों द्वारा अपने माल के लिए इस्तेमाल की जाने वाली टोकरी) के नीचे एक दीपक रखना श्रम की दुनिया का सुझाव देता है। हम यीशु के लिए चमकने के लिए बहुत व्यस्त हो सकते हैं। पलंग के नीचे एक दीपक को रखना आराम की दुनिया का सुझाव देता है। हम कई बार यीशु के लिए चमकने के प्रति आलसी बन जाते हैं।

संयोग से, नमक और ज्योति के दृष्टांतों में एक बात समान है। नमक और ज्योति दोनों ही शांत रूप से अपना प्रभाव डालते हैं। हमारे "बहुत बोलने" के कारण हमारी बात नहीं सुनी जाती (मत्ती 6:7)।

प्रभु ने अपने उपदेश के इस भाग का समापन यह कहकर किया, “तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें” (5:16)। प्रभु यीशु से बेहतर इस पद का उदाहरण कभी किसी ने नहीं दिया।

ख. चेले और उसके विश्वास (5:17-20)

1. परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति व्यक्तिगत सहमति (5:17-18)

क. व्यवस्था और उसकी पूर्णता (5:17)

जब प्रभु अपना उपदेश जारी रखे हुआ था, तो उसने अपना ध्यान मूसा की व्यवस्था की ओर लगाया - जो यहूदी राष्ट्रीय जीवन की नींव और नैतिक, अनुष्ठानीय और धार्मिक नियम था जिसके अंतर्गत वे जिया करते थे। सबसे पहले उसने परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति अपनी व्यक्तिगत सहमति व्यक्त की। वह व्यवस्था को नष्ट करने नहीं, बल्कि उसे पूरा करने आया था।

यहूदियों ने मूसा की व्यवस्था में 613 अलग-अलग आज्ञाओं की गणना की और ऐसा एक भी क्षण नहीं था जब प्रभु यीशु ने हर आज्ञा का हर विवरण पूरा न किया हो। एक शिशु और एक लड़के के रूप में, एक किशोर और जीवन के प्रमुख समय में, घर में, पाठशाला में, काम पर, खेल में, एक बेटे और एक भाई के रूप में, एक पड़ोसी और एक दोस्त के रूप में, एक गाँव के बढ़ई के रूप में, एक उपदेशक के रूप में, गुप्त रूप से और सार्वजनिक रूप से, जब परिवार और दोस्तों से घिरा होता था और जब कट्टर दुश्मनों का सामना करता था - हर समय, हर जगह, हर तरह से, उसने परमेश्वर की व्यवस्था का पालन किया। उसने इसे अक्षर रूप में और आत्मा में संजोए रखा। उसने व्यवस्था को उसके आदेशों और उसके उद्देश्यों में रखा। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि इसे इसी से संजोए रखना उसका स्वभाव था। उसने इससे हटने के विषय में कभी सपने में भी नहीं सोचा। यह उसके पिता की इच्छा थी और यीशु ने हमेशा वही काम किए जो पिता को प्रसन्न करते हैं (यूहन्ना 8:29 देखें)।

पुराने नियम के समय में इस्राएल की आराधना की समृद्ध प्रतीकात्मक प्रणाली से जुड़ी सबसे पवित्र वस्तु वाचा का संदूक था जो परदे के पीछे स्थित परम पवित्र स्थान के भीतर रखा गया था। उस संदूक के अंदर मूसा की व्यवस्था की एक अखंडित प्रतिलिपि थी। उस संदूक पर, एक सिंहासन के समान, शेकिना महिमा बादल था जो परमेश्वर की उपस्थिति का प्रत्यक्ष चिह्न था। वह संदूक मसीह का प्रतिनिधित्व करता था; उसके हृदय में परमेश्वर का अखंडित नियम निवास करता था; उस पर परमेश्वर की सिंहासन पर विराजमान पवित्र आत्मा विश्राम ठहरा हुआ था, जो अब एक अद्भुत नए तरीके से पृथ्वी पर उपस्थित है।

“मैंने आत्मा को देखा,” यूहन्ना बपतिस्मादाता ने कहा। यह कथन अद्वितीय था, क्योंकि उसके सार के रूप में पवित्र आत्मा को नहीं देखा जा सकता; वह अनंत और अदृश्य है। लेकिन बपतिस्मादाता ने कहा, "मैंने आत्मा को कबूतर की नाई स्वर्ग से उतरते देखा, और वह उस पर ठहर गया" (यूहन्ना 1:32)। "ठहरना" शब्द का अनूदित शब्द मरम्मत है, जो प्रेरित यूहन्ना के पसंदीदा शब्दों में से एक है। उसने अपने सुसमाचार में इसे इकतालीस बार इस्तेमाल किया, जहाँ इसे बाईस बार "रहना" या "निवास करना", पाँच बार "ठहरना", पाँच बार "रहना" या "बचे रहना", तीन बार "जारी रखना", एक बार "सहना", एक बार "अभी भी रहना", तीन बार "विश्राम करना", और एक बार "उपस्थित होना" के रूप में अनूदित किया गया है। अपनी पत्रियों में उसने ‘मेनो’ शब्द को छब्बीस बार इस्तेमाल किया है।

यह प्रभु यीशु पर निवास करने के लिए पवित्र आत्मा का वह दृश्यमान आगमन था जिसने उसकी परमेश्वर के पुत्र के रूप में यूहन्ना बपतिस्मादाता को पहचान दी। बपतिस्मादाता ने कहा, "और मैं तो उसे पहिचानता नहीं था, परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझ से कहा, कि जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते [मेनो] देखे; वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है" (यूहन्ना 1:33)। यीशु के हृदय में छिपे अखंड नियम के कारण पवित्र आत्मा यीशु पर अपना सिंहासन स्थापित कर सका (भजन 119:11)।

इसके हृदय में, और केवल इसी के हृदय में, परमेश्वर का वचन सिद्ध रूप में और अखंड पाया जा सकता है।[7]

परमेश्वर के नियम के दो भाग थे: नैतिक नियम और अनुष्ठानीय नियम। अपने अद्‌भुत जीवन में प्रभु यीशु ने नैतिक नियम की माँगों को पूरा किया। अपनी मृत्यु में उसने अनुष्ठानीय नियम की माँग को पूरा किया, जो मुख्य रूप से बलिदानों और भेंटों से संबंधित था।

उसने पापबलि, दोषबलि, अन्नबलि, मेलबलि और होमबलि के समृद्ध प्रतीकात्मकता को पूरा किया। यीशु वह मेमना था जिसे प्रायश्चित के दिन मारा गया, जिसका लहू परमपवित्र स्थान में ले जाया गया; और वह वही अधर्म को उठानेवाला बकरा था जिस पर लोगों के पाप रखे गए थे इससे पहले कि उसे "एक निर्जन भूमि" में ले जाया जाए (लैव्यव्यवस्था 16:22)। वह वही पक्षी था जिसे शुद्ध कोढ़ी अपने स्थान पर वध करने के लिए लाते थे; और वह वही दूसरा पक्षी भी था जिसे खुले आकाश में उड़ाने से पहले शुद्ध कोढ़ी अपने घर में उस पहले पक्षी के लहू में डुबोने के लिए लाया था। यीशु फसह की वह अखमीरी रोटी था, और वही फसह का मेमना भी था। लाल बछिया की राख उसकी ही थी, और पाप के लिए बहाया गया लहू भी उसका ही था। दस हज़ार बार दस हज़ार बलिदानों से बहने वाली लाल नदियाँ उसके बहुमूल्य लहू का मात्र एक कमज़ोर प्रकार थीं।

इसलिए उसने उचित ही यह घोषणा की: “यह न समझो, कि मैं व्यवस्था था भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ” (मत्ती 5:17)।

यीशु ने भविष्यद्वक्ताओं के साथ-साथ व्यवस्था को भी पूरा किया। महिमा में पहुँचे भविष्यद्वक्ता यीशु द्वारा पृथ्वी पर जीए गए जीवन से बहुत आनंदित हुए होंगे। यशायाह ने यशायाह 53 को दोहराते हुए कहा होगा, "मैंने उसकी पीड़ा के बारे में लिखा था, और देखो उसने मेरे शब्दों को अक्षरशः पूरा किया है!" दाऊद ने शायद जोड़ा होगा, "हाँ, और भजन 22 भी, और भजन 69 भी।" और जकर्याह: "उसने मेरी भविष्यद्वाणी को भी पूरा किया है।" परमेश्वर ने टिप्पणी की होगी, "यह मेरा प्रिय पुत्र है," और स्वर्गदूतों ने आश्चर्य से नीचे देखा होगा, क्योंकि "इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं" (1 पतरस 1:12)।

ख. व्यवस्था और उसका भविष्य (5:18)

यीशु ने कहा कि वह व्यवस्था को पूरा करने आया है, फिर उसने कहा, "जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।" एक मात्रा वर्णमाला का सबसे छोटा अक्षर था और बिन्दु किसी भी अक्षर का सबसे छोटा भाग था, कभी-कभी केवल वह चिह्न जो एक अक्षर को दूसरे से अलग करता था (जैसे अंग्रेजी वर्णमाला में a c को एक छोटी क्षैतिज रेखा द्वारा e से अलग किया जाता है)।

वही सर्वसामर्थी वचन जिसके द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी अस्तित्व में आए, वही वचन मूसा की व्यवस्था को भी अस्तित्व में लेकर आया। व्यवस्था के आदेश उतने ही सटीक, अचूक और अनंत हैं जितने कि वे आदेश जो अंतरिक्ष में सितारों को थामे रखते हैं, पृथ्वी को उसकी धुरी पर घुमाते हैं, और पृथ्वी को सूर्य के चारों ओर उसकी वार्षिक घुमाव पर बनाए रखते हैं। परमेश्वर के नैतिक नियम उसके भौतिक नियमों की तरह ही सत्य और अनंत हैं।

स्वर्ग और पृथ्वी में परिवर्तन होने जा रहे हैं (प्रकाशितवाक्य 21:1), लेकिन तब तक नहीं जब तक कि उनका वर्तमान उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता। नये नियम से यह स्पष्ट है कि मूसा के नियम में पहले से ही परिवर्तन हो चुके हैं, लेकिन वे परिवर्तन तब तक नहीं आए जब तक कि मूल नियम अपने सभी भागों और योग में पूरा नहीं हो गया। सबसे पहले परमेश्वर को यह प्रदर्शित करना था कि उसकी व्यवस्था "पवित्र, और न्यायपूर्ण, और अच्छी" थी (रोमियों 7:12) और इसे मनुष्य के जीवन में लागू किया जा सकता है (8:3-4)। एक बार जब यीशु ने इस व्यवस्था को पूरा कर लिया, तो परिवर्तन किए जा सकते थे।

रीति-रिवाज़ के रूप में व्यवस्था को निरस्त कर दिया गया। लेकिन आदर्श के रूप में व्यवस्था बनी रही - सिवाय इसके कि इसे दो आज्ञाओं तक सीमित कर दिया गया, दोनों को प्रेम शब्द में समाहित किया गया: "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख.... तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख (मत्ती 22:37-40; रोमियों 13:8-10)।

व्यवस्था के प्रति प्रभु की व्यक्तिगत सराहना ऐसी ही थी। यह परमेश्वर की आनंदपूर्ण माँग थी, स्वर्ग की अपरिवर्तनीय न्यूनतम सीमा, एक आचार संहिता जो पवित्र, प्रेममय, सर्व-बुद्धिमान और निष्पक्ष रूप से न्याय करने वाले परमेश्वर के चरित्र में निहित थी।

2. परमेश्वर की व्यवस्था का व्यक्तिगत अमलीकरण (5:19-20)

क. एक गहन परीक्षा (5:19)

हाय उन पर जो छोटी से छोटी आज्ञा को तोड़ते हैं, और हाय उन पर जो दूसरों को ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं। प्रभु ने फरीसियों की मूर्खता को उजागर किया जिन्होंने अपना समय मूसा की व्यवस्था को "बड़ी आज्ञाओं" और "छोटी आज्ञाओं" में विभाजित करने में बिताया। ये वही फरीसी थे जिन्होंने अपने वस्त्रों के छोर को बढ़ाया (देखें मत्ती 23:5)। उन्होंने व्यवस्था से कुछ भी नहीं सीखा था।

उन्होंने गिनती 15:32-41 को जानबूझकर नहीं पढ़ा होगा। यह अनुच्छेद एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताता है जिसने स्पष्ट रूप से चौथी आज्ञा को सबसे छोटी आज्ञा माना और फैसला किया कि इसे सुरक्षित रूप से अनदेखा किया जा सकता है। उसे जल्द ही अपनी मूर्खता का एहसास हुआ, क्योंकि जब वह सब्त के दिन लकड़ियाँ इकट्ठा करने के लिए बाहर गया, तो उसे परमेश्वर से प्राप्त सीधे आदेश के कारण पत्थरवाह करके मार डाला गया।

इस गंभीर घटना के तुरंत बाद इस्राएलियों को अपने वस्त्रों के छोर पर एक झालर और एक "नीला फीता" पहनने का निर्देश दिया गया था। झालर उन्हें परमेश्वर की सभी आज्ञाओं की याद दिलाता था। धागे बराबर लंबाई के और एक दूसरे के बहुत करीब थे, जो इस तथ्य का प्रतीक था कि ईश्वरीय आज्ञाएँ एक दूसरे से बहुत जुड़ी हुई थी और समान महत्व की थी। नीला "फीता" व्यवस्था की अपने सभी भागों में स्वर्गीय उत्पत्ति की याद दिलाता था।

ख. एक कटु निंदा (5:20)

व्यवस्था को उस राष्ट्र के लिए जीवन जीने के नियम के रूप में, जिसे यह दिया गया था, फिर से परिप्रेक्ष्य में रखते हुए प्रभु ने मांग की कि हमारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर होनी

चाहिए। उसने अपने कथन की शुरुआत पूर्ण अधिकार "मैं तुमसे कहता हूँ" के साथ की। यह अभिव्यक्ति पहाड़ी उपदेश में चौदह बार आती है (5:18, 20, 22, 26, 28, 32, 34, 39, 44; 6:2, 5, 16, 25, 29)।

हमारी धार्मिकता उनकी धार्मिकता से बढ़कर होनी चाहिए, चाहे वह स्तर में हो या किसी भी रूप में। (प्रेरित पौलुस ने रोमियों को लिखी अपनी पत्री में इस विषय को विस्तार से बताया, जहाँ मुख्य शब्द धार्मिकता है।) हमारी स्वाभाविक स्व-धार्मिकता, जो शास्त्रियों और फरीसियों द्वारा प्रदर्शित की गई धार्मिकता का एक प्रकार है, उसका इनकार किया जाना चाहिए। इसके स्थान पर मसीह की धार्मिकता हमें तब दी जाती है जब हम विश्वास करते हैं; यह हमारे अंदर स्थापित होती है और हमारे भीतर निवास करने वाले पवित्र आत्मा द्वारा हमें प्रदान की जाती है। कोई भी बिना नया जन्म पाया हुआ व्यक्ति, चाहे वह अपनी नज़र में कितना भी धार्मिक और धर्मी क्यों न हो या एक पवित्र व्यक्ति के रूप में उसकी प्रतिष्ठा कितनी भी प्रभावशाली क्यों न हो, मसीह द्वारा माँगी गई धार्मिकता की किस्म या स्तर को प्रदर्शित नहीं कर सकता। किस्म के रूप में, यह उसकी किस्म है; स्तर में, यह वह है जिसे गणितज्ञ "अनंत" कहेंगे। यह गणना से परे है। उसकी तरह की धार्मिकता के बिना, कोई भी स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएगा।

पहाड़ी उपदेश का शेष भाग मत्ती 5:20 पर एक टिप्पणी है।

ग. चेले और उसकी बाइबल (5:21-48)

यीशु ने कहा, “तुम सुन चुके हो।”

जब यहूदी बेबीलोन से लौटे, तो आम लोग अपनी भाषा भूल चुके थे। वे अब बाइबल को मूल यहूदी में नहीं पढ़ सकते थे, इसलिए शास्त्रियों और रब्बियों ने लोगों के लाभ के लिए शास्त्रों का अनुवाद करने के बजाय शास्त्रों की शिक्षा पर एकाधिकार कर लिया। जो कोई भी पवित्रशास्त्र जानना चाहता था, उसे शास्त्रियों और रब्बियों के पास जाना पड़ता था, और वे पवित्रशास्त्रों को अपने हिसाब से इस्तेमाल करते थे। इस प्रकार, पहाड़ पर उपदेश सुनने वाले लोगों ने व्यवस्था तो सुनी थी, लेकिन उन्होंने इसे खुद नहीं पढ़ा था। अक्सर वे बाइबल में कही गई बातों और रब्बियों द्वारा कही गई बातों के बीच अंतर करने में असमर्थ थे - वह भी परमेश्वर के शुद्ध वचन और धार्मिक अगुवों की मिलावटी परंपराओं और टिप्पणियों के बीच। रब्बियों की व्याख्या के कारण व्यवस्था बहुत भ्रष्ट हो चुकी थी।

प्रभु ने अपने अधिकारपूर्ण "परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ" कथन से सदियों से जमा हुआ व्याख्यात्मक कूड़ा-कचरा दूर कर दिया।

1. जीवन को चोट पहुँचाने का प्रश्न (5:21-24)

क. हत्या और उसके परिणाम (5:21)

हत्या का परिणाम मृत्युदंड था। यहाँ प्रभु ने मूसा द्वारा दी गई व्यवस्था का हवाला नहीं दिया - निर्गमन 20:13; 21:12-14; गिनती 35:17-21; व्यवस्थाविवरण 19:11-13, जहाँ हत्या के पाप को सृष्टिकर्ता के विरुद्ध अपराध के रूप में प्रस्तुत किया गया है - बल्कि जैसा कि शास्त्रियों और फरीसियों द्वारा सिखाया गया था। उन्होंने अपराध को केवल एक कृत्य तक सीमित कर दिया, जिसे केवल सांसारिक न्यायालयों

द्वारा ही निपटाया जाना था। ऐसा करके उन्होंने यह धारणा बनाई कि केवल बाहरी कृत्य ही पापपूर्ण है, और उन्होंने आने वाले जीवन में परमेश्वर के न्याय के भय को हटा दिया।

ख. उद्देश्य और उसके परिणाम (5:22)

प्रभु ने तुरन्त ही आज्ञा को उसके मूल उद्देश्य पर पुनर्स्थापित कर दिया। उसने हत्या के मूल या उद्देश्य का पता लगाया: अर्थात् क्रोध का। उसने बताया कि क्रोध जो हत्या को जन्म देता है, वह भी हत्या जितना ही बड़ा पाप है। भले ही कोई भी मानवीय न्यायालय ऐसे क्रोध से निपट नहीं सकता, लेकिन इसे परमेश्वर की अदालत में हत्या के समान ही गंभीरता से लिया जाएगा।

प्रभु ने घृणा के तीन स्तरों को रेखांकित किया है जो किसी व्यक्ति को छठी आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए न्याय के प्रति जिम्मेदार ठहराता है। पहला है "बिना किसी कारण के क्रोध", एक अभिव्यक्ति जो कुछ पांडुलिपियों में नहीं पाई जाती है और कई लोगों द्वारा इसे अनुवादक की गलती मानी जाती है। (कुछ लोगों ने गर्म स्वभाव वाले सम्राट जेम्स को समायोजित करने के लिए जानबूझकर इस तरह का सुझाव दिया होगा।) यीशु ने कहा कि किसी अन्य व्यक्ति के प्रति आंतरिक आक्रोश को बनाए रखना, व्यक्ति को “कचहरी” के खतरे में डालता है” - जो एक निचली अदालत का संदर्भ है, एक स्थानीय आराधनालय में तीन लोगों की परिषद जिसके पास छोटे अपराधों पर फैसला लेने का अधिकार था।

घृणा की दूसरा स्तर नापसंदगी की बाहरी अभिव्यक्ति द्वारा प्रदर्शित होता है। जो व्यक्ति "निकम्मा" कहता है, वह तिरस्कार, निंदा, अवमानना का विचार व्यक्त करता है। यीशु ने कहा कि जो व्यक्ति अपनी भावनाओं को अपने ऊपर हावी होने देता है, वह “महासभा” के खतरे में है - जो सर्वोच्च न्यायालय, महासभा का संदर्भ है।

घृणा की तीसरा स्तर नापसंदगी की और भी अधिक जोरदार अभिव्यक्ति में परिलक्षित होती है। "हे मूर्ख" कहना किसी व्यक्ति को निंदनीय या विद्रोही कहना है, जो एक गंभीर आरोप है। यहाँ "मूर्ख" शब्द का अनुवाद यहूदी मोरोस से संबंधित है, एक ऐसा शब्द जो यहूदी मन में गहराई से बसा हुआ था और अरामी भाषा के बन जाने के बाद भी यह बरकरार रहा। मूसा के जीवन में एक दुखद लेकिन महत्वपूर्ण घटना के साथ एक अविस्मरणीय संबंध था जिसके दौरान "तब मूसा बिन सोचे बोल उठा" (भजन 106:33)। उसने मोरोस शब्द का इस्तेमाल तब किया जब उसने कहा, "हे दंगा करनेवालो, सुनो; क्या हम को इस चट्टान में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा?" (गिनती 20:10)। क्रोध के उस विस्फोट के कारण मूसा को प्रतिज्ञा किए गए देश से बाहर रखा गया था।

यीशु ने कहा कि इस तरह से बात करने से व्यक्ति "नरक की आग के खतरे में पड़ जाता है।" वस्तुतः, यह संदर्भ यरूशलेम के बाहर हिन्नोम की आग की घाटी से था, जहाँ शहर का कूड़ा-कचरा फेंका जाता था और अपराधियों के शव जलाए जाते थे। एक यहूदी के लिए इससे बड़ी शर्म की बात और क्या हो सकती है कि उसे इस तरह जला दिया जाए।

इसलिए यीशु ने यहूदी कानूनी प्रक्रिया के तीन सामान्य चरणों को लिया- कचहरी, महासभा और हिन्नोम की आग- और उन्हें गहरे महत्व से भर दिया। नए आत्मिक महत्व के संदर्भ में, यीशु कह रहा था कि अगर हम क्रोधित हो जाते हैं, तो हम तुरंत खतरे में पड़ जाते हैं। हम अभी तक न्याय के लिए तैयार नहीं हैं, लेकिन

हम इसके खतरे में होते हैं; हम उस रास्ते पर हैं जो वहाँ की ओर ले जाता है। अगर हम किसी दूसरे व्यक्ति के बारे में बात करते समय निंदा का शब्द इस्तेमाल करते हैं, तो हमें उच्च न्यायालय से निपटना होगा। अगर हम अंतिम अपमान करते हैं, तो हम उस अंतिम दण्ड के खतरे में होते हैं: अर्थात् राज्य से बाहर निकाल दिए जाने के स्थान पर जहाँ कचरा जलाया जाता है। यीशु ने जोर दिया कि हम "खतरे में हैं।"

प्रभु ने हत्या के वास्तविक पाप से व्यवहार नहीं किया। इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि शास्त्री और फरीसी भी हत्या के लिए मृत्युदंड पर सहमत थे। यीशु हत्या के पीछे इसकी भावना पर गए, क्योंकि अगर हम कभी क्रोधित नहीं होंगे, तो हम कभी हत्या नहीं करेंगे। इसलिए यीशु ने क्रोध को ही दंडनीय अपराध बना दिया।

ग. नैतिकता और उसके परिणाम (5:23-24)

इसका नैतिक पहलू सरल है: हमें उन लोगों के साथ सही व्यवहार करना चाहिए जिनके साथ हमने गलत किया है, जिनके मन में हमारे प्रति कुछ नाराजगी है, जिनके प्रति हम क्रोधित रहे हैं। मेल-मिलाप इतना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने कहा कि इसे परमेश्वर की आराधना से भी अधिक प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

प्रभु ने अपने दृष्टांत का संदर्भ दोष-बलि की व्यवस्था से लिया। (पुराने नियम की पाप-बलि पाप के सिद्धांत से संबंधित थी; दोष-बलि पाप के कर्म से संबंधित थी।) जब कोई व्यक्ति प्रभु के पास दोष-बलि लाता था, तो उसे सबसे पहले जाकर उस व्यक्ति के साथ सब कुछ सुधारना होता था, जिसके साथ उसने गलत किया था। अगर उसने चोरी की थी, तो उसे पूरी राशि के साथ-साथ अतिरिक्त 20 प्रतिशत वापस देना होता था (लैव्यव्यवस्था 5:16)। पहाड़ी उपदेश में प्रभु ने इस सिद्धांत को सभी आराधनाओं पर लागू किया। अगर हमने किसी को चोट पहुंचाई है और चीजों को ठीक करने के लिए पीछे नहीं हटे हैं, तो हम अपने ऊपर परमेश्वर के आशीष की उम्मीद नहीं कर सकते या उससे हमारी भेंट स्वीकार करने की उम्मीद नहीं कर सकते।

2. व्यवस्था को लागू करने का प्रश्न (5:25-26)

प्रभु ने इसके बाद रोमी व्यवस्था का उदाहरण दिया, जो उन दिनों फिलिस्तीन में यहूदी व्यवस्था से अधिक महत्व रखता था। सुनवाई के दौरान, विवाद के दोनों पक्ष अदालत के बाहर समझौता कर सकते थे - जो कि अब तक की सबसे समझदारी वाली बात है। एक बार कोई मामला न्यायाधीश के हाथों में आ जाता, तो ऐसा सौहार्दपूर्ण समाधान अब संभव नहीं होता था; तब दोनों पक्ष अदालत के फ़ैसले के अधीन होते थे।

व्यवस्था संबंधित मामले हमेशा जोखिम भरे होते हैं, इसलिए प्रभु हमें उनसे दूर रहने की सलाह देता है। उसने आगे कहा कि हमें उन लोगों के साथ भी ठीक से पेश आना चाहिए जो सोचते हैं कि हमने उन्हें चोट पहुंचाई है, भले ही हम खुद को निर्दोष मानते हों।

जीवन के राजमार्ग पर चलते हुए, हमें आपस में विवादों को सुलझाने और क्षतिपूर्ति करने का अवसर मिलता है ताकि मुद्दों की समीक्षा न्यायाधीशों द्वारा न की जाए। यदि कोई मामला न्यायालय के बाहर नहीं सुलझाया जाता, तो विश्वासी के लिए यह कोई बड़ी समस्या नहीं है यदि हम अपने दृश्य में महान श्वेत सिंहासन को देख पाते हैं, क्योंकि केवल बिना उद्धार पाए लोग ही वहाँ दिखाई देंगे। ऐसे अपराधी कभी भी अपने ऋण का भुगतान नहीं कर पाएंगे और हमेशा के लिए वहाँ कैदी बने रहेंगे।

यदि मसीह के न्याय के सिंहासन को ध्यान में रखा जाए, तो व्याख्या (अनुवाद) की समस्या अधिक कठिन है। "हाकिम" "बंदीगृह," और "कौड़ी-कौड़ी" चुकाने का क्या अर्थ है? रोमी कैथोलिकों ने मत्ती 5:25-26 पर अपने शोध के सिद्धांत का निर्माण किया है, भले ही बाइबल यह स्पष्ट करती है कि परमेश्वर की संतान के लिए ऐसा कोई स्थान या संभावना मौजूद नहीं है। पहला यूहन्ना 1:7 कहता है, "उसके [परमेश्वर के] पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।" हमारे पापों के दंडनीय परिणाम को मसीह के पूर्ण किए गए कार्य द्वारा पूरी तरह से ढांप दिए गए हैं।

हर एक विश्वासी मसीह की धार्मिकता को ओढे हुए हैं, लेकिन बाइबल फिर भी हमें मसीह के न्याय के आसन के बारे में चेतावनी देती है। पवित्रशास्त्र में प्रचुर प्रमाण हैं कि हमारे कार्यों का न्याय किया जाएगा, कि हम हानि उठा सकते हैं, और हमारे व्यवहार के परिणामों की समीक्षा की जाएगी। (इस विषय पर नये नियम की अधिकांश शिक्षा आने वाले राज्य युग से संबंधित है।) आम तौर पर मसीही खुद के प्रति बहुत अधिक उदार होते हैं और मसीह के न्याय के सिंहासन के बारे में उस प्रकाशन की तुलना में कहीं अधिक शांत और आशावादी दृष्टिकोण रखते हैं जो हमें इस विषय पर प्राप्त है। पौलुस ने "मसीह के न्याय आसन" का उल्लेख "प्रभु के भय" के साथ ही किया है (2 कुरिन्थियों 5:10-11)।

हम सभी न्याय के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं: पापी लोग महान श्वेत सिंहासन के भयानक न्याय की ओर, और पवित्र लोग मसीह के गंभीर न्याय आसन की ओर। यीशु ने कहा, "जब तक तू मार्ग ही में हैं, उस से झटपट मेल मिलाप कर ले।"

3. वासना में लिप्त होने का प्रश्न (5:27-32)

यहूदी शिक्षकों में से प्रत्येक के पास अपनी शिक्षा का परिचय देने के लिए अपनी रीति के वाक्यांश थे। भविष्यद्वक्ता का विशिष्ट वाक्यांश था "यहोवा यह कहता है।" शास्त्रियों और फरीसियों का विशिष्ट वाक्यांश था "एक शिक्षा है जिसमें ..." प्रभु के पहचान का वाक्यांश था "मैं तुमसे कहता हूँ," जिसे अक्सर "मैं तुम से सच सच कहता हूँ" से जोड़ा जाता है। भविष्यद्वक्ताओं ने ईश्वरीय अधिकार को संदर्भित किया; रब्बियों ने इस, उस या अन्य प्रसिद्ध विद्वान की। यीशु ने अपने स्वयं के अधिकार को संदर्भित किया। उसने व्यवस्था का हवाला दिया ताकि इसे फिर से बताया जा सके और इसे उच्च स्तर पर उठाया जा सके - वह भी अपने स्वयं के अधिकार पर, क्योंकि वचन देहधारी हुआ था।

अब प्रभु ने विवाह की पवित्रता के बारे में अपने पारंपरिक अधिकार के साथ बात की। परमेश्वर ने विवाह की स्थापना व्यवस्था या कलीसिया की स्थापना से बहुत पहले ही कर दी थी।

क. एक अशुद्ध विवाह (5:27-30)

विवाह के विषय में प्रभु की शिक्षा की पृष्ठभूमि यहूदी-यूनानी-रोमी जगत की प्रचलित रियायतें और अनैतिकता थी जिसमें वे रहते थे - आज के एक ऐसे संसार की तरह जिसमें हम अभी रहते हैं।

यहूदियों में, तलाक पर मूसा की शिक्षा (व्यवस्थाविवरण 24:1) की व्याख्या करने के लिए दो आवाज़ें उठीं: शम्माई और हिलेल की आवाज़ें। शम्माई के स्कूल ने भविष्यद्वक्ता मलाकी की बात मानी, जिन्होंने सदियों से गूंजती परमेश्वर की आवाज़ को दर्ज किया, "मैं स्त्री-त्याग से घृणा करता हूँ।" किंग जेम्स अनुवाद में लिखा है, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि मैं स्त्री-त्याग से घृणा करता हूँ" (मलाकी 2:16)।

दूसरी ओर, हिलेल का स्कूल चरम सीमा तक उदार था, जो यह सिखाता था कि एक आदमी अपनी पत्नी को लगभग किसी भी चीज़ के लिए तलाक दे सकता है जो उसे उसमें नापसंद हो, जबकि एक स्त्री के पास कोई अधिकार नहीं था। इस व्याख्या के अनुसार, यहूदी तलाक व्यवस्था एकतरफा और काफी कट्टर थी।

यूनानी अपेक्षा करते थे कि एक सम्मानित स्त्री एकांत में रहेगी और कभी भी बिना किसी संरक्षक के सड़कों पर नहीं दिखेगी या सामाजिक जीवन में भाग नहीं लेगी। एक यूनानी व्यक्ति अपनी पत्नी में पूर्ण नैतिक शुद्धता की मांग करता था, लेकिन वह खुद को अपनी इच्छानुसार अनैतिक होने की पूरी छूट देता था। उसे बदनाम घरों में जाने में कुछ भी गलत नहीं लगता था, कुरिंथ में एफ्रोडाइट के मंदिर में पुजारिन के रूप में एक हज़ार वेश्याओं को नियुक्त करने में कुछ भी गलत नहीं लगता था। अगर वह किसी भी कारण से अपनी पत्नी को तलाक देना चाहता था, तो उसे बस कुछ गवाहों की मौजूदगी में उसे बर्खास्त करना था और उसका दहेज वापस लौटाना था।

रोमियों ने अच्छी शुरुआत की। उनका धर्म और समाज मूल रूप से घर और घर में पिता के अधिकार पर आधारित था। पाँच शताब्दियों तक तलाक लगभग अज्ञात था और वेश्याओं को तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता था। फिर रोम ने सैन्य रूप से यूनान पर विजय प्राप्त की, और यूनान ने नैतिक रूप से रोम पर विजय प्राप्त करके अपना बदला लिया। रोम यूनानी नैतिक प्रदूषण के दलदल में डूब गया। इतिहासकार लेकी ने यूनान के साथ रोमी संपर्क के बाद "उन्मत्त भ्रष्टता" के बारे में लिखा। रोमियों के बीच, विवाह "एक दुर्भाग्यपूर्ण आवश्यकता से अधिक कुछ नहीं" रह गया।

बाइबल की दुनिया से बाहर की संस्कृतियों में भी हालात उतने ही बुरे थे। हम जानते हैं कि कैसे हिंदू धर्म ने स्त्रियों को नीचा दिखाया है और कैसे दूसरे धर्मों की कच्ची मूर्तिपूजाओं ने स्त्रियों को संतान पैदा करने वाली बोझा ढोने वाले जानवरों की स्थिति में ला दिया है।

ऐसी पृष्ठभूमि के विरुद्ध, यीशु ने अपने अधिकारपूर्ण स्वर में कहा, "परन्तु मैं तुम से कहता हूँ" (मत्ती 5:28)।

मूसा की व्यवस्था का कथन काफी स्पष्ट था: "तू व्यभिचार न करना" (5:27)। लेकिन यीशु सीधे मन की ओर गया। उसने कहा कि हमें वासना से भी नहीं देखना चाहिए। 5:28 में "कुदृष्टि" शब्द का अनुवाद ब्लेपो है, जिसका अर्थ है "देखना, देखते रहना, बारीकी से और लालसा के साथ देखना।" पहली अनैच्छिक नज़र अपराध नहीं है। यह दूसरी नज़र है - जानबूझकर किया गया कार्य जो आवेग को बढ़ाता है और नज़र को वासनापूर्ण नज़र में बदल देता है - जिसके बारे में यीशु ने कहा कि यह हमें खतरे में डालता है। वह बाहरी पाप के पीछे उसके स्रोत तक गया। उस वासनापूर्ण दृष्टि के बिना कोई व्यभिचार, कोई अनैतिकता, कोई वेश्यावृत्ति, या किसी भी तरह की अशुद्धता नहीं होगी।

वह कामुक दृष्टि, वह गुप्त अव्यक्त इच्छा, हमें दोषी बनाती है। यह अपराध इतना गंभीर है कि यीशु ने सलाह दी, "यदि तेरी दाहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकाल दे... यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उस को काटकर अपने पास से फेंक दे" (5:29-30) - वास्तव में यह कठोर भाषा है। प्रभु के वचन इस बात का संकेत थे कि नैतिक शुद्धता और घर की सुरक्षा के बारे में उसकी भावनाएँ कितनी गहरी थीं। आँख इच्छा उत्पन्न करती है, और हाथ कर्म उत्पन्न करते हैं, इसलिए यीशु ने प्रभावी रूप से कहा, "न देखें और न छुएँ।" प्रभु हमें खुद को अपंग बनाने के लिए नहीं कह रहा था, बल्कि खुद को नियंत्रित करने के लिए कह रहा था।

ख. एक दोषपूर्ण विवाह (5:31-32)

यहाँ प्रभु ने तलाक के सवाल पर संक्षेप रूप में बात की। फिर से उसके स्तर सर्वोच्च और पवित्रतम हैं।

(1) व्यवस्था और उसकी स्थिति (5:31)

मूसा की व्यवस्था में व्यभिचार के कारण तलाक लेने का प्रावधान था। फरीसियों ने हिलेल के झूठे उदारवाद का अनुसरण करते हुए तलाक के वास्तविक पत्र के बारे में मूसा के नियम का पालन करने का बहुत दिखावा किया। तल्मूडिक लेखकों ने तलाक के न्याय पर बहुत कम ध्यान दिया, लेकिन पत्र के रूप और शब्दों के बारे में बहुत हंगामा किया; उन्होंने अन्य बेतुकी बातों के अलावा इस बात पर जोर दिया कि इसे ठीक बारह पंक्तियों में लिखा जाना चाहिए, न अधिक न कम।

(2) प्रभु और उसका निषेध (5:32)

यीशु ने घोषणा की कि परमेश्वर की दृष्टि में केवल एक पाप विवाह को नष्ट करता है: व्यभिचार या नैतिक व्यवहार। मूसा ने ऐसे आधारों पर तलाक को स्वीकार किया, लेकिन इसकी आज्ञा नहीं दी।

पहाड़ी उपदेश में तलाक पर प्रभु की शिक्षा मत्ती 19:3-12 में तलाक पर उनके बाद के निर्णायक कथन से सहमत है। दोनों ही पद्यांशों में वैवाहिक अनैतिकता के आधार पर तलाक की अनुमति है ("व्यभिचार के अलावा")। इस तरह के तलाक से विवाह पूरी तरह से भंग हो जाता है और निर्दोष पक्ष को पुनर्विवाह करने की स्वतंत्रता मिल जाती है। अन्य आधारों पर तलाक से कोई भी पक्ष पुनर्विवाह करने की स्वतंत्रता नहीं पाता। मत्ती 19 में प्रभु ने इस तथ्य को ध्यान में रखा कि तलाक पर ऐसा उच्च रुख हर किसी को स्वीकार नहीं किया जा सकता (19:10-11)। उसने पुनर्विवाह के मामले में तलाकशुदा व्यक्ति के लिए खुले विकल्पों पर भी ध्यान दिया (19:12)। निश्चित रूप से हमें उन लोगों पर कठोर, कानूनी निर्णय लागू करने का कोई अधिकार नहीं है जो पवित्रशास्त्रीय आधार पर तलाकशुदा हैं और न ही किसी निर्दोष पक्ष (जिसका विवाह उसके साथी के अनैतिक आचरण के कारण भंग हो गया है) के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए मानो वह दोषी व्यक्ति हो।

मत्ती 5 में प्रभु यीशु स्पष्टता में बात कर रहा था। उसने बिना किसी मिश्रित रंग के काले और सफेद शब्दों में बयान दिया क्योंकि वह राज्य के नियम, अर्थात् परमेश्वर के नियम दे रहा था। वह उस नियम को सिखा रहा था जिसे एक ऐसे व्यक्ति ने देखा था जिसमें कोई परिवर्तन नहीं है, न ही परिवर्तन के कारण कोई छाया है। पहाड़ी उपदेश न केवल अक्षरशः बल्कि आत्मा के भी नियम है; यह नियम रब्बियों की व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि परमेश्वर के पापरहित पुत्र द्वारा व्याख्या के अनुसार है। उनके समय के धार्मिक अगुवे (जैसा कि हमारे समय में अक्सर होता है) ऊपरी नैतिकता के संदर्भ में चीजों को देखते थे। यीशु ने स्वर्ग की स्पष्टता के संदर्भ में चीजों को देखा।

4. अनुचित भाषा का प्रश्न (5:33-37)

क. टूटे हुए वचन का खतरा (5:33)

व्यवस्था में कहा गया था, "तू अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, उसकी सेवा करना, और उसके नाम की शपथ खाना" (व्यवस्थाविवरण 6:13)। यह कथन तीसरी आज्ञा की चेतावनी द्वारा समर्थित था: “जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा” (निर्गमन 20:7)।

ख. बेहतर तरीके की मांग (5:34-37)

(1) लापरवाही से शपथ खाना (5:34-36)

पुराने नियम में लोगों को अनुमति दी गई थी कि यदि शपथ खाना आवश्यक हो तो वे परमेश्वर के नाम से शपथ ले सकते थे। उसके बाद शपथ बाध्यकारी हो गई। फरीसियों ने दुष्टतापूर्ण तर्क-वितर्क के साथ कहा कि चूंकि व्यवस्था में यह निर्धारित किया गया था कि यहोवा के नाम पर की गई शपथों का पालन किया जाना चाहिए, इसलिए अन्य शपथ बाध्यकारी नहीं थीं। परिणामस्वरूप लोगों ने पाया कि यहोवा के नाम का आह्वान करके सबसे तुच्छ वादों की भी पुष्टि करना उनके लिए अनिवार्य है। इससे बचने के लिए, उन्होंने बिना खुद को दोषी ठहराए जाने के खतरे में डाले अपने कथनों और वादों को वजनदार बनाने के लिए सभी प्रकार की शपथों का आविष्कार किया। उदाहरण के लिए, उन्होंने स्वर्ग, पृथ्वी, पवित्र नगर, और यहाँ तक कि अपने सिर की भी शपथ ली।

यीशु ने ऐसी सभी शपथों को दरकिनार कर दिया। उसने दिखाया कि आखिरकार वे सभी परमेश्वर को दर्शाते हैं, क्योंकि स्वर्ग परमेश्वर का सिंहासन है, पृथ्वी उसके पैरों की चौकी है, यरूशलेम महान राजा का शहर है, और उनके सिर उसके द्वारा बनाए गए थे। मनुष्य जवानी या बुढ़ापे में सिर के एक भी बाल को अपने मर्जी से काला या सफेद नहीं कर सकता।

(2) दृढ़ता से बोलना (5:37)

यीशु ने कहा, "शपथ न खाना।" तुम्हारी बात "हां की हां, या नहीं की नहीं हो।" सभी समझौते और वादे पूरे होने चाहिए। हमारा वचन हमारा बंधन होना चाहिए। हमें प्रतिबद्धता में पूरी ईमानदारी से समर्पित होना चाहिए क्योंकि हमारा वचन हमारे चरित्र की पूरी ईमानदारी से समर्थित होता है। हमें वही करना है जो हम कहते हैं कि हम करेंगे, चाहे प्रतिबद्धता बड़ी हो या छोटी, सुविधाजनक हो या असुविधाजनक (भजन 15:4), क्योंकि हम इसके अलावा कुछ करने का सपना भी नहीं देख सकते।

हम सभी को ऐसे लोगों से सावधान रहना पड़ता है जो महसूस करते हैं कि उन्हें अपनी बात की शुरुआत शपथ से करनी चाहिए। वे हमेशा कहते हैं, "मैं शपथ लेता हूँ," या "यह सच है।" हम सहज रूप से सोचने लगते हैं कि कहीं वे झूठ तो नहीं बोल रहे हैं।

शपथ के संबंध में प्रभु के निषेध में न्यायिक शपथ शामिल नहीं है (हालाँकि हमारे न्यायालय किसी व्यक्ति को शपथ लेने के बजाय अपनी सच्चाई की पुष्टि करने की अनुमति देते हैं)। बाइबल कहती है कि परमेश्वर ने स्वयं की शपथ ली (उत्पत्ति 22:16-17; इब्रानियों 6:13; 7:21), कि पौलुस ने कुरिन्थियों को शपथ दी (2 कुरिन्थियों 1:23), और कि यीशु ने महासभा के सामने शपथ लेकर उत्तर दिया (मत्ती 26:63-64)।

5. अवर्णनीय प्रेम का प्रश्न (5:38-48)

क. पलटा लेने का नियम (5:38-42)

(1) व्यवस्था का मार्ग (5:38)

किसी भी सरकार का मुख्य सिद्धांत न्याय होता है। यह इस्राएल के व्यवस्था में सर्वोच्च रूप से व्यक्त किया गया है, "आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत।" व्यवस्था पलटा लेने के आधार पर नहीं, बल्कि निष्पक्ष न्याय के धार्मिक सिद्धांत पर आधारित है।

विधानमंडल अराजकता पैदा किए बिना ऐसे कानूनों को निरस्त नहीं कर सकते थे। पहाड़ी उपदेश अपराध और सशस्त्र संघर्ष की दुनिया में सरकार के लिए या नास्तिक समाज में लोगों के लिए कोई आचार-संहिता नहीं है। ऐसे समाज में अपराध को रोकना और दूसरा गाल आगे करके आक्रामकता को रोकना असंभव है। पहाड़ी उपदेश में प्रभु नया जन्म न पाए हुए लोगों की दुनिया के लिए व्यवस्था नहीं बना रहा था, बल्कि कलीसिया और सहस्राब्दी युग में अपने राज्य के लिए व्यवस्था बना रहा था।

(2) प्रभु का मार्ग (5:39-42)

अपने लोगों के लिए, प्रभु ने पलटा लेने की पुरानी व्यवस्था के नियम को निरस्त कर दिया जो था - "आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत" (निर्गमन 21:24; लैव्यव्यवस्था 24:20; व्यवस्थाविवरण 19:21) - जिसे फरीसियों ने सीधे प्रतिशोध लेने के लाइसेंस में बदल दिया था। इसकी बजाय प्रभु ने प्रेम की व्यवस्था को लागू किया।

(a) जब लोग हम पर उपद्रव करते हैं (5:39)

चेहरे पर थप्पड़ मारना अनगिनत युगों से एक बहुत ही उत्तेजक अपमान माना जाता रहा है, लेकिन जब लोग हमें मारते हैं, तो हमें दूसरा गाल आगे कर देना चाहिए। प्रभु ने अपने जीवन में यह करके दर्शाया कि इस नियम से उसका क्या तात्पर्य था। जब उसके चेहरे पर थप्पड़ मारा गया, तो उसने सचमुच दूसरा गाल आगे नहीं किया। लेकिन हालाँकि उसके पास सर्वसामर्थी सामर्थ्य थी और वह अपने हमलावर को जीवित ही नरक की आग में फेंक सकता था, लेकिन उसने बहुत ही संयम से काम लिया और खुद को एक हल्की फटकार से संतुष्ट कर लिया (यूहन्ना 18:22-23)। विचार यह नहीं है कि हमें हमेशा हत्यारे, धमकाने वाले या चोर के हमले को निष्क्रिय रूप से सहना चाहिए। हालाँकि, जब मसीह के राज्य के हितों की माँग होती है कि हम दूसरा गाल आगे कर दें, तो हमें ऐसा करना चाहिए।

(b) जब लोग हम पर मुकदमा करते हैं (5:40)

जब लोग हम पर मुकदमा करते हैं, तो हमें प्रतिवादी द्वारा की गई मांगों से ज़्यादा देना चाहिए। मूसा की व्यवस्था के अनुसार, किसी व्यक्ति को उसके बाहरी वस्त्र से वंचित नहीं किया जा सकता था, जो रात में उसके लिए कंबल का काम करता था; इसे केवल तभी जमानत पर रखा जा सकता था जब प्रतिवादी को इसकी ज़रूरत न हो (निर्गमन 22:26-27)। प्रभु ने अपने चेलों से कहा कि वे न केवल अपने अंदरूनी वस्त्र छोड़ दें, जिन्हें उनसे कानूनी तौर पर लिया जा सकता था, बल्कि अपना दोहर भी दे दे, जो बाहरी वस्त्र होने के कारण व्यवस्था के अंतर्गत ज़ब्त नहीं किए जा सकते थे। हमें भी वह सब त्यागने के लिए तैयार रहना चाहिए जिसे नियम के अंतर्गत नहीं लिया जा सकता।

मेरे जान-पहचान के एक मसीही ने अपने व्यवसाय में बहुत अधिक कर्जा लिया। जब उसने देखा कि उसके लेनदार उसे परेशान करने लगे हैं, तो उसने अपनी पत्नी के नाम पर जितनी भी संपत्ति हो सकती थी, उसे हस्तांतरित कर दिया और दिवालियापन के लिए आवेदन कर दिया। उदार दिवालियापन कानूनों द्वारा अपने लेनदारों से सुरक्षित होने के कारण, वह अपने अधिकांश कर्जे से छुटकारा पाने में सक्षम रहा। उसने मेरे एक अन्य मित्र से कहा, "मेरा दिवालियापन बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ!"

स्पष्ट है कि उसने कभी भी पहाड़ी उपदेश को गंभीरता से नहीं लिया था। प्रभु चाहता था कि वह खुद भिखारी बने, न कि खुद दिवालिया घोषित करे। प्रभु चाहता था कि वह अपने लेनदारों का सामना नैतिक आधार पर करे, न कि केवल कानूनी आधार पर; उनके साथ प्रेम के नियम के अनुसार व्यवहार करे; अपने लेनदारों द्वारा मांगे जाने वाले सभी पैसे वापस करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दे। दूसरे शब्दों में, प्रभु चाहता था कि वह अपना कुरता और दोहर दोनों दे दे। जैसा कि मैंने बताया था, यहाँ उसने अपना कुरता और दोहर दोनों अपने पास रख लिए। उसके लेनदारों को डॉलर पर कुछ सेंट से संतुष्ट होना पड़ा। कुछ ही समय बाद वह फिर से उसी तरह के व्यवसाय में लग गया और नया कर्ज लेने लगा।

(c) जब लोग हमें पकड़ लेते हैं (5:41)

प्रभु यीशु के दिनों में रोमी नागरिकों को यह अधिकार था कि वे सरकार के हितों की मांग होने पर मनुष्यों और पशुओं दोनों को अनिवार्य सेवाकार्य में लगा सकते थे। उदाहरण के लिए, कुरेनी नामक स्थान के रहने वाले शमौन को रोमी सैनिकों ने पकड़ लिया और उसे मसीह के क्रूस को कलवरी के टीले तक ले जाने के लिए विवश किया (लूका 23:26)। बीते दिनों में ब्रिटिश नौसेना को युद्ध के समय में सक्षम पुरुषों को पकड़ने और उन्हें तुच्छ वेतन पर अपने देश की सेवा करने के लिए समुद्र में ले जाने का समान अधिकार था। प्रेस गिरोह सभी बंदरगाह शहरों में खौफनाक था। आधुनिक समाज में न्यायालयों के पास लोगों के बीच से किसी को भी चुनकर जूरी (न्यायी) बनाने का अधिकार है।

यहूदियों को इस तरह की अनिवार्य सेवाकार्य से बहुत नफरत थी, लेकिन प्रभु ने सिखाया कि यह हमारा कर्तव्य है कि हम उन लोगों की मदद करें जो हम पर शासन करते हैं, हमें ऐसा खुशी-खुशी करना चाहिए और यहाँ तक कि कर्तव्य की सीमा से परे जाना चाहिए। जब लोग हमें बेगारी में पकड़ लेते हैं, तो हमें दूसरा मील भी उनके साथ जाना चाहिए।

मसीह के आत्मा के बिल्कुल विपरीत इस युग की भावना है, जो जुलूस, प्रदर्शन और सविनय अवज्ञा आंदोलनों का समर्थन करती है; हड़तालों और टकराव से विवादों का निपटारा करती है; तथा सत्ता के प्रति असंतोष और अनाज्ञाकारिता को बढ़ावा देती है।

(d) जब लोग हमसे मदद मांगते हैं (5:42)

किसी भी यहूदी व्यक्ति को धार्मिक उद्देश्यों के अलावा पैसे उधार देने के लिए बाध्य नहीं किया गया था। ऐसे मामलों में उसे कोई ब्याज नहीं लेना था, और किसी भी तरह के ऋण को हर सात साल में व्यवस्था द्वारा रद्द कर दिया जाता था (लैव्यव्यवस्था 25:1-28)। इसलिए यहूदी लोगों के बीच दान के लिए व्यवस्था थी। लेकिन मसीहियों को यहीं नहीं रुकना चाहिए; प्रेम हमें ऐसा करने नहीं देगा। जब लोग हमसे मदद के गुहार लगाते हैं, तो हमें सकारात्मक तरीके से प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

यीशु ने कहा, “जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उस से मुंह न मोड़” (मत्ती 5:42)। प्रेरित यूहन्ना, जो यीशु के चरणों में बैठा था, उसने कहा, "पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देख कर उस पर तरस न खाना चाहे, तो उस में परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है?" (1 यूहन्ना 3:17) विश्वासियों को इस संसार के अभागे लोगों की ज़रूरतों और दुखों को दूर करने में मदद करने के लिए उत्सुक रहना चाहिए।

इसलिए पलटा लेने की व्यवस्था पुरानी हो चुकी है, साथ ही मूसा की व्यवस्था द्वारा निर्धारित किए गए “क्या करें और क्या न करें” की पूरी व्यवस्था भी पुरानी हो गई है। प्रेम के आगमन से सब कुछ बदल गया है। प्रभु ने मेलमिलाप के नियम को बताकर इस बदलाव के बारे में विस्तार से बताया।

ख. मेलमिलाप का नियम (5:43-48)

(1) नियम की व्याख्या (5:43-44)

(a) जो आज्ञा परमेश्वर ने दी (5:43)

व्यवस्था में कहा गया था, "पलटा न लेना, और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना, परन्तु एक दूसरे से अपने समान प्रेम रखना; मैं यहोवा हूँ (लैव्यव्यवस्था 19:18)। फरीसियों ने व्यवस्था की भावना के प्रति घोर उपेक्षा करते हुए, "अपने पड़ोसी से प्रेम रखना" वाक्य को लिया, एक दुष्ट निष्कर्ष निकाला, और इसमें जोड़ दिया "अपने शत्रु से घृणा करना।" उनके इस कथन का उल्लेख करते हुए, यीशु ने कहा, "तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था; कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर" (मत्ती 5:43)।

फरीसी परमेश्वर के वचन को खुलेआम तोड़-मरोड़ कर पेश करने के प्रति कोई बहाना नहीं बना पाए। व्यवस्था के एक से ज़्यादा हिस्सों में, मुकदमे में विरोधी को भी पड़ोसी के तौर पर वर्णित किया गया है (निर्गमन 20:16; 22:9) और यही अवधारणा पुराने नियम में एक अन्य भाग में और भी स्पष्ट रूप से सिखाई गई है (नीतिवचन 24:28; 25:18)।

(b) जो परमेश्वर को प्रिय है (5:44)

फरीसियों के पैरों के नीचे से उनके बनाए सारे आधार को हटाते हुए प्रभु ने कहा, "परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिये प्रार्थना करो।"

(2) नियम की मिसाल दी गई (5:45-47)

यीशु ने स्वयं बुराई के बदले भलाई करने का सर्वोच्च उदाहरण प्रस्तुत किया जब उसने उन लोगों के लिए प्रार्थना की जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था, और उनसे अनन्त प्रेम दिखाते हुए अपना प्राण अर्पित किया।

(a) एक तुलना (5:45)

प्रभु हमसे इस तरह के प्रेमपूर्ण आचरण की मांग इसलिए करता हैं क्योंकि हम परमेश्वर के परिवार में जन्मे हैं और हमें अपने स्वर्गीय पिता की तरह बनना है। इसलिए कि वह सभी लोगों के प्रति असीम दया दिखाता है, इसलिए हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। जब वह अपने ईश्वरीय व्यवहार में धूप और वर्षा भेजता है, तो वह बुराई और भलाई के बीच कोई भेदभाव नहीं करता है।

(b) एक विरोधाभास (5:46-47)

जो हमसे प्रेम करते हैं उनसे प्रेम करना या जो हमें नमस्कार करते हैं उनका खुशी-खुशी अभिवादन करना कोई खास गुण नहीं है। क्योंकि, चुंगी लेने वाले भी ऐसा ही करते थे! यीशु के दिनों के यहूदियों में, चुंगी लेने वालों को सबसे नीच माना जाता था। वे घृणित कर वसूलनेवाले थे जो उन पर शासन कर रही रोमी सत्ता के लिए काम करते थे। कोई भी व्यक्ति कर देना पसंद नहीं करता, लेकिन एक विदेशी विजेता को कर देना बेहद कष्टदायक होता है। कोई भी व्यक्ति जिसके पास कोई आत्म-सम्मान या अपनी प्रतिष्ठा के लिए कोई सम्मान नहीं था, वह चुंगी लेने के घृणित काम को स्वीकार नहीं करता था। नतीजतन, यह पद बेईमान लोगों के हाथों में छोड़ दिया गया, जिनमें से अधिकांश ने करों को इकट्ठा करने की प्रक्रिया में अपनी खुद की जेबें भर लीं - जिससे उनके पीड़ितों का गुस्सा और पीड़ा अधिक बढ़ जाता था।

प्रभु ने सिखाया कि यदि हमारी मसीहत, उन चुंगी लेने वालों और पापियों द्वारा प्रदर्शित किए जाने वाले प्रेम से अधिक बड़ा प्रेम उत्पन्न नहीं करती है, तो इसका कोई मूल्य नहीं है - और यह शिक्षा एक ऐसे व्यक्ति द्वारा दर्ज की गई थी जो स्वयं एक बार चुंगी लेने वाला था!

(3) नियम का विस्तार (5:48)

तो, मूल बात क्या है? इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है" सिद्धता प्राप्त करना असंभव है, लेकिन यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमारा लक्ष्य यीशु जैसा बनना है। प्रेरित पौलुस ने अपनी पत्री में लिखा, "यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ: पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूँ, जिस के लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था" (फिलिप्पियों 3:12)।

हमारे नए जन्म के क्षण से ही हम अपनी स्थिति के अनुसार सिद्ध माने जाते हैं। परमेश्वर हमें "मसीह में" रखता है और उसके बाद हमें अपने जैसा सिद्ध और धर्मी मानता है। हमारी स्थिति के अनुसार, हमारे पास बहुत सी भूमि अभी भी बची हुई है जिस पर हमें कब्ज़ा करना है (देखें यहोशू 13:1)। जब तक हम महिमा प्राप्त नहीं कर लेते और अपने पुनरुत्थानित शरीर को प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक हम सिद्धता के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करते रहते हैं। तब हमारी स्थिति और दृढ़ता समान रहेगी। "...हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है" (1 यूहन्ना 3:2)। इस बीच हमारा कार्य परमेश्वर के पवित्र आत्मा के साथ सहयोग करना है ताकि हम प्रतिदिन परमेश्वर के प्रिय पुत्र के अनुरूप बनते जाएँ - अर्थात् पूर्ण रूप से सिद्ध।

घ. चेले और उसका बोझ (6:1-34)

प्रभु ने अब अपना ध्यान दान, प्रार्थना और उपवास की ओर लगाया - तीन ऐसे क्षेत्र जहाँ गलत इरादे आसानी से प्रवेश कर सकते हैं, खासकर लोगों की प्रशंसा या स्वीकृति की इच्छा के परिणामस्वरूप। रोमी कैथोलिक कलीसिया, बौद्ध धर्म और कई अन्य धर्म इन अभ्यासों पर बहुत अधिक ज़ोर देते हैं। मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को सिखाया कि प्रार्थना एक व्यक्ति को स्वर्ग के आधे रास्ते तक ले जाएगी, उपवास उसे उसके द्वार तक ले जाएगा, और दान उसे प्रवेश दिलाएगा। लेकिन प्रभु ने दिखाया कि ये कर्म केवल धार्मिक कार्य के रूप में करना बेकार हैं।

1. आराधना से जुड़े बोझ (6:1-18)

क. जीवन के कर्तव्य (6:1-4)

यहाँ दान का अनुवाद अक्सर "धार्मिकता" के रूप में किया जाता है, लेकिन दान देना प्रभु की चेतावनी का विषय है। दान देना (गरीबों को पैसे, भोजन या अन्य सहायता देना) एक सराहनीय कार्य है - इसे गुप्त रूप से किया जाना चाहिए और केवल लोगों की प्रशंसा जीतने के लिए इसे नहीं करना चाहिए। जे.बी. फिलिप्स ने 6:2 को अपनी सामान्य चित्रण शैली में इस प्रकार प्रस्तुत किया: "जब आप दूसरों के लिए अच्छा करते हैं, तो अपने आगे चलने के लिए एक तुरही बजाने वाले को काम पर न रखें - सभाओं और सड़कों पर उन अभिनेताओं की तरह न बने जो यह सुनिश्चित करते हैं कि लोग उनकी प्रशंसा करें।"[8]

यीशु ने आगे कहा, "वे अपना प्रतिफल पा चुके।" यहाँ "वे अपना प्रतिफल पा चुके" का अनुवाद अपेचो है, जिसका इस्तेमाल यूनानियों द्वारा औपचारिक रसीद के लिए किया जाता था। इसलिए यीशु कह रहे थे कि जो लोग अपने भले कामों का बाहरी दिखावा करते हैं और उनका प्रदर्शन करते हैं, उन्हें उसी क्षण अपना इनाम मिल जाता है, जब कोई उनकी सराहना करता है। उन्हें वह मिलता है जिसकी उन्हें तलाश थी; इससे ज़्यादा उन्हें कुछ नहीं मिलने वाला है। आजकल बहुत से लोग सिर्फ़ कर के छूट का लाभ प्राप्त करने के लिए दान देते हैं। कर देने के समय अपनी सभी वैध कटौतियों का दावा करने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन अगर किसी व्यक्ति का देने का उद्देश्य कर-कटौती योग्य रसीद प्राप्त करना है, तो उसे वही मिलता है। उसे वह मिल जाता है जो वह चाहता था।

यहाँ प्रभु की शिक्षा में गरीबों की मदद करने के बारे में कोई सवाल नहीं है। यह मान लिया गया है कि मसीही जरूरतमंदों की मदद अवश्य ही करेंगे । यीशु ने यह नहीं कहा, "यदि तुम दान दोगे, यदि तुम प्रार्थना करो, यदि तुम उपवास करो।" उसकी नसीहतें इस बारे में हैं कि जब तुम दान दोगे, जब प्रार्थना करोगे, जब उपवास करोगे। ये सभी कार्य व्यक्ति की आराधना और मसीह के प्रति उसके प्रेम का अभिन्न अंग हैं। प्रभु यह मान लेता है कि हम उससे इतना प्रेम करेंगे कि हम गरीबों की मदद करेंगे, प्रार्थना में समय बिताएँगे, और अपने जीवन को नियंत्रण में रखेंगे। वह अपेक्षा करता हैं कि ये सभी कार्य हमारे मसीही व्यवहार का सहज भाग होंगे - मनुष्य की ओर, परमेश्वर की ओर, और अपने स्वार्थ के लिए।

चिंता इस बात की नहीं है कि हम कब देते हैं, प्रार्थना करते हैं और उपवास करते हैं, बल्कि इस बात की है कि यह सब क्यों करते हैं। जो कुछ हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बनने के विचार से शुरू करते हैं, वह कर्तव्य में बदल सकता है; और जो कर्तव्य में बदल जाता है, वह जल्द ही एक मात्र एक प्रदर्शन में बदल सकता है। फरीसियों के साथ यही हुआ था।

ख. जीवन की भक्ति (6:5-15)

यह अनुच्छेद, जो प्रार्थना के विषय पर प्रभु का एक महान ग्रंथ है, न केवल धारदार है, बल्कि अत्यंत व्यावहारिक भी है। यह हमें बताता है कि हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए, और यह हमें बताता है कि हमें कैसे प्रार्थना नहीं करनी चाहिए। यहाँ हमें जीवन के एक महत्वपूर्ण लेकिन अक्सर उपेक्षित क्षेत्र के बारे में सटीक निर्देश दिए गए हैं।

(1) प्रार्थना में दिखावा (6:5)

जिस तरह की प्रार्थना दूसरे लोगों को प्रभावित करने के लिए की जाती है, वह एक दिखावा मात्र है। हालाँकि यह हमारी संस्कृति का हिस्सा नहीं है कि हम सड़क के किनारे खड़े होकर, आसन बनाकर, या 6:5 में वर्णित उन कपटियों की तरह प्रार्थना करें, लेकिन जब हमें कलीसिया या किसी अन्य सार्वजनिक समारोह में प्रार्थना करने के लिए बुलाया जाता है, तो हम अक्सर लोगों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। यह एक उदाहरण है कि कैसे प्रार्थना नहीं करनी चाहिए।

(2) प्रार्थना का स्थान (6:6)

प्रभु ने प्रार्थना के लिए एक निजी या गुप्त स्थान की सिफारिश की। हम लगभग कहीं भी गुप्त रूप से प्रार्थना कर सकते हैं: घर के किसी खाली कमरे में, पार्किंग में खड़ी कार में, सार्वजनिक परिवहन में, किसी व्यस्त चौराहे पर जब हम ट्रैफिक लाइट बदलने का इंतजार कर रहे हों...आदि। यीशु की आदत थी कि वह दिन निकलने से काफी पहले उठकर किसी सुनसान जगह या सुनसान पहाड़ी पर चला जाता था, क्योंकि दिन के समय लोग उसे कभी अकेला नहीं छोड़ते थे।

पौलुस ने कहा कि वह "बिना रुके दिन रात" प्रार्थना करता था। संभवतः उसने प्रार्थना का एक नियमित मनोभाव बनाए रखा ताकि उसके रास्ते में आने वाली हर चीज़ प्रार्थना, मध्यस्थता, धन्यवाद या आराधना के अव्यक्त विचार में बदल जाए। संभवतः उसने तम्बू बनाते समय सुई चलाने में बिताए लंबे घंटों के दौरान और सुसमाचार के साथ इधर-उधर यात्रा करते समय सड़क पर बिताए लंबे दिनों के दौरान प्रार्थना की होगी। चूँकि परमेश्वर सर्वव्यापी है, इसलिए हम किसी भी कोने को कलीसिया में बदल सकते हैं और प्रार्थना कर सकते हैं - अगर हम भीड़ में हैं तो चुपचाप ऐसा कर सकते हैं या अगर हम चाहें तो अकेले होने पर ज़ोर से ऊँची आवाज़ में ऐसा कर सकते हैं ।

(3) प्रार्थना का सिद्धांत (6:7-8)

हमें "व्यर्थ बक-बक" (6:7) नहीं करनी चाहिए। प्रभु को 6:9-13 में अपने द्वारा दिए गए नमूना प्रार्थना को लेने और उसके शब्दों को तोते की तरह दोहराने के खतरे के बारे में पहले से जानकारी रही होगी। उसने एक ही शब्द को बार-बार दोहराने की रीति को मना किया, जैसे कि उदाहरण के लिए बौद्ध अपने अंतहीन “ओम-मणि- -पद्मे-औम या कैथोलिक अपने “पैटर नोस्टर्स” और “एव मारियास” के साथ करते हैं।

रोम जाने वाला हर तीर्थयात्री स्काला सैंक्टा में पवित्र सीढ़ियों के “पोंटिफिकल मंदिर का दौरा अवश्य करता है। ऐसा कहा जाता है कि ये पीलातुस के घर की सीढ़ियाँ थीं, जहाँ यीशु मसीह अपनी मृत्यु की सजा के दिन चढ़े और उतरे थे; कोड़ों की मार से उनकी पीठ से खून बह रहा था और उनका खून सीढ़ियों पर टपक रहा था। मध्ययुगीन परंपरा के अनुसार महारानी सेंट हेलिना ने उन सीढ़ियों को यरूशलेम से रोम मंगवाया था। कैथोलिक जो अपने घुटनों के बल पर अट्ठाईस सीढ़ियाँ चढ़ते हैं, और इस दौरान यीशु मसीह के उस दुःखभोग पर ध्यान करते हैं, उन्हें कलीसिया से कुछ पवित्र दिनों पर पूर्ण छुटकारा पत्र और अन्य दिनों पर आंशिक छुटकारा पत्र मिलता है, बशर्ते कि उन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया हो, पवित्र भोज में भाग लिया हो और पोप के उद्देश्यों के लिए प्रार्थना की हो। जैसे-जैसे ये भक्त सीढ़ियों पर चढ़ते जाते हैं, वे उन दोहराई जाने वाली प्रार्थनाओं को दोहराते जाते हैं। वे इस प्रकार शुरू करते हैं:

मेरे यीशु, अपनी प्रिय माता और अपने प्रिय चेलों से अलग होने के कारण जो दुःख आपने सहा, मुझ पर दया करें।

हे पवित्र माँ, मुझे आर-पार छेद दो

मेरे हृदय में हर घाव नया हो जाए

जो मेरे क्रूसित उद्धारकर्ता का है।

वे अगली सीढ़ी पर चढ़ते हुए कहते हैं:

हे मेरे यीशु, यहूदा द्वारा धोखा दिए जाने पर जो मानसिक व्यथा आपने झेली थी, मुझ पर दया करो।

हे पवित्र माँ, मुझे आर-पार छेद दो

मेरे हृदय में हर घाव नया हो जाए

जो मेरे क्रूसित उद्धारकर्ता का है।

दर्दनाक कदम के बाद, अगला दर्दनाक कदम। रीतिपूर्ण प्रार्थना के बाद, वही रीतिपूर्ण प्रार्थना। जब भी आप रोम जाएँगे, तो आप देखेंगे कि भ्रमित लोग उन सीढ़ियों पर चढ़ रहे हैं - आप कलीसिया के गणमान्य लोगों और आम लोगों, युवा और बूढ़े, अमीर और गरीब, बड़े और छोटे, मोज़ों में छेद वाली छोटी लड़कियों और पैंट के छोर को लपेटे हुए वयस्क पुरुषों को देखेंगे। यह सब मसीह के नाम पर और पहाड़ी उपदेश में प्रभु की शिक्षा की अवहेलना में किया जाता है।

(4) प्रार्थना का तरीका (6:9-15)

(a) प्रभु ने क्या सुझाव दिया (6:9-13)

जैसा कि हम उम्मीद कर सकते हैं, नमूना प्रार्थना एक उत्कृष्ट कृति है। लेकिन ध्यान दें कि प्रभु ने यह नहीं कहा, "इन शब्दों के साथ प्रार्थना किया करो।" उसने वास्तव में कहा था, " इस रीति से प्रार्थना किया करो।" जब हम प्रार्थना करते हैं तो हमें पिता के व्यक्तित्व, उद्देश्य, प्रावधान, क्षमा, मार्ग, सुरक्षा, सामर्थ्य और स्थायित्व पर अपना ध्यान लगाना चाहिए।

i. पिता का व्यक्तित्व (6:9)

हमें परमेश्वर के व्यक्तित्व के लिए उसकी प्रशंसा करते हुए शुरुआत करनी चाहिए: "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में हैं।" लिफाफे पर यही पता लिखा है, और यह कितना अंतरंग और सुकून देने वाला पता है। हम अपनी प्रार्थना अपने पिता को संबोधित करते हैं। पुराने नियम में परमेश्वर के लिए सबसे बड़ा नाम यहोवा है - अर्थात् वाचा का परमेश्वर जो अपने लोगों से "बहुत महान और अनमोल वायदे" करता है और उन वायदों

को पूरा भी करता है। लेकिन परमेश्वर के लिए सबसे बड़ा नाम “हमारा पिता” है, एक ऐसा नाम जो "हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक" संबंध, संसाधन और जिम्मेदारियों को दर्शाता है।

हमारे पिता का घर स्वर्ग में है, और उसका घर आने वाले दिनों में एक दिन हमारा घर बनने जा रहा है। अब्राहम ने इस सत्य को समझा। अपनी आरंभिक यात्रा में एक समय ऐसा था जब उसने अपना तम्बू इस तरह से लगाया जिसकी पच्छिम की ओर तो बेतेल, और पूर्व की ओर ऐ था (उत्पत्ति 12:8)। जब उसने पूर्व की ओर देखा, तो वह जिस रास्ते से आया था, उस पर वापस देख रहा था, अपने जीवन के सूर्योदय की ओर। पीछे देखने पर, उसने ऐ नामक शहर को देखा, जिसका अर्थ है "खंडहरों का ढेर।" उसने मानव निर्मित घरों की इस दुनिया की एक तस्वीर देखी, जिसमें समय अपने लापरवाह हल को लगातार चलाता रहता है।

जब उसने पश्चिम की ओर डूबते सूरज की ओर देखा, तो उसे याद आया कि "जीवन का छोटा सा दिन जल्दी ही समाप्त हो जाता है; / पृथ्वी की खुशियाँ फीकी पड़ जाती हैं, इसकी महिमा समाप्त हो जाती हैं।"[9] पश्चिम की ओर देखते हुए, उसने बेतेल नामक शहर देखा, जिसका अर्थ है "परमेश्वर का घर।" अब्राहम ने सूर्यास्त के पार परमेश्वर के अनंत घर को देखा और "यहोवा से प्रार्थना की" यीशु ने हमें इसी स्वर्गीय दर्शन को समझने और इस तरह प्रार्थना करना सिखाया, "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है।" प्रभु हमारे विचारों को हमारे अनंत घर की ओर निर्देशित करना चाहता था।

फिर उसने हमें यह भी जोड़ने को कहा, "तेरा नाम पवित्र माना जाए।" हम परमेश्वर के लिए पिता नाम का इस्तेमाल कर सकते हैं, लेकिन इसमें लापरवाही नहीं होनी चाहिए। उसका नाम बहुत ही ऊँचा और पवित्र है, जिसे भय और भक्ति के साथ इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

ii. पिता का उद्देश्य (6:10)

इससे पहले कि हम अपने हितों पर ध्यान दें, हमें अपना ध्यान परमेश्वर की इच्छा पर देना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए कि वह पूरी हो: " तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो" यीशु एक ऐसे स्थान से आया था जहाँ दस हज़ार गुना दस हज़ार स्वर्गदूत उसके पिता के सिंहासन के चारों ओर खड़े रहते हैं, उसके आदेश का इंतज़ार करते हैं, और उसकी इच्छा पूरी करने के लिए दौड़ पड़ते हैं। अब यीशु एक ऐसी दुनिया में आया था जहाँ उसके राज्य के बारे में बहुत कम जानकारी है और जहाँ बहुत कम ही, और तब भी बहुत अपूर्ण रूप से, कोई परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है। शैतान इस दुनिया के राज्यों की ओर इशारा कर सकता था, दावा कर सकता था कि वे उसके हैं, और उन्हें परमेश्वर के पुत्र के लिए एक चारे के रूप में पेश कर सकता था। यीशु उन राज्यों को पुनः प्राप्त करने और उन्हें परमेश्वर को वापस देने के लिए आया था।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक स्वर्ग में शुरू होती है और स्वर्ग में ही समाप्त भी होती है, लेकिन बीच-बीच में दृश्य स्वर्ग और पृथ्वी के बीच बारी-बारी से आते हैं। पृथ्वी पर एक दृश्य के बाद स्वर्ग में एक दृश्य आता है, और स्वर्ग में एक दृश्य के बाद पृथ्वी पर का एक दृश्य आता है। इसका कारण यह है कि यूग के अंत में हम प्रभु की प्रार्थना का पूर्ण उत्तर पा सकते हैं। हम देखते हैं कि पहले स्वर्ग में परमेश्वर की इच्छा का आदेश दिया जाता है और फिर पृथ्वी पर उसे पूरा किया जाता है।[10]

iii. पिता का प्रावधान (6:11)

इस नमूना प्रार्थना में हमारी शारीरिक और भौतिक आवश्यकताओं का सिर्फ़ एक संक्षिप्त उल्लेख ही पाया जाता है: "हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।" हमें अपनी आवश्यकताओं पर अधिक ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि परमेश्वर उनके बारे में सब कुछ पहले से जानते हैं। हमारी अपनी प्रार्थनाओं का विश्लेषण करने पर हम अक्सर जीवन के भौतिक विषयों के साथ भरे हुए पाएँगे; हम ज़्यादातर इस बारे में प्रार्थना करते हैं कि हमें कैसे भोजन चाहिए, हमें कहाँ रहना है, हमें क्या पहनना है, सुनीता आंटी की बीमारी, जोसफ अंकल की बेहतर नौकरी की ज़रूरत आदि। यकीनन, हमें इन विषयों के बारे में प्रार्थना करना बंद नहीं करना चाहिए। प्रभु ने हमें इन्हें अपनी प्रार्थनाओं में शामिल करना सिखाया है; लेकिन भौतिक निवेदनों को उनके सही स्थान और अनुपात में रखा जाना चाहिए।

iv. पिता की क्षमा (6:12)

इसके बाद हमें परमेश्वर से क्षमा की याचना करनी है: "जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर" यह पापी की प्रार्थना नहीं, बल्कि एक पवित्र जन की प्रार्थना है। पापी की प्रार्थना "हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर" (लूका 18:13) से शुरू होकर उसी में समाप्त होती है। उसकी याचना एक नाराज परमेश्वर से क्षमा की भीख माँगना है, यह एक न्यायिक क्षमा की याचना होती है। मत्ती 6:12 में वर्णित यह याचना वास्तव में परमेश्वर की एक संतान की है जिसने अपने स्वर्गीय पिता को किसी गलत मनोभाव, विचार, शब्द या कर्म से दुखी किया है और उसे माता-पिता की तरह करूणामय क्षमा की आवश्यकता है।

प्रभु ने यह सिद्धांत सिखाया कि दया से दया उत्पन्न होनी चाहिए। परमेश्वर से प्राप्त की गई दया से हमारे अन्दर दया उत्पन्न होनी चाहिए। यदि हम स्वयं क्षमा न करने वाली भावना रखते हैं तो हम तार्किक रूप से, लगातार या नैतिक रूप से परमेश्वर से क्षमा कैसे मांग सकते हैं?

v. पिता का मार्ग (6:13a)

परमेश्वर के मार्ग पर हमारा ध्यान केन्द्रित करते हुए, यीशु ने प्रार्थना की, "हमें परीक्षा में न ला।" प्रभु व्यक्तिगत अनुभव से जानता था कि वह किस बारे में बात कर रहा था (मत्ती 4:1 को देखें)। परमेश्वर हमें परीक्षा में नहीं डालता (याकूब 1:13), लेकिन वह हमें परीक्षा में ले जाने की अनुमति दे सकता है - या वह हमें इससे बचा सकता है। वह केवल उस परीक्षा की अनुमति देगा जिसके बारे में वह जानता है कि हम उसका सामना कर सकते हैं (1 कुरिन्थियों 10:13; 2 पतरस 2:9)। परमेश्वर हमें केवल परखता हैं; शैतान हमें परीक्षा में डालता है।

हम एक बहुत ही खतरनाक दुनिया में जी रहे हैं और हम अत्यधिक ज्वलनशील पदार्थ के बने हैं (याकूब 1:13-14)। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि प्रभु ने हमें परमेश्वर से उसके मार्ग पर चलने और परीक्षा के मार्ग से दूर रखने के लिए प्रार्थना करने का आग्रह किया (भजन 23:3)।

vi. पिता की सुरक्षा (6:13b)

हमें शैतान से बचने के लिए परमेश्वर की सुरक्षा के लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए: "हमें बुराई [दुष्ट] से बचा।" अय्यूब की पुस्तक बताती है कि जब शैतान हमारे पीछे पड़ता है तो क्या होता है। हम लूका 22:31-32 में

एक और उदाहरण पाते हैं; प्रभु ने बड़ी डींगे हाँकने वाले पतरस को चेतावनी दी, "शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है कि गेंहूँ की नाईं फटके। परन्तु मैं ने तेरे लिये विनती की, कि तेरा विश्वास जाता न रहे।"

पौलुस भी जानता था कि शैतान के सीधे हमले का क्या मतलब होता है। उसने लिखा, "और इसलिये कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाऊं, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया अर्थात शैतान का एक दूत कि मुझे घूँसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊं।" (2 कुरिन्थियों 12:7)। पौलुस की पीड़ा चाहे जो भी रही हो (मिर्गी, बुरी आँखें, या ऐसा ही कुछ अन्य), लेकिन सच्चाई यह है कि उसके शरीर में उसका "काँटा" था और उसने इसे "शैतान का दूत [एंजेलोस]" कहा। संभवतः शैतान, जो अंधकार का हाकिम है, उसने पौलुस को परेशान करने के लिए अपने गिरे हुए स्वर्गदूतों में से एक को नियुक्त कर रखा था। उसका यह सक्रिय दुश्मन निस्संदेह बुरे विचारों, निराशा और भय के साथ उसे लगातार परेशान करता रहता था। पौलुस ने तीन बार इस पीड़ा से मुक्त होने के लिए प्रार्थना की, और हर बार उसे बताया गया कि परमेश्वर का अनुग्रह ही उसके लिए काफी है। ऐसी भयानक दुष्ट आत्मा के हमेशा उसके साथ रहने के कारण, प्रेरित केवल तभी सुरक्षित रह सकता था जब वह बिना रुके प्रार्थना करता रहता।

हममें से बहुत ही कम लोग शैतान और उसके गिरे हुए दूतों से इस तरह के प्रलोभन, इस तरह के निरंतर व्यक्तिगत ध्यान का डटकर सामना कर सकते हैं। हमें प्रभु द्वारा यह निर्देश दिया गया है कि हम प्रार्थना करें कि वह हमें सुरक्षित मार्गों पर ले जाए और हमें सीधे अपनी सुरक्षा में रखे।

vii. पिता की सामर्थ्य (6:13c)

जब हम प्रार्थना के समापन भाग को पढ़ते हैं, तो हमारे विचार पुनः परमेश्वर के सिंहासन और उसके हितों की ओर निर्देशित होते हैं, और हमें परमेश्वर की सामर्थ्य की याद दिलाई गई है: "क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।।" कुछ विद्वानों का मानना है कि इस कथन को हटा दिया जाना चाहिए, लेकिन अधिकांश नियम संग्रह में यह कथन मौजूद है।

जैसे कि हमें अभी-अभी आकाशमंडल में मौजूद विद्रोही हाकिम के अधिकार से, अर्थात् इस संसार के अधर्मी हाकिम से सुरक्षा की माँग करना सिखाया गया है, जो एक ऐसी दुनिया है जो परमेश्वर के राज्य, परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर की महिमा का इंकार करती या उसका विरोध करती है। लेकिन अब हमें याद दिलाया गया है कि शैतान एक छीननेवाला शत्रु है, कि राज्य परमेश्वर का है और उसकी सामर्थ्य सर्वसामर्थी है, कि शैतान उस सामर्थ्य के सामने बिल्कुल कमज़ोर है, और यह भी कि परमेश्वर की महिमा अब आगे भी इस संसार में प्रदर्शित होगी। दूसरे शब्दों में, जैसे-जैसे प्रार्थना अपने समापन की ओर बढ़ती है, तो यह प्रार्थना सहस्राब्दी युग में यहाँ इस दुनिया में अपना राज्य स्थापित करने के परमेश्वर के उद्देश्य की पुष्टि करती है जब "सचमुच सारी पृथ्वी यहोवा की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी" (गिनती 14:21)।

viii. पिता का स्थायित्व (6:13d)

प्रार्थना का अंतिम वाक्य, "सदा तेरे ही हैं," हमें परमेश्वर के स्थायित्व के बारे में विचार करना सिखाता है। हम एक भजन की चंद पंक्तियों को यहाँ उधार ले सकते हैं: "मैं अपने चारों ओर बदलाव और भ्रष्टता देखता हूँ; / पर तू हे प्रभु, कभी नहीं बदलता, तू मुझ में वास कर!"[11]

(b) प्रभु ने जो दोहराया (6:14-15)

प्रार्थना के परिशिष्ट (अन्त) में, प्रभु ने उस प्रार्थना के एक याचिका को चुना - अर्थात् क्षमा के लिए याचना - और उसे विस्तार से समझाया। यही एकमात्र ऐसी याचिका है जिसे इस तरह से संबोधित किया गया।

प्रभु ने पद 14-15 की सच्चाई को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से प्रस्तुत किया ताकि इसकी व्याख्या करने में कोई गलती न हो। "यदि तुम क्षमा करोगे... यदि तुम क्षमा न करोगे..." जब तक हम दूसरों को क्षमा करने के लिए तैयार नहीं होते, और जब तक हम इस बात में आनंदित नहीं होते कि हमें थोड़ी सी मात्रा में दया और क्षमा प्रदान करने का अवसर मिला है, जिसकी हमें खुद बहुत आवश्यकता है, तब तक हम भी वास्तव में पश्चातापी नहीं हैं और इसलिए क्षमा के हकदार नहीं बन सकते। परमेश्वर का अनुग्रह ही हमें इस तरह के पश्चाताप में लाने के लिए काफी होता है।

ग. जीवन के अनुशासन (6:16-18)

(1) भूख का सवाल (6:16a)

यहूदियों पर व्यवस्था द्वारा लगाया गया एकमात्र उपवास प्रायश्चित के दिन का था (लैव्यव्यवस्था 16:31)। हालाँकि, पुराने नियम में उपवास के अन्य उल्लेखनीय उदाहरण भी हैं, जो अक्सर राष्ट्रीय पश्चाताप व्यक्त करने के साधन के रूप में होते हैं। बिन्यामीन के साथ गृह युद्ध के बाद पूरे देश ने उपवास किया (न्यायियों 20:26)। शमूएल ने लोगों को झूठे देवता बाल के पीछे जाने के बाद उपवास करवाया (1 शमूएल 7:6)। नहेम्याह के समय में यहूदियों ने अपने पापों के पश्चाताप के लिए उपवास किया (नहेम्याह 9:1)। मूसा ने परमेश्वर से ईश्वरीय सत्य के नए प्रकाशन के लिए खुद को तैयार करने के लिए चालीस दिनों तक उपवास रखा (निर्गमन 34:28)। प्रभु यीशु ने शैतान के साथ अपनी मुठभेड़ से पहले एक इसी अवधि का उपवास किया (मत्ती 4:2)। प्रभु ने हमें उपवास करने का आदेश नहीं दिया है, लेकिन न ही उसने इस अभ्यास को हतोत्साहित किया। पहाड़ी उपदेश में यह मान लिया गया है कि हम उपवास करेंगे।

(2) दिखने का प्रश्न (6:16b-18a)

जब हमें अपनी भूख पर लगाम लगाना, खुद पर इनकार का अनुशासन थोपना और भौतिकता को आत्मिकता के नियंत्रण में लाना ज़रूरी लगता है, तो हमें सावधान रहना चाहिए कि हम इसका दिखावा न करें। जैसा कि कैंपबेल मॉर्गन ने कहा, "हमें अपनी आत्मा में निरंतर क्रूस की पीड़ा और अपने चेहरे पर हमेशा ईस्टर की प्रसन्नता रखनी चाहिए।" अगर हमारे उपवास किसी भी तरह से लोगों की सराहना पाने के लिए तैयार किए गए हैं, तो हमारा आत्म-त्याग व्यर्थ साबित होगा।

(3) प्रशंसा का प्रश्न (6:18b-c)

उपवास का अपना एक महत्व है, लेकिन हमें दो नियमों का पालन अवश्य करना चाहिए: व्यक्तिगत फिजूलखर्ची के प्रति सावधान रहना और सार्वजनिक दिखावे से सावधान रहना। दोनों नियमों को तोड़ने वाले व्यक्ति का एक बेहतरीन उदाहरण शिमोन स्टाइलिट्स (ईस्वी 390-459) है। उसने अपने शरीर को नियंत्रण में रखने के लिए कई आश्चर्यजनक काम किए और अपने असाधारण अनुशासन के लिए रोमी कैथोलिक कलीसिया द्वारा उसे संत घोषित किया गया। एक बार उसने खुद को उपवास की पूरी अवधि के दौरान एक मठ में दीवार के अंदर बंद कर लिया था। उसने आत्म-यातना के सभी प्रकार के शैतानी तरीके ढूंढ़ निकाले और अंत में एक खंभे पर उसने अपनी आख़री समय बिताया।

खंभे पर उसका जीवन तब शुरू हुआ जब वह अपने मठ से कुछ ही दूर एक पहाड़ी पर चला गया और छह फीट ऊंचे खंभे पर बैठ गया। वहां वह अपनी गर्दन के चारों ओर लोहे की पट्टी बाँधे हुए बैठा था, जो उसके खंभे से बंधा हुआ था। समय-समय पर खंभे की ऊंचाई को बढ़ाकर पचास फीट कर दिया गया था। उसके चेलों को सीढ़ी पर चढ़कर उसके लिए खाने के ऐसे टुकड़े लाने पड़ते थे जिन्हें वह खाने के लिए मँगाता था। तीस सीरियाई सर्दियों की कड़ाके की ठंड और तीस सीरियाई गर्मियों की तपती गर्मी के दौरान, हवा या बारिश, ठंड या धूप से किसी भी आश्रय को नकारते हुए, वह अपने खंभे पर बैठा रहा और अंत में उसकी कलीसिया ने उसे संत का दर्जा दिया।

मनुष्य ऐसे अति-दिखावे में लिप्त हो सकता है। लेकिन जब हम उपवास करते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह केवल हमारे और परमेश्वर के बीच का एक रहस्य है।

2. धन से जुड़े बोझ (6:19-24)

इस महान उपदेश का अगला विषय धन की इच्छा है। बहुत से लोग जीवन की आत्मिक माँगों - दान, प्रार्थना और उपवास - से नहीं बल्कि धन संचय करने जैसे सांसारिक आकर्षणों के बोझ तले दबे हैं। भौतिक चीज़ों की इच्छा प्रबल और जटिल है। आखिरकार, हम एक भौतिक दुनिया में रहते हैं। हम भौतिक चीज़ों से घिरे हुए हैं। हमें उनकी आवश्यकता है। ऐसा लगता है कि उन्हें पाने की कुंजी धन है; इससे बहुत कुछ खरीदा जा सकता है। हम धन से विचलित होंगे या नहीं, यह हमारे द्वारा किए जाने वाले कुछ चुनावों पर निर्भर करेगा।

क. प्रेम का चुनाव (6:19-21)

हम अपनी इच्छा दुनिया की चीज़ों पर रख सकते हैं, या फिर हम अपनी इच्छा स्वर्गीय वस्तुओं पर रख सकते हैं, जहाँ मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है (कुलुस्सियों 3:1-2)। हम पृथ्वी पर धन इकट्ठा कर सकते हैं, या फिर हम स्वर्ग में धन इकट्ठा कर सकते हैं (मत्ती 6:19-20)। प्रभु ने इसे एक सिद्धांत के रूप में निर्धारित किया कि हमारा मन वहीं होगा जहाँ हमारा धन है (6:21)।

बाइबल के समय में जो कुछ भी संजोया जाता था, वह महंगे कपड़ों के रूप में होता था - बैंगनी और महीन बटी हुई सनी के वस्त्र। उसके साथ, प्रभु ने "कीड़े" शब्द को रखा। अन्य खजाना महंगी धातु के रूप में था। उसके साथ, प्रभु ने "काई" शब्द रखा। लोग अपने खजाने को सुरक्षित स्थानों पर रखते थे। उस सावधानी के साथ, प्रभु ने "चोर" शब्द रखा। सांसारिक खजाना इकट्ठा करते समय, हमें उन चीज़ों से सावधान रहना चाहिए जो सड़ती हैं, जो जंग खाती हैं, और जो चुराई जाती हैं।

प्रभु ने धन संचय करने की सभी इच्छाओं की निंदा नहीं की। उसने कहा, "अपने लिए धन इकट्ठा करो।" लेकिन उसने साथ में यह भी कहा, "अपने लिए धन इकट्ठा मत करो।" उसने जिस चीज की निंदा की, वह है संसार में अपने लिए धन संचय करने की बेकार की लालसा।

संपत्ति के प्रति उत्साह की निंदा नहीं की जाती बल्कि उसे पुन: निर्देशित किया गया है। प्रभु ने हमें अपने लिए "स्वर्ग में धन" इकट्ठा करने के लिए कहा है। हम पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्यों को आगे बढ़ाने और उसके राज्य के आगमन को बढ़ावा देने के लिए अपना समय, प्रतिभा और "धन" देकर ऐसा करते हैं।

इसलिए हमारे पास प्रेम के विकल्प है। हम सांसारिक या स्वर्गीय चीज़ों में से किसी एक को चुनकर उसमें व्यस्त हो सकते हैं, और प्रभु ने हमें बताया है कि वह हमें इन दोनों में से किसे चुनने के लिए पसंद करेगा।

ख. रूप का चुनाव (6:22-23)

प्रभु ने धन के बारे में अपनी शिक्षा को विस्तृत करते हुए हमारा ध्यान “आँख” की ओर आकर्षित किया, जिसके बारे में उसने कहा कि वह "निर्मल [स्पष्ट]" (6:22) या "बुरी [अनियमित]" (6:23) हो सकती है।

मेरे जीवन का अधिकांश समय में मैं “दृष्टिवैषम्य” नामक आँख के बीमारी से पीड़ित रहा हूँ, जो आँख के लेंस की एक समस्या है जिसके कारण प्रकाश की किरणें एक बिंदु पर एकत्रित नहीं हो पाती हैं। परिणामस्वरूप मेरी दृष्टि धुंधली हो गई है। प्रभु कह रहा था कि आत्मिक “दृष्टिवैषम्य” होना संभव है। हमारी आत्मिक दृष्टि में चीजों का स्पष्ट रूप से ध्यान केंद्रित न होना संभव है। उसने हमें "निर्मल" आँख रखने का आग्रह किया, एक आँख जो धुंधली छवियों को नहीं देखती, एक आँख जो पृथ्वी पर धन जमा करने की मूर्खता को देखती है और आने वाली दुनिया को अपने स्पष्ट दर्शन में रखती है।

ग. स्वामियों का चुनाव (6:24)

यीशु ने कहा, "कोई भी व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता... तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।" "धन" का सीधा अर्थ है "संपत्ति।" "सेवा" का अनुवाद ‘डोलेउओ’ है, जो डोउलोस के समान शब्द है, जिसका अर्थ है "दास।" "स्वामी" का अनुवाद कुरियोस है, जिसका अर्थ है "प्रभु, पूर्ण स्वामी।" तो इसका अर्थ हुआ कि यीशु कह रहा था कि कोई भी व्यक्ति दो स्वामियों का दास नहीं हो सकता। हम भौतिक संपत्ति के दास नहीं हो सकते और उसी समय अपने जीवन में मसीह के प्रभुत्व को नहीं अपना सकते। यहाँ किसी भी तरह का समझौता संभव नहीं है। हमें यह तय करना होगा कि हम किस दुनिया के लिए जीने जा रहे हैं और किस स्वामी की सेवा करने जा रहे हैं।

3. चिंता से जुड़े बोझ (6:25-34)

जिनके पास धन है, उनकी एक समस्या है; जिनके पास इस दुनिया का बहुत कम धन या कुछ भी नहीं है, उनके पास बिल्कुल अलग बोझ है। पहले वाले लोग अधिक से अधिक संचय करने के बारे में चिंतित रहते हैं; दूसरे भाग के लोग अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए व्याकुल रहते हैं। धन और चिंता विपरीत समस्याएँ हैं, लेकिन वे आत्मिक जीवन को समान रूप से विचलित कर सकती हैं।

क. दैनिक जीवन (6:25-26)

(1) इसका दबाव स्वीकार किया गया है (6:25a)

परमेश्वर के अधिकांश लोग अपने दैनिक जीवन में हर तरफ़ से विचलित करने वाली चिंताओं से घिरे रहते हैं। लेकिन उसने कहा, "कोई भटकाने वाली चिंता मत करो" (6:25), क्योंकि यही उसके वचनों की वास्तविक ताकत है। जाहिर है कि हमें अपनी भौतिक ज़रूरतों के बारे में कुछ सोचना चाहिए; भोजन और वस्त्र ज़रूरी चीज़ें हैं। लेकिन हमें इन चीज़ों के बारे में बहुत अधिक चिंता नहीं करनी चाहिए।

(2) इसका परिप्रेक्ष्य बदल गया (6:25b-26)

इसका अर्थ यह है कि हमें कभी लापरवाह नहीं होना चाहिए; न ही हमें चिंतित होना चाहिए। तीन बार प्रभु ने अपने लोगों को आदेश दिया कि वे चिंता न करें।

पहली बार (6:25) में उसने कहा कि चिंता अनावश्यक है; दूसरी बार (6:31) में उसने कहा कि यह अयोग्य है; तीसरी बार (6:34) में उसने कहा कि इससे कोई लाभ नहीं होता।

6:26 में प्रभु का सचित्र चित्रण हमें आकाश के पक्षियों की ओर संकेत करता है। वे हल नहीं चलाते, पौधे नहीं लगाते, बोते नहीं, काटते नहीं, और खलिहानों में खाना इकट्ठा नहीं करते, फिर भी परमेश्वर उनके लिए भोजन उपलब्ध कराते हैं। दुनिया में एक भी करोड़पति ऐसा नहीं है जो सिर्फ़ एक दिन के लिए सभी पक्षियों को भोजन दे सके, लेकिन परमेश्वर उन्हें भोजन देना कभी बंद नहीं करता। हम पक्षियों से कहीं अधिक मूल्यवान हैं। परमेश्वर उनकी परवाह करता है और बेशक वह हमारी भी परवाह करता है।

ख. ईश्वरीय तर्क (6:27-32)

(1) हमारा मानवीय ढाँचा (6:27)

प्रभु ने ईश्वरीय तर्क को ध्यान में लाने के लिए दो और दृष्टांतों का इस्तेमाल किया। सबसे पहले उसने कहा कि कोई भी व्यक्ति चिंता करके अपना "कद" नहीं बदल सकता। इस विचार का एक अनुवाद यह है कि एक व्यक्ति जो उतना लंबा नहीं है जितना वह होना चाहता है, वह चिंता करके अपनी ऊंचाई में डेढ़ फुट भी नहीं जोड़ सकता। दूसरा अनुवाद यह है कि एक व्यक्ति अपनी निर्धारित जीवन अवधि में चिंता करके कोई अधिक समय नहीं जोड़ सकता।

एकमात्र व्यक्ति जो अपने जीवनकाल को बढ़ाने में सफल रहा, वह था राजा हिजकिय्याह। उसके जीवन में पंद्रह वर्ष और जुड़ गए और उस दौरान उसके बेटे और वारिस मनश्शे का जन्म हुआ। लेकिन जब हिजकिय्याह ने देखा कि मनश्शे कैसा था, तो उसने निस्संदेह चाहा कि वह परमेश्वर के नियत समय पर मर जाता तो अच्छा होता (यशायाह 38:1-5; 2 इतिहास 33:1-10)।

(2) हमारा रुका हुआ विश्वास (6:28-30)

दूसरे दृष्टांत में प्रभु ने प्रतिज्ञा के देश में पाए जाने वाले साधारण सोसन के फूलों की ओर इशारा किया, जो घर के बगीचे में या सबसे खराब खरपतवारों के बीच समान रूप से एक जैसा ही खिलता है। ये प्यारे सोसन के फूल न तो मेहनत करते हैं और न ही कातते हैं, फिर भी सुलैमान ने अपने पूरी महिमा में कभी ऐसे वस्त्र नहीं पहने। यदि हमारा स्वर्गीय पिता एक सड़क के किनारे के फूल को इतनी समृद्धता से सजा सकता हैं जो एक पल के लिए यहाँ है और फिर हमेशा के लिए मुरझा जाता है, तो हम अपनी भौतिक आवश्यकताओं का ख्याल रखने के लिए उस पर भरोसा क्यों नहीं कर सकते?

(3) हमारा स्वर्गीय पिता (6:31-32)

"हे अल्पविश्वासियो," प्रभु ने 6:30 में कहा, मानो उसे आश्चर्य हो कि परमेश्वर की संतानों में से कोई भी अपने स्वर्गीय पिता की कोमल देखभाल पर एक पल के लिए भी संदेह कर सकता है। अब यीशु ने एक आदेश दिया और साथ ही आश्वासन भी दिया। "तुम क्या पहनोगे, इसकी चिंता मत करो" यह उस आदेश का सार

था (6:31)। फिर आश्वस्त करने वाले शब्द कहा: "तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इस सब वस्तुओं की आवश्यकता है " (6:32)।

ग. अलग-अलग नियम (6:33-34)

(1) सबसे पहले क्या होना चाहिए (6:33)

यीशु ने कहा, "इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" वे चीज़ें जिन्हें परमेश्वर जानता हैं कि हमें ज़रूरत है और उसने जो देने का वादा किया है, जब सब कुछ कहा गया और किया गया,जैसी बात है। हमें जो खोजना है वह परमेश्वर का राज्य है। (यह पाँच में से पहली बार है जब मत्ती ने "परमेश्वर के राज्य" शब्द का इस्तेमाल किया; 12:28; 19:24; 21:31,43 भी देखें।) अगर हमें किसी चीज़ के बारे में चिंतित होना है, तो यह परमेश्वर के राज्य से संबंधित मामले ही होने चाहिए।

(2) किसके लिए संघर्ष करना चाहिए (6:34)

यहाँ प्रभु ने हमें कल के विषय में चिंता न करने को कहा है। हो सकता है कि कल आए ही न। हो सकता है कि कल के आने से पहले हम अपने स्वर्गीय घर में उठा लिए जाए। और अगर कल आता भी है, तो परमेश्वर संप्रभुतापूर्वक उसके मामलों का प्रबंध करेगा। हमें कल की चिंताओं को आज की चिंताओं के साथ नहीं जोड़ना चाहिए।

"आज के लिए आज ही का दुःख काफी है।" यहाँ "दुःख" के रूप में अनूदित यूनानी शब्द में न केवल जीवन की विपत्तियाँ और कष्ट शामिल हैं, क्योंकि इस शब्द की जड़ें पाप में इन चीजों की उत्पत्ति की ओर इशारा करती हैं। जब तक हम पापी संसार में हैं, हम कठिनाइयों से हमेशा घिरे रहेंगे। परमेश्वर यह वायदा नहीं करती कि कल कोई समस्या नहीं होगी, लेकिन कल, आज की तरह, उसके सामर्थी सक्षम हाथों में है। प्रभु नहीं चाहती कि हम कल के बारे में कोई विचार न करके लापरवाह या मूर्ख बनें; बल्कि वह चाहती हैं कि हम परमेश्वर पर भरोसा रखें और किसी प्रकार की चिंता न करें। वह चाहती हैं कि हम एक समय में एक दिन जिएँ। हमें उस गीत लिखने वाले लेखक के समान प्रार्थना करनी चाहिए:

हे प्रभु, कल और उसकी ज़रूरतों के लिए

मैं प्रार्थना नहीं करता;

हे प्रभु, केवल आज के लिए,

मुझे पाप के धब्बों से बचा।

एक पुरानी कहानी है जिसमें एक घड़ी के बारे में बताया गया है जो कमरे के कोने में लटकी हुई थी और घंटों की टिक टिक करती रहती थी। घड़ी ने सोचना और चिंता करना शुरू किया और खुद से कहा: "मैं हर सेकंड में एक बार टिक करती हूँ। एक मिनट में साठ सेकंड होते हैं और एक घंटे में साठ मिनट होते हैं। इसका मतलब है कि मुझे हर घंटे 3,600 बार और हर दिन 86,400 बार टिक-टिक करना होगा। फिर कल

और उसके बाद का दिन है; आगे दिन, सप्ताह और महीने हैं। ओह, एक साल में मुझे 31,536,000 बार टिक करना होगा।"

घड़ी निराश हो गई और जैसे-जैसे उसने अजन्मे दिनों के बोझ को समय के वर्तमान क्षण के बोझ में जोड़ा, उसकी गति धीरे-धीरे कम होने लगी और लगभग रुक गई। फिर घड़ी के मन में एक उत्साहवर्धक विचार आया। "आखिरकार," उसने खुद से कहा, "यह एक समय में केवल एक ही टिक है।" अंतर्दृष्टि की उस चमक के साथ, घड़ी ने ताकत जुटाई और अपने निर्धारित कार्य को जारी रखा - एक निश्चित समय में गुजरते क्षणों में केवल एक टिक से मापना।

ङ. चेले और उसका व्यवहार (7:1-29)

1. मूर्खता का प्रदर्शन (7:1-5)

यहाँ प्रभु ने आलोचनात्मक भावना को दूर हटाने को कहा है। दूसरों के पापों और कमियों के विषय में आलोचना करना मूर्खता की पराकाष्ठा है, क्योंकि हम जो करते हैं, वह उन्हें खुद पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित करना है। इसके अलावा, आलोचनात्मक भावना हमारे स्वर्गीय पिता के लिए घृणित है।

क. तर्कपूर्ण वचन (7:1-2)

7:1 में हमें बताया गया है कि हमें दूसरों का न्याय नहीं करना चाहिए। इस सिद्धांत को अन्य पवित्रशास्त्रीय पद्यांशों के प्रकाश में समझने की आवश्यकता है जो हमें बताते हैं कि हमें कुछ चीजों का न्याय करना है। प्रभु के वचनों के चयन और उस संदर्भ का अध्ययन करके हमारी समझ भी बदल जाती है जिसमें वह सिद्धांत कहा गया है।

पवित्रशास्त्र के अन्य अनुच्छेद संकेत देते हैं कि प्रभु के इस निषेध में सांसारिक न्यायालयों द्वारा दिया जाने वाला फैसला शामिल नहीं है, जो पापी दुनिया में अपराध के नियंत्रण के लिए आवश्यक हैं (तीतुस 3:1-2; इब्रानियों 13:17; 1 पतरस 2:13-15)। इस निषेध में कलीसिया द्वारा अपने साथियों के उन लोगों का न्याय शामिल नहीं है जो अव्यवस्थित हैं या झूठे सिद्धांत को अपनाते हैं (मत्ती 18:16-17; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6,14; तीतुस 3:10)। और प्रभु ने व्यक्तियों को गलत काम करने वालों के बारे में निर्णय लेने से मना नहीं किया (मत्ती 7:15-16; रोमियों 16:17; 1 कुरिन्थियों 5:11; 1 यूहन्ना 4:1)। प्रभु ने जिस चीज को निषिद्ध किया है वह है निंदा करना - एक आलोचनात्मक मनोभाव, दोष खोजने वाली भावना जो हमें तथ्यों के बिना और अपनी खुद की कमज़ोरी को याद किए बिना लोगों की निंदा करने के लिए प्रेरित करती है।

मत्ती 7:1 में "दोष" के लिए जिस शब्द का अनुवाद किया गया है वह ‘क्रिनो’ है। चूँकि नए नियम में इसका अनुवाद दस अलग-अलग तरीकों से किया गया है, इसलिए किसी विशेष अनुच्छेद में शब्द के महत्व को निर्धारित करने में संदर्भ एक महत्वपूर्ण कारक होता है। हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि यहाँ प्रभु ने "दोष मत लगाओ" इस अर्थ में नहीं कहा कि हमें इस या उस के बीच अंतर करने से मना किया गया है, क्योंकि उसी संदर्भ में (7:6) उसने हमें विवेकशील बनने के लिए कहा था। उसने इस अभिव्यक्ति का उपयोग हमें लोगों के बारे में नकारात्मक निष्कर्ष पर आने के विरूद्ध चेतावनी देने के लिए किया। उसने हमें चेतावनी दी कि यदि हम दूसरों के प्रति आलोचनात्मक रवैया को बढ़ावा देते हैं, तो हम वही काटेंगे जो हम बोते हैं।

हम उम्मीद कर सकते हैं कि दूसरे हम पर उसी तरह से और उसी हद तक दोष लगायेंगे और निंदा करेंगे जिस तरह से हम उनका न्याय करते हैं और उनकी निंदा करते हैं।

ख. उपहास का एक शब्द (7:3-4)

"लट्ठा" और "तिनका" शब्दों का उपयोग करते हुए, हमारी किंग जेम्स बाइबल लेख इसकी आयु को दर्शाता है। लट्ठा वास्तव में लकड़ी का एक बड़ा टुकड़ा होता है जिसका उपयोग छत को सहारा देने के लिए किया जाता है। तिनका उस लट्ठे का एक महीन टुकड़ा होता है। प्रभु ने लट्ठा और तिनके के बारे में बात की ताकि उस व्यक्ति की मूर्खता को जाहिर कर सके जो किसी और की आँख में एक छोटा सा तिनका दिखाता है जबकि उसकी अपनी आँख में लकड़ी का एक बड़ा टुकड़ा पड़ा है।

किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन में हम जो भी दोष देखते हैं, वह हमारे अपने प्रेम की कमी के विशाल लट्ठे की तुलना में एक छोटा सा टुकड़ा हो सकता है। आलोचनात्मक रवैये से अधिक मसीह के प्रति अरुचि रखने वाली कोई अन्य चीज़ नहीं है। एक बार जब कोई व्यक्ति अपने उस बेकार लकड़ी के लट्ठे से छुटकारा पा लेता है, तो वह स्पष्ट रूप से देख पाता है कि अपने भाई को नुकसान पहुँचाने वाले टुकड़े से कैसे छुटकारा दिलाया जाए।

ग. फटकार का एक शब्द (7:5)

प्रभु ने उस व्यक्ति को डांटा जिसकी आँख में लट्ठा था और उसे "पाखंडी" कहा। कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति की मदद करने की उम्मीद नहीं कर सकता जबकि उसके प्रति उसमें निंदात्मक रवैया हो। किसी अपमानजनक काँटे को निकालने की सामर्थ्य उसे पहचानने, उजागर करने और उसकी निंदा करने की क्षमता में नहीं है, बल्कि मसीह के समान प्रेम में है जो हृदय को मददगार और दयालु होने की इच्छा से भर देता है।

2. पिता की प्रशंसा (7:6-12)

क. पिता का प्रेम प्रकट हुआ (7:6-11)

(1) एक चेतावनी भरा शब्द (7:6)

प्रभु ने हमें सिखाया कि हमें आलोचनात्मक नहीं होना चाहिए, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हमें भोले बने रहना चाहिए। हमें विवेकशील होना चाहिए। "पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो," उसने चेतावनी दी। हम पतरस द्वारा इस चेतावनी के उपयोग के संदर्भ को सीखते हैं (2 पतरस 2:22) कि हमें सच्चे और झूठे, परमेश्वर की संतान और झूठे शिक्षकों के बीच अंतर करना आना चाहिए। पतरस ने स्पष्ट भाषा में उन लोगों का चित्रण प्रस्तुत किया जो पवित्र चीजों के विरूद्ध दृढ़ता से खड़े रहते हैं, लेकिन अपवित्र कारणों से पवित्र चीजों में आक्षेप लगाने के लिए खुद को पवित्र स्थानों में ले आते हैं।

लैवीय व्यवस्था (लैव्यव्यवस्था 11:1-8) के अंतर्गत कुत्तों और सूअरों दोनों को अशुद्ध जानवर माना जाता था। कुत्ते किसी भी चीज़ को खाने के लिए तैयार रहते हैं, चाहे वह सबसे बढ़िया निवाला हो या सबसे गंदा मल। सूअर अधिक तौर पर अशुद्ध होते हैं, उन्हें कीचड़ में लोटना पसंद होता है। कुत्तों और सूअरों की

तुलना करके, झूठे भविष्यद्वक्ताओं का चरित्र प्रकट किया गया है। परमेश्वर के लोग भेड़ हैं, कुत्ते नहीं; कबूतर हैं, सूअर नहीं।

हमें आत्मिक चीज़ों, मूल्यवान चीज़ों, पवित्र चीज़ों को उन लोगों को नहीं सौंपना चाहिए जिन्होंने खुद को धर्मत्यागी, झूठे शिक्षक, झूठे चरवाहे के रूप में प्रकट किया है। इसके बजाय, हमें विवेकशील होना चाहिए और ऐसे "कुत्तों" और "सूअरों" को परमेश्वर के लोगों के बीच किसी भी स्थान से दूर रखना चाहिए "ऐसा न हो कि वे [पवित्र चीज़ों, मोतियों] को अपने पैरों तले रौंद दें, और फिर मुड़कर [हमें] फाड़ डालें।" झूठे शिक्षकों को मोतियों (मसीह के दुखों का एक उपयुक्त प्रतीक) या पवित्र चीज़ों में कोई मूल्य नहीं दिखता। "कुत्तों से सावधान रहो," पौलुस ने चेतावनी दी (फिलिप्पियों 3:2)। "कुत्ते बाहर होंगे," यूहन्ना ने उन लोगों का वर्णन करते हुए घोषणा की जिन्हें पवित्र नगर के द्वार से प्रवेश करने से हमेशा के लिए रोक दिया गया है (प्रकाशितवाक्य 22:15)।

सदियों से कलीसिया को "कुत्तों" और "सूअरों" ने तोड़-फोड़ कर नष्ट कर दिया है। कॉन्स्टेंटाइन ने जब मसीहत का फैलाव किया और कलीसिया के द्वार दुनिया के लिए खोल दिए, तो उसने कुत्तों को पवित्र चीज़ें दे दीं। मूर्तिपूजा का बपतिस्मा हुआ और मसीहत का जन्म हुआ।

(2) एक अद्‌भुत वचन (7:7-11)

प्रभु के चेतावनी भरे वचनों के बाद आमंत्रण का एक अद्‌भुत वचन आया। चेतावनी और आमंत्रण दोनों ने पिता के प्रेम को प्रकट किया है।

(a) आमंत्रण का विस्तार (7:7)

प्रभु ने हमें दिखाया कि कैसे पता लगाया जाए कि आलोचनात्मक रवैया और विवेकशील भावना के बीच की रेखा कहाँ खींची जाए। वह हमारी स्थिति को जानता है, इसलिए उसने हमें नियमों की सूची नहीं दी। उसने केवल इतना कहा, "मांगो... ढूँढों.. खटखटाओ।"

(b) आमंत्रण का विस्तार (7:8)

हम कल्पना कर सकते हैं कि वह अपने चेलों के अविश्वसनीय चेहरों को देख रहा था, जो आश्चर्यचकित थे कि दुनिया में कोई भी व्यक्ति पहाड़ी उपदेश में वर्णित जीवन कैसे जी सकता है। वह अच्छी तरह से जानता था कि किसी के पास उसकी आज्ञाओं का पालन करने की बुद्धि या सामर्थ्य नहीं थी, इसलिए उसने हमारी नपुंसकता को परमेश्वर की सर्वसामर्थ्यता से जोड़ा।

हमें परमेश्वर के पास आकर याचना करनी चाहिए। अर्थात्, हमें परमेश्वर पर अपनी निर्भरता को पहचानना चाहिए। हमें तलाश करनी चाहिए। अर्थात्, हमें खुद को सक्रिय करना चाहिए; हमें ईमानदारी से उस जीवन को जीने की इच्छा करनी चाहिए जिसका वर्णन परमेश्वर ने किया है। हमें खटखटाना चाहिए (क्रौओ)। अर्थात्, हमें सुदृढ़ होना चाहिए और स्वर्ग की दीवारों को घेरना चाहिए और दृढ़ता के साथ परमेश्वर के दरवाजे पर प्रहार करना चाहिए (क्रौओ का अनुवाद लूका 11:9-10; 13:25 में "दस्तक देना/खटखटाते रहना" के रूप में भी किया गया है)। परमेश्वर ने हमें हठी होने के लिए इसलिए नहीं कहा क्योंकि परमेश्वर सुनने में कठोर हैं या प्रतिक्रिया देने में धीमे हैं, बल्कि इसलिए क्योंकि हम सुस्त हैं और हार मान लेते हैं।

हमें याद रखना चाहिए कि, जैसा कि कैंपबेल मॉर्गन ने कहा, यह कोई नौकर नहीं है जो केवल दरवाज़ा खोलने के लिए खड़ा है, बल्कि हमारा पिता है।[12] और वह कितना ही अच्छा पिता है!

(c) आमंत्रण की व्याख्या (7:9-11)

हम निश्चिंत हो सकते हैं कि हमारा पिता हमें वह देगा जिसकी हमें ज़रूरत है। प्रभु ने एक मानव पिता का दृष्टांत दिया, जो अपूर्ण (असिद्ध) है, क्योंकि वह "बुरा" है (7:11) — कभी-कभी कुढ़ता है, कभी-कभी हानिकारक भी हो जाता है—जो जानता है कि अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें कैसे देनी चाहिए। लेकिन हमारा अद्भुत स्वर्गीय पिता, जो हमेशा जानता हैं कि क्या सबसे उत्तम है और हमेशा वही करता हैं जो सही है, वह हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कितना अधिक तत्पर रहता हैं!

क्या कोई मानवीय पिता अपने भूखे बच्चे को रोटी के बदले पत्थर देकर उसका मज़ाक उड़ाएगा? (शैतान ऐसा करेगा; उसने पहली परीक्षा में मसीह को रोटी के बदले पत्थर दिया था।) क्या कोई मानवीय पिता अपने भूखे बच्चे की थाली में मछली के बदले हानिकारक साँप रखकर उसका मज़ाक उड़ाएगा? बिल्कुल नहीं। न ही ये महान सिद्धांत हमें हमारा मज़ाक उड़ाने के लिए दिए गए हैं। उन्हें व्यवहार में लाने के लिए हमें जो कुछ भी चाहिए वह हमारे निवेदन पर उपलब्ध है। हमें केवल अपने स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करनी है।

ख. पिता के प्रेम की पुनः प्रस्तुति (7:12)

(1) स्वर्णिम नियम (7:12a)

इस प्रकार प्रकट हुए पिता के प्रेम को पुनः प्रस्तुत किया जाना है, इसलिए प्रभु ने एक नियम बनाया जिसे "स्वर्णिम नियम" के रूप में जाना जाता है: "इस कारण [क्योंकि पिता के सभी संसाधन हमारे लिए उपलब्ध हैं] जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो।" इस कथन को "संपूर्ण उपदेश की आधारशिला" और "सभी नैतिक शिक्षाओं का शिखर" कहा गया है।

नकारात्मक रूप में, स्वर्णिम नियम सुकरात, अरस्तू, कन्फ्यूशियस, बुद्ध और हिलेल की शिक्षाओं में पाया जाता है। इन लोगों ने वास्तव में कहा, "दूसरों के साथ वैसा कुछ मत करो जो तुम नहीं चाहते कि वे तुम्हारे साथ करें।" प्रभु यीशु को इस नियम को नकारात्मक से सकारात्मक और निष्क्रिय से सक्रिय में बदलना था - और अपने अद्वितीय जीवन के हर विचार, वचन और कार्य में नियम को स्थापित करना था। और मसीहत की विशिष्ट प्रतिभा यह है कि नए जन्म के चमत्कार और पवित्र आत्मा के निवास के द्वारा, लहू से खरीदे गए विश्वासी के लिए भी मसीह जैसा एक जीवन जीना संभव हो जाता है।

(2) महान प्रकाशन (7:12b)

"क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्तओं की शिक्षा यही है" - यह स्वर्णिम नियम के विषय पर प्रभु का अंतिम कथन है। मूसा की व्यवस्था में प्रतीकात्मक रूप से और भविष्यद्वक्ताओं के वचन में, यही स्वर्णिम नियम सभी नैतिकता का अंतर्निहित सिद्धांत है। आधुनिक शब्दावली में, सिद्धांत यह है कि हम खुद को दूसरे व्यक्ति के स्थान पर रखें और फिर अपने आचरण को उसी के अनुसार निर्देशित करें।

3. भविष्य की व्याख्या (7:13-14)

मसीहियों पर अक्सर संकीर्ण सोच रखने का आरोप लगाया जाता है और उन्हें अधिक उदार सोच रखने के लिए कहा जाता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि हमें उतनी ही संकीर्ण सोच रखनी है जितनी प्रभु की मांग है और उतनी ही उदार सोच रखनी है जितनी वह अनुमति देता है। नरक और स्वर्ग के मार्ग के बारे में इन आयतों में, प्रभु ने संकीर्ण सोच और उदार सोच को अनंत काल के प्रकाश में उचित परिप्रेक्ष्य में रखा है। जब ये राहें एक दूसरे से मिलती हैं तो हमें सही निर्णय लेने की सलाह दी जाती है। हमारा निर्णय हमारे जीवन की दिशा और मंज़िल को प्रभावित करता है।

क. नरक का मार्ग (7:13)

नरक का मार्ग एक चौड़ा रास्ता है, जिसमें चौड़े फाटक से प्रवेश किया जाता है। यह एक लोकप्रिय मार्ग है, जो संसार की मोह-माया में अंधे हो चुके लोगों की एक लापरवाह भीड़ से भरा हुआ है। चौड़ा मार्ग सुख-सुविधा, पदोन्नति, संपत्ति, सामर्थ्य और एक तरह की झूठी भक्ति; रीति-रिवाज और संस्कृति; भ्रम और आनंद की एक विविध सूची प्रदान करता है। प्रतिभाशाली लोग और महान लोग इस मार्ग पर हैं, साथ ही सभी प्रकार के दुर्गुण, अहंकारी और हिंसक लोग भी शामिल हैं। बैंगनी फूलों के बीच हमेशा सांप छिपे रहते हैं।

जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है, चौड़ा रास्ता संकरा होता जाता है। यह एक ऐसे ईश्वर द्वारा बनाया गया है जिसका राज्य अंधकार है, जिसका शासन बंधन है, और जिसका शासन परमेश्वर के विरुद्ध बदला लेने से प्रेरित है - अर्थात् मनुष्य जाति के विनाश और अभिशाप के रूप में बदला लिया जाना। यह मार्ग कोई वास्तविक आनंद, कोई वास्तविक या स्थायी सुख नहीं देता है, बल्कि क्षणिक खुशी के पल प्रदान करता है।

सच्चा आनन्द केवल परमेश्वर की उपस्थिति में ही पाया जाता है और केवल उसके दाहिने हाथ में ही सुख की भरपूरी पाई जाती है (भजन 16:11)। चूँकि परमेश्वर को उस चौड़े मार्ग पर नहीं पाया सकता है, इसलिए शैतान केवल कृत्रिम आनन्द ही प्रदान कर सकता है। वास्तविक चीज़ों पर केवल परमेश्वर का एकाधिकार है। निरंतर कम होते आनन्द के लिए निरंतर बढ़ती खुराक शैतान का फार्मूला है, जैसा कि हर दाखरसी, लगातार धूम्रपान करने वाला, नशे का आदी, कामुकतावादी और सुख चाहने वाला इस बात को जानता है।

जैसे जैसे बुढ़ापा अपनी कमज़ोरियों और सीमाओं के साथ आता हैं उसकी प्रकार यह चौड़ा रास्ता और भी संकरा होता जाता है। खराब स्वास्थ्य आम बात हो जाती है, क्षमताएँ कम होने लगती हैं, दोस्त मर चुके होते हैं, और रास्ता और भी अकेला और डरावना होता जाता है। फिर मृत्यु आती है और जो लोग चौड़े रास्ते के कड़वे अंत तक पहुँचते हैं, उन्हें बहुत देर के बाद पता चलता है कि यीशु ही सही था। यह चौड़ा मार्ग उन्हें "विनाश की ओर ले जाता है।" मत्ती 7:13 में "विनाश" का अनुवाद अपोलिया है, जो विलुप्त होने का नहीं, बल्कि बर्बादी का अभिप्राय व्यक्त करता है - अस्तित्व की हानि नहीं, बल्कि कल्याण की हानि। यहाँ "विनाश" का अर्थ अनंत आत्मिक विनाश है।

ख. स्वर्ग का मार्ग (7:14)

स्वर्ग का मार्ग संकरा है, जिसमें सकेत फाटक से प्रवेश किया जाता है। पहाड़ी उपदेश के कठोर नियमों के कारण बहुत से लोग सोचते हैं कि यह मार्ग बहुत ही संकरा है।

आज जो झूठा सुसमाचार प्रसारित हो रहा है, वह “मैडिसन एवेन्यू” के आकर्षक विज्ञापन के अनुरूप है। कोई लगभग यह मानने को मजबूर हो जाता है कि यीशु हमें चार रंगों वाले विज्ञापन-पत्र भेजकर संभावित पर्यटकों को यह घोषणा करवाएगा कि स्वर्ग का रास्ता यकीनन काफ़ी सुविधापूर्ण है - यानि इसमें हर तरह से धन और स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। प्रचारक हमें "संभावना सोच" का अभ्यास करने का आग्रह करते हैं और हमें डिज़नी-वर्ल्ड-शैली के उपक्रमों में निवेश करने के लिए आमंत्रित करते हैं। मसीही जीवन को मनोरंजन और मौज-मस्ती के दौर के रूप में प्रस्तुत किया जाता है - गरीब या बीमार होना पाप या विश्वास की कमी का संकेत माना जाता है, और ऐसा लगता है कि परमेश्वर चाहता हैं कि हम उस धनवान मूर्ख की तरह बनें जिसने दावा किया था कि वह "धनी है, और धनवान हो गया है, और उसे किसी वस्तु की घटी नहीं है" (प्रकाशितवाक्य 3:17)। ऐसी शिक्षा लौदीकियाई युग में लौदीकिया कलीसिया के लिए एक लौदीकियाई सुसमाचार है।

प्रभु ने स्वर्ग के मार्ग का वर्णन इस प्रकार नहीं किया है। उसने कहा कि हमें "सकेत" फाटक से शुरू करना चाहिए - वस्तुतः "सकेत" द्वार से। प्रवेश द्वार पर भौतिक लाभ, शारीरिक कल्याण, या संकट, सताव, अकाल और तलवार से बचने की पेशकश करने वाले कोई विशाल पोस्टर नहीं हैं। कोई ऐसी प्रतिज्ञा नहीं है कि हम दोनों दुनिया में से सर्वश्रेष्ठ प्राप्त कर सकते हैं, कोई ऐसा संकेत नहीं है कि हम उसी पुराने तरीके से जीवन जीते रह सकते हैं और फिर भी स्वर्ग में प्रवेश के बारे में सुनिश्चित हो सकते हैं।

हम सकेत द्वार से प्रवेश नहीं कर सकते और सकेत मार्ग पर नहीं चल सकते और साथ ही पाप के प्रति सहनशील नहीं हो सकते, मनुष्यों की प्रशंसा की अपेक्षा नहीं कर सकते, संसार का हाथ थाम नहीं सकते, शरीर की वासनाओं में लिप्त नहीं हो सकते, शैतान की झूठी बातें नहीं सुन सकते और वर्तमान युग की भावनाओं के साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चल सकते। इस संसार ने हमारे उद्धारकर्ता को क्रूस पर चढ़ाया तो इस बात का ध्यान रखें कि जो लोग उसके पदचिन्हों पर चलते हैं, उनके लिए यह संसार कोई मित्र नहीं होने वाला।

इसलिए स्वर्ग का मार्ग एक सकेत रास्ता है, लेकिन जैसे-जैसे हम अनुग्रह में बढ़ते हैं और परमेश्वर के ज्ञान में वृद्धि करते जाते हैं, यह चौड़ा होता जाता है। यह मार्ग अद्भुत मित्रता का मार्ग है - समान मूल्यवान विश्वास वाले लोगों के साथ प्रेम का संबंध। स्वर्ग का मार्ग बौद्धिक चुनौती, भावनात्मक पूर्ति, जबरदस्त अवसर और "अवर्णनीय और महिमा से भरा आनंद" (1 पतरस 1:8) का मार्ग है। मार्ग चौड़ा होता जाता है और अनंत जीवन की पूर्णता में इसका समावेश होता है। जैसा कि सुलैमान ने लिखा, "धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है" (नीतिवचन 4:18)।

एक सकेत मार्ग है जो पृथ्वी से स्वर्ग तक जाता है, और एक चौड़ा मार्ग है जो पृथ्वी से नर्क तक जाता है। लेकिन ऐसा कोई रास्ता नहीं है जो नर्क से स्वर्ग तक जाता हो (लूका 16:26)। चौड़ा रास्ता संकरे रास्ते को सिर्फ़ एक जगह पर काटता है: कलवरी पर। क्रूस पर कोई भी चौड़ा रास्ता छोड़ सकता है, मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर सकता है, और संकरे रास्ते पर चलना शुरू कर सकता है।

4. धोखाधड़ी का पर्दाफाश (7:15-23)

क. झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहें (7:15-20)

दो दरवाज़ों, दो दिशाओं और दो नियतियों के बारे में हमें चेतावनी देने के ठीक बाद, प्रभु ने कहा, "झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो" (7:15)। झूठे भविष्यद्वक्ता शैतान के दूत हैं जो लोगों को विनाश की ओर ले जाने वाले चौड़े मार्ग पर उन्हें बहकाते हैं।

(1) झूठे भविष्यद्वक्ता क्या दिखावा करते हैं (7:15)

यीशु ने कहा, "वे भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में फाड़ने वाले भेडिए हैं।" वे सच्चे होने का बाहरी वेश धारण करके आते हैं। वे सही बातें कहते हैं और सही काम करते हैं। वे भेड़ों की तरह दिखने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं ताकि वे परमेश्वर के सच्चे लोगों के बीच प्रवेश और स्वीकृति प्राप्त कर सकें।

उन्हें आने में ज़्यादा समय नहीं लगता। उदाहरण के लिए इफिसुस की कलीसिया को देखें। इसकी स्थापना पौलुस ने अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान की थी, जिसमें इफिसुस में तीन साल का प्रवास भी शामिल था (प्रेरितों 19:1-20; 20:31)। उस कलीसिया के प्रभाव से आस-पास के कई नगरों में सुसमाचार प्रचार हुआ (प्रकाशितवाक्य 2-3)।

पौलुस इफिसस से यूरोप चला गया, वहाँ तीन से नौ महीने बिताया (प्रेरितों 20:3), फिर फिलिप्पी लौट आया (20:6), फिर मीलेतुस गया (20:13-17)। उसने इफिसियों की कलीसिया के आत्मिक अगुवों को अंतिम सम्मेलन के लिए मीलेतुस बुलाया। पौलुस को गए हुए एक साल से भी कम समय हुआ था, लेकिन वह आने वाली मुसीबत के संकेत देख सकता था। उसने इफिसियों के प्राचीनों को चेतावनी दी:

“इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस से पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लहू से मोल लिया है। मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे” (प्रेरितों के काम 20:28-30)।

लगभग तीन साल या उसके आसपास पौलुस ने इफिसुस को पत्र लिखा और वहाँ के विश्वासियों से आग्रह किया कि वे "मेल के बंध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो" और उन्हें चेतावनी दी कि वे "आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते" हैं (इफिसियों 4:3, 14)। उसे कुलुस्से की बहन कलीसिया को भी एक पत्र लिखना था, जिसमें वहाँ के मसीहियों को ज्ञानवादी विधर्मियों के विरूद्ध चेतावनी दी गई थी। भेड़ के भेष में भेड़िये पहले से ही झुंड में थे, और वे धोखा देने और नष्ट करने के लिए वहाँ थे।

(2) झूठे भविष्यद्वक्ता क्या उत्पन्न करते हैं (7:16-20)

झूठे भविष्यद्वक्ता की अंतिम परीक्षा उसके व्यक्तित्व का आकर्षण, उसकी वाक्पटुता की प्रेरकता, या उसके अनुयायियों की गिनती नहीं है, बल्कि उसका सिद्धांत और जीवन जीने का तरीका है।

हम झूठे भविष्यद्वक्ताओं में आत्मा का फल नहीं देखते हैं। जैसा कि पौलुस ने इफिसियों को याद दिलाया, "आत्मा का फल सब प्रकार की भलाई, धार्मिकता और सत्य है" (इफिसियों 5:9)। और जैसा कि पौलुस ने गलातियों को याद दिलाया, जिन्हें भेड़ के भेष में भेड़ियों द्वारा फाड़ा जा रहा था, "आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं" (गलातियों 5:22-23)। झूठे भविष्यद्वक्ता ऐसे भ्रष्ट पेड़ होते हैं जो बुरे फल लाते हैं।

प्रभु ने इसे इस तरह से कहा: "उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोग क्या झाडिय़ों से अंगूर, वा ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं?" (मत्ती 7:16)। अंत में झूठे भविष्यद्वक्ता अपने सिद्धांतों और अपने कामों से खुद को धोखा देते हैं। वे भेड़ के भेष में भेड़िये हैं और वे काँटे और ऊँटकटारे पैदा करते हैं।

कांटे और ऊँटकटारे शाप के प्रतीक हैं (उत्पत्ति 3:17-18)। झूठे भविष्यद्वक्ता परमेश्वर की ओर से शापित हैं (गलातियों 1:8-9)। प्रभु ने कहा कि उन्हें अंततः "काटा और आग में डाला जाता है" (मत्ती 7:19)।

ख. झूठे व्यवसाय से सावधान रहें (7:21-23)

(1) एक परीक्षा (7:21)

जो लोग विशेष रूप से बुरा फल देते हैं, उनके साथ-साथ वे लोग भी हैं जो कोई फल ही नहीं देते - केवल पत्ते। उन्हें उनके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली धार्मिक भाषा से नहीं, बल्कि उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों से पहचाना जा सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति प्रभु के कहे अनुसार कार्य करता है या नहीं, जो यह साबित करता है कि वह स्वर्ग के राज्य का भागीदार है या नहीं। प्रभु के नाम को लगातार पुकारना, लेकिन कभी भी उसके कहे अनुसार कार्य न करना झूठे विश्वास का सार है। प्रभु का उनसे तीखा सवाल है, "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?" (लूका 6:46)

(2) एक त्रासदी (7:22-23)

(a) खोए हुए लोग क्या दावा करेंगे (7:22)

यह एक दुखद बात है कि जो लोग सोचते हैं कि वे भविष्यद्वाणी करने, दुष्टआत्माओं को भगाने और चमत्कारों के क्षेत्र में प्रभु की इच्छा पूरी कर रहे हैं, उन्हें यह एहसास नहीं है कि शैतान नकली घटनाएँ पैदा करने में माहिर है। आज बहुत से लोग जो अन्य भाषाओं में बोलने और भविष्यवाणियाँ करने का दावा करते हैं, वे अपने तथाकथित वरदानों से खुद को और दूसरों को धोखा दे रहे हैं।

जो अन्यभाषा के वरदान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है वह स्पष्ट रूप से धोखाधड़ी है, क्योंकि पवित्र आत्मा ने स्वयं कहा था कि भाषाएँ "जाती" रहेंगी (1 कुरिन्थियों 13:8)। यहाँ "जाती रहेंगी" शब्द का अनुवाद पाउओ है, जिसका अर्थ है "बंद होना, स्वतः समाप्त होना, अपने आप से बंद हो जाना।" जो भविष्यद्वाणी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है वह भी उतना ही संदिग्ध है। इसमें से कुछ बाइबल से बाहर है और इसलिए निस्संदेह झूठ है। इसमें से कुछ बाइबल के कथनों का संदर्भ में या उससे बाहर अस्पष्ट रूप से पुनर्लेखन है और इसलिए निरर्थक और धोखा देने वाला है। पवित्र आत्मा ने पौलुस के द्वारा घोषणा की कि भविष्यवाणियाँ भी "समाप्त" हो जाएँगी (कटारगेओ)।

कटारगेओ शब्द का प्रयोग प्रभु ने अंजीर के पेड़ के दृष्टांत में महत्वपूर्ण रूप से किया था। कहानी में मालिक ने पेड़ की पूर्ण बेकार अवस्था की ओर इशारा करते हुए दाख के बाग के रखवाले से कहा, "यह [कटारगेओ] जमीन को क्यों घेरे हुए है?" (लूका 13:7)

पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 13:10 में फिर से कटारगेओ का इस्तेमाल किया, जहाँ इसका अनुवाद "मिट जाएगा" किया गया है: "परन्तु जब सवर्सिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।" स्पष्ट रूप से पवित्र आत्मा यह संकेत दे रहा था कि नए नियम का पूरा होना "परिपूर्णता" थी जो अन्य भाषाओं, भविष्यवाणियों और विशेष ज्ञान को निरर्थक बना देगी। जब पवित्रशास्त्र लिखा जा रहा था, तब उस परिवर्तन काल के दौरान वे वरदान आवश्यक थे, लेकिन अब स्पष्ट रूप से अनावश्यक हैं।[13] उन लोगों की स्थिति कितनी ख़तरनाक है जो प्रभु के होने का दावा करते हैं और कुछ चिन्हों और वरदानों को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करते हैं जिन्हें पवित्र आत्मा ने अस्थायी और आगे कोई प्रासंगिकता नहीं होने की पहले से घोषणा की थी।

मत्ती 7:22 में प्रभु ने अपने नाम पर भविष्यद्वाणी करने, दुष्टात्माओं को निकालने और "कई अद्भुत कार्य" करने के झूठे दावों का उल्लेख किया। उसने इन सभी को नकार दिया। हमारी पीढ़ी में कई लोग इसी तरह के दावे करते हैं, लेकिन उनके सिद्धांत (या इसके अभाव) की जांच से पता चलता है कि वे अत्यधिक संदिग्ध हैं। वास्तव में आज हम आत्माओं के शत्रु द्वारा कलीसिया के विरूद्ध शुरू किए गए एक बड़े धोखे का सामना कर रहे हैं। इस मिशन को सभी प्रकार की उत्तेजक प्रकृति की घटनाओं द्वारा समर्थन प्राप्त है, जिनमें से अधिकांश स्पष्ट रूप से गुप्त हैं। नया नियम हमें बार-बार अंत-समय के गुप्त आक्रमण के बारे में चेतावनी देता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:8-11; 1 तीमुथियुस 4:1-3; 2 तीमुथियुस 4:1-4; 1 यूहन्ना 4:1-3)।

(b) प्रभु किस बात का न्याय करेगा (7:23)

जब प्रभु ने उन लोगों के आगमन के बारे में चेतावनी दी जो उसके नाम का उपयोग करते हैं, लेकिन वास्तव में उसके नहीं हैं, तो उसने "उस दिन" (7:22) की ओर इशारा किया, जब वे अंततः प्रकट हो जाएँगे कि वे वास्तव में क्या हैं - अर्थात् उसके नाम के झूठे समर्थक। "उस दिन" शब्द न्याय के आने वाले दिन की भविष्यद्वाणी करता है। प्रभु का फैसला भयानक होगा: "मैं ने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करने वालों, मेरे पास से चले जाओ" (7:23)। यह दावा करना कि आपके पास सभी प्रकार के वरदान हैं, लेकिन वह जो कहता है उसे नहीं करते तो यह "कुकर्म करने" जैसा है। यहाँ "कुकर्म" शब्द का अनुवाद एनोमिया है, जिसका अर्थ है "अधर्म।" उसके नाम पर किया गया कोई भी काम जिसकी उसने स्वयं आज्ञा नहीं दी है, वह केवल अधर्म का एक रूप है।

5. बुनियाद की जाँच (7:24-29)

क. संदेश का प्रयोग (7:24-27)

इसका प्रयोग अक्सर याद किए जाने वाले बुद्धिमान और मूर्ख घर बनानेवाले के दृष्टांत में आता है। बुद्धिमान व्यक्ति और मूर्ख व्यक्ति के बीच का अंतर स्वयं व्यक्तियों या उनकी सामग्रियों में नहीं था। अंतर उनकी नींव में था। यह कहानी उन लोगों पर लागू होती है जो चरित्र निर्माण कर रहे हैं। बुद्धिमान लोग पहाड़ी उपदेश की बातों को सच मान लेते हैं और उनके आधार पर निर्माण करते हैं। मूर्ख लोग इन बातों से परिचित तो होते हैं, लेकिन उन्हें अनदेखा कर देते हैं।

कुछ लोग इस उपदेश को लागू करने से बचते हैं। वे कहते हैं, "यह शिक्षा यहूदियों के लिए है और कलीसिया के लिए नहीं है"; या "पूर्णता (सिद्धता) की यह सलाह अव्यावहारिक है"; या "यह केवल मसीह के भविष्य के राज्य के लिए नियम है।"

दूसरों को यह पहाड़ी उपदेश कई कारणों से अप्रिय लगता है। यह डरपोक लोगों के लिए बहुत ज़्यादा टकरावपूर्ण है। यह आत्म-भोगी लोगों के लिए बहुत ज़्यादा कठोर आत्म-त्याग की मांग करता है। इसके धन्य वचन मानव स्वभाव को उजागर करते हैं। इसके प्रेम का नियम प्रतिशोध, प्रतिद्वंद्विता और कानूनी तरीकों से गलत कामों के निवारण के विरूद्ध है। इसका कष्टों से भरा मार्ग, जिसे विनम्रतापूर्वक सहन किया जाना है, केवल क्रूस की ओर इशारा करता है। इसकी अपरंपरागतता हमारे अभिमान की जड़ों पर प्रहार करती है।

पहाड़ी उपदेश मसीह की शिक्षाओं का सबसे बड़ा संग्रह है जिसे पवित्रशास्त्र में यथाक्रम दर्ज किया गया है। पवित्र आत्मा द्वारा हमारे लिए ये बातें सुरक्षित रखी गई हैं (यूहन्ना 14:26) ताकि उनका पालन किया जा सके (मत्ती 28:19-20)। संदेश का सार पत्रियों में दोहराया गया है। हम याकूब 5:12 में शपथ लेने का निषेध, 1 कुरिन्थियों 6:7 में पलटा न लेने, रोमियों 12:20 में शत्रुओं के प्रति प्रेम, 2 कुरिन्थियों 6:5 में उपवास, याकूब 2:13 में क्षमा न करने वाली आत्मा का खतरा, याकूब 5:1 में धन का त्याग, और 1 थिस्सलुनीकियों 2:12 में राज्य की खोज करने की आज्ञा पाते हैं।

मसीह के ये कथन वह चट्टान हैं जिस पर हमें अपने घर को निर्मित करना है। जब परीक्षा आएगी, तो नींव ही सब कुछ होगी।

मनुष्यों की बातें बालू की नींव के समान हैं जिस पर मूर्ख लोग अपना घर निर्मित करते हैं। पूर्वी रहस्यवादियों के दर्शनशास्त्र और रोमी के सिद्धांत कई लोगों को आकर्षित करते हैं। मॉर्मनवाद, मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान, मानवतावाद, डार्विनवाद या मार्क्सवाद के सिद्धांत दूसरों को आकर्षित करते हैं। बालू पर निर्माण करने वाले कुछ लोग महान और ईमानदार होते हैं, और उनकी धार्मिक और दार्शनिक संरचनाएँ सुंदर लगती हैं - उनकी इमारतें और कार्य अक्सर कई कलीसियाओं की तुलना में अधिक आकर्षक होते हैं। लेकिन जब तूफान आते हैं, तो मसीह की इन बातों पर आधारित नहीं होने वाले सभी सिद्धांत और व्यवहार गिर जाएँगे। हमारे पास इसके लिए उसका वचन है। और उसका गिरना बहुत बड़ा होगा। केवल वे संरचनाएँ ही खड़ी रहेंगी जो चट्टान पर टिकी हैं।

ख. भीड़ का आश्चर्य (7:28-29)

लोगों ने पहले कभी इस प्रकार का पहाड़ी उपदेश जैसा कुछ नहीं सुना था। उनके रब्बियों ने व्यवस्था की थकाऊ, अक्सर झूठी और अक्सर तुच्छ व्याख्याएँ दीं थी।

रब्बी लगातार इस या उस शिक्षक द्वारा कही गई बातों का उल्लेख करते थे। मसीह के दिनों में ही "प्राचीनों (पितरों) की परंपरा" ने शास्त्र से भी अधिक अधिकार ग्रहण कर लिया था। यहूदी दृष्टिकोण के अनुसार, परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर मूसा को लिखित व्यवस्था और मौखिक व्यवस्था दोनों दिए थे। इब्रानी शिक्षकों ने निर्गमन 20:1 से अनुमान लगाया कि बाइबल के साथ-साथ परमेश्वर ने मिशना, तल्मूड और हग्गदा को

भी दिया था "यहाँ तक कि विद्वान नवीनतम समय में भी इसे प्रस्तुत करते हैं।"[14] रूढीवादियों ने इस मौखिक व्यवस्था को लिखित व्यवस्था से ऊपर रखा।

रब्बियों के पास पवित्रशास्त्र की कोई प्रणाली नहीं थी - केवल परमेश्वर, स्वर्गदूतों, दुष्टात्माओं, मनुष्य, उसके भविष्य की नियति, उसकी वर्तमान स्थिति, इस्राएल के पिछले इतिहास और उसके आने वाले गौरव के बारे में विचारों, अनुमानों और कल्पनाओं का संग्रह था। जो महान और शुद्ध था, उसके साथ-साथ रब्बियों ने असंगत, परस्पर विरोधी बयानों और अपमानजनक अंधविश्वासों का ढेर लगा दिया।[15] रब्बी परंपराओं द्वारा परमेश्वर की व्यवस्था को निरर्थक बना दिया गया था, और व्यवस्था की भावना अध्यादेशों और अनुष्ठानों के बाहरी बोझ के नीचे कुचल दी गई थी। यहूदी धर्म अब पुराने नियम का शुद्ध धर्म नहीं रह गया था। आम लोग परंपरा से पीड़ित और भ्रमित हो चुके थे।

तब यीशु आता है, और उसके पहाड़ी उपदेश ने रब्बी परंपरा के सभी जालों को उड़ा दिया। उसने जीवित परमेश्वर के अधिकार के साथ बात की, और लोग उसकी शिक्षाओं की तुलना शास्त्रियों की शिक्षाओं से करने से खुद को नहीं रोक पाए। आराधनालयों में सुनी गई बड़बड़ाहटें नए आए राजा की स्पष्ट मांगों से तुलना नहीं कर पा रही थीं।

खंड 3

राजा की सामर्थ्य (8:1-9:38)

1. निराशा पर सामर्थ्य (8:1-4)

    1. भीड़ (8:1)
    2. मनुष्य (8:2)
        1. कोढ़ियों की स्थिति
        2. कोढ़ी का आना
        3. कोढ़ी का आत्मविश्वास
    3. स्वामी (8:3)
        1. उसने कोढ़ी को छुआ
        2. उसने कोढ़ी को बदल दिया
    4. अनिवार्य आदेश (8:4)
        1. "किसी से न कहना" की गवाही (8:4a)
        2. एक "नए चाल-चलन" की गवाही (8:4b-c)
            1. मंदिर के याजकों के लिए प्रकाशन (8:4b)
            2. तोरह के उपदेशों के प्रति सम्मान (8:4c)

2. दूरी पर अधिकार (8:5-13)

    1. एक प्रतिष्ठित रोमी (8:5-7)
        1. स्थान (8:5)
        2. निवेदन (8:6)
        3. प्रतिज्ञा (8:7)
    2. एक प्रतिष्ठित अनुरोध (8:8-9)
        1. एक अंगीकार (8:8)
            1. असामान्य भावना (8:8a)
            2. असाधारण विश्वास (8:8b)
        2. एक तुलना (8:9)
    3. एक उल्लेखनीय प्रतिक्रिया (8:10-12)
        1. सूबेदार के विश्वास पर अचम्भा (8:10)
        2. सूबेदार के विश्वास का संदेश (8:11-12)

        प्रभु ने पहले ही जान लिया था कि:
            1. अन्यजातीय लोग भी आनंदपूर्वक सत्य को स्वीकार करेंगे (8:11)
            2. यहूदियों ने सत्य को अस्वीकार कर दिया (8:12)
    4. एक स्वाभाविक जवाब (8:13)
        1. चंगाई का वादा (8:13a)

2. चंगाई का प्रदर्शन (8:13b)

3. बीमारी पर अधिकार (8:14-17)

1. पतरस का घर (8:14-15)
    1. जानलेवा बीमारी (8:14)
    2. गतिशील उद्धारकर्ता (8:15a)
    3. समर्पित सेवक (8:15b)
2. लोग चंगे हुए (8:16)
    1. सब प्रकार की आत्माओं पर अधिकार (8:16a)
    2. हर तरह की बीमारी पर अधिकार (8:16b)
3. भविष्यद्वाणी का ध्यान रखा गया (8:17)
    1. भविष्यद्वाणी कहाँ पाई जाती है (8:17a)
    2. जब भविष्यद्वाणी पूरी हुई (8:17b)

4. विपत्ति पर अधिकार (8:18-27)

1. तैयार मंच (8:18)
    1. एक कदम उठाने का कारण (8:18a)
    2. कदम उठाने का आदेश (8:18b)
2. शास्त्री (8:19-22)
    1. व्यक्त किया गया वादा (8:19)
    2. कीमत का विवरण (8:20a)
    3. सिद्धान्त का उदाहरण (8:20b-22)
        1. सर्वोच्च उदाहरण (8:20b-c)
            1. वह नियम जिसे प्रभु ने स्वीकार किया (8:20b)
            2. प्रभु द्वारा अपनाई गई भूमिका (8:20c)
        2. दूसरा उदाहरण (8:21-22)
            1. प्रतिद्वन्द्वी निष्ठा का प्रश्न उठाया गया (8:21)
            2. प्रतिद्वन्द्वी निष्ठा का प्रश्न अस्वीकार किया गया (8:22)
3. तूफ़ान (8:23-27)
    1. तूफ़ान उठता है (8:23-24)
        1. तूफ़ान का आना (8:23-24a)
        2. उद्धारकर्ता के द्वारा शांति (8:24b)
    2. तूफ़ान को शांत किया गया (8:25-27)
        1. प्रभु ने संकट में पड़े चुने हुओं को कैसे डांटा (8:25-26a)
            1. उनका डर समझ में आने वाला है (8:25)
            2. उनका अविकसित विश्वास (8:26a)

2. प्रभु ने तूफानी तत्वों को कैसे डांटा (8:26b-27)
1. महान शांति (8:26b)
2. एक बेहतरीन टिप्पणी (8:27)

5. दुष्टात्माओं पर अधिकार (8:28-34)

1. खतरा (8:28)
2. दुष्टात्माएँ (8:29-32)
1. उनकी दुर्दशा (8:29)
2. उनकी विनती (8:30-32)
1. एक महत्वपूर्ण अनुरोध (8:30-31)
2. एक चौंकाने वाला परिणाम (8:32)
3. प्रस्थान (8:33-34)
1. एक जबरदस्त कहानी सुनाई गई (8:33)
2. एक दुखद कदम उठाया गया (8:34)

6. कठिनाई पर अधिकार(9:1-8)

1. मामला (9:1-2)
1. स्थान (9:1)
2. लकवे का रोगी (9:2a-b)
1. उसके मित्र (9:2a)
2. उसका विश्वास (9:2b)
3. क्षमा (9:2c)
2. टिप्पणी (9:3-5)
1. यीशु ने क्या देखा (9:3-4a)
2. यीशु ने क्या कहा (9:4b-5)
1. एक निजी सवाल (9:4b)
2. एक व्यावहारिक प्रश्न (9:5)
3. उपचार (9:6-7)
1. पाप को मिटाने की प्रभु की सामर्थ्य (9:6a)
2. बीमारी को ठीक करने की प्रभु की सामर्थ्य (9:6b-7)
4. भीड़ (9:8)

7. तिरस्कार पर सामर्थ्य (9:9-17)

1. सामाजिक तिरस्कार (9:9-13)
1. चुंगी लेनेवाला और उसका अतिथि-सत्कार (9:9-10)
1. मत्ती—स्वेच्छा से बना एक चेला (9:9)
1. उसका संदेहास्पद व्यवसाय (9:9a)

2. उसकी हर्षित आज्ञाकारिता (9:9b)

2. मत्ती—बुद्धिमान चेला (9:10)

1. प्रभु के प्रति उसका प्रेम (9:10a)

2. खोए हुओं के प्रति उसका प्रेम (9:10b)

2. फरीसी और उनका पाखंड (9:11-13)

1. पूछा गया प्रश्न (9:11)

1. उन्होंने जिससे पूछा (9:11a)

2. उन्होंने क्या पूछा (9:11b)

2. प्रश्न का उत्तर (9:12-13)

1. चित्रण द्वारा (9:12)

2. प्रेरणा द्वारा (9:13a)

3. निहितार्थ से (9:13b)

2. आत्मिक तिरस्कार (9:14-17)

1. निहितार्थ प्रकट किया गया (9:14)

2. निहितार्थ का खंडन (9:15-17)

इसका प्रकाशन:

1. आने वाला युग परिवर्तन (9:15)

1. दूल्हा अपने लोगों के साथ अपने को प्रस्तुत करता है (9:15a)

2. दूल्हा अपने लोगों से अलग किया गया (9:15b)

2. एक सम्पूर्ण युग परिवर्तन (9:16-17)

प्रभु इसलिए आया:

1. कि पुराने वस्त्र पर पैबंद न लगाए—यहूदी धर्म (9:16)

2. बल्कि नया दाखरस उंडेला जाए—मसीही धर्म (9:17)

1. वचन के लिए नई जीवन सामर्थ्य प्रदान की जानी चाहिए (9:17a)

2. दाखरस के लिए एक नया पात्र तैयार किया जाएगा (9:17b)

8. मृत्यु पर अधिकार (9:18-26)

1. प्रभु का आदर कैसे किया गया (9:18-22)

1. एक साहसी व्यक्ति (9:18-19)

1. याईर का दृष्टिकोण (9:18a)

2. याईर की याचना (9:18b-19)

1. गहरा निवेदन (9:18b)

2. तत्काल प्रतिक्रिया (9:19)

2. एक हताश स्त्री (9:20-22)

1. स्त्री क्या चाहती थी (9:20-21)
    1. उसकी हालत (9:20a)
    2. उसका आत्मविश्वास (9:20b-21)
2. यीशु ने क्या सिखाया (9:22)
    1. अपने प्रभु से एक रिश्ता (9:22a)
    2. उसके जीवन के लिए प्रतिफल (9:22b)

2. प्रभु का ठट्ठा कैसे उड़ाया गया (9:23-25)
    1. एक भ्रमित भीड़ (9:23)
    2. गतिशील मसीह (9:24)
    3. मृत बालिका (9:25)
3. प्रभु को महिमा कैसे मिली (9:26)

9. संदेह पर सामर्थ्य (9:27-31)

1. दो अंधे लोग (9:27)
    1. उनकी दोहाई का बोझ (9:27a)
    2. उनकी दोहाई का आधार (9:27b)
2. दो विश्वास करने वाले पुरुष (9:28-30a)

हम देखते हैं:

    1. यीशु ने उनकी परीक्षा ली (9:28a)
    2. उनका यीशु पर भरोसा करना (9:28b)
    3. यीशु का उन्हें छूना (9:29-30a)
3. दो आशीषित लोग (9:30b-31)
    1. उसके वचन द्वारा उनका परिवर्तन (9:30b)
    2. उनके द्वारा उसके वचन का उल्लंघन (9:31)

10. गूंगेपन पर अधिकार(9:32-34)

1. मामला (9:32a)
2. कारण (9:32b)
3. उपचार (9:33)
    1. छुटकारा (9:33a)
    2. परिणाम (9:33b)
    3. प्रतिक्रिया (9:33c)
4. दावा (9:34)
    1. वह कौन था जिसने बात की (9:34a)
    2. उन्होंने क्या कहा (9:34b)

11. अविश्वास पर अधिकार(9:35-38)

1. मसीह का आदेश (9:35)
    1. वह जहाँ गया (9:35a)
    2. वह क्यों गया (9:35b-c)
        1. सबको सिखाने के लिए (9:35b)
        2. ताकि हर किसी तक पहुँचना (9:35c)
2. मसीह का तरस (9:36)

वे इससे बहुत प्रभावित हुए:

1. मनुष्य जाति की भीड़ (9:36a)
2. मनुष्य जाति का दुःख (9:36b-c)
    1. कोई वास्तविक लक्ष्य नहीं (9:36b)
    2. कोई वास्तविक मार्गदर्शक नहीं (9:36c)

3. मसीह की विवशता (9:37-38)
    1. समस्या (9:37)
    2. प्रार्थना (9:38)

उपदेश समाप्त हो चुका था। चकित भीड़ तितर-बितर हो गई और भयभीत चेले अपने राजकीय गुरु के साथ पहाड़ से नीचे झील की ओर चले गए। हर कोई उसकी नई आधिकारिक शिक्षा को समझ पा रहा था। प्रेम का इतना क्रांतिकारी संदेश देने वाला यह व्यक्ति आखिर कौन हो सकता है? क्या वह वास्तव में इस्राएल का वादा किया गया राजा हो सकता है? यूहन्ना बपतिस्मादाता ने उसे ऐसा घोषित भी किया था। फिर भी अगर वह राजा था, तो उसकी सामर्थ्य कहाँ थी? वचन बहुत अच्छे थे - और उसके वचन सुंदर, अद्भुत थे। लेकिन इस्राएल को केवल अधिकार के साथ बोलने वाले की ज़रूरत नहीं थी; इस्राएल को ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत थी जो सामर्थ्य के साथ काम करे।

यहूदियों के मन में संदेह बना रहा, इसलिए मत्ती ने अपने सुसमाचार के इस भाग में प्रभु द्वारा किए गए सामर्थ्यशाली चमत्कारों की एक श्रृंखला को एक साथ रखा – उसकी राजकीय सामर्थ्य का दृश्यमान, अचूक प्रमाण। सच है, इस राजा ने रोम की सामर्थ्य को उखाड़ नहीं फेंका। इसके बजाय उसने नरक की सेनाओं को उखाड़ फेंका। मत्ती यहूदियों के सामने यीशु के मसीहा होने को बनाए रखने के अपने लक्ष्य के प्रति सच्चा था जब उसने प्रभु की सामर्थ्य के विभिन्न पहलुओं के प्रदर्शनों को दर्ज किया।

I. निराशा पर सामर्थ्य (8:1-4)

क. भीड़ (8:1)

मत्ती ने लिखा कि "एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।" वे पहले रब्बियों का अनुसरण कर रहे थे। इनमें से कुछ गुरुओं ने शम्माई की कठोर, रूढीवादी शिक्षाओं को अपनाया था और अन्य ने हिलेल की उदार शिक्षाओं को अपनाया था। रब्बियों ने यहूदियों को बताया कि तोरह वास्तव में सृष्टि से भी दो हज़ार साल

पहले स्वर्ग में मौजूद था; कि कुलपिता (अब्राहम, इसहाक और याकूb) सभी व्यवस्थाओं को जानते थे और उनका पालन करते थे; कि यहूदी परंपरावाद की उत्पत्ति व्यवस्था के समान ही हुआ था।

रब्बियों ने लोगों को सिखा रखा था कि परमेश्वर ने अन्यजातीय राष्ट्रों को भी व्यवस्था का प्रस्ताव दिया था; लेकिन उन्होंने इसका तिरस्कार किया था; और अगर वे पश्चाताप भी करते हैं, तो वे केवल खुद को पाखंडी साबित करेंगे। जहाँ तक इस्राएल का सवाल है, यहूदियों को बताया गया कि भले ही उनके अच्छे कर्म कम हों, लेकिन सभी इस्राएलियों के अच्छे कर्मों का कुल योग बहुत बड़ा होगा। जहाँ तक इस्राएल के पापों का सवाल है, परमेश्वर उसी तरह से उनसे निबटेगा जिस तरह से एक व्यक्ति अपने दोस्तों से अपने ऋण वसूलता है - एक बार में थोड़ा-थोड़ा करके। रब्बियों की शिक्षा इसी प्रकार की थी।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हम पढ़ते हैं कि पहाड़ी उपदेश के बाद, भीड़ प्रभु के पीछे चलने लगी। वे और अधिक सुनना चाहते थे। उन्होंने रब्बियों की शिक्षाओं के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। रब्बियों के पास आराधनालय थे, लेकिन यीशु के पास भीड़ थी। जो भी हो, यह एक अच्छी शुरुआत थी।

ख. मनुष्य (8:2)

भीड़ एक बहुत ही उल्लेखनीय संदेश सुनने के लिए एकत्रित हुई थी। अब वे एक बहुत ही उल्लेखनीय चमत्कार देखने के लिए इकट्ठे हुए थे। एक कोढ़ी यीशु के पास आया और उसने देखा कि प्रभु ने उस व्यक्ति की निराशा पर अपनी सामर्थ्य का प्रदर्शन किया।

1. कोढ़ियों की स्थिति

यहूदियों में कुष्ठ रोग को परमेश्वर का प्रकोप माना जाता था, और यह बिना किसी कारण के नहीं था। मिरियम, गेहजी और उज्जियाह के मामलों ने इस दृष्टिकोण को बल दिया था। कुष्ठ रोग लाइलाज था, और मृत्यु में जाकर समाप्त होता था। यह बीमारी छोटे रूप में शुरू होती थी, लेकिन लगातार फैलती जाती, और जिस किसी चीज़ को छूती थी, उसमें संक्रमण पैदा कर देती थी। पीड़ित लोगों को बहिष्कृत कर दिया जाता था, वे दुनिया के लिए कलंक थे। ऐसा ही एक व्यक्ति अब यीशु के पास आया।

यीशु एक कोढ़ी के लिए क्या कर सकता था? वह व्यक्ति एक भयानक, घिनौनी बीमारी की गिरफ़्त में था जिसने उसे सभी लोगों से अलग कर दिया था, उसे समाज से बाहर कर दिया गया था, और परमेश्वर की वेदियों के पास जाने की सारी उम्मीदें छीन लीं गई थी। शास्त्रियों और फरीसियों के पास उसे देने के लिए कुछ भी नहीं था। याजक और लेवी उसके लिए कुछ नहीं कर सकते थे। न ही रब्बी और कोई शासक। महासभा और आराधनालय उसके साथ कोई संबंध नहीं रखना चाहते थे। मंदिर में उसका प्रवेश मना था और व्यवस्था प्रणाली उसके विरूद्ध थी।

उस व्यक्ति की बीमारी ने मनुष्य जीवन में पाप की भयानकता को दर्शाया। कुष्ठ रोग पाप की घिनौनी पकड़ का प्रतीक था, और यहाँ प्रभु सर्वोच्च, पवित्रतम और सबसे स्वर्गीय प्रकार के जीवन के पक्ष में बता रहा था। अब यीशु उसके लिए क्या कर सकता था? कोढ़ी को पहाड़ी के उपदेश के नियमों की आवश्यकता नहीं थी। उसे शुद्धिकरण की आवश्यकता थी, और वह इसे जानता था।

2. कोढ़ी का आना

शायद कोढ़ी दूर खड़ा था, और नई शिक्षा के एक या दो वाक्यों को सुनने के लिए अपने कानों पर जोर दे रहा था। (इस इलाके में एक शानदार ध्वनि-संचालन गुण मौजूद हैं।) शायद उसने यीशु को यह कहते हुए सुना था, "तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है...बुरे और अच्छे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है" (5:45)। शायद उसने यीशु को शत्रुओं से भी प्रेम की मांग करते हुए सुना था। शायद उसने यीशु को यह कहते हुए सुना था, "यदि तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने माँगने वालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा?" (7:11) शायद उसने यीशु को यह कहते हुए सुना था, "जो तुझ से माँगे, उसे दे.... अपना मुँह मत मोड़" (5:42)। शायद उसने यीशु को यह कहते हुए सुना था, "माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा" (7:7)। शायद उसने यीशु को यह कहते सुना था, "जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा..." (7:24)।

शायद उस कोढ़ी ने मन में खुद से कहा होगा, "मैं ऐसा करूँगा! मैं उन वचनों को परखूँगा। मैं उसके पास जाऊँगा और देखूँगा कि क्या वह भी, बाकी सभी की तरह, मुझे बाहर निकाल देगा। वह अधिकार के साथ बोलता है, शास्त्रियों की तरह नहीं। मैं अपना मामला उसके हाथों में दे दूँगा।"

निस्संदेह भीड़ ने उसे आते देखा था। उन्होंने कोढ़ी को अपने होंठ ढँकते हुए देखा और उसकी भयानक चीख सुनी, "अशुद्ध! अशुद्ध!" इस बात से क्रोधित कि व्यवस्था द्वारा पृथक किया गया कोई व्यक्ति उनके पास आने की हिम्मत कैसे कर सकता है, और अपनी सुरक्षा के लिए चिंतित होकर, लोग तितर-बितर हो गए होंगे, जिससे एक बड़ी सी जगह बन गई जिसके द्वारा वह दुखी व्यक्ति यीशु के पास जाने के अपने निर्धारित मार्ग पर आगे बढ़ सकता था।

उस व्यक्ति ने उस व्यवस्था की अवहेलना की जिसने उसे रोका था, वह यीशु के पास आया। और आश्चर्य की बात यह है कि प्रभु ने उसे भगाया नहीं और न ही उसे जाने का आदेश दिया। इससे पहले, कई दिनों तक केवल साथी कोढ़ियों ने ही उसे अपने पास आने दिया था। और इसलिए यीशु के पास आकर उसने उसे प्रणाम किया।

3. कोढ़ी का आत्मविश्वास

अद्भुत विश्वास और अंतर्दृष्टि के साथ कोढ़ी ने अपनी निराशाजनक स्थिति यीशु के सामने रखी। उसने “हे प्रभु” कहते हुए उसकी आराधना की। (यह पहली बार है जब यीशु को प्रभु पुकारा गया।) शायद उस व्यक्ति ने यीशु को उन लोगों के बारे में बात करते हुए सुना था जो कहते थे, "प्रभु, प्रभु," लेकिन जो उसने कहा था वह नहीं करते थे (लूका 6:46); वह उनके जैसा नहीं बनने वाला था। यदि वह उसे दूर भेज देता, तो वह चला जाता।

चूँकि उसने उसे आने की अनुमति दी थी, इसलिए कोढ़ी ने कहा, "हे प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है" (मत्ती 8:2)। उस व्यक्ति ने यह नहीं कहा, "यदि तू कर सकता है, तो क्या तू मुझे शुद्ध करेगा?" उसने कहा, "यदि तू चाहे तो कर सकता है।"

कोढ़ी ने एक असंभव मांग की: "मुझे शुद्ध कर"! उसने स्वीकार किया कि वह कितनी बुरी तरह से अशुद्ध था - पूरी तरह से, शब्दों के वर्णन से परे घृणित - और इसलिए प्रार्थना की, "मुझे शुद्ध कर।"

ग. स्वामी (8:3)

1. उसने कोढ़ी को छुआ

फिर यीशु ने एक बहुत ही प्रेमभरा काम किया, ऐसा काम जो दुनिया की सारी दौलत के बावजूद कोई भी शास्त्री या रब्बी नहीं करता। उसने अपना हाथ बढाकर उस कोढ़ी को छुआ। कोढ़ी बनने के बाद से किसी भी साफ-सुथरे आदमी, औरत, लड़के या लड़की ने उस आदमी को कभी नहीं छुआ था, क्योंकि उसे छूने का अर्थ खुद अशुद्ध होना था। अगर वह बहुत करीब आता, तो लोग उसे पत्थर मारते। लेकिन यीशु ने एक अवर्णनीय तरस के कार्य के रूप में उसे छुआ। यह उसके अद्‌भुत अनुग्रह का प्रदर्शन था। यहाँ सुनहरे नियम को क्रियान्वित किया गया।

2. उसने कोढ़ी को बदल दिया

यीशु ने कहा, "मैं चाहता हूँ; कि तू शुद्ध हो जा।" ऐसा बोलते हुए, उसने दावा किया कि वह पूर्णतः और सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर है। हमारे वचन सबसे उत्तम रूप में ज्यादा से ज्यादा वैधानिक होते हैं। हम आदेश दे सकते हैं और आज्ञा दे सकते हैं, लेकिन हम उन्हें तात्कालिक परिणामों में नहीं बदल सकते। प्रभु के वचन न केवल वैधानिक हैं; बल्कि वे कार्यकारी भी हैं। वह बोलता है और यह हो जाता है। सृष्टि के प्रारंभ में उसने कहा, "उजियाला हो!" और उजियाला हो गया। उसने जल से कहा, "इसमें बहुत से जीव-जंतु हो जाएँ," और असंख्य रूप में जीवन सात समुद्रों में उमड़ पड़ा (उत्पत्ति 1:3, 20)।

अब "वचन देहधारी हुआ" (यूहन्ना 1:14) और उसने कोढ़ी से कहा, "शुद्ध हो जा।" मत्ती, जो चमत्कार के समय वहाँ मौजूद था, ने लिखा, "और वह तुरंत कोढ़ से शुद्ध हो गया" (8:3)। असाधारण! अद्‌भुत! लोगों ने पहले कभी ऐसा नहीं देखा था।

घ. अनिवार्य आदेश (8:4)

1. “किसी से न कहना” की गवाही (8:4a)

सबसे पहले यीशु ने उस चंगे हुए कोढ़ी को चुप रहने का आदेश दिया। प्रभु चाहता था कि उसके शुद्ध जीवन का प्रमाण ही सब कुछ बोले।

2. एक “नए चाल-चलन” की गवाही (8:4b-c)

क. मंदिर के याजकों के लिए एक प्रकाशन (8:4b)

तब यीशु ने शुद्ध किए गए कोढ़ी को याजकों के पास भेजा और उससे कहा कि "जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा, ताकि उन के लिये गवाही हो।"

हम कल्पना कर सकते हैं कि उन याजकों में से एक उस रात अपने घर लौटकर अपनी पत्नी से कहता है: "आज मेरे साथ कुछ ऐसा हुआ जो जहाँ तक मैं जानता हूँ, इतिहास में पहले सिर्फ़ एक बार हुआ है। एक आदमी मेरे पास दो जीवित पक्षी, देवदारू की लकड़ी का एक टुकड़ा, जूफा का एक गुच्छा और लाल रंग का कपड़ा लेकर आया और घोषणा की कि वह अपने कोढ़ से शुद्ध हो चुका है। और निश्चित रूप से, वह

कोढ़ी पूरी तरह से शुद्ध था। उसने बताया कि वह नासरत के यीशु द्वारा चंगा किया गया था। मूसा के दिनों के बाद से किसी शुद्ध कोढ़ी ने खुद को याजक के सामने इस तरह पेश नहीं किया है।"

ख. तोरह के उपदेशों के प्रति सम्मान (8:4c)

कोढ़ी को शुद्ध करने की रीति बहुत ही विस्तृत और लंबा था, जिसमें आठ दिन लगते थे (लैव्यव्यवस्था 14:1-32)। लकड़ी जंगल के सबसे ऊंचे, सबसे अहंकारी पेड़, देवदारू की होनी थी - जो घमंड को खत्म करने की बात करता है। जूफा सबसे नीची झाड़ी थी - क्योंकि अगर घमंड पाप की जड़ है, तो विनम्रता इसके उपचार का मूल है। लाल रंग ने संकेत दिया कि पाप एक भयावह मामला है और सबसे गहरे रंग का है। याजक ने लकड़ी, जूफा, लाल रंग का कपड़ा और दो जीवित पक्षियों को लिया और उन सभी को जीवित, बहते पानी में डुबो दिया। पानी परमेश्वर के वचन का प्रतीक था, वह माध्यम जिसका इस्तेमाल परमेश्वर हमें यह दिखाने के लिए करता है कि हमारी स्थिति कितनी निराशाजनक है और इलाज कितना महत्वपूर्ण है।[1]

फिर एक पक्षी को बहते जल के ऊपर बलि चढ़ाया जाता है, जो पवित्रशास्त्रों के अनुसार मसीह की मृत्यु का प्रतीक था। दूसरे पक्षी को मृत पक्षी के खून में डुबोया जाता था - उसकी इसके साथ पहचान कराने के लिए। जीवित पक्षी के साथ, देवदारू, जूफा और लाल रंग के कपडे को भी खून में डुबोया जाता था - यह दिखाने के लिए कि प्रभु यीशु के बहाए गए लहू के अलावा किसी भी रूप में पाप को दूर नहीं किया जा सकता है। शुद्ध किए गए कोढ़ी पर लहू को सात बार छिड़का जाता था - उसे बलिदान की पूर्णता के बारे में आश्वस्त करने के लिए और उसे भी बहाए गए लहू के साथ पहचान कराने के लिए, जिसके बिना उसे परमेश्वर के सामने कोई स्वीकृति नहीं मिल सकती थी। फिर जीवित पक्षी को स्वर्ग की ओर उड़ने के लिए छोड़ दिया जाता था, जो प्रभु के पुनरुत्थान और स्वर्ग में वापस लौटने का प्रतीक था।

इसके बाद शुद्ध किए गए कोढ़ी को अपने कपड़े धोने पड़ते थे, ताकि वह कोढ़ी के रूप में अपनी पिछली जीवनशैली की अशुद्धता से शुद्ध हो जाए और अपने पुराने जीवन से बची हुई किसी भी चीज़ को हटा दे जो दूसरों को अशुद्ध कर सकती थी। उसे अपने सारे बाल भी मुंडवाने पड़ते थे, जो शरीर के सक्रिय विकास और स्वाभाविक महिमा का संकेत था। कोढ़ी को शुद्ध घोषित कर दिया गया, लेकिन सात दिनों तक विशेष सावधानी के तौर पर उसे अपने तंबू के बाहर रहना पड़ता , हालाँकि वह छावनी के अंदर रह सकता था। यह पद हमें याद दिलाता है कि पाप कितना खतरनाक है और हम यह सुनिश्चित करने के प्रति इतने सावधान रहे कि एक नया मन-परिवर्तित व्यक्ति वास्तव में पूरी तरह से शुद्ध हो, इससे पहले कि हम उसे परमेश्वर के लोगों की संगति में पूरी तरह से स्वीकार करें।

आठवें दिन (पुनरुत्थान के दिन) यदि व्यक्ति की शुद्धिकरण की प्रक्रिया पूरी तरह से स्थापित हो गई थी, तो रीति का शेष भाग पूरा किया जाता था। अब एक बहुत बड़े बलिदान की अपेक्षा की जाती थी, क्योंकि परमेश्वर उन लोगों में तेजी से उन्नति की उम्मीद करता है जिन्हें उसने शुद्ध किया है, और इस परिपक्व समझ की भी कि कलवरी का कितना महत्व है।

चंगे हुए कोढ़ी को याजक के पास दो निर्दोष मेमने, एक भेड़ का बच्चा, तेल मिला हुआ थोड़ा सा मैदा और लगभग एक लोज भर तेल लाना होता था। सबसे पहले दोष बलि चढ़ाई जाती थी और फिर उसके बाद पाप बलि चढ़ाई जाती थी।

दोष-बलि का सम्बन्ध पाप के अभ्यास से था, और पाप-बलि का सम्बन्ध पाप के सिद्धांत से था। इसी तरह कलवरी इस बात का ध्यान रखती है कि मैं क्या करता हूँ और वास्तव में मैं क्या हूँ। याजक को इन दोनों बलिदानों को अपने उपयोग के लिए रखने का अधिकार था, जब वे बलि चढ़ा दी जाती थीं और उन्हें "सबसे पवित्र" घोषित कर दिया जाता था (लैव्यव्यवस्था 14:13)। चूँकि परमेश्वर ने बलिदान को पूरी तरह से ग्रहण कर लिया था, इसलिए याजक शुद्ध किए गए बलिदान को पूरी तरह से स्वीकार कर सकता था।

जब याजक दोष-बलि के जानवर को बलि करता, तो उसे जानवर के लहू में से कुछ लाकर उसे शुद्ध किए गए कोढ़ी के दाहिने कान, दाहिने अंगूठे और दाहिने पैर के अंगूठे पर लगाना होता था, ताकि यह उसे व्यवहार में एक बदलाव का प्रतीक हो। अब से उस व्यक्ति को शुद्ध कान से सुनना होगा कि परमेश्वर क्या कहना चाहता है, अपने सभी कार्यों में शुद्ध हाथ रखना होगा, और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले स्वच्छ मार्गों पर चलना होगा। कोई भी व्यक्ति बिना सहायता के ऐसा नहीं कर सकता, इसलिए याजक ने फिर तेल लिया और उस व्यक्ति के कान, अंगूठे और पैर के अंगूठे का अभिषेक किया, ताकि इस तथ्य का संकेत था कि पवित्र आत्मा के द्वारा ही एक नया जीवन संभव हो सकता है। लेकिन यही पर्याप्त नहीं था। याजक बाकी बचे तेल को उस व्यक्ति के सिर पर डालता था, ताकि मसीह जैसा जीवन जीने के लिए पवित्र आत्मा के उंडेले जाने और पूर्ण अभिषेक पर उसकी पूरी निर्भरता का प्रतीक हो। (सिर मसीह का प्रतीक था।)

चूँकि एक पापी आमतौर पर पहले अपनी की गई गलती की गंभीरता को समझता है और बाद में अपने बारे में सच्चाई को महसूस करता है, इसलिए दोषबलि पहले आती है और पापबलि बाद में। याजक ने पापबलि के लिए एक और मेमना को मारा और उसके बाद शुद्ध कोढ़ी के आगे के निर्देश के लिए अन्नबलि (आटा) और होमबलि (तीसरा मेमना) चढ़ाया। अन्नबलि मसीह के निर्दोष जीवन को दर्शाती है। वहीं होमबलि उसकी मृत्यु की बात करती थी। अंतिम बलिदान के बाद, शुद्ध कोढ़ी अब परमेश्वर के लोगों की पूर्ण संगति में शामिल होने के लिए तैयार था।

यह संपूर्ण रीति मत्ती 8:4 में प्रभु द्वारा कोढ़ी को कहे गए इस निर्देश में निहित थी: "जाकर अपने आप को याजक को दिखला और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा, ताकि उन के लिये गवाही हो।" यह एक ऐसे व्यक्ति की क्या ही शानदार गवाही थी जो पवित्र आत्मा द्वारा शुद्ध और ऊर्जावान होकर यीशु के समान जीवन जीने लगा - जो अब पहाड़ी उपदेश में बताए गए जीवन को जीने लगा!

II. दूरी पर अधिकार (8:5-13)

प्रभु ने इसके बाद दूरी पर अपनी सामर्थ्य को प्रदर्शित किया। अपने उद्देश्यों को पूरा करने या अपने प्रभाव और सामर्थ्य का प्रयोग करने के लिए उसे शारीरिक रूप से उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं है। यह सत्य अब हमारे लिए बहुत उत्साहवर्धक होना चाहिए क्योंकि वह अब स्वर्ग चला गया है। उसके लिए दूरी का कोई मतलब नहीं है; वह यहाँ भी हो सकता है और वहाँ भी।

क. एक प्रतिष्ठित रोमी (8:5-7)

अब हम एक अलग तरह के बहिष्कृत व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं—यह कोई कोढ़ी नहीं, बल्कि एक अन्यजाति, एक रोमी सूबेदार है। जहाँ तक यहूदियों के बहुमत का सवाल है, वह उस कोढ़ी के समान ही

था, क्योंकि वे उसके साथ भी राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक रूप से सब कुछ करना चाहते थे। कोढ़ी छावनी के बाहर था; जबकि सूबेदार वाचा के बाहर था। प्रभु ने दोनों को प्रत्युत्तर दिया।

हम रोमी से कफरनहूम में मिलते हैं, जहाँ प्रभु ठहरा हुआ था। सूबेदार (सौ आदमियों का सेनापति, एक सेना का साठवाँ हिस्सा) वहाँ तैनात रोमी सैन्य टुकड़ी का प्रभारी अधिकारी था। निस्संदेह उसने यीशु के बारे में बहुत कुछ सुना होगा और शायद उसने पहाड़ी उपदेश भी सुना होगा, क्योंकि पहाड़ उसके ठहरने की जगह से बहुत दूर नहीं था। हम लूका 7:5 से जान पाते हैं कि सूबेदार को यहूदियों से इतना प्रेम था और इस्राएल के धर्म के प्रति उसकी इतनी श्रद्धा थी कि उसने कफरनहूम में यहूदियों के लिए एक आराधनालय तक बनवाया था। ऐसा करने के लिए वह निश्चित ही बहुत धनी व्यक्ति रहा होगा। यह वही प्रतिष्ठित रोमी था जो अपने दास की चंगाई की याचना करने यीशु के पास आया था जो बहुत बीमार था।

अन्यजातीय घर जाने के बारे में सभी यहूदी-निषेधों को अनदेखा करते हुए, यीशु ने तुरंत कहा, "मैं आकर उसे चंगा करूँगा" (मत्ती 8:7)। हम न केवल नस्लीय और धार्मिक पूर्वाग्रह के लिए प्रभु की अच्छी उपेक्षा को देखते हैं, बल्कि उसके अद्‌भुत आश्वासन को भी देखते हैं। उसने यह नहीं कहा, "मैं आकर देखूँगा कि मैं क्या कर सकता हूँ।" उसने कहा, "मैं आकर उसे चंगा करूँगा।"

प्रभु के चेले और उसके यहूदी श्रोता एक कोढ़ी को छूने और एक अन्यजातीय घर जाने की उसकी इच्छा पर आश्चर्यचकित अवश्य हुए होंगे। उन्हें आश्चर्यचकित होने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह केवल वही अभ्यास कर रहा था जो उसने प्रेम और उपलब्धता के बारे में उपदेश दिया था और कर्तव्य की पुकार से परे जा रहा था।

ख. एक प्रतिष्ठित अनुरोध (8:8-9)

1. एक अंगीकार (8:8)

सूबेदार, जो इस बात से अवगत था कि यहूदी आम तौर पर अन्यजातीय घर में प्रवेश करने के बारे में क्या सोचते हैं, ने कहा कि वह अपने आप को इस योग्य नहीं समझता कि प्रभु उसके घर की दहलीज पर खुद चलकर आए। संयोग से, वह वो नहीं रहा होगा जिसे यहूदी "धार्मिकता का अनुयायी" कहते थे, क्योंकि यदि ऐसा होता तो वह यहूदी ‘कोशेर’ मानकों को पूरा करने वाला घर बनाता। जैसा कि हम देखते है, उसने सरल और विनम्र भाव से इस तथ्य को स्वीकार किया कि अधिकांश यहूदी उसके घर को अपवित्र मानते हैं और उसमें प्रवेश करने वाले किसी भी व्यक्ति को अशुद्ध मानते हैं। उल्लेखनीय निःस्वार्थता और साथ ही गतिशील विश्वास के साथ, उसने प्रभु द्वारा उसके घर आने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। उसने कहा, "हे प्रभु", "मैं इस योग्य नहीं... केवल मुख से बोल दे।"

2. एक तुलना (8:9)

फिर उसने अपने अधिकार की तुलना प्रभु के अधिकार से की और समानता पर ध्यान आकर्षित किया। सूबेदार आज्ञा मानने और आज्ञा देने का आदी था। प्रभु भी अधिकार के अधीन था - शायद सूबेदार ने पहाड़ी उपदेश में प्रभु द्वारा स्वर्ग में अपने पिता के बारे में दिए गये संदर्भों को सुना और समझा था। और उसने देखा था कि प्रभु के पास अधिकार था - उसका एक वचन और कोढ़ शुद्ध हो गया। उसे व्यक्तिगत रूप से आने

की कोई आवश्यकता नहीं थी। उसे विश्वास था कि वह केवल अपने अधिकार के साथ वचन को बोलेगा और दास की बीमारी दूर हो जाएगी।

ग. एक उल्लेखनीय प्रतिक्रिया (8:10-12)

1. सूबेदार के विश्वास पर अचम्भा (8:10)

हम पढ़ते हैं कि यीशु उस सूबेदार की प्रतिक्रिया पर "अचम्भा" हुआ। सुसमाचारों में केवल दो घटनाएं ऐसी हैं जिन पर यीशु को "अचम्भा" हुआ: इस व्यक्ति का विश्वास और उसके अपने लोगों का अविश्वास (मरकुस 6:6)। प्रभु ने सूबेदार के विश्वास की प्रशंसा की, उसकी बुद्धिमत्ता पर अचम्भा किया, और तुरंत इस पर अपनी टिप्पणी दी।

2. सूबेदार के विश्वास का संदेश (8:11-12)

यह यीशु के लिए बहुत ही आनंद का क्षण था। यहाँ एक ऐसा अन्यजातीय विश्वासी था, जो सुसमाचारों में वर्णित कई लोगों में से एक था, जिसका उस पर भरोसा अन्यजातीय दुनिया में आने वाली फसल की घोषणा करता था। इस व्यक्ति के विश्वास को यीशु ने यहूदियों के लिए चेतावनी के रूप में प्रस्तुत किया कि यदि यहूदी आने वाले स्वर्ग राज्य को अस्वीकार करने में लगे रहे, तो यह प्रस्ताव जल्द ही दूसरों को हस्तांतरित कर दिया जाएगा जो इसे स्वीकार करेंगे। कई अन्यजातीय लोग इस्राएल की पूर्वी और पश्चिमी सीमाओं से परे देशों से आएंगे और स्वर्ग के राज्य में यहूदी कुलपतियों के साथ बैठेंगे, जबकि उनके मूल-जन्म वाले वंशजों को "बाहर अन्धियारे" में डाल दिया जाएगा जहाँ "रोना और दाँत पीसना" होगा (8:12)।

यह निश्चित नहीं है कि "बाहर अन्धियारे" का तात्पर्य पिता के उजियाले से भरे घर के बाहर के अंधकार से है, गेहेना के अंधकार से है, या उस निराशाजनक, अंतहीन रात के स्थान से है, जिसमें हमेशा के लिए खोए हुए लोग रहते हैं। गेहेना का प्रवेश द्वार, जो हमेशा उठते धुएं से चिह्नित था, अंधेरे के पहाड़ों से परे दो ताड़ के पेड़ों के बीच हिन्नोम की घाटी को कहा जाता था। प्रतीकात्मक रूप से गेहेना का अर्थ नरक से हैं। 8:12 में यीशु ने "बाहर अन्धियारे" के बारे में "रोने और दांत पीसने" से जुड़े होने की बात कही। यहूदियों ने "रोने" को दुख से और "दांत पीसने" को क्रोध से जोड़ा। उन्होंने सोचा कि अन्यजाति गेहिन्नोम के बच्चे थे, जो संभवतः मसीहा के भोज में हिस्सा नहीं ले सकते थे। जबकि उनका मानना था कि यहूदी स्वर्गराज्य की संतान, राजकीय वंश, और ऊपरी दर्जे की संतान थे।[2]

यहूदियों को यह जानकर झटका लगा होगा कि प्रभु ने उनकी प्रिय मान्यताओं को उलट दिया। हालांकि उसने इस बात को स्वीकार किया कि "राज्य के संतान" थे और साथ ही क्रोध और निराशा से भरी "बाहरी अन्धियारा" भी था। यीशु ने इन दोनों बातों की पुष्टि की। लेकिन उसने राजकीय परिवार को सभी विश्वासियों के लिए खोल दिया; उसने राज्य में सदस्यता को उन सभी लोगों की पहुँच में रखा जो विश्वास करेंगे, यहूदी और अन्यजातीय दोनों के लिए। और साथ ही उसने चेतावनी भी दी कि जो लोग केवल नाम के लिए यहूदी थे, वे "बाहर अन्धियारे" में डाल दिए जाने के खतरे में थे।

घ. एक स्वाभाविक जवाब (8:13)

प्रभु की टिप्पणियों के दौरान, वह रोमी सेनापति भी वहाँ खड़ा था, और सब कुछ सुन पा रहा था। फिर यीशु ने उसकी ओर मुड़कर कहा, "जा; जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो" और ऐसा ही हुआ। वह आदमी घर की ओर चला गया और "उसका दास उसी घड़ी चंगा हो गया।"

III. बीमारी पर अधिकार (8:14-17)

क. पतरस का घर (8:14-15)

मत्ती ने इसे "पतरस का घर" कहा (8:14); मरकुस ने इसे "शमौन और अन्द्रियास का घर" कहा (मरकुस 1:29)। हम इसके बारे में जितना जानते हैं, उससे कहीं ज़्यादा जानना चाहेंगे। हम जानते हैं कि यह एक मछुआरे का घर था और पतरस की सास वहाँ रहती थी। (कैथोलिक धर्म में ब्रह्मचर्य का इतना ही महत्व है!) संभवतः यीशु वहाँ ठहरा हुआ था।

हम मरकुस 1:21-22,29-34 और लूका 4:31,38-41 से जान पाते हैं कि मत्ती 8:14-17 की वह घटना सब्त के दिन हुई थी। प्रभु आराधनालय में गया हुआ था, उसने वहाँ एक दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति को चंगा किया था, और ऐसी सामर्थ्य का प्रदर्शन किया था कि उसकी प्रसिद्धि पूरे गलील के प्रांत में फैल गई थी। घर लौटने पर, उसने पाया कि पतरस की सास के पास हमेशा की तरह उत्सव का भोजन तैयार नहीं था; इसके बजाय वह "ज्वर में पड़ी" थी। प्रभु ने उस स्त्री के गर्म तपते हुए हाथ को अपने हाथ में लिया, "ज्वर को डांटा" (लूका 4:39), और उसे चंगा किया। वह तुरंत उठी, रसोई में गई, और "उसकी सेवा करने लगी" (या जैसा कि कुछ अनुवादों में कहा गया है, "उसकी सेवा की") (मत्ती 8:15)। यह क्या ही शानदार सब्त का भोजन रहा होगा!

ख. लोग चंगे हुए (8:16)

अब तक सूरज ढल चुका था। आराधनालय और शमौन पतरस के घर में जो कुछ हुआ था, उसकी खबर पूरे दिन झील के किनारे-किनारे फैलती रही। मानो एक समूह और आपसी सहमति से लोग कफरनहूम में एकत्रित होने लगे। वे सीधे पतरस के घर की ओर बढ़े, अपने साथ दुष्टात्माओं से ग्रसित और अपने बीमार रिश्तेदारों, पड़ोसियों और दोस्तों को लेकर आए। जल्द ही घर को चारों तरफ से घेर लिया गया।

मत्ती भी वहाँ था और उसने लोगों के चंगे होने के बारे में बताया - "सब बीमारों को चंगा किया"! यीशु के एक वचन से दुष्टात्माएँ भाग जाती थी। उसके हाथ से छूने मात्र से बीमारियाँ ठीक हो जाती थी। संसार ने सामर्थ्य का ऐसा भव्य प्रदर्शन पहले कभी नहीं देखा था। शरीर और आत्मा की हर व्याधियों के लिए चंगाई मौजूद थी। एक भी व्यक्ति को यूँही वापस नहीं भेजा गया।

आजकल के तथाकथित चंगा करने वालों के सर्कस कितने अलग होते हैं! यदि प्रभु ने अपनी चंगाई चमत्कार उसी तरह किए होते जिस तरह आधुनिक चंगा करने वाले करते हैं, तो प्रक्रिया वास्तव में अलग होती। पतरस को स्टेडियम किराए पर लेने के लिए तिबेरियस भेजा गया होता। उनके आगमन का विज्ञापन करने के लिए पोस्टर लगाए गए होते। चंगा होने वाले लोगों की सावधानीपूर्वक जांच और उन्हें धोखा दिया गया होता। संकेतों की व्यवस्था की गई होती ताकि उनके चेले उन्हें बता सकें कि मंच पर किस तरह का मामला

आने वाला है। भीड़ में मनोवैज्ञानिक गर्मजोशी होती और चंगाई करने वाले और उनकी सेवकाई के लिए प्रेम भेंट में उदारतापूर्वक देने के लिए बार-बार दबाव डाला जाता।

चंगाई के लिए कुछ उम्मीदवार आगे आए होंगे और आत्मा में मूर्च्छित भी हुए होंगे, चाहे इसका मतलब कुछ भी हो। अन्य उम्मीदवार, मनोवैज्ञानिक रूप से काम करने के बाद, मनोदैहिक शिकायतों से ठीक हो गए होंगे। अन्य, जो बिल्कुल भी ठीक नहीं हुए होंगे, उन्होंने दिखावा किया होगा कि वे ठीक हो गए हैं। जो लोग दिखावा नहीं करते थे, उन्हें बताया गया होगा कि उनमें पर्याप्त विश्वास की कमी थी। कुछ जिनके लक्षण गायब हो गए थे, वे ठीक होकर घर चले गए होंगे, लेकिन कुछ दिनों बाद उन्हें पता चला कि उनके लक्षण फिर से प्रकट हो रहे थे। अगर कोई वास्तव में ठीक हुआ था, तो यह चंगा करने वाले के अलावा ही हुआ होगा, न कि उसके कारण।

लेकिन परमेश्वर ने इस तरह से कोई दिखावे का चमत्कार नहीं किया। उसने लोगों को पूरी तरह से चंगा किया। सभी को, वह भी पूरी तरह से, हमेशा के लिए। चिकित्सकीय रूप से, बिना किसी विवाद के।

ग. भविष्यद्वाणी का ध्यान रखा गया (8:17)

1. भविष्यद्वाणी कहाँ पाई जाती है (8:17a)

मत्ती ने यशायाह 53:4 की ओर इशारा करते हुए कहा कि प्रभु यीशु द्वारा किए गए चंगाई के अद्भुत चमत्कार भविष्यद्वक्ता के वचन की प्रत्यक्ष पूर्ति थे। "यशायाह" ने कहा, "उस ने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया" (मत्ती 8:17)।

2. जब भविष्यद्वाणी पूरी हुई (8:17b)

यशायाह 53 प्रायश्चित पर एक महान अध्याय है, जो हमारे पापों के लिए क्रूस पर मसीह के असहनीय कष्टों का वर्णन करता है। मत्ती के द्वारा पवित्र आत्मा कह रहा था कि शारीरिक चंगाई के बारे में यशायाह की पद प्रभु यीशु द्वारा उसकी सांसारिक सेवकाई में पूरी हो गई थी, लेकिन वह चंगाई उसके भविष्य के छुटकारे के कष्टों पर पूरी तरह से आधारित था।

हमारे पापों के लिए मरते हुए उसने बीमारी और पीड़ा के मूल कारण से व्यवहार किया। प्रभु पूरी तरह से समझता था कि उसने जो भी शारीरिक और मानसिक बीमारियों को चंगा किया, वे अंततः पाप के कारण हुईं थी - जरूरी नहीं कि वह उस पीड़ित का व्यक्तिगत पाप हो (हालाँकि ऐसे समय भी थे जब ऐसा होती था), लेकिन पाप मनुष्य जाति के इतिहास में निहित है। प्रभु जानता था कि चंगा करने का उसका अधिकार इस तथ्य से प्राप्त हुआ था कि उसे जल्द ही क्रूस पर पीड़ा सहनी थी, कि वह वहाँ पाप से निपटेगा, जो पीड़ा का मूल कारण है।

दूसरे शब्दों में, प्रभु की सामर्थ्य उसके जुनून पर आधारित थी। कलवरी में वह जड़ तक पहुँचने वाला था, इसलिए अब वह फल से निपट सकता था। उसके चंगाई के चमत्कार पाप, जड़ और शाखा से निपटने के लिए क्रूस की सामर्थ्य की प्रत्याशा में निहित थे।

जब हम मसीह द्वारा क्रूस पर बीमारी के मूल कारणों से निपटने के बारे में बात करते हैं तो हमें सावधान रहना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि प्रायश्चित में हमारे लिए तत्काल शारीरिक चंगाई सुरक्षित थी। जो

लोग ऐसा सिखाते हैं वे गलत हैं। जब वे कहते हैं कि चंगाई आज हमेशा उपलब्ध है और जो लोग चंगे नहीं हुए हैं उनमें इसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक विश्वास की कमी है, तो वे बहुत अधिक मानसिक पीड़ा पहुँचाने के लिए भी जिम्मेदार ठहरते हैं। मृत्यु से प्रतिरक्षा हमारा सुनिश्चित अधिकार नहीं है, और न ही शारीरिक चंगाई। अंततः बीमारी से मुक्ति और मृत्यु पर पूर्ण विजय हमें क्रूस के द्वारा ही मिलेगी - लेकिन इसके लिए पौलुस द्वारा कहे गए "हमारे शरीर के छुटकारे" का इंतज़ार करना होगा (रोमियों 8:22-23) कहा जाता है।

IV. विपत्ति पर अधिकार (8:18-27)

विश्वासियों के रूप में हम जीवन के तूफानों से उतने ही घिरे हैं, जितने हम बीमारी और मृत्यु से घिरे हुए हैं। राजा की सामर्थ्य का अगला प्रदर्शन हमें दिखाता है कि हम उसके साथ तूफानों से कैसे गुजर सकते हैं।

क. तैयार मंच (8:18)

यीशु ने भीड़ को देखा। हम निश्चित रूप से उससे प्रभावित होंगे। जब लोगों की भीड़ हमारी सभाओं में आती है, हमारी पुस्तकें खरीदती है, और हमारी सेवकाई का समर्थन करती है, तो हम बहुत प्रसन्न होते हैं। हम अक्सर अपनी सेवकाई को भीड़ के संदर्भ में मापते हैं। लेकिन यीशु भीड़ से प्रभावित होने वालों में से नहीं था। जब उसने भीड़ को देखा, तो उसने "दूसरी तरफ जाने की आज्ञा दी।" यह आज्ञा सामर्थ्य के एक और प्रदर्शन में पहला कदम था - लेकिन इसे एक शास्त्री द्वारा अस्थायी रूप से बाधित किया गया।

ख. शास्त्री (8:19-22)

इसमें कोई संदेह नहीं कि चेलेपन पर प्रभु की स्पष्ट शिक्षा उधर उपस्थित जिज्ञासु भीड़ के साथ-साथ स्वयं शास्त्री को भी संबोधित कर रही थी।

एक शास्त्री दरअसल एक विद्वान व्यक्ति होता था, एक शिक्षित व्यक्ति, एक ऐसा व्यक्ति जिसे आराधनालयों में पढ़ाने के लिए योग्य माना जाता था। एज्रा एक शास्त्री था (एज्रा 7:12)। याजक लोग व्यवस्था के आधिकारिक व्याख्याकार थे, लेकिन शास्त्री, जिन्होंने एक स्वतंत्र समूह (राजनीतिक के बजाय धार्मिक) का गठन किया था, वे महासभा और विभिन्न स्थानीय न्यायालयों द्वारा व्यवस्था के विकास और उपयोग के संबंध में कार्य करते थे। शास्त्री यहूदियों के पवित्र लेखन, ऐतिहासिक और उपदेशात्मक दोनों से भी संबंधित थे, और यहूदी जीवन में तपस्वी तत्वों के लिए विशेष रूप से उत्साही रहते थे जो यहूदियों को अन्यजातियों से अलग करने में मदद करते थे। धर्म को बाहरी रूपों में कम करके, और व्यवस्था में अंतहीन बारीकियों को जोड़कर, शास्त्रियों ने आम लोगों के जीवन को बोझिल बना दिया था। सुसमाचारों में हम अक्सर शास्त्रियों को फरीसियों का पक्ष लेते हुए देखते हैं। एक वर्ग के रूप में शास्त्री मसीह के साथ लगातार संघर्ष में थे, जिसने उनकी कड़ी निंदा की। उन्हें लोगों द्वारा आदर पाना काफी पसंद था।

ऐसे ही एक शास्त्री ने यीशु के स्पष्ट अधिकार से बहुत प्रभावित होकर अब स्वेच्छा से उसका चेला बनने का प्रस्ताव रखा। प्रभु ने उसे अस्वीकार नहीं किया, बल्कि उसे चेला बनने की भारी कीमत बताई। खुद को सर्वोच्च उदाहरण, उस कीमत का जीवंत अवतार बताते हुए उसने कहा, "लोमड़ियों के भट और आकाश

के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है" (मत्ती 8:20)। गरीबी उस अभिशाप का एक हिस्सा थी जिसे उसने वहन किया था।

"मनुष्य का पुत्र" प्रभु का स्वयं के लिए पसंदीदा वर्णन था। यह नए नियम में शीर्षक की अट्ठासी घटनाओं में से पहला है।[3] यह प्रभु की मसीहा की उपाधि है, उसका नस्लीय नाम, जो पूरी पृथ्वी पर राज करने का उसका दावा था।[4] "मनुष्य का पुत्र" पहली बार भजन 8 में एक शीर्षक के रूप में आता है, जहाँ पृथ्वी पर प्रभु के आने वाले प्रभुत्व की घोषणा की जाती है। "मनुष्य का पुत्र" प्रभु का नस्लीय नाम है (मनुष्य के प्रतिनिधि के रूप में) जैसे "दाऊद का पुत्र" उसका राजकीय, यहूदी नाम है और "परमेश्वर का पुत्र" उसका ईश्वरीय नाम है।

"मनुष्य का पुत्र" प्रभु की सेवकाई (मत्ती 11:19), उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान (12:40; 20:18; 26:2), और उसके पुनरागमन (24:37-44) के संबंध में आता है। यह शीर्षक यहूदी सहस्राब्दी की आशाओं से परे है। जब नतनएल ने यीशु को "इस्राएल के महाराजा" के रूप में स्वीकार किया, तो प्रभु ने उत्तर दिया, "तू इस से बड़े बड़े काम देखेगा...तुम परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते देखोगे" (यूहन्ना 1:49-51)।

नए नियम में इस महत्वपूर्ण शीर्षक के पहले उल्लेख (मत्ती 8:20) में हम राजा की विनम्रता और तिरस्कार को देखते हैं। उसके पास "सिर धरने की भी जगह नहीं है।" इसके विपरीत, अंतिम उल्लेख (प्रकाशितवाक्य 14:14) में उसके "सिर पर सोने का मुकुट है।" पहला उल्लेख उसकी गरीबी पर जोर देता है; अंतिम उल्लेख उसकी सामर्थ्य पर जोर देता है। पहला उल्लेख उसके पहले आगमन पर ध्यान केंद्रित करता है; जबकि अंतिम उल्लेख उसके दूसरे आगमन की ओर हमारे ध्यान को केंद्रित करता है।

हमें यह नहीं बताया गया है कि प्रभु द्वारा उसके सामने रखे गए क्रूस के मार्ग पर शास्त्री ने कैसी प्रतिक्रिया दी। इस समय एक व्यक्ति जो पहले से ही एक चेला था, आगे की सेवा के लिए स्वेच्छा से आगे आया। हालाँकि, उसके जीवन में एक प्रतिद्वंद्वी निष्ठा थी। "मुझे पहिले जाने दे, कि अपने पिता को गाड़ दूं," उसने कहा (मत्ती 8:21)। उस समय की प्रथा और मुहावरे को देखते हुए, यह संभव है कि उसका पिता अभी तक मरा नहीं था। दूसरे शब्दों में, यह व्यक्ति कह रहा होगा, "मैं अपने पिता को नहीं छोड़ सकता। मेरा उनके प्रति एक पुत्रवत दायित्व है।" मानवीय मानकों के अनुसार कर्तव्य की यह भावना सराहनीय थी, लेकिन जब इसे मसीह के प्रति निष्ठा के संदर्भ में रखा जाता है, तो यह हर चीज का इनकार करना था।

जब कोई राष्ट्र राष्ट्रीय आपातकाल के समय अपने युवाओं को सैन्य सेवा के लिए भर्ती करता है, तो वह पूर्ण निष्ठा की मांग करता है। पिता, माता, भाई, बहन, पत्नी और बच्चों के प्रतिद्वंदी दावों को कर्तव्य की पुकार के आड़े नहीं आने दिया जाता। युद्ध के समय देश का आह्वान अनुशासन, आत्म-त्याग, खतरे और मृत्यु का होता है। हम अपने स्वर्गीय राजा को अपनी जन्मभूमि द्वारा मांगी गई निष्ठा से कम निष्ठा देने की हिम्मत कैसे कर सकते हैं?

प्रभु ने इस स्वयंसेवक की शर्तों को अस्वीकार कर दिया। उसने कहा, "मुर्दों को अपने मुर्दे गाड़ने दे" (8:22)। उसने उस व्यक्ति के बहाने को समझ लिया। उन गर्म बाइबल देश में मृतकों को उसी दिन दफनाया जाता था जिस दिन वे मरते थे।

फिर से सोचें कि इस स्वयंसेवक ने वास्तव में क्या कहा था: "मुझे पहिले जाने दे, कि अपने पिता को गाड़ दूं" अब उस वादे में दो शब्दों को रेखांकित करें: पहले मैं। यहाँ, पूरी तरह से उजागर, उसके प्रस्ताव की भ्रांति और कारण है कि प्रभु उसके साथ इतना कठोर क्यों था। आप यह नहीं कह सकते, "पहले मैं!" और चेला बन जाओ। यह मसीह के प्रभुत्व का एक प्रभावी इनकार है। यीशु ने शास्त्री और स्वयंसेवक दोनों से प्रभावी रूप से जो कहा वह वास्तव में "पहले मैं" (अर्थात् मसीह) था।

ग. तूफ़ान (8:23-27)

1. तूफ़ान उठता है (8:23-24)

प्रभु और उसके चेले नाव पर सवार हुए, और प्रभु एक तकिये पर लेट गया और सो गया। संभवतः वह नाव के पिछले हिस्से में एक छोटी सी मेज़ पर लेटा होगा जहाँ से पतवार चलाने वाला बैठा करता था। यदि यह वही घटना है जो अन्य सिनोप्टिक्स (मरकुस 4:37-41; लूका 8:23-25) द्वारा दर्ज की गई है, तो यह एकमात्र ऐसा समय है जब सुसमाचारों में यीशु के सोने का उल्लेख किया गया है।

जब वह सो गया और तुरंत ही झील पर एक बड़ा ही खतरनाक तूफान उठा। गलील के समुद्र पर इतनी तेजी से उठने वाला और इतनी उग्रता से बहने वाले तूफानों में से एक, पहाड़ियों से दहाड़ते हुए आया। हवा के जोर से ऊँची ऊँची लहरें उठने लगी। मत्ती ने लिखा (8:24)- "नाव लहरों से ढंपने लगी।" जबकि मरकुस का स्पष्ट वर्णन था कि "लहरें नाव पर यहां तक लगीं, कि वह अब पानी से भरी जाती थी", जो निस्संदेह पतरस की घटना की याद से लिया गया था (मरकुस 4:37)।

2. तूफ़ान को शांत किया गया (8:25-27)

जब कोई नाव पानी से भर जाती है तो वह डूब जाती है - लेकिन वह नाव नहीं डूबी!

कोई पानी उस नाव को नहीं निगल सकता

जिसमें समुद्र, पृथ्वी और आकाश का स्वामी मौजूद हो।[5]

हालाँकि, चेले इसे देखकर बहुत अधिक डर गए थे। उन्होंने भयभीत होकर चिल्लाकर प्रभु को जगाया, "क्या तुझे चिन्ता नहीं, कि हम नाश हुए जाते हैं?" (मरकुस 4:38) प्रभु ने डर से उपजे अपमान को अनदेखा कर दिया। "तब उस ने उठकर आन्धी और पानी को डांटा" (मत्ती 8:26) ठीक वैसे ही जैसे उसने ज्वर और दुष्टात्मा को डांटा था (लूका 4:39; मरकुस 9:25)। सभी उसकी सृष्टि थे और उसकी इच्छा का पालन करने के लिए जिम्मेदार थे। उसने कहा, "शान्त रह, थम जा" (मरकुस 4:39) - शाब्दिक रूप से, "अपना मुंह बंध रख।"

कुत्तों की तरह जिन्हें पट्टे से बांधकर रखा जाता है, उसी तरह गरजती हवाएँ और उछलती लहरें अब बिल्कुल शांत हो गईं। इस प्रकार प्रभु ने तूफान को शांत किया, लेकिन तब तक नहीं जब तक कि उसने चेलों को उनके विश्वास की कमी के लिए फटकार नहीं लगाई। जब उसने अपनी संप्रभु सामर्थ्य का प्रदर्शन किया, तो वे सभी दंग रह गए। उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया और कहा, "यह कौन है, कि आन्धी और पानी भी उस की आज्ञा मानते हैं?" (मत्ती 8:27) इस घटना से उनकी आत्माओं पर उसके परमेश्वरत्व की भावना व्याप्त हो गई।

"क्यों डरते हो?" उसने उनसे कहा (8:26)। और वास्तव में जब जीवन के तूफ़ान हम पर टूट पड़ते हैं तो हम इतने भयभीत क्यों हो उठते हैं? निश्चित रूप से इसका कारण यह है कि हम भूल जाते हैं कि वह हमारे साथ है, और चाहे कुछ भी हो जाए, वह पूरी तरह से सबको नियंत्रित करता है - तब भी जब वह हमें गहरी नींद में सोता हुआ और हमारी चिंताओं, संदेहों और भय के बारे में बेपरवाह-सा लगता है।

V. दुष्टात्माओं पर अधिकार (8:28-34)

जोखिम भरी यात्रा अब समाप्त हो चुकी थी। नाव झील के दूसरी ओर सुरक्षित पहुँच गयी थी, संभवतः उसी शाम को। हम उस दृश्य की कल्पना कर सकते हैं जिसमें चाँद अपनी चाँदनी उस जंगली माहौल पर बिखेर रहा था।

झील के उत्तरी और दक्षिणी छोर के बीच में और मगदला के ठीक सामने गदरेनियों का गांव था। ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु इस गांव के दक्षिण में थोड़े समय के लिए उतरा था। झील से लगभग सोलह मील दक्षिण-पूर्व में और लगभग सात मील की दूरी पर गदारा का प्रसिद्ध नगर था। दक्षिण-पूर्व में और गेरगेसा से लगभग पचास मील की दूरी पर गिरासेनी नगर था। पूरे क्षेत्र को "गदरेनियों का देश" (मरकुस 5:1; लूका 8:26) के रूप में जाना जाता था क्योंकि गदारा एक प्रमुख नगर था जिसका क्षेत्र गलील सागर के पूर्वी तट तक फैला हुआ था।

क. खतरा (8:28)

पास की कब्रों की छाया में से दो दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति प्रकट हुए। वे काफी भयानक थे जिन्होंने पड़ोस में इतना आतंक मचा रखा था कि "कोई भी व्यक्ति उस रास्ते से नहीं गुजर सकता था।" ऐसा लगता है कि उनमें से एक व्यक्ति अधिक प्रभावशाली था, क्योंकि मरकुस और लूका ने उस पर अपना अधिक ध्यान केंद्रित किया था। हिंसा, बेकाबू क्रोध, और आत्मघाती और हत्या के उन्माद से युक्त, वह दुष्टात्मा की सामर्थ्य का चरम प्रकटीकरण था। ये दोनों दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति तूफानी समुद्र से भी अधिक खतरनाक थे।

ख. दुष्टात्माएँ (8:29-32)

दुष्टात्मा से ग्रस्त होना एक भयानक वास्तविकता है। सभ्य देशों में इसे अक्सर पागलपन के साथ भ्रमित किया जाता है। पागलपन में, मानसिक, भावनात्मक और इच्छासामर्थ्य और नैतिक जिम्मेदारियों के साथ खुद को एक अलग व्यक्तित्व के रूप में देखने की क्षमता क्षीण हो जाती है या खो जाती है। दुष्टात्मा के कब्जे के अंतर्गत, एक और (अन्य बुरी) बुद्धि उस व्यक्ति की चेतना पर नियंत्रण हासिल कर लेती है। दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति एक से अधिक चेतना प्रदर्शित करते हैं: अपनी और आक्रमणकारी दुष्टात्मा या दुष्टात्माओं की।

पागलपन के सामान्य मामलों में, किसी बीमारी, बुराई, हादसे या इसी तरह के किसी कारण से तर्कसंगत प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने की सामर्थ्य खो जाती है। दुष्टात्मा के कब्जे वाले मामलों में, तर्कसंगत व्यवहार का टूटना बुराई के एक श्रेष्ठ और बुद्धिमान रूप की उपस्थिति के कारण होता है। दुष्टात्मा से ग्रसित व्यक्ति की मानसिक क्षमताएँ और शारीरिक अंग आक्रमणकारी दुष्ट आत्मा द्वारा कब्जा कर लिए जाते हैं। व्यक्तित्वों

में अक्सर एक अजीब भ्रम होता रहता है, मनुष्य और दुष्टात्मा का एक शैतानी मिश्रण, जैसा कि दुष्टात्मा से ग्रसित गदरेनी के मामले में था। उनके शब्द और कार्य कभी-कभी मानव स्रोत से उत्पन्न होते हैं, और कभी-कभी दुष्टात्मा के स्रोत से, दोनों स्रोत अजीब तरह से एक साथ मिश्रित होते हैं।

प्रमुख दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति स्पष्ट रूप से कई दुष्ट आत्माओं से ग्रस्त था। मरकुस ने हमें बताया कि जब यीशु ने उसे अपना नाम बोलने और इस तरह खुद को प्रकट करने का आदेश दिया, तो उसने उत्तर दिया, "मेरा नाम सेना है: क्योंकि हम बहुत हैं" (5:9)। कुछ लोगों ने यह अनुमान लगाया है कि यह दुष्टात्मा ग्रस्त आदमी छह हज़ार दुष्टात्माओं का निवास स्थान था, क्योंकि एक रोमी 'सेना' टुकड़ी में छह हज़ार सैनिक होते थे। किसी कारण से, कई दुष्ट आत्माएँ उसकी प्रताड़ित आत्मा में घुस गई थीं।

1. उनकी दुर्दशा (8:29)

दोनों व्यक्तियों में व्याप्त दुष्टात्माओं ने यीशु को तुरंत पहचान लिया। उन्हें अपने खतरे का पता था। उन्होंने कहा, "हे परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझ से क्या काम? क्या तू समय से पहिले हमें दु:ख देने यहां आया है?" दुष्टात्माओं को पता था कि वे यीशु से बच नहीं सकते। वे उसकी सामर्थ्य को जानते थे और इस विचार से काँप रहे थे कि वे यीशु द्वारा उस अनन्त यातना स्थल में भेजे जाने वाले थे जो उनका इंतजार कर रही थीं। वे यह भी जानते थे कि उन मानव पीड़ितों पर उनका नियंत्रण अब उस व्यक्ति के आधिकारिक आदेश के साथ ही समाप्त होने वाला था जिसके सामने वे अब काँप रहे थी।

2. उनकी विनती (8:30-32)

क. एक महत्वपूर्ण अनुरोध (8:30-31)

यह जानते हुए कि अंततः उन्हें यातना के स्थल पर कैद कर लिया जाएगा, दुष्टात्माओं ने अपने विनाश से पहले थोड़ी देर और बचे रहने की याचना की। उन्होंने थोड़ी राहत की दोहाई दी। सूअरों का एक बड़ा झुंड पास में ही चर रहा था और दुष्ट आत्माओं ने उन अशुद्ध जानवरों के शरीर में प्रवेश पाने की अनुमति मांगी।

ऐसा लगता है कि दुष्टात्माओं में खुद को मूर्त रूप देने की लालसा होती है। गिरे हुए स्वर्गदूतों में वैसी लालसा दिखाई नहीं देती। हम उत्पत्ति 6 से सीखते हैं कि कुछ स्वर्गदूतों ने मनुष्य जाति की स्त्रियों के साथ शारिरिक संबंध स्थापित करने की कोशिश की, लेकिन यह कुछ अलग है। उन गिरे हुए स्वर्गदूतों ने भौतिक शरीर धारण कर लिया था (जैसा कि उत्पत्ति 18-19 में अब्राहम और लूत के सामने प्रकट हुए स्वर्गदूतों ने किया था)। ऐसा लगता है कि दुष्टात्मा अपने इस्तेमाल के लिए ऐसे शरीर धारण करने में सक्षम नहीं हैं, इसलिए वे मनुष्यों के शरीर चुराने की कोशिश करती हैं, जिसे वे उसके बाद अपने कब्जे में ले लेती हैं। वे अदृश्य लेकिन भयानक बैक्टीरिया की तरह हैं जो अपने शिकार को पीड़ा देती रहती हैं।

दुष्टात्माएं शरीर धारण करने की लालसा क्यों करती हैं? हमें नहीं बताया गया है। एक अनुमान के अनुसार वे वास्तव में एक बाहरी जाति की देह रहित आत्माएँ हैं जो किसी समय सुदूर और अलिखित इतिहास में पृथ्वी पर निवास करती थीं। उनकी असाधारण दुष्टता के कारण ईश्वरीय न्याय के एक कार्य के तहत उनके शरीर से वस्त्र के आवरण को उतार दिया गया।[6] बाइबल की एक समान गवाही यह है कि ये सभी दुष्ट आत्माएँ बुरी होती है, उन लोगों की जिन्होंने अध्यात्मवाद के साथ छेड़छाड़ की है, और उन लोगों की भी जिन्होंने मिशन क्षेत्र में दुष्ट आत्माओं का सामना किया है।

ख. एक चौंकाने वाला परिणाम (8:32)

इसलिए, मत्ती 8 में दुष्ट आत्माओं ने बिना किसी देह के छोड़े जाने की बजाय, पास की पहाड़ी पर चर रहे सूअरों के शरीर पर कब्ज़ा करने की अनुमति मांगी। प्रभु ने एक ही शब्द में उत्तर दिया: "जाओ।" मत्ती ने लिखा, "वे निकलकर सूअरों में पैठ गए।" दुष्टात्माओं के कब्ज़े की बजाय मृत्यु को प्राथमिकता देते हुए, सूअरों का झुण्ड पानी में जा पडा और डूब मरा।

माना जाता है कि पृथ्वी के असली राजा की सामर्थ्य और अधिकार का यह प्रदर्शन खेरसा से लगभग एक मील दक्षिण में हुआ था, जहाँ पहाड़ की एक चोटी झील की ओर उभरी हुई है और पानी से चालीस फ़ीट की दूरी पर आती है। ढलान खड़ी और संकरी है, और इसलिए नीचे की ओर भागता हुआ झुंड स्वाभाविक रूप से झील में गिर पड़ा और डूब मरा।

ग. प्रस्थान (8:33-34)

1. एक जबरदस्त कहानी सुनाई गई (8:33)

चरवाहों ने स्पष्ट रूप से देखा था कि प्रभु की उन दुष्टात्माओं से मुठभेड़ हो रही थी। सूअरों के विनाश से भयभीत होकर, वे "चरवाहे भागे, और नगर में जाकर ये सब बातें और जिन में दुष्टात्माएं थीं उन का सारा हाल कह सुनाया।"

निस्संदेह उन सूअरों के मालिकों ने अपने नुकसान के लिए प्रभु को दोषी ठहराया होगा। यह याद रखना चाहिए कि सूअर अशुद्ध जानवर थे, जिन्हें मूसा की व्यवस्था द्वारा निषिद्ध किया गया था। अशुद्धता के इस स्रोत को हटाना उतना ही वैध था जितना कि सभ्य नैतिक मानकों को लागू करने की कोशिश कर रहे समाज में अश्लील साहित्य को जब्त करना और नष्ट करना।

2. एक दुखद कदम उठाया गया (8:34)

दुष्टात्माओं से ग्रसित लोगों के चंगाई से ज़्यादा संपत्ति के नुकसान की चिंता करते हुआ, नगर के सभी लोग यीशु के पास आए और उससे उस क्षेत्र को छोड़कर जाने को कहा। हम मरकुस और लूका के वृत्तांतों से जान पाते हैं कि एक बार खुद को सेना के रूप में वर्णित करने वाले व्यक्ति ने प्रभु से उसके साथ रहने की अनुमति मांगी। जबकि, इसके बजाय यीशु ने उसे अपने लोगों के बीच गवाह बनने के लिए उसे उसके घर भेज दिया।

मत्ती ने प्रभु की सामर्थ्य के जबरदस्त सबूत इकट्ठे किए और जब हम उन्हें पढ़ते हैं, तो हम कहते हैं, "यह असीमित है।" फिर भी, इस वर्तमान युग में एक सीमा है। दुख की बात यह है कि हम उसे दूर भेज सकते हैं।

VI. कठिनाई पर अधिकार (9:1-8)

लकवे के रोगी के बारे में कहानी के ताने-बाने में कई कठिनाइयाँ बुनी गई हैं। बेशक, सबसे पहले उस व्यक्ति को यीशु के पास लाने में स्पष्ट कठिनाई थी। फरीसियों और व्यवस्थापकों की उपस्थिति से कठिनाई का प्रतिनिधित्व किया गया था; इस महत्वपूर्ण तत्व को मत्ती ने नहीं देखा था, लेकिन इसे मरकुस और

लूका दोनों ने दर्ज किया है। यहाँ, यीशु ने अपने आलोचकों के सामने एक प्रश्न पूछकर उन्हें परेशानी में डाल दिया था: “सहज क्या है, यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए; या यह कहना कि उठ और चल फिर?”

क. मामला (9:1-2)

1. स्थान (9:1)

प्रभु कफरनहूम लौट आया, जहाँ उसने अपना निवास बनाया, संभवतः पतरस के घर में रहा। हमें इस घर को थोड़ा और करीब से देखने की ज़रूरत है। यह एक मध्यम वर्गीय व्यक्ति का घर रहा होगा, क्योंकि एक बड़े पारिवारिक कमरे के अलावा, ऐसा लगता है कि इसमें प्रभु के लिए एक अतिथि कक्ष भी था और साथ ही पतरस और उसकी पत्नी और उनकी सास के लिए भी अलग कमरा था। एडर्सहेम ने प्रभु की "घरों के आंगन के चारों ओर फैली हुई ढकी हुई आँगन में खड़े होने का चित्रण किया, जो विभिन्न कक्षों में खुलता था। शायद वह अतिथि-कक्ष के प्रवेश द्वार के भीतर खड़ा था, जबकि शास्त्री उस कक्ष के भीतर या प्रांगण में उसके बगल में बैठे थे।"[7] खुला प्रांगण लोगों से खचाखच भरा हुआ था, और भीड़ सड़क तक फैल गई थी।

2. लकवे का रोगी (9:2a-b)

क. उसके मित्र (9:2a)

मरकुस 2 और लूका 5 मत्ती में छूटे हुए विवरणों को भरते हैं। हम वहाँ पढ़ते हैं, चार आदमी अपने बेहद बीमार दोस्त को यीशु के पास ला रहे थे। भीड़ के बीच से अपना रास्ता बनाने में असमर्थ होकर, वे उस आदमी को छत पर ले गए, या तो बाहर की सीढ़ी पर चढ़कर या एक सपाट छत से दूसरी छत पर कदम रखते हुए, वे पड़ोस के घरों से होकर गुज़रे, जिसे रब्बी "छतों की सड़क" कहते हैं। अपनी मंजिल पर पहुँचकर, उन आदमियों ने अपना समय बिल्कुल भी बर्बाद नहीं किया। उन्होंने छत को खोलकर एक रास्ता बनाया, जहाँ यीशु सिखा रहा था और अपने दोस्त को सावधानी से उसके पलंग पर लिटाकर नीचे उतारा जब तक कि वह यीशु के पैरों पर नहीं पहुँच गया।

हम छत पर शोर और फिर लकवे के मारे व्यक्ति के प्रकट होने से होने वाली हलचल की कल्पना कर सकते हैं। निस्संदेह इस अशांति के बाद एक रहस्यमयी चुप्पी छा गई होगी। सभी की निगाहें ऊपर से झांकते चेहरों पर चली गईं होगी, फिर लकवे के मारे व्यक्ति के पीले चेहरे पर, और फिर यीशु के प्रसन्न चेहरे पर। फरीसी और शास्त्री विशेष रूप से चौकन्ने थे जो "गलील, यहूदिया और यरूशलेम के हर नगर से उसके पास आए थे।" ऐसा लगता है कि वे इस नए भविष्यद्वक्ता के संबंध में किसी तरह के निर्णय पर पहुंचने के लिए आए थे, जिसकी शिक्षाएं और चमत्कार इतनी हलचल पैदा कर रहे थे।

ख. उसका विश्वास (9:2b)

यीशु ने वहाँ मौजूद सभी के मनों को देखा। उसने लकवे के मारे व्यक्ति और उसके दोस्तों के मनों में विश्वास को देखा - जबरदस्त, पहाड़ को हटाने लायक विश्वास। उसने रोगी के मन में भी डर देखा, जो पाप के प्रति उसके विश्वास और उसकी निराशाजनक स्थिति के कारण और भी घातक हो गया था। प्रभु ने फरीसियों के

चेहरों पर तनाव देखा और उन धार्मिक अगुवों के आलोचनात्मक विचारों को पढ़ा - वे केवल एक गलत वचन या कार्य की प्रतीक्षा कर रहे थे।

3. क्षमा (9:2c)

यीशु ने अपने पैरों पर लेटे हुए उस आदमी की ओर देखा। "हे पुत्र, ढाढ़स बान्ध; तेरे पाप क्षमा हुए।" इसका शाब्दिक अनुवाद इस प्रकार होगा, "तेरे पाप क्षमा हुए हैं और हो चुके हैं।" उन अचंभित शास्त्रियों ने चाहे जो भी उम्मीद की हो, यह तो बिल्कुल भी वैसा नहीं था!

ख. टिप्पणी (9:3-5)

1. यीशु ने क्या देखा (9:3-4a)

शास्त्रियों की आंतरिक प्रतिक्रिया तत्काल थी: "यह व्यक्ति तो परमेश्वर की निंदा करता है" (9:3)। हम इस बिंदु से यीशु के प्रति उन अगुवों की शत्रुता की शुरुआत का अनुमान लगा सकते हैं जो चौगुनी दुश्मनी में विकसित हुई और अंत में उसकी मृत्यु में जाकर ख़त्म हुई। यीशु के शत्रुओं का चार गुणा दावा था कि (1) वह परमेश्वर की निंदा करने वाला था, (2) उसने जाने-माने चुंगी लेनेवाले और पापियों से दोस्ती की, (3) उसने रब्बियों द्वारा परिभाषित अपने धार्मिक कर्तव्यों की उपेक्षा की, और (4) उसने सब्त का उल्लंघन किया। यीशु उनके विचारों को जानता था और मामले के मूल तक पहुँच गया।

2. यीशु ने क्या कहा (9:4b-5)

उसने कहा, "तुम लोग अपने अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो? सहज क्या है, यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए; या यह कहना कि उठ और चल फिर?"

आलोचकों को लगता था कि परमेश्वर चमत्कार करने में असमर्थ हैं। उसके लिए लोगों को धोखा देना एक बात थी, उन्होंने सोचा, लेकिन अब वह देश के विद्वानों, यहूदी धर्म के संरक्षकों, व्यवस्था के शास्त्रियों से बात कर रहा है। वह हमें धोखा नहीं दे पाएगा। वह अपनी छवि बचाने के लिए बड़बोले वचनों का सहारा ले रहा है। उसने अपने आप को सबके सामने प्रकट कर दिया है कि वह क्या हैं, एक परमेश्वर की निंदा करने वाला।

यीशु उनके विचारों को जानता था, जैसे वह हमारे विचारों को जानता है। वह हमारी हड्डी तक के पार देख सकता है। या तो वह परमेश्वर की निंदा करने वाला था जो पाप को क्षमा करने का अधिकार अपने ऊपर ले रहा था, या वह स्वयं परमेश्वर था। इस संभावना को उन्होंने एक पल के लिए भी मानने से इनकार कर दिया, भले ही किसी अन्य व्यक्ति ने कभी भी उसके जैसा नहीं बोला था या उसके जैसा चमत्कार न किया हो। (शास्त्री यह सोचने में सही थे कि केवल परमेश्वर ही पाप को क्षमा कर सकते हैं। वह अपने उस अधिकार को दूसरों के साथ साझा नहीं करता; यह उसका अपना विशेषाधिकार है।)

ग. उपचार (9:6-7)

प्रभु ने लकवाग्रस्त व्यक्ति को उसके पाप और बीमारी दोनों से चंगा किया "इसलिये कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है" (9:6)। ध्यान दें कि मनुष्य का पुत्र परमेश्वर

का पुत्र है। उसके पास ईश्वरीय गुण हैं और वह ईश्वरीय विशेषाधिकारों का उपयोग करता है। उसके पास पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने की सामर्थ्य है; अर्थात्, अगर पापों को क्षमा किया जाना है, तो उसे पृथ्वी पर ही क्षमा किया जाना चाहिए। और वही उन्हें क्षमा करता है। अपने पापों को याजकों के पास ले जाने का कोई फायदा नहीं है; हमें उन पापों को यीशु के पास ले जाना चाहिए। एक बार जब हम इस जीवन को छोड़ देते हैं, तो हमारे पापों को क्षमा किए जाने के लिए बहुत देर हो जाती है।

यीशु अब उस लकवे के मारे व्यक्ति की ओर मुड़ता है। उसने कहा, "उठ।" वह व्यक्ति उठा और अपने दोनों पैरों के बल पर चलते हुए अपने घर गया। यह स्पष्ट था कि यदि यीशु बीमारी को इस तरह अधिकारपूर्वक दूर कर सकता था, तो वह पाप को भी अधिकारपूर्वक क्षमा कर सकता था। दोनों सामर्थ्य क्रूस पर उसकी प्रत्याशित मृत्यु पर आधारित थीं। यीशु ने अपनी बात साबित कर दी थी। उसके पास पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने की सामर्थ्य थी; वह परमेश्वर की निंदा करने वाला नहीं था।

घ. भीड़ (9:8)

भीड़ ने यह सब देखर अचंभा किया। हमें यह नहीं बताया गया है कि उस समय उन धार्मिक अगुवों की क्या प्रतिक्रिया रही होगी, लेकिन हम जानते हैं कि उन्हें जल्द ही अपने अविश्वास में कठोर होने और प्रभु के अडिग शत्रु बनने के नए अवसर मिलने वाले थे।

VII. तिरस्कार पर सामर्थ्य (9:9-17)

मत्ती ने फरीसियों और उनके जैसे लोगों के कठोर और अविश्वासी हृदय में बढ़ते तिरस्कार के दो उदाहरण दिए। पहला उदाहरण सामाजिक तिरस्कार (9:9-13) का है और दूसरा आत्मिक तिरस्कार (9:14-17) का है। पहला उदाहरण मत्ती की बुलाहट से जुड़ा था, और दूसरा उसके मन-परिवर्तन से विकसित हुआ। प्रभु ने इस तरह के धार्मिक अहंकार के ऊपर भी अपने आप को स्वामी साबित किया।

क. सामाजिक तिरस्कार (9:9-13)

1. चुंगी लेनेवाला और उसका अतिथि-सत्कार (9:9-10)

क. मत्ती— स्वेच्छा से बना एक चेला (9:9)

(1) उसका संदेहास्पद व्यवसाय (9:9a)

यहूदियों को चुंगी लेनेवालों से नफरत थी क्योंकि चुंगी वसूलने वाले स्वयं यहूदी थे और वे इतने गिरे हुए थे कि वे घृणा करने वाले रोमी शासकों की सेवा करने के लिए समर्पित थे। चुंगी लेने वालों के दो वर्ग थे: साधारण चुंगी लेने वाला; और महसूल लेनेवाले अधिकारी जिसे डूआनियर कहा जाता था। यहूदी विशेष रूप से दूसरे वर्ग से घृणा करते थे।

डूआनियर का पद नियुक्त व्यक्ति को खुद को समृद्ध बनाने, लोगों पर अपनी नाराजगी जाहिर करने, पक्षपात करने और यातनाएं देने का बहुत अधिकार प्रदान करता था। महसूल लेने वाले अधिकारी व्यापारियों को अपनी यात्राएं रोकने, उनके जानवरों को उतारने और हर गठरी और पैकेज को खोलने के लिए मजबूर कर सकता था; वह सब कुछ छान सकता था, निजी पत्रों को पढ़ सकता था, अपना बकाया वसूल सकता था

और आम तौर पर जीवन को दुखी और नरकीय बना सकता था। चुंगी और महसूल धनी और गरीब दोनों पर लगाए जाते थे। पुल नाका, सड़क कर, बंदरगाह शुल्क, संपत्ति कर - जितने भी आकलन लालची चतुराई से आविष्कार किए जा सकते थे, वे सब मौजूद थे।

मत्ती का, जो कि घृणित डुआनियर वर्ग का एक चुंगी लेने वाला था, कफरनहूम में अपना चुंगी नाका था। बेशक आराधनालय उसके लिए बंद था, लेकिन निस्संदेह उसने अक्सर यीशु को अन्य स्थानों में देखा था। मत्ती ने संभवतः यीशु को प्रचार करते हुए सुना होगा, उसके चमत्कार देखे होंगे, उसके अनुग्रह और प्रेम को देखा होगा, और वह अपनी जंजीरों से मुक्त होने के लिए तरस रहा होगा ताकि वह ऐसे गुरु का अनुसरण कर सके। निश्चित रूप से वह पतरस, याकूब, यूहन्ना और कफरनहूम के अन्य मछुआरों और नाव के मालिकों को जानता था, लेकिन ऐसा कोई तरीका नहीं था जिससे ऐसे सम्मानित लोग उसके साथ जुड़ सकें।

(2) उसकी हर्षित आज्ञाकारिता (9:9b)

फिर अचानक एक दिन मत्ती के सामने स्वर्ग खुल गया। यीशु उसके चुंगी नाके के पास से गुजरा और कहा: "मेरे पीछे हो ले"! बस इतना ही। कोई प्रारंभिक तैयारी नहीं थी, कोई लंबी अपील नहीं थी, इस पर विचार करने का कोई निमंत्रण नहीं था। यीशु अपने व्यक्ति को जानता था, उसके मन को पढ़ता था, उसकी इच्छाओं को समझता था, और अपनी बुलाहट जारी करता था। मत्ती की आत्मा महिमा से भर उठी "वह उठकर उसके पीछे हो लिया।" बस इतना ही था। परिणामस्वरूप आज हमारे हाथों में वह सुसमाचार है जो उसके नाम को दर्शाता है।

ख. मत्ती—बुद्धिमान चेला (9:10)

मत्ती ने प्रभु के प्रति अपने प्रेम के साथ साथ खोए हुए लोगों के प्रति भी अपने प्रेम को प्रदर्शित किया। मन-परिवर्तित चुंगी लेने वाले ने एक भोज का आयोजन किया और अपने पूर्व मित्रों को भी उसमें आमंत्रित किया - जिन्हें फरीसियों ने तिरस्कारपूर्वक "महसूल लेनेवाले और पापी" के रूप में वर्गीकृत किया था - कि वे आएं और उसके नए स्वामी और उसके मित्रों से मिलें। यह कितनी समझदारी वाली बात है! सभी नए मन-परिवर्तित लोगों को उसके उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए। ऐसे भोज जल्द ही उनके और उनके अवांछनीय साथियों के बीच दूरी बना देंगी और साथ ही पूर्व मित्रों को भी यीशु के चेले बनने का अवसर देंगी।

2. फरीसी और उनका पाखंड (9:11-13)

क. पूछा गया प्रश्न (9:11)

(1) उन्होंने जिससे पूछा (9:11a)

मत्ती के भोज को देखकर, फरीसी आश्वस्त थे कि वे लकवे के मारे व्यक्ति के मामले में सही थे। कोई भी आत्म-सम्मान वाला धार्मिक यहूदी "पापियों" के साथ संगति नहीं करेगा। यह काफी संदेहास्पद था कि इस तथाकथित मसीहा के चेले मछुआरों और अन्य "अशिक्षित और अज्ञानी लोगों" (प्रेरितों 4:13) का एक अजीबोगरीब समूह थे, लेकिन एक चुंगी लेने वाले का चुनाव आखिरी तिनका था। सुनियोजित चालाकी के

साथ फरीसी यीशु के पास नहीं गए, जिससे वे भयभीत थे, बल्कि उनके चेलों के पास गए, जिन्हें उन्होंने अपना आसान शिकार समझा।

(2) उन्होंने क्या पूछा (9:11b)

फरीसियों ने पूछा, "तुम्हारा गुरु महसूल लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाता है?" चेलों को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहें। हो सकता है कि वे खुद इस मामले को लेकर थोड़े संशय में हों। पहाड़ी उपदेश अभी तक उनकी सोच में गहराई से जड़ नहीं जमा पाया था।

ख. प्रश्न का उत्तर (9:12-13)

(1) चित्रण द्वारा (9:12)

हालाँकि, प्रभु अपने आलोचकों के लिए तैयार था। अपने एक शानदार कथन में उसने कहा, "वैद्य भले चंगों को नहीं परन्तु बीमारों को अवश्य है।" दूसरे शब्दों में, उस महान चिकित्सक ने मांग की, "यदि एक डॉक्टर के पास केवल अच्छे स्वास्थ्य वाले रोगी हों, तो वह किस तरह का डॉक्टर होगा?" एक डॉक्टर वहाँ जाता है जहाँ बीमार लोग होते हैं। उसका डॉक्टर होने का कारण बीमारों की मदद करना है।

(2) प्रेरणा द्वारा (9:13a)

प्रभु ने यहूदी शिक्षकों द्वारा सतही ज्ञान का सामना करने पर इस्तेमाल किए जाने वाले एक प्रसिद्ध रब्बीनी सूत्र को लागू करते हुए कहा, "जाकर इसका अर्थ सीखो।" उसके आलोचकों ने सोचा कि वह व्यवस्था के बारे में बहुत कुछ जानता है, और यीशु ने कहा, "जाकर इसका अर्थ सीखो"! उसने उन्हें होशे 6:6 की ओर निर्देशित किया और इसका सार दोहराया: "क्योंकि मैं बलिदान से नहीं, स्थिर प्रेम ही से प्रसन्न होता हूँ।"

(3) निहितार्थ द्वारा (9:13b)

होशे का संदर्भ उचित था, क्योंकि वह पुस्तक आत्मिक व्यभिचार और वेश्यावृत्ति से संबंधित है। पुस्तक का बोझ होशे के पारिवारिक जीवन में हुई त्रासदी से उत्पन्न हुआ, और भविष्यद्वक्ता का कार्य इस्राएल को परमेश्वर का मन दिखाना था, जो उनकी कठोरता और पाप के कारण टूट गया था। परमेश्वर इस्राएल से कह रहा था, "तुम मेरे लिए बलिदान ऐसे लाते हो जैसे मुझे उनकी कोई आवश्यकता हो। मैं चाहता हूँ कि तुम पर दया दिखाऊँ।"

यीशु ने उन लोगों से बात करते हुए जो सोचते थे कि वह गुरु हैं, कहा, "जाओ और पहले परमेश्वर के मन को जानो। तब तुम समझोगे कि मैं चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों बैठता हूँ।" पाखंडी फरीसियों को दिए गए अपने उत्तर का सारांश देते हुए, प्रभु ने कहा, "मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ" (मत्ती 9:13)।

ख. आत्मिक तिरस्कार (9:14-17)

अगली चुनौती अप्रत्याशित दिशा से आई। यूहन्ना बपतिस्मादाता के चेले प्रभु के पास एक प्रश्न लेकर पहुंचे जो उन्हें परेशान कर रहा था। उनकी समस्या यह थी कि यूहन्ना एक सन्यासी था। उसका जीवन लगभग एक निरंतर उपवास का था; वह केवल सन्यासी भोजन जैसे कि टिड्डे और जंगली मधु खाता था। स्वाभाविक

रूप से, यूहन्ना के चेलों ने सोचा कि तप ही वास्तव में पवित्र जीवन का मार्ग है। इसमें उन्हें फरीसियों का भी समर्थन प्राप्त था, जो उपवास को आत्मिक रूप से बहुत महत्व देते थे।

1. निहितार्थ प्रकट किया गया (9:14)

यूहन्ना के अनुयायियों ने यीशु से पूछा, "हम और फरीसी इतना उपवास क्यों करते हैं, पर तेरे चेले उपवास नहीं करते?" वे यह संकेत दे रहे थे, जैसा कि बहुत से धार्मिक लोग करते हैं, कि किसी व्यक्ति को खुश करने वाले विश्वास के बारे में कुछ तो संदेहास्पद है। वे सोचते हैं कि धर्म को शोकपूर्ण होना चाहिए, और कठोर अनुशासन और आत्म-त्याग का विषय होना चाहिए।

2. निहितार्थ का खंडन (9:15-17)

प्रभु ने यहूदियों के विवाह रीति-रिवाजों से लिए गए एक दृष्टांत के साथ उन्हें उत्तर दिया। "दुल्हा के बराती" (9:15) दूल्हे के दोस्त थे जो उसके साथ दुल्हन के घर जाते हैं, जहाँ उनका सात दिनों तक भव्य स्वागत और भोज का आयोजन किया जाता है। दूल्हे के दोस्तों के लिए यह कितना अनुचित होगा कि वे इस भोज के अवसर पर उस पर ठंडा पानी डालते हुए घोषणा करते हैं कि वे उपवास कर रहे हैं और उन्हें आनंद नहीं करना चाहिए - वे उपवास रखेंगे, और भोज का आनंद नहीं लेंगे।

क. आने वाला युग-परिवर्तन (9:15)

दृष्टांत के साथ-साथ, प्रभु ने यूहन्ना के चेलों को बताया कि एक परिवर्तन आने वाला है। दूल्हा हमेशा उनके बीच मौजूद नहीं रहेगा; उसे उनके बीच से अलग किया जाएगा। प्रभु ने अपनी दृश्यमान उपस्थिति के हटने, व्यवस्थाओं में आने वाले परिवर्तन और एक ऐसे युग की शुरुआत की भविष्यद्वाणी की, जिस दौरान प्रभु उनके बीच अनुपस्थित रहेगा। उसने आगे कहा, "उस समय वे उपवास करेंगे," यह संकेत देते हुए कि उपवास यूहन्ना के दिनों की तुलना में हमारे युग के लिए अधिक उपयुक्त होगा। लेकिन उसने उपवास का आदेश नहीं दिया। प्रेरिताई कलीसिया को उपवास के बारे में कुछ भी पता नहीं था। व्यवस्थित उपवास औपचारिक और बोझिल हो जाते हैं, एक ऐसा धार्मिक कर्तव्य जिसका कोई मूल्य नहीं है।

ख. एक सम्पूर्ण युग-परिवर्तन (9:16-17)

प्रभु यहूदी धर्म के पुराने वस्त्र को ठीक करने नहीं आया था। यूहन्ना के चेलों ने सोचा कि यीशु उनके धर्म में सुधार लाने आया है, लेकिन वे गलत थे। यहूदी धर्म अप्रचलित हो चुका था। इसे फट जाना अवश्य था जैसे पर्दा फट जाता है। राज्य का नया कपड़ा इतना मजबूत था कि उसे रब्बी के यहूदी धर्म के फटे हुए कपड़ों पर नहीं लगाया जा सकता था। दोनों असंगत थे। पुराने को बचाने की कोशिश में नए व्यवस्था को टुकड़े-टुकड़े करना कोई मतलब नहीं रखता था। चेलों ने पहले ही दिखा दिया था कि यहूदी धर्म में कितनी आसानी से छेद हो सकते हैं, केवल उपवास न रखने के अलावा भी।

यीशु मसीहत का नया दाखरस उंडेलने आया था। उसने कहा कि लोग "नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरते हैं" (9:17)। उसके दिनों में दाखरस को चमड़े से बने पात्रों में रखा जाता था, आमतौर पर बकरे की खाल से बने पात्रों में। नए पात्रों में कुछ हद तक लचीलापन होता था और वे अंदर के दाखरस के दबाव के बढ़ने पर फैल सकते थे। पुराने पात्र सख्त हो जाते थे और उनका लचीलापन खत्म हो जाता था; उनमें नई

दाखरस डालना मूर्खता होगी। यह दृष्टांत प्रभु की स्पष्ट घोषणा थी कि पुराने युग को नए के द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना था।

पुराना अपने समय और युग के लिए सही था। लेकिन अब नए का समय आ गया है - एक नया युग, एक नए वाचा, एक नई गतिशीलता, नए सिद्धांत, नया जीवन, नई विधियाँ, एक नया "पात्र।"

मसीहत को यहूदी धर्म के स्थान को पूरी तरह से बदल लेना था। कलीसिया इस्राएल नहीं है, बल्कि परमेश्वर के मनुष्यों के साथ व्यवहार में कुछ नया और अनोखा है। जो लोग कलीसिया को इस्राएल के बराबर मानते हैं, वे मसीहत में यहूदी रूप, समारोह और नियम पेश करते हैं। यहूदी धर्म और मसीहत को एक साथ जोड़ने की कोशिश का नतीजा भ्रम है। मसीहत के बारे में ऐसी गलत धारणा का नतीजा मसीही-संप्रदाय है, जिसमें याजक, संस्कार, पर्व, उपवास, पवित्र दिन, पद, कैलेंडर और आराधना-पाठ शामिल हैं। प्रभु ने ऐसी कोई बात नहीं सोची थी। उसने यूहन्ना के चेलों को बहुत कुछ सोचने के लिए दिया, जब वे वहाँ से चले गए।

VIII. मृत्यु पर अधिकार (9:18-26)

इसके बाद मत्ती ने प्रभु के सबसे बड़े चमत्कारों में से एक का वर्णन किया: याईर की बेटी का पुनरुत्थान। यीशु ने अपनी सेवकाई के दौरान तीन लोगों को मृतकों में से जिलाया और चारों सुसमाचारकों में से प्रत्येक ने पुनरुत्थान का कम से कम एक चमत्कार दर्ज किया। प्रभु ने याईर की बेटी को जीवित किया, जो अभी-अभी मरी थी; एक युवक जिसे दफनाने के लिए लेकर जा रहे थे; और लाजर (केवल जिसका नाम बताया गया है), जो चार दिन पहले मरा था और जिसका शरीर उस गर्म जलवायु में सड़ना शुरू हो चुका था।

क. प्रभु का आदर कैसे किया गया (9:18-22)

1. एक साहसी व्यक्ति (9:18-19)

क. याईर का दृष्टिकोण (9:18a)

कफरनहूम में एक यहूदी शासक प्रभु का बहुत सम्मान करता था। मरकुस और लूका ने उसका नाम याईर बताया। संभवतः वह कफरनहूम आराधनालय का सरदार था जिसमें प्रभु अक्सर प्रचार करता होगा - निश्चित ही उसकी सहमति से और उसके निमंत्रण पर। याईर के जीवन में एक बड़ा दुख आया: उसकी छोटी बेटी बहुत बीमार थी। अन्य सुसमाचार हमें बताते हैं कि वह बारह वर्ष की थी (मरकुस 5:42; लूका 8:42), वह तकनीकी उम्र जिस पर एक यहूदी लड़का एक पुरुष बन जाता है और एक यहूदी लड़की परिपक्व हो जाती है। बारह साल की धूप के बाद, मौत उस पर अपनी काली छाया डाल रही थी।

याईर ने यीशु के पास जाने का मन बना लिया। हम सोच सकते हैं कि उसे इतना समय क्यों लगा, क्यों उसने आखिरी क्षण तक प्रतीक्षा की, जबकि मृत्यु पहले से ही दरवाजे पर दस्तक दे रही थी। हम सोच सकते हैं कि इतने सारे लोग यीशु के पास आने के लिए इतने लंबे समय तक क्यों प्रतीक्षा करते हैं, क्यों इतने सारे लोग कभी आते ही नहीं। शायद आराधनालय का सरदार अपने सहकर्मियों द्वारा आलोचना किए जाने से डरता था। शायद वह इस तथ्य से भयभीत था कि आधिकारिक राय का स्वर यीशु के विरूद्ध होने लगा था। लेकिन आखिरकार उसने अपने अभिमान को निगल लिया, अपने डर को दूर भगा दिया, अपने विश्वास को बुलाया, और यीशु के पास गया। शायद उसकी पत्नी ने उसे प्रोत्साहित करने के लिए कुछ कहा था।

ख. याईर की याचना (9:18b-19)

(1) गहरा निवेदन (9:18b)

"मेरी पुत्री अभी मरी है," याईर ने कहा, "परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख, तो वह जीवित हो जाएगी।" हम अन्य सुसमाचारों से सीखते हैं कि इस समय तक वह छोटी लड़की जीवित थी। हालाँकि, व्याकुल पिता ने उसे मरते हुए छोड़ दिया था और उसे कोई संदेह नहीं था कि अब तक वह मर चुकी होगी। वह पहले भी बहुत अधिक मृत्युशय्या के सामने बैठ चुका था और वह इस बीमारी की प्रकृति से अच्छी तरह परिचित था कि वह उस मृत्यु से संघर्ष करके शायद ही बच सकती है जो उसके घर से बाहर निकलने से पहले ही शुरू हो चुका था।

(2) तत्काल प्रतिक्रिया (9:19)

प्रभु को किसी के कहने की आवश्यकता नहीं थी। मत्ती ने लिखा, "यीशु उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे हो लिया" ("उसके चेलों" में अब मत्ती भी शामिल है, क्योंकि उसने 9:9 में अपने मन-परिवर्तन का वर्णन किया है।)

सरदार के मन में उम्मीद जाग उठी, लेकिन वह जल्द ही टूट गई। इस बीच एक छोटी सी रूकावट हुई और उस विचलित पिता को उस थोड़ी सी देरी से कितनी परेशानी हुई होगी! कोई भी व्यक्ति जो थोड़ी सी भी कल्पना कर सकता है, वह इस पिता के चेहरे पर निराशा की तस्वीर खींची देख सकता है और उसके हृदय में पैदा हुए नए डर और झुंझलाहट को पढ़ सकता है।

2. एक हताश स्त्री (9:20-22)

जिस स्त्री ने रूकावट पैदा की थी, उसका ऐसा करने का कोई इरादा नहीं था। वह जो सबसे आखिरी चीज़ चाहती थी, वह था खुद पर ध्यान आकर्षित करना। वह केवल इतना चाहती थी कि यीशु के पास जाए, उसकी आशीष को अनुभव करे, फिर चुपचाप और जल्दी से भीड़ में गायब हो जाए।

यह प्रभु ही था जिसने देरी की थी। शायद वह स्वयं याईर को आने में देरी के लिए डांटना चाहता था। निस्संदेह वह उस कंगाल स्त्री को संबोधित करना चाहता था। शायद, लाजर के मामले की तरह (यूहन्ना 11:6, 15), उसने जाने में देरी की ताकि कोई संदेह न रहे कि उसने सचमुच मरे हुए को जीवित किया है।

क. स्त्री क्या चाहती थी (9:20-21)

(1) उसकी हालत (9:20a)

उस स्त्री को लाइलाज रक्तस्राव की बीमारी थी। वह बारह वर्षों से इस बीमारी से पीड़ित थी। मुझे लगता है कि पवित्र आत्मा हमें याईर की बेटी के साथ जुड़े बारह वर्षों के आनंद और उस हताश स्त्री के साथ जुड़े बारह वर्ष के दुख की तुलना करने के लिए प्रेरित कर रहा है।

अन्य सुसमाचारों में भी उस स्त्री की स्थिति के बारे में विवरण जोड़ा गया है। उसने अपना सारा पैसा इलाज खोजने की कोशिश में खर्च कर दिया था। लूका, जो स्वयं एक वैद्य था, ने कहा कि कोई भी चिकित्सक उसे ठीक नहीं कर पाया था (लूका 8:43)। मरकुस, एक आम आदमी के दृष्टिकोण से मामले को देखते हुए,

अधिक आलोचनात्मक था; उसने कहा कि उसने "बहुत वैद्यों से बड़ा दुख उठाया और अपना सब माल व्यय करने पर भी कुछ लाभ न उठाया था, परन्तु और भी रोगी हो गई थी" (मरकुस 5:26)। डॉक्टरों ने उसका पैसा तो ले लिया था, लेकिन उसका सही इलाज नहीं कर पाए थे, बल्कि उसकी पीड़ा को अनावश्यक रूप से बढ़ा दिया था, कई बार उसकी उम्मीदें तो जगाई, फिर उन्हें तोड़ दिया था, और उसे उससे भी बदतर स्थिति में छोड़ दिया था। आख़िरकार, अब उसने उस महान चिकित्सक के पास जाने का मन बना लिया जिसने कभी कोई मामला नहीं हारा और कभी कोई शुल्क भी नहीं लिया।

स्त्री की बीमारी ने उसे औपचारिक रूप से अशुद्ध बना दिया और मूसा की व्यवस्था के अनुसार, उसे बहिष्कृत कर दिया गया था (लैव्यव्यवस्था 12:1-7)। वह जो कुछ भी छू लेती थी, उसे अशुद्ध माना जाता था (लैव्यव्यवस्था 15:19-33)। उसी लैवीय व्यवस्था ने ऐसी स्त्री के पति को उसे तलाक देने का अधिकार भी दिया था (व्यवस्थाविवरण 24:1)।

यहाँ एक दुखी स्त्री थी जिसकी हालत कई मायनों में कोढ़ी जैसी ही दयनीय थी। उसने जीवन में पाने लायक सब कुछ खो दिया था: धार्मिक सांत्वना, पारिवारिक देखभाल, सामाजिक प्रतिष्ठा, वित्तीय सुरक्षा आदि। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु ने इस तरह के विशेष तरीके से उसकी सेवकाई करने के लिए समय निकाला।

(2) उसका आत्मविश्वास (9:20b-21)

हम समझ सकते हैं कि स्त्री की तीव्र इच्छा थी कि वह किसी भी तरह से सबसे सामने न आए। न केवल लैवीय व्यवस्था के अनुसार अशुद्धता का अभिशाप था; बल्कि एक स्वाभाविक झिझक भी थी जो उसे अजनबियों के सामने यीशु को अपनी स्थिति का उल्लेख करने में कठिनाई प्रदान कर रही थी। उसकी एकमात्र इच्छा "उसके वस्त्र को छूना" थी (मत्ती 9:21)। उसे कोई संदेह नहीं था कि अगर उसने ऐसा किया, तो वह पूरी तरह से चंगी हो जाएगी। और इसलिए उसने "उसके वस्त्र के छोर को छुआ" (9:20)।

यीशु बेशक दूसरे यहूदियों की तरह ही कपड़े पहने हुए था। उसका सिर का कपड़ा आज मध्य पूर्व में अरबों द्वारा पहने जाने वाले कपड़े जैसा ही था; यह उसकी गर्दन और कंधों के पीछे तक उतरता था। उसके जूते सैंडल की तरह थे और उसका अंदरूनी वस्त्र एक अंगरखे का था, वह बिना सिला हुआ लबादा जिसे बांटने के लिए सैनिकों ने कलवरी पहाड़ी पर चिट्ठी डाली थी। उस लबादे के बीच में एक कमरबंद था और उसके ऊपर एक चौकोर बाहरी वस्त्र था जो मूसा की व्यवस्था (गिनती 15:37-41; व्यवस्थाविवरण 22:12) द्वारा मांगे गए विधिवत किनारों के साथ था। किनारे मूल रूप से नीले थे, जो स्वर्ग का रंग है, जो इस्राएल को राष्ट्रों के बीच उनके उच्च और स्वर्गीय बुलावे की याद दिलाता था। यही वह छोर था जिसे उस स्त्री ने छुआ था।

ख. यीशु ने क्या सिखाया (9:22)

(1) अपने प्रभु से एक रिश्ता (9:22a)

वह स्त्री उस भीड़ में खुद को छुपा लेने की कोशिश कर रही थी, लेकिन तभी यीशु ने उसे बुलाया। उसके चेहरे पर भय, घबराहट और निराशा देखकर, उसने एक प्यारी सी बात कही: "बेटी।" उसे उसके परिवार ने बहिष्कृत कर दिया था, लेकिन प्रभु ने उसे अपने परिवार में शामिल कर लिया।

(2) उसके जीवन के लिए प्रतिफल (9:22b)

प्रभु ने आगे कहा, "तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है: कुशल से जा।" मत्ती ने आगे लिखा, "और तुरन्त उसका लहू बहना बन्द हो गया।" वह तुरन्त चंगी हो गई। मिशन पूरा हुआ!

ख. प्रभु का ठट्ठा कैसे उड़ाया गया (9:23-25)

1. एक भ्रमित भीड़ (9:23)

अन्य समानांतर लेख हमें बताते हैं कि उसी समय याईर को खबर दी गई कि उसकी बेटी मर गई है। मत्ती का सुसमाचार हमें उसके घर की ओर ले जाता है।

जब तक याईर और प्रभु उसके घर पहुंचे, तब तक वह घर शोक मनाने वालों से भर चुका था, क्योंकि नगर में हर कोई आराधनालय के सरदार को जानता था। उस ऊष्म जलवायु वाले इलाके में अंतिम संस्कार में देरी नहीं की जाती थी। शोक मृत्यु के क्षण से ही शुरू हो जाता था और हमेशा शोरगुल और विलाप होता था। विलाप के उन्मत्त प्रदर्शन होते थे। शोक से भरे लोगों के जोरदार विलाप और वास्तविक दुःख के साथ पेशेवर शोक मनाने वालों की चीखें और किराए के बांसुरी वादकों का शोकपूर्ण संगीत भी इसमें जुड़ जाता था।

2. गतिशील मसीह (9:24)

यीशु ने एक नज़र में ही सब कुछ समझ लिया। "हट जाओ," उसने कहा। दूसरे शब्दों में, "बाहर निकल जाओ!" यदि शोक करने वाले इससे चौंक उठे थे, तो उसने उसके बाद जो कुछ भी कहा उससे और भी अधिक आश्चर्यचकित हो उठे: "लड़की मरी नहीं है, बल्कि सो रही है।" मत्ती ने यहाँ भीड़ की प्रतिक्रिया दर्ज की: "इस पर वे उस की हंसी करने लगे।" लूका ने इसमें आगे जोड़ा, "...वे यह जानकर, कि मर गई है..." (लूका 8:53)। जब प्रभु वहाँ पहुंचे, तो लोग विलाप कर रहे थे। दो मिनट बाद वे हंस रहे थे - वो भी उस पर। उसने उनकी अशिष्टता को अनदेखा किया। उसने उन सभी को वहाँ से बाहर निकाल दिया; उसने उन्हें बेदर्दी से घर से बाहर निकाल दिया। (कुछ लोगों को हमें बाहर निकालना ही पड़ता है अगर हम उम्मीद करते हैं कि प्रभु कुछ कार्य करें।)

फिर यीशु ने एक आश्चर्यकर्म किया। समानांतर लेखों से पता चलता है कि केवल पाँच लोग ने इसके गवाह बने: लड़की के माता-पिता, पतरस, याकूब और यूहन्ना। लेकिन इसकी सच्चाई जल्द ही सभी को पता चल गई।

3. मृत लड़की (9:25)

यीशु ने कहा था कि लड़की सो रही थी, लेकिन वह निश्चित रूप से मृत्यु में शरीर की नींद की बात कर रहा था। आत्मा कभी नहीं सोती। यह कभी थकती नहीं है। यह परमेश्वर की अमर, अथक स्वरुप में बनाई गई है और अनंत काल के लिए तैयार की गई है। बच्ची का शरीर मर चुका था, लेकिन मत्ती ने कहा कि प्रभु "भीतर आया, उसका हाथ पकड़ा, और वह लड़की तुरंत उठ बैठी।"

एक बार जब डी.एल. मूडी को अंतिम संस्कार में बोलने के लिए कहा गया, तो उन्होंने सोचा कि वह प्रभु के अंतिम संस्कार संदेशों में से किसी एक को अपने विषय के रूप में इस्तेमाल करेंगे। लेकिन उन्हें कोई संदेश नहीं मिला। मूडी ने पाया कि यीशु ने हर अंतिम संस्कार को तोड़ दिया था जिसमें वह शामिल हुआ था।

मरकुस और लूका के अनुसार, यीशु ने याईर की बेटी के अंतिम संस्कार में कुछ कहा था। मरकुस 5:41 कहता है, "तलीता कूमी'; जिस का अर्थ यह है कि 'हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ।" शाब्दिक अनुवाद में, यीशु ने कहा, "हे छोटी भेड़, मैं तुझसे कहता हूँ, उठ।" कितना ही अवर्णनीय रूप से प्यारा संबोधन है यहः!

ग. प्रभु को महिमा कैसे मिली (9:26)

मत्ती ने अंत में एक टिप्पणी भी जोड़ी: "और इस बात की चर्चा उस सारे देश में फैल गई।।"

IX. संदेह पर सामर्थ्य (9:27-31)

क. दो अंधे लोग (9:27)

दो अंधे लोग प्रभु के पीछे-पीछे याईर के घर से शमौन पतरस के घर तक गए। पूरे रास्तेभर वे यह पुकारते हुए चले: "हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।" उनकी दोहाई ने उनके इस विश्वास पर जोर दिया कि यीशु ही वास्तव में मसीहा था।

शायद एक कारण यह था कि उसने उन्हें तुरंत चंगा नहीं किया, यह इस तथ्य पर आधारित था कि वे उसके मसीहा होने पर विश्वास करते थे। दो ऐसे लोगों को पाकर उसका मन खुश हो गया जो वास्तव में और सच्चे मन से इस बात पर विश्वास करते थे। इतने सारे लोग उस पर केवल आधे-अधूरे ही विश्वास करते थे, इसके बावजूद कि उसने क्या कहा और क्या किया था। हालाँकि भीड़ याईर की बेटी के जी उठने को लेकर उत्साहित थी, फिर भी उन्हें इस बात का कोई वास्तविक विश्वास नहीं था कि इस्राएल का वायदा किया हुआ मसीहा आखिरकार आ गया है। इसलिए उसने दो अंधे लोगों को अपने संदेश को घोषित करने दिया - उसने शारीरिक रूप से अंधे लोगों को आत्मिक रूप से अंधे लोगों को यह बताने दिया कि वही दाऊद की संतान था। भीड़ में शामिल लोगों का अंधापन उन दो लोगों के अंधेपन से कहीं अधिक था; अन्यथा वे सभी उसे दाऊद की संतान घोषित कर रहे होते।

यीशु को दाऊद की संतान इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसकी प्रतिज्ञा सीधे दाऊद से की गई थी (2 शमूएल 7:12,16) और क्योंकि वही दाऊद के सिंहासन का उत्तराधिकारी था। यह उपाधि मत्ती में नौ बार आती है, जबकि पहली बार यीशु की वंशावली में इसे पाते हैं। मत्ती यहूदियों को यह विश्वास दिलाने के लिए दृढ़-संकल्पित था कि जिसको उन्होंने मार डाला था, वही वास्तव में उनका मसीहा था। दूसरी बार यह 9:27 में आता है; यहाँ मत्ती ने अंधे लोगों के शब्दों को उठाया और उन्हें उन बेचारे अंधे इस्राएल के लिए अपने सुसमाचार में लिखा (रोमियों 11:25)। अंत में यीशु ने अविश्वासियों को चुप कराने के लिए खुद इस उपाधि का इस्तेमाल किया (मत्ती 22:42-46)।

ख. दो विश्वास करने वाले पुरुष (9:28-30a)

पवित्रशास्त्र के इस भाग में तीन प्रकार की क्रियाएँ हैं: परखना, भरोसा करना, छूना। यहाँ हम उन अंधे लोगों के विश्वास को देखते हैं।

निस्संदेह वे दोनों व्यक्ति यह नहीं समझ पाए कि यीशु ने रास्ते में रुककर उन्हें क्यों नहीं चंगा किया, लेकिन वे हार मानने वालों में से नहीं थे, बल्कि अधिक दृढ़ थे। उनके विश्वास का मजबूत लोहा उनकी ज़रूरतों के कारण अधिक ठोस और मज़बूत हो गया था। संभवतः भीड़ ने उन्हें चुप कराने की कोशिश की होगी क्योंकि उनका शोर उन्हें परेशान कर रहा था, लेकिन अंधे लोग चुप रहने से बार बार इनकार कर रहे थे। विरोध के बावजूद और अपने आलोचकों को नज़र-अंदाज़ करते हुए, वे दाऊद की संतान से दया की गुहार लगाते रहे।

अपनी पुकार को लगातार दोहराते हुए, वे अंधे लोग पतरस के घर में जबरन घुस गए। यीशु ने आखिरकार उनकी ओर देखा। उन्हें अपने मन की बात कहने की अनुमति देने के बाद, उसने उनको परखा: "क्या तुम्हें विश्वास है, कि मैं यह कर सकता हूँ?" (9:28) अपने पहले के चमत्कारों को करते समय, यीशु ने कभी उन ज़रुरतमंदों को परखने के बारे में इतना उत्साह कभी नहीं दिखाया था। लेकिन अब जब उसके दावों के सबूत जमा हो रहे थे, तो उसने विश्वास के अधिक निश्चित बयान की मांग की। उन अंधे लोगों की ओर से जवाब भी तुरंत मिल गया। उन्हें किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं था। अगर वह मृतकों को जीवित कर सकता है, तो वह अंधेपन को भी ठीक कर सकता है। "हाँ, प्रभु," उन्होंने उत्सुकता के साथ जवाब दिया। तब उनकी आँखों को छूते हुए, उसने कहा, "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो।" (9:29)।

ग. दो आशीषित लोग (9:30b-31)

जब यीशु ने वह रूपांतरित करने वाला वचन बोला, तो वे विश्वास करने वाले लोग आशीषित हो उठे। "उनकी आंखे खुल गई और यीशु ने उन्हें चिताकर कहा; सावधान, कोई इस बात को न जाने" (9:30)। खतरा यह था कि अब वे मसीहा की बजाय उस चमत्कार के बारे में बात करना शुरू कर सकते थे। प्रभु के विचार में चमत्कार के बारे में बात करना उचित नहीं था। उसने कभी चमत्कारों पर अपना ज्यादा भरोसा नहीं रखा। ऐसा लग रहा था कि वह कह रहा हो, "यह चमत्कार नहीं है जो तुम्हारे विचारों में भरना चाहिए। तुम्हारे विचार मेरी बातों से भरे होने चाहिए।" प्रभु का आदेश हमारे समय के लिए भी एक महत्वपूर्ण वचन है, क्योंकि ऐसा लगता है कि चमत्कारों के प्रति लोगों में हद से ज्यादा लालसा भरी है।

लेकिन दुःख की बात यह है कि वे अंधे लोग फंदे में फंस गए। मत्ती के विवरण में अधीरता का एक नोट शामिल है: "पर उन्होंने निकलकर सारे देश में उसका यश फैला दिया" (9:31)।

X. गूंगेपन पर अधिकार (9:32-34)

"जब वे बाहर जा रहे थे, तो देखो, लोग एक गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी उस के पास लाए" (9:32)। यहाँ मामला और कारण एक साथ थे। वह आदमी बोलने में असमर्थ था; उसकी असमर्थता एक दुष्टात्मा के कारण थी जिसने उसे ग्रस्त कर रखा था। बाइबल 9:32 में दिए गए कथनों के लिए कोई माफी नहीं मांगती। तथ्य यह था कि उस आदमी की समस्या किसी जैविक कमी के कारण नहीं, बल्कि एक शत्रुतापूर्ण बाहरी बुद्धि के कारण थी जिसने उसे जकड़ रखा था और उसे बंधन में बाँध रखा था।

आधुनिक लोगों के पास इस तरह के स्पष्टीकरण के लिए बहुत कम धैर्य होता है। उसके लिए हर चीज का कोई अलौकिक भौतिक या मनोवैज्ञानिक कारण होना चाहिए। वह सिवाय काल्पनिक कहानियों या सनसनीखेज डरावनी फिल्मों के, कभी भी दुष्टात्माओं के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता। लेकिन दुष्टात्माएं वास्तविक हैं और उसी तरह दुष्टात्माओं का कब्ज़ा भी।[8]

ये वे लोग थे जो अंधेपन से ठीक हो चुके थे और एक गूंगे आदमी को यीशु के पास लेकर आए जब वे पतरस के घर से “बाहर जा रहे थे।” यह बेचारा आदमी इतना पागल हो चुका था कि वह खुद वहाँ नहीं आ सकता था। यीशु ने उससे कोई सवाल नहीं किया और न ही विश्वास के बारे में कुछ कहा। हम यहाँ सिर्फ़ चंगाई के बारे में पढ़ते हैं। प्रभु ने लक्षणों पर ध्यान नहीं दिया; वह सीधे समस्या के कारण पर गया और उस दुष्टात्मा से निपटा।

जब शैतान को बाहर निकाल दिया गया तो वह आदमी बोलने लगा। हम यह विचार किए बिना नहीं रह सकते कि उसने तब क्या कहा होगा। मत्ती ने हमें वही बताया जो दूसरों ने भी बताया। साधारण लोगों ने आश्चर्य से प्रतिक्रिया दी। "और भीड़ ने अचम्भा करके कहा कि इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया" (9:33)।

लेकिन फरीसियों को बिल्कुल आश्चर्य नहीं हुआ। इसकी बजाय उन्होंने एक भयानक दावा किया: "यह तो दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है" (9:34)। अगर यह कथन किसी अन्यजातीय मूर्तिपूजक ने कहा होता, तो यह काफी बुरा होता। लेकिन ये शब्द इस्राएल के धार्मिक अगुवों द्वारा कहे गए थे, जो विश्वास और नैतिकता के मामलों में रूढ़िवादी पक्ष के थे - अर्थात् कट्टरपंथी! इसलिए यीशु ने उन्हें अनदेखा कर दिया।

पद 34 मत्ती द्वारा इस्राएल में चल रही घटनाओं का पहला स्पष्ट संकेत है। गूंगे आदमी का चंगा होना चमत्कारों की एक श्रृंखला में अंतिम है जिसका हवाला उसने राजा की सामर्थ्य को प्रमाणित करने के लिए दिया। और इसकी प्रतिक्रिया क्या थी? फरीसियों ने शैतान को इस सामर्थ्य का श्रेय दिया। बाद में (अध्याय 12) मत्ती ने दिखाया कि जब अंतिम चौराहे पर उन्होंने फिर से ऐसा किया तो क्या हुआ। अध्याय 9 में उसने केवल यहूदी धार्मिक अगुवों के अटल अविश्वास के प्रमाण के रूप में इस भयानक कथन का उल्लेख किया, भले ही उनके सामने इस बात के अकाट्य प्रमाण हों कि यीशु ही प्रभु और मसीहा दोनों था।

इस श्रृंखला में यह अंतिम चमत्कार - दुष्टात्मा के बाहर निकलते ही गूंगे आदमी द्वारा बोला जाना - भविष्य के महान छुटकारे का पूर्वाभास देता है जब प्रभु स्वयं शैतान को और उसके सभी दूतों को इस संसार से बाहर निकाल देगा। तब यह गूंगी धरती, जिसने अपने सृष्टिकर्ता से अपनी प्रशंसा रोक रखी है और इतने लंबे समय से अपनी पीड़ा को मामूली स्वर में रोकर व्यक्त कर रही है, खुशी से आनंद के गीत गाने लगेगी (रोमियों 8:19-22)।

XI. अविश्वास पर अधिकार (9:35-38)

प्रभु के गलील के पहले दौरे (मत्ती 4:23-25) में उसके साथ उसके कुछ चेले भी थे। दूसरे दौरे (8:5-9:1) में उसके साथ सभी बारह चेले भी थे, जो प्रेरितों के रूप में उसके साथ थे। अब हम उसके तीसरे दौरे की ओर आते हैं, जिसमें बारह चेलों को उसकी सेवकाई में सहयोग देने के लिए भेजा गया था।

क. मसीह का आदेश (9:35)

1. वह जहाँ गया (9:35a)

यीशु हर जगह और यहूदी लोगों के सभी वर्गों के पास गया। उसने नगरों की ओर अपना रास्ता बनाया जहाँ बड़ी संख्या में लोगों को नगरीय जीवन की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। यीशु सभी सरकारी, वित्तीय, उच्च शिक्षा, उद्योग, कला, खेल, विज्ञान, धर्म, मनोरंजन और यहाँ तक कि अपराध के इन केंद्रों में गया। वह गाँवों में भी गया, उन छोटी-छोटी दूर-दराज की बस्तियों में जहाँ एक आदमी की पूरी दुनिया उसकी झोपड़ी, उसकी गाय और उसके मकई के खेत हुआ करते थे। वे स्थान यीशु के लिए नगरों जितने ही महत्वपूर्ण थे।

यीशु के लिए कोई भी बहुत अधिक सभ्य नहीं था; कोई भी बहुत अधिक संकीर्ण नहीं था। वह उस सुसंस्कृत और शिक्षित निकुदेमुस के साथ उतना ही सहज था जितना कि वह उस बहिष्कृत जक्कई के साथ था। प्रभु शमौन कोढ़ी के घर उतनी ही उत्साह के साथ गया जितनी तत्परता से वह शमौन फरीसी और शमौन पतरस के घर गया था। सभी लोग उसके मन में समान रूप से स्थान पाए हुए थे।

2. वह क्यों गया (9:35b-c)

क. सबको सिखाने के लिए (9:35b)

यीशु मुख्य रूप से आराधनालयों की ओर आकर्षित था, क्योंकि वे स्वाभाविक रूप से लोगों के एकत्रित होने के स्थान थे। वहाँ वह उन लोगों से मिल सकता था जो आराधना करने, भजन गाने और पवित्रशास्त्र सुनने के लिए आते थे। वहाँ वह आने वाले हर व्यक्ति को राज्य के सुसमाचार का उपदेश और प्रचार कर सकता था।

ख. ताकि हर किसी तक पहुंचा जाए (9:35c)

उसने हर उस व्यक्ति को चंगा किया जो किसी ज़रूरत के साथ उसके पास आया। मत्ती ने "हर" शब्द को दोहराया: "यीशु सब नगरों में फिरता रहा...और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।" (सभी तथाकथित विश्वास के चंगा करने वाले इस पर ध्यान दें।) हर किसी तक पहुंचना बहुत ज़रूरी था। धार्मिक अगुवों ने अपने दिलों को कठोर कर लिया था, लेकिन साधारण लोगों द्वारा अभी भी निर्णय लेना बाकी था। अब अपनी सेवकाई के दायरे को बढ़ाने का समय आ चुका था।

ख. मसीह का तरस (9:36)

प्रभु ने मनुष्यजाति की भीड़ को देखा और वह मनुष्यजाति के दुख को देखकर व्याकुल हो उठा। उसका हृदय सभी के प्रति तरस से भर गया। वे थके हुए थे - "वे व्याकुल थे," मत्ती ने लिखा। ("व्याकुल" के लिए अनूदित शब्द कभी-कभी "परेशान थे" इस्तेमाल किया जाता है।) वे "भटके हुए थे, बिना चरवाहे की भेड़ों की तरह" - वे खोए हुए, अकेले, संकट में और बेसहारा थे। प्रभु उनकी दुर्दशा से स्वयं व्याकुल हुआ। उसकी प्रतिक्रिया केवल पृथ्वी के लाखों लोगों की स्थिति का बौद्धिक मूल्यांकन नहीं थी। उसकी प्रतिक्रिया एक कोमल चरवाहे, भेड़ों के महान चरवाहे की थी। अंधे पुरुषों ने उसे दाऊद की संतान कहा था और वह

था भी वही; लेकिन दाऊद, यद्यपि तेईसवें भजन का लेखक था, अपने इस सुदूर पुत्र जितना महान चरवाहा नहीं बन पाया था।

प्रभु ने खोए हुए लोगों को ऐसे देखा जिनके पास कोई वास्तविक लक्ष्य नहीं था। वे भेड़ों की तरह "भटके हुए से" थे। भेड़ें न तो मजबूत होती हैं, न ही होशियार, न ही तेज़। वे कुछ हद तक मूर्ख भी होती हैं, उनमें भटकने और लक्ष्यहीन रूप से दूर-दूर तक भटकने की प्रवृत्ति होती हैं। खोई हुई भेड़ों का कोई लक्ष्य नहीं होता, कोई सहज ज्ञान नहीं होता जो उन्हें झुंड में वापस ला सके। यीशु ने खोए हुए लोगों को भेड़ों के रूप में देखा जो जीवन में इधर-उधर भटकती रहती हैं, उन्हें इस बात का कोई बोध नहीं होता कि यह सब कहाँ ले जाता है और कहाँ समाप्त होता है।

उसने उन्हें ऐसे भी देखा जैसे उनके पास कोई सच्चा मार्गदर्शक न हो, "वे उन भेड़ों के समान थे जिनका कोई रखवाला न हो।" तो उनके पास क्या था? उनके पास फरीसी, सदूकी, शास्त्री और रब्बी थे। लेकिन वे लोग भी उतने ही भटके हुए थे जितने कि वे लोग जिन्हें वे अगुवाई देने की कोशिश कर रहे थे।

आज भी दुनिया वैसी ही है। साम्यवाद और मानवतावाद से अंधे हुए लोग आत्मिक जंगल में भटक रहे हैं। लाखों लोग बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और इस्लाम के झूठे पंथों को मानते हुए नष्ट हो जाएंगे या मसीहत के भीतर झूठी शिक्षाओं को सुनते हुए अनंत अंधकार में भटक जाएंगे। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हम प्रभु के तरस के बारे में पढ़ते हैं।

पृथ्वी पर रहने वाला हर आदमी, औरत, लड़का और लड़की उसकी हार्दिक चिंता का विषय है। वह एक निर्धन स्त्री को उसकी मदद किए बिना उसे अकेलेपन और बढ़ती निराशा में बारह साल तक एक दुर्बल और परेशान करने वाली बीमारी से जूझते हुए नहीं देख सकता था। वह एक बेसहारा दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति को उसे चंगा किए बिना यूँहीं बोलने में असमर्थ नहीं छोड़ सकता था। वह स्वर्ग से खोई हुई मानवता को देखकर अपने पिता से यह कहे बिना नहीं रह सकता था, "मैं यहाँ हूँ; मुझे भेज।" उसके मन में सभी मानव संतानों के लिए तरस भरा है और हमें भी ऐसा ही होना चाहिए।

ग. मसीह की विवशता (9:37-38)

1. समस्या (9:37)

प्रभु ने समस्या को स्पष्ट किया। "तब उस ने अपने चेलों से कहा, पक्के खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं।" वही स्थिति अभी भी हैं। कलीसिया के लिए शर्मनाक बात यह है कि अनगिनत लोग अभी भी सुसमाचार से वंचित हैं। आज भी हज़ारों भाषा समूहों के पास पवित्रशास्त्र की एक भी पद नहीं है और हज़ारों लोगों के पास अपनी भाषा में बाइबल के बहुत कम लेख हैं।

2. प्रार्थना (9:38)

समस्या के लिए प्रभु का समाधान क्या था? "इसलिये खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये मजदूर भेज दे" खेत का स्वामी पवित्र आत्मा है। भेजना उसका काम है - हमारा काम जाना है। बिना भेजे जाने से घर पर रहना बेहतर होगा (नए नियम के शानदार उदाहरण के लिए प्रेरितों के काम 13:13 को देखें, यूहन्ना मरकुc)। खेत के स्वामी से विनती की जानी चाहिए कि वह मजदूरों को भेजे। वह

इस तरह के निवेदनों को स्वीकार करने के लिए बहुत उत्साहित है, लेकिन माँगने वालों को सावधान रहना चाहिए - उसे सबसे पहले भेजा जा सकता है। अगर पवित्र आत्मा भेजता है, तो घर पर रहने से कहीं बेहतर है कि उस बुलाहट को सुनकर निकल पड़े।

भाग 2: राजा का विरोध किया जाता है

मत्ती 10:1-16:12

खंड 1

विरोध की भविष्यद्वाणी (10:1-42)

1. सेवा के लिए तैयारी (10:1-15)
    1. स्वामी (10:1)
        1. अपने चेलों पर उसका प्रभुत्व
        2. हानिकारक दुष्टात्माओं पर उसका प्रभुत्व
        3. मानवीय रोगों पर उसका प्रभुत्व
    2. बारह पुरुष (10:2-4)
        1. प्रभु ने उन्हें कैसे नियुक्त किया (10:2a)
        2. प्रभु ने उन्हें कैसे जोड़ों में बाँटा (10:2b-4)
            1. भाई (10:2b-c)
                1. शमौन, जो पतरस कहलाता है; और अन्द्रियास (10:2b)
                2. याकूब और यूहन्ना, जब्दी के पुत्र (10:2c)
            2. मित्र (10:3a-b)
                1. फिलिप्पुस; और बरतुल्मै (नतनएल) (10:3a)
                2. थोमा; और महसूल लेने वाला मत्ती, जिसे हलफई का पुत्र लेवी भी कहा जाता है (10:3b)
            3. अज्ञात (10:3c)

            हलफई का पुत्र याकूब; और तद्दै जो याकूब का भाई यहूदा भी कहलाता था,

            4. विपरीत स्वभाव वाले (10:4)

            शमौन कनानी, जो जेलोतेस भी कहलाता था; और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे पकड़वा भी दिया
    3. मिशन (10:5-6)
        1. सीमित (10:5)
        2. स्थानीय (10:6)
    4. सन्देश (10:7)
    5. चमत्कार के काम (10:8)
        1. कोई असफलता नहीं होनी थी (10:8a-d)
            1. रोगी (10:8a)
            2. उजड़े हुए (10:8b)

3. मृत (10:8c)
4. दुष्टात्माग्रस्त (10:8d)

2. कोई भुगतान नहीं था (10:8e)

6. धन (10:9-10)

1. प्रेरितों के संसाधनों की मनाही (10:9-10a)
2. प्रेरितों के पारिश्रमिक का वायदा (10:10b)

7. तरीका (10:11-15)

1. उन्हें कहाँ रहना चाहिए (10:11-13)

1. एकमात्र आवश्यकता (10:11)
2. आत्मिक प्रतिफल (10:12-13)

2. उन्हें क्यों निकल जाना चाहिए (10:14-15)

1. कारण (10:14a)
2. शाप (10:14b-15)

1. एक गंभीर कार्य (10:14b)
2. एक गंभीर तथ्य (10:15)

2. कष्ट के लिए तैयारी (10:16-42)

1. प्रेरितों के शत्रु (10:16-25)

1. प्रभु का प्रोत्साहन (10:16)

1. उनका खतरा (10:16a)
2. उनकी समझदारी (10:16b)
3. उनका स्वभाव (10:16c)

2. प्रभु की अपेक्षा (10:17-23)

1. शत्रुता (10:17-18)

1. इस्राएली रब्बियों से (10:17)
2. अन्यजातीय शासकों से (10:18)

1. उच्च पद (10:18a)
2. सर्वोच्च तर्क (10:18b)

2. आत्म-ज्ञान (10:19-20)

1. अपने स्रोत में अलौकिक (10:19)
2. अपनी सामर्थ्य में उत्कृष्ट (10:20)

3. धीरज (10:21-23)

1. धिक्कार (10:21-22a)

1. घर में कोई शांति नहीं (10:21)
2. छिपने का कोई स्थान नहीं (10:22a)

2. उपदेश (10:22b)
3. स्पष्टीकरण (10:23)

1. एक सोची-समझी नीति (10:23a)
2. एक ईश्वरीय उद्देश्य (10:23b)

3. प्रभु का उदाहरण (10:24-25)
1. हमारे लिए नियम (10:24-25a)
1. सैद्धांतिक रूप में (10:24)
2. अभ्यास में (10:25a)
2. उसका तिरस्कार (10:25b-c)
1. यह कितना भयानक था (10:25b)
2. यह कितना अमल करने योग्य है (10:25c)

2. प्रेरितों का डर (10:26-39)
1. साहस के लिए प्रेरणा (10:26-33)
1. नैतिक साहस: बोलने का साहस (10:26-27)
1. याद रखने योग्य ईश्वरीय नियम (10:26)
2. ईश्वरीय प्रकाशन प्राप्त किया जाना है (10:27)
2. शारीरिक साहस: मसीह के लिए मरना (10:28)
1. गलत व्यक्ति जिनसे डरना चाहिए (10:28a)
2. सही व्यक्ति जिनसे डरना चाहिए (10:28b)
3. आत्मिक साहस: परमेश्वर पर भरोसा रखना (10:29-33)
1. परमेश्वर की सर्वव्यापकता (10:29)
2. परमेश्वर की सर्वज्ञता (10:30)
3. परमेश्वर की सर्वसामर्थ्यत्ता (10:31-33)
1. सापेक्ष मूल्य (10:31)
2. वास्तविक मूल्य (10:32-33)
1. किसकी तलाश करें (10:32)
2. किन बातों से दूर रहें (10:33)
2. समझने के लिए प्रेरणा (10:34-36)
1. यथार्थवादी चेतावनी (10:34)
2. प्रकट वचन (10:35-36)
1. एक गंभीर संभावना (10:35a)
2. एक ऐसी ही भविष्यद्वाणी (10:35b-36)
3. समर्पण के लिए प्रेरणा (10:37-39)
1. वेदी पर प्रेम (10:37)
2. वेदी पर जीवन (10:38-39)
1. संभावना (10:38)
2. सिद्धांत (10:39)

3. प्रेरितों के अनुयायी (10:40-42)

1. ग्रहण करने की प्रक्रिया (10:40)
    1. मनुष्य को ग्रहण करो और तुम प्रभु को ग्रहण करोगे (10:40a)
    2. जो बचाता है उसे ग्रहण करो और जो भेजता है उसे ग्रहण करो (10:40b)
2. प्रतिफल का वायदा (10:41-42)
    1. पहचान का सवाल (10:41)
        1. परमेश्वर के सेवकों में से एक के साथ पहचान (10:41a)
        2. परमेश्वर के पवित्र लोगों में से एक के साथ पहचान (10:41b)
    2. क्षतिपूर्ति का प्रश्न (10:42)
        1. प्रतीक कितना छोटा है (10:42a)
        2. सत्य कितना निश्चित है (10:42b)

खंड 1: विरोध की भविष्यद्वाणी (10:1-42)

फरीसियों ने मसीह पर शैतान की सामर्थ्य से चमत्कार करने का आरोप लगाया था (9:34)। साधारण लोग, हालांकि उसके चमत्कारों के बारे में उत्साहित थे, फिर भी वे इस बारे में अनिश्चित थे कि मसीह कौन था। यह स्पष्ट था कि प्रभु के पक्ष में कोई राष्ट्रीय आंदोलन नहीं होने वाला था। ज्वार अपने चरम पर था। जल्द ही उतार-चढ़ाव शुरू होने वाला था और यह क्रूस पर जाकर अपने चरम पर होने वाला था। प्रभु को उस विरोध का पूरा आभास था, जब उसने बारह पुरुषों को नियुक्त करना शुरू किया था। जैसे ही उसने उन्हें भेजा, उसने राजा के प्रति प्रतिरोध को पहले से ही बता दिया। इस प्रकार भाग दो के इस शुरुआती भाग में हमारे पास सेवा के लिए तैयारी के साथ साथ पीड़ा के लिए तैयारी भी हैं।

I. सेवा के लिए तैयारी (10:1-15)

क. स्वामी (गुरु) (10:1)

हमारा ध्यान सबसे पहले गुरु के अपने चेलों के दुष्टात्माओं और बीमारियों पर पूर्ण प्रभुत्व की ओर आकर्षित होता है। अब उसने चेलों को वही सामर्थ्यशाली कार्य प्रदर्शित करने के लिए सशक्त बनाया जो वह स्वयं प्रदर्शित कर रहा था। उन्हें भी केवल इस्राएल राष्ट्र की ही सेवा करनी थी। यह महत्वपूर्ण है। प्रभु के दिनों में और बाद में प्रेरितों के दिनों में भी चिह्न मुख्य रूप से यहूदियों के लिए थे (1 कुरिन्थियों 1:22)। विशेष रूप से, चिह्न उन अविश्वासी यहूदियों के लिए थे (1 कुरिन्थियों 14:21-25)।[1]

जैसा कि मत्ती 10 में बताया गया है, प्रभु द्वारा इस्राएल को राज्य की पेशकश अभी भी की जा रही थी। इस बुलाहट को विस्तृत करने के लिए, उसने अपने चेलों को नियुक्त किया और उन्हें प्रचार और चिह्नों के द्वारा राज्य की घोषणा करने के लिए भेजा।

ख. बारह पुरुष (10:2-4)

1. प्रभु ने उन्हें कैसे नियुक्त किया (10:2a)

मत्ती ने इन लोगों को "प्रेरित" कहा और यह पहली बार था जब यह उपाधि उन पर लागू की गई थी। वे अब चेलों से कहीं बढ़कर थे। वे राजा के राजदूत थे, जिनका काम उसका प्रतिनिधित्व करना, उसका वचन बोलना और उसके द्वारा दी गई सामर्थ्य के प्रमाण को प्रस्तुत करना था।

2. प्रभु ने उन्हें कैसे जोड़ों में बाँटा (10:2b-4)

नए नियम में बारह प्रेरितों की चार सूचियाँ हैं: सुसमाचारों में तीन (मत्ती 10:2-4; मरकुस 3:16-19; लूका 6:14-16) और प्रेरितों के काम में एक (प्रेरितों के काम 1:13, 26)। नामों का क्रम अलग-अलग है। हालाँकि, उन्हें हमेशा तीन समूहों में दिया जाता है, और प्रत्येक समूह में पहला नाम हमेशा एक ही होता है: पतरस, फिलिप्पुस और हलफई का पुत्र याकूब। अन्य नाम क्रम में भिन्न होते हैं, लेकिन हमेशा एक ही समूह में होते हैं।

प्रभु ने उन्हें जोड़े में रखा क्योंकि वह उन्हें दो-दो करके भेजने वाला था (मरकुस 6:7)। उदाहरण के लिए पतरस को उसके भाई अन्द्रियास के साथ जोड़ा गया। याकूब को उसके भाई यूहन्ना के साथ जोड़ा गया। शमौन जेलोतेस को यहूदा इस्करियोती के साथ जोड़ा गया।

निस्संदेह प्रभु ने इसे उस के साथ रखकर बुद्धिमानी की, लेकिन मुझे आश्चर्य है कि शमौन जेलोटेस ने यहूदा इस्करियोती के साथ कैसे तालमेल बिठाया होगा। शायद शमौन यहूदा से ज़्यादा कठोर स्वभाव का था और इसी कारण से उसे उसके साथ रहने के लिए चुना गया था। वे दोनों किस बारे में बात करते थे? शायद जब हम स्वर्ग पहुँचेंगे, तो शमौन हमें बताएगा।

क. भाई (10:2b-c)

(1) शमौन, जो पतरस कहलाता है; और अन्द्रियास (10:2b)

भाइयों के दो समूह थे, पहला जोड़ा पतरस और अन्द्रियास का था। प्रेरितों की सभी चार सूचियों में पतरस का नाम सबसे पहले आता है और वह प्रभु के चेलों में सबसे प्रमुख था। बैतसैदा का निवासी और यूहन्ना नामक व्यक्ति का पुत्र, उसे मूल रूप से शमौन कहा जाता था (यूहन्ना 1:42,44; 21:15)। पतरस ने नवजात कलीसिया में शुरुआती अगुवाई प्रदान की और उसे ही सबसे पहले यहूदियों और फिर अन्यजातियों के लिए मसीहत के द्वार को खोलने की कुंजियाँ दी गईं (प्रेरितों के काम 2; 10)। हालाँकि, यह विचार कि उसे अन्य प्रेरितों और कलीसिया में प्राथमिकता प्राप्त थी, एक रोमी कैथोलिक मिथक है (1 पतरस 5:1-4)। प्रेरित पौलुस ने परिस्थिति की माँग के अनुसार उसे उसके स्थान पर रखने में या डांटने में बिल्कुल भी संकोच नहीं किया (गलातियों 2:9-14)।

पतरस को उसका भाई अन्द्रियास मसीह के पास लाया था, जो एक प्रेममय दलायु व्यक्ति था। हम सुसमाचारों में तीन मौकों पर अन्द्रियास को प्रमुखता प्राप्त करते हुए देखते हैं; हर बार वह किसी को यीशु के पास ला ही रहा था।

(2) याकूब और यूहन्ना, जब्दी के पुत्र (10:2c)

याकूब और यूहन्ना, भाइयों का दूसरा समूह, जब्दी के पुत्र और प्रभु के चचेरे भाई थे। यह क्या ही आग उगलने वाली जोड़ी थी! यीशु ने एक बार उन्हें "गर्जन के बेटे" के रूप में संबोधित किया था (मरकुस 3:17)। उनका गतिशील प्रभाव इस तथ्य से स्पष्ट है कि हेरोदेस ने याकूब को जल्दी ही मार डाला और उसे शहीद का ताज पाने वाले प्रेरितों में से पहला बना दिया (प्रेरितों के काम 12:2)। यूहन्ना अन्य सभी प्रेरितों से अधिक समय तक जीवित रहा - ऐसा माना जाता है कि वह इफिसुस में चौरानबे वर्ष की आयु में मरा था। हम एक शानदार सुसमाचार, तीन पत्रियों और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लिए उसके आभारी हैं।

ख. मित्र (10:3a-b)

(1) फिलिप्पुस; और बरतुल्मै (नतनएल) (10:3a)

पतरस और अन्द्रियास की तरह, फिलिप्पुस भी बैतसैदा से आया था (यूहन्ना 1:44)। (प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्राचीन/सुसमाचारक के रूप में वर्णित फिलिप्पुस यह चेला नहीं है।) उसके मित्र बरतुल्मै की पहचान आमतौर पर नतनएल से की जाती है, उसका पूरा नाम नतनएल बरतुल्मै है। प्रभु ने नतनएल का वर्णन इस प्रकार किया "यह सचमुच इस्त्राएली है: इस में कपट नहीं" (यूहन्ना 1:47)! हम इस वाक्य को इस प्रकार से बदल सकते हैं "वास्तव में एक इस्राएली, जिसमें कोई याकूब नहीं है!"

फिलिप्पुस ही वह व्यक्ति था जो नतनएल को यीशु के पास लेकर आया था। जब फिलिप्पुस ने उसे पहली बार बताया कि उन्हें मसीहा मिल गया है और उसका नाम यीशु नासरी है, तो नतनएल को संदेह हुआ। लेकिन एक बार जब नतनएल मसीह से मिला, तो उसने तुरन्त उसे परमेश्वर का पुत्र और इस्राएल का राजा मान लिया (यूहन्ना 1:49)।

नतनएल ने नासरत के बारे में अपमानजनक बातें कहीं, भले ही वह एक गलीली था और नासरत गलील का ही एक नगर था। वह नगर को अच्छी तरह से जानता था क्योंकि वह काना के पड़ोसी गाँव में रहता था। जिस दृढ़ता के साथ प्रभु के शत्रुओं ने उसके नाम के साथ नासरी की उपाधि जोड़ दी, उससे पता चलता है कि नगर के प्रति एक असामान्य उपाय से दुर्भावना निर्देशित की गई थी। नासरत पहला ऐसा नगर था जिसने यीशु के प्रति अपने हिंसक प्रवृत्ति को प्रकट किया, और वह भी उसके दावों के बारे में केवल एक दिन के परिचय के आधार पर।

(2) थोमा; और महसूल लेने वाला मत्ती (10:3b)

मत्ती ने विनम्रतापूर्वक खुद को "महसूल लेने वाला" बताया, इस प्रकार उसने उस अतुलनीय अनुग्रह को स्वीकार किया जिसने उसे सेवकाई में रखा। धन के लोभी उस महसूल लेने वाले और चमत्कार करने वाले प्रेरित के बीच कितना बड़ा अंतर है! उसे "हलफई का बेटा लेवी" भी कहा जाता था (मरकुस 2:14)। इस विवरण ने कुछ लोगों को यह अनुमान लगाने के लिए प्रेरित किया कि मत्ती और हलफई का पुत्र याकूब भाई थे, लेकिन यह केवल अनुमान हैं क्योंकि हलफई एक साधारण यहूदी नाम था।

यूहन्ना के सुसमाचार में थोमा के नाम के साथ दिदुमुस शब्द जुड़ा हुआ है। इस यूनानी शब्द का अर्थ है "जुड़वाँ", इसलिए कुछ लोगों का मानना है कि चूँकि मत्ती और थोमा का उल्लेख मत्ती 10:3 में एक साथ किया गया है, इसलिए वे दोस्त से कहीं अधिक बढ़कर थे - संभवतः वे जुड़वाँ थे। थोमा अपने निराशावादी

सोच और संदेहवाद के साथ-साथ प्रभु के प्रति अपनी निष्ठा के लिए भी सुसमाचारों में प्रमुख स्थान रखता है।

ग. अज्ञात (10:3c)

सूची में अगली जोड़ी याकूब (हलफई का पुत्र) और तद्दै है। हलफई नाम और क्लोपास नाम (यूहन्ना 19:25) एक ही इब्रानी मूल (हाल्फा) से आए हैं। हलफई के पुत्र याकूब को यूहन्ना के भाई याकूब से अलग करने के लिए याकूब कनिष्ठ भी बुलाया जाता है। संभवतः याकूब कनिष्ठ यूहन्ना के भाई याकूब से छोटा था। याकूब कनिष्ठ को प्रभु के भाई याकूब से भी अलग किया जाना चाहिए, जिसे हम प्रेरितों के काम में पाते हैं।

याकूब कनिष्ठ के साथी तद्दै के बारे में बहुत कम जानकारी दी गई है। उसे याकूब का भाई यहूदा भी कहा जाता है (लूका 6:16; प्रेरितों के काम 1:13) और इस्करियोती नहीं बल्कि यहूदा (यूहन्ना 14:22)।

घ. विपरीत स्वभाव वाले (10:4)

शमौन कनानी और यहूदा इस्करियोती एक हृदयचस्प जोड़ी को निर्मित करते हैं। शमौन, जिसे जेलोतेस भी कहा जाता है (लूका 6:15), एक जेलोती था।

जेलोतेस ने इस्राएल में एक चौथा दल बनाया, अन्य तीन दल फरीसी, सदूकी और एसेनी थे। व्यवस्था के प्रति उत्साही, शमौन के दल ने व्यवस्था को अपने हाथों में लेने के लिए अपने अधिकार के रूप में पीनहास (गिनती 25:7-8) और एलिय्याह (1 राजा 18:40) का उदाहरण दिया। उन्होंने उन लोगों को दंडित किया और उनकी हत्या कर दी जिन्हें वे अपराधी मानते थे। जैसे-जैसे यरूशलेम के पतन का समय करीब आता गया, जेलोतेस ने अपनी इच्छा को लागू करने के लिए बहुत कुछ किया और शायद किसी और से बढ़कर, नगर के विनाश में योगदान किया। उन्होंने किसी को भी राजा की उपाधि देने से इनकार कर दिया। वे अपने उद्देश्य के लिए किसी भी तरह की यातना या मौत का सामना करने के लिए तैयार थे; यहाँ तक कि वे स्वतंत्रता के संघर्ष में अपने प्रियजनों को मरते हुए देखने से भी नहीं कतराते थे। अपने देश को रोमी शासन से मुक्त करने की अपनी महत्वाकांक्षा में, जेलोतेस किसी की भी हत्या करने के लिए तैयार रहते थे।

यदि मत्ती की मुलाकात शमौन जेलोतेस से मसीह से मिलने से पहले हुई होती, तो शमौन उसे मारने के लिए पूरी तरह तैयार होता।

यीशु ने इस शमौन को यहूदा इस्करियोती के साथ जोड़ा, जिसने उसे धोखा दिया था। लूका 6:16 यहूदा को "पकड़वाने वाला" कहता है, यूहन्ना 6:71 उसे "शमौन का पुत्र [जिसका शमौन जेलोतेस से कोई संबंध नहीं]" के रूप में पहचानता है, और यूहन्ना 12:6 उसे "चोर" के रूप में वर्णित करता है। यूहन्ना ने आगे कहा कि उसके पास उनकी "थैली" रहती थी और उस में जो कुछ डाला जाता था, वह निकाल लेता था। "थैली" का अनुवाद ग्लोसोकोमोन है, जो पवन वाद्यों की जीभ या नरकटों को रखने के लिए एक थैले को संदर्भित करता है। शायद चेला बनने से पहले यहूदा दक्षिणी यहूदा के पहाड़ी जिले करियोत में एक चरवाहा था (संभव है कि इस्करियोती इब्रानी शब्द "करियोत का आदमी" से लिया गया हो सकता है)। थैले में शायद पूर्वी चरवाहों द्वारा पसंद किए जाने वाले बाँसुरी रखे गए होंगे। कोई भी कारण रहा हो, यहूदा इस्करियोती प्रभु के चेलों के समूह में एकमात्र यहूदी था। बाकी सभी गलीली थे। लेकिन वही एकमात्र पकड़वानेवाला भी था।

ग. मिशन (10:5-6)

इन बारह लोगों को अब यीशु ने यह आदेश दिया कि वे आगे बढ़कर इब्रानी लोगों को बताएं कि मसीहा आ गया है। उसका मिशन सीमित और स्थानीय स्तर पर था। उन्हें इस्राएल की सीमाओं से आगे जाने की मनाही थी: "अन्यजातियों की ओर न जाना, और सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना" (10:5)। यहूदी लोग मूर्तिपूजक राजमार्ग की धूल को भी अशुद्ध मानते थे। सामरिया की सड़कें साफ मानी जाती थीं, लेकिन जहाँ तक किसी भी संगति का सवाल था, सामरी लोग भी अन्यजातियों की तरह ही अशुद्ध माने जाते थे।

उन बारहों को अपने आप को "इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों" तक ही सीमित रखना था (10:6)। प्रभु का यह कहने का समय अभी नहीं आया था, "और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं; मुझे उनको भी लाना अवश्य है" (यूहन्ना 10:16)। यह मिशन पूरी तरह से यहूदी था। इसका उद्देश्य यहूदियों को सदियों से चले आ रहे बिखराव से बचने का एक और अवसर देना था, हज़ारों सालों के लिए राज्य का प्रस्ताव वापस लेने से पहले राजा को स्वीकार करने का एक और सुनहरा मौका देना था।

मत्ती 10 में दिया गया यह आदेश उसके समान नहीं है जो हमें दिया गया है। हमारी सेवकाई इस्राएल में यहूदियों तक सीमित नहीं है। हमें अन्यजातियों के पास जाने से मना नहीं किया गया है। हमें यात्रा के लिए सामान्य प्रावधान करने से मना नहीं किया गया है (10:9-10); यह खंड प्रभु द्वारा स्पष्ट रूप से रद्द कर दिया गया था (लूका 22:35-36)। हमें अपने पैरों पर से एक असंवेदनशील नगर की धूल झाड़ने के लिए नहीं कहा गया है (मत्ती 10:14)। हम आराधनालय और महासभा से डरते नहीं हैं (10:17)। यह मिशन तब के स्थान और अवधि के अनुसार सीमित था।

घ. सन्देश (10:7)

उन प्रेरितों को केवल यह घोषणा करनी थी: "स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।" और ऐसा ही हुआ - तब। यदि यहूदियों ने उस समय यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार कर लिया होता, तो दृश्यमान राज्य तुरन्त स्थापित हो जाता।[2] लेकिन उस संदेश को अनसुना कर दिया गया और राज्य का तत्काल प्रस्ताव वापस ले लिया गया। बाद में एक नए युग के लिए एक नया आदेश (28:18-20) दिया गया।

ङ. चमत्कार के काम (10:8)

1. कोई असफलता नहीं होनी थी (10:8a-d)

प्रेरितों को अपने संदेश को चमत्कारों के साथ प्रमाणित करने का अधिकार दिया गया था—ठीक वैसे ही चमत्कार जो यीशु ने किए थे। उन्हें बीमारों को चंगा करना था, कोढ़ियों को शुद्ध करना था, मृतकों को जीवित करना था, और दुष्टात्माओं को निकालना था।

यह हमारा काम नहीं है। हमें बीमारों को चमत्कारिक ढंग से ठीक करने या मृतकों को जीवित करने का कोई आदेश नहीं दिया गया है। जो लोग आज दावा करते हैं कि उनके पास चंगाई का वरदान है, वे धोखा खा रहे हैं और बदले में दूसरों को भी धोखा दे रहे हैं। यदि वे हमें यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उनके पास यह आदेश है, तो उन्हें हमें स्पष्ट, निर्विवाद प्रमाण देना होगा कि उनके पास मृतकों को जीवित करने की सामर्थ्य है; उन्हें मरे हुओं को जीवित करने दें। यीशु ने भी किया। पतरस ने किया। पौलुस ने किया। जब

सुसमाचार को यहूदी राष्ट्र के लिए अंतिम बुलाहट के रूप में अभी भी चिन्हों द्वारा प्रमाणित किया जा रहा था, तो चंगाई, दुष्टात्माओं को निकालने और मरे हुओं को जिलाना सभी साक्ष्य के रूप में थे।

यहाँ मुद्दा ईश्वरीय चंगाई का नहीं है। सभी चंगाई परमेश्वर की ओर से होती हैं। परमेश्वर के पास डॉक्टर की सहायता से या बिना उनकी सहायता के हमें चंगा करने की सामर्थ्य है। लेकिन हमारे पास चंगाई को अपना अधिकार समझने का कोई आधार नहीं है। आज कोई ईश्वरीय चंगाईकर्ता नहीं हैं। अगर ऐसा हैं, तो उन्हें बीमारों के पास जाना चाहिए - अस्पतालों में। उन्हें मरे हुओं के पास जाना चाहिए - कब्रिस्तानों में।

मत्ती 10 एक विशेष आदेश की बात करता है, एक विशेष दूतावास के लिए, एक विशेष लोगों के लिए, एक विशेष समय पर, एक विशेष स्थान पर, और एक विशेष उद्देश्य के लिए। चिह्न और चमत्कार राजा के राजदूतों के मोहर थे, जो उस समय हो सकते थे जब राज्य का युग हो सकता था। वहाँ कोई असफलता के लिए स्थान नहीं था। आश्चर्यकर्म करने का आदेश आधिकारिक था और इसमें किसी भी तरह का दिखावा, विशेष प्रभाव, हेरफेर, हाथ की सफाई, सामूहिक मनोविज्ञान, सम्मोहन और धोखाधड़ी के लिए कोई जगह नहीं थी।

2. कोई भुगतान नहीं था (10:8e)

यीशु ने कहा, "तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो।" चंगाई देने वाले को किसी भी तरह की प्रेम-भेंट नहीं देनी थी, प्रवेश पाने के लिए कोई शुल्क नहीं था, सेवकाई की मदद करने के लिए धन के लिए कोई उच्च दबाव वाली अपील नहीं करनी थी।

च. धन (10:9-10)

1. प्रेरितों के संसाधनों की मनाही (10:9-10a)

प्रभु ने धन के विषय को विस्तार से बताया। उसने प्रेरितों से कहा कि वे उठें और उसी समय चल पड़ें, जैसे वे थे। उन्हें अपने मिशन के लिए पहले से कोई प्रावधान नहीं करना था: "अपने पटुकों [धन की थैली] में न तो सोना, और न रूपा, और न तांबा रखना। मार्ग के लिये न झोली रखो, न दो कुरते, न जूते और न लाठी [चलने की छड़ियाँ] लो।" लूका के अनुसार उन्हें रोटी भी लेने से मना किया गया था (9:3)। "झोली" (पेरा) दरअसल एक भिखारी का थैला होता था जिसमें वह इकट्ठे किए गए दान डालता था। प्रेरितों को न तो अपना खर्च खुद उठाना था और न ही भीख माँगनी थी।

2. प्रेरितों के पारिश्रमिक का वायदा (10:10b)

प्रभु स्वयं प्रदान करेगा। वह चेलों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए लोगों का इस्तेमाल करेगा, लेकिन उन देने वालों के पीछे स्वयं प्रभु होगा। इसी समीकरण में अन्य कारक भी थे: वे बारह स्वयं यहूदी थे, यहूदियों के बीच घूमते थे, अपने लोगों की देखभाल करने के लिए दुनिया भर में ख्याति प्राप्त लोग थे; वे प्रेरित अपने देशवासियों का सम्मान और आभार जीतने के लिए की गई गणना की सामर्थ्य से सुसज्जित थे; और यह मिशन, अनिवार्य रूप से यहूदी होने के कारण, यहूदी भेदभाव की भावना को आसानी से नहीं भड़काएगा।

छ. तरीका (10:11-15)

1. एकमात्र आवश्यकता (10:11)

क. एकमात्र आवश्यकता (10:11)

प्रभु ने प्रेरितों को समझाया कि जब वे किसी नगर में प्रवेश करते हैं, तो उन्हें यह पता करना चाहिए कि कौन योग्य है और उस घर में ठहरने के लिए पूछना चाहिए। एक बार जब वे किसी स्थान पर बस जाते हैं, तो उन्हें अपने ठहरने की अवधि के दौरान उसी के घर में रहना चाहिए और अन्य ऐसे स्थानों पर नहीं जाना चाहिए जहाँ शायद बेहतर लाभ दिखते हो।

ख. आत्मिक प्रतिफल (10:12-13)

मेज़बान और उसके घर को आत्मिक रूप से आशीष दी जाएगी, क्योंकि प्रेरितों द्वारा उस घर पर कल्याण का आशीर्वाद देना था। प्रभु ने स्वयं पर किए गए ऐसे कार्य का सम्मान करने का वादा किया है, और वह किसी भी व्यक्ति का कर्ज़दार नहीं है।

2. उन्हें क्यों निकल जाना चाहिए (10:14-15)

हर कोई प्रेरितों का खुले मन से स्वागत नहीं करेगा। अगर वे किसी ऐसे घर या नगर में आते जो उन्हें स्वीकार नहीं करता, तो उन्हें बहस नहीं करनी थी। उन्हें केवल जाते समय उस जगह की धूल अपने पैरों पर से झाड़ डालनी थी। नगर की धूल झाड़ने से वह नगर अन्यजातियों के नगरों के समतुल्य हो जाता, जिन्हें यहूदी अशुद्ध मानते थे।

ऐसे नगर को राजा ने स्वयं श्राप के अधीन कर दिया था। उसकी चेतावनी काफी गंभीर थी: "न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी" (10:15)। जैसा कि हुआ भी, फिलिस्तीन के नगरों को उस प्रतिशोध लेने वाले रोमी शासन से कोई भी नहीं बचा सका, और अभी तो न्याय का दिन आया भी नहीं है।

II. कष्ट के लिए तैयारी (10:16-42)

इस अनुच्छेद में आदेश को कुछ हद तक विस्तृत किया गया है। हालाँकि व्याख्या अभी भी यहूदी है, लेकिन उन सिद्धांतों और चेतावनियों का कलीसियाई युग पर भी अमलीकरण अपेक्षित है। जो लोग किसी भी युग में प्रभु और उसके वचन के प्रति विश्वासयोग्य हैं, वे संसार से घृणा और शत्रुता की अपेक्षा कर सकते हैं। मसीही युग के दौरान "शहीदों का लहू कलीसिया का बीज रहा है।"[3] हालाँकि, यह सब यहाँ केवल द्वितीयक अर्थ में ही देखा गया है। संदर्भ सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण यहूदी मसीहा के मिशन से संबंधित है।

मसीह ने यहूदियों के विरोध के बारे में भी उन बारहों को चेतावनी दी: "मैं तुम्हें भेड़ों की नाईं भेडिय़ों के बीच में भेजता हूँ... जब वे तुम्हें एक नगर में सताएं, तो दूसरे को भाग जाना। मैं तुम से सच कहता हूँ, तुम इस्राएल के सब नगरों में न फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा" (10:16,23)। लेकिन ऐसा लगता है कि सब कुछ ठीक चल रहा था, तो फिर किस अर्थ में उसकी चेतावनी सच थी?

यहाँ तक कि सबसे अच्छे टिप्पणीकारों ने भी इस प्रश्न पर बहुत ही गलत राय रखी है। उदाहरण के लिए कैम्पबेल मॉर्गन ने कहा कि चेतावनी "यरूशलेम के पतन के समय न्याय के लिए उसके आने की बात करती है, जो ईस्वी 70 में हुआ था।" यह बात बिल्कुल भी सही नहीं है। यह कहना भविष्यद्वाणी के विपरीत है कि मनुष्य का पुत्र ईस्वी 70 में आया था।

प्रयोग के अनुसार चेतावनी का हमारे युग के दौरान सुसमाचार के प्रचार से द्वितीयक संदर्भ है, लेकिन व्याख्या के अनुसार चेतावनी महा-क्लेश के समय की ओर देखती है। कलीसिया के स्वर्गारोहण के बाद, परमेश्वर अपने 2 गवाहों (प्रकाशितवाक्य 11) और अपने 144,000 गवाहों (प्रकाशितवाक्य 7) को उठाएगा। तब मत्ती 10 में शुरू हुआ यहूदी मिशन फिर से शुरू हो जाएगा। उस युग के भयानक सताव (चमत्कारों का एक और युग) को प्रेरितों को दी गई प्रभु की चेतावनी में दर्शाया गया है। जैसा कि अक्सर पूर्व-पेंटेकोस्ट भविष्यद्वाणी के मामले में देखा गया है, कलीसियाई युग या तो बहुत हल्के रूप में या पूरी तरह से जाती रहती है।

क. प्रेरितों के शत्रु (10:16-25)

1. प्रभु का प्रोत्साहन (10:16)

प्रेरितों को विशेष सेवकाई के लिए तैयार करने के बाद, प्रभु ने उन्हें सताव के लिए तैयार करना शुरू किया। उसके चेलों को हमेशा खतरे का अंदाजा रखना था, "देखो," उसने कहा, "मैं तुम्हें भेड़ों की नाईं भेडियों के बीच में भेजता हूँ" भेड़ें भेड़ियों के सामने असहाय होती हैं। सभी युगों में जिन्होंने "व्यवस्था" को चुनौती देने का साहस किया है, उन्हें उनके दुश्मनों द्वारा बुरी तरह सताया गया है। इस खतरे के कारण, विवेक से काम लेने की आवश्यकता है, इसलिए प्रभु ने आज्ञा दी, "इसलिए सांपों के समान बुद्धिमान बनो।" इसके अलावा एक निश्चित स्वभाव की भी आवश्यकता है, इसलिए उसने आगे जोड़ा, "...और कबूतरों के समान भोले बनो।" साँप की तरह बुद्धिमान होना प्रभु के चेले को आने वाली मुसीबत को देखने और उससे बचने में असमर्थ होने पर उसे संभालने के लिए तैयार रहने में सक्षम बनाएगा। कबूतर की तरह हानिरहित होना प्रभु के सेवक को मुसीबत के समय मसीह के आत्मा को प्रदर्शित करने में सक्षम बनाएगा।

2. प्रभु की अपेक्षा (10:17-23)

क. शत्रुता (10:17-18)

(1) इब्रानी रब्बियों से (10:17)

प्रेरितों को शत्रुता का सामना करना पड़ेगा, इसलिए प्रभु ने कहा, "परन्तु लोगों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें महासभाओं में सौपेंगे, और अपनी पंचायतों में तुम्हें कोड़े मारेंगे।" यह चेतावनी शायद ही अन्यजातीय मसीहियों पर यहूदियों के सताव को संदर्भित करती हो, क्योंकि यहूदियों के पास अपने सभाओं में अन्यजातियों को कोड़े मारने का कोई लेख नहीं था। अन्यजातीय दुनिया में इस तरह की मनमानी कभी बर्दाश्त नहीं की जाती। यह यहूदियों द्वारा प्रभु के यहूदी राजदूतों को सताने का मामला है।

पिन्तेकुस्त के बाद कलीसिया के यहूदी वर्ग को यहूदी अधिकारियों द्वारा बहुत सताया गया; आराधनालय और महासभा सुसमाचार के सबसे बड़े दुश्मन बन बैठे। हालाँकि, जब मत्ती 10 का आदेश दिया गया था,

तब ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि प्रभु के राजदूतों को सताया गया हो। इसलिए प्रभु की चेतावनी आने वाले महा-क्लेश, मसीह विरोधी के दिनों को संदर्भित करती है जब राज्य का सुसमाचार फिर से घोषित किया जाएगा और यहूदी मिशन का फिर से पूरी ताकत से आगमन होगा। यह मिशन कलीसिया के स्वर्गारोहण और प्रभु के आगमन के बीच की अवधि में फिर से शुरू किया जाएगा।

आज यहूदी वापस अपने देश में लौट आए हैं, इसलिए भविष्यद्वाणी की पूर्ति के लिए परिस्थितियाँ फिर से परिपक्व हो गई हैं। कलीसिया के स्वर्गारोहण के बाद प्रभु अपने प्रतिनिधि लोगों के रूप में यहूदियों के साथ अपना व्यवहार फिर से शुरू करेगा। उस समय कई यहूदी राज्य के सुसमाचार के प्रति प्रतिक्रिया करेंगे, लेकिन अधिकारियों सहित अन्य लोग, मसीह विरोधी के प्रति आकर्षित होंगे। वे अविश्वासी यहूदी अपने यहूदी नागरिकों को मसीह के आने वाले आगमन के अप्रिय समाचार का प्रचार करने के कारण बुरी तरह सताएँगे।

(2) अन्यजातीय शासकों से (10:18)

पशु और अन्यजाति अधिकारी भी महाक्लेश के दौरान प्रभु के राजदूतों और उसको ग्रहण करने वाले लोगों के सक्रिय शत्रु होंगे। पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य, जो फिर से शासन करेगा, दस राजाओं द्वारा शासित किया जाएगा। प्रभु ने संकेत दिया, "तुम मेरे लिये हाकिमों ओर राजाओं के साम्हने उन पर, और अन्यजातियों पर गवाह होने के लिये पहुंचाए जाओगे।"

बेशक, प्रभु ने सताव से निपटने के लिए यहाँ जो सिद्धांत दिए हैं, उनमें से कई कलीसियाई युग पर लागू किए जा सकते हैं। प्रेरितों को भी इसी तरह की शत्रुता का सामना करना पड़ा था और मसीही सुसमाचार को फैलाने में कलीसिया को भी इसी तरह की शत्रुता का सामना करना पड़ा है। हालाँकि, प्रभु के वचनों की व्याख्या महाक्लेश के युग की भविष्यद्वाणी करती है।

ख. आत्मज्ञान (10:19-20)

प्रेरितों को जिस शत्रुता का सामना करना था, उसका समाधान आत्मज्ञान से होना था। प्रभु ने उन्हें ऐसी बुद्धि देने का वादा किया जिसका सामना उनके शत्रु नहीं कर सकते: "जो कुछ तुम को कहना होगा, वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जाएगा। क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है।" स्तिफनुस के प्रसिद्ध बचाव में एक उत्कृष्ट उदाहरण मिलता है, जिसने यहूदियों के हृदय में जलन उत्पन्न की और जिसके परिणामस्वरूप अंततः उसकी शहादत हुई (प्रेरितों के काम 7)।

ग. धीरज (10:21-23)

प्रेरितों को भयानक विश्वासघात की अपेक्षा करनी थी, यहाँ तक कि परिवार के सदस्यों द्वारा भी। सभी लोग प्रभु के राजदूतों से उसके नाम की गवाही के कारण घृणा करेंगे। यहूदियों के बीच यीशु के नाम से अधिक घृणा करने वाला कोई नाम नहीं है।

कलीसियाई युग में मसीहियों के सताव में विश्वासघात आम बात रही है। उदाहरण के लिए, माओ त्से-तुंग के दिनों में चीन में लगभग एक अरब लोगों को राष्ट्र के क्रूर शासन द्वारा व्यवस्थित रूप से बहकाया गया

था, और विश्वासघात की नीति के द्वारा मसीहत को खत्म करने का शैतानी प्रयास किया गया था। हालाँकि, तथ्य यह है कि 10:21 की भविष्यद्वाणी अंतिम दिनों पर केंद्रित है।

प्रभु ने हिदायत दी कि सताए जाने वाले लोग एक नगर से दूसरे नगर को भाग जाएं। महाक्लेश के दौरान एक विशेष प्रकार की तात्कालिकता होगी। जब पशु इस्राएल राज्य के साथ अपनी संधि पर हस्ताक्षर करेगा, तो अंत से पहले केवल सात वर्ष बचे होंगे। जब वह पुनर्निर्मित मंदिर को अपने कब्जे में कर लेगा और पवित्र स्थान में अपनी मूर्ति को स्थापित करेगा, तो मनुष्य के पुत्र के आने से पहले केवल साढ़े तीन साल ही बचे होंगे। इस अवधि के दौरान परमेश्वर के राजदूत की बुलाहट उस पशु का विरोध करना, उसके चिह्न को अस्वीकार करना और आने वाले राज्य के लिए अपने आप को तैयार करना होगा। "जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा" (10:22)। "अंत" का अनुवाद टेलोस के रूप में भी किया जाता है, जो महाक्लेश के अंत को संदर्भित करता है। "उद्धार पाएगा" का अनुवाद "बच जाएगा" या "मुक्त किया जाएगा" के रूप में भी किया जा सकता है।

यकीनन, यह संभावना थी कि यीशु के दिनों के यहूदी उन बारहों के मिशन को स्वीकार कर लेते। अन्यथा राज्य का उनका प्रस्ताव सच्चा नहीं होता। यदि यहूदियों ने मसीह को स्वीकार कर लिया होता, तो निस्संदेह उनके अगुवे मसीह के विरुद्ध एकजुट हो जाते, और आराधनालय और महासभा दोनों ही विश्वासियों को सताया जाता। वह युग वहीं समाप्त हो जाता, राज्य तभी स्थापित हो जाता, और कोई कलीसियाई युग नहीं होता।

3. प्रभु का उदाहरण (10:24-25)

यीशु ने पूछा, "जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा तो उसके घर वालों को क्यों न कहेंगे?" (10:25) फरीसियों ने पहले भी उसे बालज़बूल (दुष्टात्माओं का सरदार) कहा था (9:34) और वे फिर से ऐसा ही करने वाले थे (12:24)। प्रभु के सेवकों को अपने स्वामी से बेहतर व्यवहार की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

हम मरकुस 3:22 से सीखते हैं कि अधिकारीगण, प्रभु की सामर्थ्य के ईश्वरीय स्रोत को पहचानने के लिए तैयार नहीं थे और इसे किसी अन्य तरीके से समझाने में असमर्थ थे, इसलिए उन्होंने यीशु को हमेशा के लिए दुष्टात्माओं के सरदार के कब्जे में मान लिया। उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में स्वीकार करने की बजाय, उन्होंने उसे शैतान का अवतार माना। वह जो राज्य देने आया था, वह उनके अनुमान या उनकी पसंद के हिसाब से नहीं था। एक बार जब वे अपने भयानक निष्कर्ष पर पहुँच गए, तो बाकी सब स्वाभाविक रूप से उसका अनुसरण करने लगे। प्रभु ने आगे कहा, "चेला अपने गुरू से बड़ा नहीं" (10:24)।

ख. प्रेरितों का डर (10:26-39)

1. साहस के लिए प्रेरणा (10:26-33)

आदेश के इस भाग में प्रभु ने कष्ट, पीड़ा और सताव से सभी सामान्य लोगों के स्वाभाविक रूप से दूर होने पर अपना ध्यान केंद्रित किया। उसने बार-बार कहा, "मत डरो," और साहस के साथ डटे रहने का आह्वान किया।

क. नैतिक साहस: बोलने का साहस (10:26-27)

सुसमाचार के शत्रु अपने भयानक काम को अंधकार में अंजाम दे सकते हैं, लेकिन परमेश्वर उन्हें देखता है, और उसके लोगों को अपने युग की दुष्टता के विरुद्ध बोलने के प्रति साहस दिखाना होगा। उन्हें फुसफुसाकर नहीं बोलना चाहिए; जिस दुष्टता को वे उजागर करते हैं, उसे घर की छतों से चिल्ला-चिल्लाकर कहना चाहिए। बोलने का साहस प्राप्त करने के लिए नैतिक साहस की आवश्यकता होती है।

ख. शारीरिक साहस: मसीह के लिए मरना (10:28)

प्रभु ने उसके नाम के लिए मरने तक तैयार रहने के लिए शारीरिक साहस का आह्वान किया: "उन से मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है।"

शारीरिक साहस की आवश्यकता का एक उदाहरण महाक्लेश के दौरान पाया जाता है। प्रकाशितवाक्य 13:15-18 में हम पढ़ते हैं कि एक चेतावनी जारी की जाएगी जिसमें सभी को उस पशु की छाप लेने और उसकी मूर्ति की आराधना करनी होगी और ऐसा न करने पर वे मार डाले जायेंगे। परमेश्वर अपनी प्रतिक्रिया इस संदेश के साथ एक स्वर्गदूत को भेजकर देगा:

“जो कोई उस पशु और उस की मूर्ति की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उस की छाप ले। तो वह परमेश्वर का प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के साम्हने, और मेम्ने के साम्हने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा। और उन की पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा” (14:9-11)।

दूसरे शब्दों में, वह पशु कहेगा, "वह छाप ग्रहण करो या मर जाओ," और परमेश्वर कहेगा, "वह छाप ग्रहण करो और शापित हो जाओ।"

ग. आत्मिक साहस: परमेश्वर पर भरोसा रखना (10:29-33)

आत्मिक साहस का अर्थ है परमेश्वर के लिए सब कुछ दांव पर लगा देना क्योंकि अंत में वही जीतेगा। इस तरह का साहस उसके गुणों के बारे में सोचकर विकसित किया जा सकता है: उसकी सर्वव्यापकता, उसकी सर्वज्ञता और उसकी सर्वसामर्थ्यता।

हमें 10:29 में दिए गए कथन से साहस और सांत्वना मिलती है: "क्या पैसे मे दो गौरैये नहीं बिकतीं? तौभी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उन में से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती।" परमेश्वर एक गौरैया के अंतिम संस्कार में शामिल होता हैं! लूका 12:6 में भी ऐसा ही एक कथन है: "क्या दो पैसे की पांच गौरैयां नहीं बिकतीं? तौभी परमेश्वर उन में से एक को भी नहीं भूलता।" दो आयतों की तुलना करने पर एक बहुत बड़ी सच्चाई सामने आती है। एक पैसे से दो गौरैया खरीदी जा सकती थीं, और दो पैसे से चार नहीं, बल्कि पाँच गौरैया खरीदी जा सकती थीं। गौरैया इतनी कम कीमत की थीं कि जब दो पैसे चुकाए जाते थे, तो सौदा करने के लिए एक और पक्षी यूँही दे दिया जाता था। लेकिन वह भी हमारे पिता की देखरेख पाए बिना नहीं मरता।

ऐसा है तो, वह अपने शहीदों के प्रति कितनी अधिक देखभाल रखेगा! वह उनके अंतिम संस्कार में अपनी पूरी महिमा के साथ उपस्थित होता है। स्तिफनुस की शहादत हमें इसका सिर्फ एक उदाहरण देती है (प्रेरितों 7:55-56)।

2. समझने के लिए प्रेरणा (10:34-36)

यीशु ने चेतावनी दी, "यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूँ; मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूँ" (10:34)। वह इस ग्रह पर शांति स्थापित करेगा, लेकिन तब तक नहीं जब तक कि वह विश्वास के शत्रुओं पर अपने अंतिम प्रहार के बाद राज्य की स्थापना करने के लिए नहीं आ जाता।

एक गैर-मसीही घर से एक व्यक्ति का परिवर्तन अक्सर उसके परिवार को उसके विरूद्ध कर देता है। एक व्यक्ति के शत्रु वास्तव में "उसके घर ही के लोग" हो सकते हैं (10:36)। यीशु के ये वचन हमेशा से सत्य रहे हैं और आने वाले युग में और भी अधिक वास्तविक होंगे जब पशु और उसके आराधकों का भय सभी को लगभग कायर बना देगा, सिवाय उन लोगों के जिन्होंने अपना सब कुछ परमेश्वर के लिए दांव पर लगा दिया है।

3. समर्पण के लिए प्रेरणा (10:37-39)

क. वेदी पर प्रेम (10:37)

तराजू पर झूलते विशाल मुद्दों को देखते हुए, सभी भय को एक तरफ रखना चाहिए और एक समर्पण करना चाहिए। मानवीय प्रेम को वेदी पर रखा जाना चाहिए। पिता, माता, पुत्र, पुत्री, सभी मानवीय रिश्ते - चाहे वे कितने भी पवित्र, गंभीर, मधुर हों - को ऐसे समय में त्याग दिया जाना चाहिए जिसकी मत्ती 10 में प्रभु द्वारा बताई गई है यदि यही उसके प्रति विश्वासयोग्यता को व्यक्त करने का एकमात्र तरीका हो।

ख. वेदी पर जीवन (10:38-39)

मानवीय जीवन को वेदी पर रखा जाना चाहिए। एक व्यक्ति को अपना क्रूस उठाना चाहिए, चाहे वह कितना भी भारी क्यों न हो। उसे अपना जीवन खोने के लिए तैयार रहना चाहिए ताकि वह उसे फिर से पा सके; अगर वह उसे बचाए रखता है, तो वह उसे अंत में खो ही देगा। ये काफी कठोर वचन हैं। इनके अमलीकरण में निरंतरता है, लेकिन प्रभु के आगमन से ठीक पहले के दिनों में ये बातें पूरी तरह से प्रभावी हो उठेगी।

ग. प्रेरितों के अनुयायी (10:40-42)

जब प्रभु इस विशिष्ट आदेश को समाप्त करने जा रहा था, तब उसने प्रेरितों से उनके अनुयायियों के बारे में बात की। इन अंतिम वचनों ने उन्हें उस वास्तविक स्थिति में वापस ला दिया जिसका सामना उन्होंने अपने मिशन पर जाने की तैयारी करते समय किया था। मनुष्य के पुत्र के रूप में उसके वापस आने से पहले भी स्थिति भी ठीक वैसी ही होगी।

1. स्वीकार करने की प्रक्रिया (10:40)

राजा के किसी जन का स्वागत करना सार्वजनिक तिरस्कार या आधिकारिक नाराजगी के समय में खतरनाक नहीं तो महंगा हो सकता है। इस्राएल में बहुत से लोग अब तक जान चुके थे कि प्रभु यीशु राष्ट्र के अगुवों के बीच लोकप्रिय नहीं था। उसके प्रेरितों के रूप में पहचाने जाने के लिए कुछ तो कीमत चुकानी होगी। लेकिन महाक्लेश के समय में यह विरोध हज़ार गुना बदतर होगा। राजा के किसी व्यक्ति के प्रति कोई भी

दया दिखाना विश्वासघात, गिरफ़्तारी, बहिष्कार, यातना या यहाँ तक कि मृत्यु को आमंत्रित करना होगा। लेकिन प्रभु प्रभावी रूप से कहेगा, "याद रखो, तुम केवल मेरे दूत का स्वागत नहीं कर रहे हो; बल्कि तुम मुझे ग्रहण कर रहे हो। और सिर्फ़ मुझे नहीं, बल्कि उसे भी जिसने मुझे भेजा है।" इससे बड़ा सौभाग्य और क्या हो सकता है?

2. प्रतिफल का वायदा (10:41-42)

प्राप्त करना और प्रफितल देना एक साथ चलते हैं। राजा के राजदूतों में से किसी एक के साथ साहसपूर्वक पहचाने जाने का मतलब राजदूत का प्रतिफल प्राप्त करना होगा। यहाँ कार्य के अनुरूप पुरस्कार मिलता है।

कितना बड़ा प्रतिफल है, और कितना ही छोटा काम है जो इसे अर्जित करता है! "जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाए, मैं तुम से सच कहता हूँ, वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा" (10:42)। "चेला जानकर" एक इब्रानी वाक्य है जिसका अर्थ है "क्योंकि वह एक चेला है।" प्रभु के किसी जन को केवल ठंडा पानी पिलाने मात्र से ही प्रतिफल मिल जाता है। इस शिक्षा को बाद में प्रभु के भेड़ और बकरियों के दृष्टांत में विस्तार से बताया गया है (25:31-46)।

इसलिए प्रेरितों को सुसज्जित कर दिया गया और उन्हें पहले से ही चेतावनी भी दे दी गई। वे अपने काम को पूरा करने के लिए दो-दो करके निकल पड़े। हमें यह जानकर बहुत अच्छा लगता कि उनका स्वागत कैसे किया गया और उन्होंने क्या क्या चमत्कार किए! क्या उन्होंने मृतकों को जिलाया? क्या उनमें से कोई दो नासरत गए? उन्हें किसने अपने घर में रखा? उन्हें किसने वापस लौटा दिया? लेकिन मत्ती ने हमें इसके बारे में कुछ नहीं बताया। उत्तर अलिखित कहानी का हिस्सा हैं। मत्ती ने केवल इतना ही किया कि उसने प्रभु के प्रति बढ़ते प्रतिरोध और विरोध का वर्णन करना जारी रखा। इस्राएल ने विनाश की ओर अपने मिशन में एक और रेखा पार कर ली थी।

खंड 2: विरोध महसूस किया गया (11:1-30)

1. यूहन्ना की सेवकाई (11:1-15)
    1. यूहन्ना का आत्मिक संघर्ष (11:1-6)
        1. उसका प्रश्न पूछा गया (11:1-3)
            1. उसने क्या सुना (11:1-2)
            2. उसकी आशा क्या थी (11:3)
        2. उसके प्रश्न का उत्तर दिया गया (11:4-6)
            1. यीशु द्वारा प्रस्तुत ठोस प्रमाण (11:4-5)
                1. विशेष चमत्कार (11:4-5a)
                2. आत्मिक चमत्कार (11:5b)
            2. यीशु द्वारा प्रस्तावित सुखद मूल्यांकन (11:6)
    2. यूहन्ना का भव्य स्वरूप (11:7-9)
        1. विषमता के द्वारा वर्णित (11:7-8)
            1. उसमें कुछ भी कमज़ोरी नहीं थी (11:7)
            2. उसमें कोई कोमलता जैसी बात नहीं थी (11:8)

2. तुलना के द्वारा वर्णन (11:9)

3. यूहन्ना की पवित्रशास्त्रीय स्थिति (11:10-15)

1. मलाकी की भविष्यद्वाणी (11:10)

2. मसीहा की घोषणा (11:11-12)

1. बपतिस्मादाता की महानता (11:11a)

2. विश्वासी की महानता (11:11b)

3. युद्ध की महानता (11:12)

3. क्षण की गर्भावस्था (11:13-15)

1. परमेश्वर के वचन की पूर्णता के लिए (11:13)

2. परमेश्वर के कार्य के फलस्वरूप (11:14-15)

1. सब कुछ पूरा होने का मौका (11:14)

2. सभी के लिए एक चुनौती, पहले से सचेत रहना (11:15)

2. यीशु की सेवकाई (11:16-30)

1. दृष्टांत (11:16-19)

1. एक बहुत ही महत्वपूर्ण उदाहरण (11:16a)

2. एक बहुत ही सरल उदाहरण (11:16b-17)

1. भावनात्मक सुर बजाना (11:16b-17b)

1. शादियाँ (11:16ब-17a)

2. अंतिम संस्कार (11:17b)

2. भावनात्मक चुप्पी उत्पन्न करना (11:17c)

3. एक बहुत ही उपयुक्त उदाहरण (11:18-19)

उस पीढ़ी ने किस प्रकार प्रतिक्रिया दी:

1. यूहन्ना का कठोर उपवास (11:18)

2. यीशु की मधुर संगति (11:19)

2. अभियोग (11:20-24)

1. कारण (11:20)

2. शाप (11:21-24)

1. पहला अभिशाप (11:21-22)

1. वर्तमान (11:21a)

2. अतीत (11:21b)

3. संभावना (11:22)

2. आगे का अभिशाप (11:23-24)

1. वर्तमान (11:23a)

2. अतीत (11:23b)

3. संभावना (11:24)

3. पुकार (11:25-27)

1. ईश्वरीय प्रक्रिया का रहस्य (11:25-26)
    1. एक अनिवार्य प्रक्रिया (11:25)
        1. सत्य को समझदार लोगों से छिपा रखा (11:25a)
        2. भोले लोगों पर सत्य को प्रकट किया गया (11:25b)
    2. एक अचूक प्रक्रिया (11:26)
2. ईश्वरीय व्यक्तित्व का भेद (11:27)
    1. वह जयवंत है (11:27a)
    2. वह रहस्यमयी है (11:27b-c)
        1. विशिष्ट संबंध (11:27b)
        2. विस्तृत सम्बन्ध (11:27c)

4. निवेदन (11:28-30)
    1. उद्धार की बुलाहट (11:28)
        1. निमंत्रण (11:28a)
        2. प्रतिज्ञा (11:28b)
    2. सेवा की बुलाहट (11:29-30)
        1. अपील (11:29)
            1. हमारा निर्णय—“लो” (11:29a)
            2. हमारा विकास - "सीखो" (11:29b-c)
                1. शिक्षक (11:29b)
                2. विषय (11:29c)
            3. हमारी खोज—“पाओ” (11:29d)
        2. आश्वासन (11:30)

I. यूहन्ना की सेवकाई (11:1-15)

प्रेरितों को नियुक्त करने और उन्हें उनकी सेवकाई पर भेजने के बाद, प्रभु ने कफरनहूम के आस-पास के नगरों में अपना दौरा जारी रखा। प्रभु की गलीली सेवकाई के समय, हेरोदेस अन्तिपास अपने शासकीय इलाकों में था। उसके अधिकार में गलील का क्षेत्र भी शामिल था, जो यरदन नदी और गलीली झील के पश्चिम में था, और पेरिया, जो यरदन के पूर्व में था, लेकिन दक्षिण में दूर तक था। इस दुष्ट और विश्वासघाती व्यक्ति के पेरिया में दो महल थे, एक जूलियास में और दूसरा मैकेरस में, जहाँ उसने यूहन्ना बपतिस्मादाता को कैद किया हुआ था।

ऐसा लगता है कि बारह लोगों की सेवकाई पेरिया तक पहुँच गई और इसने हेरोदेस का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। यह संभव है कि इसने प्रेरितों के मिशन को स्थगित कर दिया और उन्हें यीशु के पास वापस लौटने के लिए प्रेरित किया। लगभग उसी समय, यूहन्ना बपतिस्मादाता एक बड़े अवसाद के दौर का सामना करता है और इसलिए उसने अपने दो चेलों को यीशु से कुछ सवाल का जवाब पाने के लिए भेजा।

मत्ती, अपने सुसमाचार को लिखते हुए, अपने यहूदी पाठकों के लिए मसीह और उसके लोगों के प्रति राष्ट्रीय विरोध के बढ़ते कारणों का पता लगाना जारी रखता है। यहूदियों द्वारा यीशु की सेवकाई को तिरस्कार करने की तुलना में उसके अग्रदूत का तिरस्कार करना भी उतना ही गंभीर था। इसलिए 11:1-15 में, मत्ती ने यूहन्ना बपतिस्मादाता की सेवकाई की समीक्षा की, एक ऐसी सेवकाई जिसकी प्रशंसा स्वयं यीशु ने की थी। यूहन्ना लोगों के बीच काफी लोकप्रिय था, लेकिन उनके पाखंड के लिए यूहन्ना द्वारा फटकारे जाने के बाद यहूदी अगुवे उसके दुश्मन बन गए थे।[1]

क. यूहन्ना का आत्मिक संघर्ष (11:1-6)

1. उसका प्रश्न पूछा गया (11:1-3)

यूहन्ना बपतिस्मादाता बहुत अधिक अवसाद (तनाव) में था। उसने विजयी रूप से आने वाले राजा की घोषणा की थी, उसे यरदन में लोगों से मिलवाया था, उसने परमेश्वर के आत्मा को उस पर उतरते हुए देखा था, और अपने कुछ बेहतरीन चेलों को उसके पीछे कर दिया था। फिर यूहन्ना द्वारा हेरोदियास से अपने विवाह की निंदा किए जाने की हिम्मत के कारण हेरोदेस द्वारा उसे जेल में डाल दिया गया था - और यीशु ने इसके बारे में कुछ भी नहीं किया था। इससे भी बुरी बात यह है कि घोषित मसीहा निश्चित रूप से उस तरह के सांसारिक राज्य की स्थापना के लिए कुछ खास नहीं कर रहा था जिसकी यूहन्ना ने उम्मीद की थी। तब उसे दूसरे विचार आने लगे। "क्या आनेवाला तू ही है," उसने पूछा, "या हम दूसरे की बाट जोहें?" (11:3) क्या उससे कुछ गलती हो गई थी?

2. उसके प्रश्न का उत्तर दिया गया (11:4-6)

क. यीशु द्वारा प्रस्तुत ठोस प्रमाण (11:4-5)

प्रभु ने दोनों प्रश्न पूछने वालों को वापस भेजा और उन्हें यूहन्ना को वे बातें बताने को कहा जो उन्होंने सुनी और देखी थीं अर्थात्: "अन्धे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है" (11:5)।

ख. यीशु द्वारा प्रस्तावित सुखद मूल्यांकन (11:6)

प्रभु ने अपने विश्वासयोग्य अग्रदूत के लिए एक व्यक्तिगत शब्द जोड़ा: "और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए [जिसे ठोकर खाने की कोई बात न मिले]।" यीशु ने यूहन्ना को जो चिह्न बताए थे, वे भविष्यद्वक्ता द्वारा पहले से बताए गए थे (यशायाह 35:5-6; 61:1)। कोई अन्य चमत्कार उसकी प्रमाणिकता के रूप में पर्याप्त नहीं होते।

ख. यूहन्ना का भव्य स्वरूप (11:7-9)

1. विषमता के द्वारा वर्णित (11:7-8)

क. उसमें कुछ भी कमज़ोरी नहीं थी (11:7)

प्रभु ने यूहन्ना बपतिस्मादाता की सराहना उन लोगों के सामने की जो उसके पास उमड़ पड़े थे। उसने यूहन्ना का बचाव उन लोगों से किया जो संदेह की इस घटना का इस्तेमाल उसकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाने के

लिए कर सकते थे। यूहन्ना कोई अस्थिर व्यक्ति नहीं था, न ही "हवा से हिलने वाला सरकंडा था।" यीशु उसकी तुलना यरदन के किनारे उगे ऊँचे सरकंडों से कर रहे थे; वे बारह फीट ऊँचे होते हैं, लेकिन हवा के हर झोंके के साथ धरती की ओर नीचे झुक जाते हैं।

ख. उसमें कोई कोमलता जैसी बात नहीं थी (11:8)

यूहन्ना कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो कोमल कपड़े पहनता हो। वह हेरोदेस के साथ किसी तरह का समझौता करने वाला नहीं था ताकि वह अपनी कैद को महल में बदल सके।

2. तुलना के द्वारा वर्णन (11:9)

यूहन्ना एक भविष्यद्वक्ता था "वरन भविष्यद्वक्ता से भी बढ़कर था।" भविष्यद्वक्ताओं ने मसीहा के आगमन की भविष्यद्वाणी की थी, लेकिन यूहन्ना उसका निजी संदेशवाहक था जिसे राष्ट्र के सामने उसकी घोषणा करने के लिए उससे पहले भेजा गया था।

लोगों ने यूहन्ना को एक भविष्यद्वक्ता समझा था (21:26), लेकिन वह केवल एक भविष्यद्वक्ता ही नहीं था। बल्कि वह भविष्यद्वाणी का विषय भी था।

ग. यूहन्ना की पवित्रशास्त्रीय स्थिति (11:10-15)

1. मलाकी की भविष्यद्वाणी (11:10)

मलाकी ने पहले ही यूहन्ना बपतिस्मादाता के आने की भविष्यद्वाणी की थी। मत्ती मलाकी 3:1 का हवाला दे रहा था जब उसने लिखा, "यह वही है, जिस के विषय में लिखा है, कि देख; मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरे आगे तेरा मार्ग तैयार करेगा।" और यूहन्ना ने वास्तव में मार्ग तैयार किया था।

2. मसीहा की घोषणा (11:11-12)

क. बपतिस्मादाता की महानता (11:11a)

हर तरह से यूहन्ना एक महान व्यक्ति था। यीशु ने कहा, "जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उन में से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से कोई बड़ा नहीं हुआ।" प्रभु उसके उत्कृष्ट चरित्र, नैतिक दृढ़ता, प्राकृतिक क्षमता, आत्मिक डील-डौल और दृढ़-संकल्प की सराहना करता है। याजकीय वंश में जन्मे यूहन्ना ने याजकों के उस पद और गौरव का त्याग किया और स्वयं जंगल में एकांत, तपस्वी के रूप में रहने वाला भविष्यद्वक्ता बन गया था। वह एक सच्चा दूरदर्शी, आत्मिक महापुरुष था।

ख. विश्वासी की महानता (11:11b)

यीशु ने आगे कहा, "पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उस से बड़ा है।" प्रभु दरअसल यहाँ युगांतर में होने वाले परिवर्तन की अपेक्षा कर रहा था।

परमेश्वर एक नई व्यवस्था की शुरुआत कर रहा था, जो पुरानी व्यवस्था से अलग और उससे उत्तम थी। परमेश्वर के पुराने नियम के लोग मूलतः सांसारिक लोग थे, जिनके पास केवल सांसारिक आशाएँ, आशीषें और प्रतिज्ञाएँ थी। परमेश्वर के नए नियम के लोग मूलतः स्वर्गीय लोग हैं, जिनके पास स्वर्गीय आशाएँ,

आशीषें और प्रतिज्ञाएँ हैं। उसके सांसारिक लोगों की दृष्टि वायदा किए गए देश, एक विश्व साम्राज्य, एक सहस्राब्दी राज्य पर टिकी थीं, जिसमें केवल कभी-कभार और सामान्य चिह्न ही अनंतता की ओर इशारा करते थे। जबकि उसके स्वर्गीय लोग स्वर्ग में मसीह के साथ बैठे हैं और उस स्वर्गीय नगर, नए यरूशलेम के वारिस होंगे।

नई व्यवस्था स्वर्ग का राज्य है। जो उस राज्य में सबसे छोटा है, वह यूहन्ना से भी बड़ा है, जो पुराने नियम के अंतिम और महानतम अग्रदूतों में से एक है, जो आने वाले राजा का संदेश देता है। इसी तरह, सबसे छोटा बच्चा सबसे ताकतवर शेर से बड़ा है क्योंकि एक पशु साम्राज्य से संबंधित है और दूसरा एक मनुष्य है, जो एक अलग व्यवस्था का सदस्य है।

प्रभु अभी भी पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं द्वारा अपेक्षित और यूहन्ना द्वारा घोषित सांसारिक राज्य की स्थापना करना चाहता है। लेकिन जैसा कि पहाड़ी उपदेश में स्पष्ट किया गया है, राज्य के मूल नियम और जीवन आत्मिक होंगे, सांसारिक नहीं।

यदि यहूदियों ने यीशु को अपना मसीहा मान लिया होता तो सांसारिक राज्य दो हज़ार साल पहले ही स्थापित हो चुका होता। हालाँकि, यहूदियों ने यीशु का तिरस्कार किया और उनके अविश्वास के कारण आवश्यक नई व्यवस्था को मसीह के दो आगमनों के बीच के अप्रत्याशित समय अंतराल को भरने के लिए प्रस्तुत किया गया। कलीसियाई युग को परमेश्वर ने इस्राएल और समस्त राष्ट्रों के साथ अपने व्यवहार में एक कोष्ठक के रूप में पेश किया।[2]

जो लोग इस नई व्यवस्था से संबंधित हैं, उनके पास एक स्वर्गीय बुलाहट है जो इस्राएल की सांसारिक बुलाहट से कहीं अधिक उत्तम है। अब उन्हें उन लोगों में नहीं गिना जाता जो "स्त्रियों से जन्मे हैं", बल्कि उन लोगों में गिना जाता है जो "परमेश्वर से जन्मे हैं।"

ग. युद्ध की महानता (11:12)

फिर प्रभु ने कुछ ऐसा कहा जिसने बहुत से लोगों को हैरान कर दिया और काफी विवाद का विषय रहा है: "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से अब तक [लगभग तीन साल की अवधि] स्वर्ग के राज्य पर जोर होता रहा है, और बलवान [हिंसक] उसे [बलपूर्वक] छीन लेते हैं।" यहाँ "जोर होता रहा है" शब्द का अनुवाद बियाज़ोमाई है। संभवतः यह राज्य के शत्रुओं के विरोध को संदर्भित करता है।

लूका 16:16 में समानांतर अनुच्छेद में इस प्रकार लिखा है, "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे, उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है, और हर कोई उस में प्रबलता से प्रवेश करता है [बियाज़ोमाई]।" बियाज़ोमाई बियाज़ो का एक रूप है। डब्ल्यू.ई. वाइन ने कहा कि मध्यम स्वर में बियाज़ो का अर्थ है "हिंसक रूप से दबाव डालना या किसी के रास्ते में जबरदस्ती घुसना" और लूका 16:16 में बियाज़ोमाई "उन लोगों को संदर्भित करने के रूप में अर्थ को इंगित करता है जो हिंसक विरोध के बावजूद राज्य में प्रवेश करने का प्रयास करते हैं।"[3]

दूसरा दृष्टिकोण यह है कि मत्ती 11:12 में "जोर होता रहा है" शब्द का अर्थ है कि राज्य लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच रहा था और बलशाली लोग उसे अपने कब्जे में कर रहे थे। दूसरे शब्दों में, राज्य का प्रचार विश्वास दिलाने वाली सामर्थ्य के साथ किया जा रहा था, जिसकी शुरुआत यूहन्ना बपतिस्मादाता से

हुई थी। हालाँकि वह राज्य का सदस्य नहीं था, फिर भी उसने इसके आने की घोषणा की थी। उसकी बलशाली पुकार ने पूरे देश को उत्तेजित कर दिया था।

अब राजा और उसके राजदूत यहूदी लोगों के विवेक को अपने वचनों और कामों से घेराबंदी कर रहे थे। वास्तव में राज्य हर किसी के ध्यान को खुद की ओर आकर्षित कर रहा था। इसका प्रभाव इतना बड़ा था कि जिन लोगों में भी थोड़ी भी मानसिक सामर्थ्य थी, वे खुद को प्रकट करने के लिए विवश हो रहे थे। कुछ लोग राज्य का हिस्सा बनने के लिए किसी भी विरोध का सामना करने को तैयार थे; अन्य लोग या तो इसे बदनाम करने और राजा को नष्ट करने या इसे अपने उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहे थे। राज्य के प्रचार के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया का एक उदाहरण पाँच हज़ार लोगों को भोजन कराने के बाद सामने आया। प्रेरित यूहन्ना ने लिखा:

जब उन लोगों ने यीशु का यह आश्चर्यकर्म देखा, तो उन्होंने कहा, “तब जो आश्चर्य कर्म उस ने कर दिखाया उसे वे लोग देखकर कहने लगे; कि वह भविष्यद्वक्ता जो जगत में आनेवाला था निश्चय यही है। यीशु यह जानकर कि वे मुझे राजा बनाने के लिये आकर पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला गया।(6:14-15)।

उन लोगों के पास राज्य के विषय में पूरी तरह से गलत विचार थे। वे गति पर दबाव डालना चाहते थे। जैसा कि मत्ती 11 में संदर्भ दिखाता है, एक अर्थ में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला भी राज्य को मजबूर करना चाहता था।

3. क्षण की गर्भावस्था (11:13-15)

क. परमेश्वर के वचन की पूर्णता के लिए (11:13)

प्रभु तुरंत ही वापस यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय पर आ जाता है। उसने कहा, "यूहन्ना तक सारे भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था भविष्यद्ववाणी करते रहे।" यह क्षण इस्राएल के लिए आशीष या विनाश के गर्भ से भरा हुआ था। पुराने नियम का प्रकाशन प्रकारों और भविष्यद्वाणी में था, लेकिन अब वादा किया हुआ राजा और राज्य निकट था, दरअसल उनके बीच में ही था (मत्ती 12:28; लूका 17:21)।

ख. परमेश्वर के कार्य के फलस्वरूप (11:14-15)

यूहन्ना बपतिस्मादाता के विषय में अपने प्रमाण को समाप्त करते हुए, प्रभु ने कहा, "और चाहो तो मानो, एलिय्याह जो आनेवाला था, वह यही है" (11:14)। यीशु ने यहाँ बुद्धिमान विश्वास के लिए एक भी चुनौती जोड़ी: "जिस के सुनने के कान हों, वह सुन ले" (11:15)। इस अभिव्यक्ति का उपयोग प्रभु यीशु ने पंद्रह बार किया था। उसने इसे सात बार इस्तेमाल किया जब वह पृथ्वी पर था (उनके उचित क्रम में, लूका 8:8; मत्ती 11:15; 13:9,43; मरकुस 4:23; 7:16; लूका 14:35) और स्वर्ग में उठा लिए जाने के बाद आठ बार (प्रकाशितवाक्य 2-3 में सात कलीसियाओं के संबंध में; और प्रकाशितवाक्य 13:9 में)। अंग्रेजी कम्पेनियन बाइबल कहती है, "ये वचन कभी भी नश्वर मनुष्य द्वारा उपयोग नहीं किए गए थे। वे केवल उसके होठों से सुने गए जो ईश्वरीय अधिकार के साथ बोलता था।"[4] जैसा कि यूहन्ना 7:46 कहता है, "किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न कीं।"

मत्ती 11:15 में इस अभिव्यक्ति का उपयोग यूहन्ना बपतिस्मादाता के मिशन के महत्व पर जोर देने के लिए किया गया है। प्रभु चाहता था कि लोग इस बात को समझें कि क्या होता अगर राष्ट्र ने यूहन्ना की बात मान ली होती और बारह प्रेरितों द्वारा पूरे देश में घोषित किए गए राज्य को स्वीकार कर लिया होता और उसके व्यक्तित्व और कार्य द्वारा उनका ध्यान आकर्षित कर लिया होता। यूहन्ना को एलिय्याह भविष्यद्वकता (मलाकी 4:5) के रूप में गिना जाता, जिसके आत्मा और सामर्थ्य में वह आया था (लूका 1:17)।

यदि यहूदियों ने मन-फिराया होता और पूरे मन से यीशु को राजा के रूप में स्वीकार किया होता, तो दानिय्येल 9:24-27 में वर्णित सत्तरवाँ वर्ष तुरन्त ही समाप्त हो जाता। यहूदियों को दो हज़ार साल के निर्वासन की आवश्यकता नहीं पड़ती। सत्तरवें सप्ताह के लिए की गई भविष्यद्वाणी की वे भयानक घटनाएँ सहजता से घटित हो जातीं। सच्चा एलिय्याह आकर "सब बातों का सुधार न कर लेता" (प्रेरितों 3:21)।

लेकिन राष्ट्र ने मन नहीं फिराया। मलाकी 4:5 अभी भी अपनी शाब्दिक पूर्तिकरण का इंतज़ार कर रहा है। जिनके पास "सुनने के लिए कान" हैं वे ही इन बातों को समझेंगे।

2. यीशु की सेवकाई (11:16-30)

क. दृष्टांत (11:16-19)

यूहन्ना से ध्यान हटाकर यीशु की ओर ध्यान लाते हुए, मत्ती ने विरोध की उसी दुखद कहानी को जारी रखा। उसका विवरण दिखाता है कि प्रभु ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण दृष्टांत का इस्तेमाल किया। यीशु ने इसे इस तरह से शुरू किया, "मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से दूं?" (11:16) "इस समय के लोगों" की अभिव्यक्ति पर ध्यान दें। यह नए नियम में सोलह बार आता है (मत्ती 11:16; 12:41,42; 23:36; 24:34; मरकुस 8:12 (दो बार); 13:30; लूका 7:31; 11:30,31,32,50,51; 17:25; 21:32)। यह विशेषणों के साथ नौ बार और आता है - "बुराई," "दुष्ट," "व्यभिचारी," "पापी" (मत्ती 12:39,45; 16:4; मरकुस 8:38; लूका 11:29); "अविश्वासी," "हठीली" (मत्ती 17:17; मरकुस 9:19; लूका 9:41); "टेढ़ी जाति" (प्रेरितों 2:40) आदि। केवल एक अपवाद (मत्ती 24:34) के साथ, यह अभिव्यक्ति उस ऐसी पीढ़ी का वर्णन करती है जिसने मसीहा का तिरस्कार किया। सभी मामलों में यह एक शाब्दिक पीढ़ी को संदर्भित करता है।

"इस समय के लोग" वाक्यांश का परिचय देकर, प्रभु ने यहूदी राष्ट्र के लिए नरसिंगा फूँक दिया। इसके कोप और न्याय का दिन तेजी से निकट आ रहा था। प्रभु ने ज्वार के रुख का सही-सही आँकलन किया था। उसने इस राष्ट्र को तराजू में तौला और इसे तौल में हल्का पाया।

यीशु ने जो तुलना की वह न केवल महत्वपूर्ण थी बल्कि यह एक बहुत ही सरल दृष्टांत था। उसने उस असंभव पीढ़ी की तुलना उन बच्चों से की जो उन्हें खुश करने के हर प्रयास को अस्वीकार कर देते हैं। वे शादियों और यहाँ तक कि अंतिम संस्कारों में भी शिकायत ही करते हैं।

यह एक बहुत ही उपयुक्त दृष्टांत था। एक तपस्वी के रूप में यूहन्ना बपतिस्मादाता मनुष्यों के आवासों से दूर, मोटे कपड़े पहने, सबसे घटिया भोजन खाते हुए जिया। और उस पीढ़ी की प्रतिक्रिया उसके बारे में क्या थी? उन्होंने कहा, "उस में दुष्टात्मा है" (11:18)। दूसरे शब्दों में, "उसमें शैतान है।" जबकि प्रभु सामान्य लोगों की तरह "खाते-पीते" आया - और उसके बारे में उनकी प्रतिक्रिया क्या थी? उन्होंने कहा, "देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य [उस पर शराबी होने का आरोप लगाना कितना भयानक है!], महसूल लेने वालों और

पापियों का मित्र” (11:19)। इतने टेढ़े और परमेश्वर की निंदा करने वाले लोगों के लिए न्याय के अलावा और क्या हो सकता था?

ख. अभियोग (11:20-24)

1. कारण (11:20)

प्रभु उस दृष्टांत से तुरंत अब अभियोग की ओर मुड़ता हैं। "तब वह उन नगरों को उलाहना देने लगा, जिन में उस ने बहुतेरे सामर्थ्य के काम किए थे; क्योंकि उन्होंने अपना मन नहीं फिराया था।" उन्होंने पहाड़ी उपदेश सुना था, उन्होंने उसके आश्चर्यकर्मों को देखा था और उन्हें यूहन्ना बपतिस्मादाता और बारह प्रेरितों की गवाही भी मिली थी, लेकिन उन्होंने "मन नहीं फिराया।" यीशु उन नगरों में रहा, अपना प्रेम बाँटा और कार्य भी किया। वहाँ उसने अपने सबसे सामर्थ्यशाली कार्य किए थे; वहाँ प्रकाश सबसे अधिक चमकीला था; वहाँ सभी प्रमाण अकाट्य थे। वे उसके दावों की वास्तविकता के प्रत्यक्ष गवाह थे, फिर भी उन्होंने राज्य की प्रकृति, राजा की निकटता और मन-फिराव के प्रति उनकी आवश्यकता के बारे में अपने विचारों को बदलने से बिल्कुल इनकार कर दिया था।

वे नगर सम्पूर्णता के प्रतिनिधि थे। अगर उसका वहाँ तिरस्कार किया गया, तो उसे आगे जाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। इस्राएल में हर जगह एक जैसा ही स्वागत होता। इसलिए विपत्तियों को आने दो। वे अनिवार्य थे। जो लोग यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और प्रभु यीशु में दोष ढूँढ़ते थे, वे राज्य के योग्य नहीं थे; वे न्याय के पात्र थे और वे इससे बच नहीं सकते थे।

2. शाप (11:21-24)

क. पहला अभिशाप (11:21-22)

(1) वर्तमान (11:21a)

पहला अभिशाप दो महान गलीली नगरों, खुराजीन और बैतसैदा से संबंधित था। खुराजीन के बारे में बहुत कम या कुछ भी ज्ञात नहीं है, लेकिन माना जाता है कि यह कफरनहूम से मात्र दो मील की दूरी पर एक ऐसी जगह थी जो अब व्यापक खंडहरों में परिवर्तित हो चुकी है। हमारे पास खुराजीन में प्रभु की किसी यात्रा का कोई लेख उपलब्ध नहीं है, फिर भी मत्ती ने कहा कि यह उन नगरों में से एक था जहाँ "उस ने बहुतेरे सामर्थ्य के काम किए थे" (11:20)। जाहिर है कि हम पूरी कहानी का केवल एक छोटा सा हिस्सा ही जानते हैं। प्रेरित यूहन्ना ने लिखा, "और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं" (यूहन्ना 21:25)। उसे पता होना भी चाहिए, क्योंकि वह (मत्ती के समान) एक प्रत्यक्षदर्शी था।

बैतसैदा (रोमियों द्वारा जूलियास कहा जाता है) संभवतः कफरनहूम का एक उपनगर था। यह बैतसैदा ही था जहाँ से पतरस, अन्द्रियास और फिलिप्पुस राजा की बुलाहट पर उसके पीछे हो लिए थे। बैतसैदा और खुराजीन दोनों से प्रभु ने कहा, "हाय तुम पर।"

(2) अतीत (11:21b)

प्रभु ने उन दो महान गलीली नागरों की तुलना दो महान अन्यजातीय नगरों, सूर और सैदा से की। उसने कहा कि अगर सूर और सैदा ने खुराज़ीन और बैतसैदा में किए गए कामों को देखा होता, तो "टाट ओढ़कर, और राख में बैठकर, वे कब के मन फिरा लेते।"

सूर और सैदा दो बहन-नगर थे। सूर प्राचीन काल के सबसे धनी नगरों में से एक था और उसके जहाज़ दुनिया भर में व्यापार करते थे। अफ्रीका के उत्तरी तट पर स्थित सामर्थ्यशाली कार्थेज ने हैनिबल के नेतृत्व में रोम को लगभग जीत लिया था, लेकिन वह सिर्फ़ सूर का उपनिवेश ही था।

(3) संभावना (11:22)

फिनीके नगर सूर और सैदा काफ़ी सामर्थ्यशाली थे, लेकिन वे नैतिक रूप से भ्रष्ट थे और उनके मूर्तिपूजक धर्म काफ़ी बुरे थे। ईज़ेबेल सैदा से ही आई थी। परमेश्वर ने एलिय्याह को इस्राएल में लाए गए घृणित कामों से लड़ने के लिए खड़ा किया। "लेकिन," यीशु ने कहा, "न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी।" परमेश्वर पाप को उस प्रकाश से मापता है जो किसी व्यक्ति, नगर या राष्ट्र को दिया गया है। जितना बड़ा प्रकाश, उतनी बड़ी जिम्मेदारी।

ख. आगे का अभिशाप (11:23-24)

(1) वर्तमान (11:23a)

आगे का अभिशाप सबसे विशेषाधिकार प्राप्त नगर, कफरनहूम से संबंधित था। क्या कोई अन्य नगर कभी इतना धन्य हुआ है? जब राजा ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई शुरू की, तो वह कफरनहूम की ओर गया। उसने इसे, यूँ कहें तो, अपनी अस्थायी राजधानी बना ली थी। कफरनहूम उसका अपनाया हुआ घर था, वह केंद्र जहाँ से वह आगे बढ़ा, और यह वही केंद्र था जहाँ वह हमेशा अपने मिशन को पूरा करके लौटता था।

कफरनहूम के ठीक बाहर उसने कोढ़ी को शुद्ध किया था। यह कफरनहूम का ही सूबेदार था जिसके सेवक को प्रभु ने चंगा किया था। यह कफरनहूम के आराधनालय का सरदार ही था जिसकी बेटी को यीशु ने मृतकों में से जिलाया था। लेकिन यीशु ने कहा, "क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा।"

(2) अतीत (11:23b)

यीशु ने सबसे अधिक विशेषाधिकार प्राप्त नगरों में से एक की तुलना सबसे भ्रष्ट नगरों में से एक सदोम से की: "जो सामर्थ्य के काम तुझ [कफरनहूम] में किए गए है, यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता।" क्या सदोम से भी अधिक घिनौना नगर कभी कोई हुआ है? इसने अपना नाम ही अप्राकृतिक बुराई को दे दिया है। पवित्रशास्त्र में सदोम को बिना किसी निवारण के परास्त करने के सर्वोच्च उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। परमेश्वर ने सदोम पर आग और गंधक बरसाई थी ताकि इसे पूरी तरह से मिटा दिया जाए और हमेशा के लिए समलैंगिक जीवनशैली के प्रति अपनी घृणा की घोषणा कर सके।

(3) संभावना (11:24)

निस्संदेह कफरनहूम के लोग कभी भी सदोम की वासनाओं में नहीं डूबे थे, लेकिन यीशु ने कहा कि उनके पाप उनसे अधिक बुरे थे। उसने उनसे कहा, "न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी।" परमेश्वर की दृष्टि में, कफरनहूम को दिए गए प्रकाश और विशेषाधिकार में रहना और फिर उस प्रकाश का तिरस्कार करना सदोम से भी अधिक पाप था।

हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारे देश को कफरनहूम को दिए गए प्रकाश से कहीं ज़्यादा प्रकाश दिया गया है! हम क्रूस के इस तरफ़ रहते हैं। हमारे पास एक पूरा नया नियम है। पवित्र आत्मा आ चुका है। पिन्तेकुस्त आ चुका है। कलीसिया का जन्म हो चुका है। कफरनहूम के दिनों में प्रभु के सामर्थ्यशाली कार्य मुख्य रूप से भौतिक क्षेत्र तक ही सीमित थे, लेकिन हमारे देश में हर दिन आत्मिक आश्चर्यकर्म होते हैं। हमारे नगरों में सुसमाचार का पूरा प्रकाश चमक रहा है। दूसरे संदर्भ से उधार ली गई भाषा आज प्रकाश का तिरस्कार करने वाले किसी भी व्यक्ति की संभावना को प्रकट करती है:

“तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिस ने परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा, और वाचा के लहू को जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया?” (इब्रानियों 10:29)

अपने दृष्टांत और अभियोग को समाप्त करने के बाद, प्रभु ने आश्वासन पाने के लिए अपने पिता की ओर देखा और फिर, राष्ट्र को अनदेखा करते हुए, लोगों से प्रतिक्रिया देने की अपील की।

ग. पुकार (11:25-27)

मत्ती का परिचयात्मक वाक्यांश, "उसी समय," प्रभु के तिरस्कार पर जोर देता है (11:25)। जिन नगरों में वह रहा और काम किया, उन्होंने अपने सभी अन्य पापों के साथ-साथ उसका तिरस्कार भी किया था। उसके विश्वासयोग्य अग्रदूत ने संदेह, निराशा और अवसाद को प्रकट करने वाले प्रश्न पूछने के लिए भेजे थे। प्रभु की अपनी पीढ़ी अपने अकारण विलाप के कारण बचकानी हो गई थी। इसलिए अब यीशु मनुष्यों से परमेश्वर की ओर मुड़ा। कठिनाई का सामना करते समय प्रभु ने आराधना की और पिता को धन्यवाद दिया। वह याकूब के साथ इस तरह कह सकता था, "ये सब विपत्तियां मेरे ऊपर आ पड़ी हैं" (उत्पत्ति 42:36)। या एलिय्याह की तरह वह परमेश्वर से कटुतापूर्वक शिकायत कर सकता था (1 राजा 19:10)। लेकिन, इसकी बजाय उसने आराधना की।

उसकी प्रार्थना में हमारा सामना दो भेद की बातों से होता है: ईश्वरीय प्रक्रिया का भेद और ईश्वरीय व्यक्ति का भेद।

1. ईश्वरीय प्रक्रिया का भेद (11:25-26)

यीशु ने प्रार्थना की, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु; मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रकट किया है" (11:25)। वह इस निष्कर्ष को बता रहा था कि ईश्वरीय प्रक्रिया अनिवार्य है।

एक तरफ तो प्रभु ने "ज्ञानियों और समझदारों" लोगों को रखा - यानि फरीसी, सदूकी, शास्त्री, याजकों, रब्बी, जो सोचते थे कि वे सब कुछ जानते हैं। वे समाज में अभिजात वर्ग के थे और धर्म के सभी नियमों

और अनुष्ठानों और बाप-दादों की अंतहीन परंपराओं में पारंगत थे। दूसरी तरफ प्रभु ने "बालकों" को रखा - यानि उसके चेले, जो प्रभु के वचन पर विश्वास करने के लिए तैयार थे। अधिकांश भाग के लिए वे सरल आत्माएँ, विनम्र मछुआरे थे, जिन्हें बुद्धिजीवियों द्वारा "अनपढ़ और साधारण मनुष्य" के रूप में वर्णित किया गया था (प्रेरितों के काम 4:13)।

कुछ लोग सोचते हैं कि चूँकि वे चीज़ों को समझ सकते हैं (जैसा कि हम कहते हैं, दो और दो को एक साथ रखें), इसलिए उनके पास सभी उत्तर हैं। सुसमाचार के साथ उन तक पहुँचना कठिन है। वे अपने आप को इतना चतुर समझते हैं कि मसीह के पास आने से कतराते हैं, और इतना अच्छा समझते हैं कि उन्हें मार्गदर्शन पाने की कोई ज़रूरत ही नहीं हैं। दूसरी ओर, कुछ लोग अभी भी एक बालकों के समान हैरानी, स्वीकृति और विश्वास के साथ चीज़ों को देखने में सक्षम हैं। ऐसे लोगों को सुसमाचार अपनी ओर आकर्षित करता है। परमेश्वर उन लोगों से चीज़ों को छिपा के रखता है जो अपने आप को बुद्धिमान समझते हैं और इसकी बजाय उन्हें उन लोगों पर प्रकट करता है जो केवल उसके वचन पर विश्वास करेंगे। यही परमेश्वर के काम करने का तरीका है।

यीशु ने अपनी प्रार्थना में यह भी कहा, "हां, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा।" (11:26)। प्रभु अपने पिता परमेश्वर के तरीकों से संतुष्ट था क्योंकि यह सर्वज्ञ बुद्धि पर आधारित है। परमेश्वर कभी कोई गलती नहीं करता। ईश्वरीय प्रक्रिया अचूक है।

2. ईश्वरीय व्यक्तित्व का रहस्य (11:27)

क. वह अजेय है (11:27a)

एक विस्मय-बोधक रूप में प्रभु ने ईश्वरीय व्यक्तित्व के भेद को प्रकट किया। उसने इसे ऐसे शुरू किया, "मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है।" पिता ने यीशु को सारी बुद्धि, सारी सामर्थ्य, सारा अधिकार और वह सब कुछ दिया है जो राज्य की स्थापना के लिए आवश्यक है। परमेश्वर किसी और को इतनी सामर्थ्य के निवेश के साथ भरोसा नहीं कर सकता था; यह कहावत कि अधिक शक्ति बुद्धि को भ्रष्ट करती है, इतिहास में इसे अनगिनत बार प्रदर्शित किया गया है। लेकिन मसीह पूरी तरह से अविनाशी था, इसलिए सभी चीजें उस महिमामय व्यक्ति को सौंपी जा सकती थीं और सौंपी गई हैं जो अपने पिता के साथ पूर्ण सामंजस्य में काम करता है।

जब यीशु ने 11:27 में वर्णित वचनों को बोला, तो यह स्पष्ट था कि वह राज्य जिसे वह स्थापित करने आया था, उसे यहूदियों के हठीलेपन और अविश्वास के कारण स्थगित करना होगा। लेकिन स्थगन किसी भी तरह से अंतिम शब्द नहीं था। प्रभु एक कलीसिया का निर्माण करने वाला था। फिर वह वापस आएगा और राज्य को उसके पूर्ण दायरे और अंत तक ले जाएगा। यहूदी विफल हो गए थे, लेकिन वह विफल नहीं हुआ था। वह अजेय है।

ख. वह रहस्यमयी है (11:27b-c)

(1) विशिष्ट सम्बन्ध (11:27b)

यीशु ने परमेश्वरत्व का दावा करते हुए कहा, "कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता।" मसीह के व्यक्तित्व में ऐसी गहराई और रहस्य हैं जिन्हें हम कभी नहीं समझ पाएंगे। उसमें हमारे पास पूर्ण परमेश्वरत्व और पूर्ण मनुष्यत्व दोनों हैं। कोई नहीं बता सकता कि एक कहाँ समाप्त होता है और दूसरा कहाँ शुरू होता है। उसका स्वभाव रहस्यमय है।

हमने मसीह के व्यक्तित्व की प्रकृति को समझने और विधर्म के हमलों के विरुद्ध सत्य की रक्षा करने के लिए नेक इरादे से अपने पंथ को तैयार किया है। लेकिन जब हमने यह सब कह दिया है, तो हमने केवल उसके वस्त्र की छोर को ही छूआ है। उसके महिमामयी अस्तित्व की गहराई को समझने के लिए हमारी ध्वनि रेखाएं बहुत छोटी हैं। पुराने समयों में, जब जहाज अज्ञात समुद्र में चलते थे, तो ध्वनि रेखाएं महत्वपूर्ण होती थीं। जैसे ही जहाज उथले पानी के पास पहुँचते थे, तो जहाज के चाप में सवार लोग अपनी छड़ी और पैमाने को आगे की जंजीरों तक ले जाते थे, उन्हें समुद्र में फेंक देते थे, और अपनी खोज को वापस चिल्लाकर बताते थे: "पाँच के निशान तक!" या "गहराई से चार!" लेकिन जहाज के हर कप्तान को यह सुनना पसंद था कि "इस पंक्ति से नीचे कोई तल नहीं है!" अगर हम कभी मसीह के व्यक्तित्व को समझने के इस तल को छू पाते, तो वह परमेश्वर ही नहीं होता। लेकिन वह वास्तव में परमेश्वर ही है।

यीशु ने हमें सोचने के लिए और भी बहुत कुछ दिया: "और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र।" सृष्टि और सृष्टिकर्ता के बीच की खाई अनंत है। कोई भी प्राणी, चाहे उसकी बौद्धिक प्रतिभा कितनी भी महान क्यों न हो, परमेश्वर के चमत्कारों को नहीं समझ सकता। हम उसकी सृष्टि के सभी रहस्यों को नहीं सुलझा सकते, उसके चरित्र की तो बात ही छोड़ दीजिये। परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक बहुत बड़ी खाई है, एक तरह की बहुत बड़ी दूरी। हम परमेश्वर की सर्वसामर्थ्यता, सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता के बारे में क्या जान सकते हैं? हम केवल उसके प्रेम, उसकी पवित्रता, उसकी अनंत सलाह और उसके परमेश्वरत्व की छाया में खेल ही सकते हैं।

शास्त्रियों और फरीसियों ने सोचा कि वे परमेश्वर को जानते हैं। वे परमेश्वर के बारे में बहुत थोड़ा ही जानते थे, जिसमें परमेश्वर पुराने नियम में अपने मन, हृदय और इच्छा के बारे में प्रकट करने में प्रसन्न हुआ था। लेकिन उन्होंने उन पवित्रशास्त्रों पर इतनी अधिक बहस, चर्चा और विकृति ला दी थी कि परमेश्वर के बारे में उनके अधिकांश निष्कर्ष गलत थे।

जब मसीह ने कहा, "और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र," तो वह परमेश्वरत्व का एक और दावा कर रहा था। वह दावा कर रहा था कि उसके पास परमेश्वर के मन के साथ साथ एक ऐसा भी मन है, जो परमेश्वर के विचारों को सोचने में सक्षम है। वह दावा कर रहा था कि उसके पास एक ऐसा मन है जो स्थान और समय के सभी कारकों, अनंत काल के सभी इतिहास, सभी अनगिनत विवरणों को समझ सकता है जो सर्वज्ञता का निर्माण करते हैं। मसीह दावा कर रहा था कि उसके पास एक ऐसा हृदय है जो पिता के हृदय के साथ पूर्ण सामंजस्य में धड़कता है और एक ऐसी इच्छा है जो अनंत के अनंत उद्देश्य और इच्छा को क्रियान्वित करने में सक्षम है। यीशु पिता को उस प्राथमिक, सीमित तरीके से नहीं जानता था जिस तरह से एक साधारण प्राणी उसे जानता है। यीशु पिता को ठीक वैसे ही जानता था जैसे पिता उसे जानता था - पूरी तरह से, बिना किसी दोष के। प्रभु अपने पिता के अस्तित्व की गहराई, उसके चरित्र की जटिलताओं और उसके व्यक्तित्व, प्रकृति और परमेश्वरत्व के सभी पहलुओं को जानता था।

(2) विस्तृत सम्बन्ध (11:27c)

प्रभु ने अपने कथन में आगे यह भी जोड़ा: "और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे।" मसीह के अलावा कोई भी परमेश्वर को नहीं जान सकता। हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म या इस्लाम की शिक्षाओं में उसे खोजना बिल्कुल व्यर्थ है। वे शिक्षाएँ पिता को प्रकट नहीं करतीं। सृष्टि में उसे खोजना भी उतना ही व्यर्थ है। सृष्टि परमेश्वर की अनंत सामर्थ्य और परमेश्वरत्व के गवाह है, लेकिन यह पिता को उसके व्यक्तित्व की सभी महिमामय पहलुओं और उसके अस्तित्व के रहस्यों में प्रकट नहीं करती। केवल यीशु ही उसे प्रकट कर सकता है। और वह ऐसा ही करता हैं।

जब फिलिप्पुस ने पूछा, "हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे: यही हमारे लिये बहुत है," तो यीशु ने उत्तर दिया, “जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है" (यूहन्ना 14:8-9)। ऐसा कोई कथन कभी भी किसी इस्राएली भविष्यद्वक्ता या मसीही प्रेरित के होठों से नहीं निकला। यूहन्ना ने कहा, "परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में हैं, उसी ने उसे प्रकट किया" (यूहन्ना 1:18)। यहाँ "प्रकट किया" का अनूदित शब्द एक्सेजोमाई है, जिसका अर्थ है "मार्ग दिखाना, व्याख्या करके समझाना।" अंग्रेजी शब्द “एक्सेजेसिस” (व्याख्या) एक्सेजोमाई से ही लिया गया है। प्रभु यीशु परमेश्वर की व्याख्या है।

घ. निमंत्रण (11:28-30)

राष्ट्र के रूप में इस्राएल ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी थी, इसलिए प्रभु ने व्यक्तिगत रूप से लोगों से अपील की। यह निमंत्रण, आयतों की एक अद्भुत त्रिएकता में आता है जिसे हम कंठस्थ जानते हैं, इसमें उद्धार के लिए एक आह्वान और सेवकाई के लिए एक बुलाहट शामिल है।

1. उद्धार के लिए बुलाहट (11:28)

उद्धार के लिए बुलाहट में एक निवेदन और एक प्रतिज्ञा शामिल है: "हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" यह उन सभी रब्बीनुमा धर्म और कर्मों पर आधारित सभी अन्य धर्मों के लिए कितना ही बढ़िया शब्द-चित्रण है! पाप का बोझ भारी होता है। मनुष्य की धार्मिक प्रणालियाँ अपने अनुष्ठानों और समारोहों, संस्कारों और बलिदानों, दशमांश और भेंटों, नियमों और व्यवस्थाओं, तप और उपवासों, लंबी प्रार्थनाओं और थका देने वाली धर्मशिक्षाओं के साथ कितना बोझिल लगता हैं। लेकिन यीशु ने उन सभी बोझों को दूर कर दिया।

प्रभु की बुलाहट में, "परिश्रम" का जवाब "दूँगा" से दिया गया है; "बोझ से दबे" का जवाब "विश्राम" से दिया गया है। जो विश्राम मसीह द्वारा दिया जाता है उसे खरीदा या अर्जित नहीं किया जा सकता। यह एक वरदान है। इसके लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है केवल उसके पास आना काफी है - और विश्राम करना है। एक बार जब हमें यह वरदान मिल जाता है, तो हमें अपने स्वयं के प्रयासों से अपने उद्धार को बनाए रखने की आवश्यकता नहीं होती है। हम केवल उसमें और उसके द्वारा पूर्ण किए गए कार्य में विश्राम करते हैं।

2. सेवा के लिए बुलाहट (11:29-30)

क. निमंत्रण (11:29)

तीन शब्द जो सेवा की बुलाहट को सारांशित करते हैं: "लो", "सीखो" और "पाओ।" "लो" हमारे निर्णय की बात करता है; "सीखो" हमारे विकास की बात करता है; और "पाओ" हमारी खोज की बात करता है।

(1) हमारा निर्णय – "लो" (11:29a)

यीशु ने कहा, "मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो।" एक बार जब हम उद्धार पा लेते हैं, तो हमें उसके साथ जुतने, उसके साथ काम करने के लिए बुलाया जाता है। वह अपना जूआ हम पर ज़बरदस्ती नहीं थोपता। प्रभु हमें इस ज़रूरतमंद संसार में उसके महान कार्य में शामिल होने, उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने, उसका सहायक बनने के लिए आमंत्रित करता है - मानो उसे हमारी मदद की ज़रूरत हो!

यह कितना ही अद्‌भुत निमंत्रण है और ऐसे कितने ही कम लोग हैं जो इसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया देते हैं! मसीह के साथ जुतने, उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने, उसके साथ हर कदम उठाने से बड़ा सौभाग्य इस पूरी दुनिया में और क्या हो सकता है? हमें इस संसार के बिना जुते हुए, बिना बोए गए खेत में कार्य करने का फैसला करने का अवसर दिया गया है और अपने पीछे लंबी-लंबी खाइयाँ छोड़ जाने का मौका दिया गया है, जिनमें वे बहुमूल्य बीज बोए गए हैं जो धरती पर हमारे दिन खत्म होने के बाद भी फसल लाने में सक्षम होंगे।

(2) हमारा विकास – "सीखो" (11:29b-c)

यीशु अभी-अभी साधारण लोगों से, जो बहुत धार्मिक थे, और राष्ट्र के उन अगुवों से, जो बहुत गलत थे, कह रहा था, "तुम पिता को नहीं जानते। मैं ही एकमात्र व्यक्ति हूँ जो पिता को जानता है। यदि तुम पिता को जानना चाहते हो, तो तुम्हें मेरे पास आना होगा।" हम प्रतिक्रिया की कल्पना कर सकते हैं: "क्या अहंकार! क्या दंभ है!" और हम प्रभु को जवाब देते हुए सुन सकते हैं, "बल्कि इसके विपरीत... मैं नम्र और मन में दीन हूँ। मैंने अपने पिता के साथ अपने रिश्ते के बारे में जो कहा वह घमंड की अभिव्यक्ति नहीं है जो अपने किनारों से बाहर उमड़ गया हो। यह केवल सत्य का एक बयान है। और यह ऐसा ही है। मैंने जो कहा वह एक आत्मिक सत्य है जो किसी भी अन्य प्रकार के सत्य की तरह सटीक, अटल और प्रमाणित है - चाहे वह कृषि, गणित या जैविक विज्ञान ही क्यों न हो।"

यहूदियों ने यीशु का तिरस्कार किया क्योंकि वह नम्र और दीन था। वे एक नम्र राजा को नहीं चाहते थे। वे एक उग्र राजा चाहते थे जो रोम की शक्ति को नष्ट कर दे और यरूशलेम को यहूदियों द्वारा शासित एक नए विश्व साम्राज्य की राजधानी बना दे। वे एक दीन राजा नहीं चाहते थे। वे एक प्रभुतापूर्ण राजा चाहते थे जो उनके दुश्मनों को धूल में मिला दे और अपने पैरों को इस्राएल के दुश्मनों की गर्दन पर रख दे।

लेकिन प्रभु चाहता है कि हम उसके जैसा बनना सीखें। उसने कहा, "मुझसे सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ।" वह चाहता है कि हममें से जिन्हें उसने बचाया और जिन्हें काम पर लगाया है, वे पिता के बारे में सच्चाई, पुत्र के बारे में सच्चाई और खुद के बारे में सच्चाई को सीखें। हमारे विकास की विशेषता अनंत और अनंतता की निरंतर बढ़ती समझ होनी चाहिए।

(3) हमारी खोज—"पाओ" (11:29d)

यीशु ने वचन दिया, "और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।" वह विश्राम राजा के लिए सच्ची सेवा का रहस्य है। सच्ची सेवा में अनावश्यक चिंता, बेचैन गतिविधि, नियमित दबाव, अंतहीन समय सीमा, थका देने वाली जल्दबाजी आदि बातें शामिल नहीं है। सच है, काम तो है जिसे करना है; परमेश्वर के लिए कुछ बातों को पूरा करना है। लेकिन सभी ग्रहणयोग्य सेवाएँ उसमें पाए जाने वाले हमारे विश्राम से ही प्राप्त होती हैं।

ख. आश्वासन (11:30)

11:28-29 का निमंत्रण 11:30 के आश्वासन की ओर ले जाता है: "मेरा जूआ सहज है, और मेरा बोझ हल्का है।" प्रभु हम पर कभी भी हमारी सामर्थ्य से अधिक बोझ नहीं डालेगा, कभी भी हमारी क्षमता से अधिक काम नहीं देगा। वह स्वयं जूए की दूसरी तरफ है और वह उसका सारा भार उठाता है। जिम्मेदारी उसकी है। परिणाम उसका बोझ है, हमारा नहीं। प्रभु दुनिया के सबसे दयालु, सबसे विचारशील स्वामी हैं। आओ! लो! सीखो! पाओ!

खंड 3 विरोध पर केंद्रित (12:1-14:36)

1. फरीसियों का द्वेष (12:1-50)
    1. सब्त को पुनर्स्थापित करना (12:1-14)
        1. सब्त के दिन भूख का मामला (12:1-8)
            1. उग्रता (12:1)
                1. दिन
                2. आकांक्षा
                3. कर्म
            2. आरोप (12:2-5)
                1. इसकी नींव (12:2)
                2. इसकी मूर्खता (12:3-5)
                    1. कर्म के विषय में—प्रदर्शन की रोटी (12:3-4)
                    2. दिन के विषय में—बलिदान (12:5)
                3. पुष्टि (12:6-8)
                    1. यीशु यहूदी पवित्रस्थान से महान है (12:6-7)
                    2. यीशु यहूदियों के सब्त से भी महान है (12:8)
        2. सब्त के दिन चंगाई का मामला (12:9-14)
            1. मामला (12:9-10)
                1. यह घटना कहाँ घटी (12:9)
                2. यह घटना कब घटी (12:10a)
                3. यह घटना क्यों घटी (12:10b)
            2. टिप्पणी (12:11-12)
                1. यह कितना उचित था (12:11)

2. यह कितना लागू करने लायक था (12:12)
3. उपचार (12:13)
4. सम्मति (12:14)

2. पवित्रशास्त्र की फिर से पुष्टि करना (12:15-24)
1. वह मार्ग जिसका प्रभु ने अनुसरण किया (12:15-16)
1. उसने जो चुनाव किया (12:15)
1. फरीसियों की उपस्थिति से दूर रहना (12:15a)
2. फरीसियों के सभी दबावों का सामना करना (12:15b)
2. उसने जो आदेश दिया (12:16)
2. वह भविष्यद्वाणी जिसे प्रभु ने पूरी की (12:17-21)
1. भविष्यद्वक्ता का नाम (12:17)
2. भविष्यद्वाणी की प्रकृति (12:18-21)
1. मसीहा के चिह्न (12:18)
1. उसका व्यक्तित्व (12:18a-b)
1. वह जीवित परमेश्वर की सेवा करने आया (12:18a)
2. वह जीवित परमेश्वर को संतुष्ट करने आया (12:18b)
2. उसकी सामर्थ्य (12:18c)
3. उसके लोग (12:18d)
2. मसीहा का तरीका (12:19-20)
1. स्वभावगत टिप्पणी (12:19-20a)
1. उसके पास आने की शांति (12:19)
2. उसकी अपील की गुणवत्ता (12:20a)
2. स्वभाव संबंधी टिप्पणी (12:20b)
3. मसीहा की महिमा (12:21)
3. वह भेदभाव जिसके विरूद्ध प्रभु ने लड़ाई लड़ी (12:22-24)
1. प्रभु का चमत्कार (12:22-23)
1. स्वामी का कार्य (12:22)
2. भीड़ द्वारा जयजयकार (12:23)
2. धार्मिक अगुवों का द्वेष (12:24)
1. उनकी कड़वाहट (12:24a)
2. उनकी ईशनिंदा (12:24b)

3. उपहास करने वालों का खंडन (12:25-37)
1. फरीसियों की बातें निराधार थीं (12:25-30)
1. प्रभु ने उनके विचारों को कैसे पढ़ा है (12:25a)
2. प्रभु ने उनके सिद्धांत को कैसे अस्वीकार किया (12:25b-30)
1. विभाजित राज्य का परिणाम (12:25b-27)

1. सिद्धांत (12:25b)
2. समस्या (12:26-27)
1. व्यावहारिक बनाया गया (12:26)
2. व्यक्तिगत बनाया गया (12:27)
2. ईश्वरीय राज्य की पुष्टि (12:28-30)
1. इसकी उपस्थिति (12:28)
2. इसकी सामर्थ्य (12:29)
3. इसके लोग (12:30)
2. फरीसियों ने जो कहा वह अक्षम्य था (12:31-37)
1. उनके पाप की प्रकृति को प्रकट किया गया (12:31-32)
1. पवित्र आत्मा की निन्दा (12:31)
1. अथाह कृपा (12:31a)
2. अक्षम्य अपराध (12:31b)
2. पवित्र आत्मा का अपमान करना (12:32)
1. परमेश्वर की दया की महानता (12:32a)
2. उनकी द्वेष की चरम (12:32b)
2. उनकी आत्माओं की प्रकृति को प्रकट किया गया (12:33-37)
1. हम जो कहते हैं उसका स्रोत (12:33-35)
1. एक पेड़ और उसकी पैदावार (12:33)
2. एक जीभ और उसका ज़हर (12:34)
3. एक भण्डार और उसका मूल्य (12:35)
2. हम जो कहते हैं उसकी गंभीरता (12:36-37)
1. हमारे वचनों की अनंत प्रकृति (12:36)
2. हमारे वचनों की प्रमाणिक प्रकृति (12:37)
4. चिह्न को अस्वीकार करना (12:38-50)
1. राष्ट्रीय मूर्खता (12:38-45)
1. इस्राएल के अगुवों की अशिष्टता (12:38-42)
1. चिह्न की मांग (12:38)
2. चिह्न अस्वीकार किया गया(12:39)
3. चिह्न पर चर्चा (12:40-42)
1. एक नया केंद्र (पहलू): इस्राएलियों द्वारा यीशु को अंतिम रूप से अस्वीकार किया गया
2. एक नया लक्ष्य: अन्य-जातियों द्वारा यीशु का स्वागत
1. दृष्टांत: अन्यजातीय लोग जिन्होंने परमेश्वर का उद्धार खोजा और पाया

2. दृष्टांत: एक अन्यजातीय राजकुमारी जिसने परमेश्वर की संप्रभुता की खोज की और उसे पाया

2. इस्राएल के लोगों की पश्चाताप-हीनता (12:43-45)

1. एक परेशान करनेवाला दृष्टान्त (12:43-45a)

1. दुष्टात्मा का अनिच्छुक प्रस्थान (12:43a)

2. दुष्टात्मा का दुखद विनाश (12:43b)

3. दुष्टात्मा का समझने योग्य निर्णय (12:44a)

4. दुष्टात्मा की अप्रत्याशित खोज (12:44b)

5. दुष्टात्मा का अपवित्र कार्य (12:45a)

2. एक भयानक समानता (12:45b)

2. एक नया परिवार (12:46-50)

1. पुराने रिश्ते समाप्त हो गए (12:46-47)

1. प्रभु के परिवार का आगमन (12:46)

2. प्रभु के परिवार का आह्वान (12:47)

2. नए सत्य को प्रकट किया गया (12:48-50)

1. पूर्व रिश्तों को चुनौती (12:48)

2. भविष्य के रिश्ते बदल गए (12:49-50)

1. एक नए लोग (12:49)

2. एक नया सिद्धांत (12:50)

2. राज्य के भेद (13:1-52)

1. सार्वजनिक रूप से कहे गए दृष्टांत (13:1-35)

1. भीड़ (13:1-2)

2. भेद (13:3-35)

1. बीज बोनेवाले का दृष्टांत—उद्धार का संदेश—स्वभाव के पहलू पर जोर (13:3-23)

1. दृष्टांत का परिचय (13:3-9)

1. बीज बोनेवाला (13:3)

2. भूमि (13:4-8)

1. सड़क किनारे की भूमि (13:4)

बीज के जीवित रहने की संभावना:

1. वास्तव में थोड़ा ही

2. तुरन्त खो गया

2. पत्थरीली भूमि (13:5-6)

1. कम गहरी (13:5)

2. कोई विकास नहीं (13:6)

3. बर्बाद भूमि (13:7)

4. उपजाऊ भूमि (13:8)

3. सम्मान (बुलाहट) (13:9)

2. दृष्टान्त के बीच व्यवधान (13:10-17)

1. दृष्टान्तों के बारे में एक वचन (13:10-13)

1. एक भेद (13:10-11)

2. एक तरीका (13:12)

3. एक उद्देश्य (13:13)

2. परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता के विषय में एक वचन (13:14-15)

1. मनुष्य (13:14)

2. सन्देश (13:15)

3. चेलों के विशेषाधिकार के बारे में एक वचन (13:16-17)

1. वह समझ जो उनकी थी (13:16)

2. वह युग जो उनका था (13:17)

3. दृष्टान्त की व्याख्या (13:18-23)

1. कुछ लोगों का भटक जाना (13:18-19)

1. वचन को सतही तौर पर ग्रहण किया गया (13:18-19a)

2. शैतानी तरीके से हटाया गया वचन (13:19b)

2. कुछ लोगों में व्याप्त कमज़ोरी (13:20-21)

1. उनकी आरंभिक प्रतिक्रिया (13:20)

2. उनका अधूरा जवाब (13:21)

3. कुछ लोगों में व्याप्त सांसारिकता (13:22)

1. चिंता बीज को नष्ट कर देती है (13:22a)

2. धन बीज को नष्ट कर देता है (13:22b)

4. कुछ लोगों की इच्छाएं (13:23)

1. वचन को समझकर जीवन में ग्रहण किया गया (13:23a)

2. वचन का जीवन में पुनःप्रस्तुत होना (13:23b)

2. जंगली पौधों का दृष्टांत—शैतान की दुष्टता—शैतानी पहलू पर जोर (13:24-30)

1. बोना (13:24-25)

1. अच्छे बीज (13:24)

2. ज़हरीली खरपतवार (जंगली पौधे) (13:25)

2. बढ़ता हुआ (13:26-28a)
1. जंगली दाने की उपस्थिति का खुलासा (13:26)
2. जंगली दाने की उपस्थिति का स्पष्टीकरण (13:27-28a)
3. पौधों की कटाई (13:28b-30)
1. प्रस्ताव (13:28b)
2. संभावना (13:29-30)
1. अभी बढ़ने की अनुमति है (13:29-30a)
2. वादा किए गये को बाद में इकट्ठा किया जाएगा (13:30b)

3. राई के दाने का दृष्टांत—सर्वोच्चता का मिथक—व्यवस्था के पहलू पर जोर (13:31-32)
1. राई के दाने ने क्या दिखाया (13:31-32a)
1. एक असामान्य वृद्धि
2. सांसारिक भव्यता
2. राई के दाने ने किसे आश्रय दिया (13:32b)

4. खमीर का दृष्टांत—उलट फेर का रहस्य—सैद्धांतिक पहलू पर जोर (13:33-35)
1. स्त्री (13:33)
1. खमीर की गतिविधि
1. रोटी
2. खमीर
1. बुराई से भ्रष्ट हुआ विश्वास
2. बुराई से दूषित आचरण
2. स्त्री का कार्य
2. वचन (13:34-35)
1. प्रभु के दृष्टान्तों के सम्बन्ध में एक टिप्पणी (13:34)
2. प्रभु के उद्देश्य के बारे में एक टिप्पणी (13:35)
1. परमेश्वर के वचन की सच्चाई को प्रमाणित करना (13:35a)
2. परमेश्वर के वचन की सच्चाई को आवाज़ देना (13:35b)

2. निजी तौर पर कहे गए दृष्टांत (13:36-52)
1. एक स्पष्टीकरण (13:36-43)
1. स्थान (13:36)
2. दृष्टान्त (13:37-43)

1. तथ्य (13:37-38)
    1. बीज बोने वाला (13:37)
    2. भूमि (13:38a)
    3. बीज (13:38b)
2. शत्रु (13:39a)
3. भविष्य (13:39b-c)
    1. अन्त समय का युग (13:39b)
    2. अंतिम समय के प्रतिनिधि (दूत) (13:39c)
4. आग (13:40-42)
    1. जंगली बीजों के प्रकार (13:40)
    2. यातना की सच्चाई (13:41-42)
5. विश्वासयोग्य (13:43)

2. एक विस्तार (13:44-52)
1. छिपे हुए धन का दृष्टांत—एक राष्ट्रीय स्थगन—इस्राएली लोग (13:44)
    1. एक स्थान (13:44a)
    2. एक योजना (13:44b)
    3. एक मूल्य (13:44c)
2. बहुमूल्य मोती का दृष्टांत—एक नई सम्पत्ति—स्वर्गीय लोग (13:45-46)
    1. महान खोज (13:45-46a)
        1. व्यापारी क्या चाहता था (13:45)
        2. व्यापारी को क्या पाया (13:46a)
    2. महान प्रश्न (13:46b)
3. बड़े जाल का दृष्टांत—एक आवश्यक प्रक्रिया—अन्यजातीय लोग (13:47-50)
    1. क्या पाया गया (13:47a)
    2. क्या पकड़ा गया (13:47b)
    3. क्या किया गया (13:48)
    4. क्या सिखाया गया (13:49-50)
        1. प्रभु के दूत (13:49)
        2. खोए हुए लोगों की पीड़ा (13:50)
4. बुद्धिमान गृहस्थ का दृष्टांत—एक ज़रूरी समझ (13:51-52)
    1. सत्य को परखना चाहिए (13:51)
    2. सत्य को अवश्य प्रकट करना चाहिए (13:52)

3. यूहन्ना की हत्या (13:53-14:36)
1. घर और उसके आलोचक (13:53-58)

1. घर का दृश्य (13:53-54)
    1. आस-पास का वातावरण (13:53-54a)
    2. आराधनालय (13:54b-c)
        1. मसीह की शिक्षा का अधिकार (13:54b)
        2. मसीह के नगरवासियों का आश्चर्य (13:54c)
2. द्वेषपूर्ण माहौल (13:55-58)
    1. शत्रुता का कारण (13:55-57a)
        1. छोटे नगर में रहने का तर्क (13:55-56a)
        2. छोटे नगर का आक्रोश (13:56b-57a)
    2. शत्रुता का परिणाम (13:57b-58)
        1. एक गंभीर अवलोकन (13:57b)
        2. एक दुखद अवलोकन (13:58)

2. हेरोदेस और उसका विवेक (14:1-12)
    1. गलत धारणा (14:1-2)
        1. हेरोदेस ने क्या सुना (14:1)
        2. हेरोदेस को क्या सता रहा था (14:2)
            1. उसकी पहली धारणा (14:2a)
            2. उसका आगे का अनुमान (14:2b)
    2. दुष्ट संकल्प (14:3-12)
        1. एक स्थगित किया गया अपराध (14:3-5)
            1. क्रोधित हेरोदियास (14:3-4)
                1. यूहन्ना को क्यों कष्ट सहना पड़ा (14:3)
                2. यूहन्ना ने क्या कहा (14:4)
            2. अनिर्णायक हेरोदेस (14:5)
                1. वह क्या चाहता था (14:5a)
                2. उसने देरी क्यों की (14:5b)
        2. एक प्रस्तावित अपराध (14:6-8)
            1. दिन (14:6a)
            2. नृत्य (14:6b)
            3. दुविधा (14:7-8)
                1. मूर्खतापूर्ण शपथ (14:7)
                2. एक नियतिपूर्ण याचना (14:8)
        3. एक अपराध किया गया (14:9-12)
            1. यूहन्ना का सिर काटा गया (14:9-11)
                1. राजा की कायरता (14:9)
                2. राजा की आज्ञा (14:10-11)

2. यूहन्ना को गाड़ा जाता है (14:12)

3. मनुष्यत्व और उसकी चिंताएँ (14:13-36)

1. मनुष्यजाति के प्रति करुणा (14:13-14)

1. स्वामी की गहरी ज़रुरत (14:13a)

2. भीड़ की गहरी ज़रूरत (14:13b-14)

1. यह कैसे प्रकट हुआ (14:13b)

2. यह कैसे हुआ (14:14)

1. यीशु का हृदय प्रकट हुआ (14:14a)

2. यीशु की चंगाई पुनः शुरू हुई (14:14b)

2. मनुष्यजाति की भूख के प्रति करुणा (14:15-21)

1. समस्या (14:15-18)

1. तर्क का उत्तर (14:15)

1. चेलों ने क्या देखा (14:15a)

2. चेलों ने क्या कहा (14:15b)

2. प्रेम का उत्तर (14:16-18)

1. चेलों ने क्या सुना (14:16)

2. चेलों के पास क्या था (14:17-18)

1. सीमित आपूर्ति (14:17)

2. एक अनंत उद्धारकर्ता (14:18)

2. प्रावधान (14:19-21)

1. एक धन्य आपूर्ति (14:19)

1. भीड़ (14:19a)

2. आश्चर्यकर्म (14:19b-c)

1. इसका आत्मिक आयाम (14:19b)

2. इसका अलौकिक आयाम (14:19c)

2. भरपूर आपूर्ति (14:20-21)

1. ज़रूरतों के बारे में एक टिप्पणी (14:20)

1. कोई कमी नहीं (14:20a)

2. कोई बर्बादी नहीं (14:20b)

2. गिनती के बारे में एक टिप्पणी (14:21)

3. मनुष्यजाति की असहायता के प्रति उसकी करुणा (14:22-33)

1. शांति (14:22-25)

1. इच्छित (14:22-23)

1. तरीका (14:22-23a)

1. यीशु ने अपने चेलों को भेजा (14:22a)
2. यीशु ने भीड़ को विदा किया (14:22b-23a)

2. उद्देश्य (14:23b)

2. व्याकुल (14:24-25)

1. तूफ़ान का आगमन (14:24)
2. उद्धारकर्ता का आगमन (14:25)

2. भय (14:26)

1. चेलों ने क्या देखा (14:26a)
2. चेलों ने क्या अनुमान लगाया (14:26b)

3. भरोसा (14:27-31)

1. पतरस के भरोसे का आधार (14:27)
2. पतरस के भरोसे की निर्भीकता (14:28-29)
3. पतरस के भरोसे का टूटना (14:30-31)

1. कारण (14:30)
2. उपाय (14:31)

4. सत्य (14:32-33)

1. तत्काल शांति (14:32)
2. उत्तम अंगीकार (14:33)

5. मनुष्यजाति के कष्टों के प्रति तरस (14:34-36)

1. स्वामी का आगमन (14:34)
2. भीड़ का आगमन (14:35-36)

1. समाचार (14:35a)
2. ज़रूरत (14:35b-36)

1. उनकी समस्याओं का कोई अंत नहीं (14:35b)
2. उसकी सामर्थ्य का कोई अंत नहीं (14:36)

I. फरीसियों का द्वेष (12:1-50)

क. सब्त को पुनर्स्थापित करना (12:1-14)

प्रभु के प्रति विरोध लगातार बढ़ता गया और मत्ती ने अपने ही लोगों, यहूदियों के विरूद्ध सबूत जुटाए। फरीसियों का द्वेष सब्त के दिन को लेकर प्रभु से उनकी असहमति पर केंद्रित था। दरअसल यह सब्त का सवाल ही था जिसने यहूदी अधिकारियों को यीशु से छुटकारा पाने के लिए प्रेरित किया।

सब्त और खतना सबसे महत्वपूर्ण और पवित्र विधियाँ थीं; वे एक यहूदी को यहूदी बनाती थीं। सब्त विशेष रूप से यहूदी धर्म की एक विशिष्टता थी। संसार के किसी अन्य लोगों ने सात दिनों में से एक दिन परमेश्वर की आराधना करने, विश्राम का आनंद लेने और जीवन के आत्मिक हिस्से की उन्नति के लिए अलग नहीं रखा। रब्बियों ने सब्त को हज़ारों प्रतिबंधों के साथ घेर रखा था।

1. सब्त के दिन भूख का मामला (12:1-8)

क. उत्तेजना (12:1)

फरीसी अब यीशु के पदचिन्हों का करीब से पीछा कर रहे थे, ताकि आलोचना करने के लिए उन्हें कुछ मामला मिल जाए। जैसे ही चेलों ने सब्त के दिन बालें तोड़कर खाने लगे, तो उनको मौका मिल गया और वे उस पर टूट पड़े। फरीसी चेलों पर चोरी का आरोप नहीं लगाते, क्योंकि इस तरह से बटोरना वैध था (व्यवस्थाविवरण 23:25); बल्कि उन्होंने उन पर सब्त के दिन का उल्लंघन करने का आरोप लगाया। रब्बियों के अनुसार, बालें तोड़ना कटाई के बराबर था, और उन बालों को हाथ में रखकर छीलना भूसी को अलग करने के बराबर था। उनके विचार में दोनों ही गतिविधियाँ अवैध थीं। प्रभु के चेलों ने, यकीनन उसकी स्वीकृति के साथ ही, सब्त के दिन का उल्लंघन किया था। यही उस उत्तेजना का कारण था।

ख. आरोप (12:2-5)

(1) इसकी नींव (12:2)

उस पर तुरन्त आरोप लगाया गया: “देख तेरे चेले वह काम कर रहे हैं, जो सब्त के दिन करना उचित नहीं।” लेकिन प्रभु ने व्यवस्था के हर एक अक्षर और बिंदु का पालन किया था। उसने कभी भी अपने विचार, वचन या कर्म में अक्षरशः या आत्मा में एक भी आज्ञा का उल्लंघन कभी नहीं किया। तो जाहिर है कि चेले जो कर रहे थे, वह किसी भी तरह से सब्त का उल्लंघन नहीं था। समस्या यह नहीं थी कि वे सब्त का उल्लंघन कर रहे थे, बल्कि यह थी कि वे रब्बियों द्वारा बनाए गए सब्त के नियमों का उल्लंघन कर रहे थे। रब्बियों ने अपने रीति-रिवाजों को परमेश्वर के वचन से ऊपर रखा था। आरोप का जवाब देते हुए, राजा ने चेलों द्वारा किए जा रहे कार्यों की जिम्मेदारी स्वयं ली। यदि उन्होंने परमेश्वर के किसी भी व्यवस्था का उल्लंघन किया होता, तो वह उन्हें अवश्य रोक देता।

(2) इसकी मूर्खता (12:3-5)

प्रभु ने कुशलतापूर्वक उस आरोप को टाल दिया। "क्या तुमने नहीं पढ़ा...?" उसने पूछा (12:3)। यीशु ने छह अलग-अलग मौकों पर यह सवाल पूछा और पुराने नियम की छह अलग-अलग किताबों और सात अलग-अलग पद्यांशों का हवाला दिया: मत्ती 12:3 (लैव्यव्यवस्था 24:6-9; 1 शमूएल 21:6); मत्ती 12:5 (गिनती 28:9-10); मत्ती 19:4 (उत्पत्ति 1:27); मत्ती 21:16 (भजन 8:2); मत्ती 21:42 (भजन 118:22); मत्ती 22:31-32 (निर्गमन 3:6)। यह परमेश्वर के वचन के प्रति हमारे प्रभु के मनोभाव का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

उसने इस पर विश्वास किया, इसका आधिकारिक रूप से हवाला दिया, बिना किसी झिझक के इसे प्रस्तुत किया, इसे पूरी तरह से जाना और इसके सभी हिस्सों पर अपनी ईश्वरीय छाप छोड़ी।[1] जो लोग परमेश्वर के वचन से भटक जाते हैं वे वास्तव में मसीह के लिए अजभविष्यद्वक्ता हैं।

(a) कर्म के विषय में — भेंट की रोटी (12:3-4)

प्रभु ने फरीसियों का ध्यान दाऊद के जीवन की एक घटना की ओर आकर्षित किया (1 शमूएल 21:6)। दाऊद और उसके साथी राजा शाऊल से भाग रहे थे। वे भूखे थे इसलिए उन्होंने रोटी के लिए महायाजक से निवेदन किया। वहाँ पर एकमात्र रोटी जो उपलब्ध थी वह पवित्र भेंट की रोटी थी, जिसे सप्ताह में केवल एक बार निवासस्थान के पवित्र स्थान में मेज पर रखा जाता था। रोटी को केवल याजकों और उनके आश्रितों द्वारा ही खाया जाना था। हालाँकि, महायाजक ने (कुछ हद तक हिचकिचाहट के साथ) दाऊद और उसके साथियों को बारह रोटियाँ दीं, और परमेश्वर का क्रोध उन पर नहीं उतरा। इससे फरीसियों की चेलों द्वारा उस खेत से बालें तोड़कर खाने की आपत्ति दूर हो गई जिसे रीति-रिवाज़ के अनुसार अवैध माना जाता था।

दाऊद की उस समय की ज़रूरत किसी भी रीति-रिवाज़ से ज़्यादा महत्वपूर्ण थी, चाहे वह कितना भी आधिकारिक क्यों न हो। अगर परमेश्वर अपने औपचारिक व्यवस्था को इस तरह से अलग रख सकता है, तो प्रभु उन रब्बी के पारंपरिक व्यवस्था को कितना अलग रख सकता है, जिसका कोई अधिकार नहीं था!

(b) दिन के विषय में—बलिदान (12:5)

फिर से हम प्रभु के धारदार प्रश्न को पढ़ते हैं, "क्या तुमने नहीं पढ़ा...?" फरीसियों ने व्यवस्था को ठीक से पढ़ा था, लेकिन उन्होंने इसे कभी नहीं समझा था। यीशु ने पूछा, "क्या तुमने व्यवस्था में नहीं पढ़ा, कि याजक सब्त के दिन मन्दिर में सब्त के दिन के विधि को तोड़ने पर भी निर्दोष ठहरते हैं?" मंदिर में याजकों के कर्तव्यों में कड़ी मेहनत शामिल थी। सब्त का दिन उनके लिए सप्ताह का सबसे व्यस्तम दिन होता था।

उन्हें भेंट की रोटी पकानी थी और सब्त के दिन बलि चढ़ानी थी (गिनती 28:9)। सब्त के दिन प्रतिदिन बलि में दो अतिरिक्त मेमने जोड़े जाते थे। सोच कर देखिये कि अकेले शारीरिक श्रम में क्या-क्या शामिल था। सबसे पहले याजकों को यह सुनिश्चित करने के लिए जानवरों का निरीक्षण करना था कि वे दोष रहित हो। फिर, शामिल अनुष्ठानों पर विशेष ध्यान देते हुए, याजकों को उन मेमनों की बलि चढ़ानी होती थी। आग जलाने के लिए लकड़ियों को तम्बू में लाना था और उसे वेदी पर रखना था। जानवरों की खाल उतारकर उन्हें आग पर चढ़ाना था। पवित्र स्थान में दीपकों की लड़ियों को छाँटना था, मेज की देखभाल करनी थी और सोने की वेदी पर धूप जलाना होता था। जाहिर सी बात है कि सब्त के दिन मूसा की व्यवस्था ने सभी कामों को मना नहीं किया था, केवल लाभ के लिए किए जाने कामों को करने को मना किया गया था।

ग. पुष्टि (12:6-8)

प्रभु ने इस तथ्यपूर्ण तर्क के साथ दो आश्चर्यजनक कथन भी जोड़ा। उसने दावा किया कि वह उस पवित्रस्थान और सब्त दोनों से महान हैं।

(1) यीशु यहूदी पवित्रस्थान से महान है (12:6-7)

फरीसियों की आँखों में देखते हुए, यह जानते हुए कि उनकी प्रतिक्रिया क्या होगी, यह जानते हुए कि वे उससे छुटकारा पाना चाहते थे और वे उसके वचनों को पकड़ लेंगे, यीशु ने कहा, "यहां वह है, जो मन्दिर से भी बड़ा है" (12:6)। यहूदियों के मन में उनके उस पवित्र मंदिर के लिए लगभग मूर्तिपूजकों के तुल्य श्रद्धा थी। उन्होंने स्तिफनुस को पत्थरवाह करके मार डाला क्योंकि उन्हें लगा कि यह उस पर हमला है (प्रेरितों के काम 7:47-51)। उन्होंने 70 ईस्वी में रोम के साथ युद्ध के दौरान इसे बचाने के लिए अत्यंत कट्टरता के साथ संघर्ष किया। यीशु को मंदिर से बड़ा होने का दावा करते हुए सुनकर वे बिल्कुल हैरान रह गए।

प्रभु का कहना था कि यदि पवित्रस्थान की सेवा ने सब्त के दिन काम करने के लिए याजकों को निर्दोष ठहराया, तो प्रभु की सेवा ने चेलों को भी निर्दोष ठहराया है क्योंकि वह परमेश्वर का सच्चा मंदिर था। शेकिना अर्थात् महिमा बहुत पहले ही मंदिर से उठा ली गयी थी। पवित्र आत्मा, अर्थात् परमेश्वर की सच्ची महिमा, अब स्वयं प्रभु में और उसके ऊपर निवास करता है। इसलिए उसने पुष्टि की कि वह पवित्रस्थान से भी बड़ा था।

पवित्रस्थान दरअसल अंतहीन रीति-रिवाजों के बलिदानों का दृश्यस्थल था। अब प्रभु ने पुराने नियम की अंतर्दृष्टि पर आधारित एक पूर्वानुमानित कथन में विधिगत व्यवस्था को दरकिनार कर दिया। होशे 6:6 का हवाला देते हुए, उसने सदियों से चली आ रही गलत रब्बी शिक्षा और परंपरा को खारिज कर दिया: "यदि तुम इस का अर्थ जानते कि मैं दया से प्रसन्न हूँ, बलिदान से नहीं, तो तुम निर्दोष को दोषी न ठहराते" (मत्ती 12:7)।

रब्बियों ने सब्त को आशीष की बजाय एक बोझ बना दिया था। उन्होंने उन धैर्यवान लोगों पर, जो बाइबल की शिक्षा के लिए लगभग उन पर पूरी तरह से निर्भर थे, बेरहमी से व्यवस्था से और उसके परे हज़ारों ज़रूरतें और थोप दीं थी। बाहरी रूप से संतुष्ट होकर - चाहे वह सब्त, पवित्रस्थान या बलिदान से संबंधित हो - रब्बियों ने परमेश्वर के बारे में गलत विचार व्यक्त किए थे। उनका परमेश्वर काफी चौकन्ना था, सूक्ष्म विवरणों के लिए भी अधिक सख्त था। लेकिन सच्चा परमेश्वर - जिसने स्वयं सब्त की स्थापना की थी, बलिदान प्रणाली प्रदान की थी, और एक बार उनके पवित्र स्थान में निवास भी किया करता था - वह करूणामय परमेश्वर था। रब्बियों और फरीसियों ने इस बात को गलत समझा था और इसीलिए उन्होंने चेलों की आलोचना की, जो दरअसल निर्दोष थे।

(2) यीशु यहूदियों के सब्त से भी महान है (12:8)

मानो पवित्रस्थान से भी बड़ा होने का उसका दावा आग के लिए पर्याप्त ईंधन नहीं था, इसलिए प्रभु ने एक और बात इसके आगे जोड़ दी: उसने पुष्टि की कि वह सब्त से भी बड़ा है। उसने कहा, "मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है।" यीशु सब्त का प्रभु था क्योंकि उसका मकसद सब्त को पालन करने की पूरी व्यवस्था को ही अलग रखना था।

उसने परमेश्वर के पुत्र के रूप में सब्त के प्रभु होने का दावा नहीं किया, बल्कि मनुष्य के पुत्र के रूप में किया, क्योंकि "सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है" (मरकुस 2:27)। सब्त की शुरुआत परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के कल्याण के लिए एक दयालु प्रावधान था। पुराने नियम में यहूदियों ने हफ्ते के एक दिन

अपना सब्त का विश्राम पाया, जो सप्ताह का सातवाँ दिन होता है जिसमें स्वयं परमेश्वर ने सृष्टि की उत्पत्ति के बाद विश्राम किया (उत्पत्ति 2:1-3; निर्गमन 20:8-11)। हालाँकि, परमेश्वर का सब्त का विश्राम पाप के कारण टूट गया था।

यहूदी सब्त केवल एक तस्वीर थी; यह मसीह के पूर्ण किए गए कार्य पर आधारित विश्राम की ओर इशारा करती थी (यूहन्ना 17:4; 19:30)। इसलिए नई वाचा में, हमारा विश्राम, परमेश्वर के विश्राम के समान ही, एक व्यक्ति में निहित है: अर्थात् यीशु, जो सब्त का भी प्रभु है।[2]

2. सब्त के दिन चंगाई का मामला (12:9-14)

क. मामला (12:9-10)

सब्त के दिन से भी बड़ा होने का दावा करने के कुछ समय बाद, प्रभु ने सब्त के दिन चंगाई देकर इसे साबित भी कर दिखाया। इस बार राजा इस युद्ध को शत्रु के इलाके में ले गया। वह "उनके आराधनालय में आया" (12:9), जहाँ आलोचना और घृणा की भावना पहले से व्याप्त थी। उस सब्त के दिन उनके आराधनालय में एक व्यक्ति बैठा था जिसका हाथ सूखा हुआ था, जो चिकित्सा के किसी भी सहायता से परे था।

फरीसियों ने अनजाने में ही राजा को उसकी सामर्थ्य और उस असहाय आदमी को उसकी दुखद स्थिति में जोड़कर प्रभु की सराहना की। शायद फरीसियों ने देखा होगा कि प्रभु उस आदमी को देख रहा था; प्रभु की आँखें प्रेम और उस अद्भुत तरस से जगमगा रही होंगी जिसका उसने हाल ही में उल्लेख किया था (मत्ती 12:7; होशे 6:6)।

फरीसियों ने प्रभु के लिए एक फंदा तैयार कर रखा था। हम उन संकीर्ण सोच वाले लोगों के लिए खेद महसूस कर सकते हैं, जो जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण में इतने संकीर्ण हैं और जिनकी समझ इतनी विकृत है कि वे कभी इस बात को समझ नहीं पाते कि परमेश्वर कैसा है और बाइबल किस बारे में बात करती है। जब प्रभु यीशु के रूप में सर्वज्ञ मन वाले व्यक्तित्व, असीम करुणा वाले हृदय और अडिग संकल्पशक्ति वाले प्रभु के साथ इनका सामना हुआ तो वे कितने मतलबी और तुच्छ दिखे होंगे। अपने फंदे में खुद ही फँसते हुए, उन्होंने प्रभु से पूछा, "क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है?" (मत्ती 12:10)। उनकी यह छोटी सी साजिश कितनी पारदर्शी थी!

ख. टिप्पणी (12:11-12)

उन्हें लगा कि उन्होंने प्रभु को फँसा लिया है, लेकिन प्रभु पहले से उन फरीसियों के लिए तैयार था। प्रभु ने बड़ी सहजता और प्रेम से उन पर पलटवार किया। उसने उनसे पूछा, "तुम में ऐसा कौन है, जिस की एक ही भेड़ हो, और वह सब्त के दिन गड़हे में गिर जाए, तो वह उसे पकड़कर न निकाले? भला, मनुष्य का मूल्य भेड़ से कितना बढ़ कर है; इसलिये सब्त के दिन भलाई करना उचित है।" फरीसी एक बार फिर चुप हो गए।

वास्तव में प्रभु ने उनसे कहा था, "तुम उस भेड़ की देखभाल इसलिए करते हो क्योंकि वह तुम्हारी है और तुम उसका बहुत अधिक दाम रखते हो।" राजा अब उस पीड़ित व्यक्ति के साथ-साथ सब्त का भी मालिक

होने का दावा कर रहा था! वह व्यक्ति उसका था, उसकी एक भेड़ थी। वह बेकार, सूखे हाथ वाला वह असहाय व्यक्ति उद्धारकर्ता की दृष्टि में बहुत अधिक मूल्यवान था; वह निश्चित रूप से किसी भेड़ से कहीं अधिक मूल्यवान था।

ग. उपचार (12:13)

इससे पहले कि कोई दूसरा शब्द बोला जाता, प्रभु ने उस व्यक्ति को अपना हाथ आगे बढ़ाने का आदेश दिया, और आज्ञा पालन करने पर वह तुरन्त चंगा हो गया। मसीह ने सब्त के दिन पर अपनी संप्रभुता का प्रदर्शन किया था। यह चंगाई उसके परमेश्वरत्व का प्रमाण थी।

घ. सम्मति (12:14)

"तब फरीसियों ने बाहर जाकर उसके विरोध में सम्मति की, कि उसे किस प्रकार नाश करें?" नया जन्म रहित लेकिन एक धार्मिक प्रवत्ति से भरे हृदय में ऐसी ही असाध्य दुष्टता व्याप्त रहती है। मसीह के बैरियों की यह सम्मति उसे समाप्त करने की योजना बनाने के लिए पहली संगठित बैठक थी। मरकुस 3:6 हमें बताता है कि यहाँ तक कि वे हेरोदियों अर्थात् हेरोदेस अन्तिपास के अनुयायियों के साथ मिलकर षडयंत्र रचने चले गए। फरीसियों को हेरोदियों के सभी विचारों से घोर नफरत थी, लेकिन फिर भी यीशु के प्रति उनकी नफरत इससे भी अधिक थी।

ख. पवित्रशास्त्र की फिर से पुष्टि करना (12:15-24)

पिछले अनुच्छेद में हमने देखा कि किस तरह प्रभु ने सब्त को फिर से बहाल किया, उसे उसकी सरल गरिमा वापस लौटाई, जब तक कि सभी तरह के बलिदान, आराधनालय और सब्त एक अप्रचलित धर्म का हिस्सा नहीं बन गए; उन्हें क्रूस के द्वारा निरर्थक बना दिया जाने वाला था और एक नए प्रबंध और एक नई वाचा के लिए एक उच्चतम स्तर और आत्मिक आयाम में पुनर्जीवित किया जाने वाला था। अब 12:15-24 में हम प्रभु को, उसके बैरियों के साथ लगातार बढ़ते टकराव के कारण, पवित्रशास्त्र की आयतों की पुष्टि करते हुए देखेंगे। यह अनुच्छेद फरीसियों द्वारा अक्षम्य पाप करने के साथ समाप्त होता है और इसके बाद यहूदी लोगों की पहली भर्त्सना होती है जो यरूशलेम के विनाश, उनके राष्ट्र के विघटन और इसे एक लम्बे युग के बिखराव की ओर ले जाने वाली थी।

1. वह मार्ग जिसका प्रभु ने अनुसरण किया (12:15-16)

प्रभु अब उस आराधनालय से निकल गया जहाँ उसने अभी-अभी एक सूखे हाथ वाले व्यक्ति को चंगा किया था। यह पहली बार था जब उसने अपने बैरियों से बचने के लिए खुद को पीछे हटाने का विकल्प चुना। जानबूझकर टालना या अनदेखा करना प्रभु की विशेषता बन गई जब तक कि उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने का समय नहीं आ गया। फिर उसने अपना माथा चकमक पत्थर की तरह कड़ा किया (यशायाह 50:7), और जानबूझकर यरूशलेम गया, और घटनाओं को उनके अनिवार्य तरीके से पूरा होने दिया। हालाँकि, उसके मरने का समय अभी नहीं आया था, न ही कफरनहूम में, और न ही फरीसियों द्वारा पत्थरवाह करके मार डालने की विधि से।

इस समय प्रभु को अभी भी व्यापक जन समर्थन प्राप्त था। बड़ी भीड़ उसके पीछे चलती थी। मरकुस 3:7-8 हमें बताता है कि "एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। और यहूदिया, और यरूशलेम और इदूमिया से, और यरदन के पार, और सूर और सैदा के आसपास से एक बड़ी भीड़ यह सुनकर, कि वह कैसे अचम्भे के काम करता है, उसके पास आई।" लेकिन उसका उन को निर्देश था कि "वे उसे प्रकट न करना" (मत्ती 12:16)।

2. वह भविष्यद्वाणी जिसे प्रभु ने पूरी की (12:17-21)

मत्ती ने दिखाया कि प्रभु ने यशायाह 42:1-4 की भविष्यद्वाणी को पूरा किया। यह भविष्यद्वाणी प्रेरित के दृष्टिकोण से विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका संदर्भ अन्यजातियों से है। प्रभु की सेवकाई में इस संकट के समय मत्ती द्वारा अन्यजातियों का परिचय स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि प्रभु पूरे यहूदी राष्ट्र को जीतने के अपने प्रयासों को बर्खास्त करने वाला था। इसके बाद से वह इस्राएल में विश्वास करने वाले बचे हुए छोटे झुण्ड की सेवकाई करेगा और अन्यजातीय राष्ट्रों के बीच एक बड़ी प्रतिक्रिया की उम्मीद करेगा।

भविष्यद्वक्ता यशायाह ने यहूदियों के विश्वास करने वाले बचे हुए छोटे झुण्ड के लोगों की तुलना "कुचले हुए सरकंडों" से जिसे मसीहा अपनी कोमलता दिखाते हुए नहीं तोड़ेगा और "धुआँ देती हुई बत्ती" से की थी जिसे वह नहीं बुझाएगा (मत्ती 12:20)। इस भविष्यद्वाणी ने प्रभु यीशु के कोमल चरित्र की अद्भुत भविष्यद्वाणी पहले ही की थी।

यदि सरकंडों के खोखले बांस को कुचल दिया जाए, तो सरकंडा अब सीधा खड़ा नहीं रह सकता। चूँकि सरकंडा पहले से ही कमज़ोर होता है, इसलिए कुचला हुआ सरकंडा उस कमज़ोरी को और कमज़ोर कर देता है। यह मनुष्यत्व के उन दीन टूटे हुए नमूनों का एक उपयुक्त चित्रण है जिनको प्रभु ने सांत्वना दी और चंगा किया।

धुआँ देती हुई बत्ती ऐसी चीज़ का प्रतिनिधित्व करती है जो अपनी उपयोगिता खो चुका है। बाइबल के समय में बत्ती का उपयोग छोटे भूमि के तेल के दीयों में बाती के रूप में किया जाता था; बत्ती से रोशनी चमकती थी। लेकिन जब यह सुलगता था, तो इससे धुआँ निकलता था जिससे आँखें जलने लगती थीं। फरीसी और धार्मिक अगुवे धुआँ देती हुई बत्ती की तरह थे, और उनकी शिक्षा और उदाहरण भी ऐसे ही थे। लेकिन प्रभु उनके प्रति भी धैर्यवान था। उनमें से कुछ लोग वास्तव में बाद में चेले भी बन गए; नीकुदेमुस इसका एक उत्तम उदाहरण है।

अपनी सेवकाई में प्रभु ने विश्वास करने वाले बचे हुए लोगों की देखभाल की, लेकिन वह पहले से ही क्रूस के दूसरी तरफ और कलीसिया में अन्यजातियों के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी, "और अन्यजातियाँ उसके नाम पर आशा रखेंगी" (मत्ती 12:21)। जिस दौरान मत्ती ने यहूदियों के लिए अपना सुसमाचार लिखा, तब तक अन्यजातियों की लहर उठनी शुरू हो चुकी थी। वह अद्भुत लहर अभी भी चल रही है।

3. वह भेदभाव जिसके विरूद्ध प्रभु ने लड़ाई लड़ी (12:22-24)

क. प्रभु का चमत्कार (12:22-23)

(1) स्वामी का कार्य (12:22)

एक दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति जो अंधा और गूंगा दोनों था, उसे अब यीशु के पास लाया गया। कल्पना कीजिए कि वह न देख सकता था और न ही बोल सकता था! यहाँ वास्तव में एक कुचला हुआ सरकंडा था। उस व्यक्ति की पीड़ा एक दुष्ट आत्मा के कारण हुई थी। प्रभु ने "उसे अच्छा किया; और वह गूंगा बोलने और देखने लगा।" उसका उपचार तत्काल और पूर्ण था।

(2) भीड़ द्वारा जयजयकार (12:23)

जब प्रभु ने वह आश्चर्यकर्म किया, तो साधारण लोग यह देखकर आश्चर्यचकित हो उठे। उन्होंने कहा, "यह क्या दाऊद की संतान नहीं है?" दूसरे शब्दों में, "यह मसीहा ही होगा। कोई और इससे ज़्यादा चमत्कार कैसे कर सकता है?"

ख. धार्मिक अगुवों का द्वेष (12:24)

लेकिन फरीसियों के पास एक अलग व्याख्या थी। उन्होंने कहा, "यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान (बालज़बूल) की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।" यह दूसरी बार था जब उन्होंने ऐसी भयानक बात कही थी। पहली बार, प्रभु ने उन्हें अनदेखा कर दिया था, लेकिन अपने चेलों को उनके विरूद्ध चेतावनी दी थी (9:34; 10:25)। अब फरीसी पहले से अधिक निर्भीक, अधिक तिरस्कारपूर्ण और अविश्वास में अधिक कठोर होते जा रहे थे। उन्हें इसका पता नहीं था, लेकिन इस बार उन्होंने परमेश्वर की दया और उसके क्रोध के बीच की रहस्यमय सीमा रेखा को पार कर लिया था।

प्रभु यीशु को दी गई इस ईशनिंदक उपाधि के कई स्पष्टीकरण हैं। एक यह है कि बालज़बूल ("मक्खियों का स्वामी") एक्रोनियों का देवता था (2 राजा 1:2); इस नाम को इस्राएलियों ने तिरस्कार के कारण बाहेबेल ("गोबर के ढेर का स्वामी") में बदल दिया और दुष्टात्माओं के सरदार के लिए एक विशेषण के रूप में इस्तेमाल किया।[3] परमेश्वर के प्रिय पुत्र के बारे में इससे अधिक अपमानजनक बात और कोई नहीं हो सकती कि उसके शानदार कार्यों को ऐसे स्रोत के साथ जोड़ा जाए।

एडर्सहेम ने यहाँ शब्दों का एक अलग खेल देखा। (उनके अनुसार बेलज़ेबुल सही अनुवाद है, बालज़बूल नहीं।) रब्बीनी उपयोग में ज़ेबुल का अर्थ मंदिर होता था, इसलिए बेलज़ेबुल मंदिर का स्वामी होगा। दूसरी ओर, ध्वन्यात्मक रूप से समान शब्द ज़िबुल के दो अर्थ थे। इसका प्राथमिक अर्थ "गोबर का खाद डालना" था और इसने "मूर्तियों को बलि चढ़ाना" का अतिरिक्त अर्थ ग्रहण किया। इसलिए बेलज़ेबुल का अर्थ "मूर्तियों को बलि चढ़ाने वालों का स्वामी" हो सकता है, वह स्वामी "सबसे बुरा और सबसे प्रमुख शैतान था, जो मूर्तिपूजा का नेतृत्व करता था और उसे भड़काता था।"[4] दूसरे शब्दों में, फरीसियों ने परमेश्वर के चमत्कारिक कार्यों का श्रेय पूरी तरह से शैतान को दिया। बेलज़ेबुल (मंदिर का स्वामी) उनके लिए बेलज़िबुल (मूर्तिपूजा का स्वामी) से बेहतर नहीं था।

फरीसियों द्वारा ईशनिंदा में किए गए इस झूठ ने उन लोगों के लिए अनंत काल का विनाश तय कर दिया जिन्होंने इसे बोला था और उस राष्ट्र की नियति भी जिसके वे झूठे चरवाहे थे। उनकी ईशनिंदा ने प्रभु के जीवन में भी महत्वपूर्ण मोड़ को चिह्नित किया। अब सभी घटनाएँ प्रत्यक्ष रूप से कलवरी की ओर मुड़ गईं।

ग. उपहास करने वालों का खंडन करना (12:25-37)

इस बार प्रभु ने उपहास करने वालों का सीधे तौर से खंडन किया। उनकी इस भयानक ईशनिंदा के प्रति उसकी शांत और जानबूझकर की गई प्रतिक्रिया पर ध्यान दें। यहाँ हम किसी भी तरह का कोई क्रोधित प्रत्युत्तर नहीं देखते, कोई गर्म और जल्दबाजी में की गई भर्त्सना नहीं है। हम जो यहाँ पाते हैं वह केवल उनकी मूर्खता का व्यवस्थित रूप से किया गया पर्दाफाश और उनके विनाश का दुखद बयान है।

1. फरीसियों की बातें निराधार थीं (12:25-30)

पद 25 प्रभु की सर्वज्ञता की पुष्टि के साथ आरम्भ होता है: "उस ने उन के मन की बात जानकर उन से कहा..." उसने उनके मन के विचारों को पढ़ा और उनके सिद्धांत को खारिज कर दिया।

फरीसियों की ईशनिंदा को खारिज करते हुए, प्रभु ने कुछ ऐसा किया जो उसने शायद ही कभी किया हो। उसने खुद पर हुए हमले का जवाब एक तर्क प्रस्तुत करके दिया। आमतौर पर अगर कोई उसे चुनौती देता, तो वह उन्हें उनके हाल पर छोड़ देता या संक्षिप्त, आधिकारिक, अनुत्तरित वचनों में उत्तर देता, जिस पर सर्वज्ञता की छाप होती। तथ्य यह है कि यहाँ उसने तर्क और कारण और प्रभाव के नियम पर आधारित एक अधिक विस्तृत उत्तर विकसित किया, जो इस अवसर की गंभीरता और प्रभाव को रेखांकित करता है। उसने तर्क दिया कि फरीसियों ने अपने ईर्ष्यापूर्ण क्रोध में जो कुछ अभी कहा था, वह अकल्पनीय, असंगत और बेतुका था।

उनका आरोप अकल्पनीय इसलिए था क्योंकि यदि प्रभु बालज़बूल की सामर्थ्य से दुष्टात्माओं को बाहर निकालता, तो शैतान का राज्य गृहयुद्ध की स्थिति में होता। अपने आप में विभाजित राज्य कभी स्थिर नहीं रह सकता। ध्यान दीजिये कि यहाँ प्रभु यीशु ने इस तथ्य को पहचाना कि अदृश्य दुनिया में बुराई का एक संगठित राज्य था, जो मनुष्यजाति के प्रति द्वेष के साथ निर्देशित होता था, कि यह एक दुष्ट और व्यक्तिगत हाकिम द्वारा शासित किया जाता था, और शैतान का राज्य एकजुट था और संघर्षरत गुटों में विभाजित नहीं था। शैतान फरीसियों द्वारा बताए गए तरीके से मनुष्यजाति के विरूद्ध कार्य करने वाला नहीं था। इसलिए उनका यह दावा बिल्कुल बेबुनियाद था।

यह असंगत भी था। फरीसियों के चेले स्वयं दुष्टात्माओं को निकालने का अभ्यास करते थे (12:27)। यदि प्रभु ने दुष्टात्माओं के सरदार की सामर्थ्य से दुष्टात्माओं को निकाला, तो फरीसियों के "वंश" ने यह कैसे किया? दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से? "इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे" उसने प्रभावी रूप से कहा। हम प्रेरितों के काम 19:13 में यहूदियों द्वारा दुष्टात्माओं को निकालने का अभ्यास करते हुए पढ़ते हैं, लेकिन निश्चित रूप से यह मसीह की सामर्थ्य और अधिकार के साथ नहीं था। उसने कभी कोई मंत्र या अन्य सामान्य तरीकों का उपयोग नहीं किया जो केवल सतही रूप से सफल होते थे। उसने अपने पूर्ण अधिकार, प्रत्यक्ष आदेश और दृढ़ सामर्थ्य के साथ दुष्टात्माओं को निकाला।

फरीसियों के चेलों ने दुष्टात्माओं को दुष्टात्माओं की सामर्थ्य से नहीं निकाला था, और न ही प्रभु ने कभी ऐसा किया। शैतान का राज्य अपने आप में विभाजित नहीं था। इसलिए, शैतान के राज्य को नष्ट करने के उसके अधिकार के पर्याप्त प्रमाणों को देखते हुए, यह स्पष्ट था कि फरीसियों ने जो कहा था वह बिल्कुल असंगत था। यीशु ने आगे कहा, "पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता

हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है" (12:28)। इसके अलावा और क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

शैतान पद 29 में वर्णित वह "बलवन्त" था। उसने "अपना माल" (दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोग जो उसके अधिकार में थे) को दृढ़ता से रखा, लेकिन अब एक ऐसा व्यक्ति आ गया जो उससे भी अधिक बलवन्त था, और यह शैतान के "घर" को नष्ट कर रहा था। ऐसा लगता है कि मसीह की सेवकाई के दौरान फिलिस्तीन में शैतानी गतिविधियों में अभूतपूर्व उछाल आया होगा। शैतान ने अपनी पूरी सेना को संगठित कर लिया था, लेकिन सब व्यर्थ ठहरा।

2. फरीसियों ने जो कहा वह अक्षम्य था (12:31-37)

क. उनके पाप की प्रकृति को प्रकट किया गया (12:31-32)

प्रभु ने अपने बैरियों के पाप की प्रकृति को सबके सामने प्रकट कर दिया। यह एक अक्षम्य पाप था। अन्य पाप, यहाँ तक कि स्वयं मसीह के विरुद्ध बोलना भी क्षमा किया जा सकता है। लेकिन परमेश्वर के प्रिय के अनुग्रहकारी कार्यों को शैतान की सामर्थ्य के साथ जोड़ना, जबकि वे कार्य पवित्र आत्मा के सहयोग से किए गए थे, बिल्कुल अक्षम्य था।

पवित्र आत्मा लोगों को अन्य प्रकार के पापों के लिए दोषी ठहरा सकता है और उन्हें मन-फिराव की ओर ले जा सकता है। लेकिन पवित्र आत्मा के विरुद्ध की गई ईशनिंदा आत्मा की ऐसी स्थिति को दर्शाती है जो उद्धार की आशा से परे है। जिन लोगों ने देहधारित अच्छाई और अनुग्रह की उपस्थिति में इतने सारे सामर्थ्यशाली आश्चर्यकर्म, चिह्न और चमत्कार देखे, और इन सबको उस अथाह कुंड के हाकिम शैतान के साथ जोड़ना, उन्हें केवल परमेश्वर द्वारा त्यागे जाने के योग्य ही बनाता था। वे परमेश्वर के पवित्र जन की तुलना दुष्टात्माओं के सरदार से कर रहे थे। प्रभु ने इस अक्षम्य पाप को "पवित्र आत्मा की निन्दा" कहा (12:31)।

ख. उनकी आत्माओं की प्रकृति को प्रकट किया गया (12:33-37)

(1) जो हम बोलते हैं उसका स्रोत (12:33-35)

(a) एक पेड़ और उसकी पैदावार (12:33)

प्रभु ने अपने बैरियों की आत्माओं की प्रकृति को भी प्रकट किया। उनके वचन उनके भीतरी स्वभाव को प्रकट करते थे, और हमारे वचन हमारे स्वभाव को प्रकट करते हैं। अपने तीन दृष्टांतों में से पहले में, यीशु ने कहा, "पेड़ फल ही से पहचाना जाता है।" उसने फरीसियों को ईमानदारी के साथ उसके कार्यों से उसका न्याय करने की चुनौती दी। क्या वे अच्छे कार्य थे या नहीं? क्या बीमारों को चंगा करना, कोढ़ियों को शुद्ध करना, भूखों को खाना खिलाना, मृतकों को फिर से जीवित करना अच्छा कार्य था कि नहीं? यदि ऐसा है, तो उसके बैरियों को उसके फल के कारण पेड़ को स्वीकार करना चाहिए।

(b) एक जीभ और उसका जहर (12:34)

दूसरे दृष्टांत में प्रभु ने कहा, "हे सांप के बच्चों, तुम बुरे होकर क्योंकर अच्छी बातें कह सकते हो?" फरीसियों ने उस पर बालज़बूल के साथ गठबंधन करने का आरोप लगाया था। अब उसने उन पर साँप का वंश होने

का आरोप लगाया। यीशु के कामों ने उसे अच्छा साबित किया; जबकि उनके वचन, जो घातक विष से भरे थे, ने उन्हें उनके पिता शैतान के होने का प्रमाण दे दिया।

(c) एक भण्डार और उसका मूल्य (12:35)

तीसरे दृष्टांत में प्रभु ने कहा, "भला, मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है" (12:35)। इसका कारण 12:34 में दिया गया है: "जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है।" हम जो कहते हैं, उससे हम प्रकट होते हैं, और फरीसी पवित्र आत्मा की निंदा करके सबके सामने प्रकट हो गए थे। उन्होंने अपने हृदय को प्रकट कर दिया था और पूरी दुनिया को दिखा दिया था कि वे अंदर से कितने सड़े हुए थे। परमेश्वर के प्रिय पुत्र के बारे में उन्होंने जो भयानक बातें कही थीं, उससे उन्होंने अपनी उस बुराई को प्रकट कर दिया था जिसे वे अपने मन में संजोकर रखे हुए थे।

(2) हम जो कहते हैं उसकी गंभीरता (12:36-37)

(a) हमारे शब्दों की अनंत प्रकृति (12:36)

फरीसियों की तरह, हमारा न्याय हमारे शब्दों से ही होगा। हर साफ़ बोलने में सक्षम व्यक्ति एक दिन में हज़ारों शब्दों का इस्तेमाल करता है, जो एक उचित मात्रा में पुस्तक को भरने के लिए काफी है - और जीवन भर में लगभग एक कॉलेज लाइब्रेरी को भरने के लिए पर्याप्त है। हमारे विचार हमारे शब्दों में व्यक्त होते हैं। हम हर एक बेकार या निकम्मे शब्द के लिए जवाबदेह हैं। जब किसी व्यक्ति को गिरफ्तार किया जाता है, तो उसे चेतावनी दी जाती है कि वह जो कुछ भी कहेगा उसका इस्तेमाल उसके विरूद्ध किया जा सकता है; इसी तरह प्रभु भी हमें चेतावनी देता है कि हमारी बातों से ही हम निर्दोष या दोषी ठहराए जायेंगे।

(b) हमारे शब्दों की प्रमाणिक प्रकृति (12:37)

आज हमारे पास ऐसे उपकरण हैं जो शब्दों को रिकॉर्ड करते और उन्हें वापस चलाते हैं। हमारे आस-पास की हवा अनसुनी आवाजों से जीवंत है; रेडियो और टीवी स्टेशन, सी.बी. ट्रांसमीटर और इसी तरह के अन्य उपकरण दुनिया को शब्दों से भरे हुए हैं। सही तरंगों के साथ तालमेल बैठाने पर एक प्राप्तकर्ता उपकरण उन्हें हवा से अपनी ओर खींच सकता है और उन्हें सुनने योग्य बना सकता है। अगर मनुष्य इस तरह शब्दों को पकड़ सकता है, तो परमेश्वर कितने ही बेहतर तरीके से ऐसा कर सकते हैं। हमें इस तथ्य से अधिक परेशान करने वाली कोई अन्य बात नहीं है कि हमारा हर एक शब्द रिकॉर्ड किया गया है। हमें उस रिकॉर्ड पर उसके द्वारा पूर्ण किए गए कार्य के चुंबक को खींचने के लिए परमेश्वर की ज़रूरत है। हमें अपने दोषपूर्ण शब्दों को मिटाने की ज़रूरत है। हमें परमेश्वर से यह सुनने की ज़रूरत है, "मैं उन्हें अब याद नहीं करूंगा।" अगर वह सबूतों को नष्ट नहीं करता है, तो हम अपनी बातों के कारण दोषी ठहरेंगे।

घ. चिह्न को अस्वीकार करना (12:38-50)

1. राष्ट्रीय मूर्खता (12:38-45)

क. इस्राएल के अगुवों की अशिष्टता (12:38-42)

मानो उन्होंने उसे पर्याप्त रूप से नहीं उकसाया था, इसलिए अब शास्त्रियों और फरीसियों ने यीशु से उन्हें कोई चिह्न दिखाने की माँग रखी। उनकी मांग को तुरंत और स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दिया गया। उन्हें विश्वास दिलाने के लिए वह और क्या अधिक कर सकता था? मरकुस 8:11 कहता है कि उन्होंने "कोई स्वर्गीय चिह्न" मांगा। क्या वह सूर्य को स्थिर कर सकता था? बेशक वह ऐसा कर सकता था! क्या वह चंद्रमा को लहू में बदल सकता था? हाँ, बिल्कुल! वे एक सनसनीखेज चिह्न चाहते थे, इस तरह का एक चिह्न जो उसने पहले कभी नहीं दिया। स्वर्ग से जिस चिह्न की उन्होंने मांग की थी, वह पहले ही दिया जा चुका था। जब यीशु का जन्म हुआ, जैसा कि मत्ती ने यहूदियों को पहले ही याद दिला दिया था, उसने आकाश में एक नया तारा रखा और पूर्व से बुद्धिमान लोग उस तारे का पीछा करते हुए उसके चरणों तक पहुँचे थे।

प्रभु ने उन लोगों को फटकारा जिन्होंने उससे चिह्न की मांग की थी। उसने उस मसीह का तिरस्कार करने वाली पीढ़ी को “बुरे” और “व्यभिचारी” कहा (मत्ती 12:39)। उस पीढ़ी ने आत्मिक क्षेत्र में परमेश्वर के विरुद्ध ऐसा पाप किया था जिस तरह से एक व्यभिचारी पत्नी अपने पति के विरुद्ध शारीरिक क्षेत्र में पाप करती है। व्यभिचार से ऐसी तुलना करना पुराने नियम में एक आम बोलचाल का स्वरुप था (यिर्मयाह 3:9; यहेजकेल 23:27; और विशेष रूप से होशे की भविष्यद्वाणी)।

चिह्न की मांग को अस्वीकार करते हुए, प्रभु यीशु ने उस तरह के चिह्न पर चर्चा की जिसकी उस पीढ़ी के लोग अपेक्षा रख सकते थे। इस चर्चा ने एक नया पहलू पेश किया: यहूदियों द्वारा यीशु का अंतिम रूप से तिरस्कार करना। प्रभु ने यहूदियों के मन-फिराव से इनकार करने को प्रकट करने के लिए योना की कहानी का उल्लेख किया। योना का उल्लेख करते हुए, प्रभु पवित्रशास्त्र पर अपनी आधिकारिक मुहर भी लगा रहा था। उसने ऐसा लगातार किया, और कभी भी उनकी सटीकता पर सवाल नहीं उठाया।

यीशु ने उस पीढ़ी को "योना भविष्यद्वक्ता का चिह्न दिया: जैसे योना तीन रात दिन जल-जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा" (मत्ती 12:39-40)। योना का अनुभव प्रभु की आने वाली मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान का चिह्न था। उसके कथन में "जैसे" और "वैसे ही" शब्दों पर ध्यान दें; यह सूत्र आमतौर पर एक सटीक समानांतर को दर्शाता है। कुछ लोग असहमत हो सकते हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि योना वास्तव में उस बड़ी मछली के पेट में मर गया था जिसने उसे निगल लिया था, और बाद में उसे जिलाया गया था। योना 2:2 कहता है कि वह "अधोलोक के उदर" में था।

योना 1:17 में कहा गया है कि वह मछली के पेट में "तीन दिन और तीन रात" रहा। बिल्कुल इसी तरह की समानता दर्शाते हुए, प्रभु ने कहा कि उसे "तीन दिन और तीन रात" तक कब्र में रखा जाएगा। "तीन दिन" शब्दों का मतलब दिन के किसी भी हिस्से से लिया जा सकता है, यह दृष्टिकोण आमतौर पर उन लोगों द्वारा लिया जाता है जो इस बात पर जोर देते हैं कि प्रभु को शुक्रवार को क्रूस पर चढ़ाया गया था। लेकिन "और तीन रात" शब्द जोड़े जाने से यह दृष्टिकोण अमान्य हो जाता है।

प्रभु ने वायदा किया कि योना के मामले की तरह, उसकी खुद की मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनरुत्थान अन्यजातियों के लिए बहुत बड़ी आशीष लेकर आएगा। इस प्रकार चिन्हों को लेकर उसकी चर्चा ने एक नए विषय की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया: अर्थात् अन्यजातियों द्वारा यीशु का आने वाला स्वागत। यहूदियों को एक ऐसा चिह्न दिया जा रहा था जो आखिरकार काफी असामान्य होने वाला था।

प्रभु ने पुराने नियम में अन्यजातियों के दो उदाहरणों को प्रस्तुत किया, जिन्होंने इस्राएल के प्रकाश और विशेषाधिकार के बिना, अवसर मिलने पर प्रतिक्रिया दी। पहला उदाहरण योना के संदर्भ से स्वाभाविक रूप से विकसित हुआ: "नीनवे के लोग... योना का प्रचार सुनकर, मन फिराया" (मत्ती 12:41)। भविष्यद्वक्ता उनकी सड़कों से होकर गुजरा, उसका संदेश उनके पूरे नगर में गूंज उठा, और एक बड़ी बेदारी शुरू हो गई। ऐतिहासिक लेख स्पष्ट करते हैं कि "नीनवे के मनुष्यों ने परमेश्वर के वचन की प्रतीति की" (योना 3:5)। उन्होंने परमेश्वर के क्रोध से अपने आपको बचा लिया और उसकी दया को अनुभव किया।

लेकिन इस्राएल मन फिराने वाला नहीं था, जबकि उनके बीच "योना से भी बड़ा" व्यक्ति मौजूद हो। यीशु ने कहा कि तिरस्कृत नीनवे के लोग "न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएंगे।" मत्ती 12:41 में "उठकर" शब्द का अर्थ है "खड़े होना।" यह संदर्भ यहूदी और रोमी व्यवस्था के अदालतों में एक प्रथा का है, जिसके अनुसार आपराधिक मामले में गवाही देते समय गवाह को खड़ा होना पड़ता था।

प्रभु के पुनरुत्थान के बाद, परमेश्वर ने लगभग चालीस वर्षों तक अपना हाथ रोके रखा, लेकिन अंत में उस बुरी और व्यभिचारी पीढ़ी को, जो प्रभु के आश्चर्यकर्मोंऔर प्रेरितों द्वारा किए गए चिह्नों और चमत्कारों के प्रति कठोर बने रहे, न्याय के लिए सौंप दिया गया। योना ने प्रचार किया, "अब से चालीस दिन के बीतने पर निनवे उलट दिया जाएगा" (योना 3:4)। और वास्तव में यहाँ यीशु उन शास्त्रियों और फरीसियों से कह रहा था, "अब से चालीस वर्ष के बीतने पर यरूशलेम उलट दिया जाएगा।" वह इस सत्य को बाद में और अधिक स्पष्टता से घोषित करता है (मत्ती 23:36-38)।

पुराने नियम का दूसरा दृष्टांत दक्खिन की रानी से संबंधित है, जो "सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिये पृथ्वी की छोर से आई” थी (12:42)। उसने सुलैमान के चरणों में बैठने के लिए एक लंबी, थकाऊ और बहुत ही खतरनाक यात्रा की थी, लेकिन शास्त्रियों और फरीसियों को ऐसा कोई प्रयास नहीं करना पड़ा था। स्वयं प्रभु जो "सुलैमान से भी बड़ा है," उनके बीच में था।

सुलैमान की ईश्वरीय प्रेरणा से प्रेरित बुद्धि, जिसने शीबा की रानी तक को अभिभूत कर दिया था, अंत में उसकी सांसारिकता, कामुकता और फ़िज़ूल खर्ची के कारण बिगड़ गई। इस तथ्य को पवित्रशास्त्र की ऐतिहासिक पुस्तकों, सभोपदेशक की पुस्तक और सुलैमान की मृत्यु के तुरंत बाद इस्राएल द्वारा किए गए निवारण की मांग द्वारा प्रमाणित किया गया है। प्रभु यीशु, जो सुलैमान से कहीं अधिक बुद्धिमान था, ने न केवल उच्च नैतिकता का प्रचार किया और पवित्र जीवन जीने का आह्वान किया; बल्कि एक बेदाग़ जीवन भी जिया।

यीशु ने कहा कि दक्खिन की रानी "न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर [पुनरुत्थान में उठ खड़ी होगी - 12:41 में जो यूनानी शब्द है यह वह नहीं है], उन्हें दोषी ठहराएगी।" गवाह हर जगह से इकट्ठे होंगे। वे सूर, सैदा, सदोम, नीनवे और इथियोपिया से आएंगे। अतीत से वे अन्यजातीय लोग आएंगे जिन्होंने मसीह के दावों के प्रति तुरंत प्रतिक्रिया व्यक्त की थी, या जो प्रतिक्रिया व्यक्त अवश्य करते, यदि मसीह ने उनके लिए वही किया होता जो उसने इस हठी, अविश्वासी इस्राएल के लिए किया था।

ख. इस्राएल के लोगों की पश्चाताप-हीनता (12:43-45)

(1) एक परेशान करने वाला दृष्टांत (12:43-45a)

इसके बाद प्रभु ने एक दुष्टात्मा के बारे में एक दृष्टांत सुनाया जो एक आदमी के शरीर में वास करती थी। उस व्यक्ति से बाहर निकाले जाने के बाद, दुष्ट आत्मा बेचैन हो उठी। किसी देह में वास करने की लालसा में, वह "सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती फिरती है, और पाती नहीं" (12:43)। उसकी देहरहित स्थिति उस दुष्टात्मा के लिए उतनी ही निराशाजनक थी जितनी किसी रेगिस्तान में भटके लोगों के लिए होती है। अंत में उस दुष्टात्मा ने कहा, "मैं अपने उसी घर में जहां से निकली थी, लौट जाऊंगी," और उस शरीर को अभी भी अपना निवास होने का दावा करती है जिससे उसे निकाला गया था (12:44)। उस शरीर को खाली पाकर, उसने अपने से भी बुरी सात अन्य आत्माओं को इकट्ठा किया और उस अभागे शिकार को वापस अपने कब्जे में ले लिया, और "उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है" (12:45)।

(2) एक भयानक समानता (12:45b)

यीशु ने आगे ये गंभीर वचन जोड़े: "इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी।" स्पष्ट रूप से यह दृष्टांत, दुष्टात्माओं के चरित्र और स्थिति पर प्रकाश डालने के अलावा, इस्राएल राष्ट्र पर भी लागू होती है।

मूर्तिपूजा की दुष्ट आत्मा जो न्यायियों के दिनों से लेकर राजकीय शासन के पतन तक इस्राएल राष्ट्र को परेशान करती रही थी, वह बाद में बेबीलोन की कैद से निकाल दी गई थी। घर को "झाड़ा-बुहारा और सजा सजाया [शुद्ध किया गया]" (12:44)। फरीसी और रब्बियों ने घर को शुद्ध किया और अपनी औपचारिकताओं और परंपराओं से इसे सजाया, लेकिन उन्होंने कोई नया किरायेदार नहीं मांगा। उन्होंने परमेश्वर से शेकिना की महिमा को पुनर्स्थापित करने, मंदिर में रहने के लिए अपने पवित्र आत्मा को भेजने और देश और लोगों को अपनी उपस्थिति से भरने के लिए प्रार्थना नहीं की, इसलिए अंततः वह दुष्ट आत्मा वापस आ जाएगी।

स्वर्गारोहण के बाद इस्राएल में मूर्तिपूजा फिर से शुरू हो जाएगी। यरूशलेम में फिर से बनाया गया मंदिर उस पशु, अर्थात् मसीह-विरोधी (प्रकाशितवाक्य 13) की आराधना के लिए एक नए विश्व केंद्र में परिवर्तित हो जाएगा। दुष्ट आत्मा अपने से भी बुरी सात अन्य आत्माओं के साथ वापस लौट आएगी। इस प्रकार यहूदियों की अंतिम स्थिति पहले से भी बुरी होगी।

यहूदियों ने इस्राएल के पवित्र जन का तब तिरस्कार किया जब वह उनके मध्य में था और उस पर "मूर्तियों के लिए बलिदान करने वालों के स्वामी" के साथ जुड़े होने का आरोप लगाया। वह दिन आएगा जब अधिकांश यहूदी अपने मुँह के बल गिरकर उस पाप के मनुष्य की आराधना करेंगे और “उस अजगर, अर्थात पुराने सांप को, जो इबलीस और शैतान है" की प्रशंसा करेंगे और उसकी आराधना करेंगे (प्रकाशितवाक्य 20:2)। आज, मसीह का तिरस्कार करने वाले इस्राएल राष्ट्र के पुन: जन्म पर, ऐसी ही अंतिम समय की घटनाओं के लिए मंच तैयार हो रहा है (यशायाह 28:15; दानिय्येल 9:27; 2 थिस्सलुनीकियों 2)।

2. नया परिवार (12:46-50)

क. पुराने रिश्ते समाप्त हो गए (12:46-47)

इस समय के दौरान एक अवरोध हुआ। प्रभु को खबर दी गई कि उसकी माँ और उसके भाई बाहर खड़े हैं। उस उपयुक्त घटना ने उसे अपने नए परिवार का परिचय देने का एक स्वाभाविक मौक़ा दे दिया।

"किसी ने उस से कहा; देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और तुझ से बातें करना चाहते हैं" (12:47)। उनके कहने का उद्देश्य था कि वे उससे बात करना चाहते थे, लेकिन मरकुस 3:21,31 स्पष्ट करता है कि उनका वास्तविक उद्देश्य "उसे पकड़ना" था क्योंकि "वे कहते थे, कि उसका चित्त ठिकाने नहीं है।।" यह स्पष्ट है कि प्रभु की माता और भाइयों को उसकी निरंतर गतिविधियों की जानकारी थी और सुना था कि वह अधिकारियों के साथ किसी टकराव की ओर बढ़ रहा था। इसलिए उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि उसका चित्त ठिकाने नहीं है, लगभग पागल-सा हो चुका है, और वे उसे पकड़कर किसी तरह के बंधन में डालने आए थे।

लेकिन मरियम को यह सब बेहतर तरीके से पता होना चाहिए था। वह जानती थी कि यीशु देह में प्रकट हुआ परमेश्वर था। शायद उसकी सुरक्षात्मक मातृ प्रवृत्ति उस पर हावी हो गई थी और निस्संदेह वह अपने अन्य चार बेटों के काफी दबाव में भी रही होगी। हम नहीं जानते कि यीशु के भाइयों को उसके जन्म की परिस्थितियों के बारे में कितना पता था, लेकिन यह असंभव लगता है कि मरियम और यूसुफ ने उन्हें नहीं बताया होगा। हालाँकि, वे निश्चित रूप से यीशु पर विश्वास नहीं करते थे और उन्हें डर था कि उसके प्रति आधिकारियों की शत्रुता उन तक भी फैल जाएगी। कफरनहूम से नासरत तक की दूरी बहुत अधिक नहीं थी।

यीशु की सेवकाई के सुसमाचार अभिलेख में केवल दो अवसर हैं (क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले) जब मरियम दिखाई पड़ती है (यहाँ और यूहन्ना 2:1-4 में)। दोनों बार वह उसके मामलों में अपनी बात रखना चाहती थी और दोनों बार उसे यीशु द्वारा इनकार किया जाता है। इस प्रकार, इस आधार पर उससे प्रार्थना करने का कोई आधार नहीं है कि चूँकि वह प्रभु की माँ है, इसलिए वह उसकी बात सुनेगा और जैसा वह कहेगी वैसा ही करेगा। मत्ती 12 और यूहन्ना 2 में ऐसे अनुच्छेद रोमी कैथोलिक सिद्धांतों का पूर्वानुमान लगाते हैं और उनका खंडन करते हैं जो मरियम को ईश्वर का दर्जा देते हैं, जो मरियम के स्वर्ग में शारीरिक रूप से प्रवेश करने की शिक्षा देते हैं, और मरियम को यीशु के साथ समतुल्य बनाते हैं।

ख. सत्य को प्रकट किया गया (12:48-50)

मरियम और उसके पुत्रों के आने के कारण के बारे में बताने पर यीशु ने जवाब दिया, "कौन है मेरी माता? और कौन है मेरे भाई?" (12:48)। ध्यान दें कि यहाँ प्रभु ने केवल तीन मानवीय रिश्तों को स्वीकार किया है - माता, बहन, भाई - जो इस तथ्य की पुष्टि करता है कि उसका कोई मानवीय पिता नहीं था। लेकिन इन स्वीकृत रिश्तों को भी जानबूझकर उसने अपने आप से दूर रखा। उसने अपने मानवीय परिवार के प्रति स्नेह को नहीं खोया था; वह केवल उन्हें उनके उचित स्थान पर रख रहा था।

प्रभु की बात को बीच में रोककर, उनके रिश्तेदारों ने यह अनुमान लगाया था कि प्रभु के साथ उनकी मुलाक़ात, भीड़ के साथ उसकी भेंट करने से अधिक महत्वपूर्ण है। प्रभु को यह सोचकर उनकी इस धृष्टता के लिए फटकार लगानी पड़ी कि वे प्रभु को अपने साथ घर ले जा सकते हैं और उसे खतरे से बचा सकते हैं। यह पूरी घटना प्रभु के लिए एक परीक्षण की तरह ही रही होगी। अपने परिवार के लोगों की तुलना में अपने शत्रुओं के गलत विचारों से निपटना अधिक आसान है।

अपने मानवीय परिवार के सदस्यों को फटकारने के बाद, प्रभु ने अपने चेलों की ओर इशारा किया और उन्हें और उन सभी को जो उस पर विश्वास करने वाले थे, अपना "भाई, बहन और माता" माना (12:50)।

अब एक नया परिवार है जिसमें रिश्ते प्राकृतिक नहीं, बल्कि आत्मिक हैं। प्रभु के भाइयों ने अंततः बाद में उस परिवार में अपना रास्ता खोज लिया था। मरियम का अंतिम दर्शन हमें ऊपरी कमरे में मिलता है, जहाँ प्रभु यीशु के अन्य विश्वासियों के साथ, उसने उसके चेलों में से एक के रूप में अपना स्थान ग्रहण किया था (प्रेरितों के काम 1:12-14)।

नए परिवार के परिचय के साथ, मत्ती ने प्रभु के तिरस्कार के अपने वर्णन के इस चरण का समापन किया। इस्राएल के परख का समय विफलता में समाप्त हो गया था। यहूदियों ने राजा का तिरस्कार कर दिया था; अब राजा ने उन्हें अस्वीकार कर दिया था। इस्राएल को एक राष्ट्र के रूप में स्वर्गीय राज्य देने की पेशकश को अंततः वापस ले लिया गया। स्वर्गीय राज्य एक नए लोगों, अर्थात् स्वर्गीय लोगों के सामने पेश किया जाएगा। यहूदी राष्ट्र को अन्यजातियों के बीच एक नया और लंबा निर्वासन, एक नया और बड़ा बिखराव सहना होगा। फिर, इस्राएल से किए गए अपने वादों को न भूलते हुए, प्रभु उन बिखरे हुए लोगों को फिर से इकट्ठा करेगा और सहस्राब्दी राज्य के अपनी प्राचीन प्रतिज्ञा को पूरा करेगा, जिसमें यहूदियों को स्वर्गीय विरासत की बजाय सांसारिक विरासत से संतुष्ट होना होगा (दानिय्येल 7:27)।

II. राज्य के भेद (13:1-52)

इस्राएल के इतिहास में एक संकट आ गया था, जो यरूशलेम शहर को नबूकदनेस्सर को सौंपने के कारण उत्पन्न हुए संकट के समान ही था, लेकिन यह उससे कहीं अधिक गंभीर था।

इस्राएल के इतिहास में दो ऐसे काल हैं जिनके बारे में हमें अवश्य जानना चाहिए यदि हम इस्राएल के साथ परमेश्वर के व्यवहार को समझना चाहते हैं। पहला है "अन्यजातियों का समय" (लूका 21:24)। यह काल इस्राएल के राष्ट्रों पर राजनीतिक प्रभुत्व को हुए हानि को दर्शाता है। इस समय के दौरान समस्त वैश्विक अधिकार अन्यजातियों के हाथों में है। यह काल नबूकदनेस्सर से शुरू हुआ था और मसीह -विरोधी के शासन के साथ समाप्त होगा। "अन्यजातियों का समय" हर-मगिदोन में मसीह की व्यक्तिगत वापसी के साथ समाप्त हो जाएगा, जिस समय वह यरूशलेम में केंद्रित सहस्राब्दी राज्य की स्थापना करेगा। यहूदी अविश्वास के कारण अब मसीह द्वारा उस राज्य को आधिकारिक रूप से स्थगित कर दिया गया है।

दूसरा काल "अन्यजातियों की परिपूर्णता" का समय (रोमियों 11:25) है, जो राष्ट्रों पर इस्राएल के धार्मिक प्रभुत्व को हुए हानि नुकसान को दर्शाता है। "अन्यजातियों की परिपूर्णता" पिन्तेकुस्त से शुरू हुई थी और स्वर्गारोहण पर समाप्त होगी। पिन्तेकुस्त से दो हज़ार साल पहले, जब भी परमेश्वर को कुछ कहना होता था, तो वह ज़्यादातर यहूदी लोगों से और इब्रानी में कहता था। अगर कोई अन्यजाति परमेश्वर की सच्चाई चाहता था, तो उसे यहूदी धर्म अपनाना पड़ता था और खतना करवाना पड़ता था। लेकिन दूसरी अवधि ("अन्यजातियों की परिपूर्णता") की शुरुआत में यह सब अलग रखा गया था। अब परमेश्वर की सच्चाई की रखवाली कलीसिया (मुख्य रूप से अपने चरित्र में अन्यजाति) को सौंपी गई है। पिन्तेकुस्त के बाद, जब परमेश्वर के पास कहने के लिए कुछ होता था, तो वह अधिकांशतः यूनानी भाषा में कहता था।[5] स्वर्गारोहण के बाद परमेश्वर यहूदियों को धार्मिक प्रभुत्व पुनः प्रदान करेगा (संकटकाल में सभी बेदारी का नेतृत्व यहूदी करते हैं) ठीक वैसे ही जैसे मसीह के शासन करने के लिए अंतिम आगमन पर, परमेश्वर यहूदियों को राजनीतिक प्रभुत्व पुनः प्रदान करेगा।

क्योंकि यहूदियों ने अब अपने राजा का तिरस्कार कर दिया था, इसलिए राज्य के तत्काल दृश्यमान प्रकटीकरण की सभी योजनाओं को स्थगित कर दिया गया है। उस स्थगन को पहले ही लगभग दो हज़ार साल बीत चुके हैं। इस लंबी अवधि के दौरान परमेश्वर काम कर रहा हैं, अपनी कलीसिया के लिए सदस्यों को बुला रहे हैं; राज्य के मामलों को अधीनस्थ कर दिया गया है। ऐसा कहा जा सकता है कि राज्य अभी भूमिगत हो गया है। यह मनुष्यों को दिखाई नहीं देता। यह यहाँ एक भेद के रूप में है।

मत्ती 13 के भेद-दृष्टांतों का मुख्य विषय स्वर्गराज्य है, भले ही वे जिस अवधि को वर्णित करते हैं वह कलीसिया युग ("अन्यजातियों की परिपूर्णता") के समानांतर ही है। कलीसिया दृष्टांतों में शामिल है क्योंकि कलीसियाई युग और स्वर्गराज्य का यह चरण एक दूसरे में समाहित होता है। आने वाले दिन में स्वर्गराज्य दो क्षेत्रों, स्वर्ग और पृथ्वी पर प्रकट होगा। कलीसिया स्वर्ग में शासन करेगी, और इस्राएल पृथ्वी पर शासन करेगा। भेद-दृष्टांत दिखाते हैं कि राजा की अनुपस्थिति के समय, अब चीजें कैसे विकसित होती जा रही हैं।

दूसरे शब्दों में, ये दृष्टांत वर्तमान युग से संबंधित हैं। वे हमें हमारे युग के लिए परमेश्वर की गुप्त योजनाओं और उद्देश्यों के बारे में कुछ बताते हैं। आज हर चीज़ विफलता से चिह्नित प्रतीत होती है। परमेश्वर के उद्देश्यों का हर मोड़ पर विरोध किया जाता है; स्पष्ट रूप से विजय प्राप्त करने की बजाय, उनका लगातार विरोध किया जाता है। सत्य को हमेशा ताक पर रखा जाता है और झूठ को हमेशा सिंहासन पर बिठाया जाता है। फिर भी इन बाहरी दिखावों के बावजूद, परमेश्वर के उद्देश्य पूर्ण हो रहे हैं; उसके लक्ष्य हासिल किए जा रहे हैं। वर्तमान युग के बारे में विचारशील लोगों को जो बहुत कुछ हैरान करता है, वह भेद-दृष्टांतों में स्पष्ट किया गया है। पहले चार सार्वजनिक रूप से बोले गए क्योंकि वे युग के बाहरी पहलू पर जोर देते हैं।

क. सार्वजनिक रूप से कहे गए दृष्टान्त (13:1-35)

1. भीड़ (13:1-2)

जिस दिन यहूदियों ने प्रभु का औपचारिक रूप से तिरस्कार किया था, उसी दिन वह झील के किनारे गया और अपने आस-पास जमा हुए लोगों को संबोधित किया। हम इस दृश्य की कल्पना कर सकते हैं: गलील की झील का शांत नीला पानी धूप में चमक रहा था; झील की ओर पीठ किए हुए प्रभु; पास की पहाड़ी पर खड़ी रंगीन वस्त्र पहनी हुई भीड़ ।[6]

जिस क्षण प्रभु ने अपना मुंह वचन बोलने के लिए खोला, तो यह स्पष्ट था कि उसकी शिक्षा का स्वरुप अब बदल गया था। उसने राज्य के बारे में बात की, लेकिन यह अब "निकट" नहीं था। जिस तरह बीज बोने और फसल काटने के बीच काफी समय बीत जाता है, उसी तरह राज्य के प्रकट होने में भी काफी समय बीत जाएगा। "खेत" भी अलग था। यह अब इस्राएल नहीं था; खेत संसार था। इसके अलावा प्रभु ने अपनी शिक्षा को एक नए प्रकार के दृष्टांतों में प्रस्तुत किया, जो सत्य को प्रकट करने के साथ-साथ छिपाने के लिए भी तैयार किए गए थे। वह अपने चेलों से इन दृष्टांतों की व्याख्या करेगा, लेकिन इस्राएल का भाग्य अँधेरे में होगा।

2. भेद (13:3-35)

क. बीज बोनेवाले का दृष्टान्त (13:3-23)

इनमें से पहला भेद-दृष्टांत इस बात पर जोर देता है कि उद्धार का संदेश सभी तक कैसे पहुँचता है। भूमि मानवीय हृदय और सुसमाचार के प्रति मनुष्य के स्वभावगत दृष्टिकोण का प्रतीक है। इस दृष्टांत के महत्व को यीशु ने मरकुस 4:13 में रेखांकित किया है: "क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते? तो फिर और सब दृष्टान्तों को क्योंकर समझोगे?"

(1) दृष्टान्त का परिचय (13:3-9)

यह कहानी ही अपने आप में एक परिचय है। यह जीवन के प्रति इतना सच्ची है कि यह एक विस्तृत क्षेत्र में बीज के बिखरने, बीज के प्राकृतिक शत्रुओं (आकाश के पक्षी, सड़क के किनारे की ठोस भूमि , पथरीले स्थान, काँटों से भरी भूमि) और साथ ही अच्छी भूमि पर गिरे बीजों की अलग-अलग फसल के बारे में भी बताती है। कहानी सुनाने के बाद, प्रभु ने लोगों को चुनौती दी: "जिसके कान हों, वह सुन ले" (13:9)।

(2) दृष्टान्त के बीच व्यवधान (13:10-17)

(a) दृष्टान्तों के बारे में एक वचन (13:10-13)

चेलों ने, बाकी सभी लोगों की तरह ही, इस नई तरह की शिक्षा के लिए स्पष्टीकरण माँगा। प्रभु के उत्तर ने स्पष्ट रूप से यहूदियों के प्रति उसके मनोभाव में आए परिवर्तन को प्रकट किया, क्योंकि वे पवित्र आत्मा की निन्दा कर रहे थे। "तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों [रहस्यों] की समझ दी गई है, पर उन को नहीं" - उसने कहा (13:11)। प्रभु ने एक राष्ट्र के रूप में इस्राएल के लिए द्वार बंद कर दिया था।

व्यक्तिगत यहूदी अभी भी मसीह में व्यक्तिगत विश्वास का प्रयोग करके प्रकाशन प्राप्त कर सकते हैं। ये विश्वासी कलीसिया (मसीह के बहुराष्ट्रीय, मसीह के रहस्यमय देह) के सदस्य और स्वर्गीय राज्य के वारिस बन जाते हैं। आज तक नए सिरे से न जन्मे हुए यहूदी इस समझ से वंचित हैं और राज्य के भेद के सत्यों के प्रति अंधे हैं।

प्रभु ने अपने तरीके के विषय में एक टिप्पणी भी जोड़ी: "क्योंकि जिस के पास है, उसे दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा; पर जिस के पास कुछ नहीं है, उस से जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा" (13:12)। चेले इस मामले में सबसे अच्छे उदाहरण हैं। जैसे-जैसे समय बीतता गया, विशेषकर कलवरी और पिन्तेकुस्त के बाद, उनकी आँखें सभी सत्यों के प्रति खुल गईं। जबकि इस्राएल अधिक से अधिक अंधा होता गया, जिसने सुसमाचारों में परमेश्वर के पुत्र और प्रेरितों के काम में परमेश्वर के आत्मा का तिरस्कार किया, और इस प्रकार पूरे कलीसियाई युग के लिए अपने सर्वनाश पर मोहर लगा दी।

(b) परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता के विषय में एक वचन (13:14-15)

यशायाह 6:9-10 की अशुभ भविष्यद्वाणी का उल्लेख करते हुए प्रभु ने कहा:

और उन [यहूदियों] के विषय में यशायाह की यह भविष्यद्ववाणी पूरी होती है, कि तुम कानों से तो सुनोगे, पर समझोगे नहीं; और आंखों से तो देखोगे, पर तुम्हें न सूझेगा। क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और उन्होंने अपनी आंखें मूंद लीं हैं; कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से समझें, और फिर जाएं, और मैं उन्हें चंगा करूं।

यशायाह को उसकी बुलाहट के समय दी गई इस भविष्यद्वाणी ने इस्राएल के उत्तरी राज्य के सर्वनाश पर मोहर लगा दी। इसके तुरंत बाद उस राष्ट्र को विखंडन और निर्वासन के लिए अश्शूरियों को सौंप दिया गया। भविष्यद्वाणी के उस भाग की प्रभु द्वारा दिए गये हवाले ने औपचारिक रूप से यहूदियों को और भी अधिक भयानक रूप से तितर-बितर कर दिया।[7]

(c) चेलों के विशेषाधिकार के बारे में एक वचन (13:16-17)

i. वह समझ जो उनकी थी (13:16)

प्रभु के चेले उस अविश्वासी इस्राएल के बिल्कुल विपरीत थे। उसने उन्हें बताया कि वे कितने धन्य हैं। उनके पास देखने वाली आँखें और सुनने वाले कान थे।

ii. वह युग जो उनका था (13:17)

पुराने नियम के कई भक्त और पवित्र जन मसीह के युग को देखने के लिए तरस रहे थे। लेकिन वे चेले एक बहुत ही रोमांचक समय में जी रहे थे: एक ऐसा समय जब भविष्यद्वाणी पूरी हो रही थी, एक ऐसा समय जब मसीह आ चुका था, पूरे इतिहास में अद्वितीय ईश्वरीय दर्शन का समय था। हमारा समय भी उतना ही रोमांचक है, क्योंकि हमारे चारों ओर प्रभु की महिमा दूसरे आगमन की स्पष्ट तैयारियाँ हो चुकी हैं।

(3) दृष्टान्त की व्याख्या (13:18-23)

दृष्टांत के तीन पहलू हैं: बोने वाला, बीज और भूमि। सबसे पहले हम बोने वाले पर विचार करेंगे। यीशु ने कहा, "देखो, एक बोने वाला बीज बोने निकला" (13:3)। अगले दृष्टांत (जंगली बीज के दृष्टांत) में, बोने वाले को मनुष्य का पुत्र, अर्थात् प्रभु यीशु बताया गया है; यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने हल चलाया और भूमि तैयार की, और प्रभु यीशु ने बीज बोया। हालाँकि, बोने वाले के दृष्टांत में, प्रभु ने बोने को अपने तक ही सीमित नहीं रखा। ऐसा लगता है कि कहानी में बीज का बोया जाना उसके दिन से लेकर हमारे दिनों तक सुसमाचार के बीज की निरंतर बोने की प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है।

यहाँ बोने वाले के बारे में लगभग कुछ भी नहीं कहा गया है। हम उसके व्यक्तित्व के बारे में कुछ नहीं जानते या यह नहीं जानते कि वह अपने काम में माहिर था या नहीं। हम उसकी विधि के बारे में कुछ नहीं जानते। जाहिर है कि परमेश्वर बोने वाले को पृष्ठभूमि में रखना चाहता था। जैसा कि किसी ने कहा है, एक छोटा बच्चा भी सबसे अनुभवी किसान की तरह ही प्रभावी ढंग से बीज बो सकता है।

बीज के बारे में भी बहुत कुछ नहीं कहा गया है, सिवाय इसके कि यह परमेश्वर का वचन है, जैसा कि प्रभु ने दृष्टांत की व्याख्या की। बीज के बारे में हमें केवल इतना ही जानना काफ़ी है। यह दुनिया का सबसे अच्छे किस्म का बीज है; हम परमेश्वर द्वारा प्रेरित, अचूक, त्रुटिहीन, अद्वितीय वचन से बेहतर कुछ और नहीं बो सकते। यह मनुष्य के दर्शन और सिद्धांतों से असीम रूप से श्रेष्ठ है।[8] किसी भी अन्य बीज की तरह, परमेश्वर के वचन में भी जीवन है।

चूँकि बीज पर आनुवंशिक सूत्र अंकित होता है, इसलिए बीज का परिणाम किसी सरकंडों के खेत या गेहूँ के खलिहान में बदल सकता है। एक बार बीज बोने के बाद, जीवन का वह अंकित नियम काम करना शुरू कर देता है। परमेश्वर का वचन भी ऐसा ही है। यह अपने अन्दर अनंत जीवन का आनुवंशिक सूत्र रखता है

और जब इसे सही तरह की भूमि में बोया जाता है, तो यह अंकुरित होता है और जीवन उत्पन्न करता है। आइए एक उदाहरण पर विचार करें:

जब जेम्स चाल्मर्स नरभक्षी कबीले के द्वीप की ओर रवाना हुए, तो वे ब्रिटेन के एक जाने माने आदर्श पुरुष थे। उसके मित्र रॉबर्ट लुइस स्टीवेन्सन ने कहा कि वह "एक घर से भी बड़ा और एक कलीसिया से कहीं ज़्यादा विशाल था।" सालों बाद जब ब्रिटेन में यह खबर आई कि उन्हें नरभक्षी लोगों द्वारा खा लिया गया है, तो लंदन के सिटी टेम्पल के जोसफ पार्कर ने कहा, "मुझे इस पर यकीन नहीं होता। मैं इस पर यकीन नहीं करना चाहता।"

"न्यू गिनी के महान हृदय" कहे जाने वाले चाल्मर्स एक राष्ट्रीय नायक था। उसने नरभक्षी लोगों के बीच सुसमाचार के बीज बोने के लिए अपने तीस साल समर्पित किए, और वह भी अक्सर बड़ी सफलता के साथ। अकेले न्यू गिनी में 130 से अधिक मिशन स्टेशनों ने उसके परिश्रम की फलदायकता की गवाही दी। उसकी सेवकाई के परिणामस्वरूप, सभी उम्र के तीन हज़ार से अधिक मूल निवासी हर महीने सामूहिक भोज सेवा में रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठा होते थे। उनमें से कईयों को चाल्मर्स पहले से ही जंगली नरभक्षी के रूप में जानता था, लेकिन वे सभी परमेश्वर के वचन की महान सामर्थ्य से पूर्ण रूप से रूपांतरित हो चुके थे। उनमें से कई ने अभी भी अपनी छाती पर टैटू गुदवाए हुए थे जो उन लोगों को चिह्नित करते थे जिन्होंने हत्या करके पुरुषत्व प्राप्त किया था। अब वे चुपचाप शान्ति के साथ प्रभु की मेज पर नए जन्म पाए लोगों के रूप में अपना स्थान प्राप्त कर चुके थे।

हम इन रूपान्तरणों का हिसाब कैसे दे सकते हैं? समाजवाद, नैतिक पुनःसशस्त्रीकरण और राजनीतिक सुधार ऐसे कोई परिणाम नहीं दे सकते। केवल सुसमाचार का बहुमूल्य बीज बोने से ही खोए हुए लोगों का रूपांतरण हो सकता है। निर्धन दुष्ट लोगों के हृदय में वह बीज जाता है; लेकिन यह ऊपर नए जीवन के रूप में उगता है, परमेश्वर का जीवन उनकी आत्मा में अंकुरित होकर बढ़ता जाता है।

प्रभु ने बोने वाले के दृष्टांत की अपनी व्याख्या में, भूमि पर ध्यान केंद्रित किया - अर्थात, जो वास्तव में सुसमाचार सुनते हैं। विभिन्न प्रकार की भूमि लोगों के विभिन्न प्रकार के हृदय की दशा को दर्शाती है, जो दृष्टांत का मुख्य उद्देश्य है। दो मुख्य प्रकार हैं (1) वे जो परमेश्वर के सत्य को ग्रहण करते हैं और (2) वे जो इसे केवल आंशिक रूप से ग्रहण करते हैं या इसे पूरी तरह से अस्वीकार कर देते हैं। दूसरे शब्दों में, फसल देने वाली भूमि भी होती है और समस्या पैदा करने वाली भूमि भी होती है। समस्या वाली भूमि उन लोगों के हृदय में पाई जाती है जो भटके हुए, कमजोर या सांसारिक होते हैं। उत्पादक भूमि उन लोगों के हृदय में पाई जाती है जो इच्छुक होते हैं।

(a) कुछ लोगों का भटक जाना (13:18-19)

i. वचन को सतही तौर पर ग्रहण किया गया (13:18-19a)

प्रभु ने अपनी व्याख्या की शुरुआत सड़क के किनारे की भूमि का उल्लेख करके की, जो कुछ लोगों में उनके भटके होने का प्रतीक है। हम इस तरह की भूमि पर 'कोई परिणाम नहीं' शब्द लिख सकते हैं। प्रचारक इससे काफी परिचित होते हैं।

कुछ लोग सुसमाचार की खुशखबरी सुनते हैं, लेकिन जो वे सुनते हैं उसका उनकी आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वे वचन एक कान से जाते हैं और दूसरे कान से निकल जाते हैं। यह कहना मुश्किल है कि ऐसे लोग क्या सोचते रहते हैं जब वे कलीसिया में बैठते हैं और सबसे शानदार सच्चाइयों से अवगत होते हैं जिसकी कभी व्याख्या की गई हो। हम केवल इतना जानते हैं कि वे उठते हैं और चले जाते हैं। वे शायद बाद में जाकर फुटबॉल का खेल देख रहे होंगे या रसोई के सिंक पर खड़े होंगे या कोई व्यापारिक सौदा कर रहे होंगे।

ii. शैतानी तरीके से हटाया गया वचन (13:19b)

यीशु ने समझाया कि उन भटके हुए मनों में क्या होता है। जैसे ही बीज उनकी आत्माओं की भूमि को छूता है, "पक्षी" आकर उसे चुग लेते हैं (13:4)। "दुष्ट" या उसकी कोई दुष्टात्मा उसे जड़ पकड़ने से पहले ही छीन लेता है (13:19)।

ऐसे मनों से शुरुआत करना मुश्किल होता है। यीशु ने उन्हें मार्ग के किनारे गिरे बीज की तरह बताया, जो लगातार कुचले जाने से कठोर हो जाता है। कठोर मन वाले लोग संदेश सुनते हैं और खुद से कहते हैं, "मैं इस पर विश्वास नहीं करता। मैं इससे सहमत नहीं हूँ। मैंने ऐसी बकवास पहले कभी नहीं सुनी।" उनके अपने दर्शन, अपने धर्म, और अपने विचार होते हैं। वे कहते हैं, "अगर मैं जो सुन रहा हूँ उसे स्वीकार करता हूँ, तो मुझे इसे या उसे छोड़ना पड़ेगा। मुझे इस तरह के उपदेश में बिल्कुल भी हृदयचस्पी नहीं है।"

इससे पहले कि ऐसे लोग सतही तौर पर वचन को ग्रहण करें, शैतान उनमें से उस बीज को छीन लेता है। जैसे ही वे कोई चुटकुला, गपशप, फुटबॉल का ताज़ा स्कोर या किसी रोते हुए बच्चे की आवाज़ सुनते हैं, संदेश तुरंत उनके मन से निकल जाता है। दोपहर के भोजन का निमंत्रण या व्यापार के बारे में बात करने का मौका आता है, और वचन पूरी तरह से लुप्त हो जाता है, जैसे कि इसे कभी सुना ही न गया हो।

(b) कुछ लोगों की कमज़ोरी (13:20-21)

कुछ लोगों के विश्वास के आधार की कमज़ोरी उस भूमि द्वारा दर्शाई जाती है जिसे 13:20 में "पत्थरीली भूमि" कहा गया है। भूमि की एक उथली परत है, लेकिन उस सतह के ठीक नीचे एक चट्टानी आवरण होता है। उस उथली भूमि में गिरे बीज शुरुआती समर्पण तो देते हैं, लेकिन चूंकि कोई जड़ें चट्टानी आवरण में प्रवेश नहीं कर पाती, और चूंकि भूमि में कोई नमी बरकरार नहीं रहती, इसलिए बीज को पूरी तरह से विकसित होने का कोई मौका नहीं मिलता है। बाद में जब सूरज निकलता है, तो भूमि और बीज झुलस जाते हैं, और शुरुआती समर्पण मुरझा जाता है। हम इस तरह की भूमि और उन लोगों के बारे में 'कोई जड़ नहीं' लिख सकते हैं जिन्हें पत्थरीली भूमि द्वारा दर्शाया गया हैं।

प्रचारक भी इस तरह की भूमि को जानते हैं। वे ऐसे लोगों से परिचित होते हैं जो संदेश को सुनकर काफी उत्साहित, सरगर्म और अति प्रसन्न होते हैं और तुरंत विश्वास का परिचय देते हैं। एक प्रारंभिक प्रतिक्रिया होती है; सब कुछ समर्पण से प्रकाशित होता है। लेकिन फिर जब कठिन समय या दौर आता है; या जैसे ही ये उथले लोग यह जान लेते हैं कि मसीह के लिए गवाही बनाए रखने के लिए क्या कीमत चुकानी होगी, वे तुरंत हार मान लेते हैं। यीशु ने 13:21 में उनमें से एक का वर्णन किया: "पर अपने में जड़ न रखने के कारण

वह थोड़े ही दिन का है, और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है, तो तुरन्त ठोकर खाता है।" उसमें कोई जड़ नहीं होती, इसलिए निश्चित रूप से कभी कोई फल भी नहीं हो सकता।

उच्च दबाव वाली सुसमाचारीय सेवकाई अक्सर इस तरह का उथला "परिवर्तन" उत्पन्न करती है। उनमें विश्वास की सेवकाई का स्तर अवास्तविक और व्यर्थ होता हैं। जो लोग इस स्तर पर सुसमाचार के प्रति प्रतिक्रिया देते हैं, उनकी आत्मा जागृत होती है, लेकिन वे आत्मा में नया जन्म पाए हुए नहीं होते।

(c) कुछ लोगों में व्याप्त सांसारिकता (13:22)

कंटीली भूमि कुछ लोगों में व्याप्त उनकी सांसारिकता को दर्शाती है। वे भी शुरुआती समर्पण तो दिखाते हैं, लेकिन कोई स्थायी परिणाम नहीं देते। उनके सामने हम 'कोई विरोध नहीं' शब्द लिख सकते हैं।

कंटीली झाड़ियाँ शाप के प्रतीक से भरी हुई है (उत्पत्ति 3:18)। वहाँ गिरने वाले बीज से उसमें मौजूद जीवन का दम घुट जाता है। प्रभु ने तीन प्रकार की झाड़ियों का वर्णन किया है जो बीज को नष्ट कर देते हैं: "इस संसार की चिंता," "धन का धोखा," और "अन्य वस्तुओं की लालसा" (मत्ती 13:22; मरकुस 4:19)।

"इस संसार की चिंता" जीवन की समस्याओं को संदर्भित करती है। जब कोई व्यक्ति मसीही बन जाता है, तो उसे सामान्य आपदाओं से पूरी तरह सुरक्षा नहीं दी जाती। विश्वासियों के घर भी अविश्वासियों के घरों की तरह ही बवंडर, भूकंप और तूफान के अधीन होते हैं। प्रार्थना कभी-कभी आने वाले तूफान का मार्ग बदल देती है, लेकिन यह सोचना एक भ्रम है कि मसीही लोग समस्याओं से मुक्त हैं। आग, चोरी, दुर्घटना, नुकसान और खतरा मनुष्य के सामान्य भाग्य की चीज़े हैं। गरीबी और खराब स्वास्थ्य का होना किसी के साथ भी हो सकता है। मसीही बीमार पड़ते हैं, बूढ़े होते हैं और मर भी जाते हैं। समस्याएँ समान रूप से मूर्तिपूजकों और विश्वासियों दोनों के दरवाजे पर खटखटाती हैं।

बेशक मसीहियों के पास कुछ लाभ अवश्य हैं। उनके पास स्वर्ग में एक पिता और परमेश्वर का सामर्थ्यशाली आत्मा है जो उन्हें सांत्वना देता है। परमेश्वर उनका शरणस्थान और दृढ़-गढ़ है, संकट के समय अति सहज से मिलने वाला सहायक है (भजन 46:1)। प्रभु यीशु उनके लिए महान महायाजक हैं, जो समस्याओं के आने पर उनकी सेवा-टहल करने में सक्षम हैं और जो लोग उससे प्रेम करते हैं उनके लिए "सब बातें मिलकर केवल भलाई को ही उत्पन्न करती हैं" (रोमियों 8:28)। सच्चे विश्वासियों के लिए, समस्याएँ विकास और अनुग्रह का साधन बन जाती हैं। जीवन की चिंताओं में फँसकर ये विश्वास के उथले लोग जल्द ही मुरझा जाते हैं। उन्हें लगता है कि परमेश्वर ने उन्हें निराश कर दिया है, कि मसीहत में आखिरकार कुछ भी अच्छा नहीं है।

दूसरे प्रकार का काँटा, "धन का धोखा", अर्थात् जीवन की समृद्धि को दर्शाता है। धन गरीबी की तरह ही एक जाल हो सकता है। बहुत से लोग मसीह को हाँ कहते हुए प्रतीत होते हैं, लेकिन जब वे सांसारिक उन्नति पाते हैं, तो आत्मिक बातों को भूल जाते हैं। शायद नौकरी पर वादा की गई पदोन्नति एक उस उभरते हुए विश्वास को काट देती है कि व्यक्ति को एक मिशनरी बनना चाहिए। या व्यापार में उछाल पाने के लिए प्रभु के लोगों की संगति की उपेक्षा करना। जब समृद्धि आती है, तो यह विलासिता और सुविधाओं की उलझनें भी लेकर आती है। तब सुसमाचार का बीज उस सफलता के नीचे दबकर मर सकता है।

तीसरे प्रकार का कांटा, "अन्य वस्तुओं की लालसा", अर्थात् जीवन के सुखों को संदर्भित करता है। अक्सर सुख जो अपने आप में वैध होते हैं, वे उस कीमती समय को ले लेते हैं जो प्रभु के कार्य के लिए समर्पित होना चाहिए। या पापपूर्ण सुख उस बीज को दबा देते और उसका गला घोंट देते हैं। कुछ लोग परमेश्वर के प्रति कुछ कीमत चुकाने के लिए तैयार नहीं होते क्योंकि वे कुछ विनाशकारी, या उन पर हावी आदत को छोड़ने से साफ इनकार करते हैं जो उन्हें अस्थायी सुख प्रदान करती है। प्रभु यीशु ने चेतावनी दी कि जीवन के सुख उस बीज को दबा सकते हैं; ऐसे कांटों से भरी आत्माओं में इसके पनपने की बहुत कम संभावना होती है। सुख चाहने वाले भले ही उद्धार पाने का दावा करते हों, लेकिन उनका जीवन उन्हें धोखा देता है। उनका समर्पण वास्तविक नहीं है क्योंकि इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि परमेश्वर का वचन उनके जीवन में आत्मिक फल दे रहा है।

(d) कुछ लोगों की इच्छाएँ (13:23)

समस्या वाली भूमि का वर्णन करने के बाद, प्रभु ने अपना ध्यान उत्पादक भूमि की ओर लगाया, जो कुछ लोगों में फल देने की इच्छा को दर्शाती है। कहानी का परिचय देते हुए उसने कहा था कि "कुछ [बीज] अच्छी भूमि में गिरे और फल लाए, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना" (13:8)। एक वास्तविक परिवर्तन फल से प्रमाणित होता है। हालाँकि, सभी सच्चे उद्धार पाए हुए लोग फल देने की अपनी पूरी क्षमता का एहसास नहीं कर पाते हैं।

कुछ लोगों के जीवन में मध्यम स्तर का विकास देखा जा सकता है। वे प्रभु से प्रेम करते हैं, वे उसके लोगों से प्रेम करते हैं, और वे बाइबल से भी प्रेम करते हैं। वे वास्तव में उद्धार पाए हुए लोग हैं और फलवंत होने की दिशा में शुरुआती कदम उठाते हैं, फिर भी उनके जीवन के कुछ क्षेत्र किसी तरह परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के आत्मा से अछूते रह जाते हैं।

अन्य कुछ लोगों के जीवन में उल्लेखनीय विकास देखा जा सकता है। वे स्थानीय कलीसिया की रीढ़ बन जाते हैं। वे परमेश्वर के परिवार के सहायक, सहयोगी और उत्साही सदस्य होते हैं। वे संडे स्कूल में पढ़ाते हैं, दूसरों को मसीह के बारे में गवाही देते हैं, प्रभु के कार्य के लिए पूरी ईमानदारी से समर्पित होते हैं, मिशन कार्यों में रुचि बनाए रखते हैं और स्थानीय नेतृत्व के पीछे उनके साथ खड़े होते हैं। उनके जीवन से यह प्रमाण मिलता है कि वे प्रभु से प्रेम करते हैं और अनुग्रह में वृद्धि और परमेश्वर के ज्ञान में वृद्धि की तलाश कर रहे हैं।

वहीं कुछ लोगों के जीवन में अद्भुत विकास देखा जा सकता है। वे परमेश्वर के साथ पूरी तरह से जुड़े हुए हैं। वे आत्मा से भरे हुए, मसीह के स्वरुप में, आत्माओं को जीतने वाले मसीही होते हैं। आत्मा के फल - प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम - उनके जीवन में विकसित होते हुए देखे जा सकते हैं (गलातियों 5:22-23)।

बीज बोने वाले का दृष्टांत इस बात को रेखांकित करता है कि इस युग से क्या अपेक्षित हैं: प्रतीत होने वाली विफलता और साथ ही साथ परमेश्वर के उद्देश्य का अद्भुत पूर्तिकरण। दृश्यमान राज्य अभी स्थगित कर दिया गया है और तमाम शक्तियाँ संसार में परमेश्वर के कार्य में बाधा डालने के लिए काम कर रही हैं, फिर भी वह कार्य जारी है। आत्माएँ बचाई जा रही हैं, फल दिखाई दे रहे हैं, और यहाँ-वहाँ आश्चर्यजनक फलदायकता परमेश्वर को अद्भुत महिमा प्रदान कर रही है।

ख. जंगली पौधों का दृष्टांत (13:24-30)

पिछली कहानी में निहित भेद को फिर सार्वजनिक रूप से समझाया गया। वास्तव में बीज बोने वाले का दृष्टांत फरीसियों और झील के किनारे उमड़ी उस भीड़ द्वारा पहले ही प्रदर्शित किया जा चुका था। ऐसे लोग भी थे जिन्होंने मसीह और उसके दावों को सिरे से नकार दिया; शैतानी प्रभाव ने फरीसियों को कठोरता के अंतिम पाप की ओर प्रेरित किया, जब उन्होंने उस पर यह आरोप लगाया कि इस्राएल का पवित्र व्यक्ति दुष्टात्माओं के सरदार के साथ किसी गठबंधन में था। ऐसे लोग भी थे जो उथले थे; वे एक दिन होसन्ना चिल्लाते थे और अगले दिन अपनी नफरत जाहिर करते थे । ऐसे लोग भी थे जिन्होंने वचन को शुरू में गर्मजोशी से प्रतिक्रिया दी, लेकिन कठिनाई की पहली सांस में ही इसे त्याग दिया। और प्रभु के चेले और अन्य लोग भी थे जो आने वाले समय में फसल उत्पन्न करने वाले थे। इतने कम लोग ही वास्तव में प्रतिक्रिया देंगे, यह एक भेद बना रहा, लेकिन दृष्टांत का मुख्य बिंदु शायद ही कभी अनदेखा किया जा सकता था, यहां तक कि सबसे मूर्ख व्यक्ति द्वारा भी।

हालाँकि, कँटीली झाड़ियों का दृष्टांत इस्राएल के अगुवों या भीड़ को नहीं समझाया गया था। इसका गहरा अर्थ बाद में चेलों को निजी तौर पर समझाया गया। कहानी अपने आप में भ्रामक रूप से सरल है, लेकिन यह अधर्म के भेद और शैतान के विद्वेष से संबंधित है।

कँटीली झाड़ियों का दृष्टांत और सार्वजनिक रूप से बोले गए शेष दृष्टांतों का परिचय "एक और दृष्टांत" (13:24,31,33) शब्दों के साथ होता है। "एक और" शब्द का मूल अनुवाद एलोस है, जिसका अर्थ है "एक ही तरह का दूसरा।" संकेत यह है कि वे बोने वाले के दृष्टांत के समान ही हैं। बोने वाले के दृष्टांत में प्रभु ने सिखाया कि सुसमाचार इस युग में संसार को बदलने वाला नहीं है। मानवीय दृष्टिकोण से, सुसमाचार की सफलता सीमित है, क्योंकि जहाँ भी परमेश्वर का वचन जड़ पकड़ता है, वहाँ अक्सर यह केवल आंशिक फल ही देता है। "एक और" द्वारा पेश किए गए तीन दृष्टांतों में, प्रभु ने सिखाया कि इस युग में संसार में परमेश्वर के कार्य का कड़ा विरोध किया जाएगा, बाधा डाली जाएगी, और पूरी दृढ़ता के साथ उसका मुकाबला किया जाएगा।

कँटीली झाड़ियों के दृष्टांत का विषय टकराव है और शैतानी बाधाओं पर जोर दिया गया है; अर्थात् शैतान की गतिविधि पर ध्यान खींचा गया है। फिर राई के दाने का दृष्टांत आता है, जहाँ विषय भ्रम है और जोर युगान्तरीय व्यवस्था है; जहाँ मामलों की एक ऐसी स्थिति उभरती है जो परमेश्वर के नये नियम के उद्देश्य के विपरीत है। खमीर का दृष्टांत तीनों का समापन करता है; दृष्टांत का विषय भ्रष्टाचार है और जोर नये नियम के सत्य में जानबूझकर पेश की जा रही त्रुटि की सैद्धांतिक समस्या पर है।

कँटीली झाड़ियों का दृष्टांत अच्छे और बुरे दोनों तरह के बीजों की बुवाई के आस-पास घूमता है। कहानी में जंगली बीज को एक दुर्भावनापूर्ण और बेईमान शत्रु ने अंधेरे की आड़ में बोया था। बीज के उगने के दौरान यह स्पष्ट हो गया कि खेत में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा था। एक ज़हरीला पौधा, जो अपनी शुरुआती अवस्था में गेहूँ के समान दिखता था, गेहूँ के साथ-साथ उग रहा था। फसल काटने के समय यह हानिकारक पौधा अपनी असलियत में सामने आ गया। इसे अंततः आग के लिए इकट्ठा किया गया जबकि गेहूँ को सुरक्षित रूप से खलिहान में इकट्ठा किया गया।

चूँकि प्रभु ने इस दृष्टांत में भेद की व्याख्या बाद के लिए सुरक्षित रखी है (13:36-43), इसलिए हम व्याख्या करने का प्रयास करने से पहले उसके स्पष्टीकरण तक प्रतीक्षा करेंगे।

ग. राई के दाने का दृष्टान्त (13:31-32)

13:3-50 में श्रृंखला के सात दृष्टांतों में से पाँच को बिना व्याख्या के छोड़ दिया गया है। राई के दाने का दृष्टांत उनमें से पहला है जिसकी व्याख्या प्रभु ने नहीं की। सभी सात दृष्टांत स्वर्ग के राज्य के भेदों से संबंधित हैं और सभी सात दृष्टांत आज पूरे होने की प्रक्रिया में हैं, क्योंकि यह वह युग है जब राज्य अपने भेद या छिपे हुए रूप में है।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को मसीह के भावी सहस्राब्दी राज्य का स्पष्ट दर्शन प्राप्त था। उन्होंने राज्य को प्रत्यक्ष रूप में देखा था। उन्होंने इसे ऐसे देखा मानों यह इन दिनों में से एक दिन होगा: यरूशलेम से लेकर पृथ्वी की सबसे दूर की सीमाओं तक फैला एक शानदार वैश्विक साम्राज्य; एक ऐसा राज्य जिससे अभिशाप संपूर्ण रूप से हटा दिया जाएगा ताकि सिंह मेमने के साथ लेट पाए, मरुस्थल गुलाब की तरह खिल उठे, और लोग शांति से एक साथ रहें।

हालाँकि, पुराने नियम के उन भविष्यद्वक्ताओं ने कभी भी भेद के राज्य को नहीं देखा था। उन्होंने कभी सुसमाचार युग को नहीं देखा। इसीलिए पौलुस ने सुसमाचार को भेद कहा जो "जो समयों और पीढियों से गुप्त रहा, परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगों पर प्रकट हुआ है" (कुलुस्सियों 1:26)। और इसीलिए प्रभु यीशु ने अपने चेलों को भजन 78 का संदर्भ दिया जब उसने भेद-दृष्टांतों की व्याख्या करते हुए कहा: "मैं उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रही हैं प्रकट करूंगा" (मत्ती 13:35)।

भेद-दृष्टांतों की व्याख्या करते समय हमें यह सब ध्यान में रखना चाहिए। यदि कोई व्याख्या केवल पिछले युगों में इब्रानी भविष्यद्वक्ताओं को ज्ञात सत्य को व्यक्त करती है, तो यह उचित व्याख्या नहीं हो सकती। राई के दाने के दृष्टांत के बारे में लोकप्रिय दृष्टिकोण यह है कि यह मसीहत को इस्राएल राष्ट्र के किसी प्रकार के आत्मिक विस्तार के रूप में दूर-दूर तक फैलने की कल्पना करता है जब तक कि यह एक सामर्थ्यशाली, दृश्यमान राज्य के रूप में पृथ्वी पर छा न जाए। ऐसी व्याख्या दृष्टांत में भेद कारक को अनदेखा करती है। कलीसिया को इस्राएल के बराबर मानना और यह कहना कि कलीसिया में जो कुछ हो रहा है वह सहस्राब्दी भविष्यद्वाणी का परिणाम है, तो यह गलत है। इस युग में कलीसिया की महिमा उसके प्रभु की महिमा के समान ही है। यह इस "संसार की नहीं है" (यूहन्ना 8:23)।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने स्पष्ट रूप से आने वाले राज्य की महिमा को देखी थी जिसमें विश्व शक्ति के रूप में इस्राएल राष्ट्र में निवेशित होगी। उन्होंने कलीसिया या कलीसियाई युग को नहीं देखा, क्योंकि यह उनके लिए प्रकट नहीं किया गया था (रोमियों 16:25; इफिसियों 3:4-5)। राई के दाने का दृष्टांत एक भेद-दृष्टांत है, इसलिए यह नहीं सिखाता है कि राज्य के बारे में पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ आज पूरी हो रही हैं।

राई के दाने का दृष्टांत और खमीर का दृष्टांत एक जोड़ी के समान है। पहला दृष्टांत कलीसिया में होने वाली गलतियों के बाहरी विकास से संबंधित है; दूसरा दृष्टांत गलतियों के गुप्त और आंतरिक विकास से संबंधित

है। बोने वाले के दृष्टांत और जंगली पोधों के दृष्टांत की तरह, ऐसा लगता है कि कुछ गलत हो गया है, कुछ ऐसा जो मसीह ने पहले से ही देख लिया था और भविष्यद्वाणी कर दी थी।

जीवित प्राणियों द्वारा अपने किस्म को उत्पन्न करने की रीति का पालन करना प्रकृति का एक निश्चित नियम है। इसीलिए प्रभु दुविधा में लग रहा था, और अपने मन में उस सत्य को दर्शाने के लिए उपयुक्त दृष्टांत की तलाश कर रहा था जिसे वह व्यक्त करना चाहता था। मरकुस और लूका दोनों ने राई के दाने के दृष्टांत के अपने अभिलेख की शुरुआत प्रभु के इस प्रश्न से की: "हम परमेश्वर के राज्य की उपमा किस से दें, और किस दृष्टान्त से उसका वर्णन करें?" (मरकुस 4:30; लूका 13:18 को भी देखें) प्रभु स्वर्गराज्य की तुलना प्रकृति में किसी ऐसी चीज़ से करना चाहता था जो अपने अस्तित्व के नियम का उल्लंघन करती हो। अगर वह राज्य की तुलना किसी ऐसी चीज़ से करना चाहता जो अपनी प्रकृति की सीमाओं के भीतर रहती हो, तो वह हज़ारों दृष्टांत ढूँढ़ सकता था। लेकिन उसे ऐसा पशु या पौधा कहाँ मिल सकता था जो अपने किस्म के नियमों का इतना उल्लंघन करता हो कि वह जानबूझकर ऐसा कुछ बन जाए जो उसके निर्माता ने कभी नहीं चाहा था?

हर जीवित वस्तु अपनी संरचना में अपना खुद का विशेष आनुवंशिक सूत्र रखती है; यह उस सूत्र में निहित आदेशों के अनुसार प्रजनन और विकास करती है। इसी तरह कलीसिया और मसीहत को संसार में कुछ निश्चित विशेषताओं के साथ स्थापित किया जाना था जो उन्हें परमेश्वर द्वारा सौंपी गई थीं; उनके लिए कुछ अलग बनना दानवीय था, ऐसा कुछ जिससे पूरी प्रकृति भयभीत हो जाती। फिर भी ऐसा ही हुआ, जैसा कि राई के दाने का दृष्टांत दिखाता है।

दृष्टांत में राई के दाने ने केवल एक वनस्पति बने रहने से इनकार कर दिया; इसकी बजाय यह एक विशाल पेड़ बन गया। वनस्पति और पेड़ पूरी तरह से अलग-अलग प्रकार के होते हैं (उत्पत्ति 1:11-12); एक किस्म कभी भी दूसरे किस्म को उत्पन्न नहीं कर सकता (याकूब 3:12)। दृष्टांत में राई के दाने ने दो चीजें दिखाईं: एक असामान्य वृद्धि और एक सांसारिक भव्यता।

(1) राई के दाने ने क्या दिखाया (13:31-32a)

(a) एक असामान्य वृद्धि

इस्राएल में राई का पेड़ जंगली स्वरूप में उगता है। अपनी प्राकृतिक अवस्था में यह काफी ऊंचाई प्राप्त करता है और दूर से देखने पर कभी-कभी एक छोटे पेड़ की तरह दिखाई देता है। हालाँकि, यह एक गमले में उगने वाली वनस्पति है। यह एक छोटे से बीज से उगती है और एक बड़ा पौधा बन जाती है, लेकिन यह "एक बड़ा पेड़" नहीं बनती (लूका 13:19)। पेड़ के लिए विकास का नियम वनस्पति के नियम से अलग है। एक पेड़ धीरे-धीरे बढ़ता है, अपने पूर्ण कद और परिपक्वता तक पहुँचने में वर्षों का समय लेता है। एक बार जब यह बड़ा हो जाता है, तो यह कई वर्षों तक अपने सामर्थ्यशाली रूप को बनाए रखने में सक्षम होता है। राई जैसी वनस्पति तेजी से बढ़ती है। यह पेड़ की विशेषता वाले मजबूत लकड़ी के ऊतकों को प्राप्त किए बिना विकसित होती है और केवल फूल और बीज पैदा करने के लिए ही जीवित रहती है। एक वनस्पति का आगे चलकर एक पेड़ का रूप लेना उसके स्वभाव से अलग विकास और वृद्धि को दर्शाता है।

इस दृष्टांत में राई का दाना मसीह के राज्य के सिद्धांत को दर्शाता है। यीशु ने कहा, "स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया" (मत्ती 13:31)। पिछले दृष्टांतों की तरह ही, बोने वाला मसीह है और खेत संसार है। यह कहकर कि बोने वाले ने राई का दाना "लेकर", प्रभु ने संकेत दिया कि उसने जो सत्य सिखाया उसे उसने "लिया"; इससे उसने संकेत दिया कि उसकी शिक्षाएँ उसे दी गई थीं। यूहन्ना 7:16 में उसने कहा, "मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजने वाले का है।"

प्रभु जो सत्य बोने आया था, वे विनम्र, सरल और सहज थे। उसकी शिक्षा "सब बीजों में सबसे छोटा" थी (मत्ती 13:32)। इस ग्रह पर स्थापित किसी भी अन्य राज्य में कभी भी इतने निम्न सिद्धांत नहीं दिए गए थे, जितने कि उसने अपने लोगों को बताया था। इस संसार के राज्यों के बारे में ज़रा सोचें। उनके सिद्धांतों, उनकी शान-शौकत और सामर्थ्य, उनकी समृद्धि और गर्व के बारे में ज़रा विचार करें। उन प्रतीकों के बारे में सोचें जिन्हें राष्ट्र अपनी वास्तविक या काल्पनिक राष्ट्रीय भावना को दर्शाने के लिए इस्तेमाल करते हैं: शेर, चील, भालू, पक्षी और शिकारी जानवर। यीशु ने इन सब को एक तरफ रख दिया। उसके राज्य में प्रेम और नम्रता शामिल थी। अगर यीशु को अपने साम्राज्य को दर्शाने के लिए कोई प्रतीक चाहिए होता, तो वह कबूतर या मेमने को चुनता।

विचार करें कि यीशु ने अपने राज्य के बारे में क्या सिखाया। एक बार उसने एक बालक को बुलाया, उसे चेलों के बीच खड़ा किया, और कहा, "जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा" (मत्ती 18:4)। उसके अलावा और कौन ऐसे राज्य की कल्पना तक कर सकता है? मत्ती 7:14 से हम सीखते हैं कि उसने अपने राज्य की कल्पना संख्यात्मक रूप से कैसे की। उसने कहा, "क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।"

ऐसा ही वह बीज भी था और उसे ऐसा ही पौधा बनना था। इस युग के दौरान प्रभु ने संसार में अपने कार्य को कभी भी एक वनस्पति से अधिक कुछ भी नहीं माना। यदि मसीही समुदाय प्रभु यीशु के उपदेशों के प्रति सच्चा रहता, तो यह मनुष्यों की नज़र में छोटा, तिरस्कृत और गरीब बना रहता। इसकी बजाय कलीसिया एक पेड़ बन गया है। एक पेड़ में एक विशाल तना और बड़ी-बड़ी शाखाएँ होती हैं जो छोटी-छोटी शाखाओं में विभाजित होती रहती हैं जब तक कि वे आख़िरकार टहनियों में नहीं बदल जातीं। दूसरे शब्दों में, एक पेड़ संगठन का एक प्रभावशाली प्रतीक है; यह सामर्थ्य का प्रतीक है जो एक केंद्रीय अधिकार क्षेत्र से प्राप्त होता है और अपने विभिन्न प्रशासनिक शाखाओं के द्वारा निम्न श्रेणी के लोगों तक पहुँचता है। यह इस अर्थ में है कि बाइबल एक पेड़ को एक प्रतीक के रूप में उपयोग करती है। नबूकदनेस्सर की तुलना एक पेड़ से की गई थी (दानिय्येल 4:10) और इसी तरह इस्राएल राष्ट्र की भी तुलना की गई है (न्यायियों 9:8-15)।

इस्राएल एक पेड़ था। कलीसिया एक वनस्पति है। राई ने पेड़ बनने की आकांक्षा करके अपने अस्तित्व के नियम को अनदेखा किया और खुद को अपनी प्रजाति के स्तर से ऊपर उठाने और जंगल के पेड़ों के साथ प्रतिस्पर्धा करने की कोशिश की। इसी तरह दृश्यमान कलीसिया ने एक सांसारिक, पदानुक्रमित प्रणाली बनने की आकांक्षा की है - एक महासामर्थ्य जो एक केंद्रीय प्राधिकरण के इर्द-गिर्द स्थापित है जो पूरी तरह से संगठनात्मक माध्यमों के द्वारा अपने अधिकार को आगे विभाजित करती है। यह वह नहीं था जो प्रभु ने अपनी कलीसिया के लिए सोचा था।

(b) सांसारिक भव्यता

दृष्टांत में राई के दाने ने एक असामान्य वृद्धि के अलावा सांसारिक भव्यता भी दिखाई। इस्राएल में राई का पौधा बारह से बीस फीट की ऊँचाई तक बढ़ता है, जो दर्शाता है कि एक वनस्पति के रूप में भी यह राजसी विकास प्राप्त करता है। और हालाँकि कलीसिया का उद्देश्य कभी भी एक सांसारिक साम्राज्य स्थापित करना नहीं था, लेकिन निश्चित रूप से इसका उद्देश्य कुछ ऐसा होना था जो अलग दिखे। हालाँकि, एक पेड़ एक वनस्पति से कहीं अधिक ऊँचा होता है।

प्रकृति में बहुत कम ही चीजें एक सामर्थ्यशाली पेड़ से अधिक भव्य होती हैं, जिसकी जड़ें भूमि में गहराई तक धंसी होती हैं और जिसका विशाल सिर बादलों को छूता है। कुछ पेड़ तीस मंजिल तक बढ़ते हैं; कुछ सैकड़ों मंजिल तक, यहाँ तक कि हज़ारों साल तक जीवित भी रहते हैं। फैली हुई शाखाओं, हरे-भरे पत्तों, विशाल सामर्थ्य और शानदार दिखने के साथ, पेड़ राजसी और भव्यता की शानदार तस्वीर हैं। दृष्टांत में राई के पौधे से यही बनने की अपेक्षा की गई थी।

राई का पेड़ बनना उसके सृष्टिकर्ता के उद्देश्य से बिल्कुल अलग था, कुछ ऐसा जिसकी वह अपनी किस्म के किसी पक्षपाती इनकार के बिना कभी उम्मीद नहीं कर सकता था। यही इस दृष्टांत का भेद है। इसका प्रयोग यह है कि कलीसिया, जिसे उद्धारकर्ता की विनम्र शिक्षाओं के प्रति विश्वस्त रहना चाहिए था, वह कुछ ऐसा बन गयी है जिसकी उसने कभी कल्पना नहीं की थी। यह संसार में एक साम्राज्यवादी सामर्थ्य बन गयी है। यह धर्म की एक विशाल, संगठित प्रणाली में बढ़ और विकसित हो चुकी है। यह "धनी और धनवान हो गया है" (प्रकाशितवाक्य 3:17)। इसने संधियाँ की हैं, राजाओं के साथ गठबंधन बनाए हैं, और इसे दरबारियों को नियुक्त किया है, जो वास्तव में "कलीसिया के सरदार" माने जाते हैं। इसने सेनाओं को काम पर रखा है, राष्ट्रों के मामलों में हस्तक्षेप किया है, राजनीति में हाथ डाला है, और संसार में एक संप्रभु की तरह शासन किया है। लेकिन यह कुछ ऐसा था जिसकी प्रभु यीशु ने अपनी कलीसिया के विषय में कभी योजना नहीं बनाई थी। उसने इसे पहले से ही देखा था और अपने दृष्टांत में इसकी भविष्यद्वाणी भी की थी, लेकिन उसने कभी इसकी योजना नहीं बनाई और न ही उसने कभी इसे मंजूरी दी।

केवल रोमन कलीसिया इस भविष्यद्वाणी की एकमात्र पूर्तिकरण नहीं है, लेकिन यह इसका एक सर्वोत्तम उदाहरण है। इसलिए रोम को हमारा उदाहरण मानें। रोमन कलीसिया, एक मुहावरा उधार लेकर कहें तो, "रोमी साम्राज्य का भूत" है, जो इतिहास में इसकी निरंतरता है। उस कलीसिया की धार्मिक संरचना पश्चिम में रोमी साम्राज्य प्रशासन का विस्तार है। यदि रोमी साम्राज्य के हमारे सभी इतिहास नष्ट हो गए, तो भी हम मध्य युग में रोमन कैथोलिक चर्च और वेटिकन के संगठन का पता लगाकर इसके संगठन का पुनर्निर्माण कर सकते हैं। जो मूर्तिपूजक रोम था, वही पोप का रोम भी बन गया।

वेटिकन के पास अपनी स्थायी सेना, पुलिस बल, कानूनी अदालतें, जेल, सिक्के और टिकटों के साथ साथ संप्रभु सामर्थ्य के सभी बाहरी तत्व मौजूद हैं। यीशु मसीह के जन्म के एक हज़ार साल बाद, पोप ग्रेगरी ने पोप की संरचना को आवाज़ दी और पोप को सर्वोच्च सांसारिक सामर्थ्य सौंपी दी:

यह निर्धारित किया गया है कि रोमन पोप सार्वभौमिक बिशप है, कि उसका नाम संसार में अपनी तरह का एकमात्र है। बिशपों को उनके पदों से अपदस्थ करने या उनसे मेल-मिलाप करने का अधिकार केवल उसी के पास है; और वह उनकी अनुपस्थिति में और धर्मसभा की सहमति के बिना भी उन्हें उनके पद से अपदस्थ

कर सकता है.... केवल वही साम्राज्य के झंडे का उपयोग कर सकता है; सभी दरबारी उसके पैर चूमने के लिए बाध्य हैं; उसके पास सम्राटों को पद से अपदस्थ करने और प्रजा को उनकी निष्ठा से मुक्त करने का अधिकार है। युद्ध और शांति के प्रश्नों में सर्वोच्च मध्यस्थता उसके हाथों में है, और केवल वही राज्य के विवादित उत्तराधिकार का फैसला कर सकता है.... रोमन चर्च ने कभी गलती नहीं की है, और, जैसा कि पवित्रशास्त्र गवाही देता है, वह कभी गलती नहीं करेगा। पोप सभी निर्णयों से ऊपर है.... कलीसिया को कभी भी दरबारियों की दासी नहीं बल्कि उनकी स्वामिन बनना था।[9]

वेटिकन ने साम्राज्यवादी सामर्थ्य के अपने अहंकारी बयान को कभी नहीं छोड़ा है। रोमन चर्च का इतिहास दिखाता है कि उसने खुद को उसके आदेशों के अनुरूप ढाला है और उन आदेशों की प्राप्ति ही उस कलीसिया की महत्वाकांक्षा रही है।

रोमन चर्च आज अपनी पूर्व सामर्थ्य का प्रयोग करने में सक्षम नहीं है, यह एक प्रबुद्ध युग की अच्छी समझ का परिणाम है जो इस तरह के अहंकार के आगे झुकने से इनकार करता है। हालाँकि, पोपतंत्र की ओर से कोई हृदय परिवर्तन नहीं हुआ है। रोम के बारे में कहा जाता है कि हारने पर वह एक मेमना है, समानता में वह लोमड़ी है, और सत्ता में वह एक बाघ है। हमारी इतिहास की किताबें हमें इस बात के कई प्रमाण देती हैं कि यह आकलन बिल्कुल सच है।

वेटिकन की सत्ता संरचना एक पिरामिड की तरह है, जिसके शीर्ष पर पोप विराजमान है। वह अपने अधीन लोगों और अपने चर्च के पद और फ़ाइल से बहुत ऊपर एक भव्य अलगाव में रहता है। जैसा कि एक कैथोलिक ने कहा था जब एक आतंकवादी ने पोप जॉन पॉल द्वितीय की हत्या करने की कोशिश की थी, "यह स्वयं परमेश्वर को गोली मारने की कोशिश करने जैसा है।" पोप के ठीक नीचे कार्डिनल्स का कॉलेज है, और उस कॉलेज के नीचे मण्डली, कार्यालय और रोमी क्यूरिया (वेटिकन के न्यायिक कार्यक्रम को पूरा करने के लिए तैयार किया गया बोर्ड और न्यायालय) हैं। सभी प्रमुख कर्मियों को पोप द्वारा ही नियुक्त और नियंत्रित किया जाता है।[10]

शीर्ष मण्डली पवित्र कार्यालय है, जिसने मध्यकालीन युग के दौरान धर्माधिकरण (रोमन कैथोलिक चर्च का बनाया गया संगठन जो चर्च की मान्यताओं में विश्वास न करने वालों को ढूँढकर उन्हें दंडित करता था) की शुरूआत करके अपने लिए बदनामी हासिल की थी। पवित्र कार्यालय का नाम ही धनी और निर्धन, विद्वान और अज्ञानी, हाकिम और किसान की रीढ़ की हड्डी में सिहरन पैदा कर देता था। इसने अनगिनत हज़ारों पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को अपंग बना दिया, प्रताड़ित किया और लकड़ी के खंभे पर जला दिया। यूहन्ना ने इस रोमी धार्मिक व्यवस्था को "पवित्र लोगों के लहू और यीशु के गवाहों के लहू पीने से मतवाली" के रूप में देखा (प्रकाशितवाक्य 17:6)। धर्माधिकरण की भयानकता का वर्णन करते हुए, एक इतिहासकार ने टिप्पणी की, "कलीसिया के वर्ष-क्रमिक इतिहास नरक के वर्ष-क्रमिक इतिहास बन गए।" इस धर्माधिकरण का अंत आसानी से नहीं हुआ। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नेपोलियन द्वारा स्पेन पर विजय प्राप्त करने के बाद इसे समाप्त कर दिया गया।

हाल के वर्षों में कई स्वतंत्र सोच वाले बिशपों और ननों ने पोप के ईश्वरीय अधिकार से शासन करने के दावे पर सवाल उठाए हैं और सामाजिक मुद्दों पर वेटिकन की कुछ घोषणाओं पर आपत्ति जताई है। कुछ कैथोलिक धर्म-विज्ञानियों ने रोम के सिद्धांतों को भी चुनौती दी है, लेकिन व्यवस्था अभी भी व्यवस्था ही

बनी हुई है। पोपतंत्र उन पुराने अच्छे दिनों की वापसी से अधिक कुछ नहीं चाहेगा जब दुनिया भर में पद और फ़ाइल के सदस्य सर्वोच्चता के मिथक को स्वीकार करते थे और पोप की घोषणाओं को परमेश्वर द्वारा प्रेरित और सवाल से परे मानते थे।

रोम की कलीसिया वैसी ही एक धार्मिक व्यवस्था है जैसा प्रभु ने राई के दाने के दृष्टांत में उसे देखा था। उसने एक ऐसी कलीसिया देखी जो एक सांसारिक राज्य बन गई थी।

(2) राई के दाने ने किसे आश्रय दिया (13:32b)

दृष्टांत पर वापस लौटते हुए, हम देखते हैं कि राई ने किसे आश्रय दिया। यीशु ने कहा, "आकाश के पक्षी आकर उस की डालियों पर बसेरा करते हैं।" बोने वाले के दृष्टांत में प्रभु ने पक्षियों का उपयोग दुष्ट आत्माओं को दर्शाने के लिए किया था जो सड़क के किनारे गिरे बीजों को चुग लेती हैं। राई के दाने के दृष्टांत में भी पक्षियों का उपयोग उसी अर्थ में किया गया था। वे दुष्ट आत्माओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

कुछ टिप्पणीकारों का कहना है कि यहाँ पक्षी कलीसिया में आने वाले मन-परिवर्तित लोगों का प्रतीक हैं, लेकिन यह व्याख्या अन्य सार्वजनिक रूप से कही जाने वाली दृष्टांतों से मेल नहीं खाती है। समुद्र तट पर मौजूद भीड़ को बताई गई कहानियाँ इस युग के दौरान संसार भर में परमेश्वर के उद्देश्यों की स्पष्ट विफलता को समान रूप से रेखांकित करती हैं।

काँटें, पत्थर, खमीर, खमीर को मिलाने वाली स्त्री और बुरी मछलियों के साथ-साथ पक्षी भी उस चीज़ का प्रतिनिधित्व करते हैं जो बुराई है। वे दुष्ट आत्माओं का प्रतीक हैं और पेड़ उस झूठी कलीसिया का प्रतीक है। राई की असामान्य वृद्धि पक्षियों के लिए इसकी शाखाओं में बसेरा करना संभव बनाती है। दृष्टांत के अपने विवरण में मरकुस ने राई की डालियों पर अधिक ज़ोर दिया: "और उसकी ऐसी बड़ी डालियां निकलती हैं, कि आकाश के पक्षी उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं" (मरकुस 4:32)।

पक्षी एक प्रकार की बुराई का प्रतिनिधित्व करते हैं जो आकाशमंडल में निवास करती है। शैतान को पवित्र आत्मा द्वारा "आकाश के अधिकार के हाकिम" के रूप में वर्णित किया गया है (इफिसियों 2:2)। अदृश्य जगत में छिपी हुई और परमेश्वर के कार्य में बाधा डालने वाली शैतानी ताकतों का वर्णन करते हुए, पौलुस ने हमें "आकाश में" स्थित प्रधानताओं, अधिकारियों, और इस संसार के अंधकार के हाकिमों और दुष्ट आत्माओं के बारे में बताया है (इफिसियों 6:12)। इसलिए पक्षी, जो पहले दृष्टांत में वर्णित बोने वाले के दुश्मन थे, उन्होंने राई के पेड़ पर अपना निवास बना लिया है।

हम कलीसिया की सभी शाखाओं में दुष्ट आत्माओं को छिपे हुए पा सकते हैं, जैसा कि इसे मसीही जगत द्वारा दर्शाया गया है। वे कलीसिया के तीन प्राथमिक विभागों की डालियों में छिपे हुए हैं: प्रोटेस्टेंटिज्म, ग्रीक ऑर्थोडॉक्सी और रोमन-तंत्र। जहाँ भी भौतिक संरचना और सामर्थ्य के लिए बाहरी लालसा होती है, और जहाँ भी कलीसिया को किसी ऐसी चीज़ के साथ विकृत किया गया है जिसे उसमें कभी नहीं होना चाहिए था, वहाँ दुष्ट आत्माएँ घात लगाए होते हैं। हम उन्हें विचित्र, बाइबल को विकृत करने वाले, मसीह को नकारने वाले सिद्धांतों वाले पंथों में पाते हैं। हम इन दुष्ट आत्माओं को नई कलीसियाओं, पुरानी कलीसियाओं, परिपक्व सी प्रतीत होने वाली कलीसियाओं में पाते हैं।

कुछ साल पहले मुझे एक कलीसिया में सभाओं को आयोजित करना था जिसके बारे में मुझे पूरा विश्वास था कि यह मौलिक है, बाइबल पर विश्वास करती है, और अपने उपदेश और व्यवहार में सही है। हालाँकि, मैंने पाया कि उस कलीसिया में अधिकार के पदों पर ऐसे लोग बैठे थे जो एक ऐसे उपदेश पर विश्वास करते थे और सिखाते थे जो मसीह के परमेश्वरत्व पर हमला करता था। जब मैंने कलीसिया के अगुवों का सामना किया, तो उन्होंने जितना हो सका उतना उस विषय में टालमटोल किया, लेकिन जब मैंने उन्हें उस बात की गंभीरता की ओर धकेला, तब जाकर उन्होंने स्वीकार किया कि उनकी सहानुभूति झूठी शिक्षा के साथ थी। यहाँ एक ऐसी डाली थी जिसके विषय में हर कोई सोचता होगा कि इसमें कोई त्रुटि नहीं पाई जा सकती, फिर भी दुष्ट आत्माओं का सिद्धांत चुपचाप इसमें उड़कर बैठ गया था और अब अपने नए घोंसले में आराम से बसेरा बनाकर रह रहा था। (मैंने उन सभाओं को आयोजित नहीं किया!)

यदि झूठे सिद्धांत एक ऐसी कलीसिया में प्रवेश कर सकते हैं जिसे हमेशा विश्वास में पूर्णतः सुदृढ़ और परमेश्वर के वचन के प्रति सच्चा माना जाता है, तो दुष्ट आत्माएं मसीही जगत की उन डालियों में कितनी आसानी से निवास कर सकती हैं जहां विश्वास और व्यवहार के एकमात्र अधिकार और नियम के रूप में बाइबल को बहुत पहले ही त्याग दिया गया था?

मसीही जगत के बारे में बहुत से उदाहरण हैं कि वह किस तरह से कुछ ऐसा बन गया है जो मसीह ने कभी नहीं चाहा था— विशाल, सांसारिक, साम्राज्यवादी, शक्तिशाली। यह राजाओं और साम्राज्यों का प्रतिद्वंदी बन गया है, और दुष्ट आत्माओं को आश्रय देने वाला बन गया है।

मसीह के सभी दृष्टांतों में से, राई के दाने का भेद संभवतः भविष्य बताने की उसकी क्षमता का सबसे अच्छा उदाहरण है। उसने जो दर्शाया वह सचमुच बैसा ही घटित हुआ है। जिसे हम मसीही जगत कहते हैं उसका विस्तार और दायरा मसीह के अचूक पूर्वज्ञान का प्रमाण है।

घ. खमीर का दृष्टांत (13:33-35)

खमीर के दृष्टांत की लोकप्रिय व्याख्या यह है कि यह प्रभु यीशु मसीह के उद्धार और पवित्रता के कार्य द्वारा समाज में धीरे-धीरे, चुपचाप और बेरोक-टोक तरीके से व्याप्त होने को दर्शाता है। एक बार जब यह अपना लाभकारी कार्य शुरू कर देता है, तो यह बिना रुके तब तक काम करता रहता है जब तक कि पूरी दुनिया सुसमाचार से खमीरीकृत न हो जाए। यह व्याख्या अच्छी लगती है, लेकिन यह गलत है क्योंकि बाइबल मनुष्य जाति के क्रमिक परिवर्तन की शिक्षा नहीं देती है।

बाइबल इसके विपरीत सिखाती है। पौलुस ने कहा, "दुष्ट, और बहकाने वाले धोखा देते हुए, और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएंगे" (2 तीमुथियुस 3:13)। यीशु ने भी यही बात कही थी जब उसने अपने चेलों को यह चुनौती दी: "तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?" (लूका 18:8) बाइबल की भविष्यद्वाणी का पूरा सार इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि संसार अंत में मसीह के विरूद्ध सशस्त्र विद्रोह की स्थिति में होगा, एक विद्रोह जिसका नेतृत्व और प्रेरणा शैतानी त्रीएकत्व के द्वारा की जाएगी।

खमीर का दृष्टांत राई के दाने के दृष्टांत का एक हमसाथी है, जहाँ हमने कलीसिया के बाहरी प्रदर्शन को देखा। खमीर के दृष्टांत में हम कलीसिया के भीतरी गिरावट को देखते हैं। दृष्टांत का विषय समाप्ति का भेद

है, जिसमें जोर सैद्धांतिकता पर है, और कहानी स्वयं खमीर की गतिविधि और स्त्री की कार्रवाई के चारों ओर घूमती है।

(1) स्त्री (13:33)

(a) खमीर की गतिविधि

i. रोटी

"स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया।" तीन पसेरी आटा हमें अब्राहम के स्वर्गीय अतिथियों के प्रति उसके आतिथ्य की याद दिलाता है। उसने अपनी पत्नी सारा से कहा कि वह तीन सआ आटा लेकर अपने मेहमानों के लिए रोटियाँ तैयार करे (उत्पत्ति 18:6)। हमें यहाँ मूसा की व्यवस्था के अंतर्गत ज़रूरी अन्न-बलि की भी याद दिलाई गई है। इसमें सामान्य मात्रा तीन अंश की थी (गिनती 15:9; 28:12,20,28; 29:3,9,14)।

पुराने नियम के इस महत्वपूर्ण भेंट पर थोड़ी देर विचार करने से हमें यह अंदाजा लग जाएगा कि दृष्टांत में तीन पसेरी आटे का क्या तात्पर्य था। अन्न-बलि उत्तम बारीक आटे से बनायी गयी थी क्योंकि यह पृथ्वी पर मसीह के जीवन की शुद्धता और एकरूपता का प्रतीक थी। वह हमेशा एक समान था, कभी घबराया नहीं, कभी जल्दबाज़ी में नहीं रहा, कभी दुविधा में नहीं रहा, कभी चिंतित नहीं रहा, कभी भयभीत नहीं रहा, हमेशा सब बातों में अपना संतुलन बनाए रखा। वह अपने सबसे महान अनुयायियों से भी काफी अलग था। पतरस उतावला था, यूहन्ना को "गर्जन का पुत्र" कहा जाता था, और पौलुस ने एक से अधिक मौकों पर अपना आपा खो दिया था। इसलिए अन्न-बलि का उत्तम मैदा प्रभु यीशु के अतुलनीय जीवन का पूर्वाभास कराता था।

मैदे के ऊपर एक अनिश्चित मात्रा में तेल उंडेला गया। यहाँ कोई भी मात्रा निर्धारित नहीं की गई थी क्योंकि तेल पवित्र आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है, और आत्मा को प्रभु के अभिषिक्त मसीह को "माप के" नहीं दिया गया था (यूहन्ना 3:34)। उसका आत्मा में भरना और अभिषेक असीमित और अंतहीन था।

अन्न-बलि में मधु नहीं मिलाया जाना चाहिए क्योंकि मधु प्राकृतिक मिठास की बात करता है, जो खराब हो सकती है (लैव्यव्यवस्था 2:11)। मधु खराब हो सकता है और खट्टा भी हो सकता है। हमारे प्रभु के चरित्र की मिठास सिर्फ़ प्राकृतिक नहीं थी; यह अलौकिक भी थी।

लोबान को अन्न-बलि के मैदे पर छिड़का जाता था, जो सबसे कीमती इत्र होता है, क्योंकि प्रभु यीशु का जीवन सुगंध से भरा था (लैव्यव्यवस्था 2:15)। नमक भी तीखेपन और स्वाद को बेहतर करने के लिए डाला जाता था जो लोगों के बीच उसके जीवन, उसकी शिक्षाओं और उसके चमत्कारों को इतना विशिष्ट बनाने में मदद करने वाला था (2:13)।

अन्न-बलि में खमीर नहीं डाला जाना चाहिए क्योंकि खमीर बुराई का प्रतीक है (लैव्यव्यवस्था 2:11)। यह भेंट प्रभु यीशु के बारे में थी और उसमें कोई पाप या भ्रष्ट करने वाला प्रभाव नहीं था। वह "पवित्र, निष्कलंक, निर्मल और पापियों से अलग" था (इब्रानियों 7:26)। शैतान ने उसे भ्रष्ट करने की कई बार कोशिश की, लेकिन हमेशा असफल रहा क्योंकि उसके स्वभाव में प्रलोभन के प्रति कुछ आकर्षण नहीं था। सिर्फ़ इतना

ही नहीं कि वह पाप नहीं करेगा; अपितु वह पाप कर ही नहीं सकता था। उसके जीवन में कहीं भी खमीर नहीं था।

अंत में, तीन का पैमाना एक ऐसे जीवन का सुझाव देता है जिसमें परमेश्वरत्व की सारी परिपूर्णता शारीरिक रूप से निवास करती है (कुलुस्सियों 2:9)। यह और पुराने नियम के अन्न-बलि के सभी अन्य पहलू मसीह के बारे में ही बताते हैं।

पिन्तेकुस्त के पर्व पर इस्राएली लोगों द्वारा एक अलग तरह की अन्न-बलि चढ़ाई जाती थी (लैव्यव्यवस्था 23:15-21)। उत्तम मैदे की भेंट चढ़ाने की बजाय, उन्होंने आटे को लिया और उससे दो रोटियाँ पकाई। जबकि मैदे की सामान्य भेंट मसीह के भौतिक शरीर का प्रतीक थी, वहीं पिन्तेकुस्त की रोटियाँ मसीह के रहस्यमय देह का प्रतीक थीं। दो रोटियाँ यहूदी और अन्यजातीय को दर्शाती हैं जो कलीसिया में एक माने जाते हैं, जों मसीह की रहस्यमय देह है। प्रभु ने पिन्तेकुस्त के बाद से इसी रहस्यमय देह के द्वारा पृथ्वी पर अपने कार्य को जारी रखा है।

दो रोटियों की भेंट, प्रतिदिन की बलि के नियमित अन्न-बलि से बिल्कुल अलग थी, क्योंकि इस्राएलियों को पिन्तेकुस्त के पर्व पर चढ़ाए जाने वाले चढ़ावे में खमीर डालने के लिए कहा गया था। खमीर का यह उपयोग एक महत्वपूर्ण सत्य का प्रतीक था: कलीसिया अभी भी पाप से मुक्त नहीं है। प्रभु यीशु में विश्वास करने वाले विश्वासी कलीसिया का निर्माण करते हैं। नए जन्म के चमत्कार के द्वारा वे 'ईश्वरीय स्वभाव के समभागी' बन गए हैं (2 पतरस 1:4), लेकिन उनमें अभी भी उनका पुराना स्वभाव मौजूद है और जब तक उन्हें महिमा में उनके घर नहीं बुलाया जाता, तब तक उनमें दोनों स्वभाव बने रहेंगे। इसलिए हालाँकि कलीसिया मसीह की रहस्यमय देह है और एक दिन यह अपनी सिद्धता को पा जाएगी, लेकिन यह अभी सिद्ध नहीं है। आटे में खमीर मिला हुआ है।

पिन्तेकुस्त के पर्व पर रोटी में खमीर की मौजूदगी से निपटने के लिए दो काम किए गए: (1) परमेश्वर को पापबलि चढ़ाई गई और (2) रोटियों को तंदूर में डालकर पकाया गया। ध्यान रखें कि यह पापबलि था, दोषबलि नहीं। इसका अंतर काफी महत्वपूर्ण है, क्योंकि किस्म अपने आप में गणित की तरह ही सटीक होते हैं।

दोषबलि व्यवहार में पाप से निपटती है। चूँकि हम अभी भी पाप में गिरते हैं, इसलिए दोषबलि पिन्तेकुस्त की विधि का हिस्सा नहीं थी। उन रोटियों में सक्रिय रूप से काम करने वाले खमीर से निपटने के लिए कुछ और की भी आवश्यकता थी। पाप से निपटने के लिए पाप-बलि की आवश्यकता थी। दोषबलि एक व्यक्ति ने क्या किया, उससे संबंधित थी; पाप-बलि एक व्यक्ति क्या था, उससे संबंधित थी। मैं जो करता हूँ, वह इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं वही हूँ जो मैं हूँ। मैं इसलिए पापी नहीं हूँ क्योंकि मैं पाप करता हूँ; मैं पाप करता हूँ क्योंकि मैं एक पापी हूँ। मसीह क्रूस पर न केवल मेरे लिए, बल्कि मेरे रूप में भी मरा। वह मेरे लिए पाप-बलि बन गया। मसीह की रहस्यमय देह, जो अभी भी पाप में पड़ने वाले सदस्यों से बनी है, केवल इसलिए कार्य कर सकती है क्योंकि मसीह ने कलवरी पर अपने बलिदान में उस पाप को दूर कर दिया है।

इसलिए परमेश्वर ने खमीर के द्वारा पापबलि में व्यवहार किया। जब पिन्तेकुस्तीय रोटियाँ तंदूर में डालकर पकाई गईं, तब भी उसने खमीर से व्यवहार किया। आग की क्रिया ने खमीर की क्रिया को रोक दिया। आग ने उस खमीर को जला डाला। इसी तरह मसीह के रहस्यमय देह के सदस्यों में मौजूद पाप का आग की

क्रिया के द्वारा ही व्यवहार किया जाता है। पवित्र आत्मा पिन्तेकुस्त में "आग की तरह फटती हुई जीभ" के समान उतरा (प्रेरितों 2:3)।

हम जो विश्वासी हैं, हमारे अंदर पाप विद्यमान है, लेकिन हमें पाप को अपने जीवन में सक्रिय नहीं होने देना है। यूहन्ना ने लिखा: "मेरे बालकों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूँ, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धर्मी यीशु मसीह" (1 यूहन्ना 2:1)। परमेश्वर का आत्मा हमारे अंदर निवास करता है और परमेश्वर का पुत्र हमें संभालता है, ताकि हमारे जीवन में पाप के सक्रिय कार्य को समाप्त करने के लिए हमें वह सब मिल सके जिसकी हमें आवश्यकता है। हालाँकि स्वर्ग के इस पार हममें से कोई भी कभी यह नहीं कह सकता कि, "मैं पाप नहीं कर सकता," हम केवल इतना कह सकते हैं, "मैं सक्षम हूँ कि पाप न करूं।"

जब हम भोजन के उन तीन मापों के बारे में सोचते हैं तो एक और बात पर हमारा ध्यान जाता है। वे उस शुद्ध, मिलावट रहित, खमीर रहित सत्य का पूर्वाभास देते हैं जिसे प्रभु यीशु ने अपनी कलीसिया के लिए छोड़ा था, वह शिक्षा जिसे हम अब नये नियम में शामिल पाते हैं। पिता का अचूक वचन, जो मसीह का देहधारी वचन बन गया, अब आत्मा के प्रेरित वचन के रूप में हमारे हाथों में है। यही शुद्ध भोजन है और भोजन का यही पहलू खमीर के दृष्टांत में प्रमुखता से आता है।

पिन्तेकुस्त के दिन निर्मित कलीसिया "प्रेरितों से शिक्षा पाने...में लौलीन रहे" (प्रेरितों के काम 2:42)। यह वही शिक्षाओं का समूह था जिसने कलीसिया को जीवन दिया। यीशु ने कहा, "जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा है, और जीवन भी हैं" (यूहन्ना 6:63)। इन शिक्षाओं को कमजोर या विकृत नहीं किया जाना था, बल्कि कलीसिया का घोषणापत्र और संविधान बनना था।

हालाँकि, दृष्टांत में खमीर को भोजन में शामिल किया गया था। यीशु ने पहले ही देख लिया था कि लगभग तुरंत ही एक मिलावटी, भ्रष्ट करने वाली प्रक्रिया कलीसिया में अपना घातक, व्यापक कार्य शुरू कर देगी। मसीह और उसके प्रेरितों की शुद्ध शिक्षा सक्रिय बुराई द्वारा भ्रष्ट हो जाएगी।

ii. खमीर

a. बुराई से भ्रष्ट हुआ विश्वास

दृष्टांत में खमीर बुराई द्वारा भ्रष्ट विश्वास का एक प्रतीक है। सुसमाचारों में यीशु ने तीन प्रकार के खमीर की बात की: फरीसियों का खमीर (लूका 12:1); सदूकियों का खमीर (मत्ती 16:6,12); और हेरोदेस का खमीर (मरकुस 8:14-15)। ये तीन प्रकार के खमीर अपने आप में सर्व-व्यापी प्रतीत होते हैं। वे विभिन्न प्रकार की झूठी शिक्षाओं के प्रतीक हैं जो इस युग के दौरान कलीसिया में व्याप्त हो गई हैं।

फरीसियों का खमीर अलगाववाद की बात करता था। यीशु ने कई बार फरीसियों को उनकी व्यवस्थावाद, हठधर्मिता और ईश्वरीय सत्य को भ्रष्ट करने के लिए फटकार लगाई थी।

जब यहूदी बेबीलोन से लौटे तो व्याख्याकारों की एक नई नस्ल सामने आई। एज्रा और शास्त्रियों ने लोगों को शास्त्रों को समझने में उनकी मदद करने की कोशिश की (नहेम्याह 8:5-8) और यह सार्थक रहा था;

लेकिन कुछ ही समय में मानवीय राय से भरी टिप्पणियों की मात्राएँ सामने आने लगीं। जल्द ही यहूदियों ने टिप्पणियों पर टिप्पणियाँ लिखनी शुरू कर दीं। जो ताल्मूड बन गया, और वह तेज़ी से जड़ पकड़ रहा था।

उदाहरण के लिए, सब्त के बारे में रब्बी की शिक्षाएँ ईश्वरीय सत्य को भ्रष्ट करती थी। प्रभु ने सब्त को विश्राम का दिन, अपने लोगों के लिए आशीष, एक ऐसा समय बनाने का इरादा किया था जब वे विश्राम कर सकें और एक साथ प्रभु के उपस्थिति का आनंद ले सकें। लेकिन शास्त्रियों और फरीसियों ने इस दिन को एक बोझ में बदल डाला। निर्गमन 20:9 में वर्णित सरल और पर्याप्त कथन कि, "छ: दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब कामकाज करना," वह आधार बन गया जिस पर उन्होंने एक विशाल और खतरनाक इमारत खड़ी कर दी।

उन्होंने प्रभु के चेलों पर सब्त के दिन का उल्लंघन करने का आरोप लगाया क्योंकि उन्होंने कुछ बालें (मकई) के दाने तोड़े, उन्हें छीला और सब्त के दिन उसे खाया (मत्ती 12:1-8)। बालें तोड़कर चेलों ने कटाई के विरुद्ध निषेध का उल्लंघन किया और मकई छीलकर उन्होंने भूसी निकालने के विरुद्ध निषेध का उल्लंघन किया। इन रब्बियों ने सब्त के प्रतिबन्ध कई गुना बढ़ा दिए और अंत में असाधारण हद तक चले गए। जब यीशु ने इस तरह की सभी बकवास को कूड़े के ढेर में फेंक दिया, तो इससे उसने फरीसियों के क्रोध को अपने लिए आमंत्रित कर दिया।

मानवीय राय पर आधारित पूरी व्यवस्था मौखिक व्यवस्था के रूप में जानी गई और फरीसियों ने इसे शास्त्रों से कहीं अधिक महत्व दिया। "बाप-दादों" की परंपराओं और शिक्षाओं के लिए इसी तरह का सम्मान कलीसिया में भी पाया गया है। रोमन कैथोलिक चर्च अपनी परंपरा को शास्त्र के बराबर मानता है और ऐतिहासिक रूप से दावा करता रहा है कि बाप-दादों की सर्वसम्मति के बिना कोई भी शास्त्र की व्याख्या नहीं कर सकता। सर्वसम्मति जैसी कोई चीज़ नहीं है, लेकिन मिथक का इस्तेमाल सदियों तक बाइबल को आम लोगों के हाथों से दूर रखने के लिए किया गया।

प्रभु ने फरीसियों की न केवल उनके कटु व्यवहार के लिए बल्कि उनकी कठोरता के लिए भी फटकार लगाई। जो कोई भी उनके शास्त्रों के संचालन को चुनौती देने का साहस करता, उसे बहिष्कृत कर दिया जाता था (यूहन्ना 9:22, 26-38)। फरीसी मसीह के खुले शत्रु बन गए क्योंकि उसने उनके सब्त के नियमों का उल्लंघन किया और साथ ही उसने बड़ी सहजता से सत्य की उनकी पारंपरिक व्याख्याओं को चकनाचूर कर दिया।

फरीसी मसीह के समय के अलगाववादी, कट्टरपंथी और परंपरावादी लोग थे। वे अपने विचारों में काफ़ी कठोर थे और अपनी मांग में सख्त थे कि धर्म के सभी बाहरी दिखावे का पालन किया जाना चाहिए। यीशु ने उन्हें "चूना फिरी हुई कब्रों के समान” कहा “जो...भीतर मुर्दों की हिड्डयों से भरी हैं" (मत्ती 23:27)। फरीसियों का खमीर यह गलत विचार था कि ईश्वरीय सत्य पर उनका किसी तरह का एकाधिकार था और जो कोई भी परमेश्वर को जानना चाहता है, उसे उनके द्वारा ही उसके पास आना होगा।

फरीसियों ने पवित्रग्रंथ में कुछ जोड़ा; जबकि सदूकियों ने उसमें से कुछ घटाया। सदूकियों की गिनती बहुत अधिक नहीं थी, लेकिन उन्होंने राष्ट्र के भीतर एक शक्तिशाली कुलीन समूह का गठन कर लिया। उनका खमीर संशयवाद की बात करता था। सदूकी अपने समय के अज्ञेयवादी, मानवतावादी और धार्मिक

उदारवादी थे। उन्होंने स्वर्गदूतों के अस्तित्व, या किसी भी तरह की आत्मा के अस्तित्व और मृतकों के पुनरुत्थान से साफ़ इनकार किया।

आज हमारे पास कलीसिया में सदूकियों का खमीर मौजूद है। उदारवादी लोग मसीही होने का दिखावा करते हैं, जबकि वे पवित्रशास्त्र की अचूकता, मसीह का कुंवारी जन्म, उसके चमत्कार, उसकी प्रायश्चितीय मृत्यु, उसके शारीरिक पुनरुत्थान, उसके स्वर्गारोहण और उसके वास्तविक रूप से फिर से आने जैसी चमत्कारी और अलौकिक अनिवार्यताओं को सिरे से नकारते हैं।

हेरोदेस का खमीर निरपेक्षता की बात करता था। हेरोदेस अन्तिपास एक अनैतिक और सिद्धांतहीन व्यक्ति था जिसने अपने भाई की पत्नी को फुसलाया और उसे शादी के लिए राजी कर लिया। वह इतना क्रूर और चालाक था कि यीशु ने उसे "लोमड़ी" कहा (लूका 13:32)। हेरोदेस ने यूहन्ना बपतिस्मादाता को गिरफ्तार कर लिया क्योंकि यूहन्ना ने उसके व्यभिचार के लिए सार्वजनिक रूप से उसको फटकार लगाई थी। बाद में हेरोदेस ने यूहन्ना की हत्या कर दी, और जब हेरोदेस (जो एक अंधविश्वासी व्यक्ति था) ने यीशु के चमत्कारों के बारे में सुना, तो उसने सोचा कि यीशु मृतकों में से जी उठा यूहन्ना बपतिस्मादाता हैं। विवेक ने हेरोदेस को कायर बना दिया था। जब यीशु ने उसके लिए चमत्कार करने या उससे बात करने से भी इनकार कर दिया, तो उसने उसके दावे का सार्वजनिक रूप से मजाक उड़ाया।

लेकिन हेरोदेस एक सम्राट था। वह रोम का प्रतिनिधित्व करता था। वह शाही शक्ति का प्रतीक था। हेरोदिया के नाम से जाने जाने वाले इस्राएलियों के एक दल का मानना था कि अपने धार्मिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उसके और उस सामर्थ्यशाली सांसारिक प्रतिष्ठान के द्वारा काम करना सबसे अच्छा तरीका था। इस दल की स्थापना संभवतः कुख्यात हेरोदेस महान के शासनकाल के दौरान ही हुई थी। जैसा कि किसी ने कहा, हेरोदिया एक धार्मिक दल से कहीं अधिक और एक राजनीतिक दल से थोड़ा कम थे।

हेरोदियों की तरह ही धर्मनिरपेक्षता लंबे समय से कलीसिया के साथ ही बनी हुई है। कॉन्स्टेंटाइन ने कलीसिया को सिंहासन की इच्छा करके दुनिया में आगे बढ़ना सिखाया। मसीहत में धर्मनिरपेक्षता का सर्वोच्च अवतार रोमी कैथोलिक चर्च है, लेकिन धर्मनिरपेक्षता के अनुयायी हर जगह पाए जा सकते हैं, यहाँ तक कि पवित्रशास्त्रीय मंडलियों में भी। लेकिन परमेश्वर ने हमें यह नहीं कहा कि हम जो चाहते हैं उसे पाने के लिए राजनीतिक व्यवस्था का इस्तेमाल करें, भले ही हम जो चाहते हैं वह समाज के साथ-साथ कलीसिया के लिए भी सही और अच्छा क्यों न लगता हो। परमेश्वर ने हमें आत्मिक हथियारों का इस्तेमाल करने के लिए कहा है, जिसके बारे में वह कहता है कि वे "गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं" (2 कुरिन्थियों 10:4)।

इसलिए पवित्रशास्त्र में खमीर का उपयोग सांसारिक दर्शन और सिद्धांतों के प्रतीक के रूप में किया जाता है जो मसीह के शुद्ध सिद्धांत को भ्रष्ट करते हैं। खमीर का उपयोग बुराई से भ्रष्ट व्यवहार के प्रतीक के रूप में भी किया जाता है।

b. बुराई से दूषित आचरण

पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया में इस खमीर को काम करते देखा। उस संगति में एक व्यक्ति घोर नैतिक पाप का दोषी था। पौलुस ने दूसरों से कहा कि उस व्यक्ति को संगति से निकाल दें, इससे पहले कि पूरी

कलीसिया उसकी दुष्टता से दूषित न हो जाए। प्रेरित ने लिखा, "पुराना खमीर निकाल कर, अपने आप को शुद्ध करो: कि नया गूंधा हुआ आटा बन जाओ; ताकि तुम अखमीरी हो, क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है। सो आओ हम उत्सव में आनन्द मनावें, न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से" (1 कुरिन्थियों 5:7-8)। पौलुस ने बुराई के द्वारा व्यवहार के दूषित होने के खतरे को पहचाना।

(b) स्त्री का कार्य

खमीर की क्रिया, सत्य और गवाही को दुष्टता के द्वारा भ्रष्ट करना, यह सब प्रभु ने पहले से ही देख लिया था। वह यह भी जानता था कि खमीर आटे में कैसे जाएगा। यह एक स्त्री के कर्म से हुआ था। उसने कहा, "स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया।" प्रभु किसी वास्तविक स्त्री की बात नहीं कर रहा था। दृष्टांत में बताई गयी स्त्री एक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती है।

नये नियम में तीन रहस्यमयी स्त्रियाँ दिखाई देती हैं। एक गलातियों 4:25 में वर्णित सांसारिक यरूशलेम है। वह खमीर के दृष्टांत में वर्णित स्त्री नहीं है, क्योंकि दृष्टांत में वर्णित स्त्री ने गुप्त रूप से कार्य किया, और सांसारिक यरूशलेम ने मसीह के प्रति अपने विरोध को गुप्त नहीं रखा। न ही उसने मसीह के सत्य में त्रुटि लाने का प्रयास किया; उसने इसे तत्काल अस्वीकार कर दिया।

दूसरी रहस्यमयी स्त्री गलातियों 4:26 और प्रकाशितवाक्य 21:2 की स्वर्गीय यरूशलेम है। चूँकि उसे "पवित्र नगर" कहा गया है, इसलिए वह दृष्टांत में बताई गई स्त्री के समान नहीं हो सकती। इसके अलावा स्वर्गीय यरूशलेम का इस युग से कोई लेना-देना नहीं है।

तीसरी रहस्यमयी स्त्री बेबीलोन है (प्रकाशितवाक्य 17:5) - यह फ़रात नदी पर स्थित बेबीलोन का वास्तविक शहर नहीं है, बल्कि रोम में स्थित एक रहस्यमयी धार्मिक व्यवस्था है (प्रकाशितवाक्य 17:9,18)। यह वह स्त्री है जिसने आटे में खमीर मिला दिया। वह प्राचीन बेबीलोन व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती है जिसने अंततः कलीसिया पर कब्ज़ा कर लिया, इसे ईसाईयत (ईसाई धर्म) में बदल डाला, और हर जगह उसने अपना खमीर भर दिया।

जब भी हम पवित्रशास्त्र में पढ़ते हैं कि कोई स्त्री नेतृत्व करती है और धार्मिक भूमिका निभाती है, तो यह लगभग हमेशा एक बुरे तरीके से होता है। खमीर के दृष्टांत में स्त्री ने मसीह की शिक्षा के शुद्ध भोजन में अपने भ्रष्ट सिद्धांतों को गुप्त रूप से पेश किया। फिर वह वापस बैठ गई और उसे काम करते हुए देखा। किसी ने विरोध नहीं किया; लोगों ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि क्या हो रहा था। इसके अलावा, लोकप्रिय विचार यह था कि खमीर रोटी में होना एक अच्छी चीज है। इसी तरह भ्रष्ट सिद्धांतों ने ईसाईयत (मसीहियत) पर धूर्तता से कब्ज़ा कर लिया है, जिसपर लगभग किसी का ध्यान नहीं गया और कई नवीन लेकिन बुरे विचारों को सुधार के रूप में लोकप्रिय रूप से स्वीकार किया गया है।

आमतौर पर आटे में खमीर को डालना आवश्यक माना जाता है। जब खमीर को भोजन में मिलाया जाता है, तो परिणाम स्वादिष्ट होता है। आटे में खुद का स्वाद कम होता है, लेकिन जब खमीर को मिलाया जाता है, तो आटा हल्का और स्वादिष्ट बन जाता है। हालाँकि, मसीहत को कभी भी शरीर को प्रसन्न करने के

लिए नहीं तैयार किया गया था, ठीक जैसे कि फसह के दिन अखमीरी रोटी को भी स्वादिष्ट बनाने के लिए तैयार नहीं किया गया था। इसके विपरीत, परमेश्वर ने उस रोटी को "दुख की रोटी" कहा (व्यवस्थाविवरण 16:3)।

सुसमाचार कुछ और नहीं, बल्कि शारीरिक मनुष्य को उद्धार की ओर आकर्षित करता हैं, भले ही यह हमें एक प्रेममय परमेश्वर द्वारा दिया गया हो। यह इस दावे से शुरू होता है कि लोग अपने पापों में खो गए हैं और वे नरक में स्थायी दंड की ओर बढ़ रहे हैं। सुसमाचार लोगों को यह बताते हुए आगे जारी रहता है कि उनकी अपनी धार्मिकता और कल्पित अच्छे कार्य परमेश्वर की दृष्टि में मैले चिथड़ों के समान हैं। यह पुष्टि करता है कि खोए हुए लोग परमेश्वर को नैतिक या आत्मिक रूप से स्वीकार्य कुछ भी करने में पूरी तरह से असमर्थ हैं। सुसमाचार पाप से मुड़कर व्यक्तिगत मन-फिराव पर जोर देता है। यह लोगों को बताता है कि उन्हें सुसमाचार पर विश्वास करना चाहिए, विश्वास से मसीह को स्वीकार करना चाहिए, और स्वर्ग की ओर से फिर से नया जन्म लेना चाहिए। एक बार जब वे नया जन्म ले लेते हैं, तो उन्हें शरीर के कर्मों को त्यागना होगा और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में पवित्र जीवन जीना चाहिए।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि सुसमाचार खोए हुए लोगों को अप्रिय लगता है! इस प्रतिनिधि करती स्त्री ने जो किया है वह पुराने बेबीलोन के विचारों को पेश करके इसे और अधिक उपभोज्य बना दिया है जो शारीरिक मनुष्य के धार्मिक पक्ष को आकर्षित करते हैं। उसके सिद्धांत विश्वास को भ्रष्ट करने वाले हैं, लेकिन वे निश्चित रूप से अधिक आत्मीय प्रतीत होते हैं।

(2) वचन (13:34-35)

सार्वजनिक रूप से कहे गए दृष्टांतों को सुनने वाले लोग पूरी तरह से आश्चर्यचकित रह गए होंगे। स्वर्गीय अर्थ वाली ये सांसारिक कहानियाँ उनकी समझ से बिल्कुल परे थीं। कहानियाँ समझने में तो आसान थीं, लेकिन उनमें मौजूद अर्थ को भीड़ समझ नहीं पाई। चेले स्वयं भी हैरान थे, इसलिए प्रभु उन्हें उस घर में ले गया जहाँ वे ठहरे हुए थे ताकि एक और कहानी के अर्थ और कुछ और दृष्टांत निजी तौर पर उन्हें बताएं।

मत्ती ने इस बात की ओर ध्यान खींचा कि भजनकार ने भविष्यद्वाणी की थी कि प्रभु दृष्टांतों में शिक्षा देगा। प्रेरित ने भजन 78:2 का हवाला देते हुए कहा: "मैं अपना मुँह नीतिवचन कहने के लिये खोलूंगा; मैं प्राचीन काल की गुप्त बातें कहूँगा" (मत्ती 13:35)। ध्यान दें कि पवित्र आत्मा ने उस पद के शब्दों को बदलने के लिए अपने ईश्वरीय विशेषाधिकार का प्रयोग किया: उसने "प्राचीन काल की गुप्त बातें" को "उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रही हैं" में बदल दिया। चुने हुए लोगों की जिद्दी कठोरता, अंधापन और अविश्वास को परमेश्वर ने शुरू से ही जान लिया था, लेकिन कलीसिया और मसीह के क्रूस, उसकी कलीसिया और उसके फिर से आने के भेदों को प्रकट करने के लिए इसे तत्काल खारिज कर दिया गया है।

ख. निजी तौर पर कहे गए दृष्टांत (13:36-52)

1. एक स्पष्टीकरण (13:36-43)

क. स्थान (13:36)

खमीर का दृष्टांत भीड़ को बताने के बाद, यीशु ने लोगों को विदा किया और पतरस के घर की ओर चल पड़े। चेले, जो अभी तक मसीह की शिक्षा के नए तरीके से बहुत दुविधा में थे और अभी भी प्रत्येक दृष्टांत में छिपे भेद को समझने में असमर्थ थे, इसलिए उन्होंने गेहूँ और जंगली पौधे की कहानी का अर्थ पूछा। हम आभारी हो सकते हैं कि उन्होंने पूछा, क्योंकि हम प्रभु के स्पष्टीकरण से सीखते हैं कि जंगली पौधों के दृष्टांत में के बीज और बोने वाले के दृष्टांत में के बीज एक दूसरे से काफी अलग है। हमें हमेशा यह ध्यान में रखना चाहिए कि बाइबल के प्रतीकों का एक से अधिक अर्थ हो सकता है।[11]

ख. दृष्टान्त (13:37-43)

(1) तथ्य (13:37-38)

(a) बीज बोनेवाला (13:37)

जंगली बीज के दृष्टांत में बोने वाले की पहचान के बारे में कोई सवाल नहीं है। वह "मनुष्य का पुत्र" है। बोने वाला पृथ्वी के अपने संबंध में प्रभु है। वह परमेश्वर का "दूसरा मनुष्य" (1 कुरिन्थियों 15:47) अर्थात् प्रभु यीशु है, जो यहाँ पृथ्वी पर रहा है और परमेश्वर के लिए आदम के खोए हुए क्षेत्र का दावा करने के लिए वापस आ रहा है।

(b) भूमि (13:38a)

मत्ती 13:24 में, जहाँ दृष्टांत स्वयं शुरू होता है, हम पढ़ते हैं, "स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया।" कुछ लोग मानते हैं कि खेत कलीसिया का प्रतीक है। अन्य लोग सोचते हैं कि खेत धार्मिक जगत है। लेकिन प्रभु ने 13:38 में कहा, "खेत संसार [कोस्मोस] है।" वह सृष्टि की हुई दुनिया, अर्थात इस ग्रह पृथ्वी का उल्लेख कर रहा था। प्रभु ने यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया और पृथ्वी के सबसे दूर के हिस्सों (प्रेरितों 1:8) पर नज़र डाली और खोए हुए लोगों की विस्तृत दुनिया को देखा। उसने सभी स्थानों को देखा जहाँ मनुष्य रहते हैं और इस संसार को जंगली दाने के दृष्टांत की पृष्ठभूमि बनाया।

(c) बीज (13:38b)

बोने वाले के दृष्टांत में बीज सुसमाचार है; पवित्र शास्त्र मनुष्यों के हृदय में बोया जाता है। जंगली पोधों में, पुत्र संसार में बोए जाते हैं। प्रभु ने स्वयं प्रतीकों में इस परिवर्तन का संकेत दिया।

जंगली बीज के दृष्टांत में दो प्रकार के बीज होते हैं: "अच्छा बीज" और "जंगली बीज।" बोने के दो प्रकार हैं: ईश्वरीय बोना और शैतानी बोना। प्रभु यीशु के अनुसार, "अच्छे बीज राज्य की संतान हैं," और "जंगली बीज दुष्ट की संतान हैं।"

अच्छे बीज और "गेहूँ" (13:25) इस जंगली बीज के दृष्टांत में एक ही चीज़ के प्रतीक हैं। ऐसा लगता है कि गेहूँ को सृष्टिकर्ता ने इस युग में संसार में परमेश्वर के लोगों को चित्रित करने के लिए तैयार किया है। इस्राएल का प्रतीक एक पेड़ है - उदाहरण के लिए एक अंजीर का पेड़ या एक जैतून का पेड़ या एक दाखलता। चूँकि एक पेड़ अपनी जड़ें धरती में गहराई तक जमा लेता है, इसलिए यह परमेश्वर के सांसारिक लोगों इस्राएल के लिए एक उपयुक्त प्रतीक है। इस्राएल के वादे और उनकी उम्मीदें अक्सर सांसारिक होती हैं। इसके विपरीत जानबूझकर, कलीसिया का प्रतीक गेहूँ है। गेहूँ एक कठोर वार्षिक फसल है जिसकी जड़ें

उथली होती हैं जो भूमि में गहराई तक नहीं जाती हैं। गेहूँ इस संसार से गहराई से जुड़ा हुआ नहीं है। इसकी नियति नियमित कटाई के साथ इस दृश्य से तेज़ी से गुज़र जाना है।

जैसे जैसे गेहूँ ऊपर की ओर पकते जाते हैं इसके नीचे का हिस्सा मरता जाता है; जब दाना पूरी तरह से पक जाता है तब तक डंठल और जड़ मर जाते हैं। ठीक इसी तरह, मसीही विश्वासी को स्वर्ग की ओर अग्रसर होकर पकते हुए इस संसार के लिए मर जाना होता है। अन्य समानताएँ भी हैं: गेहूँ का पका हुआ खेत झुके हुए सिरों का खेत होता है। जैसे-जैसे सूरज दिन में चमकता जाता है, तो अनाज मीठा होता जाता है और किसी रहस्यमयी प्रक्रिया के द्वारा गेहूँ उस प्रकाश को अवशोषित कर लेता है।

आज दुनिया में परमेश्वर के पास उसके गेहूँ है। पिन्तेकुस्त के दिन से ही प्रभु पीढ़ी दर पीढ़ी अपने पवित्रों को संसार में बो रहा है। वे हर जगह बिखरे हुए हैं। वे जड़ पकड़ते हैं, फलते-फूलते हैं, और इस बात की सुनहरी गवाही देते हैं कि परमेश्वर काम कर रहा है। वे पूरी तरह से पकते हैं और उन्हें महिमा के घर में ले जाया जाता है। परमेश्वर अपने मजदूरों को दफनाता है और फिर आगे अपना काम जारी रखता है। यहाँ तक कि जब राज्य की संभावनाएँ निराशाजनक लगती हैं, यहाँ तक कि जब दिन अंधकारमय होते हैं और तूफानी बादल छा जाते हैं, यहाँ तक कि जब संसार का वातावरण पाप से प्रदूषित हो जाता है, तब भी परमेश्वर यह सुनिश्चित करता है कि उसका काम जारी रहे। ध्यान दें कि दृष्टांत में वर्णित शत्रु जंगली दाने तो बो सकता है, लेकिन वह गेहूँ को नहीं उखाड़ सकता।

यहाँ देखते हैं कि परमेश्वर का कार्य कैसे चलता है: उदाहरण के लिए मार्टिन लूथर ने रोमियों की पत्री को पढ़ा और उसका जीवन बदल गया। जॉन वेस्ली ने रोमियों की अपनी टिप्पणी के लिए लूथर द्वारा लिखी गई प्रस्तावना को पढ़ा और वेस्ली का जीवन बदल गया। सी.एच. स्पर्जन ने वेस्ली द्वारा स्थापित एक समूह, प्रिमिटिव मेथोडिस्ट के एक सभा में भाग लिया और स्पर्जन का मन-परिवर्तित हुआ। स्पर्जन ने बाद में हेनरी मोरहाउस नामक एक युवक के जीवन को छुआ। मोरहाउस अमेरिका आए और उन्होंने डी.एल. मूडी के उपदेश को रूपांतरित कर दिया। सी.टी. स्टड ने ब्रिटेन में मूडी की एक बैठक में भाग लिया और उसका रूपांतरण हुआ। स्टड ने फिर कॉलेज के लोगों के एक समूह पर प्रभाव डाला, जिन्हें "कैम्ब्रिज सात" के रूप में जाना जाता है और ब्रिटेन में कॉलेज परिसरों और मिशनरी क्षेत्र में उनके प्रभाव को कभी भी मापा नहीं जा सकता है। और इसी तरह यह चलता रहता है। अच्छा बीज तब बोया जाता है जब प्रभु अपने लोगों को संसार के सभी भागों में बिखेरता हैं जहाँ वे उसके लिए जीते हैं, पुनः उत्पादन करते हैं और अन्य लोगों के जीवन को छूते हैं।

(2) शत्रु (13:39a)

अन्य दृष्टांतों में बुराई की प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए, जंगली बीज के दृष्टांत में बैरी पूरी तरह से सफल प्रतीत होता है - पहली नज़र में। "शत्रु आकर गेहूँ के बीच जंगली बीज बोकर चला गया" (13:25)। जंगली बीज जाहिर तौर पर माचनी थे, एक ज़हरीली राई घास जो गेहूँ से इतनी मिलती-जुलती है कि जब दोनों बढ़ रहे होते हैं, तो करीब से जाँच करने पर भी एक दूसरे से मुश्किल से ही अंतर कर पाते हैं। हालाँकि, जैसे ही बालियाँ बनती हैं, तब एक बच्चा भी उनमें अंतर बता सकता है। प्रकृतिवादी हमें बताते हैं कि माचनी के अंदरूनी आवरण में अक्सर फफूंद की वृद्धि होती है और अगर बीज खा जाएँ, तो चक्कर आना, उल्टी होना

और यहाँ तक कि मृत्यु भी हो सकती है। अक्सर जंगली बीज और गेहूँ की जड़ें आपस में इस तरह से जुड़ी होती हैं कि झूठ को उखाड़ने का कोई भी प्रयास सच को भी उखाड़ सकता है।

दृष्टांत में हम शैतान को जानबूझकर, चुपके से प्रभु की फसल के खेत में नया जन्म न पाए हुए पुरुषों और स्त्रियों को लाते हुए देखते हैं। शैतान उन लोगों को बोता है जो सच्चे विश्वासियों से बहुत मिलते-जुलते हैं, क्योंकि वे विश्वास का दावा करते हैं। हालाँकि, वे केवल नकली मसीही होते हैं; उन्होंने कभी उद्धार नहीं पाया है। वे गाते हैं और उपदेश देते हैं और गवाही देते हैं; वे धार्मिक रूप से सक्रिय रहते हैं, लेकिन वे पवित्र आत्मा के लिए बिल्कुल अजभविष्यद्वक्ता होते हैं। वे प्रभु के बारे में बात करते हैं, लेकिन उसे नहीं जानते। वे बिना मन-फिराए और खोए हुए हैं।

यीशु ने इन लोगों को "दुष्ट की संतान" कहा (13:38) और यह कहकर उनका न्याय किया, "यह किसी बैरी का काम है" (13:28)। प्रभु अधर्मी लोगों या सामान्य रूप से उद्धार न पाए हुए कलीसिया के सदस्यों की बात नहीं कर रहा था। जिन लोगों को उसने जंगली बीज के रूप में संबोधित किया है, वे धार्मिक लोगों का एक विशेष वर्ग है, जिन्हें शैतान ने जानबूझकर परमेश्वर के सच्चे लोगों के साथ चुपचाप और चालाकी से घुलने-मिलने के लिए चुना है।

कलीसिया का इतिहास हमें पवित्र आत्मा के हर महत्वपूर्ण कार्य के साथ शैतान द्वारा धोखे के बीज बोने के कई उदाहरण देता है। प्रभु अपने लोगों को संसार में बोता है और फिर शैतान ठीक उनके पीछे आता है और अपने लोगों को बोकर चला जाता है। वे असली वस्तु की तरह ही दिखते हैं। नकली विश्वासी इतने चालाक होते हैं कि उद्धार पाए हुए लोग भी अक्सर सच्चे और झूठ के बीच अंतर नहीं कर पाते। शैतान एक धोखेबाज है।

सभी उद्धार न पाए हुए लोग "दुष्ट की संतान" नहीं होते। सभी उद्धार न पाए हुए लोग खोए हुए हैं और वे सभी दुष्टता में पड़े हैं (1 यूहन्ना 5:19), लेकिन वे सभी शैतान की संतान नहीं हैं। जंगली बीज का दृष्टांत लोगों के तीन समूहों से संबंधित है: परमेश्वर की संतान, शैतान की संतान, और खोई हुई मनुष्यजाति जिसके बीच वे बोए गए हैं।

जंगली बीज कभी भी गेहूँ नहीं बनते, न ही शैतान की संतान मसीही बनते हैं। शैतान संसार में अपने ही किस्म को बोता है, जो एक खास अर्थ में उसके स्वभाव के भागीदार बन गए हैं। सभी खोए हुए लोगों में पाप का एक स्वभाव होता है, लेकिन शैतान की संतानों में कुछ और होता है—उनमें शैतान का स्वभाव होता है। यहूदा और मसीह-विरोधी दोनों को "विनाश का पुत्र" कहा जाता है (यूहन्ना 17:12; 2 थिस्सलुनीकियों 2:3), क्योंकि दोनों ही लोग शैतानी स्वभाव के भागीदार थे। यीशु ने उस समय के धार्मिक अगुवों के लिए ही कहा था कि "तुम अपने पिता शैतान से हो" (यूहन्ना 8:44), जिन्होंने यीशु का तिरस्कार कर दिया था और उसे क्रूस पर चढ़ते देखना चाहते थे। उसने यह सबके लिए नहीं कहा था, केवल लोगों के एक विशेष समूह के लिए कहा।

इसलिए शैतान अपने संतानों को धोखा देने के लिए संसार में बोता है। जहाँ भी मनुष्य का पुत्र कुछ बोता है, शैतान भी वहीं बोता है। गेहूँ और जंगली बीज शुरू से ही संसार में थे और वे आज भी संसार में मौजूद हैं, दोनों ही कटनी तक बढ़ते रहेंगे।

यहाँ, दृष्टांत में "जब लोग सो रहे थे" तब बैरी आया और उसने अपने भयानक काम को अंजाम दिया (मत्ती 13:25)। हमें हमेशा खतरे के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता है, और शायद बेदारी के समय में जब परमेश्वर का आत्मा शानदार ढंग से काम कर रहा होता है, तो हमें और भी अधिक सजग रहने की आवश्यक है। उदाहरण के लिए शमौन जादूगर बेदारी के समय फिलिप्पुस को धोखा देने में सक्षम रहा: लोग उद्धार पा रहे थे और बपतिस्मा ले रहे थे। सामरिया शहर बेदारी की आग में जल रहा था। तब शमौन जादूगर आया, जो अपने आप को उद्धार पाया हुआ दिखा रहा था, जो बपतिस्मा लेने के लिए तैयार था, और विश्वासियों की संगति में शामिल होना चाहता था। उसने फिलिप्पुस को धोखा दिया, लेकिन पतरस ने उसे सही तरह से पहचान लिया। पतरस ने शमौन से कहा, "इस बात में न तेरा हिस्सा है, न बांटा; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं...क्योंकि मैं देखता हूँ, कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में पड़ा है" (प्रेरितों के काम 8:21-23)। इतिहासकारों का मानना है कि बाद में शमौन जादूगर एक वास्तविक धर्मत्यागी और प्रारंभिक कलीसिया का सबसे कट्टर शत्रु बन गया था।

(3) भविष्य (13:39b-c)

(a) अन्त-समय का युग (13:39b)

बैरी की पहचान करने के बाद, प्रभु ने अपने चेलों का ध्यान भविष्य की ओर आकर्षित किया। दृष्टांत में, खेत का स्वामी, जो कुछ हुआ था उससे बिल्कुल भी हैरान नहीं था, और शांत रहता है। उसे पता था कि जंगली बीज कहाँ से आए थे और कौन इसके लिए जिम्मेदार था। "दासों ने उस से कहा क्या तेरी इच्छा है, कि हम जाकर उन को बटोर लें? उस ने कहा, नहीं ऐसा, न हो कि जंगली दाने के पौधे बटोरते हुए उन के साथ गेहूँ भी उखाड़ लो" (13:28-29)। उसकी तत्काल योजना कुछ भी न करने की थी। कितना परमेश्वर की तरह और हमसे कितना अलग! प्रभु लगभग दो हज़ार वर्षों से धीरज से बाट जोह रहे हैं। वह इस ज्ञान के साथ प्रतीक्षा करता हैं कि एक बार जब वह इस शैतानी बुवाई से निपटने के लिए उठेगा, तो वह इसे हमेशा के लिए समाप्त कर देगा।

मनुष्य अपनी मूर्खता में जंगली दानों को उखाड़ने की कोशिश करते हैं, या जिन्हें वे जंगली दाना समझ बैठते हैं। सदियों से रोम की यही नीति रही है; उसने उन सभी को कुचला, सताया और जला दिया जिन्हें वह परमेश्वर के राज्य के लिए अयोग्य मानता था। प्रोटेस्टेंट कलीसिया ने, जैसे ही सक्षम हुआ, उसी तरह से प्रतिक्रिया दी। इस भयानक प्रक्रिया में परमेश्वर की कई सच्चे संतानों को पहिए से कुचला गया, कैद में प्रताड़ित किया गया और खंभे से बाँधकर जला दिया गया।

दृष्टांत में प्रभु ने ऐसी किसी भी धार्मिक-जांच के विरूद्ध चेतावनी दी। उसने अपने दासों के सुझाव को चुप करा दिया कि वे उन जंगली दानों को तुरंत जड़ से उखाड़ने की कोशिश करें। अपने दुर्लभ स्पष्ट 'ना' में से एक के साथ, उसने ऐसे प्रयासों को बिल्कुल मना कर दिया। बल्कि उसने कहा, "कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो" (13:30)। युग के अंत तक धैर्य रखना उसकी तत्काल योजना थी।

(b) अंतिम समय के प्रतिनिधि (13:39c)

प्रभु के पास एक बेहतर नज़दीकी योजना भी थी: "कटनी के समय मैं काटने वालों से कहूँगा; पहले जंगली बीज के पौधे बटोरकर जलाने के लिये उन के गट्ठे बान्ध लो, और गेहूँ को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो" (13:30)।

उसने चेलों को समझाया, " कटनी जगत का अन्त है: और काटने वाले स्वर्गदूत हैं" (13:39)। अंतिम समय की कटनी के प्रतिनिधि स्वर्गदूत होंगे।

"जगत के अंत" के रूप में अनूदित अभिव्यक्ति यहाँ काफी महत्वपूर्ण है। इसका तात्पर्य है "युग का अंत" या "वर्तमान व्यवस्था का अंत।" यह अभिव्यक्ति नये नियम में छह बार आती है (मत्ती 13:39,40,49; 24:3; 28:20; इब्रानियों 9:26)। "अंत" के रूप में अनूदित शब्द सनटेलिया है, जिसका अर्थ है "समापन समय।" यह दो युगों के मिलन को दर्शाता है, एक युग के समापन से अगले युग की शुरुआत होती है। (मत्ती 24:13-14 में एक और शब्द, टेलोस, का अनुवाद भी "अंत" के रूप में किया गया है। इसका अर्थ है "वास्तविक और अंतिम समाप्ति।")

सत्य को झूठ से अलग करने का काम हम पर नहीं छोड़ा गया है; यह स्वर्गदूतों के लिए आरक्षित किया गया है। यह कोई युग-युगांतर तक चलने वाली प्रक्रिया नहीं है; जैसे-जैसे हमारा युग समाप्त होने वाला होगा, यह तेजी से घटित होगा। हमें लोगों को नरक में भेजने का कोई अधिकार नहीं है। इस प्रक्रिया में पहल करने का सम्पूर्ण अधिकार प्रभु ने अपने पास सुरक्षित रखा है। अलौकिक प्रतिनिधि के द्वारा काम करने वाली ईश्वरीय सर्वज्ञता के अलावा कुछ भी झूठ को सत्य से उचित तरीके से अलग नहीं कर सकता।

(4) आग (13:40-42)

(a) जंगली बीजों के प्रकार (13:40)

प्रभु ने गंभीरता से आग की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया। सबसे पहले बीजों (पोधों) को बटोरा जाता है; उसके बाद जलाया जाता है। बटोरने की प्रक्रिया पहले से ही चल रही है। अविश्वासियों को विभिन्न झूठे पंथों में एक साथ इकट्ठा किया जा रहा है।

(b) यातना की सच्चाई (13:41-42)

आग और भी अधिक भयानक है। स्वर्गदूत "उन्हें आग के कुंड में डालेंगे, वहां रोना और दांत पीसना होगा" (13:42)। प्रभु ने रोने और दाँत पीसने का ज़िक्र नये नियम में सात बार किया है (मत्ती 8:12; 13:42,50; 22:13; 24:51; 25:30; लूका 13:28)। प्रत्येक घटना युग के अंत की ओर इशारा करती है।

स्वर्ग और नरक दोनों ही वास्तविकताएँ हैं। लेकिन चारों सुसमाचारों में प्रभु यीशु, जो पृथ्वी पर रहने वाला सबसे दयालु और करूणामय हैं, जो जीवित परमेश्वर का सर्वज्ञ पुत्र है, उसने स्वर्ग के बारे में जितना कहा, उससे कहीं ज़्यादा नरक के बारे में कहा। बाइबल हमें बताती है कि खोए हुए लोगों की अंतिम नियति आग का कुंड है। बार-बार पवित्रशास्त्र प्रकट करता है कि जो लोग मसीह का तिरस्कार करते हैं, उनकी अंतिम और सचेत स्थिति ऐसी पीड़ा होगी जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। हमारा मन कल्पना नहीं कर सकता कि नरक कैसा होगा। मिल्टन और डेंटे जैसे कवियों ने पीड़ा को चित्रित करने की कोशिश की है, जैसा कि अन्य कुछ कलाकारों और उपदेशकों ने किया है। लेकिन परिणाम का अधिकांश हिस्सा विचित्र और अवास्तविक है, लेकिन तथ्य यह है कि परमेश्वर का वचन बार-बार आग के बारे में चेतावनी देता है।

(5) विश्वासयोग्य (13:43)

दृष्टांत में प्रभु ने कहा कि वह काटने वालों को आदेश देगा, "गेहूँ को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो" (13:30)। दृष्टांत की व्याख्या करते हुए उसने आगे कहा, "उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य की नाईं चमकेंगे" (13:43)।

कटनी वर्तमान युग के अंत की घोषणा करेगी, जिस दौरान राज्य अपने भेद के चरण में है। गेहूँ को स्वर्ग में इकट्ठा किया जाएगा और अंतिम समय का न्याय पृथ्वी पर उंडेला जाएगा। जो पीछे छोड़ दिए जायेंगे, जो खाली खेत में बाकी रह जायेंगे, वे बेकार जंगली पोधों की गठरियाँ ठहरेंगी, जो अंतिम समय के न्याय की आग और उसके बाद आने वाली अनन्त लपटों के लिए पके हुए और तैयार होंगे।

मसीह ने जंगली बीज के दृष्टांत की व्याख्या यह कहकर समाप्त की, "जिस के सुनने के कान हों वह सुन ले" (13:43)। इस अभिव्यक्ति का तात्पर्य यह है कि बहुत से लोग जो पढ़ते हैं वे समझ नहीं पाएंगे और बहुत से लोग जो सुनते हैं वे कभी इसे गंभीरता से नहीं लेंगे। यह उसके कुछ कथनों की गंभीरता की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए कहा जाता था। इस मामले में प्रभु हमें शैतानी शिक्षकों के विरूद्ध चेतावनी देना चाहता था जो मसीही प्रचारकों और मिशनरियों के रूप में बाहरी दिखावा करते हैं। हमें इन बातों पर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए।

2. विस्तार (13:44-52)

अगले तीन दृष्टांत एक त्रिएकत्व बनाते हैं। वे 13:36 में दिए गए चार दृष्टान्तों में उनके परिचय और 13:37-43 में जंगली बीज के दृष्टांत की प्रभु द्वारा दी गई व्याख्या से अलग हैं। अब प्रभु के पास समझाने के लिए गहरे भेद थे, जो केवल चेलों के कानों के लिए रखे गए भेद थे।

ये तीन दृष्टांत एक छिपे हुए धन, एक कीमती मोती और एक बड़े जाल से संबंधित हैं। छिपे हुए धन का दृष्टांत और कीमती मोती का दृष्टांत हमें वर्तमान युग के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों की व्यापक रूपरेखा प्रदान करते हैं और इस प्रकार वे सफलता के एक नए तत्व का परिचय देते हैं; वे दिखाते हैं कि भेद के इस समय में प्रभु वास्तव में क्या कर रहा है। बड़े जाल का दृष्टांत हमें युग के अंत की ओर ले जाता है; विफलता का तत्व फिर से प्रकट होता है, लेकिन केवल यह दिखाने के लिए कि कैसे सब कुछ एक उचित निष्कर्ष तक पहुँचाया जाएगा।

त्रिएकता तीन वर्गों के लोगों के भविष्य को दर्शाती है: इब्रानी लोग, स्वर्गीय लोग और मूर्तिपूजक लोग। 1 कुरिन्थियों 10:32 में पौलुस ने उन्हें यहूदी, अन्यजाति और परमेश्वर की कलीसिया कहा है।

क. छिपे हुए धन का दृष्टांत (13:44)

(1) एक स्थान (13:44a)

इब्रानी लोगों के भविष्य को छिपे हुए धन के दृष्टांत में दर्शाया गया है। वह धन एक खेत में छिपा हुआ था। मत्ती 13 में पिछले दृष्टांतों से हम जान पाते हैं कि खेत संसार है। यही वह स्थान है जो 13:44 में क्रिया का मंच है। यह दृष्टांत हमारे इस संसार के लिए परमेश्वर के राजकीय उद्देश्यों से संबंधित है, जो पाप के कारण एक विशाल कब्रिस्तान बन गया है। परमेश्वर ने इस संसार को त्यागा नहीं है; इसके विपरीत वह अब भी इसमें एक खजाना देखता है।

यह परमेश्वर का महान भेद है, जो आंशिक रूप से पुराने नियम में प्रकट किया गया है, कि ब्रह्मांड का यह ग्रह पृथ्वी उसकी सार्वभौमिक सरकार का आसन बनेगी। बाइबल की पहले पद में एक संकेत है, जहाँ पवित्र आत्मा ने कहा, "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।" परमेश्वर का भेद हमारे सबसे प्रसिद्ध, सबसे प्रिय पद को ब्रह्मांडीय महत्व देता है, जिसकी खगोलविदों ने कल्पना भी नहीं की थी: "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा..." (यूहन्ना 3:16)। अंतरिक्ष में बहुत से अन्य बड़े ग्रह हैं और हमारे सौर मंडल में बहुत चमकीले और अधिक प्रभावशाली ग्रह भी मौजूद हैं। फिर भी इन सभी शानदार ग्रहों में से जो अंतरिक्ष में घूमता रहता हैं, नाचता हैं और भागता रहता हैं, परमेश्वर ने हमारे ग्रह पृथ्वी को हर चीज के केंद्र के रूप में चुना है।

इस ग्रह पर परमेश्वर अपनी राजकीय सत्ता प्रदर्शित करना चाहता हैं। उसका राज्य यहाँ पर जानबूझकर बनाया जाना है, जो उसकी अनंत योजना का एक हिस्सा है। इसीलिए प्रभु उन भेड़ों से कहेगा जो बकरियों से अलग किए गए हैं, "उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है" (मत्ती 25:34)। जब ग्रह की योजना बनाई गई थी, तभी राज्य की योजना भी बनाई गई थी। कोई आश्चर्य नहीं कि शैतान ने इस संसार को एक ऐसे पुरस्कार के रूप में देखा जिस पर कब्जा किया जाना था, गढ़ में रखा जाना था, और आनंद के दरबार से किसी भी घुसपैठिए के विरूद्ध हर कीमत पर इसे अपने पास बनाए रखा जाना था।

हमारे ग्रह के लिए परमेश्वर की योजनाएँ अब्राहम के दिनों से ही इस्राएल राष्ट्र में केन्द्रित रही हैं (उत्पत्ति 12:1-3)। परमेश्वर ने इस्राएल की संतानों को अपने लोगों के रूप में चुना, उन्हें उस देश में रखा जिसे वह 'अपना देश' कहने में प्रसन्न होता है (योएल 2:18), और उन्हें एक राजधानी नगर दिया जिसे वह 'राजाधिराज का नगर' कहता है (भजन 48:2; मत्ती 5:35)। थोड़े समय के लिए उस योजनाबद्ध राज्य को खुले तौर पर दिखाया गया जब परमेश्वर ने दाऊद को चुना, उसे उठाया, और उसे एक अनन्त सिंहासन पर बिठाया (2 शमूएल 7:8-17), और उसे महिमा और आदर का ताज पहनाया।

दाऊद के राज्य का प्रारंभिक वायदा तब मुर्झा गया जब दाऊद पाप में पड़ गया और उसके प्रसिद्ध बेटे सुलैमान ने अन्यजातीय विवाह और घोर मूर्तिपूजा के चलते उस सिंहासन को गिरा दिया। उसके बाद वह राज्य बिखर गया और दो प्रतिद्वंद्वी राज्य धर्मत्याग में नीचे की ओर गिरते चले गए। अश्शूरियों ने उत्तरी राज्य पर अपना कब्जा कर लिया और बेबीलोनवासियों ने दक्षिणी राज्य को खत्म कर दिया। उसके बाद राजशाही को अस्थायी रूप से अलग कर दिया गया और तत्पश्चात उस राष्ट्र को "अन्यजातियों से रौंदे जाने" के लिए नबूकदनेस्सर को सौंप दिया गया (लूका 21:24)। यीशु के आने के समय तक, रोम ने उस देश पर अधिकार प्राप्त कर लिया और उस पर शासन किया और एक एदोमी राजा दाऊद के उस सिंहासन पर बैठा। दृश्यमान राज्य का हर निशान अब लगभग लुप्त हो चुका था।

पुराने नियम का राज्य, उस अद्वैत मसीहा की राज्य की एक छायादार तस्वीर मात्र था और जब तक यीशु आया, तब तक यह परछाई भी समाप्त हो चुकी थीं। अधिकांश यहूदी ने स्वैच्छिक निर्वासन में जीवन व्यतीत किया और वे पार्थिया से लेकर स्पेन तक बिखरे हुए थे। हालाँकि, परमेश्वर के मन में, राज्य अभी भी अस्तित्व में था और मसीह के आगमन के साथ यह अपने आप में वापस आ सकता था। इस लिए यूहन्ना

बपतिस्मादाता और यीशु ने अपनी सेवकाई को इस पुकार के साथ आरंभ की, "मन फिराओ; क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है" (मत्ती 3:2; 4:17)।

पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का धन हमेशा से यहाँ था, लेकिन ज़्यादातर लोगों को इसकी भनक भी नहीं थी। यह दरअसल खेत में छिपा हुआ था। सभी सड़कें रोम की ओर जाती थीं, यरूशलेम की ओर नहीं। रोमी सेनाएँ उस वायदा किए गए देश में अपने सैनिकों के साथ कदम-ताल करती थीं। रोमी सड़कें बैतलहम, नासरत और यरूशलेम के छोटे नगरों को एलेक्जेंड्रिया, अन्ताकिया, कार्थेज, कुरिंथ, रेवेना और रोम के बड़े शहरों से जोड़ती थीं। लेकिन खजाना अभी भी सुरक्षित था। इसे केवल यीशु और उसके अग्रदूत यूहन्ना ने ही देखा था, लेकिन यह वहीं पर था।

फिर बड़ी शान्ति के साथ उस खजाने को खोल दिया गया। दृष्टांत में उस धन को खोजने वाला व्यक्ति मसीह को दिखाता है। वह सताए और कुचले यहूदियों की भूमि में आया, उस भूमि पर जहाँ उसे पता था कि खजाना छिपा हुआ है। यहूदिया वह स्थान था जहाँ परमेश्वर के राज्य की योजनाएँ केंद्रित थीं, वह स्थान जिसे यीशु द्वारा महिमा में और सबके सामने प्रकट किया जाना था। इसलिए प्रभु स्वयं एक मनुष्य बना और यहूदिया के बैतलहम से होकर इस दुनिया में प्रवेश किया। ध्यान दें कि यह एक मनुष्य था, न कि एक स्वर्गदूत, जिसने उस बड़े धन को खोज निकाला था, "उस ने उस आने वाले जगत को...स्वर्गदूतों के आधीन न किया" (इब्रानियों 2:5)।

शैतान मसीह के आगमन से बहुत घबरा गया था; वह जानता था कि यीशु उसके साम्राज्य के लिए एक खतरा है। शैतान ने उसे मार डालने की कोशिश की (मत्ती 2:16), लेकिन असफल होने पर, उसने एक अलग तरीका ढूँढ निकाला: उसने उसे एक नकली खजाना देने की पेशकश की। शैतान उसे एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया, उसे एक पल में पूरी दुनिया के सभी राज्य दिखाया, और उन सभी को उसे देने का वादा किया - लेकिन एक कीमत पर (4:8-10)। लेकिन यीशु जानता था कि यह वह खजाना नहीं था जिसे वह खोजने आया था।

(2) एक योजना (13:44b)

जैसे ही खजाना खोजा जाता है, वैसे ही उसे फिर से छिपा दिया जाता है: "स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया।" जब तक प्रभु यीशु ने यह कहानी सुनाई, तब तक वह खजाना फिर से छिपा चुका था। राज्य इस्राएल को दे दिया गया था, लेकिन चूँकि इस्राएल को राजा की कोई ज़रूरत नहीं थी, इसलिए इसे दूसरी बार फिर से छिपा दिया गया। उसके कुछ ही समय बाद यीशु यरूशलेम को देखकर उस पर रोया। और चिल्लाकर कहा, "क्या ही भला होता, कि तू; हां, तू ही, इसी दिन में कुशल की बातें जानता, परन्तु अब वे तेरी आंखों से छिप गई हैं" (लूका 19:42)। जिस क्षण से यहूदी अगुवों ने पवित्र आत्मा की निन्दा की, तब से प्रभु ने अपना दृष्टिकोण उनके प्रति बदल दिया। अपनी सेवकाई में उस महत्वपूर्ण मोड़ पर उसने खजाने को फिर से छिपा दिया।

इस प्रकार, बेबीलोन की बन्धुआई के बाद एक राष्ट्र के रूप में नया जन्म लेने वाले और मसीहा के आगमन की तैयारी के लिए वापस इकट्ठे किए गए इस्राएल को एक विशाल, लंबे और अधिक भयानक निर्वासन और बन्धुआई में छिपा दिया गया। वायदा किया गया देश, वह स्थान जहाँ खजाना स्थित था, उसे अजनबियों के उत्तराधिकारियों द्वारा एक हाथ से दूसरे हाथ में कई बार सौंपा गया। रोमी, क्रूसेडर, मुस्लिम

और ब्रिटेन के लोगों ने कुछ समय के लिए उस भूमि पर अपना कब्जा किया। लेकिन फिर, यही वह योजना थी: खजाने को आँखों से दूर छिपा दिया जाना था। राज्य का वायदा वापस लिया जाना था; सब कुछ को एक नए भेद के चरण में प्रवेश करना था; और इस्राएल को, जो उस भूमि के संरक्षक थे जहाँ वह धन छिपा था, फिर से राष्ट्रों के बीच बिखेर देना था।

(3) एक मूल्य (13:44c)

निराश होने की बजाय, प्रभु को ठीक-ठीक पता था कि वह क्या करेगा। "उसने [उस धन को] छिपा दिया, और मारे आनन्द के जाकर और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया॥"

"आनन्द" शब्द पर ज़रा ध्यान दीजिये। सुसमाचारों में केवल एक ही अवसर पर प्रभु के आनन्दित होने की बात कही गई है। यह तब हुआ था जब सत्तर चेले इस्राएल के शहरों में राज्य के खजाने के नमूने के साथ भेजे जाने के बाद वापस लौटे - चमत्कारों के नमूने और यीशु द्वारा लोगों को दिए गए संदेशों के नमूने। वे सत्तर चेले विजयी होकर लौटे थे, रोमांचित थे कि उनके सामने दुष्टात्माओं, बीमारियों और यहाँ तक कि मृत्यु को भी हरा दिया गया था। "उसी घड़ी वह पवित्र आत्मा में होकर आनन्द से भर गया, और कहा; हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रकट किया" (लूका 10:21)। इब्रानियों के लेखक ने अपने यहूदी पाठकों से कहा कि यह "उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्ज़ा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा" (इब्रानियों 12:2)।

दृष्टांत हमें सिखाता है कि उसने उस ख़ज़ाने को ढूँढ निकाला और उसे आनंद से फिर से छिपा दिया क्योंकि वह जानता था कि यह केवल कुछ समय की बात ही है जब पूरा खेत और उसमें मौजूद पूरा ख़ज़ाना उसका हो जाएगा। प्रभु ने केवल अपनी योजनाओं को थोड़ा विस्तृत किया। जल्द ही न केवल इस्राएल बल्कि पूरा जगत आशीष पाएगा।

मत्ती 13:44 में जाने, बेचने और खरीदने के विषय में बताया गया है। पद का तात्पर्य है कि जो मनुष्य उस खजाने को पाता है वह वापस "जाता है।" याद रखें, प्रभु यीशु घर से दूर था। यह दुनिया मनुष्य का प्राकृतिक घर है, उसका नहीं। उसका घर तो स्वर्ग है। जिस पल से यहूदी अगुवों ने पवित्र आत्मा की निंदा की, तब से प्रभु ने अपने घर वापस जाने का मन बना लिया। उस क्षण से, परमेश्वर की राजकीय सत्ता और उसके राज्य के उद्देश्य का खजाना फिर से छिपा दिया गया और मसीह के दूसरे आगमन तक उसे खोजा नहीं जा सकता है। उस पल से लेकर आगे को प्रभु यीशु ने भेदों में शिक्षा देना शुरू किया।

इसके बाद हम उसे अपने पैरों को पीछे खींचते हुए, स्वर्ग में अपने पिता के घर की ओर वापस जाते हुए देखते हैं। अंत में हम उसे जैतून के पहाड़ से उतरते और महिमा में वापस आते हुए देखते हैं। खजाना अभी भी उसी खेत में है, क्योंकि राजा के बिना कोई दृश्यमान राज्य नहीं हो सकता। जब प्रभु अपने चेलों को यह कहानी सुना रहा था, तब भी उसके कदम घर की ओर जा रहे थे।

वापस जाना था और बेचना भी था। दृष्टांत में प्रभु "अपना सब कुछ बेच दिया" - और उसके पास बहुत कुछ था। पौलुस ने हमें बताया कि "वह धनी था" और उसने अपना सब कुछ दे दिया (2 कुरिन्थियों 8:9)। विचार कीजिये कि इस राजकीय खजाना का खोजी कौन था। जन्म से वह अब्राहम के वंश का था और इसलिए

भूमि उसकी स्वयं की थी। जन्म से वह दाऊद का वंश का था, इसलिए सिंहासन उसका था। वह जो कुछ भी अपने लिए दावा कर सकता था, उसने स्वेच्छा से उस बड़े उद्देश्य के लिए त्याग दिया जो अब उसके मन में था, कि वह पूरी भूमि खरीद लेगा और इस तरह अपनी खरीद के द्वारा पूरा खजाना ही सुरक्षित कर लेगा।

रूत की पुस्तक में हम खरीददारी की एक उल्लेखनीय झलक को देखते हैं, जहाँ हम पढ़ते हैं कि बोअज़ ने रूत रूपी व्यक्ति और उसकी संपत्ति को खरीदा। पहली बार जब हम बोअज़ से मिलते हैं, तो हमें बताया जाता है कि वह एक "बड़ा धनी" व्यक्ति था (रूत 2:1)। हमें यह नहीं बताया गया है कि उसे कितना मूल्य चुकाना पड़ा, लेकिन पवित्र आत्मा द्वारा दी गई यह टिप्पणी कि वह बड़ा धनवान था, यह दर्शाता है कि उसके छुटकारे के कार्य का मूल्य काफी महंगा था। उसे धनी होने की आवश्यकता थी।

दृष्टांत में 'मोल' लिए जाने पर जोर दिया गया है। प्रभु ने "अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया" यीशु ने उस खेत को खरीदा जिसमें परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों का खजाना छिपा था, खासकर जब वे इस्राएल राष्ट्र से संबंधित थे।

सृष्टि के निर्माण के अधिकार के द्वारा पूरा संसार उसका ही था, क्योंकि उसने ही हर एक लकड़ी और पत्थर, हर चट्टान और समुंद्र बनाया था। पर अब संसार कलवरी के अधिकार के द्वारा उसका है; उसने अपने लहू से इस ग्रह को खरीदा है। क्या कभी किसी अचल संपत्ति के लिए इतनी बड़ी कीमत चुकाई गई थी? उसने इसे पवित्र आत्मा द्वारा कहे गए "बहुमूल्य लहू" (1 पतरस 1:19) से खरीदा है। इस प्रकार हम यूग के अंत में उन सात मुहरों वाली पुस्तक को खोलने में मसीह को सबसे आगे खड़े हुए पाते हैं, जब अन्य सभी आवाज़ें मौन या कराहने में सिमट जाती हैं, जिसमें पृथ्वी की विरासत का उल्लेख था (प्रकाशितवाक्य 5:6-7)। एक दिन वह विजय के अधिकार के साथ इस पृथ्वी को अपना बनाने के लिए वापस आ रहा है।

कलवरी और विजय के बीच का समय प्रतीक्षा का समय है। हम उस समय में रह रहे हैं, भेद का वह दौर जब राज्य संसार के सामने प्रकट नहीं किया गया है। लेकिन बदलाव के संकेत हैं। यहूदी अपनी भूमि पर वापस जा रहे हैं और संसार का ध्यान उस महत्वपूर्ण स्थान पर है जहाँ खजाना छिपा हुआ है। खेत का स्वामी अभी भी दूर है, लेकिन वह जल्द वापस आ रहा है। इस्राएल को वापस भूमि पर पहुँचना चाहिए, और जब वह वापस आए तो खजाने को प्रकट करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

राजा के बिना राज्य को स्थापित करने के सभी प्रयास विफल होने अनिवार्य हैं। साम्राज्यवाद, साम्यवाद, संसार को मसीही बनाने के प्रयास सभी विफल हो जाएंगे। खजाना यहीं इस संसार में है, लेकिन केवल स्वामी ही इसे खोज सकता है। यह वह तब करेगा जब वह अपनी खरीदी हुई संपत्ति का दावा करने के लिए वापस आएगा और पृथ्वी पर प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के राज्य की स्थापना करेगा।

ख. बहुमूल्य मोती का दृष्टान्त (13:45-46)

जबकि छिपे हुए खजाने का दृष्टांत इब्रानी लोगों के भविष्य को दर्शाता है, वहीं त्रिएकत्व में दूसरा दृष्टांत - बहुमूल्य मोती की कहानी - स्वर्गीय लोगों के भविष्य को दर्शाता है। खजाने का संबंध इस्राएल से है; तो मोती का संबंध कलीसिया से है। पूरी बाइबल में पृथ्वी इस्राएल के लिए एक सुसंगत प्रतीक है, और समुद्र अन्यजातियों के लिए समान रूप से एक समान आकृति है। इस प्रकार खजाना एक खेत में छिपा हुआ था,

जबकि मोती समुद्र में गड़ा हुआ था। युग के अंत में दो जानवर निकलते हैं, एक समुद्र से अंतिम कैसर के रूप में, और एक अन्य पृथ्वी पर एक बड़ा धोखेबाज होने के लिए, विशेष रूप से इब्रानी लोगों के लिए (प्रकाशितवाक्य 13)।

खजाना परमेश्वर के सांसारिक लोगों और पृथ्वी पर उसके संप्रभु उद्देश्यों से संबंधित है। वहीं मोती उसके स्वर्गीय लोगों और पृथ्वी पर उसके उद्धार के उद्देश्यों से संबंधित है। पवित्रशास्त्र में मोती की अंतिम झलक इस व्याख्या की पुष्टि करती है, क्योंकि प्रकाशितवाक्य 21:21 में हम मोती को स्वर्गीय यरूशलेम, ईश्वरीय शहर के साथ हमेशा के लिए जुड़ा हुआ देखते हैं। सहस्राब्दी शासन के दौरान दो यरूशलेम होंगे। सांसारिक यरूशलेम, जो मसीह के विश्व साम्राज्य की राजधानी, इब्रानी लोगों का आनंद और गौरव बनेगा (भजन 87:3-5)। और दूसरा स्वर्गीय यरूशलेम, छुड़ाए गए लोगों का अद्भुत अनंत घर जो आकाश में हीरे की तरह चमकेगा (प्रकाशितवाक्य 21:1-22:5)।

इसलिए छिपे हुए खज़ाने का दृष्टांत इस्राएल और पृथ्वी पर राज्य के दबे हुए खज़ाने को बाहर निकालने की परमेश्वर की गुप्त योजना पर केंद्रित है। बहुमूल्य मोती का दृष्टांत कलीसिया पर केंद्रित है - इसकी उत्पत्ति, इसका मूल्य और इसकी नियति।

बहुमूल्य मोती के दृष्टांत की सबसे लोकप्रिय व्याख्या यह है कि मोती मसीह का प्रतिनिधित्व करता है। यह दृष्टिकोण दो कारणों से गलत है। सबसे पहले, यह कहानी को मत्ती 13 में अन्य रहस्यमय दृष्टांतों के साथ सामंजस्य से बाहर ले जाता है। बोने वाला, खजाने को पाने वाला व्यक्ति और मोती की तलाश करने वाला व्यापारी सभी एक ही व्यक्ति हैं। वे सभी मसीह का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि व्यापारी मसीह है, तो मोती मसीह नहीं हो सकता।

दूसरा, लोकप्रिय दृष्टिकोण इस असंभव निष्कर्ष पर ले जाता है कि पापी मसीह को पाने के लिए अपना सब कुछ त्याग देता है। ऐसा निष्कर्ष पवित्रशास्त्र की शिक्षा के साथ असंगत है। यह पापी नहीं है जो मसीह को खोजता है; यह मसीह है जो पापी को खोजता है (लूका 19:10)।

(1) महान खोज (13:45-46a)

"स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उस ने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया॥"

(a) व्यापारी क्या चाहता था (13:45)

व्यापारी "बहुमूल्य मोती" की खोज में था। उन शब्दों ने चेलों को आश्चर्यचकित कर दिया होगा क्योंकि उन दिनों यहूदी मोती को कीमती रत्न नहीं मानते थे। पुराने नियम में उनका कभी उल्लेख नहीं किया गया है। हालाँकि, अन्यजातीय लोग मोतियों को काफी अधिक महत्व देते थे और उन्हें राजाओं की संपत्ति से जोड़ते थे। मार्क एंटनी को प्रभावित करने के लिए, क्लियोपेट्रा ने अपने कानों से लगभग आधे मिलियन डॉलर की कीमत के मोतियों की एक जोड़ी निकाली, उन्हें सिरके में घोला और पी गई। यह तथ्य कि मोती अन्यजातियों का खजाना था, दृष्टांत को समझाने में मदद करता है। यहूदी अन्यजातियों को तुच्छ समझते थे और उनसे जितना संभव हो उतना कम संबंध रखना चाहते थे। लेकिन व्यापारी अन्यजातीय दुनिया में कुछ कीमती चीज़ की तलाश कर रहा था, जो पुराने नियम के मूल्यों के लिए लगभग विदेशी ही थी।

दृष्टांत कहता है कि व्यापारी अच्छे मोतियों की "खोज" कर रहा था। "खोज" शब्द का अर्थ है कि वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहा था। इसका अर्थ है एक स्थान से वास्तविक प्रस्थान और दूसरे स्थान पर आगमन। यह शब्द प्रभु यीशु को स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर उन लोगों की खोज करने को दर्शाता है जो उसकी नज़र में बहुत मूल्यवान थे और जो एक बार मिल जाने पर हमेशा के लिए उसके मुकुट की शोभा बढ़ाएँगे। अब हम जानते हैं कि वह क्या खरीदने आया था। यह उसकी कलीसिया थी।

(b) व्यापारी ने क्या पाया (13:46a)

व्यापारी को एक बहुमूल्य मोती मिला। भूवैज्ञानिक मानकों के अनुसार मोती कुछ भी नहीं है। एक साधारण सीप तीन से पांच साल में एक मोती बना सकती है, जबकि हीरे को बनाने में लाखों साल की भीषण गर्मी और दबाव की आवश्यकता होती है। एक मोती को कुचलने पर आपको सिर्फ़ चूने के चूर्ण का एक छोटा सा ढेर ही मिलेगा। अन्यजातीययों का यह खजाना कैल्शियम कार्बोनेट से बना होता है, वही पदार्थ जो हम साधारण लिखने के चॉक में पाते हैं। फिर भी आधुनिक मनुष्य, अपने सभी कौशल और प्रतिभा के बावजूद, कैल्शियम कार्बोनेट को लेकर मोती नहीं बना सकता।

मनुष्य मोती के जीवंत चमत्कार को पकड़कर कुछ नहीं कर सकता ठीक जैसे वह सूर्य की किरण को पकड़कर उसे तारे में नहीं बदल सकता। वह सीपों में चिकनी मोती की माला लगाकर कृत्रिम मोती बना सकता है, जिसे हम संवर्धित मोती कहते हैं, ताकि उसमे से नकली मोती मिल सकें। नकली मोती प्राकृतिक मोती के इतने समतुल्य होते हैं कि केवल विशेषज्ञ ही उनमें अंतर बता सकते हैं, लेकिन उनके मूल्य में कोई तुलना नहीं की जा सकती। एक असली है; तो दूसरा नकली है।

दृष्टांत में व्यापारी असली मोती की खोज में था, नकली मोती की नहीं। कलीसिया, जिसके बारे में यह कीमती मोती प्रतिनिधित्व करता है, बिल्कुल अद्वितीय है और मानवीय साधनों से इसकी नकल नहीं की जा सकती। मनुष्य ने नकली कलीसिया का निर्माण किया है; ईसाईजगत लोगों को चतुराई से धोखा देता है, लेकिन ईश्वरीय विशेषज्ञ की नज़र में इसका कोई मूल्य नहीं है। प्रभु असली चीज़ की खोज में आया था। इसका कोई आंतरिक मूल्य नहीं है - यह सिर्फ़ मानवीय कैल्शियम कार्बोनेट है, केवल धरती की धूल - लेकिन जब इसे मोती के रूप में बनाया जाता है, तो इसका मूल्य कल्पना से परे होता है।

(2) महान प्रश्न (13:46b)

एक महंगे मोती को पाने के बाद, व्यापारी को यह तय करना था कि इसकी कीमत क्या है, उसे इसके लिए कितना भुगतान करना होगा। फिर उसने "जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया।" इसी तरह प्रभु ने भी कलीसिया को मोल लिया है; उसने इसे कलवरी की कीमत पर खरीदा है।

दृष्टांत में केवल एक ही बहुमूल्य मोती है क्योंकि कलीसिया अद्वितीय है। यह मनुष्यजाति के साथ परमेश्वर के व्यवहार में एक अलग, व्यक्तिगत और अतुलनीय इकाई है। कलीसिया केवल आत्मिक इस्राएल नहीं है। कलीसिया बाकी सभी से अलग है और इसे इतना उच्च सम्मान प्राप्त है कि इस मोती के लिए स्वर्गीय व्यापारी ने अपना सब कुछ दे दिया। इसीलिए कलीसिया वह है जिसे पौलुस ने "मोल लिए हुओं की मीरास" कहा (इफिसियों 1:14)।

हमारे लिए यह समीक्षा करना सहायक होगा कि प्रकृति में मोती कैसे बनता है। यह रत्न दरअसल सीप द्वारा किसी ऐसी चीज का परिणाम है जिसने उसे चोट पहुंचाई है। कोई बाहरी चीज़ सीप में छेद कर देती है, जिसके बाद वह छोटा जीव उस जलन से राहत पाने के लिए स्राव की परत दर परत उस पर दबाता जाता है जब तक कि वह अंततः मोती में परिवर्तित नहीं हो जाता। मोती तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता जब तक कि सीप मर न जाए। दूसरे शब्दों में, मोती सीप की कब्र में पाया जाता है। यह प्रक्रिया हमें सीधे कलवरी की ओर इशारा करती है। वहाँ लोगों ने परमेश्वर के पुत्र को घायल किया और उसके देह को बुरी तरह छेदकर उसे कब्र में डाल दिया। फिर भी उस पीड़ा और मृत्यु में से, परमेश्वर ने कलीसिया का निर्माण किया है। कलीसिया कलवरी के लिए परमेश्वर का जवाब है।

बहुमूल्य मोती के बारे में अन्य तथ्य हमें कलीसिया की ओर संकेत देता हैं। मोती रेशमी सफ़ेद रंग का होता है और समय इसमें कोई जंग नहीं लगा सकता या इसे फीका नहीं कर सकता। प्रभु के दिनों में, मोती राजाओं के विशेष रत्न हुआ करते थे और सिंहासन पर जड़े होते थे। ऐसा लगता है कि मसीह के मन में यह सब था जब उसने अपने चेलों को एक रहस्यमय सत्य बताने के लिए एक मोती का चयन किया। उसने अपना हृदय एक दुर्लभ, अद्वितीय और अमूल्य मोती पर लगा दिया था। उसने कीमत गिन ली थी और कीमत चुकाने को तैयार था। जल्द ही उसने इसे खरीद भी लिया। और जिस तरह सीप का मोती तूफानी समुद्र से बचाया जाता है, वैसे ही कलीसिया को अन्यजातीय संसार के अशांत समुद्र से निकाला गया। सिंहासन के लिए नियत, कलीसिया को हमेशा के लिए परमेश्वर के सर्वोच्च अनुग्रह के प्रमुख उदाहरण के रूप में प्रदर्शित किया जाएगा (इफिसियों 2:7)।

स्वर्गीय व्यापारी ने अपना सर्वस्व अर्पण करके उस मोती को खरीदा और यही बात कलीसिया को एक अकल्पनीय मूल्य प्रदान करती है। मसीह ने इसे इतना मूल्यवान समझा कि वह इसे पाने के लिए दूर से आया और इसे पाने के लिए अपना जीवन तक दे दिया।

कलीसिया एक भेद थी, एक ऐसी इकाई जिसकी कल्पना उस समय नहीं की जा सकती थी जब प्रभु ने उस कीमती मोती का दृष्टांत कहा था। यहूदी लोग कलीसिया के बारे में कुछ नहीं जानते थे क्योंकि यह पुराने नियम में प्रकट नहीं किया गया था। लेकिन इसकी सच्चाई जल्द ही चेलों के सामने प्रकट होने वाली थी (मत्ती 16:17-18; 18:15-20), लेकिन जब वे दृष्टांत सुन रहे थे, तब वे भी बाकी सभी लोगों की तरह ही इस बात से अनजान थे। कलीसिया के बारे में पूरी सच्चाई पिन्तेकुस्त के बाद ही सामने आने वाली थी। बाद में नये नियम में जो स्पष्ट किया गया था, वह सब मत्ती 13 में भेद के रूप में छिपा हुआ था। बेशक जब मत्ती ने लिखा, तब कलीसिया पृथ्वी पर अच्छी तरह से स्थापित हो चुकी थी और रोम की सेनाओं द्वारा इस्राएल राष्ट्र को भंग किया जाने वाला था।

ग. बड़े जाल का दृष्टांत (13:47-50)

इस त्रित्व का अंतिम दृष्टांत, महान जाल का दृष्टांत, अन्यजातीय लोगों के भविष्य को दर्शाता है। इस दृष्टांत के चारों ओर काफी कठिनाइयाँ हैं और जब तक लोग इसे कलीसिया के अर्थ के रूप में पढ़ने पर जोर देते रहेंगे, तब तक ऐसा ही होता रहेगा। मत्ती 13 के भेद मुख्य रूप से राज्य के सत्य से संबंधित हैं, न कि कलीसियाई सत्य से। कलीसिया और राज्य के वर्तमान भेद चरण के बीच एक अनिवार्य सीमा तक जुड़ाव तो है, लेकिन दोनों एक नहीं हैं। बड़े जाल का दृष्टांत इस युग के दौरान परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों को

छूता है जिसमें हम रहते हैं, लेकिन इसका वास्तविक ध्यान उन उद्देश्यों के अंतिम समय के चरमोत्कर्ष पर निहित है।

(1) क्या पाया गया (13:47a)

दृष्टांत की शुरुआत इस प्रकार होती है, "स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के समान है, जो समुद्र में डाला गया।" यहाँ भी समुद्र अन्यजातीय जगत का प्रतीक है जिसमें सुसमाचार का जाल डाला जाता है। समुद्र में जाने के बाद, जाल पानी और ज्वार के प्रभाव में आगे-पीछे झूलता रहता है। अन्यजातियों को राज्य के लिए खोजा जा रहा है और वर्तमान युग में उन्हें कलीसिया में भी शामिल किया गया है।

लेकिन दृष्टांत का पूरा अर्थ व्यापक और अधिक सामान्य है। यह रोमियों 11 से मेल खाता है जहाँ प्राथमिक विषय कलीसिया बिल्कुल भी नहीं है, हालाँकि पृष्ठभूमि में होना इसकी आवश्यकता है। उस बहुत ही गलत समझे गए अध्याय का विषय कलीसिया नहीं है, बल्कि आशीष का क्षेत्र और यहूदी और अन्यजातियों का उस आशीष के क्षेत्र से संबंध है। रोमियों 11, बड़े जाल के दृष्टांत की तरह, अन्यजातियों को, अन्यजातियों के रूप में, राज्य और अनुग्रह में परमेश्वर के संप्रभु उद्देश्यों के दायरे में इकट्ठा करने के विषय में है। रोमियों 11:13 में पौलुस ने कहा, "मैं तुम अन्यजातियों से यह बातें कहता हूँ।"

(2) क्या पकड़ा गया (13:47b)

वह बड़ा जाल "हर प्रकार की मछिलयों को समेट लाया।" समुद्र में सभी तरह की मछलियाँ पाई जाती हैं, लगभग अनंत किस्म की - कुछ अच्छी, कुछ बुरी, कुछ उपयोगी, कुछ बेकार (लैव्यव्यवस्था 11:9-12)। मत्ती 13 के अन्य दृष्टांतों की तरह, बड़े जाल की कहानी राज्य के भेद चरण में अच्छे और बुरे के अनिवार्य मिश्रण को दर्शाती है।

हम अपनी कलीसियाओं में इस मिश्रण को देख सकते हैं, जहाँ अक्सर उद्धार पाए हुए और खोए हुए लोगों का एक मिश्रण होता है, केवल धर्मी दिखने वाले और वास्तव में नया जन्म पाए लोगों का भी एक दुखद मिश्रण होता है। संसार में परमेश्वर का कार्य सच्चे और झूठे- दोनों प्रकार के लोगों को आकर्षित करता है। यीशु के पास यहूदा था; फिलिप्पुस के पास शमौन जादूगर था। हर सुसमाचार प्रचार मिशन में सुसमाचार का जाल उन लोगों को भी आकर्षित करता है जो केवल उद्धार पाने का दावा करते हैं और उन लोगों को भी जो वास्तव में नया जन्म पाते हैं। सच्ची कलीसिया में ऐसा कोई मिश्रण नहीं होता, क्योंकि यह केवल उद्धार पाए हुए लोगों से बना है जिन्हें पवित्र आत्मा द्वारा मसीह के रहस्यमय देह में बपतिस्मा दिया गया है। लेकिन इस युग के दौरान ईसाईजगत और राज्य में एक मिश्रण पाया जाता है।

(3) क्या किया गया (13:48)

"जब [जाल] भर गया, तो उस को किनारे पर खींच लाए, और बैठकर अच्छी अच्छी तो बरतनों में इकट्ठा किया और निकम्मी, निकम्मीं फेंक दी।" न्याय का एक समय आएगा जब अच्छे को बुरे से अलग किया जाएगा। जहाँ तक कलीसिया का सवाल है, अलगाव उस समय होगा जब प्रभु "अच्छे" को इकट्ठा करेगा और "निक्कमों" को पीछे छोड़ देगा। प्रभु ने लौदीकिया की कलीसिया को चेतावनी दी, "मैं तुझे अपने मुँह से उगल दूँगा" (प्रकाशितवाक्य 3:16)। दुल्हन तो स्वर्ग में प्रभु के साथ रहने के लिए जाएगी, लेकिन धर्मत्यागी होने का दावा करने वाली कलीसिया प्रकाशितवाक्य 17 के वेश्या रूप में पीछे रह जाएगी।

हालाँकि, कलीसिया और स्वर्गारोहण, दृष्टांत के केंद्र में केवल आकस्मिक आए हैं। इसका मुख्य विषय राज्य और मसीह के पृथ्वी पर दूसरे आगमन पर अच्छे और निक्कमे का अंतिम विभाजन है। इस विभाजन का स्थान स्पष्ट रूप से प्रकट होता है, क्योंकि जाल को किनारे पर खींच लाया जाता है। जैसा कि हमने देखा है, किनारा (पृथ्वी) इस्राएल को संदर्भित करता है। योएल 3:11-13 हमें बताता है कि यह स्थान इस्राएल के देश में यहोशाफात की घाटी है।

हरमगिदोन के बाद प्रभु अन्यजातियों द्वारा उसके लोगों के साथ किए गए कार्यों के अनुसार अच्छे अन्यजातियों को बुरे अन्यजातियों से अलग कर देगा (मत्ती 25:31-46)। यह विभाजन सहस्त्राब्दी राज्य की स्थापना के लिए एक आवश्यक भूमिका है। तब परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों के भेद का चरण समाप्त हो जाएगा और राज्य सामर्थ्य और महिमा में सबके सामने प्रकट किया जाएगा।

(4) क्या सिखाया गया (13:49-50)

"जगत के अन्त में ऐसा ही होगा: स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धमिर्यों से अलग करेंगे, और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे। वहां रोना और दांत पीसना होगा।"

(a) प्रभु के दूत (13:49)

यह वर्तमान युग स्वर्गदूतों का युग नहीं है, बल्कि पवित्र आत्मा का युग है। यह सच है कि स्वर्गदूतों को पृथ्वी पर जो कुछ घटित हो रहा है उसमें गहरी हृदयचस्पी रहती है (1 पतरस 1:12), और वे परमेश्वर के लोगों के प्रति काफी सक्रिय रहते हैं (इब्रानियों 1:14), और ऐसा लगता है कि उनका कलीसिया के साथ किसी तरह का संरक्षकीय संबंध है (प्रकाशितवाक्य 2:1; 1 कुरिन्थियों 11:10)। लेकिन इसलिए कि यह मुख्य रूप से पवित्र आत्मा का युग है, इसलिए स्वर्गदूत आज भी अदृश्य और पृष्ठभूमि में ही रहते हैं।

महासंकट के युग के दौरान, स्वर्गदूत फिर से सामने लाए जाएंगे। पवित्रशास्त्र में हम इस ग्रह पर परमेश्वर के सभी निर्णयों में उनकी सक्रिय भागीदारी के बारे में पढ़ते हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में स्वर्गदूत बाईस अध्यायों में से तीन को छोड़कर सभी में दिखाई देते हैं (अध्याय 4, 6, और 13)। जिन तीन अध्यायों में स्वर्गदूत नहीं दिखाई देते हैं, उनमें से एक में एक अलग क्रम के प्राणियों (करूब, अध्याय 4) का उल्लेख है और दूसरे में स्वयं अजगर का उल्लेख है (अध्याय 13)। प्रकाशितवाक्य के कुछ अध्यायों में स्वर्गदूत कई बार दिखाई देते हैं। वे इस ग्रह पर परमेश्वर के निर्णयों को लागू करते हैं और सिंहासन के संदेशवाहकों के रूप में कार्य करते हैं। स्वर्गदूतों की गतिविधियों का नया आगाज़ "प्रधान दूत के शब्द" (1 थिस्सलुनीकियों 4:16) स्वर्गारोहण के समय के साथ आरंभ होगा।

(b) खोये हुए लोगों की पीड़ा (13:50)

सहस्त्राब्दी से पहले अच्छे और निकम्मों के अंतिम विभाजन का कार्य स्वर्गदूतों को सौंपा जाएगा। दुष्टों का उस राज्य में कोई हिस्सा नहीं होगा और उन्हें खोए हुए अनंत काल में निर्वासित कर दिया जाएगा। मसीह का सहस्त्राब्दी शासन नया जन्म पाए यहूदियों और अन्यजातियों के एक केन्द्रीय झुण्ड के साथ शुरू होगा जो प्रभु से प्रेम करते हैं।

घ. बुद्धिमान गृहस्थ का दृष्टान्त (13:51-52)

(1) सत्य को परखना चाहिए (13:51)

प्रभु अब अपने चेलों की ओर मुड़ा। उसके पास उनके लिए एक और दृष्टांत था (13:52 को देखें), जो मत्ती 13 के अधिकांश भेद-दृष्टांतों के विपरीत एक स्पष्ट और सरल दृष्टांत था। लेकिन पहले उसने पूछा, “क्या तुम ये सब बातें समझे?” “समझे” के रूप में अनुवाद किया गया शब्द सुनीमी है, जिसका प्राथमिक अर्थ है “एक साथ लाना” (जैसे दुश्मनों को युद्ध के लिए एक साथ लाना) या "एक साथ इकट्ठा करना" (जैसे किसी वस्तु की एकल विशेषताओं को एक सामूहिक संपूर्णता में एकत्र किया जाता है)। इस प्रकार सुनीमी का अर्थ है "एकत्रित करना, समझना, कल्पना करना" - अर्थात, किसी मामले में गंभीरता से व्यस्त होना, उस पर चिंतन करना, उस पर विचार करना, उसे हृदय से लगाना। यह शब्द मानसिक गतिविधि को दर्शाता है; इसका संबंध सोच-विचार करके ज्ञान को प्राप्त करने से है।

सुनीमी, गिनोस्को (“जानना”) से भिन्न है, जिसका तात्पर्य तत्काल ज्ञान से है। प्रभु को उम्मीद नहीं थी कि उसके चेलों को भेद के सभी पहलुओं की तत्काल समझ होगी। इस तरह की समझ बाद में आएगी। लेकिन उसे उम्मीद थी कि वे इस विषय पर सावधानीपूर्वक ध्यान देंगे और उन्होंने उसे आश्वस्त किया कि वे ऐसा कर रहे हैं।

मत्ती 13 में दर्ज किए गए उपदेश में एक बिल्कुल नया प्रकाशन था। यह कुछ ऐसा था जो “जगत की उत्पत्ति से गुप्त रखी है” (13:35)। मत्ती, जिसने दृष्टांतों के महत्व को पहचाना और यहूदी लोगों के लिए उनके लागू करने के कारण उन्हें एक व्यवस्थित तरीके से लिखा, उसने कहा कि मसीह ने नए प्रकाशन के द्वारा भविष्यद्वाणी को पूरा किया है। हमें नये नियम में अक्सर याद दिलाया जाता है कि कलीसिया और कलीसियाई युग को तब तक गुप्त रखा गया था जब तक कि प्रभु और उसके चेलों द्वारा इसे प्रकट नहीं किया गया (रोमियों 16:25-26; 1 कुरिन्थियों 2:7; इफिसियों 3:5-9; कुलुस्सियों 1:26)।

(2) सत्य को अवश्य प्रकट करना चाहिए (13:52)

बुद्धिमान गृहस्थ के दृष्टांत में प्रभु ने अपने चेलों को सिखाया कि उन्हें नई और पुरानी दोनों ही बातें सिखानी चाहिए। परमेश्वर ने इस्राएल से किए गए अपने सहस्राब्दी वादों को रद्द नहीं किया था; उसने उन्हें केवल स्थगित कर दिया था। वे वायदे पुराने नियम की कई भविष्यवाणियों के विषय थे और चेलों को उन्हें सिखाना था, जैसा कि पौलुस ने रोमियों 9-11 में किया था। लेकिन नए युग के लिए एक नया सत्य था। भेद-दृष्टांतों को समझकर वे सबसे अच्छी तरह समझ सकते थे कि पुराना और नया कैसे संबंधित है।

पवित्रशास्त्र के अगले अनुच्छेद की शुरुआत में हम पढ़ेंगे, “जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका” (13:53)। यह अभिव्यक्ति दर्शाती है कि मत्ती 13 के दृष्टांत एक विशेष संग्रह, एक जैविक संपूर्णता हैं। एकमात्र स्थान जहाँ एक जैसी अभिव्यक्ति का प्रयोग किया गया है वह मत्ती 19:1 है, जहाँ अध्याय 18 की शिक्षा का संदर्भ दिया गया है, जिसमें (अभी भी भविष्य में) स्थानीय कलीसिया के कार्यों पर एक व्यापक कथन शामिल है।

III. यूहन्ना की हत्या (13:53-14:36)

यूहन्ना बपतिस्मादाता और यीशु, संदेशवाहक और मसीहा, अपने युग के विवेक के साथ कदम से कदम मिलाकर चले थे। यूहन्ना की सेवकाई अचानक उसकी गिरफ़्तारी के साथ समाप्त हो गई। फिर उसकी एक

हिंसक मौत हुई, जो इस बात का संकेत था कि उसके प्रभु का आगे क्या होगा। मत्ती ने यूहन्ना की हत्या को मसीह के तिरस्कार के एक और भयानक संकेत के रूप में पेश किया। इस प्रकार मत्ती 13:53-14:36 में यीशु के प्रति प्रतिरोध अभी भी केंद्र में बना हुआ है। यूहन्ना बपतिस्मादाता की मृत्यु की गंभीर कहानी प्रभु के अपने गृहनगर में आराधनालय की यात्रा के विवरण से शुरू होती है और उसके बाद अपने चेलों और विचारहीन भीड़ के लिए प्रभु की गहरी चिंता का विवरण है जो लगातार उसके पास आती रही।

क. घर और उसके आलोचक (13:53-58)

1. घर का दृश्य (13:53-54)

क. आसपास का वातावरण (13:53-54a)

"जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका, तो वहां से चला गया" (13:53)। प्रभु ने शमौन के घर को छोड़ दिया और अपने बचपन के घर नासरत की ओर चल पड़ा। यीशु की यात्राएँ बहुत लंबी नहीं थीं। गलील की पूरी लंबाई पैंसठ मील से कम थी और इसकी सम्पूर्ण चौड़ाई केवल तैंतीस मील ही थी।

यदि यीशु न होता, तो हम नासरत के बारे में कभी नहीं सुनते। इसके महत्व की कमी कई तथ्यों द्वारा परिलक्षित होती है: (1) पुराने नियम में नासरत का उल्लेख नहीं है; (2) नासरत का उल्लेख जोसेफस ने नहीं किया था, जिसने गलील में 244 कस्बों और शहरों का नाम दिया था; (3) नासरत का उल्लेख तल्मूड में भी नहीं है।

ख. आराधनालय (13:54b-c)

हम मरकुस 6:1-6 से जानते हैं कि चेले यीशु के साथ नासरत गए और सब्त के दिन उन्होंने स्थानीय आराधनालय में जाने की अपनी सामान्य रीति का पालन किया। जब प्रभु ने गहन सार्वजनिक सेवकाई की अपनी अंतिम अवधि शुरू की, तो सबसे पहले वह नासरत और वहाँ के आराधनालय में गया।

कई वयस्क जो वर्षों से अपने गृहनगर से दूर रहे हैं और वापस मिलने गए हैं, वे पाते हैं कि चीजें उनकी यादों से छोटी और अक्सर जर्जर दिखती हैं, खासकर अगर उनके बचपन के वर्ष महत्वहीन जगहों पर बीते हों। किसी ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें जो अपनी स्थानीय कलीसिया में लौट रहा हो और अपने परिवार की उस मेज पर बैठा हो जहाँ उसकी शुरुआती आत्मिक यादें बनी थीं। बेशक वह यादों को तरोताज़ा करता है। यहीं पर पिताजी बैठते थे। यहीं पर विली ने अपने नाम का पहला अक्षर खोदकर लिखा था, और इसके लिए उसे कितनी मार पड़ी थी, लेकिन नाम के पहले अक्षर अभी भी वहाँ हैं! यहीं पर वह मंच है जहाँ उपदेशक बहुत सख्त और गंभीर होकर खड़ा होता था। यह अब उतना शानदार नहीं रहा। इसे नया करने की सख्त ज़रूरत है। यहीं पर सुमी बैठती थी। मैं हमेशा सुमी को पसंद करता था और मैं उससे शादी करना चाहता था। अब वह अपनी माँ की जीवित छवि है और उसके खुद के छह बच्चे हैं।

इस तरह प्रभु अपने घर गया और उस आराधनालय में जाता है जिसे वह बचपन से जानता था। वह वहाँ के हर पत्थर और लकड़ी को जानता था। उस आराधनालय के साथ तीस साल की यादें जुड़ी हुई थीं। यह एक छोटे से शहर में एक छोटी सी जगह थी जिसमें छोटे वर्ग के लोग रहते थे, लेकिन यीशु उनसे प्रेम करता था। इसीलिए वह उनसे मिलने वापस गया। अपने गलीली सेवकाई की शुरुआत में उसने उनके आराधनालय

में प्रचार किया था और उन्होंने उस पर पत्थरवाह करके मार डालने की कोशिश की थी (लूका 4:16-30)। लेकिन अब वह उन्हें अपना मन बदलने का अवसर देने वाला था।

प्रभु ने पुस्तक ली और सिखाया और वे आश्चर्यचकित रह गए। यह वह लड़का नहीं था जिसे वे जानते थे! यह वह व्यक्ति नहीं था जिसने उनकी मेज-कुर्सियां बनाए थे और उनके हलों की मरम्मत की थी! यह वह लड़का नहीं था जो स्थानीय रब्बी द्वारा पढ़ाए जाने वाले आराधनालय पाठशाला में गया था! उन्होंने पहले कभी उसकी जैसी शिक्षा नहीं सुनी थी। यहाँ एक ऐसा व्यक्ति था जो शास्त्रियों की तरह नहीं बल्कि अधिकार के साथ बोलता था (मत्ती 7:29 से तुलना करें)। मूसा और सभी भविष्यद्वक्ताओं से शुरू करते हुए उसने उन्हें पवित्रशास्त्र से अपने बारे में कई बातें दिखाईं (लूका 24:27 से तुलना करें)। "किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न कीं" (यूहन्ना 7:46)।

नासरत के लोगों ने कहा, "इस को यह ज्ञान और सामर्थ के काम [डुनामिस] कहां से मिले?" (मत्ती 13:54) दूसरे शब्दों में, वे पूछ रहे थे, "यीशु को यह सबकुछ कैसे पता है? उसने हमारे विश्वविद्यालयों से स्नातक नहीं किया। उसने कोई डॉक्टरेट अर्जित नहीं की है। वह कभी भी हिलेल या गमलीएल के चरणों में नहीं बैठा। उसे यह ज्ञान कहां से मिला? वह ऐसे सामर्थ्य के काम कैसे कर सकता है?" स्पष्ट रूप से प्रभु ने उनके बीच कुछ चमत्कार किए थे, हालाँकि मत्ती ने यह नहीं बताया कि वे कौन से थे।

2. द्वेषपूर्ण माहौल (13:55-58)

क. शत्रुता का कारण (13:55-57a)

(1) छोटे शहर में रहने वालों का तर्क (13:55-56a)

वहाँ के लोगों ने सोचा कि यीशु केवल बढ़ई का बेटा था। वे कितने ग़लत थे! वह बढ़ई का बेटा बिल्कुल भी नहीं था। वह मरियम का बेटा था, लेकिन बढ़ई का बेटा नहीं था। लेकिन वे उसे इसी तरह देखते थे। उन्होंने यूसुफ के बारे में सोचा, उन्होंने यीशु के बारे में सोचा, और उन्होंने सोचा कि वे दोनों एक जैसे ही हैं - प्रभु यीशु का संपूर्ण मनुष्यत्व द्वारा माने जाने वाला एक दिलचस्प पहलू।

“क्या इस की माता का नाम मरियम नहीं है?" (13:55) इस बारे में कोई बहस नहीं थी। स्थानीय लोग उसे उसी तरह जानते थे जैसे छोटे शहरों के लोग एक-दूसरे को जानते हैं। यूसुफ से उसकी जल्दबाजी में की गई शादी के बारे में कुछ साल पहले कुछ अनावश्यक गपशप हुई थी, लेकिन उसे बहुत साल पहले ही भुला दिया गया था। वह एक आदर्श पत्नी और माँ, एक अच्छी पड़ोसन और दोस्त, एक धार्मिक और उत्साही विश्वासी थी। लेकिन वह केवल मरियम थी, अर्थात् यीशु की माँ। वह और कुछ भी नहीं थी। तो फिर वह कैसे कुछ बन गया?

यूसुफ और मरियम के घर में कोई भी अन्य बच्चा सामान्य से कुछ भी अधिक नहीं था। यीशु की बहनें सिर्फ़ गाँव की लड़कियाँ थीं। हम उनके बारे में और जानना चाहेंगे। उसके भाई-याकूब, यूसुफ़, शमौन, यहूदा - भी कोई खास नहीं थे। अंत में उसने उन सभी को जीत लिया (प्रेरितों के काम 1:12-14)। याकूब और यहूदा ने ऐसी किताबें लिखीं जो नये नियम में शामिल की गईं है। बाद में याकूब यरूशलेम की कलीसिया का प्रमुख प्राचीन भी बन गया।

हमारे लिए उन भाई-बहनों की कल्पना करना मुश्किल है जो परमेश्वर के पापरहित पुत्र के समान परिवार में बड़े हुए लेकिन इस बात में अंधे थे कि वे यह नहीं देख पाए कि वह वास्तव में कौन था। वह सम्पूर्ण मानवीय स्वभाव में था। वह उनके साथ खेला, उनके साथ आराधनालय के पाठशाला में गया, उनकी देखभाल की, उनकी रक्षा की, उनकी मदद की, उनके साथ रोया, उनके साथ हँसा, उनके साथ गाया, उनके साथ प्रार्थना की, और उन सबसे बहुत प्यार भी किया। पुनरुत्थान के बाद प्रभु व्यक्तिगत रूप से याकूब के सामने प्रकट हुआ, शायद नासरत की कार्यशाला में (1 कुरिन्थियों 15:7)। चाहे कुछ भी मामला रहा हो, उसके पुनरुत्थान ने उनकी आँखों में पड़ा छिलका हटा दिया।

(2) छोटे शहर का आक्रोश (13:56b - 57a)

नासरत के निवासी यीशु से प्रभावित नहीं थे। "उन्होंने उसके कारण ठोकर खाई" (13:57)। यहाँ "ठोकर खाने" शब्द का मूल अनुवाद स्कैंडालिज़ो है, जिसका अर्थ है "अप्रसन्न होना" उन्होंने कभी भी बाइबल की ऐसी व्याख्या नहीं सुनी थी। उन्होंने कभी ऐसे आश्चर्यकर्म नहीं देखे थे। लेकिन वे इसलिए ठोकर खा गए क्योंकि वह उनके बीच ही बड़ा हुआ था और वे इतने अंधे थे कि उसकी मनुष्यत्व से परे उसके परमेश्वरत्व को वे कभी नहीं देख पाए।

ख. शत्रुता का परिणाम (13:57b-58)

प्रभु ने तब एक दुःखद टिप्पणी की, “भविष्यद्वक्ता का अपने देश और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता” (13:57)। कई लोगों ने इस टिप्पणी को सच साबित किया है। अक्सर सुसमाचार के साथ पहुँचने में सबसे कठिन लोग अपने ही परिवार और सामाजिक दायरे के सदस्य होते हैं।

प्रभु ने "वहां उन के अविश्वास के कारण बहुत सामर्थ के काम नहीं किए" (13:58)। उसने कुछ चमत्कार तो अवश्य किए, परंतु बहुत अधिक नहीं थे। नुकसान उनका ही था। अविश्वास परमेश्वर के कार्य को भी बाधित करता है।

ख. हेरोदेस और उसका विवेक (14:1-12)

1. गलत धारणा (14:1-2)

यीशु की प्रसिद्धि मैकेरस के शाही महल तक पहुँच चुकी थी। हेरोदेस अन्तिपास के पास एक से ज़्यादा शाही निवास थे, लेकिन माना जाता है कि यूहन्ना बपतिस्मादाता की कैद की जगह मैकेरस थी, जहाँ एक सीमावर्ती किले ने अरब की ओर मुख किए हुए हेरोदेस के क्षेत्र के दक्षिण-पूर्वी हिस्से को सुरक्षित कर रखा था।

किले तक पहुँचने का रास्ता मृत सागर के पूर्वी किनारे के एक पहाड़ के ऊपर से होकर सर्पिली पहाड़ियों की एक श्रृंखला से होकर जाता था। रास्ता एक गहरी घाटी से होकर जाता था जहाँ ज्वालामुखीय चट्टान में दरार के द्वारा दस गर्म झरने निकलते थे। माना जाता है कि वहाँ के झरनों में जादुई चंगाई की सामर्थ थीं, और हेरोदेस महान अपनी बीमारी से ठीक होने के लिए वहाँ गया था। पहाड़ों के बीच से तीन घंटे की पैदल यात्रा करने पर यात्री झरनों से मैकेरस पहुँचता था, जिसे अरब लोग एल मशनाका, अर्थात् "लटकती वादी" कहते हैं। निस्संदेह यह नाम हेरोदेस महान के अत्याचारों में से एक या दूसरे की याद दिलाता है।

मैकेरस का किला एलेक्जेंडर जेनियस द्वारा बनाया गया था और हेरोदेस महान द्वारा पुनर्स्थापित किया गया था, जिन्होंने किले के पीछे पहाड़ियों पर एक शहर भी बनाया था। जोसेफस ने उस प्राकृतिक स्थान को भी अभेद्य माना है, क्योंकि मैकेरस के चारों ओर मोआब के बेरंग पहाड़ थे। उसने लिखा:

अब जब यहूदियों के राजा सिकंदर ने इस स्थान की प्रकृति को देखा, तो वह पहला व्यक्ति था जिसने यहाँ एक गढ़ बनवाया, जिसे बाद में गैबिनियस ने ध्वस्त कर दिया, जब उसने एरिस्टोबुलस के विरुद्ध युद्ध किया; लेकिन जब हेरोदेस राजा बना, तो उसने इस स्थान को अत्यंत सम्मान के योग्य समझा, और चाहा कि इस पर सबसे दृढ़ तरीके से निर्माण किया जाना चाहिए, और यह विशेष रूप से इसलिए था क्योंकि यह अरब के बहुत निकट था; क्योंकि यह इस कारण से एक सुविधाजनक स्थान पर स्थित था, और उस देश की ओर इसका एक मार्ग था; इसलिए उसने भूमि के एक बड़े भाग को दीवारों और मीनारों से घेर दिया, और वहाँ एक नगर बसाया, जिस नगर से एक मार्ग था जो पहाड़ की चोटी पर स्थित गढ़ तक जाता था; बल्कि, इससे भी अधिक, उसने पहाड़ी की चोटी के चारों ओर एक दीवार बनवाई, और कोनों पर एक सौ साठ हाथ ऊँची मीनारें खड़ी कीं; जिसके मध्य में उसने एक भव्य तरीके से एक महल बनवाया, जिसमें बड़ी और सुंदर इमारतें थीं। उसने पानी के संग्रह के लिए बहुत सारे जलाशय भी बनवाए, ताकि पानी भरपूर मात्रा में हो और सभी उपयोगों के लिए तैयार हो... इस तरह उसने, मानो, उस जगह की प्रकृति के साथ संघर्ष किया, ताकि वह इसकी प्राकृतिक सामर्थ और सुरक्षा (जिसके बावजूद इसे जीतना मुश्किल था) को उन किलों से पार कर सके जो मनुष्यों द्वारा बनाए गए थे। इसके अलावा, उसने इसमें बड़ी मात्रा में तीर और युद्ध की अन्य सामग्रियाँ रखीं, और हर उस चीज़ को वहाँ पहुँचाने की कोशिश की जो किसी भी तरह से सबसे लंबी घेराबंदी के दौरान इसके निवासियों की सुरक्षा में योगदान दे सकती थी।[12]

यह किला मृत सागर से 3,800 फीट ऊपर था और इसका नज़ारा बहुत ही शानदार था। अपनी चट्टानी पहाड़ी से, सैनिक मृत सागर और घुमावदार यरदन नदी को देख सकते थे। दूर पश्चिम में, क्षितिज के किनारे, दूर की एक पहाड़ी पर, अंतहीन पहाड़ों के पार, कुछ धब्बे देखे जा सकते थे - अर्थात् जैतून पहाड़ की चोटी। दक्षिण में हेब्रोन की पहाड़ियों से घिरा निर्जन यहूदी जंगल मौजूद था। उत्तर में यरीहो की भव्य झील और यरदन घाटी की दरार थी जहाँ यूहन्ना ने बपतिस्मा दिया था।

लेकिन गढ़ के अंदर एक कुआं, एक सीमेंट का कुंड और दो कालकोठरियाँ थीं। इसी भयानक जगह के अंधियारे में यूहन्ना बपतिस्मादाता, जिसका बचपना खुली जगहों में बीता था और मसीह के इस साहसी संदेशवाहक ने अपने आखिरी दिन बिताए थे। यूहन्ना का भाग्य गढ़ के गहरे कालकोठरी में रहना था, जबकि उस व्यभिचारी हेरोदेस अन्तिपास और उसकी हत्यारी पत्नी आलीशान महल में मौज-मस्ती का मज़ा ले रहे थे। कोई आश्चर्य नहीं कि यूहन्ना ने पूछा था कि क्या उसने मसीहा की पहचान के बारे में कोई गलती तो नहीं की है।

अब यूहन्ना मर चुका था, लेकिन यीशु जीवित था, और उपदेश दे रहा था और चमत्कार कर रहा था। जब यीशु की गतिविधियों की खबर हेरोदेस अन्तिपास तक पहुंची, तो उसके पास तुरंत एक स्पष्टीकरण था: यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला मरे हुओं में से जी उठा है। इस विचार ने उसके दोषी विवेक को झकझोर दिया और रात के सन्नाटे में उसे काफ़ी परेशान किया। मत्ती ने यूहन्ना की हत्या का वर्णन करने के लिए हेरोदेस की गलत धारणा का इस्तेमाल किया।

2. दुष्ट संकल्प (14:3-12)

क. एक स्थगित किया गया अपराध (14:3-5)

हेरोदेस सांप की नस्ल का था। हेरोदेस महान काफ़ी क्रूर शासक था, लेकिन फिर भी एक चतुर राजनीतिज्ञ भी था। उसने एक-एक करके अपने सिंहासन के उत्तराधिकारी चुने गए बेटों की हत्या कर दी। यहाँ तक कि बदकिस्मत एंटीपेटर को उस दुष्ट की मृत्यु से केवल पाँच दिन पहले ही उसके बीमार पिता ने मरवा डाला था।

हेरोदेस महान की मृत्यु के बाद, उसका राज्य उसके तीन जीवित पुत्रों: अर्खिलाउस, फिलेप्पुस और अन्तिपास के बीच विभाजित हो गया। यीशु के वयस्क होने से पहले अर्खिलाउस को उसके पद से अपदस्थ कर दिया गया। उसे अपने पिता के सभी दोष विरासत में मिले लेकिन उसकी महानता का कुछ भी हिस्सा नहीं मिला। यरूशलेम की खूबसूरत क्लियोपेट्रा का बेटा फिलेप्पुस राज्य के सबसे गरीब हिस्से, गलील के उत्तर-पूर्व और दमिश्क के दक्षिण के रेगिस्तानी क्षेत्र का उत्तराधिकारी बना।

अन्तिपास, जिसे गलील और पेरिया विरासत में मिला था, वही वह हेरोदेस था जिसने यूहन्ना की हत्या की थी और यीशु का मज़ाक उड़ाया था। अन्तिपास अपने भाई अर्खिलाउस की तरह हिंसक व्यक्ति नहीं था, लेकिन वह काफी धूर्त था। अन्तिपास ने ही तिबेरियास की स्थापना की थी, जो यहूदियों द्वारा अशुद्ध माना जाने वाला शहर था क्योंकि यह आंशिक रूप से कब्रिस्तान पर बना था। (इस शहर का उल्लेख सुसमाचारों में नहीं है और ऐसा कोई रिकॉर्ड भी नहीं है कि यीशु कभी वहां गया था।)

रोम की यात्रा पर, अन्तिपास अपने सौतेले भाइयों में से एक, हेरोदेस फिलेप्पुस (फिलेप्पुस तानाशाह नहीं, बल्कि हेरोदेस महान का एक अन्य बेटा) के साथ रहा। हेरोदेस फिलेप्पुस फिलिस्तीन में हेरोदेसियन जंगल से सेवानिवृत्त हो गया था और रोम चला गया था, जहाँ वह एक धनवान नागरिक के रूप में रहता था। उसकी पत्नी हेरोदियास, जो बहुत सुंदर और महत्वाकांक्षी महिला थी, हेरोदेस महान की पोती थी। इसलिए यह विवाह सगोत्रीय था, जैसा कि हेरोदेसियन परिवार के भीतर बहुत से अन्य विवाह थे।

हेरोदियास का भाई अग्रिप्पा दरअसल कैलीगुला का करीबी दोस्त था। जब कैलीगुला सम्राट बना, तो उसने फिलेप्पुस तानाशाह द्वारा अपनी मृत्यु के बाद छोड़ी गई फिलिस्तीनी संपत्ति को खर्चीले अग्रिप्पा को दे दिया। सम्राट ने अग्रिप्पा को मुकुट पहनने और राजा कहलाने का अधिकार भी दिया। इस वरीयता ने हेरोदियास के क्रोध और ईर्ष्या को अधिक भड़का दिया।

जबकि अन्तिपास रोम में हेरोदेस फिलेप्पुस से मिलने गया, तब हेरोदियास ने उसके साथ साज़िश रची। वह बहुत पहले से ही एक धनी रोमी महिला के जीवन से थक चुकी थी, और उसने अन्तिपास में रोमांच और उन्नति के अवसर को देखा। इसलिए वह उसके साथ गलील भाग गई। अन्तिपास ने अपनी कानूनी पत्नी, पेट्रा के राजा अरेतस की बेटी को तलाक दे दिया और हेरोदियास से शादी कर ली। इस तरह अन्तिपास अब नबातियन लोगों का दुश्मन बन गया, जिसने मैकेरस के किले को पहले से कहीं ज़्यादा ज़रूरी बना दिया, और खुद को एक ऐसे विवाह में प्रवेश करने का दोषी बना लिया जो व्यभिचार और रक्त-संबंधी अपराध दोनों थे।

यूहन्ना बपतिस्मादाता ने इस पूरे मामले की निंदा की और इसके परिणामस्वरूप हेरोदियास की गहरी नफरत अर्जित की। हेरोदेस अन्तिपास ने अपनी प्रतिशोधी पत्नी के उकसावे में आकर यूहन्ना को गिरफ्तार करवा लिया और मैकेरस में कैद कर लिया। लेकिन हेरोदेस को इसमें झिझक थी। एक तरफ यूहन्ना से छुटकारा पाने के लिए हेरोदियास का उकसावा था; वहीं दूसरी तरफ यूहन्ना के व्यक्तित्व की सामर्थ थी। हेरोदेस इसलिए भी झिझक रहा था क्योंकि वह यूहन्ना को नहीं मरवाना चाहता था, क्योंकि वह अभी भी जनता के बीच काफी लोकप्रिय था।

ख. एक प्रस्तावित अपराध (14:6-8)

हेरोदियास सही समय का इंतज़ार करती रही। उसने अपने पति को मजबूर करने के लिए जो अवसर चुना वह उसका जन्मदिन था। समारोह में सलोमी ने सबके सामने नृत्य प्रस्तुत किया। हेरोदियास और उसके पूर्व पति फिलेप्पुस की बेटी सलोमी उस समय संभवतः अपनी किशोरावस्था में थी। नृत्य शायद उत्तेजक था, क्योंकि हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि हेरोदियास की बेटी शालीन और संयमित होगी। अतिथिगण, जो निस्संदेह पहले से ही शराब के नशे में थे, ने उत्साहपूर्वक प्रतिक्रिया व्यक्त की। हेरोदेस अपनी निश्चित सावधानी की सीमा से परे बह गया, उसने उसे वह सब कुछ देने का वचन दिया जो वह माँगना चाहेगी। इसके अलावा उसने एक गंभीर शपथ के साथ जल्दबाजी में किए गए वादे की पुष्टि भी की।

लड़की अपनी माँ से पूछने चली गई कि उसे क्या माँगना चाहिए। मत्ती ने कहा कि हेरोदियास ने सलोमी को "निर्देश" (प्रोबिबाज़ो) दिया कि वह एक थाली में यूहन्ना बपतिस्मादाता का सिर मांगे। प्रोबिबाज़ो शब्द का अर्थ है कि सलोमी ने खुद ऐसी बात नहीं सोची होगी और उसे अपनी अनिच्छा पर काबू पाना होगा। वह वापस हेरोदेस के पास आई। हम कल्पना कर सकते हैं कि भोज कक्ष में हर कोई अपना ध्यान उसकी प्रतिक्रिया पर केंद्रित कर रहा था और उसका अनुरोध एक बम की तरह फट गया: "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर थाल में यहीं मुझे मंगवा दे" (14:8)। इस प्रकार एक संक्षिप्त समय के लिए वह युवती इतिहास के मंच पर एक दुष्ट माँ के भयानक उपकरण के रूप में नाचती रही।

ग. एक अपराध किया गया (14:9-12)

(1) यूहन्ना का सिर काटा गया (14:9-11)

(a) राजा की कायरता (14:9)

पवित्र आत्मा ने कहा, "राजा दुखित हुआ।" लेकिन दुखी हो या न हो, उसने उस भयानक अपराध को अंजाम दिया। अतिथिगण, निस्संदेह अब हो रहे नाटक से अचानक संयत हो गए और उस कमज़ोर शासक के चेहरे पर उभर रहे संघर्ष को देखा। हेरोदेस के मन में सबसे ऊपर अहंकार था, अपने मेहमानों के सामने अपनी प्रतिष्ठा बचाने की इच्छा हावी थी। उसने एक प्रतिज्ञा की थी और शपथ के साथ उसकी पुष्टि की गई थी। अगर वादा निजी तौर पर किया गया होता, तो परिणाम अलग हो सकता था। लेकिन हेरोदेस को पता था कि हर कोई उस पर नज़र रख रहा था। क्या वह अब उस पर की गई भयानक मांग को देखते हुए अपनी प्रतिज्ञा को रद्द कर देगा? क्या वह हेरोदियास का तिरस्कार का सामना करने की हिम्मत कर पाएगा? क्या वह अपनी मेज पर बैठे लोगों के उपहास का सामना कर पाएगा?

हेरोदेस के पास न तो चरित्र था, न साहस और न ही दृढ़ विश्वास कि वह यह स्वीकार कर सके कि उसने गलती की है। उसने एक लापरवाह रुख अपनाया था, लेकिन अब वह पीछे नहीं हट सकता था। कई कमज़ोर लोगों की तरह, वह भी आसान रास्ता चुनना पसंद करता था। यूहन्ना के साहस और बेबाकी से उसका विवेक उसे लंबे समय से परेशान कर रहा था। अब उसने इसे पैरों तले रौंद दिया और इसे हमेशा के लिए एक गर्म लोहे से दाग दिया।

(b) राजा की आज्ञा (14:10-11)

हेरोदेस ने अपने अधिकारियों, अपने उच्च सरदारों और गलील के प्रमुख लोगों के चुनौतीपूर्ण चेहरों को देखा (मरकुस 6:21)। उसने अपनी शपथ के बारे में सोचा (एक अनुवादक ने बहुवचन का उपयोग किया, यह दर्शाता है कि उसने अपनी शपथ दोहराई थी, जैसा कि एक शराबी व्यक्ति अक्सर करता है)। हेरोदेस ने उस चुनौती देने वाली युवती के चेहरे को देखा, और उसने यूहन्ना की हत्या का आदेश दिया। हम अन्तिपास में एक ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जो अपने बुरे साथियों से भयभीत था, एक ऐसा व्यक्ति जिसका नैतिक अस्तित्व उसके अव्यवस्थित जीवन शैली के चलते क्षीण हो चुका था।

यूहन्ना को अपने एकान्त कालकोठरी में कुछ सैनिकों के पैरों की आवाज़ सुनाई पड़ी। उसने अपना सिर ऊपर उठाया और जल्लाद को देखा। यह उसके करियर का अंत था, वह स्थान जहाँ वह अपनी बुलाहट और अपने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहकर पहुँचा था। कुल्हाड़ी की एक चमक के साथ, यूहन्ना मौत के पार उस किनारे पर पहुँच गया और उसने पाया कि उसका परिश्रम व्यर्थ नहीं गया था।

(2) यूहन्ना को दफनाया जाता है (14:12)

उसके चेलों ने अपने गुरु के मृत शरीर को लिया और उसे दफना दिया "और जाकर यीशु को समाचार दिया।" कितनी प्यारी अभिव्यक्ति है! वे और कहाँ जा सकते थे? कौन बेहतर समझ सकता था और सलाह दे सकता था? हमने कितनी बार ऐसा किया है! हमें नहीं बताया गया है कि यीशु ने यूहन्ना के चेलों से क्या कहा, लेकिन हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि वे सांत्वना और आश्वासन पाकर ही लौटे होंगे। कोई भी व्यक्ति कभी भी व्यर्थ में यीशु के पास नहीं जाता।

ग. मनुष्यत्व और उसकी चिंताएँ (14:13-36)

मत्ती 14:13-36 हमें दिखाता है कि प्रभु यीशु ने अपनी ज़रूरतों के बावजूद, मानवता और उसकी देखभाल का ख्याल रखा। हम पहाड़ी उपदेश को यहाँ कार्य करते हुए देखते हैं।

1. मनुष्यजाति के प्रति करुणा (14:13-14)

क. स्वामी की गहरी ज़रुरत (14:13a)

यूहन्ना की हत्या का समाचार सुनकर यीशु को आश्चर्य नहीं हुआ। उसे कभी भी किसी बात से आश्चर्य नहीं हुआ। लेकिन इससे उसकी अपनी आने वाली मृत्यु की निश्चितता की ओर ध्यान गया और उसे भीड़ से दूर जाने की आवश्यकता महसूस हुई। "जब यीशु ने यह सुना, तो नाव पर चढ़कर वहां से किसी सुनसान जगह एकान्त में चला गया।" वह बेतसैदा जूलियास शहर के पास झील के उत्तर-पूर्वी कोने में एक इलाके में गया। लेकिन उसे ज़्यादा देर तक एकांतता नहीं मिलने वाली थी।

प्रभु ने संभवतः कफरनहूम से यात्रा शुरू की थी। भीड़ ने उसे जाते हुए देखा और उसका पीछा किया। जाहिर है कि वे झील के उत्तरी किनारे की तरफ से दौड़े और उसके उतरने से पहले ही उसके उतरने के स्थान पर पहुँच गए, और जब वह उतरा तो वहाँ वे पहले से उसका इंतज़ार कर रहे थे।

ख. भीड़ की गहरी ज़रूरत (14:13b-14)

प्रभु की एकान्त में रहने की ज़रूरत भीड़ की गहरी ज़रूरत में समा गई। उसका हृदय उनके लिए तरस से भर गया। मत्ती ने कहा कि उसने "उन पर तरस खाया" (14:14)। मरकुस ने कहा कि उसने इसलिए तरस खाया "क्योंकि वे उन भेड़ों के समान थे, जिन का कोई रखवाला न हो" (6:34)। लूका ने आगे कहा, "वह आनन्द के साथ उन से मिला (स्वागत किया)" (9:11)।

प्रभु इस बात से नाराज़ नहीं था कि उन्होंने उसके एकांत में रूकावट पैदा की थी। उसने भीड़ से घर जाने और उसे अकेला छोड़ने के लिए नहीं कहा। बल्कि उसने उन्हें प्यार से बाहों में लेकर गले लगाया। वे उन असहाय खोई हुई भेड़ों की तरह थे और उनके शास्त्री और रब्बी उनके रखवाले नहीं थे। धार्मिक अगुवों का साधारण लोगों के प्रति कुत्ते जैसा मनोभाव था। उन अगुवों को लोगों की परवाह नहीं थी या वे उन्हें पसंद भी नहीं करते थे, लेकिन वे यह भी नहीं चाहते थे कि यीशु उनकी चरवाही करे।

प्रभु यीशु को लोगों पर दया आई, इसलिए उसने उन्हें सिखाया और "उन के बीमारों को चंगा किया" (मत्ती 14:14)। उसने जो प्रचार किया, उस पर अमल भी किया।

2. मनुष्यजाति की भूख के प्रति तरस (14:15-21)

मनुष्य की आत्मा को भोजन देना ही काफी नहीं है। हमें उनकी शारीरिक आवश्यकताओं पर भी ध्यान देना चाहिए। अतीत में सुसमाचार प्रचारकों ने उदारवादियों के "सामाजिक सुसमाचार" के विरूद्ध इतनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है कि उन्होंने अक्सर उन लोगों की शारीरिक आवश्यकताओं की उपेक्षा की है जिनकी वे सेवा करते हैं। यह सच है कि कुछ मिशनरी नागरिकों को "चावल मसीही" बनाते हैं, उन्हें उन भौतिक चीजों से चकाचौंध करते हैं जिन्हें हम घर पर सामान्य रूप से लेते हैं। लोग हमेशा रोटी और मछली के लिए आते रहेंगे। लेकिन प्रभु इससे विचलित नहीं हुआ। उसने फिर भी अपने भले काम जारी रखे। उसके हृदय में मनुष्य जाति की भूख के प्रति तरस थी।

क. समस्या (14:15-18)

(1) तर्क का उत्तर (14:15)

चेलों को भूख लग रही थी। बाकी सभी लोग भी भूखे थे और उस जंगल में कोई दुकान या भोजनालय नहीं था। इसके अलावा भीड़ को वापस अपने घरों में लौट जाने को कहने का समय बहुत पहले ही बीत चुका था। चेलों द्वारा सुझाया गया तत्काल समाधान सरल था: "लोगों को विदा किया जाए।" यह विचार व्यावहारिक तो था, लेकिन भावनारहित था। यह तार्किक प्रतिक्रिया थी। चेलों को पता था कि वे भीड़ को खाना नहीं खिला सकते थे, लेकिन वे यह भी भूल गए थे कि यीशु ऐसा कर सकता था।

(2) प्रेम का उत्तर (14:16-18)

चेलों के तर्क के प्रति प्रभु का उत्तर प्रेमभरा था: “उन का जाना आवश्यक नहीं! तुम ही इन्हें खाने को दो” (14:16)। यदि वह भीड़ को भूखा ही भेज देता, तो जो भी दुकानें खुली होतीं, उनमें पहले स्थान पर पहुँचने के लिए जबरदस्त होड़ मच जाती। उस विशाल भीड़ में से स्त्रियों और बच्चों को सबसे अधिक कष्ट होता। यीशु ने उन्हें वहाँ से जाने और अपने हाल पर छोड़े जाने से मना कर दिया।

"सांझ" शब्द 14:15 और 14:23 दोनों में आता है। यहूदियों के पास दो सांझे होती थीं। पहली नौवें से बारहवें पहर तक (दोपहर 3:00 बजे से शाम 6:00 बजे के बीच) थी। दूसरी सूर्यास्त के बाद तीस से चालीस मिनट की अवधि थी या सूर्यास्त से लेकर तीन तारे दिखाई देने तक। 14:15 में संदर्भ स्पष्ट रूप से पहली सांझ की है। यह दोपहर का समय था और जल्द ही सभी बाज़ार बंद होने वाले थे। चेलों की नज़र घड़ी पर थी, लेकिन प्रभु की नज़र भीड़ पर थी। "उन्हें कुछ खाने को दो," उसने प्रभावी ढंग से कहा। लेकिन यही समस्या थी। चेलों के पास देने के लिए कुछ नहीं था। यही हमारी भी समस्या है।

ख. प्रावधान (14:19-21)

(1) एक धन्य आपूर्ति (14:19)

(a) भीड़ (14:19a)

चेलों ने कहा, "यहां हमारे पास पांच रोटी और दो मछिलयों को छोड़ और कुछ नहीं है" (14:17)। वे आपूर्ति और माँग के नियम के बारे में चिंतित थे, जो अर्थशास्त्र के सबसे बुनियादी सिद्धांतों में से एक है। भीड़ माँग का प्रतिनिधित्व करती थी। यूहन्ना 6:7 हमें बताता है कि फिलेप्पुस ने कहा, "दो सौ दीनार की रोटी उन के लिये पूरी भी न होंगी कि उन में से हर एक को थोड़ी थोड़ी मिल जाए।" वह माँग को देख रहा था।

अन्द्रियास आपूर्ति को देख रहा था। यूहन्ना 6:9 हमें बताता है कि उसने क्या कहा: "यहां एक लड़का है जिस के पास जौ की पांच रोटी और दो मछिलयां हैं।" अगर अन्द्रियास यहीं रुक जाता तो यह सबसे उच्च कोटि का विश्वास होता, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसने आगे यह कहकर सब कुछ बिगाड़ दिया, "परन्तु इतने लोगों के लिये वे क्या हैं?" हर कोई यीशु को छोड़कर हर जगह देख रहा था।

यीशु ने "तब उस ने लोगों को घास पर बैठने को कहा" (मत्ती 14:19)। मरकुस ने आगे कहा कि लोग पचास और एक सौ के व्यवस्थित समूहों में बैठे थे। परमेश्वर सुव्यवस्था का परमेश्वर है। सारी सृष्टि इस तथ्य की घोषणा करती है; सारा विज्ञान इसी तथ्य पर आधारित है। प्रभु यीशु, जो देह में प्रकट हुआ परमेश्वर हैं, स्वयं व्यवस्था के प्रति समर्पित था। इसलिए उसने लोगों को "समूहों में" बैठाया (मरकुस 6:39)।

अब यह अल्पाहार यीशु के हाथों में था। पूर्वी देश की वह पाँच रोटी के टुकड़े जौ से बने थे, जो गरीब आदमियों का भोजन था। मछलियाँ शायद सार्डिन जैसी छोटी मछली से ज़्यादा बड़ी नहीं थीं। वह भोजन एक भूखे लड़के के पेट को भरने के लिए भी पर्याप्त नहीं था, और भूखे लोगों की भीड़ के लिए तो यह कुछ भी नहीं था। लेकिन यह उसके लिए काफी था जिसके हाथों में अनाज की भरपूरी का मैदान था।

(ख) आश्चर्यकर्म (14:19b-c)

सबसे पहले स्वर्ग को मनुष्य की सभी ज़रूरतों को पूरा करने वाले स्रोत के रूप में स्वीकार किया गया, और फिर आश्चर्यकर्म शुरू हुआ। पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ यीशु के हाथों में चमत्कारिक रूप से बढ़

गईं। उसने "रोटियां तोड़ तोड़कर चेलों को दीं, और चेलों ने लोगों को।" हर बार एक ताज़ा आपूर्ति के साथ, व्यस्त चेले इस समूह से उस समूह की ओर भागते रहे। और हालाँकि मत्ती ने कभी इसका उल्लेख नहीं किया, उस भीड़ में कहीं पर एक छोटा लड़का खड़ा था जिसकी आँखें आश्चर्य से फटी की फटी रह गई थीं।

वह कितना ही अद्‌भुत लड़का था! क्या आपने कभी सोचा कि प्रभु यीशु, जो सृष्टि का सृष्टिकर्ता और पालनहार हैं, भूखा ही सो जाता अगर उस लड़के ने उसे अपना दोपहर का भोजन नहीं दिया होता? लेकिन यीशु ने जो कुछ भी उसे दिया गया, उसे अपने हाथों में लिया (जैसा कि वह आज भी करता है) और उसे आशीष दी और उसके द्वारा आश्चर्यकर्म किया। इसके साथ ही उसने यहाँ अपने आश्चर्यकर्मों में से एक चमत्कार किया जो सभी अन्य चार सुसमाचारों में भी दर्ज है।

उस रात घर पहुँचने पर उस छोटे बालक के पास बताने के लिए क्या कहानी रही होगी! वह उस कहानी को सुनाते-सुनाते कभी थका नहीं होगा। हम उसकी एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में कल्पना कर सकते हैं जिसके नाती-पोते उसके घुटनों पर बैठे हैं: वे कहते हैं, "हमें एक कहानी सुनाओ, दादाजी," और वह कहता है, "मैं तुम्हें उस समय के बारे में बताऊंगा जब मैंने अपना दोपहर का भोजन यीशु को दिया था।"

भीड़ को खाना खिलाने का भेद सरल था। उस लड़के ने खुद को यीशु के लिए उपलब्ध कराया। और प्रभु यीशु ने स्वयं को स्वर्ग में अपने पिता के लिए उपलब्ध कराया। और तब एक आश्चर्यकर्म हुआ।

(2) भरपूर आपूर्ति (14:20-21)

वहाँ कोई कमी नहीं थी। सबके लिए बहुत सारा खाना था। प्रभु ने चमत्कार किया, फिर अपने चेलों के द्वारा उस चमत्कार को सभी के लिए उपलब्ध कराया। चेलों ने चमत्कार नहीं किया; वे केवल वह माध्यम थे जिसके द्वारा आशीष बह रही थी। प्रभु हमेशा अपने लोगों के द्वारा जरूरतमंद दुनिया को आशीष देता है।

क्या होता अगर चेले प्रभु के उस दान को लेकर निकटतम समूहों में केवल पहली कुछ पंक्तियों तक ही दौड़ते-फिरते? जब वे लोग पर्याप्त खा लेते, तो वे अपनी जेबें भरने लगते और भोजन के लिए अपने पड़ोसियों से झगड़ने लगते। जल्द ही कुछ लोगों ने एक-दूसरे से बात करना बंद कर दिया होता। कुछ लोगों ने गुस्से में कटु-शब्दों का आदान-प्रदान किया होता और मारपीट की होती। कुछ लोगों ने एक-दूसरे पर भोजन फेंका होता। उन पहली कुछ पंक्तियों के पीछे हज़ारों लोग भूखे, वंचित, बिना देखभाल के रह जाते। आगे बैठे लोग अपने बढ़ते हुए भंडार के लिए और अधिक मांग कर रहे होते जबकि पीछे बैठे लोग भूख से मर रहे होते।

मत्ती 14:15-21 में इस बारे में एक शिक्षा है कि प्रभु का कार्य कैसे किया जाना चाहिए। यहाँ दर्ज यह चमत्कार, कई अन्य चमत्कारों की तरह, इस बारे में एक दृष्टांत बन सकता है कि मसीह में निहित परमेश्वर के भरपूर प्रावधान की खुशखबरी को सभी मनुष्यजाति तक कैसे बताया जाना चाहिए।

कलीसिया ने अधिकांशतः पृथ्वी के कुछ पसंदीदा कोनों पर ही अपना ध्यान केंद्रित किया है। मसीहियत का अधिकांश कार्य एक छोटे से अल्पसंख्यक लोगों के बीच किया जाता है। संसार में लगभग छह अरब लोग रहते हैं, जिनमें से अधिकांश ने कभी सुसमाचार नहीं सुना है, फिर भी हम उन्हीं कुछ पहली पंक्तियों में ही सेवा करते रहते हैं। परिणामस्वरूप मसीही होने का दावा करने वाले आपस में लड़ते हैं, झगड़ते हैं - एक दूसरे पर जीवन की रोटी के हिस्से फेंकते हैं और सत्य के अपने ज्ञान को अपने तक ही जमा करते जाते

हैं। जबकि अनगिनत लाखों लोग बिना पहुँचे ही रह जाते हैं, "पर्याप्त से अधिक रोटी" बाकी बची है (लूका 15:17)। अगर हम वहाँ जाएँ जहाँ लाखों भूखे लोग हैं, तो कोई कमी नहीं रहेगी।

भीड़ को खाना खिलाने में कुछ बर्बाद नहीं हुआ। "उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकिरयां उठाईं" (मत्ती 14:20)। यहाँ किफायती खर्चे पर एक सरल, आकस्मिक, लेकिन स्पष्ट सबक दिया गया है। हम आज चीज़ों को बर्बाद करने वाले एक समाज हैं। उत्पादक अपनी बिक्री को बढ़ाना चाहते हैं, इसलिए वे अपने उत्पादों को बिना किसी उत्पादन सीमा या गुणवत्ता के साथ बनाते जाते हैं। एक कार के खराब होने की उम्मीद रखते है ताकि उसके स्वामी को दूसरी कार खरीदनी पड़े। परिणामस्वरूप दुनिया के गैर-नवीकरणीय संसाधनों का औद्योगिक देशों द्वारा खतरनाक तरीके से उपभोग किया जा रहा है।

औसत अमेरिकी घर में प्रतिदिन कूड़ेदान में फेंका जाने वाला भोजन, गरीब देशों में पूरे परिवार का भरण-पोषण करने में सक्षम है। पुरानी कहावत "बर्बाद मत करो, कमी नहीं होंगी" कई लोगों को किसी दूसरी दुनिया से आए मंत्र की तरह लगती है। फिर भी 14:20 से हम जो सबक सीखते हैं, उनमें से एक यह है कि बर्बाद मत करो।

मत्ती ने भीड़ को भोजन कराने के अपने विवरण का समापन गणित के एक टिप्पणी के साथ किया, जो आज कई स्थानों पर सुसमाचार प्रचारकों के लिए मनपसंदीदा है। उसने लिखा, "खाने वाले स्त्रियों और बालकों को छोड़कर पांच हजार पुरूषों के लगभग थे" (14:21)।

3. मनुष्यजाति की असहायता के प्रति उसकी करुणा (14:22-33)

क. शांति (14:22-25)

(1) इच्छित (14:22-23)

(a) तरीका (14:22-23a)

i. यीशु ने अपने चेलों को भेजा (14:22a)

चेलों ने प्रभु से भीड़ को भेज देने का आग्रह किया था (14:15) और अब वह वही करने वाला था जो वे उससे करवाना चाहते थे। जहाँ तक चेलों का सवाल है, उसने उन्हें वहाँ से जाने को कहा - यीशु ने उन्हें “विवश किया” कि झील पार करके कफरनहूम के उपनगर बेतसैदा को जाएँ (14:22)।

ii. यीशु ने भीड़ को विदा किया (14:22b-23a)

मत्ती ने हमें यह नहीं बताया कि प्रभु अब भीड़ को भेजने पर इतना आतुर क्यों हो रहा था। यूहन्ना ने हमें बताया कि ऐसा इसलिए था क्योंकि यीशु ने यह जान लिया था "कि वे मुझे राजा बनाने के लिये आकर पकड़ना चाहते हैं।" वे उस चमत्कार से आश्वस्त थे जिसे उन्होंने अभी देखा था कि यीशु ही "वह भविष्यद्वक्ता है जो जगत में आनेवाला था" जिसके विषय में मूसा द्वारा भविष्यद्वाणी की गई थी (यूहन्ना 6:14-15; व्यवस्थाविवरण 18:15)। उन्हें भरोसा हो गया था कि उनके बीच मूसा से भी बड़ा कोई था। मूसा ने जंगल में उनके पूर्वजों को मन्ना खिलाया था, लेकिन उनकी आँखों के सामने यीशु ने चमत्कारिक रूप से पाँच या छह हज़ार लोगों को एक छोटे लड़के के दोपहर के भोजन से भरपेट खाना खिलाया था।

इस चमत्कार ने मसीहा के बारे में लोगों की भौतिकवादी अवधारणा को आकर्षित किया। यूहन्ना के सुसमाचार में जीवन की सच्ची रोटी पर प्रभु का उपदेश इस चमत्कार के तुरंत बाद आता है; उस उपदेश में उसने यह स्पष्ट किया कि उसने भौतिकवाद पर निर्भर किसी भी राजकीय पद को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया।

(b) उद्देश्य (14:23b)

प्रभु के लिए यह कोई छोटी बात नहीं थी कि वह उन उत्तेजित लोगों को रोके, उनके सांसारिक मुकुट के प्रस्ताव को अस्वीकार करे, उन्हें चुपचाप घर जाने के लिए विवश करे। अंत में अकेले रह जाने पर, वह "प्रार्थना करने को अलग पहाड़ पर चढ़ गया; और सांझ को वहां अकेला था।" यहाँ दो साँझों में से दूसरी साँझ का विवरण दिया गया है (पृष्ठ 293 देखें), वह शांतिपूर्ण पहर जब सूरज अस्त होता है और पहले तारे दिखाई देते हैं; संसार दिन भर की भागदौड़ से थक चुका है, बच्चे सोने के लिए जा रहे हैं, और घर रात में सोने के लिए तैयार हो चुका है।

प्रभु अकेले रहना चाहता था ताकि प्रार्थना कर सकें - ताकि वह स्वर्ग में अपने पिता के प्रति अपना हृदय खोल सकें। यूहन्ना की हत्या के साथ क्रूस की छाया थोड़ी और करीब आ गई थी और थोड़ी और गहरी हो गई थी। प्रभु को उस व्यक्ति के साथ संवाद करने की आवश्यकता थी जिसकी समानता में वह था; उसे उस व्यक्ति के साथ अकेले रहने की आवश्यकता थी जिसकी इच्छा पूरी करने के लिए वह पृथ्वी पर आया था। मुकुट का समय आ चुका था और चला भी गया; यह अब लगभग दो हज़ार वर्षों तक वापस नहीं आएगा। अब क्रूस का समय निकट आ रहा था।

प्रभु की शांति की इच्छा में कुछ अद्भुत है, कुछ ऐसा जो प्रार्थना के स्थान की हमारी उपेक्षा को फटकारता है। मानवीय आवरण में, परमेश्वर का अरचित पुत्र - स्वयं-अस्तित्व में विद्यमान, परमेश्वर के सभी गुणों से युक्त, सृष्टि के सृष्टिकर्ता - ने प्रार्थना में अपना हृदय उंडेल दिया। यदि उसे प्रार्थना करने की आवश्यकता थी, तो हमें कितनी अधिक होगी!

(2) व्याकुल (14:24-25)

प्रभु की शांति जल्द ही एक तूफ़ान के आने से भंग होने वाली थी। इस बिंदु पर मत्ती 14 हमें चेलों को झील की दूसरी ओर ले जाने वाली नाव के ओर वापस ले जाता है। आc-पास के पहाड़ों में अचानक उठने वाले तूफ़ान झील को घेर सकते हैं और इसकी शांत सतह को ख़तरनाक लहरों में बदल सकते हैं। ऐसा ही एक अप्रत्याशित और भयंकर तूफ़ान अब चेलों पर टूट पड़ा। वे अच्छी तरह जानते थे कि झील की प्रचंडता कैसी होती है जब वह इस तरह के मिज़ाज में होती है।

चेलों की नाव "झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी।" यह प्रचंड रूप से डगमगा रही थी, जो शीघ्र ही पलटने और डूबने की कगार पर थी। मत्ती ने आगे कहा, "हवा विपरीत थी", जिसका अर्थ है कि यह सीधे उनके सामने की ओर से बह रही थी (14:24)। वे झील के लगभग आधे रास्ते पर पहुँच चुके थे और समझदारी की बात यह होती कि नाव को घुमा दिया जाता और हवा के बहाव के अनुसार उसे वापस किनारे पर जाने दिया जाता, जहाँ से वे आए थे। लेकिन गुरु ने उन्हें दूसरी तरफ जाने के लिए कहा था और वापस नहीं लौट सकते थे। चाहे कुछ भी हो, उनके पास जो भी थोड़ी ताकत बची थी, उससे वे वही करेंगे

जो उसने कहा था। उनके पास सिर्फ इसलिए हार मानने का कोई कारण नहीं था क्योंकि हवा विपरीत दिशा से बह रही थी। आज्ञाकारिता के संदर्भ में यह कितना बढ़िया सबक है!

ख. भय (14:26)

हवा और लहरें काफ़ी भयानक थीं। उनमें से अनुभवी मछुआरे तूफानी लहरों में डूबने के खतरे को अच्छी तरह से समझते थे। लेकिन अब एक और भय था, जिसने उनके सिर की खाल को सिकुड़ दिया और उनके रोंगटे खड़े कर दिए। अचानक चेलों ने कुछ ऐसा देखा जो भूत जैसा लग रहा था। ऐसा लग रहा था कि कोई भयानक भूत तूफानी समुद्र में उनका पीछा कर रहा है।

मरकुस का वृत्तांत हमें उस पहाड़ की ओर वापस ले जाता है जहाँ यीशु के चारों ओर अंधकार था और वह अपने पिता के साथ अकेले में बात कर रहा था। रात के चौथे पहर (सुबह 3:00 बजे से सुबह 6:00 बजे के बीच) में प्रभु ने चेलों को तूफान की चपेट में उन्हें "खेते खेते घबराए" हुए देखा (मरकुस 6:48)। वह उन कठिनाइयों के बारे में जानता था जो उन्हें भयभीत कर रही थीं और उसने तुरंत प्रतिक्रिया दी। वह तुरंत पहाड़ से नीचे आया, अपनी संप्रभुता में झील पर अपने कदम को रखा, और चेलों की ओर चल पड़ा। उग्र लहरें उसके कदमों के आगे मानो झुक गईं हो।

इस प्रकार हम पाते हैं कि वह आकृति कोई भूत नहीं थी। यह तो उन चेलों का प्रिय प्रभु था जो उनकी सहायता के लिए जल्दी से जल्दी उनके पास आया था, जो उनके नियंत्रण से बाहर की शक्ति की पकड़ में उनकी असहाय स्थिति को देखकर उनकी मदद के लिए पहुँचा था। लेकिन जब उन्होंने उसे पास आते देखा, तो "उसे झील पर चलते देखकर समझा, कि भूत है, और चिल्ला उठे" (मरकुस 6:49)। हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि नाविकों ने भयभीत होकर नाव की पतवार को तेजी से चलाने लगे होंगे, ताकि वे उनका पीछा कर रहे उस अलौकिक भूत से दूर भाग सकें।

विलियम काउपर भय से काफी सुपरिचित था। एक निर्धन व्यक्ति, जो एक विक्षिप्त कवि था, वह उस युग में पागलखाने में आते-जाते रहता था जब किसी व्यक्ति को पागलखाने में भेजे जाने से बड़ी कोई अन्य भयावह बात नहीं हो सकती थी। यह परमेश्वर का वही संघर्षशील संत था जिसने लिखा था:

हे भयभीत संतो, नया साहस बटोरो;

बादलों से तुम इतना क्यों डरते हो

जो दया में महान है, वह अपनी आशीषों के साथ

तुमसे भेंट करेगा [13]

और ऐसा ही गलील की झील पर हुआ। यह कोई भूत नहीं था जो उन अँधेरी और उफनती लहरों पर मंडरा रहा था और उस आँधी की चीख के बीच चेलों को पुकार रहा था। यह स्वयं यीशु था।

ग. भरोसा (14:27-31)

चेलों ने एक जानी-पहचानी आवाज़ सुनी, "ढाढ़स बान्धो; मैं हूँ; डरो मत।" (14:27)। पतरस ने तब अपने सामान्य आवेग के साथ एक परीक्षण का प्रस्ताव सामने रखा। यदि यह वास्तव में प्रभु था, तो उसे पतरस

को अपने पास आने के लिए अनुमति देनी चाहिए। प्रभु ने तब एक शब्द में जवाब दिया: "आ" (14:29)। वह शब्द, बाइबल का सबसे अद्भुत शब्द, पतरस के भरोसे का आधार था। उसने परमेश्वर के मसीह के उस खुले वचन पर अपना भरोसा रखने का साहस किया।

पतरस के चारों ओर, दुनिया लगभग डूब रही थी। हवा उसके कानों में चीख रही थी और नाव लकड़ी के टुकड़े की तरह बुरी तरह से डोल रही थी। लेकिन वे उफनती लहरें पहले से ही प्रभु के पैरों के नीचे थीं। नाव तक पहुँचने के लिए यीशु झील के उस पार लगभग साढ़े तीन मील चल रहा था, जो यूहन्ना 6:19 के अनुसार अपने आरंभिक बिंदु से पच्चीस या तीस फर्लांग दूर थी। (वे सभी परिस्थितियाँ जिनका हम सामना करने में असमर्थ हैं, वे भी पहले से ही प्रभु के पैरों के नीचे हैं।) जो चीज़ें उसके पैरों के नीचे थीं, प्रभु उन्हें पतरस के पैरों के नीचे भी करने जा रहा था।

पतरस पानी के ऊपर चलने जा रहा था क्योंकि उसके पास विश्वास था, जो सामर्थ के स्रोत से जुड़ने की महत्वपूर्ण कड़ी है। रोमियों 10:17 के अनुसार, "विश्वास सुनने से आता है, और सुनना मसीह के वचन से होता है।" पतरस ने उस एक शब्द को सुना था जिसकी उसे ज़रूरत थी: "आ।" इस शब्द पर वह अपना विश्वास टिका सकता था और अपनी पूरी हिम्मत दिखा सकता था।

थोड़ी देर के लिए उस दृश्य की कल्पना करें। पतरस ने नाव के किनारे पर अपने एक पैर को उठाया और जैसे ही लहरों ने उसके पैर को कमर तक भिगोया, उसे याद आया कि वहाँ पानी है और मनुष्य पानी पर नहीं चल सकता। लेकिन तभी पतरस ने मसीह में परमेश्वर के उस वचन पर ध्यान लगाया - "आ" - और फिर अपना दूसरा पैर नाव के किनारे से उठा लिया। हालाँकि, पतरस की नाव पर अभी भी लोहे जैसी एक पकड़ थी। जब तक वह नाव को छोड़ नहीं देता, तब तक वह वास्तविक विश्वास का प्रयोग नहीं कर सकता था। जब उसने यीशु पर अपनी आँखें टिकाईं, तब उसका लक्ष्य उसे नज़र आया और उसने नाव को पूरी तरह से छोड़ दिया। तब एक असंभव बात घटित हुई। पतरस अब परिस्थितियों के अधीन नहीं था; वह उन पर विजय पा रहा था। विश्वास उसके जीवन में काम कर रहा था।

हमारे सामने के दरवाज़े के ठीक बाहर एक थर्मामीटर है। उस थर्मामीटर में पारा घर के बाहर के तापमान के उतार-चढ़ाव को दर्शाता है। थर्मामीटर बस इतना ही कर सकता है: तापमान के प्रभाव पर प्रतिक्रिया करना। घर के अंदर, मुख्य हॉल में एक दीवार पर, हमारे पास एक थर्मोस्टेट है। यह भी तापमान के संबंध में ही काम करता है। सर्दियों के दौरान जब घर का तापमान एक निश्चित बिंदु तक गिर जाता है, तो थर्मोस्टेट भीतरी भट्ठी को तापमान को वापस निर्धारित डिग्री पर लाने का आदेश देता है। गर्मियों के दौरान जब घर का तापमान एक निश्चित बिंदु तक बढ़ जाता है, तो थर्मोस्टेट एयर कंडीशनर को तापमान को फिर से नीचे लाने का आदेश देता है। थर्मामीटर केवल तापमान पर प्रतिक्रिया करता है, लेकिन थर्मोस्टेट तापमान को नियंत्रित करता है। थर्मोस्टेट इसलिए राज करता है क्योंकि यह एक अदृश्य तार के द्वारा बिजली के स्रोत से जुड़ा होता है।

हर विश्वासी इनमें से एक के समान होता है। वह एक थर्मामीटर हो सकता है जो हर परिस्थिति के बदलाव के साथ ऊपर या नीचे जाता है। या वह एक थर्मोस्टेट हो सकता है, जो जीवन के उतार-चढ़ाव से प्रभावित तो होता है, लेकिन तुरंत उन पर विजय प्राप्त कर लेता है क्योंकि विश्वास उसे सामर्थ के एक अद्भुत स्रोत से जोड़ता है।

इस तरह पतरस उन परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर रहा था। मत्ती (14:29) ने कहा, "वह पानी पर चलने लगा।" पतरस वही कर रहा था जो प्रभु ने उसे करने को कहा था। कदम दर कदम वह विश्वास के जीवन में आगे बढ़ रहा था, पूर्ण रूप से, एक एक पल वह आज्ञाकारिता में चल रहा था। उसकी पूरी दुनिया मसीह के दर्शन से भरपूर थी; उसकी आँखें प्रभु पर स्थिर रूप से टिकी हुई थीं।

पतरस वही कर रहा था जो यीशु ने उससे करने को कहा था; वह असंभव काम कर रहा था। मसीह में पतरस के विश्वास ने मसीह की सामर्थ और अधिकार को हर परिस्थिति पर उसके जीवन में काम करने में सक्षम बनाया; उस समय और उस स्थिति में वह जो कुछ करने में सक्षम था, उसके संदर्भ में, पतरस और मसीह के बीच बिल्कुल भी अंतर नहीं था। पतरस ने पानी पर चलने में शामिल किसी भी गतिशीलता के सिद्धांत में निपुणता हासिल नहीं की थी, लेकिन उस समय मसीह पर उसके विश्वास ने उसे मसीह के साथ इस तरह जोड़ा कि मसीह की निपुणता उस तक पहुँच गई। पतरस का विश्वास वह बटन था जिसने उसके जीवन में सामर्थ को चालू कर दिया था।

हम उन कुछ शानदार पलों में पतरस के भरोसे की हिम्मत को देखते हैं जब प्रचंड लहरें उसके पैरों के नीचे सूखी ज़मीन की तरह ठोस बन गई थीं। लेकिन जब उसे क्रोधित हवा और समुद्र का एहसास हुआ तो पतरस का भरोसा अचानक टूट गया। उसने अपनी नज़र प्रभु से हटाकर अपनी परिस्थितियों पर टिका दी। उसका विश्वास मर गया और डर हावी हो गया। सामर्थ के स्रोत से उसका महत्वपूर्ण संबंध टूट गया और तब पतरस डूबने लगा।

लेकिन सब कुछ खत्म नहीं हुआ था। प्रभु ने पतरस को इस नए तरह के जीवन को आजमाने के लिए चुनौती नहीं दी थी, ताकि असफल होने पर वह नष्ट हो जाए। यीशु उसके पास आया। पतरस ने एक बार फिर अपनी नज़र स्वामी पर टिकाई और पुकार उठा, "हे प्रभु, मुझे बचा" (14:30)। विश्वास ने एक बार फिर जोर पकड़ा और प्रभु ने उसे थाम लिया। वह सामर्थशाली हाथ उसे बचाने के लिए आगे बढ़ा। वह हाथ, जो अपनी हथेलियों में सातों समुद्रों के पानी को समाहित करने में सक्षम था, ने उस डूबते हुए चेले को पकड़ लिया। "हे अल्प-विश्वासी," उसने कहा, "तूने क्यों संदेह किया?" (14:31)

पतरस का विश्वास अल्प था, लेकिन यह विश्वास न होने से काफी बेहतर था। पतरस को विजयी जीवन जीने का ऐसा अनुभव दिया गया था जो नाव में किसी और को नहीं दिया गया था, एक ऐसा अनुभव जिसे वह अपने मरने के दिन तक याद रखेगा।

घ. सत्य (14:32-33)

(1) तत्काल शांति (14:32)

पतरस और प्रभु नाव पर चढ़ गए और तुरन्त "हवा थम गई।" अब केवल एक ही परिस्थिति मायने रखती थी कि यीशु मसीह नाव में मौजूद था। इसने बाकी सब कुछ ठीक कर दिया।

(2) उत्तम अंगीकार (14:33)

उस असाधारण दिन और रात के सभी अन्य चमत्कारों के ऊपर तत्काल शांति ने चेलों को आश्चर्य से अभिभूत कर दिया। “इस पर जो नाव पर थे, उन्होंने उसे दण्डवत करके कहा; सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र

है।" ये सभी आश्चर्यकर्म उन्हें उनके प्रिय प्रभु की सच्ची पहचान के इस महान एहसास तक पहुँचाने के लिए किए गए थे। सभी चमत्कार उन्हें आराधना में उसके चरणों में लाने के लिए तैयार किए गए थे। और जो भी तूफ़ान वह हमारे पास भेजता है, वह सब हमारे लिए तभी लाभदायक होगा यदि यह हमें उसके चरणों में आराधना करने के लिए प्रेरित करता है।

4. मनुष्यजाति के कष्टों के प्रति करुणा (14:34-36)

क. स्वामी का आगमन (14:34)

नाव आखिरकार झील के पश्चिमी किनारे पर स्थित गन्नेसरत नामक मैदान में आकर रुकी। चेले कफरनहूम के लिए निकले थे, लेकिन प्रभु ने उनकी मंजिल को बदल दिया था, क्योंकि वे झील के उत्तर-पश्चिमी छोर पर मगदला के पास उतरे थे, लेकिन यह कफरनहूम के दक्षिण में स्थित था। उस बिंदु से, वे सड़क के किनारे चलते हुए घर की ओर आगे बढ़े।

ख. भीड़ का आगमन (14:35-36)

यीशु के इस इलाके में आने की खबर पूरे जिले में आग की तरह फैल गई। एक बहुत अच्छा अवसर देखकर, जो खोना नहीं चाहिए था, निवासी अपने बीमारों को लेकर झुंड के झुंड बनाकर यीशु के पास आए। उसके वस्त्र के छोर मात्र को छूने से चंगी हुई महिला की कहानी स्पष्ट रूप से काफी प्रसिद्ध हो चुकी थी, क्योंकि भीड़ ने उससे वह करने की अनुमति मांगी जो उस स्त्री ने किया था। मत्ती ने कहा, "और जितनों ने उसे छूआ, वे चंगे हो गए" (14:36)।

यहाँ "चंगे हो गए" शब्द का मूल अनुवाद डायसोज़ो किया गया है, जिसका अर्थ है "पूरी तरह से बचाया जाना या चंगा होना।" डायसोज़ो पवित्रशास्त्र में आठ बार आता है (मत्ती 14:36; लूका 7:3; प्रेरितों के काम 23:24; 27:43,44; 28:1,4; 1 पतरस 3:20) और इन सभी उदाहरणों में इसका प्रयोग शारीरिक छुटकारे के संबंध में किया गया है।

खंड 4.

विरोध का सामना (15:1-16:12)

1. एक विरोधाभास (15:1-20)
    1. एक विवाद (15:1-6)
        1. रब्बीनी परम्परा के संबंध में फरीसियों द्वारा मसीह को चुनौती (15:1-2)
            1. स्थान (15:1)
            1. समस्या (15:2)
        2. प्रकाशित सत्य के संबंध में मसीह की फरीसियों को चुनौती (15:3-6)
            1. दृष्टिकोण (15:3)
            2. मूल्यांकन (15:4-6a)
                1. व्यवस्था की माँगें (15:4)

2. व्यवस्था की विकृति (15:5-6a)
3. लागू किया जाना (15:6b)

2. एक उद्धरण (15:7-11)
1. एक निन्दा (15:7-9)
1. फरीसियों के पाखंड के बारे में एक स्पष्ट कथन (15:7)
2. फरीसियों के पाखंड के बारे में एक भविष्यद्वाणी का कथन (15:8-9)
2. एक घोषणा (15:10-11)
1. एक उपदेश (15:10)
2. एक व्याख्या (15:11)

3. एक प्रश्न (15:12-20)
1. उसके बैरियों का अंधापन (15:12-14)
1. वर्णन किया गया (15:12)
2. निंदा (15:13-14)
1. इसकी गंभीरता (15:13)
2. इसकी निराशा (15:14)
2. उसके मित्रों का अंधापन (15:15-20)
1. यह कैसे प्रदर्शित किया गया (15:15-16)
2. यह कैसे दूर किया गया (15:17-20)
1. खाना जो अंदर जाता है (15:17)
2. जो गंदगी बाहर निकलती है (15:18-20)
1. हमारी अशुद्धता का स्रोत (15:18)
2. हमारी मलिनता का सार (15:19-20)

2. एक विपरीतता (15:21-39)
1. ज़रूरतमंद अन्यजातीय माँ—यीशु ने उसकी कैसे सराहना की (15:21-28)
1. वह कितनी हताश थी (15:21-23a)
1. उसका स्थान (15:21-22a)
2. उसकी याचना (15:22b-e)
1. वह दया जिसकी उसने खोज की (15:22b-c)
1. प्रभु की सहानुभूति के लिए उसकी अपील (15:22b)
2. प्रभु की प्रभुता के लिए उसकी दोहाई (15:22c)
2. उसने जो गलती की (15:22d)
3. वह चमत्कार जो वह चाहती थी (15:22e)
3. उसकी दुर्दशा (15:23a)
2. वह कितनी दृढ़-संकल्प थी (15:23b-27)
1. एक दुर्दशा का खुलासा (15:23b)
2. एक सच्चाई प्रकट हुई (15:24)

3. विजय का प्रकटीकरण (15:25-27)
1. निराशा से परे आशा (15:25)
2. अतुलनीय नम्रता (15:26-27)
1. उसके सामने आया हुआ संकट (15:26)
2. वह टुकड़ा जिसने उसे सांत्वना दी (15:27)
3. वह कितनी प्रतिष्ठित थी (15:28)
1. यीशु ने उसके बारे में क्या सोचा (15:28a)
2. यीशु ने उसके लिए क्या किया (15:28b)
2. ज़रूरतमंद अन्यजातीय भीड़—उन्होंने यीशु की कैसे सराहना की (15:29-39)
1. उसकी बड़ी विवशता (15:29-31)
1. पहाड़ (15:29)
2. भीड़ (15:30-31)
1. उनकी समस्याएं (15:30)
1. उनका आश्चर्य (15:31a)
2. उनकी आराधना (15:31b)
2. उसकी महान करुणा (15:32-34)
1. उसकी हार्दिक इच्छा (15:32)
2. उसके कठोर चेले (15:33-34)
1. वे क्या भूल गए थे (15:33)
2. उन्होंने क्या पाया (15:34)
3. उसका अनुग्रहपूर्ण आदेश (15:35-39)
1. उसने क्या मांगा (15:35)
2. उसने क्या किया (15:36-39)
1. चमत्कार के घटक (15:36-37)
1. सरल (15:36a)
2. उत्तम (15:36b)
3. समझदार (15:36c-37)
1. एक प्राकृतिक माध्यम (15:36c)
2. एक उल्लेखनीय चुनौती (15:37)
2. चमत्कार की गणना (15:38)
3. एक चमत्कार का पूरा होना (15:39)
3. टकराव (16:1-12)
1. चिह्न माँगा गया (16:1)
1. यहूदी इसे क्यों चाहते थे (16:1a)
2. यहूदी इसे कहाँ चाहते थे (16:1b)
2. चिह्न का इनकार (16:2-4)

1. यहूदी प्रतिदिन आकाश में देखे जाने वाले पठनीय चिह्नों को देखते थे—वे प्रभाव से लेकर कारण तक तर्क कर सकते थे (16:2-3)
2. प्रभु द्वारा प्रतिदिन दिखाए जाने वाले समय के उल्लेखनीय चिह्न—उन्हें प्रभाव से कारण तक तर्क करना चाहिए (16:4)
1. उसका निन्दा करना (16:4a-b)
1. उनकी पीढ़ी का पाप (16:4a)
2. उनकी पीढ़ी के लिए चिह्न (16:4b)
2. उसका प्रस्थान (16:4c)
3. चिह्न पर चर्चा (16:5-12)
1. चेले और उनका अविश्वास (16:5-10)
1. वे कितने भुलक्कड़ थे (16:5-7)
1. एक दुविधा (16:5)
2. एक चर्चा (16:6-7)
3. स्वामी ने क्या कहा (16:6)
4. लोगों ने क्या सोचा (16:7)
2. वे कितने मूर्ख थे (16:8-10)
1. उनके मन में—उसकी बात की सराहना न करने के कारण (16:8)
2. उनकी यादों में—उसकी सामर्थ को न पहचानने के कारण (16:9-10)
3. चेले और उनकी समझ (16:11-12)
1. सत्य को समझाया गया (16:11)
2. सत्य समझ में आया (16:12)

यीशु के प्रति विरोध, जो धार्मिक अगुवों और विशेष रूप से यरूशलेम के फरीसियों में मौजूद था, वह तेजी से स्पष्ट होने लगा। यह प्रतिरोध, जिसका प्रभु ने दृढ़तापूर्वक सामना किया, मत्ती के सुसमाचार में अधिक से अधिक प्रमुखता पाता जाता है। इस खंड की शुरुआत में फरीसी एक आरोप लगाते हैं और तुरंत ही मसीह के द्वारा इसका खंडन किया जाता है।

I. एक विरोधाभास (15:1-20)

क. एक विवाद (15:1-6)

1. रब्बीनी परंपरा के संबंध में फरीसियों द्वारा मसीह को चुनौती (15:1-2)

हमें याद रखना चाहिए कि प्रभु ने अभी-अभी जंगल में पाँच हज़ार लोगों को भोजन कराया था। हज़ारों लोगों ने बिना हाथ धोए रोटी खाई थी, और वह भी प्रभु के स्पष्ट आशीष के साथ। छोटे-मन वाले फरीसियों को उस आश्चर्यकर्म की परवाह नहीं थी। उन्हें बस इस बात की परवाह थी कि प्रभु ने उनके धार्मिक निषेधों में

से एक को तोड़ा है। इसके अलावा उन्होंने शायद चेलों को हाथ धोने की विधि को पूरी किए बिना शेष बचा हुआ कुछ खाते हुए देखा था।

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि ये फरीसी यरूशलेम के निवासी थे। राजधानी के अधिकारी गलील में मसीह की निरंतर गतिविधि और लोकप्रियता की खबर से पहले से ही परेशान थे। उनका उद्देश्य यह देखने के लिए उसके साथ यात्रा करना था ताकि उसमें कोई दोष का कारण ढूंढा जा सके।

फरीसी इस बात पर बहस कर रहे थे कि "तेरे चेले पूर्वजों की परम्पराओं को क्यों टालते हैं, कि बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं?" (15:2)। मसीह को दी गई यह चुनौती कोई छोटी घटना नहीं थी। यहूदियों की परंपराओं का तिरस्कार किया जाना उनके अगुवों द्वारा उनसे छुटकारा पाने के दृढ़ संकल्प का एक प्रमुख कारण था। दूसरा कारण यह था कि उसने उनके सब्त के नियमों की अनदेखी की थी और इसलिए उनकी नज़र में वह "परमेश्वर की ओर से नहीं" और इसलिए वह एक धोखेबाज और पापी था (यूहन्ना 9:16,18,24)। तीसरा कारण यह था कि, उनके अनुसार, वह परमेश्वर के बराबर होने का दावा करके परमेश्वर की निंदा करने वाला था। फरीसियों ने पहले ही उसके आश्चर्यकर्मों को शैतान का काम बताकर खारिज कर दिया था।

एज्रा के दिनों से ही, यहूदियों ने व्याख्याओं और परंपराओं को इकट्ठा करना शुरू कर दिया था, जिन्हें उन्होंने व्यवस्था में जोड़ा और उन्हें व्यवस्था से अधिक महत्वपूर्ण माना। उनका दावा था कि ये जोड़ मूसा द्वारा मौखिक रूप से दिए गए थे और पीढ़ी से पीढ़ी तक आगे बढ़ते गए है। यह तथाकथित मौखिक व्यवस्था पहले से ही बहुत बड़ी थी; समय के साथ यह एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका जितनी बड़ी हो गई और इसे मिश्ना (पाठ) और गेमारा (टिप्पणी) के साथ जोड़कर तल्मूड के रूप में जाना जाने लगा। हालाँकि, सदियों तक यह मौखिक व्यवस्था केवल रब्बियों की उल्लेखनीय रूप से विशाल यादों में ही सुरक्षित रहा।[1]

यरूशलेम के फरीसी व्यवस्था में इन बातों को जोड़ने में माहिर थे। उन्होंने चेलों पर मूसा की किसी खास आज्ञा को तोड़ने का आरोप नहीं लगाया। लैव्यव्यवस्था 11 में अशुद्धता और स्नान के बारे में आज्ञाएँ थीं, लेकिन यहाँ इनका मुद्दा नहीं था। यहाँ धार्मिक अगुवों द्वारा व्यवस्था में जोड़ी गई परंपराओं को तोड़ने का एक मामला था।

कुछ समय पहले, जैसा कि एडर्सहेम ने बताया, उस युग के दो प्रमुख रब्बी, हिलेल और शम्माई, "जो यहूदी परंपरावाद के प्रतिद्वंद्वी शिक्षक और नायक थे," ने हाथ धोने के बारे में अध्यादेश तय किया था। उनकी पाठशाला, जो लगभग हर चीज़ के बारे में अलग-अलग थे, इस बात पर सहमत थे कि हाथों पर पानी डालना चाहिए और कलाई तक उसे बहने देना चाहिए। यह और इसी तरह के अन्य नियम, जिनका उद्देश्य "यहूदियों को अन्यजातियों के साथ सभी संपर्क से अलग करना था," "सबसे हिंसक रूप से अन्यजातीय-विरोधी, असहिष्णु और स्वार्थी चरित्र के थे।"[2]

हाथ धोने के नियम में कोई बदलाव नहीं किया जा सकता था। जो भी रब्बी इस परंपरा की अवहेलना करता था, उसे बहिष्कृत कर दिया जाता था। फरीसी इसे और शास्त्रियों के अन्य अध्यादेशों को "पवित्र शास्त्र की तुलना में अधिक बहुमूल्य और अधिक अनिवार्य महत्व का मानते थे।"[3] रब्बियों ने सिखाया कि परंपरा, व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं के वचनों से अधिक भारी थी।

2. प्रकाशित सत्य के सम्बन्ध में मसीह की फरीसियों को चुनौती (15:3-6)

प्रभु ने फरीसियों के आरोप का जवाब एक चुनौती के साथ दिया। उन्होंने उससे एक प्रश्न पूछा; अब उसने उनसे एक प्रश्न पूछा। "तुम भी अपनी परम्पराओं के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा टालते हो?" उसने कहा (15:3)। "अपनी" शब्द पर ज़रा ध्यान दें। प्रभु उनके इस दावे को नकार रहा था कि यहूदी परम्परा मूसा से चली आ रही है जबकि उसने इसे स्पष्ट रूप से उनकी 'अपनी रीति' कहा।

प्रभु ने इस बात से इनकार नहीं किया कि चेलों ने फरीसियों की रीति का उल्लंघन किया था; उसने बस इसे एक तरफ़ मोड़ दिया और चेलों द्वारा इसे अनदेखा करने की पुष्टि की। न केवल परंपरा व्यर्थ थी; बल्कि इसने परमेश्वर की व्यवस्था का भी उल्लंघन किया था।

प्रभु ने फरीसियों को दस आज्ञाओं में से पाँचवीं आज्ञा का उद्धरण दिया: "अपने पिता और माता का आदर कर" (15:4)। इफिसियों 6:2 कहता है कि यह "यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है।" "आदर" शब्द का मूल अनुवाद वृद्ध माता-पिता की देखभाल करने के विचार को शामिल करता है, जैसा कि 1 तीमुथियुस 5:3 में है। माता-पिता को मौखिक सम्मान देना ही पर्याप्त नहीं है। उनका सम्मान करने का अर्थ है जहाँ आवश्यक हो, उनकी शारीरिक ज़रूरतों को पूरा करना।

हालाँकि, रब्बियों ने व्यवस्था की माँगों से बचने का एक अलग तरीका निकाला था (मत्ती 15:5-6)। इस दायित्व से बचने के लिए एक यहूदी को केवल अपनी सारी संपत्ति पर "कोरबन" शब्द बोलना था (मरकुस 7:11)। इस शब्द का मतलब था कि उसने अपनी सारी संपत्ति परमेश्वर को समर्पित कर दी थी। उदाहरण के लिए, वह यह शपथ ले सकता था कि उसकी मृत्यु के बाद उसकी बचत राशि मंदिर में अर्पित कर दी जाएगी। उस शपथ ने उसे अपने माता-पिता की मदद करने की वर्तमान ज़िम्मेदारी से मुक्त कर दिया था। वे अपनी सारी भौतिक संपत्ति को एक पवित्र छत्री के नीचे रख देते थे, और पाँचवीं आज्ञा का दावा इस शपथ के द्वारा प्रतिस्थापित हो जाता था।

हालांकि, वे अभी भी अपने भौतिक संसाधनों का उपयोग अपने निजी आनंद के लिए कर सकते थे। एडर्सहाइम ने समझाया: "केवल '[कोरबन], जिससे मुझे तुम्हारा लाभ मिल सकता है [ऐसी प्रतिज्ञा के लिए रब्बीनी सूत्र] कहने से, एक व्यक्ति खुद को इस बात के लिए बाध्य करता है कि वह कभी भी उस व्यक्ति की किसी भी चीज़ को न छुएगा, न चखेगा, और न खाएगा। इसी तरह, '[कोरबन], जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुंच सकता था' [एक संगत रब्बीनी सूत्र] कहने से, वह उस व्यक्ति को कभी भी उस चीज़ से कोई लाभ प्राप्त करने से रोकता है जो उसका है"।[4]

इस प्रकार, रब्बियों ने धार्मिक कर्तव्य के प्रति अत्यंत सजगता के नाम पर, परमेश्वर की स्पष्ट व्यवस्था को नकार दिया था। परमेश्वर की व्यवस्था को ताक पर रख दिया गया।

ख. एक उद्धरण (15:7-11)

1. एक निन्दा (15:7-9)

क. फरीसियों के पाखंड के बारे में एक स्पष्ट कथन (15:7)

प्रभु ने अभी अपनी बात पूरी नहीं की थी। उसने यशायाह 29:13 से एक उद्धरण देकर अपनी चुनौती को आगे बढ़ाया। फरीसियों ने कहा कि उनकी परंपरा पवित्रशास्त्र से अधिक भारी है, लेकिन प्रभु ने अधिकार के साथ उन्हें पवित्रशास्त्र का उद्धरण दिया और स्पष्ट रूप से उन्हें कपटी कहा।

ख. फरीसियों के पाखंड के बारे में एक भविष्यद्वाणी का कथन (15:8-9)

यह उद्धरण विशेष रूप से उपयुक्त ही था, जैसा कि प्रभु द्वारा पवित्रशास्त्र के सभी संदर्भ थे, क्योंकि इसने परंपरा को खारिज कर दिया। यशायाह ने बेशक बेबीलोन की कैद से बहुत पहले, एज्रा और शास्त्रियों के दिनों से बहुत पहले, पारंपरिक शिक्षण प्रणाली की शुरुआत से बहुत पहले भविष्यद्वाणी की थी, जिसने अंततः तल्मूड को जन्म दिया।

2. एक घोषणा (15:10-11)

फरीसियों पर पवित्रशास्त्र की तलवार चलाने के बाद, प्रभु ने भीड़ की ओर देखा जो इस चर्चा को बड़ी हैरानी से सुन रहे थे। "सुनो और समझो," उसने कहा, "जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो मुंह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।" एक व्यापक बयान के द्वारा उसने उस पूरे ढांचे की निंदा की जिसके द्वारा रब्बीनी पाठशाला, शास्त्री, फरीसी और धार्मिक अगुवे भीड़ पर अपनी पकड़ बनाए हुए थे। उसने उनके धार्मिक नियमों और विधियों, उनकी व्याख्या और उनकी आत्मा को दबाने वाली, परमेश्वर का अपमान करने वाली, बाइबल का विरोध करने वाली, मनुष्य को गुलाम बनाने वाली, आत्मा को नष्ट करने वाली, अहंकार को बढ़ाने वाली, शैतान की सेवा करने वाली रीति-रिवाजों को व्यर्थ घोषित कर दिया।

चेलों ने आगे जो कहा, उसके आधार पर यह संदेहास्पद है कि भीड़ ने प्रभु की बात को पूरी तरह से समझा था कि नहीं। हालाँकि, यरूशलेम के फरीसी इतने तो समझदार थे कि उन्हें पता था कि जिस व्यक्ति से वे हिसाब माँगने आए थे, उसने उन्हें मात दे दी है।

ग. एक प्रश्न (15:12-20)

1. उसके बैरियों का अंधापन (15:12-14)

"क्या तू जानता है कि फरीसियों ने यह वचन सुनकर ठोकर खाई?" (15:12) चेलों ने पूछा। प्रभु के उत्तर से पता चलता है कि उसे इन झूठे शिक्षकों की राय की कितनी कम परवाह थी। उसने कहा, "हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उखाड़ा जाएगा" (15:13)। प्रभु द्वारा इन प्रभावशाली लोगों को बेखौफ तरीके से उजागर करने पर चेले शायद थोड़ा घबरा गए थे। ये कोई स्थानीय रब्बी नहीं थे जिन्होंने ठोकर खाई थी। वे यरूशलेम से आए एक प्रतिनिधिमंडल के सदस्य थे।

प्रभु ने कभी भी गलती के लिए जगह नहीं छोड़ी थी, चाहे कोई भी इसे क्यों न सिखा रहा हो। उसके स्वर्गीय पिता ने कभी भी पारंपरिक धर्म के हानिकारक जंगली दाने नहीं बोए थे, जो सत्य और वास्तविकता की तुलना में मानवीय अभिप्राय और बाहरी दिखावे के प्रति अधिक चिंतित था। "वे अन्धे मार्ग दिखाने वाले हैं," उसने कहा। "उन को जाने दो" (15:14)। यीशु उनकी इस शत्रुता को अच्छी तरह जानते थे, लेकिन जिस खाई में वे अंधे लोगों को ले जा रहे थे, इसलिए उसके कारण उसने उनके विरूद्ध यह बात की।

2. उसके मित्रों का अंधापन (15:15-20)

चेलों को कुछ भी समझ में नहीं आया होगा। वे ऐसे धर्म में पले-बढ़े थे जिसमें धार्मिक शुद्धता पर जोर दिया जाता था। इसलिए प्रभु ने समझाया कि भोजन अपने आप में अशुद्ध नहीं होता, भले ही वह विधिवत रूप से अशुद्ध हो या फिर उसे बिना हाथ धोए खाया गया हो। यह केवल भोजन था और इसका केवल शारीरिक प्रभाव ही हो सकता था।

जल्द ही, पतरस (जिसने यह मुद्दा उठाया था) को हमेशा के लिए यह सिखाया जाएगा कि यहूदी धर्म अप्रचलित हो चुका है और भोजन से संबंधित इसके लैवीय व्यवस्था के प्रतिबन्ध हटा दिए गए हैं (प्रेरितों के काम 10)। पुराने नियम में रीति-रिवाज़ और अशुद्धता जैसी चीज थी, जैसा कि दानिय्येल ने पहचाना (दानिय्येल 1:8), लेकिन यह केवल सीमित मूल्य का था और ज्यादातर चित्र-पुस्तक प्रकृति का था। इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण वास्तविक अशुद्धता थी, जो मनुष्य के भीतर से निकलने वाली अशुद्ध चीजें थीं: बुरे विचार जिसके परिणामस्वरूप हत्या, व्यभिचार, लुचपन, चोरी, झूठ और ईशनिंदा होती है।

II. एक विरोधाभास (15:21-39)

क. ज़रूरतमंद अन्यजातीय माँ—यीशु ने उसकी कैसे सराहना की (15:21-28)

यरूशलेम के फरीसियों से मुठभेड़ के बाद प्रभु झील से निकलकर तट की ओर चला गया, फिर उत्तर की ओर सूर और सैदा के क्षेत्र में चला गया। इन दो फीनीके नगरों के समुद्री यात्राओं, वाणिज्य, उपनिवेशीकरण और घृणित धर्म का इतिहास रहा है। वहाँ प्रभु की मुलाक़ात एक अन्यजाति महिला से हुई, जिसका उल्लेख मत्ती ने उसकी हताशा और दृढ़ संकल्प के लिए किया है।

हमें याद रखना चाहिए कि मत्ती यहूदियों के लिए लिख रहा था और अब वह यीशु के यहूदी लोगों से दूर जाने, जिनके अगुवे सक्रिय रूप से उसका तिरस्कार कर रहे थे, और अन्यजातियों की खोई हुई दुनिया की ओर जाने का विवरण प्रस्तुत कर रहा था। समुद्र की ओर इस जानबूझकर की गई यात्रा में कुछ प्रतीकात्मक और भविष्यसूचक संकेत छुपा था। वह उस छोटी यहूदी अंतर्देशीय झील को छोड़कर ऐसे लोगों के प्रतिनिधि के पास गया, जिनके लिए समुद्र ही दुनिया की ओर जाने का एक राजमार्ग था। अब उससे मिलने वाली वह हताश महिला अन्यजातीय जगत के अनगिनत लाखों लोगों का प्रतिनिधित्व करती है, जिन्होंने सदियों से अब तक कलीसिया के पदों को भरा है।

यरूशलेम के प्रतिनिधिमंडल ने यीशु के साथ झगड़ा किया था और निस्संदेह क्रोध से भरकर घर लौटे थे। इसलिए उसने एक अन्यजाति की तलाश की जिस पर वह अपना अनुग्रह प्रकट कर सकें। उसकी आत्मा उस विश्वास के लिए तरस रही थी जो उसे इस्राएल में नहीं मिला था लेकिन वह जानता था कि वह उन देशों में उसका इंतज़ार कर रहा था जहाँ अंधकार का साम्राज्य था।

पद 15:22 में जिस अन्यजातीय महिला का परिचय दिया गया है, वह सिर्फ़ अन्यजाति नहीं थी। वह एक कनानी भी थी, उस शापित जाति की सदस्य जिसे परमेश्वर ने यहोशू को नष्ट करने का आदेश दिया था। उसकी कहानी तीन बार दोहराए गए शब्दों पर आधारित है, "उसने उत्तर दिया।" उन्हें 15:23, 24, 26 में रेखांकित करें और 15:28 में "इस पर" शब्द को रेखांकित करें।

1. वह कितनी हताश थी (15:21-23a)

उस स्त्री की बेटी दुष्टात्माग्रस्त थीं। कनानियों की शैतानी धार्मिक व्यवस्था में शामिल लोगों में दुष्टात्मा-ग्रस्त होना शायद कोई असामान्य बात नहीं थी।

नासरत के इस चमत्कारी भविष्यद्वक्ता की प्रसिद्धि इस माँ तक पहुँच चुकी थी। उसने उसके महान प्रेममय हृदय के बारे में सुना था। शायद उसने यह भी अफ़वाह सुनी होगी कि वह यहूदियों का वायदा किया हुआ मसीहा था, क्योंकि उसने उसे "दाऊद के संतान" कहकर पुकारा था (15:22)।

दुनिया के उस हिस्से में दाऊद का नाम जाना जाता था। पवित्र आत्मा ने दर्ज किया कि दाऊद और सुलैमान के शासनकाल के दौरान सोर का राजा हीराम, "जीवन भर दाऊद का मित्र बना रहा" (1 राजा 5:1)। शायद यही कारण है कि उस स्त्री ने प्रभु यीशु को इस तरह से संबोधित किया और उससे दया करके उसकी बेटी को चंगा करने के लिए याचना की। उसने चिल्लाकर कहा, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान... लेकिन उसने उसे कुछ उत्तर नहीं दिया" (मत्ती 15:22-23)। उसने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसने अपनी आत्मा को उसके विश्वास की अभिव्यक्ति में डुबो दिया, जो उसके अपने लोगों के अगुवों के आलोचनात्मक अविश्वास से बहुत ही अलग था।

2. वह कितनी दृढ़-संकल्प थी (15:23b-27)

चेले जल्द ही उसकी जिद से थक गए। उन्होंने कहा, "इसे विदा कर" (15:23)। कुछ समय पहले, उन्होंने कहा था, "भीड़ को विदा कर" (14:15)। यह उनकी समस्या का समाधान था। लेकिन यह उसका समाधान नहीं था। यह तथ्य कि उसने उसे विदा नहीं किया, उस असहाय आत्मा के प्रति उसकी करुणा के बारे में बहुत कुछ बताता है। यह स्पष्ट रूप से उससे बात करता था, क्योंकि वह अपने निवेदन पर अड़ी रही। प्रभु उसके इस दृढ़ संकल्प को देखर प्रभावित हुआ, लेकिन उसने पहले उसे परखा, और यह एक बहुत ही कठिन परीक्षा थी। उसके पहले शब्द ही काफी कठोर थे। "इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया" (15:24)।

उस महिला के पास यहूदियों के धार्मिक रीति-रिवाज़ों में से कोई भी नहीं था; वह शास्त्रों को पढ़कर पली-बढ़ी नहीं थी; अब्राहम और दाऊद में उसकी कोई जड़ें नहीं थीं। वह केवल एक खोई हुई अन्यजाति स्त्री थी जिसने यीशु के बारे में सुना था और उसके अलावा उसके पास कोई अन्य उम्मीद नहीं थी। उसकी अज्ञानता उसकी मूल पुकार में ही स्पष्ट थी, क्योंकि एक गैर-यहूदी का "दाऊद की संतान" पर कोई अधिकार नहीं था। फिर उसने "दाऊद की संतान" की उपाधि त्याग दी और कहा, "हे प्रभु, मेरी सहायता कर" (15:25)। यह एक बेहतर पुकार थी - मसीह के लिए एक अप्रतिरोधी निवेदन। सच में, उसका सांसारिक मिशन इस्राएल राष्ट्र तक ही सीमित था। लेकिन उसका हृदय इस स्त्री के पास वैसे ही पहुँचा जैसे पहले से ही उन भेड़ों के पास पहुँच चुका था, “जो इस भेड़शाला की नहीं है" (यूहन्ना 10:16)।

उसके अदभुत साहस और दृढ़ता से प्रसन्न होकर, उसने एक बार फिर उसके विश्वास की परीक्षा ली। वह एक अन्यजातीय याकूब की तरह थी, जो परमेश्वर से पूरी तरह चिपटी हुई थी और कह रही थी, "जब तक तू मुझे आशीष न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा।" (उत्पत्ति 32:26)। प्रभु, जो "हमारी सृष्टि जानता है" (भजन

103:14), इस बात को जानता था कि वह इस स्त्री को किस हद तक परख सकता है, जिसका मातृ-प्रेम और शानदार विश्वास उसे उसकी एकमात्र आशा से चिपटे रहने के लिए प्रेरित करता है।

"उस ने उत्तर दिया, कि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं" (मत्ती 15:26)। शायद प्रभु हाल ही में हुए चमत्कार के बारे में सोच रहा था जब भीड़ को भोजन खिलाया गया और बाद में उनके पास "पर्याप्त और अतिरिक्त रोटियां" बची थी। यहूदियों को सब कुछ दिया गया था लेकिन उन्होंने किसी पर विश्वास नहीं किया। इस अन्यजाति स्त्री को कुछ भी नहीं दिया गया लेकिन सब पर विश्वास किया। परीक्षा कठिन थी, लेकिन सर्दियों के उस बादल के पीछे से अनंत गर्मियों की धूप चमक रही थी। ऐसा लग रहा था मानो परमेश्वर केवल यहूदियों से प्रेम करता है, लेकिन इस स्त्री को टाला नहीं जा सकता था।

"सत्य है प्रभु; पर कुत्ते भी वह चूरचार खाते हैं, जो उन के स्वामियों की मेज से गिरते हैं" (15:27)। वह केवल एक टुकड़ा ही चाहती थी। वह कुत्ते के हिस्से में आने वाले अंश से संतुष्ट थी। प्रेम के तर्क ने उसके हृदय को झकझोर कर रख दिया।

3. वह कितनी प्रतिष्ठित थी (15:28)

"इस पर यीशु ने उस को उत्तर देकर कहा, कि हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है: जैसा तू चाहती है, तेरे लिए वैसा ही हो।" उसे एक पल के लिए भी संदेह नहीं हुआ कि उसके घर से वह विपत्ति जा चुकी है। अपने हृदय में खुशी के साथ, वह वापस लौटी और "परमेश्वर की शांति, जो सारी समझ से परे है" अब अपने घर में राज्य करते हुए पाया (फिलिप्पियों 4:7)। इस्राएल द्वारा तिरस्कृत मसीहा की शांति पहली बार एक अन्यजातीय देश के घर पर उतरी थी।

ख. ज़रूरतमंद अन्यजातीय भीड़—उन्होंने यीशु की कैसे सराहना की (15:29-39)

1. उसकी बड़ी विवशता (15:29-31)

क. पहाड़ (15:29)

प्रभु उत्तर में सैदा की ओर गया, फिर पूर्व की ओर दमिश्क के पास यरदन के मुख्य जलस्रोत की ओर, फिर दक्षिण की ओर गलील की झील के पूर्वी किनारे की ओर। इसके पूर्वी तट के पहाड़ों पर कहीं वह विश्राम करने के लिए रुक गया।

हम मरकुस 7:31 से सीखते हैं कि यरदन के पूर्व में उसकी यात्रा में दिकापुलिस को भी शामिल किया गया, जो फिलेप्पुस के प्रांत और हेरोदेस अन्तिपास के अधिकार क्षेत्र के बीच स्थित एक क्षेत्र था। दिकापुलिस नाम का अर्थ है "दस शहर" (वास्तव में वहाँ चौदह जिले थे)। कहा जाता है कि इन नगरों को सिकंदर महान की सेना के योद्धाओं द्वारा उपनिवेश के रूप में इस्तेमाल किया गया था और रोमी उच्च अधिकारी पोम्पी द्वारा एक संघ के रूप में बनाया गया था, इसलिए इस क्षेत्र की आबादी काफी हद तक अन्यजातीय थी। जिले में यहूदी रहते थे, लेकिन अन्यजातीय निवासियों के साथ उनके दैनिक संपर्क से उनका धार्मिक उत्साह ठंडा पड़ गया था। मत्ती 15:29 में पहाड़ की ओर उसकी वापसी संभवतः दिकापुलिस की ओर थी।

ख. भीड़ (15:30-31)

प्रभु का विश्राम जल्दी ही समाप्त हो गया क्योंकि आस-पास से बहुत से लोग अपने बीमारों को लेकर उसके पास आने लगे। "उन्हें यीशु के पावों पर डाल दिया" वाक्यांश से पता चलता है कि लोग अपने बीमारों को जल्दी-जल्दी लाए, उन्हें वहीं छोड़ दिया, और फिर जल्दी से घर वापस जाकर औरों को भी ले आए। यीशु की बड़ी विवशता थी "लंगड़ों, अन्धों, गूंगों, टुंड़ों" को चंगा करना। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनकी तकलीफें क्या थीं। "उस ने उन्हें चंगा किया" (15:30)।

उस अर्ध-अन्यजातीय जिले से भीड़ आती रही, जाती रही, और फिर आती रही, और अधिक से अधिक जरूरतमंद लोगों को मसीह के पास लाती रही और ध्यान से देखती रही कि वह उन्हें कैसे चंगा करता है। वे आश्चर्यचकित थे और उन्होंने "इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की" (15:31)।

उधर दूसरी तरफ अधिकारी ईर्ष्या और घृणा के अपने पात्रों में साजिश रच रहे होंगे, और गलील में प्रभु की सेवकाई समाप्त हो चुकी होगी, लेकिन पहले से ही वह अन्यजातीय और अर्ध-अन्यजातीय जगत से बह रही एक ताज़ी हवा को महसूस कर रहा था। पिन्तेकुस्त के कुछ समय बाद ही वह हवा एक सामर्थशाली आँधी बनने वाली थी जो अभी भी अन्यजातीय देशों से बह रही है।

2. उसकी महान करुणा (15:32-34)

क. उसकी हार्दिक इच्छा (15:32)

तीन दिन बाद भीड़ के पास खाना खत्म हो गया। प्रभु चमत्कारी सामर्थ के इस नवीनतम प्रवाह को बंद करने वाला था, लेकिन वह उन्हें विदा करने से पहले भीड़ को भोजन खिलाना चाहता था। जिस तरह से उसकी गलीली सेवकाई पाँच हज़ार लोगों के एक भोज के साथ समाप्त हुई थी, उसी तरह उसकी दिकापुलिस सेवकाई जंगल में एक मेज पर भोज के साथ समाप्त होने वाली थी। "मैं उन्हें भूखा विदा करना नहीं चाहता," उसने कहा, "कहीं ऐसा न हो कि मार्ग में थककर रह जाएं।"

ख. उसके कठोर चेले (15:33-34)

(1) वे क्या भूल गए थे (15:33)

चेलों ने उस से कहा, "हमें जंगल में कहां से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करें?" यह अविश्वसनीय लग सकता है कि चेले फिर से आपत्ति करेंगे यदि हमारा अपना अविश्वास और भूलने वाला मानवीय हृदय, यहां तक कि एक विश्वासी के हृदय के पापपूर्ण संदेह का पर्याप्त प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं दे देता।

(2) उन्होंने क्या पाया (15:34)

उन्हें पिछली घटना की याद दिलाने के लिए प्रभु ने उनसे पूछा कि उनके पास कितनी रोटियाँ हैं। उनके पास ज़्यादा नहीं थी - सिर्फ़ सात रोटियाँ और कुछ छोटी मछलियाँ - लेकिन यह काफ़ी था।

3. उसका अनुग्रहकारी आदेश (15:35-39)

"तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी" (15:35) और फिर वही अद्‌भुत कहानी फिर से दोहराई गई। प्रभु जिसने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया था कि, "हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे" (6:11), ने एक बार फिर उस प्रार्थना का उत्तर देने की अपनी क्षमता को साबित किया। जैसा कि पौलुस ने

बाद में कहा, "मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा" (फिलिप्पियों 4:19)।

यह तथ्य कि दिकापुलिस में प्रभु ने मुख्यतः अन्यजातीय मूल के लोगों को खाना खिलाया, उन चार हज़ार लोगों में कोई अंतर नहीं किया जो वाचा से बाहर थे और उन पाँच हज़ार यहूदियों में जिन्हें उसने पहले खाना खिलाया था, यह दर्शाता है कि जैसे-जैसे यहूदियों का विरोध बढ़ता जा रहा था, उसकी नज़र अब अन्यजातीय जगत पर टिकती जा रही थी। मत्ती अपने यहूदी पाठकों को इस परिवर्तन की याद दिलाता रहा।

कैम्पबेल मॉर्गन ने मत्ती द्वारा "टोकरियों" के लिए मूल अनुवादित यूनानी शब्दों के सावधानीपूर्वक उपयोग पर ध्यान दिया। पाँच हज़ार लोगों को भोजन कराने के बाद, चेलों ने बचे हुए टुकड़ों से "बारह टोकरियाँ उठाई" (14:20)। 14:20 में यूनानी शब्द कोफिनोस है, जिसका अर्थ है एक छोटी सी बांस की टोकरी जिसमें एक यात्रा करने वाला यहूदी अपना भोजन रखता था। चार हज़ार लोगों को भोजन कराने के बाद, चेलों ने बचे हुए भोजन की "सात टोकरे उठाई" (15:37)। 15:37 में शब्द स्पुरिस है, जिसका अर्थ है एक बड़ी "बर्तननुमा और बुनी हुई"[5] टोकरी जिसमें एक गैर-यहूदी अपना माल ढोता था। लूका ने 'स्पुरिस' का उपयोग उस तरह की टोकरी को संदर्भित करने के लिए किया जिसमें दमिश्क के मसीहियों ने पौलुस को दीवार के ऊपर से नीचे उतारा था (प्रेरितों के काम 9:25)।

यही अंतर बाद में मत्ती में भी किया गया जब प्रभु ने चेलों को उनके विश्वास की कमी के लिए डांटा। उसने कहा, "क्या तुम अब तक नहीं समझे? और उन पांच हजार की पांच रोटी स्मरण नहीं करते, और न यह कि कितनी टोकरियां [कोफिनोस] उठाईं थीं? और न उन चार हजार की सात रोटी; और न यह कि कितने टोकरे [स्पूरिस] उठाए गए थे?" (16:9-10)

इब्रानी नाश्ते की टोकरी और अन्यजातीय व्यापारी माल ढोने के टोकरे के बीच यह सावधानीपूर्वक भेद काफ़ी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इस दृष्टिकोण का समर्थन करता है कि चार हज़ार लोगों को खाना खिलाना यहूदियों की बजाय अन्यजातियों के लिए किया गया आश्चर्यकर्म था। यहूदियों के लिए अब अवसर तेजी से खत्म हो रहा था।

अन्यजातियों के प्रति सेवकाई करने और उन्हें आने वाली अच्छी बातों का एक पूर्व-स्वाद देने के बाद, प्रभु ने उन्हें विदा किया और झील के उस पार मगदला को लौट गया।

III. टकराव (16:1-12)

प्रभु अभी भी अपने शत्रुओं के बढ़ते विरोध का दृढ़ता-पूर्वक सामना कर रहा था। उसने चार हज़ार लोगों को आश्चर्यजनक रूप से खाना खिलाकर जनता के बीच लोकप्रिय (हालाँकि अविश्वसनीय) समर्थन जगाया था, लेकिन अब वह फिर से मगदला में एक टकराव के लिए आ गया था। फरीसी वहाँ उसका इंतज़ार कर रहे थे, इस बार वे अपने पुराने शत्रु सदूकियों के साथ हाथ मिलाए हुए थे। वे अब उसके विरूद्ध एकजुट हो गए थे।

क. चिह्न माँगा गया (16:1)

प्रभु के कट्टर बैरी, फरीसी, अब सदूकियों के साथ मिलकर उसके विरुद्ध एकजुट हो गए थे। साथ मिलकर उन्होंने स्वर्ग से एक संकेत की मांग की। उसके अन्य सभी सामर्थशाली चमत्कारों को उन्होंने सिरे से नकार दिया था। उनकी ईशनिंदा वाली राय के अनुसार, प्रभु ने बालजबूब के साथ मिलकर उन चमत्कारों को अंजाम दिया था। वे एक ऐसा चिह्न चाहते थे जो विवाद से परे हो, एक ऐसा चिह्न जो केवल स्वर्ग में रहने वाला परमेश्वर ही दे सकता था। वे चाहते थे कि वह सूर्य को स्थिर कर दे, या सूर्यघड़ी पर छाया को एक दर्जन डिग्री पीछे कर दे, या चंद्रमा को रक्त में बदल दे, या किसी तारे को गिरा दे। नूह, यहोशू, एलिय्याह और हिजकिय्याह को ऐसे चिह्न दिए गए थे। तो फिर फरीसी और सदूकी को क्यों नहीं दिया जाता?

यह आखिरी बार था जब शासक उसके पास आए, इससे पहले कि वह उनसे, राष्ट्र से और भीड़ से अंतिम रूप से अलग हो जाए ताकि वह अपने चेलों को क्रूस के लिए तैयार करने के लिए खुद को पूरी तरह से समर्पित कर सके। कैसरिया फिलिप्पी (16:13) के बाद प्रभु का अपने बैरियों के प्रति मनोभाव सदा न्यायपूर्ण था।

चिह्न की मांग उन लोगों के समूह द्वारा की गई थी जो प्रभु को परखने की कोशिश कर रहे थे। फरीसी, रूढीवादी होने के कारण, मानते थे कि चिह्न दिया जा सकता है, लेकिन प्रभु के द्वारा नहीं। सदूकी, तर्कवादी होने के कारण, मानते थे कि चिह्न बिल्कुल नहीं दिया जा सकता। इसलिए वे जानबूझकर उसे परख रहे थे; वे उसके विरूद्ध़ कुछ ढूँढ रहे थे जिसका इस्तेमाल उसके विरूद्ध किया जा सके।

ख. चिह्न का इनकार (16:2-4)

फरीसी और सदूकी आकाश में कोई चिह्न चाहते थे, इसलिए प्रभु ने उन्हें आकाश की ओर देखने का इशारा किया। प्रभु के जवाब हमेशा अद्भुत रूप से उचित और समयानुकूल होते थे। उसने कहा, "सांझ को तुम कहते हो कि खुला रहेगा क्योंकि आकाश लाल है। और भोर को कहते हो, कि आज आन्धी आएगी क्योंकि आकाश लाल और धुमला है" (16:2-3)। वे आकाश के चिन्हों को पढ़ और समझ सकते थे। वे प्रभाव से कारण पर तर्क कर सकते थे। और उन्हें प्रभाव से कारण पर तर्क करना भी चाहिए। "हे कपटियों," उसने आगे कहा, "तुम आकाश का लक्षण देखकर भेद बता सकते हो पर समयों के चिन्हों का भेद नहीं बता सकते??"

वे सभी समय चिन्हों से भरे हुए थे। हर दिन, हर हफ्ते, हर महीने, प्रभु ने अनगिनत चिह्न और चमत्कार और आश्चर्यकर्म किए थे। उसने बीमारों को चंगा किया, अंधों की आँखें खोलीं, गूंगे को बोलने और लंगड़ों को चलने की सामर्थ दी, कोढ़ियों को शुद्ध किया, और दुष्टात्माओं को निकाला। उसने पानी को दाखरस में बदल दिया, आँधी को शांत किया, लहरों पर चला, और भूखे लोगों को खाना खिलाया। उसके लिए कोई भी बात कठिन नहीं थी। उसने मुर्दों को भी जिलाया था। पूरे इतिहास में कब इतने सारे अद्भुत चिह्न हुए थे?

वह फरीसियों और सदूकियों को ऊपर स्वर्ग से कोई चिह्न देनेवाला नहीं था, लेकिन वह उन्हें नीचे नरक से एक चिह्न देने वाला था। वह उन्हें भविष्यद्वक्ता योना का चिह्न देने वाला था। तर्कवादियों के लिए यह एक चिह्न था कि वे गलत और अंधे और दोषी थे। यह पुनरुत्थान का संकेत था, क्योंकि मछली के पेट में पड़ा एक व्यक्ति मृतकों में से वापस आ गया था। रूढ़िवादियों के लिए यह एक चिह्न था कि वे गलत और अंधे

और दोषी थे। यह तिरस्कार का एक चिह्न था, क्योंकि योना उस जगह से वापस आया था जिसे उसने "अधोलोक का उदर" (योना 2:2) कहा था, जो इस्राएल को बेदारी का उपदेश देने के लिए नहीं, बल्कि अन्यजातियों तक एक संदेश ले जाने के लिए जिसके परिणामस्वरूप कई लोगों का हृदय-परिवर्तन हुआ।

इस अंतिम फटकार के साथ प्रभु ने फरीसियों और सदूकियों से अपना मुंह मोड़ लिया और वहाँ से चला गया। इसके बाद उसने कभी भी उन इलाकों में सार्वजनिक रूप से बात नहीं की और न ही कोई चमत्कार किया।

ग. चिह्न पर चर्चा (16:5-12)

प्रभु और उसके चेले झील के उत्तर-पूर्वी तट पर पहुँच गए। अब वे देश के सबसे दूर स्थित इलाके कैसरिया फिलिप्पी की ओर जा रहे थे।

ऐसा लगता है कि प्रभु सम्पूर्ण यात्रा के दौरान चुप रहा। उसका हृदय बहुत भारी था और उसका मन उन यहूदी अगुवों के अविश्वास के कारण और उसके हाल में हुई मुठभेड़ और इस्राएल के लिए जो कुछ भी इसका संकेत था, उससे भरा हुआ था। आगे आने वाले रास्ते में पहले से ही दिन "लाल और धुमला" होने वाला था (16:3)। नाव से वे पहाड़ियाँ देख सकते थे, यरूशलेम का पूरा नगर, पूरा देश युद्ध और रक्तपात और अत्याचार से भरने वाला था। प्रभु आकाश के चिन्हों को पहचानता था। रास्ते में खराब मौसम था।

1. चेले और उनका अविश्वास (16:5-10)

क. वे कितने भुलक्कड़ थे (16:5-7)

(1) एक दुविधा (16:5)

चेलों का मन सांसारिक बातों में लगा हुआ था। जब उन्होंने नाव से सामान उतारा, तो उन्होंने देखा कि भोजन की टोकरियाँ खाली थीं। वे रास्ते के लिए पर्याप्त रोटी लाना भूल गए थे। मरकुस 8:14 कहता है कि नाव में उनके पास केवल एक रोटी थी।

(2) एक चर्चा (16:6-7)

(a) प्रभु ने क्या कहा (16:6)

प्रभु का ध्यान इस दुविधा के कारण चर्चा की ओर गया। वह आत्मिक पहलू से चिंतित था। उनकी बातचीत में हस्तक्षेप करते हुए, उसने कहा, "फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहना" प्रत्येक संप्रदाय ने अपने तरीके से पवित्र शास्त्र की रोटी को खमीरयुक्त और दूषित किया था, रूढ़िवादियों ने उसमें जो कुछ जोड़ा था, और तर्कवादियों ने उसमें से जो कुछ घटाया था, उससे अधिक दूषित होता गया।

(b) लोगों ने क्या सोचा (16:7)

प्रभु की इस अप्रत्याशित टिप्पणी ने चेलों के बीच और अधिक चर्चा को जन्म दिया। उन्होंने कहा, "वह ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि हमने रोटी नहीं ली।" यहाँ वे प्रभु के साथ विरोधाभास में थे। वह उन्हें एक आत्मिक पाठ सिखाना चाहता था; वे पहले से रोटी का इंतजाम करने की अपनी विफलता से जूझ रहे थे।

ख. वे कितने मूर्ख थे (16:8-10)

(1) उनके मन में—उसकी बात की सराहना न करने के कारण (16:8)

ध्यान दें कि चेले आत्मिकता को समझने में विफल रहे और इस तरह के अवसरों पर भौतिकता पर जोर देने की उनकी प्रवृत्ति थी जब प्रभु ने प्रतीकात्मक अर्थ में भोजन के बारे में बात की थी। कफरनहूम में जब प्रभु ने खुद को जीवन की रोटी कहा तो वे उसका अर्थ समझने में विफल रहे (यूहन्ना 6)। याकूब के कुएँ पर जब प्रभु ने खाने के लिए भोजन की बात की जिसके बारे में वे कुछ भी नहीं जानते थे तो वे उसकी बात को समझ नहीं पाए (यूहन्ना 4)।

आज भी रोमी कलीसिया यही करती है। यह प्रभु-भोज की रोटी ("यह मेरा शरीर है") के रूपक को भौतिकवादी शाब्दिक अर्थ में लेता है और दावा करता है कि इसके किसी पादरी द्वारा कुछ लैटिन शब्द वेफर को उचारित करने से इसे मसीह के वास्तविक शरीर में बदल सकते हैं। यह त्रुटि इस बात को समझने में विफलता से उत्पन्न होती है कि प्रभु भौतिक स्रोत से आत्मिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए रूपकों में बोल रहा था।

(2) उनकी यादों में—उसकी सामर्थ को न पहचानने के कारण (16:9-10)

प्रभु ने सबसे पहले भौतिक मुद्दे से व्यवहार किया: रोटी की कमी। उसने चेलों को अपने हाल के किए गए चमत्कारों की याद दिलाई। दो बार उसने जंगल में भीड़ के लिए खाने का इंतज़ाम किया था और वे "पर्याप्त और अतिरिक्त" रोटी थी। क्या वे इसे इतनी जल्दी भूल गए? उन्होंने यह कैसे सोचा कि वह उन्हें भूखों मरने देगा? क्या वह उनकी एक रोटी को गुणात्मक रूप से बढ़ा नहीं सकता था जैसे उसने उस छोटे बालक की पाँच रोटियों को गुणात्मक रूप से बढा दिया था? क्या उसने उन्हें प्रार्थना करना नहीं सिखाया था, "हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे"? उन्हें अपनी भौतिक ज़रूरतों के लिए उस पर भरोसा करना सीखना होगा।

2. चेले और उनकी समझ (16:11-12)

आत्मिक मुद्दे के विषय में, चेलों को सत्य को समझना सीखना था। वे प्रभु की चेतावनी को समझने में विफल रहे थे, इसलिए उन्होंने इसे एक बार फिर से उनके लिए स्पष्ट किया। वह केवल रोटी की बात नहीं कर रहा था। वह खमीर की बात कर रहा था - वास्तविक खमीर की नहीं, बल्कि फरीसियों और सदूकियों के सिद्धांत के प्रतीक के रूप में खमीर की बात कर रहा था।

हमें अभी भी इस खमीर से सावधान रहने की ज़रूरत है, क्योंकि यह मसीही जगत में बहुत अधिक व्याप्त है। फरीसियों का खमीर पवित्रशास्त्र की गलत व्याख्या में मौजूद है। उदारवादियों का खमीर पवित्रशास्त्र की घातक असहिष्णुता में मौजूद है। हमें प्रभु की चेतावनी को समझना चाहिए।

भाग 3.

राजा का तिरस्कार किया गया

मत्ती 16:13-27:66

खंड 1

उसके तिरस्कार की छाया (16:13-25:46)

1. निजी चर्चा (16:13-20:34)
    1. राज्य के मील के पत्थर (16:13-28)
        1. पतरस और मसीह (16:13-20)
            1. पहला प्रश्न (16:13-14)
                1. पूछा गया प्रश्न (16:13)
                    1. यह कहाँ था (16:13a)
                    2. यह क्या था (16:13b)
                2. प्रश्न का उत्तर दिया गया (16:14)
                    1. चेलों ने उसके संदेश पर विचार किया और कहा "यूहन्ना" (16:14a)
                    2. चेलों ने उसके आश्चर्यकर्मों के बारे में सोचा और कहा "एलिय्याह" (16:14b)
                    3. चेलों ने उसकी सेवकाई के बारे में सोचा और कहा "यिर्मयाह, या भविष्यद्वक्ताओं में से एक" (16:14c)
            2. आगे का प्रश्न (16:15-20)
                1. पूछा गया प्रश्न (16:15)
                2. प्रश्न का उत्तर (16:16-20)
                    1. पतरस की अंतर्दृष्टि (16:16)
                    2. पतरस द्वारा दिया गया अलंकरण (16:17-20)
                        1. प्रकाशन (16:17)
                        2. चट्टान (16:18)
                            1. चुनौती (16:18a)
                            2. मसीह (16:18b)
                            3. कलीसिया (16:18c-d)
                                1. नींव (16:18c)
                                2. भविष्य (16:18d)
                        3. ज़िम्मेदारी (16:19-20)
                            1. भावी जिम्मेदारी (16:19)
                            2. वर्तमान जिम्मेदारी (16:20)
        2. पतरस और क्रूस (16:21-28)
            1. क्रूस की चुनौती (16:21-23)
                1. क्रूस की भविष्यद्वाणी (16:21)
                    1. इस प्रकाशन का महत्वपूर्ण समय (16:21a)

2. इस प्रकाशन का चौंकाने वाला सत्य (16:21b-d)
1. धार्मिक अगुवे (16:21b-c)
1. उनके हाथों यीशु पर संकट आने वाला था (16:21b)
2. उनके हाथों यीशु की मृत्यु निश्चित थी (16:21c)
2. पुनरुत्थान (16:21d)
2. क्रूस की मनाही (16:22-23)
1. पतरस ने प्रभु को कैसे डांटा (16:22)
2. प्रभु ने पतरस को कैसे डांटा (16:23)
3. क्रूस का चुनाव (16:24-28)
1. इसमें शामिल सिद्धांत (16:24-25)
1. एक अनिवार्य वास्तविकता (16:24)
2. एक अनिवार्य परिणाम (16:25)
3. शामिल प्राथमिकताएँ (16:26)
4. इसमें शामिल भविष्यवाणियाँ (16:27-28)
1. प्रभु के आगमन को पहले से बताया गया (16:27)
2. प्रभु के प्रकाशन को पहले से बताया गया (16:28)

2. राज्य की अभिव्यक्तियाँ (17:1-23)
1. दर्शन (17:1-2)
1. प्रमुख तीन (17:1)
1. कब (17:1a)
2. कौन (17:1b)
3. कहाँ (17:1c)
2. रोमांच (17:2)
2. अतिथि (17:3)
3. आवाज़ें (17:4-8)
1. मूर्ख आवाज़ (17:4)
2. पिता की आवाज़ (17:5)
1. बादल (17:5a)
2. कथन (17:5b)
3. आज्ञा (17:5c)
3. परिचित आवाज़ (17:6-8)
1. यीशु ने क्यों कहा (17:6)

2. यीशु ने क्या कहा (17:7)
3. जिसे चेलों ने देखा (17:8)

4. घाटी (17:9-23)

1. घाटी में उतरना (17:9-21)

1. उपदेश (17:9-13)

1. छिपा हुआ सत्य (17:9)
2. सत्य प्रकट हुआ (17:10-13)

1. पूछा गया प्रश्न (17:10)
2. प्रश्न का उत्तर (17:11-13)

1. भविष्यद्वाणी संबंधी पहलू (17:11)
2. वर्तमान पहलू (17:12-13)

1. रेखांकित सत्य (17:12)

1. स्वर्ग से भेजे गए दूत का तिरस्कार (17:12a)
2. स्वर्ग से भेजे गए मसीहा का तिरस्कारअस्वीकार (17:12b)

2. सत्य समझ लिया गया (17:13)

2. दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति (17:14-18)

1. घाटी की स्थिति (17:14-16)

1. लड़के का पिता (17:14-15)

1. पिता का स्थान (17:14)
2. पिता की विनती (17:15a)
3. पिता की दुर्दशा (17:15b)

2. प्रभु के अनुयायी (17:16)

2. घाटी में उद्धारकर्ता (17:17-18)

1. विरोध का एक वचन (17:17)
2. सामर्थ्य का वचन (17:18)

3. चेले (17:19-21)

1. सामर्थ का प्रश्न (17:19-20)

1. उनकी सामर्थ की कमी उजागर हुई (17:19)
2. उनकी सामर्थ की कमी का स्पष्टीकरण (17:20)

1. विश्वास को राई के दाने के बराबर नापना (17:20a)

2. एक पहाड़ के संदर्भ में विश्वास को मापना (17:20b)

2. प्रार्थना का प्रश्न (17:21)

1. इसकी गतिविधि (17:21a)

2. इसकी संगत (17:21b)

2. घाटी से परे की समझ (17:22-23)

1. प्रभु की दूसरी भविष्यद्वाणी (17:22-23a)

2. प्रभु के उदास अनुयायी (17:23b)

3. राज्य के सदस्य (17:24-18:35)

1. सांसारिक रिश्ते (17:24-27)

1. कर के रकम की माँग की गई (17:24-25a)

2. कर के धन पर चर्चा (17:25b-27)

1. प्रभु ने क्या पूर्वानुमान लगाया (17:25b)

2. प्रभु ने क्या पूछा (17:25c-26a)

3. प्रभु ने क्या तर्क दिया (17:26b)

4. प्रभु ने क्या स्वीकार किया (17:27)

1. एक नैतिक सिद्धांत (17:27a)

2. एक चमत्कारी प्रबन्धन (17:27b)

2. आत्मिक रिश्ते (18:1-35)

1. विश्वासियों को स्वीकार करना (18:1-11)

1. एक बच्चे की महानता (18:1-5)

1. महानता की खोज (18:1)

2. महानता का गुण (18:2-5)

1. दृष्टांत (18:2)

2. प्रकाशन (18:3-5)

1. नया जन्म (18:3)

2. नया व्यवहार (18:4)

3. नये जुड़ाव (18:5)

2. एक बच्चे की अच्छाई (18:6-9)

1. अपराध (18:6)

1. इसका सार (18:6a)

2. इसकी गंभीरता (18:6b)

2. अपराधी (18:7-9)

1. हाय (18:7)

1. संसार की वर्तमान संरचना (18:7a)

2. विपत्तियाँ कैसे उत्पन्न होती हैं (18:7b)

2. चेतावनी (18:8-9)

1. गलत कामों के विरूद्ध (18:8)

2. ग़लत इच्छाओं के विरुद्ध (18:9)

3. बच्चे के संरक्षक (18:10-11)

1. परमेश्वर देखता है (18:10)

1. इस संसार में परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करनेवाले (18:10a)

2. उस संसार में परमेश्वर की उपस्थिति में अधिवक्ता (18:10b)

2. परमेश्वर बचाता है (18:11)

2. पीछे हटे हुओं को पुनर्स्थापित करना (18:12-14)

1. खोई हुई भेड़ (18:12a-b)

1. भेड़ें जो सुरक्षित रूप से बाड़े में थीं (18:12a)

2. भेड़ जो बाड़े से भटक गई थी (18:12b)

2. प्रेमी चरवाहा (18:12c-14)

1. उसका अभियान (18:12c)

2. उसका आनंद (18:13)

3. उसका स्पष्टीकरण (18:14)

3. भाइयों का मेल-मिलाप (18:15-35)

1. एक सिद्धांत (18:15-20)

1. पहला कदम—मसीही प्रेम हावी होता है (18:15)

2. अगला कदम—सामान्य व्यवस्था हावी होती है (18:16)

3. अंतिम चरण—मसीही अगुवे हावी होते हैं (18:17-20)

1. स्थानीय कलीसिया का कार्यकारी अधिकार (18:17a)

2. स्थानीय कलीसिया की बहिष्कृत करने की सामर्थ (18:17b-20)

1. यह कहाँ काम करता है (18:17b-18)

1. गुनाहगार क्या बन जाता है (18:17b)

2. गुनाहगार को कहाँ बाँधा जाता है (18:18)

2. यह क्यों काम करता है (18:19-20)

1. कलीसिया द्वारा की गई दृढ़ विश्वास की प्रार्थना के कारण (18:19)

2. कलीसिया में मसीह की उपस्थिति के कारण (18:20)

2. एक प्रस्ताव (18:21-22)

1. सामान्य से परे माफ़ करने में उदारता दिखाना (18:21)

2. स्वाभाविकता से परे क्षमा की महिमा (18:22)

3. एक दृष्टान्त (18:23-35)

1. मनुष्य और उसका कर्ज (18:23-27)

1. उसकी दुर्दशा (18:23-25)

1. हिसाब का दिन (18:23-24)

1. कुछ ऐसा जो पूरी तरह से अनिवार्य है (18:23)

2. व्यक्ति जो पूरी तरह से दिवालिया हो चुका हो (18:24)

2. बर्बादी का दिन (18:25)

उसकी खोई हुई हालत के साथ जुड़ा था:

1. उसका भविष्य (18:25a)

2. उसका परिवार (18:25b)

2. उसकी विनती (18:26a)

3. उसकी प्रतिज्ञा (18:26b)

4. उसकी क्षमा (18:27)

2. मनुष्य और उसका कार्य (18:28-30)

1. उसने क्या मांगा (18:28)

1. उसकी खोज (18:28a)

2. उसकी कठोरता (18:28b)

2. उसने क्या खोजा (18:29)

3. उसने क्या किया (18:30)

3. मनुष्य और उसका विनाश (18:31-35)

1. कहानी (18:31)
2. बुलाहट (18:32-33)
    1. मनुष्य की दुष्टता का प्रकट होना (18:32)
    2. मनुष्य की दुष्टता का विस्तार (18:33)
3. सज़ा (18:34)
4. सारांश (18:35)

4. राज्य में विवाह (19:1-15)
    1. तलाक के मामले में मुख्य कारक (19:1-12)
        1. स्त्री-त्याग पर प्रभु की शिक्षा का संदर्भ (19:1-2)
            1. स्थान (19:1)
            2. लोग (19:2a)
            3. सामर्थ (19:2b)
        2. तलाक पर प्रभु की शिक्षा की विषय-वस्तु (19:3-12)
            1. प्रभु और उसके शत्रु - उसने ईश्वरीय आदर्श को पुनः दोहराया (19:3-9)
                1. पहली चुनौती और आदम की दलील (19:3-6)
                2. आगे की चुनौती और मूसा की दलील (19:7-9)
            2. प्रभु और उसके मित्र—उसे इसमें शामिल कठिनाइयों का एहसास था (19:10-12)
                1. अपने लोगों की व्यावहारिक प्रतिक्रिया (19:10)
                2. स्वामी की व्यावहारिक प्रतिक्रिया (19:11-12)
                    1. ग्रहणशील होने पर (19:11)
                    2. पुनः विवाह करने पर (19:12)
    2. तलाक के मामले में खामोश पहलू (19:13-15)
        1. छोटे बच्चों को यीशु के पास लाया गया (19:13)
            1. उद्देश्य (19:13a)
            2. समस्या (19:13b)
        1. यीशु द्वारा आशीषित छोटे बच्चे (19:14-15)
            1. महान तथ्य (19:14)
            2. अनुग्रहपूर्ण कार्य (19:15)

5. राज्य में उद्देश्य (19:16-20:16)
    1. एक प्रस्ताव (19:16-22)
        1. मनुष्य ने क्या चाहा (19:16)
        2. मनुष्य ने क्या पाया (19:17)

1. प्रभु का दावा (19:17a)
2. व्यवस्था का दावा (19:17b)

2. मनुष्य ने क्या प्रदर्शित किया (19:18-19)
    1. उसका प्रश्न (19:18a)
    2. उसकी दुविधा (19:18b-19)
        1. मानवीय संबंधों को शामिल करने वाली व्यक्तिगत आज्ञाएँ (19:18b-19a)
        2. मानवीय रिश्तों को शामिल करने वाली समावेशी आज्ञा (19:19b)
3. मनुष्य ने क्या घोषणा की (19:20)
    1. उसका अच्छा जीवन (19:20a)
    2. उसकी सबसे बड़ी घटी (19:20b)
4. मनुष्य ने क्या समझा (19:21-22)
    1. परीक्षा (19:21)
    2. त्रासदी (19:22)
        1. उसका चले जाना (19:22a)
        2. उसकी निराशा (19:22b)
5. एक समस्या (19:23-30)
    1. प्रभु का दावा (19:23-24)
        1. सिद्धान्त का प्रकटीकरण (19:23)
        2. सिद्धांत को दोहराया गया (19:24)
    2. चेलों का आश्चर्य (19:25-26)
        1. अतुल्य (19:25)
        2. असंभव (19:26)
    3. प्रभु का आश्वासन (19:27-30)
        1. पतरस द्वारा पूछा गया प्रश्न (19:27)
        2. पतरस के प्रश्न का उत्तर (19:28-30)
            1. एक वादा (19:28-29)
                1. बारह चेलों के लिए, सहस्त्राब्दी आशीष (19:28)
                2. सभी सच्चे चेलों के लिए, कई गुना आशीषें (19:29)
            2. एक सिद्धांत (19:30)
6. एक दृष्टान्त (20:1-16)
    1. मज़दूरों की भर्ती (20:1-7)
        1. जिनके पास व्यवस्था की निश्चितता है (20:1-2)

1. समय (20:1)
2. शर्तें (20:2)

2. जिनके पास प्रभु की निश्चयता है (20:3-7)

जो उसकी सेवा में प्रवेश करते हैं उनपर:

1. बचपन की सुबह उदय होती है (20:3-4)
2. उन पर जवानी की ओस पड़ती है (20:5a)
3. उन पर पुरुषत्व की प्रेरणा होती है (20:5b)
4. उनकी उम्र ढल चुकी है (20:6-7)

2. मजदूरों को प्रतिफल देना (20:8-16)

1. आदेश (20:8-12)

1. वे लोग जो पिछले थे, अब पहिले हैं —उन लोगों का प्रेमपूर्ण प्रतिफल जिन्होंने उसकी उदारता पर भरोसा करने का साहस किया (20:8-9)

2. जो पहिले थे, वे अब अंतिम हैं —उन लोगों का कानूनी पारिश्रमिक जिन्होंने अपने सौदे पर भरोसा करना चाहा (20:10-12)

1. उन्होंने क्या सोचा (20:10)
2. उन्होंने क्या कहा (20:11-12)

2. स्वामी (20:13-15)

1. उसकी सरकार (20:13-14a)
2. उसका अनुग्रह (20:14b)
3. उसकी महानता (20:15a)
4. उसकी भलाई (20:15b)

3. अवलोकन (20:16)

6. राज्य में सेवकाई (20:17-34)

1. कीमत का खुलासा (20:17-19)

1. रास्ता (20:17)
2. चेतावनी (20:18-19)

1. प्रभु का गंतव्य (20:18a)
2. प्रभु का स्वर्गारोहण (20:18b-19c)

1. इब्रानियों के हाथों उसका व्यवहार (10:18b-c)

1. वह भयंकर विश्वासघात जिसका उसे सामना करना पड़ेगा (20:18b)
2. वह झूठा मुकदमा जिसका उसे सामना करना पड़ेगा (20:18c)

2. अन्यजातियों के हाथों उसका व्यवहार (20:19a-c)

1. उसका मज़ाक उड़ाया जाएगा (20:19a)
2. उसे विकृत किया जाएगा (20:19b)
3. उसे मार डाला जाएगा (20:19c)

3. प्रभु का उद्धार (20:19d)

2. मार्ग प्रकट किया गया (20:20-28)

1. दो चेलों की महत्वाकांक्षा (20:20-23)

1. उनकी माता (20:20-21)

1. उसकी भक्तिपूर्ण आराधना (20:20a)
2. उनकी सबसे बड़ी इच्छा (20:20b-21)

2. उनकी गलती (20:22-23)

वे इनसे अनजान थे:

1. सिंहासन की कीमत (20:22-23a)

1. उन्होंने क्या तर्क दिया (20:22)
2. प्रभु ने क्या स्वीकार किया (20:23a)

2. सिंहासन का सिद्धांत (20:23b-c)

1. निष्पक्षता का प्रश्न (20:23b)
2. प्राथमिकता का प्रश्न (20:23c)

2. बाकी दस चेलों का क्रुद्ध होना (20:24-28)

1. एक विस्फोट (20:24)

2. एक स्पष्टीकरण (20:25-27)

1. सांसारिक सामर्थ के विषय में —सांसारिक अवधारणा (20:25)

2. आत्मिक सामर्थ के विषय में—अद्‌भुत विरोधाभास (20:26-27)

1. सेवा की भावना (20:26)
2. दासता की भावना (20:27)

3. एक उदाहरण (20:28)

3. सामर्थ्य प्रकट हुई (20:29-34)

1. पुरुष (20:29-30)

1. जहाँ अंधे लोग बैठे थे (20:29-30a)

1. असावधान भीड़ (20:29)
2. निराशाजनक मामला (20:30a)

2. अंधों ने क्या कहा (20:30b-c)

1. उन्होंने अपने मौके को भाँप लिया (20:30b)
2. उन्होंने मौके का फायदा उठाया (20:30c)

2. भीड़ (20:31)

1. वे क्रोधित थे (20:31a)
2. उन्हें नज़रअंदाज किया गया (20:31b)

3. प्रभु (20:32-34)

1. उसकी बुलाहट (20:32)
2. उसका तरस (20:33-34a)
3. उसके परिवर्तित लोग (20:34b)

2. सार्वजनिक विवाद (21:1-23:39)

1. संकट (21:1-22)

1. भविष्यद्वाणी की गई विजय का चिह्न (21:1-17)

1. इस्राएल के मसीहा का संदेश (21:1-7)

1. स्थान (21:1)
2. योजना (21:2-3)
3. भविष्यद्वाणी (21:4-5)

1. उसका प्रताप (21:4)
2. उसकी नम्रता (21:5)

4. प्रस्तुति (21:6-7)

2. इस्राएल की भीड़ द्वारा होशन्ना (21:8-14)

1. उल्लास (21:8-9)

1. स्वेच्छा से की गई गतिविधि (21:8)
2. स्वेच्छा से किया गया जयजयकार (21:9)

2. यरूशलेम (21:10-11)

1. उसकी अज्ञानता प्रकट हुई (21:10)
2. उसकी अज्ञानता दूर हो गई (21:11)

3. न्याय (21:12-13)

1. पवित्रस्थान शुद्ध किया गया (21:12)
2. पवित्रशास्त्र की पुष्टि (21:13)

4. यीशु (21:14)

3. इस्राएल के अगुवों का द्वेष (21:15-17)

1. अप्रसन्नता (21:15-16)

1. उन्होंने क्या देखा (21:15)
2. उन्होंने क्या कहा (21:16)

2. प्रस्थान (21:17)

2. फलरहित पेड़ का चिह्न (21:18-22)

1. प्रभु का पेड़ के पास आना (21:18-19a)

1. जब यह था (21:18a)

2. यह कहाँ था (21:18b)
3. ऐसा क्यों हुआ (21:18c)
4. यह क्या था (21:19a)

2. प्रभु द्वारा पेड़ को शाप दिया जाना (21:19b-20)
1. मसीहा का कार्य (21:19b)
2. मनुष्यों का आश्चर्य (21:20)

3. पेड़ पर प्रभु की टिप्पणी (21:21-22)
1. हमारी सामर्थ का असीमित दायरा (21:21)
1. संचालन सिद्धांत (21:21a)
2. अत्यधिक संभावना (21:21b-c)
1. इस वचन का सरल अर्थ (21:21b)
2. इस वचन का प्रतीकात्मक अर्थ (21:21c)

2. हमारी सामर्थ का अंतिम स्रोत (21:22)

2. कारण (21:23-22:14)
1. ज़िम्मेदारी का दृष्टांत (21:23-32)
1. दृष्टांत का संदर्भ—प्रभु का अधिकार (21:23-27)
1. आराधनालय के अधिकारियों की मांग (21:23)
2. आराधनालय के अधिकारियों की दुविधा (21:24-26)
1. प्रस्ताव (21:24-25a)
2. समस्या (21:25b-26)

3. आराधनालय के अधिकारियों का निर्णय (21:27)

2. दृष्टांत की विषय-वस्तु—अगुवों की जवाबदेही (21:28-32)
1. दृष्टान्त कितना उचित था (21:28-31a)
1. दो पुत्र (21:28-30)
1. प्रथम पुत्र का अंतिम पद (21:28-29)
2. दूसरे पुत्र का झूठा दावा (21:30)

2. वास्तविक पाप (21:31a)

2. दृष्टांत कितना लागू करने योग्य था (21:31b-32)
1. वेश्याओं के साथ तुलना (21:31b-32a)
2. कपटियों की निंदा (21:32b)

2. पलटा लेने का दृष्टान्त (21:33-46)
1. प्रभु और उसकी दाख की बारी (21:33-39)
1. गृहस्वामी (21:33a-c)
1. दाख की बारी लगाई गई (21:33a)
2. दाख की बारी की सुरक्षा (21:33b)
3. दाख की बारी का प्रावधान (21:33c)

2. किसान (21:33d-39)
1. उनका भरोसा (21:33d)
2. उनका विश्वासघात (21:34-39)
1. उन्होंने अपने स्वामी के सेवकों के साथ कैसा व्यवहार किया (21:34-36)
1. पहला समूह (21:34-35)
2. अंतिम समूह (21:36)
2. उन्होंने अपने स्वामी के पुत्र के साथ कैसा व्यवहार किया (21:37-39)
1. अपेक्षा (21:37-38)
1. योजना (21:37)
2. षडयन्त्र (21:38)
2. मार डाला गया (21:39)
2. प्रभु और उसका प्रतिशोध (21:40-46)
1. निवेदन (21:40-41)
1. पूछा गया प्रश्न (21:40)
2. प्रश्न का उत्तर दिया गया (21:41)
2. लागू करना (21:42-46)
1. एक गंभीर प्रकाशन (21:42-44)
1. पवित्र शास्त्र से (21:42)
2. उद्धारकर्ता की ओर से (21:43-44)
1. न्याय (21:43)
2. दंड (21:44)
2. एक तीव्र प्रतिक्रिया (21:45-46)
1. अगुवों की चिंता (21:45)
2. अगुवों की चेतावनी (21:46)
3. तिरस्कार का दृष्टांत (22:1-14)
1. इब्रानी जाति के लिए राजा का विशेष निमंत्रण (22:1-7)
1. राजा की घोषणा (22:1-6)
1. भेजा गया (22:1-3a)
1. विवाह की घोषणा (22:1-2)
2. मज़दूर भेजे गए (22:3a)
2. तिरस्कृत (22:3b-6)
1. पहला इनकार (22:3b)
2. आगे का इनकार (22:4-6)

1. राजा द्वारा नए विवरण प्रकट किए गए (22:4)
2. राजा को गहन अवज्ञा का सामना करना पड़ता है (22:5-6)
1. आमंत्रण को लापरवाही से नज़रअंदाज़ करना (22:5)
2. आमंत्रण को बेरहमी से अस्वीकार करना (22:6)
2. राजा का क्रोध (22:7)
2. मनुष्यजाति के लिए राजा का विस्तृत निमंत्रण (22:8-14)
1. विवाह के मेहमानों की खोज (22:8-10)
1. निर्णायक मोड़ (22:8)
2. ज़बरदस्त योजना (22:9-10)
1. महान आदेश दिया गया (22:9)
2. बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई (22:10)
1. उनका आगमन (22:10a)
2. उनकी बनावट (22:10b)
2. विवाह वस्त्र का प्रश्न (22:11-14)
1. एक शीघ्र पर्दाफ़ाश (22:11-13)
1. लापरवाह मनुष्य का पाप (22:11-12a)
2. उस लापरवाह आदमी की चुप्पी (22:12b)
3. लापरवाह आदमी की सज़ा (22:13)
2. एक गंभीर उदाहरण (22:14)
3. विषय (22:15-46)
1. योजना बनाई गई (22:15)
2. योजना विकसित की गई (22:16-45)
1. राजभक्त प्रभु को फँसाने का प्रयास करते हैं (22:16-22)
1. उनका छल (22:16)
1. उसके विश्वास के विषय में उसकी चापलूसी करना (22:16a)
2. उसके साहस के विषय में उसकी प्रशंसा करना (22:16b)
2. उनका लक्ष्य (22:17-18)
1. जाल बिछाया गया (22:17)
2. फंदे को पहचान लिया गया (22:18)
3. उनकी सरकार (22:19-21b)
1. कैसर का सिक्का (22:19-21a)
1. उसे सौंप दिया गया (22:19)

2. उनके द्वारा वर्णित किया गया (22:20-21a)

2. कैसर का दावा (22:21b)

4. उनका परमेश्वर (22:21c-22)

1. उसकी आराधना (22:21c)

2. उनका अचम्भा (22:22)

2. तर्कवादी लोग प्रभु को फँसाने की कोशिश करते हैं (22:23-33)

1. उनका अविश्वास व्यक्त किया गया (22:23)

2. उनका अविश्वास प्रकट हुआ (22:24-28)

1. उन्होंने जो आदेश दिया (22:24)

1. इसकी प्रामाणिकता (22:24a)

2. इसका अधिकार (22:24b-c)

1. व्यवस्था की ज़रूरत (22:24b)

2. व्यवस्था की प्रकृति (22:24c)

2. वह मामला जिनका उन्होंने उद्धरण दिया (22:25-28)

1. परमेश्वर के प्रकाशन की निंदा करने के उद्देश्य से (22:25-27)

1. इतने मूर्ख (22:25-26)

2. इतने व्यर्थ (22:27)

2. मनुष्य के पुनरुत्थान की निंदा करने के उद्देश्य से (22:28)

3. उनका अविश्वास सबके सामने प्रकट किया गया (22:29-33)

1. उनकी अज्ञानता को फटकारा गया (22:29-30)

1. परमेश्वर के प्रकाशन की प्रकृति के बारे में उनकी अज्ञानता (22:29)

1. यह परमेश्वर के मन को प्रकट करता है (22:29a)

2. यह परमेश्वर की सामर्थ को प्रकट करता है (22:29b)

2. मनुष्य के पुनरुत्थान की प्रकृति के बारे में उनकी अज्ञानता (22:30)

इससे निम्नलिखित मौलिक परिवर्तन होता है:

1. मनुष्य की ज़रूरतें (22:30a)

2. मनुष्य का स्वभाव (22:30b)

2. उनकी अज्ञानता प्रकट हुई (22:31-33)

1. इन विद्वान पुरुषों के लिए (22:31-32)

1. प्रभु द्वारा बताया गया मामला (22:31)
2. प्रभु द्वारा बताया गया निष्कर्ष (22:32)

2. सुननेवाली भीड़ के लिए (22:33)

3. धार्मिक अगुवे प्रभु को फँसाने की कोशिश करते हैं (22:34-45)

1. आज्ञाओं के विषय में व्यवस्थापक का प्रश्न (22:34-40)

1. पूछा गया प्रश्न (22:34-36)

1. यह एक गंभीर प्रश्न था (22:34-35)
2. यह एक कानूनी सवाल था (22:36)

2. प्रश्न का उत्तर (22:37-40)

1. पुराने नियम की विधियों की दो महान मूल बातें (22:37-39)

1. सर्वोच्च आज्ञा (22:37-38)
2. अतिरिक्त आज्ञा (22:39)

2. पुराने नियम के शास्त्र की दो महान मूल बातें (22:40)

2. मसीह के विषय में प्रभु के प्रश्न (22:41-45)

1. मसीहा की वंशावली से संबंधित प्रश्न (22:41-42)

1. पूछा गया प्रश्न (22:41-42a)
2. प्रश्न का उत्तर दिया गया (22:42b)

2. मसीहा की प्राथमिकता के बारे में सवाल (22:43-45)

1. आशय— प्रभु के पूर्वजों ने मसीह के परमेश्वरत्व को स्वीकार किया (22:43-44)
2. लागू करना - प्रभु के विरोधियों ने मसीह के परमेश्वरत्व का सामना किया (22:45)

3. योजना विफल कर दी गई (22:46)

4. शाप (23:1-39)

1. प्रभु द्वारा यहूदी धर्म को अस्वीकार करना (23:1-36)

1. सम्मान का स्थान (23:1-3)

1. प्रभु क्या प्रशंसा करता है (23:1-3a)
2. प्रभु क्या छोड़ता है (23:3b)

2. पाखंड का अभ्यास (23:4-36)

1. अगुवों ने क्या चाहा (23:4-12)

1. मनुष्यों का अनुपालन (23:4)
2. मनुष्यों की प्रशंसा (23:5)
3. मनुष्यों के सामने सम्मान (23:6)

4. मनुष्यों की चापलूसी (23:7-12)

1. प्रभु द्वारा वर्णित अगुवों का सांसारिक लक्ष्य (23:7)

2. अगुवों के इस सांसारिक लक्ष्य को प्रभु द्वारा खारिज किया जाना (23:8-12)

1. सांसारिक नाम की लालसा (23:8-10)

2. सांसारिक प्रसिद्धि की उनकी लालसा (23:11-12)

1. मसीही जीवन की प्राथमिकताएँ (23:11)

2. मसीही जीवन के सिद्धांत (23:12)

2. अगुवों ने क्या सिखाया (23:13-22)

1. उनके उपदेश का पाखण्ड (23:13)

2. उनकी प्रार्थनाओं का पाखण्ड (23:14)

3. उनके द्वारा परिवर्तित लोगों का पाखंड (23:15)

4. उनके उपदेशों में पाखण्ड (23:16-22)

1. उनकी मूर्खता को प्रकट किया गया (23:16-19)

1. मंदिर के रखे सोने की शपथ लेना (23:16-17)

2. वेदी की भेंट की शपथ लेना (23:18-19)

2. उनकी मूर्खता प्रकट हुई (23:20-22)

1. सच्चा बलिदान (23:20)

2. सच्ची पवित्रता (23:21)

3. सच्चा सर्वोच्च (23:22)

3. धार्मिक अगुवों ने क्या किया (23:23-28)

1. धर्म का दिखावा (23:23-24)

1. व्यवस्था के छोटे-मोटे मामलों को विकसित करना (23:23a)

2. व्यवस्था की प्रमुख बातों को महत्वहीन बनाना (23:23b-24)

1. उनके व्यवहार की गंभीरता (23:23b)

2. उनके व्यवहार की मूर्खता (23:24)

2. आदर का दिखावा (23:25-26)

1. बाहरी शुद्धता (23:25)

2. आन्तरिक भ्रष्टाचार (23:26)

3. धार्मिकता का दिखावा (23:27-28)

1. सफ़ेद कब्रें (23:27)

2. दुष्ट पापी (23:28)

4. अगुवों ने क्या सोचा (23:29-36)

1. उनकी मूर्खतापूर्ण गलती (23:29-31)

1. उन्होंने क्या अभ्यास किया (23:29)

2. उन्होंने क्या स्वीकार किया (23:30)

3. उन्होंने क्या साबित किया (23:31)

2. उनका पूरा माप (23:32-36)

1. प्रभु ने उनका वर्णन कैसे किया (23:32-33a)

2. प्रभु ने उन्हें कैसे धिक्कारा (23:33b-35)

1. वे नरक के लिए नियुक्त थे (23:33b)

2. वे नरक के योग्य थे (23:34-35)

1. उनकी भयानक गतिविधियाँ प्रकट की गईं (23:34)

2. उनकी भयानक जवाबदेही प्रकट की गईं (23:35)

3. प्रभु ने उन्हें कैसे दंडित किया (23:36)

2. प्रभु द्वारा यरूशलेम का तिरस्कार किया जाना (23:37-39)

1. उसके तिरस्कार का वर्णन (23:37)

2. इसके विनाश की घोषणा (23:38)

3. उसकी वापसी का निर्णय (23:39)

3. भविष्यद्वाणी का उपदेश (24:1-25:46)

1. अन्त समय के बारे में प्रभु की धारणा (24:1-3)

1. प्रभावशाली रचना (24:1a)

2. आवेगपूर्ण कथन (24:1b-2a)

3. महत्वपूर्ण कथन (24:2b-3)

1. प्रभु ने क्या कहा (24:2b)

2. प्रभु ने क्या पूछा (24:3)

2. अंत समय के बारे में प्रभु की भविष्यद्वाणी (24:4-51)

1. संसार के राष्ट्र (24:4-14)

1. अन्त समय की समस्याएँ (24:4-8)

1. राष्ट्रीय विपत्तियाँ (24:4-7a)

1. भरमाने वाले पंथ (24:4-5)

2. भयानक लड़ाइयाँ (24:6-7a)

2. प्राकृतिक विपदाएँ (24:7b-8)

1. वे प्रबल होंगे (24:7b)

2. वे केवल प्रारम्भिक होंगे (24:8)

2. अन्त के समय में होने वाले सताव (24:9-10)

1. भय से चिह्नित लोग (24:9)

2. विश्वासघात से चिह्नित लोग (24:10)

3. अंतिम समय के भविष्यद्वक्ता (24:11-14)

1. झूठे भविष्यद्वक्ता (24:11-12)

1. उनकी गिनती (24:11)

2. उनका स्वभाव (24:12)

2. विश्वासयोग्य भविष्यद्वक्ता (24:13-14)

1. उनका धीरज (24:13)

2. उनका सुसमाचार प्रचार (24:14)

2. इस्राएल राष्ट्र (24:15-31)

1. इस्राएल का आनेवाला सर्वनाश (24:15-26)

1. उस समय के दौरान पवित्र लोगों का पलायन (24:15-20)

1. उनकी समझ (24:15)

2. उनकी मजबूरी (24:16-18)

3. उनकी जटिलताएँ (24:19-20)

2. उस समय के दौरान तूफान का प्रकोप (24:21-22)

1. महाक्लेश की गंभीरता (24:21)

2. महाक्लेश की अल्पावधि (24:22)

3. उस समय के दौरान पापियों की मूर्खता (24:23-26)

1. झूठ को स्वीकार करना (24:23-24)

2. प्रभु को अस्वीकार करना (24:25-26)

2. इस्राएल का आनेवाला उद्धारकर्ता (24:27-31)

1. वह तेज़ी जिसके साथ वह लौटेगा (24:27)

2. वह नर-संहार जिसके साथ वह लौटेगा (24:28)

3. वे चिह्न जिनके साथ वह लौटेगा (24:29-30)

1. इस संसार की व्यवस्था का नाश (24:29)

2. इस संसार के उद्धारकर्ता का प्रकाशन (24:30)

4. वह आवाज़ जिसके साथ वह लौटेगा (24:31)

3. स्वर्ग के नागरिक (24:32-51)

1. दो प्रकार की पुष्टियां (24:32-39)

1. अंजीर का चिह्न (24:32-36)

1. एक तुलना (24:32-33)

2. एक पुष्टिकरण (24:34-35)

3. एक चेतावनी (24:36)

2. जल प्रलय का चिह्न (24:37-39)
1. एक निवेदन (24:37)
2. मूल्यांकन (24:38-39a)
3. लागू करना (24:39b)
2. दो प्रकार के मसीही (24:40-51)
1. पहली चेतावनी (24:40-44)
1. वे जो मसीह द्वारा मेघारोहण के समय ग्रहण किये गए (24:40-42)
2. वे लोग जिन्हें मसीह ने मेघारोहण के समय अस्वीकार कर दिया (24:43-44)
2. आगे की चेतावनी (24:45-51)
1. बुद्धिमान दास— जिसे उठा लिया गया (24:45-47)
2. दुष्ट दास—जो छोड़ दिया गया (24:48-51)
1. उसके कार्य (24:48-49)
2. उसका विनाश (24:50-51)

3. प्रभु के अंत समय के दृष्टांत (25:1-46)
1. इस्राएल राष्ट्र के लिए: कुँवारियों का दृष्टान्त (25:1-13)
1. विवाह की बुलाहट (25:1-5)
1. स्वर्गीय दूल्हा (25:1)
2. पवित्र आत्मा (25:2-5)
1. परमेश्वर के आत्मा की उपेक्षा करना (25:2-4)
2. परमेश्वर के पुत्र की उपेक्षा करना (25:5)
2. आधी रात की पुकार (25:6-10)
1. अतिथियों को जगाया गया (25:6-9)
2. दूल्हा आता है (25:10)
3. ग़लत दावा (25:11-13)
1. अपील (25:11-12)
1. क्या चाहा गया था (25:11)
2. क्या पाया गया (25:12)
2. लागू करना (25:13)
2. स्वर्ग के नागरिकों के लिए: तोड़ों का दृष्टान्त (25:14-30)
1. ज़िम्मेदारी का समय (25:14-18)
1. दिया गया भरोसा (25:14-15)
2. किया गया भरोसा (25:16-17)
3. तोड़ा गया भरोसा (25:18)
2. लेखा देने का समय (25:19-30)

1. योग्य सेवक (25:19-23)
    1. उनके प्रबन्ध की समीक्षा (25:19-22)
    2. उनके प्रबन्ध का प्रतिफल (25:23)
2. निकम्मा दास (25:24-30)
    1. उसका बहाना (25:24-25)
    2. उसका पर्दाफ़ाश (25:26-30)
        1. उसका दण्ड (25:26-29)
        2. उसकी नियति (25:30)

3. पृथ्वी के राष्ट्रों के लिए: भेड़ और बकरियों का दृष्टान्त (25:31-46)
    1. एक सिंहासन (25:31)
    2. एक भीड़ (25:32-33)
        1. इब्रानी पवित्र लोग (25:32)
        2. बचे हुए इब्रानी लोग (25:33)
    3. एक रोमांच (25:34-46)
        1. छुड़ाए गए लोगों का आनंद (25:34-40)
            1. उनका स्वागत (25:34-36)
            2. उनका आश्चर्य (25:37-39)
            3. उनका उद्धार (25:40)
        2. तिरस्कृत लोगों की भयानकता (25:41-46)
            1. उनका शाप (25:41-43)
            2. उनकी शिकायत (25:44)
            3. उनका दण्ड (25:45-46)

मत्ती के सुसमाचार के तीसरे भाग में राजा का तिरस्कार किया जाता है। पहले भाग में, जो जैतून के उपदेश के साथ समाप्त होता है, हम उस तिरस्कार की लंबी होती छाया को देख पाते हैं। मसीहा को स्वीकार करने से इनकार करने में इस्राएल की मूर्खता निजी चर्चाओं, सार्वजनिक विवादों और भविष्यद्वाणी संबंधी सूचकों पर हावी हो जाती है। दूसरे भाग में, दो भयानक अध्याय इस तिरस्कार को अंतिम रूप लेते हुए दिखाते हैं।

I. निजी चर्चा (16:13-20:34)

क. राज्य के मील के पत्थर (16:13-28)

यह पद्यांश मसीह, क्रूस और कलीसिया की ओर ध्यान आकर्षित करता है। प्रभु की गलीली सेवकाई समाप्त हो चुकी थी। अब वह यरूशलेम के फरीसियों के नेतृत्व में राष्ट्र के धार्मिक अगुवों के सक्रिय विरोध का सामना कर रहा था। हेरोदेस, जिसने यूहन्ना बपतिस्मादाता की हत्या की थी, अपने बुरे विचारों को यूहन्ना के स्पष्ट उत्तराधिकारी की ओर मोड़ रहा था। जबकि जनता बढ़ती अनिर्णय की स्थिति और भौतिकतावाद से परे कुछ भी समझने में असमर्थ दिख रही थी। यीशु के चेलों की सुस्ती ने इस तस्वीर को अधिक बढ़ा

दिया जब प्रभु इस्राएल के राष्ट्र से दूर चलता गया और क्रूस, ऊपरी कोठरी और कलीसिया के जन्म की ओर बढ़ता गया।

वह समय आ गया था कि प्रभु को अपने चेलों के सामने अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान की आने वाली घटनाओं की स्पष्ट घोषणा करनी थी। उसने गुप्त प्रार्थना के द्वारा इस महत्वपूर्ण कदम के लिए तैयारी की (लूका 9:18)। अब तक उसके चेलों को ऐसा लग रहा था कि वह सभी विरोधों को मिटा देगा। वास्तव में आम लोग उसे बलपूर्वक पकड़ने और उसे राजा बनाने के लिए तैयार थे। वह एक ऐसा राजा था जिसे वे समझ सकते थे, जो उनके दुखों को मिटा सकता था और मेज़ पर रोटी प्रदान कर सकता था। यदि प्रभु ने भीड़ को भेजने से पहले चेलों को नहीं भेजा होता (मत्ती 14:22-23), तो बारह चेले निस्संदेह इस आवेगपूर्ण कदम में उनके साथ शामिल हो गए होते।

चेले निश्चित रूप से वादा किए गए मसीहा के राज्य, सामर्थ और महिमा के शीघ्र प्रकट होने की उम्मीद कर रहे थे। उन्होंने शायद उसकी इस घोषणा पर बहुत कम या बिल्कुल ध्यान नहीं दिया था कि दूल्हे को जल्द ही उनसे अलग कर दिया जाएगा, और तब वे उपवास करेंगे और शोक मनाएंगे (9:15)। उन्हें स्पष्ट रूप से यह बताने का समय आ गया था कि आगे क्या होने वाला है।

मसीह के दूसरे आगमन तक पृथ्वी पर कोई वास्तविक राज्य नहीं हो सकता। इसके अलावा, आत्मिक राज्य इस्राएल राष्ट्र में नहीं पाया जाएगा; यह कलीसिया में पाया जाएगा।

1. पतरस और मसीह (16:13-20)

क. पहला प्रश्न (16:13-14)

(1) पूछा गया प्रश्न (16:13)

(a) वह कहाँ था (16:13a)

अब हम मत्ती के सुसमाचार के "महान विभाजन" को पार करते हैं। एक वार्तालाप के परिणामस्वरूप एक महान अंगीकार और कलीसिया का पहला प्रकाशन प्राप्त होता है। एडर्सहेम द्वारा बहुत अच्छी तरह से वर्णित यह दृश्य गलील और इस्राएल से बहुत दूर का है; यहूदिया और यरूशलेम से बहुत दूर है; मंदिर, आराधनालय और याजकों से बहुत दूर है; शास्त्रियों, फरीसियों, हेरोदियों और सदूकियों से बहुत दूर है। हम यीशु और उसके चेलों को "हेर्मोन की छाया की एकांत भव्यता में" पाते हैं, एक ऐसी भूमि में जो ज्यादातर अन्यजातीय है। मत्ती ने इस क्षेत्र की पहचान "कैसरिया फिलिप्पी के तट" के रूप में की है।

जब प्रभु और उसके चेलों ने मगदला के क्षेत्र को छोड़ा, तो उन्होंने आगे गलीली झील को पार किया और फिर सीधे उत्तर की ओर कैसरिया फिलिप्पी (तानाशाह फिलिप्पुस की राजधानी) की ओर बढ़े। एडर्सहेम के अनुसार यह लगभग दो दिन की यात्रा थी। यात्रा करते समय, वे दूरी पर हेर्मोन पर्वत को उसकी जुड़वां बर्फ से ढकी चोटियों और उससे आगे लेबनान की भव्यता के साथ देख सकते थे।

गलीली झील के उत्तर में लगभग दस मील की दूरी पर वे मेरोम के जलस्रोत के पास पहुँचे। निस्संदेह वे मेरोम झील के किनारे दलदल और वनस्पतियों की उलझन भरे मार्ग से होकर गुज़रे। शायद उन्होंने याद किया होगा कि यहाँ यहोशू ने उत्तरी गठबंधन को पराजित किया था और कनान की विजय में अंतिम

निर्णायक लड़ाई लड़ी थी। उत्तर-पश्चिम में कादेश नप्ताली था, जो एक प्राचीन शरण नगर था जो बराक का घर था। रोमी सड़क में आगे बढ़ते हुए, वे उस मैदान से होकर गुज़रे जिसमें यरदन के सभी झरने आकर मिलते हैं। सड़क के पश्चिम में यरदन के निचले झरने थे, जो नदी का मुख्य स्रोत थे।

अंत में वे कैसरिया फिलिप्पी पहुँचे, जो समुद्र तल से 1,147 फीट ऊपर था, जो तीन घाटियों के बीच छिपा एक हरा-भरा स्थान था। पास ही एक खड़ी पहाड़ी के पश्चिमी किनारे पर यरदन के ऊपरी स्रोत मौजूद थे। वहाँ नदी एक विशाल गुफा से बाहर फूट निकलती थी, जिसे पुराने समय में अन्यजातीय देवता 'पैन' को समर्पित किया गया था। जब फिलिप्पुस को अगस्तुस से राज्य मिला था, तो उसने सम्राट के सम्मान में पास के शहर पैनियास का नाम बदलकर कैसरिया फिलिप्पी रख दिया था। शहर से कुछ ही दूरी पर फिलिप्पुस का महल था, जो मैकेरस की तरह लगभग पूरी तरह से अभेद्य था, जो चट्टान की सीधी दीवारों पर बनाया गया था।[1]

कैसरिया फिलिप्पी के पड़ोस में, प्रभु अपने चेलों के साथ लगभग एक हफ्ते तक रूका। यहाँ उसने पतरस के अंगीकार को पाया और साथ ही एक क्रूस और एक कलीसिया के बारे में स्पष्ट रूप से बोलना शुरू किया। मैंने इसके महत्व को ध्यान में रखते हुए इस तस्वीर का वर्णन करने के लिए समय लिया है। यहूदी और अन्यजातीय क्षेत्र के बीच सीमा रेखा पर इस दूर और अस्पष्ट स्थान पर, प्रभु ने अपने विचार और मकसद में, आत्मा में और प्रत्यक्ष भविष्यद्वाणी में, एक यहूदी राज्य से मुंह मोड़ लिया और ज्यादातर अन्यजातीय कलीसिया को गले लगा लिया।

(b) यह क्या था (16:13b)

स्पष्ट रूप से बोलने से पहले, उसने अपने चेलों को परखा कि क्या वे महान प्रकाशन के लिए तैयार हैं। उसने दो प्रश्न पूछे। पहला प्रश्न सामान्य प्रकृति का था: "लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?"

(2) प्रश्न का उत्तर दिया गया (16:14)

लोग तरह-तरह की बातें कह रहे थे। कुछ लोगों ने, जैसे कि हेरोदेस ने कहा कि वह मृतकों में से जी उठा यूहन्ना बपतिस्मादाता है। अन्य लोगों ने, पुराने नियम के अंतिम भविष्यद्वक्ताओं के अंतिम पदों पर अपनी राय आधारित करते हुए सोचा कि यीशु एलिय्याह था (मलाकी 4:5)।

यहूदियों द्वारा संरक्षित एक पौराणिक मान्यता के चलते, कुछ लोगों ने सोचा कि यीशु यिर्मयाह था।[2] मान्यता के अनुसार, यिर्मयाह ने परमेश्वर के आदेश से, पिसगा पर्वत पर एक गुफा में तम्बू, सन्दूक और धूप की वेदी को छिपा दिया था। यह गुफा तब तक नहीं मिलेगी जब तक कि परमेश्वर द्वारा इस्राएल को महिमा पुनर्स्थापित करने का समय नहीं आ जाता। मान्यता के साथ एक भविष्यद्वाणी भी जुड़ी हुई थी कि यिर्मयाह मृतकों में से उठकर इस गुफा और इसकी सामग्री को सबके सामने प्रकट करेगा।

चेलों द्वारा निर्मित इस अंतिम समूह में वे लोग थे, जिनके पास कोई निश्चित दृष्टिकोण नहीं था, उन्हें संदेह था कि मसीह "भविष्यद्वक्ताओं में से एक था।" चेलों ने इस्राएल के अगुवों के ईशनिंदा वाले दृष्टिकोण का कोई संज्ञान नहीं लिया, जिन्होंने प्रभु को केवल एक धोखेबाज़ के रूप में चित्रित किया था।

यीशु के बारे में लोगों की अलग-अलग राय थी। आम लोगों ने उसे देश के इतिहास में सबसे पवित्र और महान व्यक्तियों में गिना, लेकिन ऐसा कभी नहीं हो सकता था। प्रभु को अन्य मनुष्यों के साथ रखना, चाहे वे कितने भी सम्मानित क्यों न हों, उसका घोर अपमान करना है। उसकी तुलना किसी भी अन्य व्यक्ति से नहीं की जानी चाहिए।

ख. अगला प्रश्न (16:15-20)

(1) पूछा गया प्रश्न (16:15)

प्रभु ने पहले प्रश्न के उत्तर को अनदेखा कर दिया और अपने चेलों से दूसरा प्रश्न पूछा: "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?"

(2) प्रश्न का उत्तर (16:16-20)

(a) पतरस की अंतर्दृष्टि (16:16)

पतरस ने इस अवसर का लाभ उठाया। उसने तुरंत कहा, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" उत्तर अपनी संक्षिप्तता और व्यापकता में बहुत ही अद्भुत था। पतरस ने यीशु को मनुष्य और ईश्वरीय दोनों माना; उसने पहचाना कि मनुष्य का पुत्र ही वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। यह कहकर कि तू "मसीह है," पतरस ने उसे प्रभु के अभिषिक्त भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के रूप में इस्राएल के सिंहासन पर बिठा दिया। यह कहकर कि, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है," पतरस ने उसे ब्रह्मांड के सिंहासन पर बिठा दिया।

पतरस का महान अंगीकार कलीसिया का मुख्य आधारभूत सिद्धांत है। यीशु ही मसीहा है। वह स्वयं परमेश्वर का पुत्र है। वह मसीहा है। वह परमेश्वर का देहरूप है। वह वास्तव में मनुष्य है; वह परमेश्वर का सार और तत्व है।

(b) पतरस द्वारा दिया गया अलंकरण (16:17-20)

i. प्रकाशन (16:17)

प्रभु ने तुरन्त पतरस के उस अंगीकार को स्वीकार किया और उसकी प्रेरणा के स्रोत की पहचान की: "हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रकट की है।" “योना का पुत्र” का मूल शब्द बर-योना है। प्रभु ने पतरस को "बर-योना" कहकर पुकारा, ताकि यह दर्शाया जा सके कि उसका अंगीकार कितना सच्चा था - प्रभु भी उतना ही सच्चा परमेश्वर का पुत्र था, जितना कि पतरस योना का पुत्र था।

ii. चट्टान (16:18)

फिर सबसे याद रखने लायक शब्द कहे गए, "तू पतरस [पेट्रोस] है, और इस पत्थर [पेट्रा] पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक इस पर प्रबल नहीं होंगे।" ये दो यूनानी शब्द अलग-अलग हैं। पेट्रोस पुल्लिंग में है और एक ढीला पत्थर या कंकड़ को दर्शाता है। जबकि पेट्रा स्त्रीलिंग में है और एक बड़े पत्थर या बड़ी चट्टान को दर्शाता है, जो दृढ़ और अचल है। (सेईर के चट्टानी एदोमी गढ़ को आज भी

पेट्रा ही कहा जाता है।) 16:18 में पेट्रा मसीह को संदर्भित करता है। कलीसिया पतरस पर नहीं, बल्कि मसीह पर बनाई गई है।

हमें याद रखना चाहिए कि प्रभु अपने चेलों से बात कर रहा था जो इब्रानियों के रूप में पुराने नियम के पवित्रशास्त्रों में निहित और आधारित थे। उन्हें पता होगा कि पुराने नियम में "चट्टान" शब्द का प्रयोग कभी भी मनुष्य के प्रतीकात्मक रूप में नहीं किया गया है; इसका प्रयोग केवल परमेश्वर और मसीह के लिए प्रतीकात्मक रूप से किया गया है। मसीह नींव का पत्थर (यशायाह 28:16) और तिरस्कृत पत्थर (भजन 118:22) है। प्रभु यीशु ने प्रतीकों के साथ कभी छेड़छाड़ नहीं की। उसने ईश्वरत्व के सुपरिचित इब्रानी प्रतीक, चट्टान (व्यवस्थाविवरण 32:31) को लिया, और घोषणा की, "इस चट्टान पर [परमेश्वर पर, परमेश्वर के रूप में स्वयं पर] मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।"[3]

पतरस ने प्रभु के कथन को सही ढंग से समझा था (1 पतरस 2:6-8)। यह विचार कि पतरस वह चट्टान है जिस पर कलीसिया का निर्माण किया गया है, गलत है। पतरस केवल एक पत्थर था - शायद पहला पत्थर, लेकिन बस एक पत्थर, उस चट्टान पर बनाए जाने वाले कई पत्थरों में से एक था (1 पतरस 2:4-5)।

उस चट्टान पर क्या बनाया जाना था? कुछ नया, कुछ ऐसा जो पहले कभी प्रकट नहीं हुआ: जिसे प्रभु ने "मेरी कलीसिया [एक्लेसिया]" कहा। शब्द एक्लेसिया यहूदियों और यूनानियों दोनों के लिए सुपरिचित था।[4] इब्रानियों ने इसका इस्तेमाल खुद को एक चुने हुए लोगों के रूप में, एक धार्मिक-तंत्र के रूप में, राजनीति या मानवीय राजाओं के बजाय परमेश्वर द्वारा शासित लोगों के रूप में वर्णित करने के लिए किया। यूनानियों ने इस शब्द का इस्तेमाल स्वतंत्र लोगों की एक सभा, एक नगर सभा का वर्णन करने के लिए किया; कोई भी गुलाम ऐसे समूह का सदस्य नहीं हो सकता था। प्रभु ने इस संसार में अपनी खुद की मंडली, अपने खुद के विश्वास करने वाले लोगों को दर्शाने के लिए एक्लेसिया का इस्तेमाल किया जिन्होंने महान अंगीकार किया है और जो व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से अपने जीवन में उसके अधिकार को बनाए रखते हैं। उसके अनुयायी न तो यहूदी होंगे और न ही यूनानी, बल्कि (जैसा कि उन्हें बाद में कहा जाने लगा) मसीही होंगे।

प्रभु ने कहा, "मैं बनाऊँगा।" वह अपने पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकृति की अँधेरी खदान से पत्थरों को निकालता है, उन्हें आकार देता है और उन्हें "जीवंत [जीवित] पत्थर" बनाता है, और उन्हें "उसी बहुमूल्य विश्वास" के साथ कंधे से कंधा मिलाकर रखता है जो "आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान" में है जिसे इस दिन और युग में बनाया जा रहा है (1 पतरस 2:5; 2 पतरस 1:1; इफिसियों 2:22)।

"और अधोलोक [हेडिस] के फाटक उस पर प्रबल नहीं होंगे।" हेडिस मृतकों का क्षेत्र है, और फाटक शायद उस क्षेत्र में प्रवेश का प्रतीक हैं। प्रभु यह घोषणा कर रहा था कि मृत्यु उसकी कलीसिया पर विजय नहीं प्राप्त कर पाएगी। हम प्रकाशितवाक्य 1:18 में उसकी विजयी ललकार में पढ़ते हैं: "मैं मर गया था, और अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूँ; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं।" मृत्यु मसीह को जितना पकड़ सकती है, उससे अधिक मसीही को कभी नहीं पकड़ सकती। एक दिन मसीह में मरे हुए लोग यह चिल्लाते हुए उठेंगे, "हे मृत्यु तेरी जय कहां रही?" (1 कुरिन्थियों 15:55)

दूसरा दृष्टिकोण यह है कि चूँकि "फाटक" वह स्थान था जहाँ पूर्वी शहर के शासक मिलते थे (उत्पत्ति 19:1; रूत 4:1), "अधोलोक के फाटक" उस स्थान का प्रतीक हैं जहाँ शैतान और उसके गिरे हुए स्वर्गदूत

कलीसिया के विरुद्ध साजिश करते हैं। लेकिन न तो शैतान और न ही उसकी सभी सेनाएँ कभी भी पवित्र आत्मा में जन्मे, पवित्र आत्मा से निर्मित कलीसिया के बराबर हैं। प्रभु यीशु ने क्रूस पर शैतानी सेनाओं को "नष्ट" किया (कुलुस्सियों 2:15) और उसने हमें उनके विरुद्ध विजयी युद्ध के लिए सुसज्जित किया है (इफिसियों 6:11-12)।

दोनों विचारों को एक साथ रखते हुए, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि मसीह ने प्रतिज्ञा की है कि न तो मृत्यु की सामर्थ और न ही शैतान की सामर्थ उस कलीसिया के विरुद्ध प्रबल हो सकेगी जिसे वह बना रहा है।

iii. जिम्मेदारी (16:19-20)

a. भावी जिम्मेदारी (16:19)

इस समय प्रभु ने पतरस को "स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ" सौंपी। चेलों को यह विचार आसानी से समझ में आ गया। इब्रानियों के बीच कुंजियों का प्रतीक याजकों को संदर्भित नहीं करता था; यह शास्त्रियों को संदर्भित करता था, व्यवस्था के शिक्षक जिनका कर्तव्य परमेश्वर के सत्य को खोलना था। शास्त्री अपने पद पर बुरी तरह विफल हो गए थे और इसलिए अब प्रभु ने कुंजियाँ पतरस को सौंप दीं।

राज्य के दृष्टांत को बताने के बाद, प्रभु ने कहा था, “इसलिये हर एक शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है, उस गृहस्थ के समान है जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएँ निकालता है” (मत्ती 13:52)। जब पतरस ने अपने विश्वास से प्रेरित होकर अंगीकार किया (16:16), तो वह "स्वर्ग के राज्य का शास्त्री" बन गया। जब प्रभु ने उससे कहा, "मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा" (16:19), तो वह वास्तव में कह रहा था, "तू मेरा शास्त्री है।"

क्योंकि पतरस कलीसिया युग का महान अंगीकार करने वाला पहला व्यक्ति था, इसलिए उसे यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए कलीसिया के पहले से बंद दरवाज़े खोलने वाला पहला व्यक्ति बनना था। वह पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों को और कुरनेलियुस के घर में अन्यजातियों को सुसमाचार का प्रचार करने वाला पहला व्यक्ति बना। जैसे ही पतरस ने कलीसिया के दरवाज़े खोले, उसकी प्रधानता, जहाँ तक कि कुँजी या किसी अन्य कार्य से संबंध था, समाप्त हो गई। उसे अपने त्वरित और साहसिक अंगीकार का प्रतिफल मिला था।

यूनानी विद्वान इस कथन में व्याकरणिक निर्माण की सामर्थ को रेखांकित करते हैं, "जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा।" यूनानी भाषा में एक सरल भविष्यकाल के पीछे एक पूर्ण कृदंत कर्मवाच्य आता है। यदि प्रभु का इरादा केवल यह कहना था, "जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा," तो उसने एक पूर्ण कृदंत कर्मवाच्य की बजाय सरल भविष्य कर्मवाच्य का उपयोग किया होता। मूल यूनानी में इसका अर्थ है कि चेले पवित्र आत्मा द्वारा इस तरह से निर्देशित होंगे कि वे ईश्वरीय या स्वर्गीय प्रारूप का अनुसरण करेंगे। अर्थात्, वे पृथ्वी पर जो "बांधेंगे" या "खोलेंगे" वह ईश्वरीय प्रारूप के अनुरूप ही होगा। यदि प्रभु ने सरल भविष्य कर्मवाच्य का उपयोग किया होता, तो उसने पृथ्वी पर कलीसिया की कार्रवाई के एक स्वचालित स्वर्गीय समर्थन का संकेत दिया होता, जो पूरी तरह से कुछ और है और निश्चित रूप से उसका तात्पर्य यह नहीं था।

यूहन्ना के सुसमाचार (20:22-23) में इसी प्रकार के एक पद्यांश में यह स्पष्ट है कि पवित्र आत्मा ही पृथ्वी पर लोगों के लिए पापों को क्षमा करना या न करना संभव बनाएगा, यह एक ऐसा विशेषाधिकार है जो केवल परमेश्वर का है।

b. वर्तमान जिम्मेदारी (16:20)

बातचीत का समापन प्रभु द्वारा अपने चेलों को यह आदेश देने के साथ हुआ कि वे इन महान सत्यों को अपने तक ही सीमित रखें और किसी को न बताएं कि वह मसीह हैं। उसने पहले ही यहूदी राष्ट्र को परख लिया था और यहूदियों ने उन्हें ग्रहण नहीं किया था। अब उनके सामने अपने आप घोषित करना व्यर्थ था (कम से कम पिन्तेकुस्त से पहले तो नहीं)। उनका विनाश तय हो चुका था और उनके अपराध को और आगे बढ़ाने का कोई मतलब नहीं था।

2. पतरस और क्रूस (16:21-28)

पतरस ने मसीह के बारे में सच्चाई को पूरे मन से स्वीकार किया था। क्रूस के बारे में सच्चाई कुछ और ही थी। पतरस उसे ग्रहण नहीं कर सका। वह व्यक्ति जो मसीह के परमेश्वरत्व का सामना करने पर शानदार ढंग से विजयी हुआ था, अब मसीह की मृत्यु का सामना करने पर मुंह के बल गिर गया। परमेश्वरत्व को समझना संभव था; लेकिन गुलगुता को समझना असंभव था।

क. क्रूस की चुनौती (16:21-23)

(1) क्रूस की भविष्यद्वाणी (16:21)

(a) इस प्रकाशन का महत्वपूर्ण समय (16:21a)

पतरस के महान अंगीकार और कलीसिया के बारे में प्रभु का प्रकाशन मत्ती के सुसमाचार के आधारभूत विभाजनों में से एक है। "उस समय से," प्रभु ने क्रूस के बारे में अधिक से अधिक बात की और कलीसिया के बारे में और अधिक प्रकाशन दिया। चेलों ने ऊंचाइयों को छू लिया था; अब उन्हें गहराई को देखना था। अब से उन्हें अधिकारियों के हाथों उसके अंतिम तिरस्कार और उसकी मृत्यु के लिए खुद को तैयार करना था, जो सूर्यास्त की तरह निश्चित थी। मत्ती ने कहा कि प्रभु ने इन चीजों के बारे में बात करना "शुरू" किया। वह आने वाले दिनों में उनके बारे में बात करता रहेगा, और अधिक विवरण जोड़ते जाएगा।

(b) इस प्रकाशन का चौंकाने वाला सत्य (16:21b-d)

उसने प्रकाशन के दो पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करके शुरुआत की, एक घृणा से भरा और दूसरा आशा से भरा हुआ। उसने संकेत दिया कि धार्मिक अगुवे उसके विरूद्ध षडयंत्र रचेंगे और उसे मार डालेंगे, लेकिन उनका निर्णय अंतिम नहीं होगा, क्योंकि वह मरे हुओं में से फिर जी उठेगा।

चेलों ने शायद ही इस आशापूर्ण भाग को सुना हो। जिस भाग ने उन्हें अंदर तक झकझोर दिया वह यह था: "यरूशलेम को जाऊं, और पूर्वजों और महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुःख उठाऊं; और मार डाला जाऊं"। शायद उन्होंने 'और' की लय पकड़ ली थी। और! और! और! यह जानबूझकर की गई घोषणा थी जो परमेश्वर के पुत्र के आगे बढ़ने के प्रत्येक कदम को चिह्नित करता था। लेकिन वे अंतिम 'और' को सुनने से चूक गए, जो उतना ही जानबूझकर, उतना ही निर्णायक था: "और तीसरे दिन जी उठूं।"

16:21 में "अवश्य है" शब्द पर ध्यान दें। इसे एक बार कहा गया है, लेकिन यह पूरे वाक्य में समाहित है। हम इस विचार को इस तरह से व्यक्त कर सकते हैं: "जिसे तुमने अभी परमेश्वर के पुत्र के रूप में स्वीकार किया है, उसे यरूशलेम जाना होगा और बहुत सी पीड़ाएँ सहनी होगी और उसे मार डाला जाएगा और वह फिर से जी उठाया जाएगा।" खतरे का बिंदुस्थान यरूशलेम था, लेकिन यीशु यरूशलेम से दूर नहीं रह सकता था क्योंकि वह "अवश्य" अनंत काल से गरजता हुआ आया था। मसीह की मृत्यु पृथ्वी की नींव से पहले, समय की शुरुआत से पहले निर्धारित की गई थी। वह मरने के लिए जगत में आया था।

घटनाओं को अपना मार्ग बनाना होगा। मनुष्य उसे मार डालेंगे; परमेश्वर उसे फिर से जिलाएगा। क्रूस मनुष्यों को उद्धार देने के लिए परमेश्वर का साधन बन जाएगा। यह "अवश्य" अतीत से निकलकर अनंत काल के भविष्य के युगों का मार्ग प्रशस्त करेगा। पुनरुत्थान का "अवश्य" ईश्वरीय योजना का एक अभिन्न अंग था।

(2) क्रूस की मनाही (16:22-23)

(a) पतरस ने प्रभु को कैसे डांटा (16:22)

इसमें कोई संदेह नहीं कि सभी चेले इस प्रकाशन से आश्चर्यचकित थे। पतरस सबसे पहले होश में आया। मत्ती ने कहा, "पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा।" "उसे अलग ले जाकर" का अर्थ है "उसे पकड़ लिया।" पतरस का मकसद प्रभु को थोड़ा उत्साहित करने वाला भाषण देना था। जाहिर है कि प्रभु ने उसे अपनी बात पूरी नहीं करने दी, क्योंकि मत्ती ने बताया कि पतरस ने उससे "झगड़ना" शुरू कर दिया। यहाँ "झिड़कना" शब्द का मूल अनुवाद है "डांटना।" पतरस उससे नाराज़ हो गया और कहा, "हे प्रभु, परमेश्वर न करे; तुझ पर ऐसा कभी न होगा।"

(b) प्रभु ने पतरस को कैसे डांटा (16:23)

ऐसा लगता है कि प्रभु ने पतरस की ओर पीठ फेर ली, अन्य चेलों की ओर मुँह किया और फिर पतरस से कहा, "हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो: तू मेरे लिये ठोकर का कारण [स्कैंडलोन, 'ठोकर का पत्थर'] है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।" पतरस के पीछे शैतान छिपा हुआ था। आवाज़ पतरस की थी; लेकिन शब्द शैतान के थे। कुछ क्षण पहले, यीशु ने वास्तव में शमौन से कहा था, "तू पतरस है; तू एक पत्थर है।" अब वह कह रहा था, "तू एक स्कैंडलोन है, अर्थात् एक ठोकर का पत्थर है।"

क. क्रूस का चुनाव (16:24-28)

(1) इसमें शामिल सिद्धांत (16:24-25)

"तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।" कलीसिया के इतिहास में यह विरोधाभास अक्सर सामने आता है। क्रूस केवल उसके लिए ही नहीं था; यह हमारे लिए भी है।

संसार इस सिद्धांत को, अर्थात् क्रूस के तर्क को मूर्खता के रूप में देखता है। लेकिन जैसा कि जिम इलियट, इक्वाडोर में भारतीयों द्वारा शहीद किए गए पांच युवकों में से एक ने अपनी डायरी में लिखा था, "वह मूर्ख

नहीं है कि वह दे देता है जो वह संभाल नहीं सकता ताकि वह उसे पा सके जो वह खो नहीं सकता।"[5] सी.टी. स्टड, जिसने अन्यजातीय जनजातियों तक सुसमाचार पहुँचाने के लिए प्रसिद्धि और धन त्याग दिया था, ने लिखा:

कुछ लोग कलीसिया या चैपल की घंटी की

ध्वनि के भीतर रहना चाहते हैं

लेकिन मैं एक बचाव अभियान चलाना चाहता हूँ

वह भी नरक के एक गज के दायरे में [6]

निस्संदेह स्टड को उसके समकालीन समाजवादियों द्वारा मूर्ख माना जाता था। कलीसिया का इतिहास ऐसे लोगों के इतिहास से भरा पड़ा है। कुछ लोग अपने जीवनकाल में ही नायक बन गए या अपनी मृत्यु के बाद ऐसे बन गए। यहाँ अज्ञात और गुमनाम अन्य कई लोगों को स्वर्ग के अभिजातीय वर्ग में गिना जाता है।

(2) शामिल प्राथमिकताएँ (16:26)

"यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?"

चेले एक भौतिक राज्य के बारे में सोच रहे थे, जो यरूशलेम से शुरू होकर संसार पर जय प्राप्त करेगा। शैतान ने एक बार मसीह को भी ऐसा राज्य देने की पेशकश की थी। लेकिन अब, कलवरी के प्रकाश में, सांसारिक राज्य के बारे में अब कोई विचार नहीं कर सकते थे, कम से कम तब तक तो नहीं जब तक कि अनुग्रह में परमेश्वर के उद्देश्य एक कलीसिया के निर्माण, विकास और स्वर्गारोहण में पूरे नहीं हो जाते।

प्रभु कह रहा था कि उसके चेलों में पाप की वर्तमान स्थिति में संसार के लिए किसी भी प्रकार की इच्छा नहीं होनी चाहिए। यहूदियों की सांसारिक मसीहा की आशाएँ उन लोगों के जीवन में कोई भूमिका नहीं निभा सकतीं जो कलवरी गए थे। प्रभु ने उस कीमत की ओर इशारा किया जो संसार पर जय पाने के लिए उसे चुकानी होगी।

यह ठीक ही कहा गया है कि आत्मा के सामने आने वाला सबसे पहला प्रश्न होता है "स्वर्ग या नरक?" जब यह सवाल स्वर्ग के पक्ष में हल हो जाता है, तो आत्मा के सामने आने वाला दूसरा प्रश्न होता है "स्वर्ग या संसार?" हमें दूसरे प्रश्न का समाधान क्रूस के तले और आत्मा के मूल्य के प्रकाश में करना होगा।

(3) इसमें शामिल भविष्यद्वाणियाँ (16:27-28)

(a) प्रभु के आगमन को पहले से बताया गया (16:27)

प्रभु ने भविष्यद्वाणी की, "मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।" इस युग में मसीहियों के लिए एक क्रूस है, लेकिन यह वर्तमान युग जल्द ही समाप्त हो जाएगा। अगले युग में एक मुकुट दिया जाएगा।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं द्वारा देखा गया राज्य - शाब्दिक सहस्राब्दी राज्य, मसीह का विश्वव्यापी साम्राज्य - यहूदी हठधर्मिता और अविश्वास के द्वारा रद्द नहीं किया गया है। इसे केवल स्थगित किया गया है। यह ज़रूर आएगा। प्रभु यीशु फिर से आ रहा है, अपनी महिमा में आ रहा है, स्वर्ग की सेनाओं के साथ आ रहा है, प्रतिफल देने आ रहा है, शासन करने आ रहा है। इसलिए आइए हम अपने क्रूस को उठाएँ और एक दिन प्रतिफल के रूप में मुकुट को पाएं।

(b) प्रभु का पहले से बताया गया प्रकाशन (16:28)

प्रभु के अगले वचनों ने चेलों में काफी हलचल मचाई होगी: "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कितने ऐसे हैं; कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।" इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह रूपांतरण के पहाड़ पर पतरस, याकूब और यूहन्ना के आने वाले अनुभव का उल्लेख कर रहा था। यदि अध्याय विभाजन को हटा दिया जाए तो संबंध और भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

ख. राज्य की अभिव्यक्तियाँ (17:1-23)

हम रूपांतरण की कहानी में दर्शन, अतिथियों और आवाज़ों पर विचार करने जा रहे हैं। राज्य के इस प्रकटीकरण के बाद घाटी में एक और प्रकटीकरण हुआ।

1. दर्शन (17:1-2)

पतरस के अंगीकार के बाद अब तक छह दिन बीत चुके थे, यह सच समझने के लिए अभी काफी समय था कि मुकुट से पहले क्रूस का होना अवश्य है। हम प्रभु और उसके तीन चेलों (पतरस, याकूब और यूहन्ना) को हर्मोन की ऊंचाइयों पर चढ़ते हुए देख सकते हैं, जो समुद्र तल से लगभग 9,400 फीट ऊपर है। ऊबड़-खाबड़ पर्वतमाला उस भयानक उजाड़ का कोई संकेत नहीं देती थी जो उस पहाड़ पर चढ़नेवालों का इंतजार कर रही थी। वे जल्द ही बर्फ के बीच खड़े होने वाले थे।

हर्मोन पहाड़ी! नीचे यरदन के स्रोत और कैसरिया फिलिप्पी का सुंदर लेकिन लगभग अन्यजातीय शहर स्थित था। शिखर के उस पार अन्यजातियों की बड़ी विस्तृत भूमि थी। दक्षिण में गलील, सामरिया, दिकापुलिस, पेरिया और यहूदिया स्थित थे। यह स्थान प्राचीन काल के भयानक बाल पंथों के अनुयायियों के लिए पवित्रस्थान था, लेकिन अब से यह यीशु के अनुयायियों के लिए पवित्र बनने वाला था। पतरस एक दिन इसे "पवित्र पहाड़" कहेगा (2 पतरस 1:18)।

मत्ती, मरकुस और लूका सभी ने रूपांतरण पहाड़ी पर हुई घटना को दर्ज किया, लेकिन यूहन्ना ने नहीं किया - हालाँकि वह उन सभी में से एकमात्र व्यक्ति था जो वहाँ मौजूद था। वह इसके बारे में चुप क्यों था? यूहन्ना ने मसीह के परमेश्वरत्व को प्रदर्शित करने के लिए लिखा था, और रूपांतरण मसीह के परमेश्वरत्व का प्रमाण नहीं था। इस प्रेरित को अन्य कई हिस्सों में इसके प्रचुर प्रमाण मिले।

सतह पर ऐसा लगता है कि महिमा का यह प्रकाशन मसीह के परमेश्वर होने के दावे का सबसे बड़ा सबूत था, कि रूपांतरण पतरस के इस अंगीकार की सच्चाई का सबसे बड़ा प्रदर्शन था, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (16:16)। लेकिन ऐसा नहीं था। रूपांतरण मसीह के मानवीय जीवन का चरमोत्कर्ष था।

मत्ती ने लिखा कि प्रभु का "रूपांतर" हुआ (17:2)। "रूपांतर" शब्द का अनुवाद मेटामोर्फूमाई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "रूप बदलना।" प्रभु का रूपांतर हुआ ताकि उसकी परिपूर्ण, पापरहित, पवित्र मनुष्यजाति की शानदार भव्यता प्रदर्शित हो सके। रूपांतरण का यही उद्देश्य था और इसीलिए यूहन्ना ने इसे अपने सुसमाचार में दर्ज नहीं किया।

कैम्पबेल मॉर्गन ने बताया कि प्रभु का मानवीय जीवन तीन चरणों में व्यक्त किया गया था: "निर्दोषता, पवित्रता और सिद्ध महिमा।"[7] यह प्रक्रिया निर्दोषता से शुरू हुई; वह एक पापरहित स्वभाव के साथ पैदा हुआ था। हम ऐसे नहीं पैदा हुए। बचपन की मासूमियत अंतर्निहित पापमय प्रकृति के प्रकट होने से पहले ही खत्म हो जाती है। एक बच्चा चलने या बोलने के लिए पर्याप्त बड़ा होने से पहले ही गुस्से में आ जाता है। एक बच्चा झूठ बोलेगा, चोरी करेगा और आज्ञा को टालेगा। लेकिन यीशु ने कभी ऐसा नहीं किया। वह अपने सोच-विचार, वचन और कर्म में बिल्कुल पापरहित था। वह बिना पाप के पैदा हुआ था और उसने अपने शुरुआती जीवन में उस मासूमियत को बनाए रखा।

फिर प्रलोभन आया। मानवीय स्वभाव अंततः बाहर से प्रलोभन और उकसावे के विरूद्ध आता है, इसलिए यीशु को शैतान द्वारा प्रलोभित किया गया। महा-प्रलोभक को स्वयं यीशु की पापरहित मनुष्यजाति पर आक्रमण करने की अनुमति दी गई। प्रलोभन की भयंकर गर्मी को बढ़ाया गया, लेकिन व्यर्थ ही रहा। वह न केवल निर्दोष था; बल्कि वह पवित्र भी था।

रूपांतरण के पहाड़ पर प्रक्रिया को पूर्णता तक आगे बढ़ाया गया। यीशु का परिपूर्ण मनुष्यत्व, जो निर्दोषता और त्रुटिहीन पवित्रता में प्रदर्शित की गई थी, वहाँ अपने पूर्ण महिमा में प्रकट हुआ। प्रभु को उसके मनुष्यत्व की सारी महिमा में देखा गया। वह मनुष्य था जैसा कि परमेश्वर ने हमेशा मनुष्य को होने का इरादा किया था। हम उस महिमा के बारे में कुछ नहीं जानते, क्योंकि हमारे अंदर पाप है। लेकिन एक दिन हम उसके जैसे हो जाएँगे और हम भी महिमान्वित हो जाएँगे। परमेश्वर की दृष्टि में हम पहले से ही महिमा पाए हुए हैं (रोमियों 8:30)।

2. अतिथि (17:3)

पहाड़ पर सात व्यक्ति मौजूद थे। वे तीन समूहों में इकट्ठे हुए थे: (1) पतरस, याकूब और यूहन्ना; (2) मूसा और एलिय्याह; (3) यीशु और पिता। सात में से दो अतीत से आए थे (मूसा और एलिय्याह); तीन वर्तमान से थे (पतरस, याकूब और यूहन्ना); दो अनंत काल से थे (यीशु और पिता)। पुराने नियम का प्रतिनिधित्व मूसा ने किया था, जो व्यवस्था के लिए खड़ा था, और एलिय्याह ने, जो भविष्यद्वक्ताओं का प्रतिनिधित्व कर रहा था। नए नियम का प्रतिनिधित्व पतरस, याकूब और यूहन्ना ने किया था। याकूब, मरने वाले प्रेरितों में से पहला, कलीसिया का शहीद होने वाला था; यूहन्ना कलीसिया का रहस्यवादी था; पतरस कलीसिया का संदेशवाहक था, जिसे यहूदी और अन्यजातीय लोगों दोनों के लिए द्वार को खोलने के लिए नियुक्त किया गया था।

3. आवाज़ें (17:4-8)

लूका 9:31 हमें बताता है कि मूसा और एलिय्याह ने इस उल्लेखनीय अवसर पर यीशु से क्या बात की: "उसके मरने की चर्चा कर रहे थे, जो यरूशलेम में होनेवाला था।" यहाँ "मरने" शब्द का मूल अनुवाद वास्तव

में "प्रस्थान" है। मूसा ने नेबो की एकांत पहाड़ियों पर परमेश्वर की बाहों में अकेले मरके और स्वर्गदूतों द्वारा दफनाए जाने के द्वारा अपना प्रस्थान किया था। वह उन सभी का प्रतिनिधित्व करता था जो मृत्यु के द्वारा इस जीवन को छोड़ देते हैं। एलिय्याह ने अग्निमय रथ के साथ प्रस्थान किया था। वह बिना मरे स्वर्ग में उठा लिया गया था, इसलिए वह उन सभी जीवित पवित्र लोगों का प्रतिनिधित्व करता था जो स्वर्गारोहण में उठाए जाएँगे।

इन दो प्रतिनिधि पुरुषों ने यीशु से उसके प्रस्थान के बारे में बात की। उसकी आने वाली मृत्यु मूसा से जुड़े व्यवस्था के सभी बलिदानों और भविष्यद्वक्ताओं की सभी बातों को पूरा करेगी, जिनमें से एलिय्याह सर्वोच्च प्रतिनिधि था। यह क्या ही महान बातचीत रही होगी!

क. मूर्ख आवाज़ (17:4)

मत्ती ने तीन आवाज़ें दर्ज कीं। पहली आवाज़ पतरस की मूर्खतापूर्ण आवाज़ थी। उसने अचानक कहा, "हे स्वामी, हमारा यहां रहना भला है: इसलिए हम तीन मण्डप बनाएं, एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।" ध्यान दें कि पतरस ने तीनों व्यक्तियों को एक साथ जोड़कर 'और' का क्रम बनाया, मानो मूसा, एलिय्याह और यीशु को एक ही स्तर पर रखना चाह रहा हो।

ख. पिता की आवाज़ (17:5)

पतरस अभी भी अपनी गैर-जिम्मेदाराना बकवास को जारी रखे हुए था, तभी अचानक हर्मोन की चोटी बादल से लिपट गई। यह अपने आप में असामान्य नहीं था। बादलों का एक घना आवरण अक्सर मिनटों में उस पहाड़ की चोटी को ढक लिया करता है, और फिर उतनी ही जल्दी बिखर कर गायब भी हो जाता है। लेकिन यह बादल कुछ अलग था। लेख कहता है कि यह "एक उजला बादल" था और इसका आशय है कि यह शेकिना महिमा का बादल था। पुराने नियम के दौरान वह बादल एक बार पर्दे के पीछे अति-पवित्र स्थान के भीतर रखे पवित्र सन्दूक के प्रायश्चित्त के ढकने पर विराजमान था। शेकिना परमेश्वर की उपस्थिति का दृश्यमान प्रतीक था।

जब इंग्लैंड की रानी बकिंघम पैलेस से विंडसर कैसल, सैंड्रिंघम या बालमोरल में जाती है, तो राजकीय झंडा उसके साथ जाता है। जब झंडा इनमें से किसी एक निवास पर फहराया जाता है, तो इसका मतलब है कि रानी व्यक्तिगत रूप से वहाँ मौजूद है। उसी तरह शेकिना ने अपने लोगों के बीच परमेश्वर की उपस्थिति की घोषणा की। वह महिमा बहुत पहले ही इस्राएल से उठा ली गई थी, लेकिन अब यह यीशु का सम्मान करने और पहाड़ पर परमेश्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति की घोषणा करने के लिए प्रकट हुई थी।

फिर पिता की आवाज़ आई जिसने पतरस की ग़लत टिप्पणियों को तुरंत समाप्त कर दिया: "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूँ: इस की सुनो" (17:5)। उसी आवाज़ ने यीशु के बपतिस्मा के समय भी यही वचन कहे थे (3:17)। उस समय आवाज़ ने निजी तौर पर बिताए गए गुप्त वर्षों का समर्थन किया था। अब इसने सार्वजनिक रूप से बिताए गए वर्षों का समर्थन किया। परमेश्वर की सर्वज्ञ दृष्टि रात-दिन अपने पुत्र पर थी। पिता ने उस पर आनन्दित होकर अब उसे एक बार फिर अपना प्रिय पुत्र घोषित किया। इस प्रकार रूपांतरण में मसीह के मनुष्यत्व की महिमा मसीह के परमेश्वरत्व की घोषणा में स्वयं परमेश्वर द्वारा स्वीकार की गई।

ग. परिचित आवाज़ (17:6-8)

बादल को देखकर और इन आवाजों को सुनकर चेलों में बड़ा भय व्याप्त हो गया, लेकिन "यीशु ने पास आकर उन्हें छूआ, और कहा, उठो; डरो मत" (17:7)। उसने पहले से ही मध्यस्थता का महान कार्य संभाल लिया है जो वर्तमान युग में उसका मुख्य कार्य होगा। वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच एकमात्र बिचवई होगा।

"तब उन्होंने अपनी आंखे उठाकर यीशु को छोड़ और किसी को न देखा" (17:8)। मूसा चला गया था; एलिय्याह जा चुका; केवल यीशु रह गया था। इस प्रकार पुराने नियम के युग को आम तौर पर नए नियम के युग के लिए जगह बनाने के लिए हटा दिया गया था जिसमें केवल प्रभु यीशु ही महान महायाजक, पिता के साथ हमारा मध्यस्थ और सहायक हैं।

4. घाटी (17:9-23)

क. घाटी में उतरना (17:9-21)

(1) उपदेश (17:9-13)

रूपांतरण पर्वत से उतरते समय चेलों ने प्रभु से एलिय्याह के बारे में पूछा। हालाँकि उन्हें इस बात में कोई संदेह नहीं था कि उन्होंने अभी-अभी मसीहा को उस रूप में देखा है, जैसा किसी और ने कभी नहीं देखा था, फिर भी उनके पास चीज़ों का सही दृष्टिकोण नहीं था। वे यह समझने में विफल रहे कि इस्राएल से राज्य का प्रस्ताव वापस ले लिया गया था और प्रभु के दूसरे आगमन पर इसे फिर से प्रस्तावित किए जाने से पहले कई युग बीत जाएँगे। पहाड़ पर एलिय्याह के दर्शन ने उनकी घबराहट को और अधिक बढ़ा दिया था, क्योंकि पुराने नियम में मसीहा के आने से पहले एलिय्याह के आने के बारे में बताया गया था।

प्रभु ने तब स्पष्ट रूप से घोषणा की कि राज्य की अंतिम स्थापना से पहले एलिय्याह "सब कुछ सुधारने" (17:11) के लिए वापस आएगा। यीशु ने यह भी स्पष्ट किया कि राष्ट्र किसी भी तरह से इस प्रकार की भेंट के लिए तैयार नहीं था। यूहन्ना बपतिस्मादाता पहले से ही एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में आ चुका था, लेकिन उसका तिरस्कार कर दिया गया। प्रभु की वापसी की घोषणा करने के लिए एलिय्याह के आने में अब कई दिन लग जाएँगे।

यूहन्ना बपतिस्मादाता की हेरोदेस द्वारा हत्या कर दी गई थी, लेकिन इससे पहले इस्राएल के अगुवों ने उसे अस्वीकार कर दिया था। वे पीछे हट गए थे और हेरोदेस द्वारा यूहन्ना को गिरफ्तार करने और उसकी हत्या करने की अनुमति दे दी थी, और अब वे मनुष्य के पुत्र को भी उसी तरह मार डालने के लिए सक्रिय कदम उठा रहे थे।

(2) दुष्टात्मा ग्रसित व्यक्ति (17:14-18)

जब यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना पहाड़ पर थे, तो एक पिता अपने दुष्टात्मा ग्रस्त बेटे को उन चेलों के पास ले आया जो पीछे रह गए थे। दृश्य का वर्णन अगर पद की बजाय समग्र रूप से लिया जाए तो हमें वर्तमान युग के अंतिम दिनों की एक आकर्षक सम्पूर्ण तस्वीर मिलती है।

घाटी में शेष बचे चेले एक निराश कलीसिया का चित्रण प्रस्तुत करते हैं। मसीह वहाँ अनुपस्थित था, वह अपनी महिमा में प्रवेश करने के लिए ऊपर उठा लिया गया था। उसके अपने कुछ लोग उसके साथ रहने के लिए चले गए थे। नीचे तल में, विश्वासी लोग संकट की उस चुनौती के सामने बेबस लग रहे थे और अपनी असमर्थता के सामने घुटने टेक चुके थे। उन्होंने स्पष्ट रूप से प्रार्थना और उपवास के बारे में नहीं सोचा था। ऐसा लग रहा था कि परमेश्वर की वास्तविक सामर्थ उसके लोगों से दूर हो गई है। "हम उसे क्यों नहीं निकाल पाए?" यही उनका दयनीय विलाप था (17:19)। एक कारण यह था कि उन्होंने विश्वासियों के युद्ध के आत्मिक हथियारों का लाभ नहीं उठाया था। दूसरा कारण उनका अविश्वास था।

दुष्टात्माग्रस्त लड़का आज की दुनिया के उन लोगों की तस्वीर है जो दुष्ट आत्माओं और गुलामी, पीड़ादायक वासनाओं की गिरफ़्त में हैं। लड़का एक निर्दयी, भयंकर दुष्टात्मा के कब्ज़े में था। लूका 9:38 हमें बताता है कि वह अपने पिता का इकलौता बेटा था, एक तथ्य जिसका उल्लेख शायद हमें स्वर्गीय पिता के इकलौते बेटे की याद दिलाने के लिए किया गया था, जिसे अभी-अभी उस ऊँचे पहाड़ पर घोषित किया गया था। लड़के के पिता को लगा कि चेलों (कलीसिया का प्रतिनिधित्व करने वाले) को मदद करने में सक्षम होना चाहिए और बेशक वह सही भी था।

संसार कलीसिया को आंशिक रूप से इसलिए अनदेखा करता है क्योंकि मानवीय मामलों में लगातार बिगड़ते संकटों के सामने इसकी सामर्थ की कमी साफ़ दिखाई देती है। करिश्माई पंथ के लोगों के इतने प्रभावशाली होने का एक कारण यह है कि वे अपने पास सामर्थ होने का दावा करते हैं। लेकिन जब वह सामर्थ उस तरह से काम नहीं करती जैसा कि वे उम्मीद करते हैं या जिस तरह से कई करिश्माई लोग सिखाते हैं, तो अनिवार्य रूप से परिणाम दिल का टूटना होता है। जो लोग उनके सोते से पानी पीते हैं, उन्हें फिर से प्यास लगती है।

आज की भीड़ की तरह ही, दर्शक इधर-उधर घूम रहे थे, इधर-उधर खींचे जा रहे थे। भीड़, बिना किसी दृढ़ विश्वास, चिंता या विवेक के, पराजय को देख रही थी, बेबस विश्वासियों पर उँगलियाँ उठा रही थी, और निस्संदेह चेलों की अधिकार के साथ बोलने या सामर्थ के साथ कार्य करने की असमर्थता का मन ही मन आनंद उठा रही थी।

वहाँ मौजूद धार्मिक अगुवे वर्तमान युग के मृत धर्म को दर्शाते हैं। मरकुस 9:14 हमें बताता है कि शास्त्री, जो पवित्रशास्त्रीय मामलों के विशेषज्ञ होने का दावा करते थे, चेलों से सवाल कर रहे थे। ये अगुवे मसीह के विरोध में थे और प्रभु के चेलों को रक्षात्मक स्थिति में डाल रहे थे। निस्संदेह शास्त्री भी इस संकट की घड़ी में चेलों की कुछ भी न कर पाने की दयनीय विफलता में गुप्त संतुष्टि पा रहे थे। धार्मिक अगुवों के पास खुद कोई सामर्थ नहीं थी और शायद उन्हें इन सुसमाचारकों को उसी स्थिति में देखकर अच्छा लग रहा था।

तब उनके बीच यीशु वापस आया, अपने साथ अनुपस्थित चेलों को भी लेकर आया। अन्य युगों के संतों की अद्‌भुत संगति में, वे प्रभु को महिमा में निहार रहे थे। यीशु की वापसी के साथ, सब कुछ तुरंत बदल गया। दुष्टात्मा को तुरंत बाहर निकाल दिया गया और लड़के का मानसिक संतुलन वापस सही हो गया। केवल यीशु ही अंधकार की सामर्थ के हाकिम को संसार से बाहर निकाल सकता है और पृथ्वी पर शांति ला सकता है।

(3) चेले (17:19-21)

पराजित चेलों ने सबसे पहले प्रभु से उनकी असफलता का कारण पूछा। "अपने विश्वास की घटी के कारण" उसने एक प्रभावी जवाब दिया। उन्हें कितना विश्वास चाहिए था? सिर्फ़ एक राई के दाने के बराबर। लेकिन वे आत्मिक सामर्थ के एकमात्र स्रोत के रूप में परमेश्वर पर अपनी निर्भरता को भूल गए थे। उनकी भूल का सबूत प्रार्थना और उपवास के प्रति उनकी उपेक्षा थी।

ख. घाटी से परे की समझ (17:22-23)

एक बार फिर से प्रभु ने चेलों को अपनी आने वाली मृत्यु का स्मरण कराया। इस बार उसने यह भी बताया कि उसके साथ विश्वासघात किया जाएगा। अब उनके मनों में भयानक समाचार उतरने लगा। घोषणा का विरोध करने की बजाय, वे शोक में डूब गए।

ग. राज्य के सदस्य (17:24-18:35)

1. सांसारिक रिश्ते (17:24-27)

क. कर की रकम की माँग की गई (17:24-25a)

चेले कफरनहूम में वापस आ गए थे और अचानक पतरस के सामने रिश्तों और संबंधीय विश्वासयोग्यता का सवाल खड़ा हो गया। उसका सामना उन लोगों से हुआ जो मंदिर और उसकी सेवाओं के रखरखाव के लिए सभी यहूदियों से वसूल किए जाने वाले वार्षिक आधा शेकेल कर को इकट्ठा करने के लिए जिम्मेदार थे। "क्या तुम्हारा गुरू मन्दिर का कर नहीं देता?" उन्होंने प्रभावी ढंग से पूछा।

यरूशलेम मंदिर का रख-रखाव बहुत महंगा था, इसलिए मंदिर के अधिकारियों ने निर्गमन 30:13 का इस्तेमाल करके बीस साल से ज़्यादा उम्र के सभी यहूदी पुरुषों पर मंदिर का कर लगाने का अधिकार दिया। आधा शेकेल दो या तीन दिन के वेतन के बराबर था। सैद्धांतिक रूप से कर अनिवार्य था, हालाँकि फरीसी और सदूकी इस मुद्दे पर बहस करते थे, जैसा कि उन्होंने हर चीज़ के बारे में किया था। अदार (मार्च) महीने की पहली तारीख को अधिकारियों ने सार्वजनिक घोषणा की कि कर चुकाने का समय आ गया है। अदार की पंद्रहवीं तारीख को पूरे देश में संग्रह चौकी स्थापित किए गए थे। महीने की पच्चीसवीं तारीख तक चौकियों पर भुगतान किया जा सकता था; उसके बाद भुगतान सीधे यरूशलेम के मंदिर में किया जाना था।

हमें याद रखना चाहिए कि यह यहूदी कर था, रोमी कर नहीं, और यह एक ऐसा कर था जिसकी पवित्रशास्त्र में अनुमति थी। जो आधा शेकेल दिया जाता था उसे परमेश्वर को दिए जाने के समान माना जाता था।

इसलिए कर संग्रहकर्ताओं ने पतरस को घेर लिया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह प्रश्न शत्रुतापूर्ण तरीके से और दुर्भावनापूर्ण इरादे से पूछा गया था। राजस्व अधिकारी आसानी से यीशु से सीधे पूछ सकते थे क्योंकि वह शहर में वापस आ गया था और सबके लिए उपलब्ध था। निस्संदेह वे उम्मीद कर रहे थे कि यीशु कर का भुगतान करने से इनकार कर देगा या पतरस कोई दोषपूर्ण बयान देगा। हालाँकि, पतरस जानता था कि प्रभु ने मूसा की व्यवस्था का अक्षरशः और आत्मा से पालन किया था। उसने उसे इससे हटकर कुछ करते हुए कभी नहीं देखा था। इसलिए उसने संक्षिप्त में 'हाँ' में उत्तर दिया और वहाँ से चला गया।

ख. कर के धन पर चर्चा (17:25b-27)

प्रभु ने पतरस द्वारा इस विषय को उठाने का इंतज़ार नहीं किया। सर्वज्ञानी होने के कारण, वह सब कुछ पहले से जानता था जो हुआ था। यीशु ने पतरस से एक प्रश्न पूछा: "पृथ्वी के राजा महसूल या कर किन से लेते हैं? अपने पुत्रों से या परायों से?" (17:25) प्रभु पतरस को कैसरिया फिलिप्पी में उसके द्वारा किए गए अंगीकार और रूपांतरण के पहाड़ पर उसने जो सुना था, उसकी याद दिला रहा था। प्रभु के प्रश्न को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: "पतरस, तुमने कहा कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ। अब तुम कह रहे हो कि मुझे यह आधा शेकेल देना होगा। परमेश्वर के पुत्र के रूप में उस व्यवस्था का मुझ पर कोई अधिकार कैसे हो सकता है?"

हालाँकि, प्रभु ने इस मुद्दे के दूसरे पहलू को पहचाना। "तौभी इसलिए," उसने प्रभावी रूप से कहा, "कि हम उन्हें ठोकर न खिलाएं..." यीशु ने पतरस से कहा कि वह मछली पकड़ने की बंसी ले, झील में उसे डाले, और जो पहली मछली उसे मिले, उसे लेकर उसका मुँह खोले। वहाँ उसे प्रभु और खुद दोनों के लिए कर चुकाने के लिए पर्याप्त धन मिलेगा। सृष्टि पर मसीह के प्रभुत्व का क्या ही शानदार प्रदर्शन है! उसने जानबूझकर कर इस तरह से चुकाया कि यह दिखाया जा सके कि प्रकृति का क्षेत्र उसके अधीन था। (नए नियम में यही एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ इस तरह की मछली पकड़ने का उल्लेख किया गया है।)

हम कल्पना कर सकते हैं कि पतरस वापस उन कर-संग्रहकर्ता के पास गया और कहा, "महोदय, यदि आप चाहें तो मेरे साथ आइए," और फिर उसने वही किया जो यीशु ने उसे करने के लिए कहा था। मैं यह कल्पना कर सकता हूँ कि पतरस ने मछली के मुँह से सिक्का लेने और कर चुकाने के बाद, उस कर-संग्रहकर्ता को उसके खाने के लिए वही मछली दे दी होगी!

प्रभु का कर चुकाने की इच्छा, परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति उसके समर्पण का एक और प्रदर्शन है। उसने कहा, "मेरे और अपने बदले उन्हें दे देना" (17:27)। ध्यान दें कि उसने कर-मुक्त पुत्र के रूप में खुद और कर-मुक्त विषय के रूप में पतरस के बीच अंतर किया। उसी समय उसने पतरस को "हम" में शामिल किया - "ताकि हम उन्हें ठोकर न खिलाएँ।" शायद यहाँ एक संकेत है कि वह समय जल्द ही आएगा जब प्रभु के चेले यहूदी दायित्वों से पूरी तरह मुक्त हो जाएँगे। वह पहले से ही उन्हें यहूदी झुंड से बाहर निकलने को बुला रहा था।

2. आत्मिक रिश्ते (18:1-35)

प्रभु ने राज्य के सदस्यों के विषय पर अपनी निजी चर्चा जारी रखी। उसकी टिप्पणियों ने वर्तमान युग के दौरान राज्य के भीतर आत्मिक संबंधों का अंदाज़ा लगाया। अपने चेलों के साथ इस बातचीत के बाद, उसने गलील को छोड़ दिया, और अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान से पहले कभी वापस वहाँ नहीं लौटा।

मत्ती 18 एक बहुत ही महत्वपूर्ण अध्याय है। अपने आप में यह एक संपूर्ण अध्याय है, लेकिन यह प्रभु द्वारा अपनी कलीसिया के बारे में भविष्यद्वाणीय संदर्भों के द्वारा अध्याय 16 से जुड़ा हुआ है। यह सच है कि मत्ती यहूदी सुसमाचार है, लेकिन यह उससे कहीं अधिक बढ़कर है। यह न केवल यहूदियों द्वारा प्रभु के तिरस्कार और यहूदी राष्ट्र के लिए उस तिरस्कार के परिणामों पर जोर देता है; बल्कि मत्ती कलीसिया का भी वर्णन करता है, और यह एकमात्र ऐसा सुसमाचार है जो कलीसिया का स्पष्ट रूप से उल्लेख करता है। मत्ती के

सुसमाचार में कलीसिया का नाम दो बार लिया गया है - मोती के दृष्टांत में इसके तात्पर्य से, और जैतून के पहाड़ पर भविष्यद्वाणीय उपदेश में एक संकेत के रूप में। मत्ती 13, 24, और 25 से कलीसिया को बाहर रखना सुसमाचार के यहूदी-परायणता के प्रति अति उत्साही होना है।

मत्ती 16 में हमें कलीसिया का पहला प्रत्यक्ष उल्लेख मिलता है; मत्ती 18 में हमें इसका दूसरा उल्लेख मिलता है। ये दोनों संदर्भ मिलकर एक जोड़ी बनाते हैं। अध्याय 16 में हम कलीसिया को उसके सार्वभौमिक पहलू में पाते हैं; अध्याय 18 में हम कलीसिया को उसके स्थानीय पहलू में पाते हैं।

प्रभु ने हमारे सामने सार्वभौमिक कलीसिया को प्रस्तुत किया जब उसने कहा, "मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा: और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे" (16:18)। जब उसने यह कहा था तब कलीसिया अभी भी भविष्य की बात थी, जबकि इस्राएल राष्ट्र एक बहुत ही वर्तमान वास्तविकता थी। कलीसिया इस्राएल से अलग और पृथक इकाई है। इस्राएल को कलीसिया के समतुल्य मानना स्पष्ट रूप से परिभाषित समूहों को भ्रमित करता है।

कलीसियाई युग समय में डाला गया एक विभाजक है और यह इस्राएल राष्ट्र के साथ परमेश्वर की सार्वभौमिक अप्रसन्नता की अवधि को चिह्नित करता है क्योंकि उसने उसके पुत्र को मार डाला था। कलीसिया को पिन्तेकुस्त के दिन अलौकिक रूप से इतिहास में शामिल किया गया था; इसे स्वर्गारोहण के समय अलौकिक रूप से इतिहास से बाहर निकाल दिया जाएगा। इस वर्तमान कलीसियाई युग में इस्राएल राष्ट्र के प्रति परमेश्वर के कई विशिष्ट वादे अभी निलंबित हैं। कलीसिया के स्वर्गारोहण के बाद परमेश्वर इस्राएल के साथ अपने सीधे व्यवहार को फिर से शुरू करेगा। यह तथ्य कि इस्राएल अब एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में पुनर्गठित हो गया है और वादा किए गए देश में वापस आ गया है, एक स्पष्ट संकेत है कि परमेश्वर कलीसिया को उठाने और इब्रानी लोगों के प्रति अपनी प्रतिज्ञा और भविष्यद्वाणियों को वापस सक्रिय करने वाला है।

कलीसियाई युग में यहूदियों को उसी आधार पर उद्धार दिया जाता है जिस आधार पर अन्यजातियों को दिया जाता है। यहूदी और अन्यजाति दोनों ही मसीह में अपने व्यक्तिगत विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं। एक यहूदी जो मसीह पर विश्वास करता है वह मसीही बन जाता है और कलीसिया में उसी तरह शामिल हो जाता है जैसे कोई और, चाहे उसकी राष्ट्रीयता या पूर्व धर्म कुछ भी क्यों न हो। इस विषय पर रोमियों 9-11 में पौलुस द्वारा चर्चा की गई है, जहाँ पौलुस यहूदी लोगों के साथ परमेश्वर के अतीत, वर्तमान और वायदा किए गए व्यवहार को संदर्भित करता है।[8]

स्थानीय पहलू में कलीसिया का उल्लेख सीधे मत्ती 18:17 में किया गया है और यह इस अध्याय का सामान्य विषय है। प्रभु ने यहाँ स्थानीय कलीसिया के तिगुणीय कार्य की समीक्षा की: विश्वासियों को स्वीकार करना (18:1-11); पीछे हटने वालों की बहाली (18:12-14); और भाइयों का मेल-मिलाप (18:15-35)। बेशक जब मत्ती ने अपना सुसमाचार लिखा, तो सार्वभौमिक कलीसिया और स्थानीय कलीसिया पहले से ही पृथ्वी पर अच्छी तरह से स्थापित थे। हालाँकि, जब प्रभु ने बात की थी, तब सब कुछ अभी भी भविष्य के गर्भ में ही था।

क. विश्वासियों को स्वीकार करना (18:1-11)

(1) एक बच्चे की महानता (18:1-5)

(a) महानता की खोज (18:1)

मरकुस 9:34 हमें बताता है कि चेले आपस में इस बात पर बहस कर रहे थे कि आने वाले राज्य में उनमें से कौन सबसे बड़ा होगा। वे अभी भी इस गलत धारणा के अंतर्गत काम कर रहे थे कि प्रभु अभी उनके सामने मसीही राज्य की स्थापना करने वाला है। उन्हें पूरा विश्वास था कि राज्य की स्थापना का मतलब उनके लिए बड़ी सामर्थ और महिमा होगी। प्रभु की यह स्पष्ट चेतावनी कि उसे जल्द ही क्रूस पर चढ़ाया जाएगा, कि इस्राएल के लिए सहस्राब्दी की उम्मीदें अब अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी गई हैं, उनके बहरे कानों पर पड़ी थी।

इस बात पर बहस करने के लिए कि कौन सबसे बड़ा होगा, चेलों ने सीधे प्रभु से प्रतिक्रिया माँगी। उनके सवाल का जवाब देते हुए, उसने उस युग में स्थानीय कलीसिया के पहले कार्य को प्रकट किया जो लगभग शुरू होने वाला ही था: अपने बीच विश्वास करने वालों को स्वीकार करना।

(b) महानता का गुण (18:2-5)

प्रभु ने यहाँ एक वस्तु-पाठ के उपयोग के द्वारा कलीसिया के बारे में शिक्षा की इस नई पंक्ति को खोला। यीशु ने "एक बालक को पास बुलाकर उन के बीच में खड़ा किया" (18:2)। उसने कहा, "यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे" (18:3)। हमें बचकाना नहीं, बल्कि बालकों के समान बनना है।

राज्य में प्रवेश का एकमात्र मार्ग नया जन्म लेना है। जो लोग नया जन्म पाते हैं, वे छोटे बच्चों के रूप में परमेश्वर के लोगों के बीच अपना स्थान पाते हैं। छोटे बच्चे में कोई भेदभाव नहीं होता, जाति के लिए कोई संघर्ष नहीं होता, कोई स्वार्थी महत्वाकांक्षा नहीं होती, कोई अहंकार नहीं होता। एक छोटा बच्चा सादगी का सबक होता है, कलीसिया का एक आदर्श सदस्य होता है।

मरकुस 9:36 हमें बताता है कि यीशु ने बालक को "अपनी गोद में" लिया। प्रभु ने उसे चेलों के बीच खड़ा किया ताकि यह दर्शाया जा सके कि स्थानीय कलीसिया में हमें उन लोगों को स्वीकार करना चाहिए जिन्हें प्रभु ने स्वीकार किया है। यह चित्र प्रेम, जीवन और नम्रता का है।

(2) एक बच्चे की अच्छाई (18:6-9)

परमेश्वर की दृष्टि में एक बच्चे का बहुत महत्व होता है। हमें उसके किसी भी छोटे बच्चे को ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए या उनमें से किसी को कभी ठोकर नहीं खिलानी चाहिए। किसी बच्चे को नुकसान पहुँचाने से बड़ा कोई अन्य अपराध नहीं हो सकता, खासकर उस बच्चे को जो मसीह में अपना विश्वास रखता है।

हमारे स्कूलों और कॉलेजों में वे शिक्षक जो जानबूझकर मानवतावादी और हानिकारक दर्शनशास्त्र के साथ युवाओं के दिमाग और विश्वास को भ्रष्ट करने का प्रयास करते हैं, सावधान रहें। जो लोग वासना और व्यक्तिगत लाभ के लिए छोटे बच्चों का शोषण करते हैं, वे सावधान रहें। जो लोग बच्चों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं, वे सावधान रहें। यीशु, जो सबसे दयालु और सबसे कोमल व्यक्ति हैं, ने ऐसे एक व्यक्ति के बारे में कहा कि "उसके लिये भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहिरे

समुद्र में डुबाया जाता" (18:6)। "चक्की का पाट" शब्द का अर्थ एक बड़े पत्थर से है जिसे ले जाने के लिए खच्चर की ताकत की ज़रुरत पड़ती है।

इस प्राथमिक पाठ से आगे बढ़ते हुए, हम देखते हैं कि हमें मसीह में जो शिशु हैं, उनको भी अपमानित नहीं करना चाहिए। प्रभु की चेतावनी उन लोगों को संबोधित करती थी जो "इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं" को ठोकर खिलाते हैं। नए मसीहियों को पोषित किया जाना चाहिए और उनकी देखभाल की जानी चाहिए और मसीह में उनके नए जीवन को उत्साहित करना चाहिए। हाय उन लोगों पर जो उन्हें झूठे सिद्धांतों या बुरे उदाहरण से भ्रष्ट करते हैं।

ठोकरें तो आएगी। मनुष्य की भ्रष्टता को देखते हुए, पाप का होना अनिवार्य है। लेकिन उस व्यक्ति पर हाय जो जीवित परमेश्वर की विशेष सुरक्षात्मक देखभाल के अधीन रहने वालों में से किसी को बहकाता है। 18:7 में दो हाय हैं। पहली एक बड़ी करुणा से भरी हाय है, संसार के ठोकरों को देखकर उस महान तरस से भरे पुरुष का विलाप। दूसरी एक बड़ी शाप की हाय है। प्रभु ने चेतावनी दी कि जिनके पाप दूसरों को ठोकर खिलाने का कारण बनते हैं, उन्हें सावधान रहना चाहिए। उनके लिए भला है कि वे नरक की आग के खतरे में डालने वाले मार्ग पर चलते रहने की बजाय खुद को अपंग बना लेना बेहतर समझेंगे। प्रभु ने नरक की भयानक वास्तविकता के बारे में प्रचार करने से बचने के लिए कोई बहाना नहीं बनाया है। उसने इसके बारे में अक्सर बात की है, और हमेशा इसे अनंत पीड़ा के स्थान के रूप में चित्रित किया है। यहाँ प्रभु ने विशेष रूप से "अनन्त आग" (18:8) और "नरक की आग" (18:9) का उल्लेख किया है।

(3) बच्चे के संरक्षक (18:10-11)

(a) परमेश्वर देखता है (18:10)

जैसे ही हमारे प्रभु ने इस चेतावनी को समाप्त किया, उसने हमारी प्राकृतिक दृष्टि से परे एक दुनिया के रहस्यों पर प्रकाश की एक आकर्षक चमक बिखेरी। "देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना," उसने आगे कहा, "क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं।"

जब याकूब बेतेल में था, तो उसकी आँखें खोली गई और उसने देखा कि स्वर्गदूतों का एक निरंतर प्रवाह एक ईश्वरीय सीढ़ी पर "चढ़ता और उतरता" जा रहा था (उत्पत्ति 28:12)। वे उतरते और चढ़ते नहीं थे; वे चढ़ते और उतरते थे। स्वर्गदूतों को इस ग्रह पर कर्तव्य सौंपे गए थे और वे ऊपर बैठे परमेश्वर को अपनी रिपोर्ट देने के लिए उस चमकती हुई सीढ़ी पर चढ़ रहे थे (उत्पत्ति 28:13)। वे ईश्वरीय इच्छा को पूरा करने के लिए वापस नीचे आ रहे थे। प्रभु ने स्वयं स्वर्गदूतों के "ऊपर जाते और उतरने" का संदर्भ दिया (यूहन्ना 1:51)।

इस संसार में स्वर्गदूत अपनी सेवा में व्यस्त हैं। उदाहरण के लिए, हम सभी के पास सेवा टहल करने वाले स्वर्गदूत होते हैं। पतरस के पास थे (प्रेरितों के काम 12:7-10) और पौलुस के पास भी थे (प्रेरितों के काम 27:23)। लाज़र की आत्मा को स्वर्गदूतों ने "अब्राहम की गोद" में पहुँचाया जब वह मर गया (लूका 16:22)। हम प्रकाशितवाक्य 1:20 और प्रकाशितवाक्य 2-3 में सात कलीसियाओं को लिखे गए पत्रों से सीखते हैं कि प्रत्येक स्थानीय कलीसिया का अपना एक स्वर्गदूत होता है। पवित्र आत्मा हमें बताता है कि अच्छे स्वर्गदूत "सेवा-टहल करने वाली आत्माएँ" हैं जो "उद्धार पाने वालों के लिए" सेवा करते हैं (इब्रानियों 1:14)।

महाक्लेश में हम देखते हैं कि स्वर्गदूत अंतिम न्याय में सक्रिय रूप से सम्मिलित होते हैं। प्रभु के जन्म की घोषणा स्वर्गदूतों द्वारा की गई थी। जंगल में उसकी परीक्षा और बगीचे में उसकी पीड़ा दोनों समयों के दौरान उसकी ज़रूरतों के लिए स्वर्गदूतों की एक विशेष सेवकाई हुई (मत्ती 4:11; लूका 22:43)। स्वर्गदूत उसके पुनरुत्थान में भी उपस्थित थे।

मत्ती 18:10 में प्रभु ने स्पष्ट रूप से संकेत दिया कि स्वर्गदूत इन छोटे बालकों के संरक्षक होते हैं। उन लोगों पर हाय है जो बच्चों में नशीली दवाओं की लत लगाते हैं या शैतानी दर्शन से उनके संवेदनशील दिमाग को बर्बाद करते हैं। उनके स्वर्गदूत स्वर्ग में परमेश्वर पिता को उनके सिंहासन के विरुद्ध ऐसे सभी अपराधों के बारे में व्यक्तिगत रिपोर्ट देते रहते हैं।

सोवियत संघ इन छोटे बच्चों को तुच्छ समझने का दोषी था। अफ़गानिस्तान पर आक्रमण करने के बाद, वे उस देश में स्वतंत्रता सेनानियों को दबाने में असमर्थ हो गए और उन्होंने भय के एक विशेष रूप से शैतानी रूप का सहारा लिया जो बच्चों को निशाना बनाकर किया गया था। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग और युवा पीड़ितों की सेवा करने वाले चिकित्सकों से कई सारी गवाहियाँ मिली। एक सात वर्षीय बच्चे को एक हानिरहित टिन के डिब्बे की तरह दिखने वाले विस्फोट से अपंग कर दिया गया था; बारह वर्षीय बच्चे ने विस्फोटकों से भरा एक पेन उठाने पर अपनी तीन उंगलियाँ खो दीं; एक छोटा बच्चा एक गुड़िया की तरह दिखने वाले बम से अपंग हो गया। यह अनुमान लगाया जाता है कि खिलौनों के ट्रकों, गुड़ियों और गेंदों में छिपे चमकीले रंग के बमों से हज़ारों बच्चों को नुकसान पहुँचाया गया था।[9] हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि उन बच्चों के संरक्षक स्वर्गदूतों ने परमेश्वर के सिंहासन को चारों ओर से घेर लिया था।

उनके संरक्षक स्वर्गदूतों के प्रति परमेश्वर का जवाब पहले ही लिखा जा चुका था। उसने सोवियत संघ के बारे में कहा था कि उसकी सुधि लेने का दिन आएगा। कुछ हद तक वह दिन सोवियत संघ के पतन और रूस तथा कुछ अन्य पूर्व सोवियत गणराज्यों की अव्यवस्था के साथ पहले ही आ चुका है। लेकिन परमेश्वर ने रूस के साथ अभी तक कुछ नहीं किया है। उसे अभी भी अंतिम समय की घटनाओं में अपनी भूमिका निभानी है (यहेजकेल 38-39)। आने वाले दिनों में रूस इस्राएल पर एक बड़े हमले का नेतृत्व करेगा, और परमेश्वर खुद इसका जवाब देगा। उसने कहा, "उस दिन मेरी जलजलाहट मेरे मुख से प्रकट होगी" (यहेजकेल 38:18)।

(b) परमेश्वर बचाता है (18:11)

मत्ती 18:11 हमें फिर से 18:1-11 में विश्वासियों को स्वीकार करने के बारे में रेखांकित आत्मिक पाठ की ओर वापस ले जाता है। प्रभु ने कहा, "मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है॥" केवल उद्धार पाए हुए लोगों को ही स्थानीय कलीसिया की संगति में शामिल किया जा सकता है। बिना उद्धार पाए लोगों का कलीसिया की सेवाओं में भाग लेने के लिए स्वागत किया जा सकता है, लेकिन केवल उद्धार पाए लोग ही इसके जीवन को साझा कर सकते हैं।

ख. पीछे हटने वालों की पुनर्स्थापना (18:12-14)

स्थानीय कलीसिया का कार्य न केवल नये विश्वासियों को अपनी संगति में शामिल करना है; बल्कि विश्वास से पीछे हटने वालों को पुनर्स्थापित करना भी कलीसिया की ज़िम्मेदारी है।

खोई हुई भेड़ की कहानी लूका 15 में अधिक विस्तार से बताई गई है, जहाँ संदर्भ अलग है। वहाँ, जहाँ मनुष्य के खो जाने पर जोर दिया गया है, प्रभु ने एक खोई हुई भेड़, एक खोया हुआ चाँदी का सिक्का, और एक खोए हुए बेटे के बारे में तीन-भाग की कहानी सुनाई। मनुष्य खो जाता है जैसे भेड़ें परमेश्वर से भटक कर खो जाती हैं। लोग खो जाते हैं जैसे सिक्के अचानक गिरने से खो जाते हैं। और लोग ऐसे खो जाते हैं जैसे उड़ाऊ पुत्र जानबूझकर गलत चुनाव करके खो गया था।

(1) खोई हुई भेड़ (18:12a-b)

मत्ती में, तात्कालिक संदर्भ में, प्रभु एक बच्चे के खोने के बारे में बात कर रहा था जिसे बेईमान और दुष्ट लोगों द्वारा झुंड की सुरक्षा से बहकाया गया था। यदि उसे खोजा और पाया नहीं गया, तो वह बच्चा पाप से भ्रष्ट हो जाएगा और अंततः नष्ट हो जाएगा।

अध्याय 18 के व्यापक संदर्भ में, खोई हुई भेड़ की कहानी परमेश्वर की एक भेड़ की पुनर्स्थापना से अधिक संबंधित है, जो मसीही समुदाय की सुरक्षा से भटक गई थी।

(2) प्रेमी चरवाहा (18:12 c-14)

कहानी से पता चलता है कि प्रभु एक भटके हुए पापी के लिए भी उतना ही प्रेम और चिंता दिखाता है जितना कि एक खोए हुए पापी के लिए। एक विश्वास से पीछे हटे जन के लौट आने से उसके हृदय को उतनी ही खुशी मिलती है जितना एक पापी के उद्धार पाने से होती है।

कलीसिया की जिम्मेदारी है कि वह उन लोगों को खोजे जो अपराधों और पापों में खो गए हैं; इसकी जिम्मेदारी यह भी है कि वह उन लोगों को खोजे और उन्हें वापस लाए जो इसकी संगति से खो गए हैं। स्थानीय कलीसिया में एक विश्वासी के वापस आने पर उतनी ही खुशी होनी चाहिए जितनी एक नए विश्वासी के स्वागत पर होती है।

जब यीशु एक छोटे बालक को ग्रहण करने के संदर्भ में नए विश्वासियों को ग्रहण करने की बात कर रहा था, तो उसने "मेरे स्वर्गीय पिता" के बारे में बात की (18:11)। अब, खोई हुई भेड़ की तलाश के संदर्भ में भटके हुए लोगों को बहाल करने की बात करते हुए, उसने कहा, "ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं, कि इन छोटों में से एक भी नाश हो" (18:14)। "तुम्हारे" शब्द का उसका प्रयोग हमारी जिम्मेदारी के कारक का परिचय देता है।

इस बात पर भी ध्यान दीजिये कि 18:14 परमेश्वर की इच्छा के बारे में क्या कहता है। यह हमारे स्वर्गीय पिता की इच्छा नहीं है कि इन छोटे में से कोई भी नाश हो। उसकी इच्छा हमारी इच्छा होनी चाहिए। जिस तरह हमारे प्रभु यीशु मसीह ने झुंड से भटके हुए लोगों को खोजा, चाहे वे खोए हुए पापी हों या भटके हुए पवित्र जन, उसी तरह हमारा भी मनोभाव होना चाहिए। खोई हुई भेड़ों को ढूँढ़ना स्थानीय कलीसिया के कार्यों में से एक है। यह संयोग नहीं है कि नए नियम में जो लोग परमेश्वर के लोगों के अगुवे होंगे उन्हें चरवाहा या पास्टर बुलाया गया है। जो लोग परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करेंगे, उनके पास झुंड के प्रति एक चरवाहे का मन होना चाहिए।

ग. भाइयों का मेल-मिलाप (18:15-35)

(1) एक सिद्धांत (18:15-20)

(a) पहला कदम—मसीही प्रेम हावी होता है (18:15)

किसी भाई के साथ मेल-मिलाप करने के प्रयास में तीन चरण शामिल होते हैं। पहले चरण में, मसीही प्रेम प्रभुता करता है। यीशु ने कहा, "यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया।"

"तेरे विरुद्ध अपराध" का मूल अनुवादित शब्द कुछ विवाद का विषय हैं। हमें तब तक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है जब तक कोई भाई हमारे विरुद्ध व्यक्तिगत रूप से पाप न करे, उसके बाद ही हम पहल करें और उससे बात करें कि क्या चल रहा है। उसके पास जाने का उद्देश्य निंदा करना या आलोचना करना या आग में घी डालना नहीं है, बल्कि उसे "पाना" है। 18:15 में "पाया" शब्द का मूल अनुवादित शब्द केर्डेनो है, जो लाभ और हानि से जुड़ा एक वाणिज्यिक शब्द है (प्रेरितों के काम 27:21 को देखें)। एक भाई जिसने पाप किया है वह कुछ तरीकों से संगति से खो गया है और उसने खुद को मसीह के न्याय के सिंहासन पर एक दयनीय हारे हुए व्यक्ति के रूप में स्थापित किया है। एक उद्धार पाई हुई आत्मा के साथ एक खोया हुआ जीवन का होना संभव है। इसलिए यहाँ मसीही प्रेम पहल करता है और मेलमिलाप की ओर एक कदम बढ़ाता है।

(b) अगला कदम—सामान्य व्यवस्था हावी होती है (18:16)

मेलमिलाप की ओर दूसरे कदम में, सामान्य व्यवस्था लागू होती है। यीशु ने कहा, "और यदि वह न सुने, तो और एक दो जन को अपने साथ ले जा, कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई जाए।" वह मूसा की व्यवस्था में स्थापित सिद्धांत का उल्लेख कर रहा था (व्यवस्थाविवरण 19:15)।

हालाँकि मेलमिलाप का पहला प्रयास गुप्त होता है, जबकि दूसरा औपचारिक होता है। किसी मुद्दे को शांत तरीके से आमने-सामने बातचीत करके सुलझाना ज़्यादा संतोषजनक होता है, लेकिन जब पाप करने वाला भाई हठी होता है, तो वह औपचारिक कदम उठाने के लिए बाध्य करता है। मिशन एक ही है: भाई को उसकी गलती के बारे में समझाना। गवाहों को साथ ले जाया जाता है ताकि निष्पक्ष लोग इसमें शामिल मुद्दों का मूल्यांकन कर सकें, दोष तय कर सकें, समझाने में अपनी आवाज़ उठा सकें और प्रार्थना में भागीदार बन सकें। इसमें व्यक्तिगत रुचि से बढ़कर कुछ शामिल होता है।

(c) अंतिम चरण—मसीही अगुवे हावी होते हैं (18:17-20)

i. स्थानीय कलीसिया का कार्यकारी अधिकार (18:17a)

जब पहला और दूसरा चरण विफल हो जाता है, तो समस्या कहीं अधिक गंभीर हो जाती है। गलती करने वाले का पाप और हठ अब स्थानीय कलीसिया की गवाही को प्रभावित करता है। इसलिए तीसरे चरण में, मसीही अगुवे पहल करते हैं। यहाँ स्थानीय कलीसिया को विश्वासियों के एक दृश्यमान निकाय के रूप में देखा गया है, जिनके पास एक सामूहिक गवाही है और जिन्हें अनुशासन लागू करने की सामर्थ और अधिकार से सुसज्जित किया गया है।

ii. स्थानीय कलीसिया की बहिष्कृत करने की सामर्थ (18:17b-20)

a. यह कहाँ काम करता है (18:17b-18)

जब कलीसिया के सामने समस्या को रखा जाता है, तो शांत और शांतिपूर्ण तरीके से सुलह कराने का अवसर अभी भी मौजूद है। हालाँकि, अगर अपराध करने वाला भाई स्थानीय कलीसिया की सुलहकारी सेवा को अस्वीकार कर देता है, तो उसका मामला वास्तव में निराशाजनक है, क्योंकि कलीसिया के पास बहिष्कृत करने का भी अधिकार है।

एक बार जब कोई विश्वासी स्थानीय कलीसिया द्वारा बहिष्कृत कर दिया जाता है - पवित्र आत्मा की अगुवाई में, पवित्रशास्त्र के अनुसार, और इसके उचित रूप से मान्यता प्राप्त अगुवों के द्वारा उचित रूप से कार्य करते हुए - तो वह एक बाहरी व्यक्ति बन जाता है। यीशु ने कहा, "तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेने वाले के जैसा जान।" (18:17)। पारंपरिक यहूदी व्यवस्था ने एक इब्रानी को अधर्मी के साथ संगति करने, खाने या यात्रा करने से मना किया है; और अगर कोई यहूदी चुंगी लेने वाला बन जाता है, तो उसे बहिष्कृत कर दिया जाता है। मसीही प्रेम इस प्रतिबंध को संशोधित करता है, क्योंकि एक अधर्मी या चुंगी लेने वाले के प्रति एक विश्वासी का मनोभाव् उस व्यक्ति के आत्मिक कल्याण के लिए चिंता का विषय है।

हम खोए हुए लोगों को कोढ़ियों की तरह नहीं मानते; हम उन्हें मसीह में लाने की कोशिश करते हैं। हम बहिष्कृत विश्वासियों को पराया नहीं मानते; हम उनके पश्चाताप और पुनर्स्थापना की तलाश करते हैं। साथ ही, हम उन्हें अनुग्रह के उन साधनों से वंचित करते हैं जो पवित्र आत्मा द्वारा स्थानीय कलीसिया की संगति से जुड़े हैं। हम उन्हें प्रभु की मेज़ तक पहुँचने और सभा की संगति और सेवाओं में किसी भी तरह से सक्रिय भाग लेने से वंचित करते हैं।

b. यह क्यों काम करता है (18:19-20)

मसीह ने वायदा किया है कि जब भी स्थानीय कलीसिया के सदस्य आपस में मिलेंगे, तो वह उनके बीच उपस्थित रहेगा। जब संगति का दूसरा सदस्य उस कलीसिया की सभा में आता है, तो प्रभु स्वयं वहाँ उपस्थित होता है। ऐसी कोई सभा नहीं है जिसमें वह उपस्थित न हों। हम इस तथ्य को भूल सकते हैं; हम ऐसा व्यवहार कर सकते हैं मानो यह सच नहीं है; लेकिन यह बिल्कुल सच है। जब कलीसिया के सदस्य एक साथ मिलते हैं, तो प्रभु हमेशा उनके बीच उपस्थित रहता है - और कार्यवाही संख्या बनाने के लिए केवल दो की आवश्यकता होती है। यह ईश्वरीय उपस्थिति ही है जो कलीसिया को इसकी अद्वितीय गरिमा प्रदान करती है। यह कितना अनुग्रहपूर्ण, कितना महिमामय है कि ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता, कलवरी पर पुनरुत्थान पाया हुआ मसीहा, अपने लोगों के साथ इकट्ठा होता है, चाहे वे बहुत अधिक हों या कम! स्थानीय कलीसिया द्वारा पवित्रशास्त्र के आधार पर बहिष्कृत किया जाना एक गंभीर मामला है, क्योंकि इसका मतलब है कि अपराधी व्यक्ति इन सब से अलग हो जाता है।

कलीसियाई अनुशासन का पूरा मामला प्रार्थना से सरोंबोर होना चाहिए। यदि प्रार्थना बहिष्कृत करने के कदम की ओर अगुवाई देती है, तो बहिष्कृत व्यक्ति की उस भयानक कमजोरी के लिए प्रार्थना की जानी चाहिए। प्रार्थना के द्वारा उसके पश्चाताप और सुलह की खोज करनी चाहिए। यीशु ने वायदा किया, "यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिये एक मन होकर उसे मांगे, तो वह मेरे पिता की ओर से स्वर्ग में है उन के लिये हो जाएगी" (18:19)। वह पद, जिसका अक्सर संदर्भ से बाहर उद्धरण दिया जाता है, एक

खाली चेक नहीं है जो हमें परमेश्वर से कुछ भी मांगने में सक्षम बनाता है; संदर्भ एक अपराधी और पश्चाताप न करने वाले भाई के बहिष्कार से संबंधित है।

आजकल कलीसिया में अनुशासनात्मक कार्यवाही को बहुत कम कर दिया गया है और जब दिया भी जाता है, तो एक कलीसिया द्वारा बहिष्कृत व्यक्ति दूसरी कलीसिया में चला जाता है और खुद को उस संगति में शामिल कर लेता है, या कल्पना करता है कि वह सही कर रहा है। लेकिन अगर उसे वैध रूप से अनुशासित किया गया है, तो वह आसानी से दंड से बच नहीं सकता, क्योंकि यीशु ने कहा कि जो पृथ्वी पर बंधा है वह स्वर्ग में बंधा है और जो पृथ्वी पर खुला है वह स्वर्ग में खुला है (18:18)। बेशक ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ कलीसिया के अगुवे, पवित्रशास्त्र की अज्ञानता के कारण, परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध कार्य करते हैं। उनके आदेशों का कोई मूल्य नहीं है और वे बाध्यकारी नहीं होते।

यदि बहिष्कार वैध है - यदि यह मुद्दों और पवित्रशास्त्र की अच्छी समझ पर आधारित है - तो बहिष्कृत विश्वासी द्वारा किसी अन्य ऐसी मण्डली में शामिल होना कोई अच्छा परिणाम नहीं देगा, जिसे पता हो या न हो कि वह सुधार की कार्यवाही में है, और जो शायद इसकी परवाह भी न करे। अपराधी अभी भी अनुशासन के अधीन है। परमेश्वर की आशीष उस पर नहीं ठहरती। उसके भीतर परमेश्वर का आत्मा शोकित होता है। अपराधी शैतान के सामने बिल्कुल कमजोर स्थिति में है। वह पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में काम करने वाली स्थानीय कलीसिया की बाध्यकारी सामर्थ से बच नहीं सकता।

परमेश्वर की अप्रसन्नता का बाहरी प्रमाण तुरंत नहीं देखा जा सकता है। बहिष्कृत भाई समृद्ध दिख सकता है, लेकिन वह निषेधाज्ञा के अधीन है। कलीसिया ने परमेश्वर की इच्छा से सलाह ली है। यह अपराध के बारे में और पवित्रशास्त्र क्या कहता है, दोनों के बारे में वास्तिवकता पर पहुंचा है। यह प्रभु यीशु के नाम पर इकट्ठे हुए हैं और इसका निर्णय अंतिम, आधिकारिक और बाध्यकारी है। अपराधी एक बाहरी व्यक्ति ही रहेगा, चाहे वह कितनी भी कलीसियाओं में शामिल हो या मसीही संगठनों में सेवा करे, जब तक कि वह मन-फिराव करके वापस नहीं आता और उन लोगों से क्षमा नहीं मांगता, जिनके साथ उसने गलत किया है, जब तक कि वह उस कलीसिया द्वारा अपने बंधन से "मुक्त" नहीं हो जाता और अपनी संगति में वापस नहीं आ जाता। यह सिद्धांत ऐसे ही कार्य करता है।

(2) एक प्रस्ताव (18:21-22)

(a) सामान्य से परे माफ़ करने में उदारता दिखाना (18:21)

पतरस प्रभु की मेलमिलाप की शिक्षा से बहुत प्रभावित हुआ। उसे एहसास हुआ कि अगर वह पीड़ित पक्ष में है, तो उसे क्षमा करने की भावना का प्रयोग करना होगा। लेकिन किसी को कितनी बार क्षमा करने के लिए कहा गया है? रब्बियों ने फैसला किया था कि तीन बार तक सहनशीलता और क्षमा पर्याप्त होगी। पतरस ने उदारता का एक बड़ा प्रदर्शन करते हुए सुझाव दिया कि वह सात बार क्षमा करेगा। वह प्रेम को तर्क, दया को गणित, आत्मिकता के मामले को अंकगणित के साथ बदल रहा था।

(b) स्वाभाविकता से परे क्षमा की महिमा (18:22)

प्रभु ने ऐसे सभी सांसारिक विचारों को सिरे से नकार दिया। उसने न केवल सामान्य से परे क्षमा की मांग की; बल्कि उसने स्वभाव से परे क्षमा की मांग की। इसी तरह से परमेश्वर हमें क्षमा करता है। परमेश्वर यह

नहीं कहता, "मैं तुम्हें सात बार क्षमा करूँगा।" अगर वह ऐसा करता तो हम सभी एक बहुत ही दयनीय स्थिति में होते।

दानिय्येल 9:24 में " सात बार के सत्तर गुने" की गिनती का एक दिलचस्प उपयोग है, जो यहूदी लोगों के भविष्य का पूर्व-अवलोकन है। भविष्यद्वाणी में लिखा है, "तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित्त किया जाए, और युगयुग की धार्मिकता प्रकट होए; और दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए।"

सत्तर "सप्ताह" सत्तर के सात (वर्ष) थे, जो "सात बार के सत्तर गुणा" की गिनती को उत्पन्न करते हैं। 490 वर्षों की परिणामी अवधि 483 वर्षों की अवधि के बाद बाधित होनी थी, जिस समय आने वाले मसीहा को "काटा जाएगा [क्रूस पर चढ़ाया जाएगा]," इस प्रकार पाप के लिए प्रायश्चित किया जाएगा (दानिय्येल 9:25-26)। अंतिम सात-वर्ष की अवधि में मसीह-विरोधी के व्यक्तित्व में अधर्म चरम सीमा पर होगा (9:27)। उसके बाद, मसीह वापस लौटेगा और धार्मिकता का सहस्राब्दी शासन स्थापित करेगा।

दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने यहूदियों से वादा किया कि वह इस पूर्ण गिनती में उन्हें ("सात बार के सत्तर गुणा") तक क्षमा करेगा और क्षमा करेगा और क्षमा करता रहेगा। हम निश्चित रूप से जानते हैं कि उसने उनहत्तरवें और सत्तरवें सात के बीच कलीसियाई युग को रखा है और कलवरी पर उसके साथ किए गए अपराध के बावजूद उन्हें क्षमा करता रहा और क्षमा करता रहा और क्षमा करता रहा है। वह तब तक क्षमा करता रहेगा जब तक वह अवधि समाप्त नहीं हो जाती।

(3) एक दृष्टान्त (18:23-35)

(a) मनुष्य और उसका कर्ज (18:23-27)

प्रभु ने पतरस के प्रस्ताव का उत्तर एक दृष्टांत के साथ दिया। यह व्यावहारिक कहानी एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताती है जिस पर एक पूर्वी शासक का बड़ा ऋण चढ़ा हुआ था, जिसे "दस हजार तोड़े" (18:24) बताया गया है। उतार-चढ़ाव वाले मूल्यों के कारण बाइबल में वर्णित धन की संख्या को वर्तमान समय के समकक्ष तुलना करना कठिन है। समानताएँ बनाना और यह बताना सबसे अच्छा है कि तोड़े यहूदियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली वजन की सबसे भारी इकाई थी और गिनती "दस हजार" सबसे बड़ी गिनती थी।[10] सभी मानकों के अनुसार, उस व्यक्ति का ऋण गिनती से परे था।

फिर एक दिन लेखा देने का दिन आया; उस आदमी को राजा के सामने लाया गया और पाया गया कि वह दिवालिया हो गया है। राजा ने आदेश दिया कि उस आदमी के पास जितनी भी संपत्ति थी, उसे बेच दिया जाए। उसे उसकी पत्नी और परिवार के साथ बेच दिया जाना था। फिर भी, सिंहासन के प्रति उसका ऋण पूरी तरह से चुकाया नहीं जा सकता था।

उस मनुष्य की स्थिति परमेश्वर के सामने हमारी स्थिति को दर्शाती है। हम सभी दस हज़ार तोड़ों के कर्जदार हैं। परमेश्वर ने हमें जीवन, कौशल और अवसर प्रदान किए हैं। बदले में, हमने उसके निवेश का दुरुपयोग किया है, उसके वरदानों का दुरुपयोग किया है, उसके धन को बर्बाद किया है, उसके नियमों का तिरस्कार

किया है, उसके दावों को नज़रंदाज़ किया है, लगातार और अहंकारी ढंग से पाप किया है। हमने अपने ऊपर एक कभी न चुकाए जाने लायक ऋण चढ़ा लिया है।

उस व्यक्ति की एकमात्र आशा, जैसा कि हमारी है, उस राजा की दया पर निर्भर रहना था, जो उस ऋण को माफ करने को तैयार था। हालाँकि, ऋणी को अनुग्रह के सिद्धांत की कोई समझ नहीं थी; वह केवल व्यवस्था को समझता था। उसने अनुग्रह के लिए नहीं, बल्कि अधिक समय के लिए याचना की। "हे स्वामी, धीरज धर," उसने कहा, "मैं सब कुछ भर दूंगा" (18:26)। उसने धीरज धरने के लिए याचना की; और उसे क्षमा कर दिया गया। स्वामी ने उस पर “तरस खाकर” उसका कर्ज क्षमा कर दिया (18:27)।

(b) मनुष्य और उसका कार्य (18:28-30)

उस व्यक्ति का ऋण माफ कर दिया गया, लेकिन उसके स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं आया। वह वही कठोर, क्रूर व्यक्ति रहा जो वह हमेशा से था। उसे क्षमा कर दिया गया था, लेकिन उसे न तो धर्मी ठहराया गया और न ही उसमें कोई परिवर्तन आया। सुसमाचार क्षमा से परे जाता है। हमें क्षमा किया जा सकता है, फिर भी हम परमेश्वर के सिंहासन को कष्ट पहुँचाते हैं और न्याय को अनिवार्य बनाते हैं। क्षमा, जब उचित रूप से प्राप्त की जाती है, तो व्यवहार में परिवर्तन आता है जो वास्तविक रूपांतरण को दर्शाता है।

इस बिंदु पर हमें लूका 7:36-50 में दर्ज एक वास्तविक घटना की ओर मुड़ने की आवश्यकता है। प्रभु को शमौन फरीसी के घर आमंत्रित किया गया था। जब प्रभु वहाँ पहुंचा, तो शमौन ने प्रभु के प्रति कोई भी सामान्य शिष्टाचार नहीं दिखाया जो आमतौर पर किसी अतिथि के प्रति दिखाया जाता है। फिर एक पापी महिला अंदर आई और उसने अपने आँसुओं से यीशु के पैर धोए लेकिन इससे मेज़बान नाराज़ हो गया। जब प्रभु ने शमौन के मन को पढ़ा, तो उसने उस फरीसी को एक कहानी सुनाई और उससे एक सवाल पूछा:

एक कर्जदार था जिसके दो देनदार थे: एक पर पाँच सौ दीनार और दूसरे पर पचास दीनार का कर्जा था। और जब उनके पास चुकाने के लिए कुछ नहीं बचा, तो उसने उन दोनों को पूरी तरह से माफ कर दिया। तो बताओ, उनमें से कौन उससे सबसे ज्यादा प्रेम रखेगा?

शमौन ने अनिच्छा से उत्तर दिया, "मुझे लगता है कि वह, जिसे उसने सबसे अधिक क्षमा किया है।" फिर प्रभु ने कहानी को शमौन और उस स्त्री पर लागू किया। यीशु ने उस स्त्री की ओर मुड़कर यह कहकर घटना को समाप्त किया, "तेरे पाप क्षमा हुए।" दर्शकों ने पूछा, "यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?" तब यीशु ने महिला को इन वचनों के साथ विदा किया: "तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा।" उसे न केवल क्षमा किया गया, बल्कि उद्धार भी प्राप्त हुआ।

मत्ती 18 के दृष्टांत में वर्णित व्यक्ति को क्षमा कर दिया गया था, लेकिन यह क्षमा वास्तव में उसके हृदय में अनुग्रह के एक और कार्य के होने पर निर्भर थी। हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उसने ऐसा कोई कार्य अनुभव नहीं किया, क्योंकि वास्तव में उद्धार पाए व्यक्ति की विशेषताओं को बाहर प्रदर्शित करने की बजाय, उसने तुरंत बाहर जाकर अपने अपरिवर्तित हृदय की सारी कठोरता और क्रूरता को प्रदर्शित किया।

उसके एक संगी दास पर उसका "सौ दीनार" (एक मजदूर की लगभग तीन महीने की मजदूरी के बराबर) बकाया था, जो उस पर बकाया दस हजार दीनार के कर्ज की तुलना में बहुत कम था। उस आदमी ने अपने संगी दास को पकड़ लिया, "उसका गला घोंटा," और तुरंत भुगतान करने की मांग की (18:28)। "धीरज

धर मैं सब भर दूंगा," संगी दास ने विनती की, उसी वचनों का उपयोग करते हुए जो माफ़ किए गए कर्जदार ने अपने स्वामी से याचना करते समय इस्तेमाल किए थे (18:29 के 18:26 से तुलना करें)। लेकिन जिस आदमी पर दया की गई थी वह कठोर बना रहा। उसने अपने संगी दास को कर्जदारों की जेल में डाल दिया। उस बेचारे मनुष्य की विनतियों ने उस लेनदार के कठोर मन पर कोई असर नहीं डाला।

(c) मनुष्य और उसका विनाश (18:31-35)

जब उस दुष्ट व्यक्ति की दुष्टता का हाल उसके स्वामी को बताया गया, तो राजा ने उसे तुरंत गिरफ्तार करवा दिया। "हे दुष्ट दास," उसने कहा, "तू ने जो मुझ से विनती की, तो मैं ने तो तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया। सो जैसा मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करनी नहीं चाहिए थी" (18:32-33)? यहाँ "दुष्ट" शब्द का मूल अनुवाद पोनेरोस है। पोनेरोस और इसके समानार्थक शब्दों का उपयोग नए नियम में मानवीय भ्रष्टता और हमारे अधर्मी स्वभाव के दुष्ट कार्यों को संदर्भित करने के लिए किया गया है। क्षमा न करने वाले व्यक्ति के दुष्ट व्यवहार ने उसके अपवित्र हृदय को सबके सामने प्रकट किया।

उसे अपनी दुष्टता के परिणामों का दण्ड भोगने के लिए मजबूर होना पड़ा। उस व्यक्ति के पास अब कोई दलील नहीं थी, क्योंकि वह जानता था कि उसका मामला अब निराशाजनक है। नई सजा उस सजा से कहीं ज़्यादा बुरी थी जिसे रद्द कर दिया गया था। इससे पहले कि उसे बेचा जाता; अब "उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देने वालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्जा भर न दे, तब तक उन के हाथ में रहे" (18:34)।

मानवीय न्यायालयों में, पिछली सजा के बाद आगे के अपराध के लिए दंड बढ़ जाता है। दृष्टांत में वर्णित व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया, उस पर आरोप लगाया गया, मुकदमा चलाया गया और सजा सुनाई गई, न कि उसके दस हजार तोड़े के कर्ज के कारण, बल्कि अपने साथी सेवक के प्रति उसके दुष्ट व्यवहार के कारण; हालाँकि, उसकी सजा उसके द्वारा पहले किए गए कर्ज के बराबर थी। अपने नए पाप के कारण, वह तब तक जमानत के लिए पात्र नहीं होगा जब तक कि वह अपने पिछले कर्ज के बराबर का भुगतान नहीं कर देता। अब यहाँ दया की जगह क्रोध ने ले ली थी।

दृष्टांत को लागू करते हुए, प्रभु ने क्षमा न करने वाली भावना की गंभीरता को दिखाया। यीशु ने कहा, "इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा" (18:35)। पतरस ने पूछा था कि उसे कितनी बार क्षमा करना चाहिए, और यीशु ने वास्तव में उससे और हमसे यह कहा, "तुम्हें क्षमा करते रहना चाहिए और क्षमा करते रहना चाहिए क्योंकि स्वर्गीय पिता इसी तरह क्षमा करता रहता है।" आखिरकार, जिन अपराधों को हमें क्षमा करने के लिए कहा जाता है, वे उन बड़े अपराधों की तुलना में अपेक्षाकृत छोटे हैं जिन्हें हमने परमेश्वर से क्षमा करने के लिए याचना की है।

दृष्टांत से पता चलता है कि क्षमा न करने वाली भावना एक नया जन्म न पाए हुए हृदय को प्रकट करती है, और एक नया जन्म न पाया हुआ हृदय अंततः एक व्यक्ति को पीड़ा के स्थान पर पहुँचा देता है। प्रभु ने अपने चेलों को ऐसा दृष्टांत क्यों बताया? क्योंकि उनमें से एक के पास एक परिवर्तित हृदय नहीं था; वह मात्र एक ढोंगी था और अंततः वह नरक में डाल दिया गया। उसका नाम यहूदा था। और इस दृष्टांत को

स्थानीय कलीसिया में क्यों बताया जाना चाहिए? कलीसिया के सदस्यों की श्रेणी में अक्सर कुछ ऐसे लोग शामिल होते हैं जो कभी भी वास्तव में नया जन्म नहीं पाए हुए हैं।

घ. राज्य में विवाह (19:1-15)

1. तलाक के मामले में मुख्य कारक (19:1-12)

क. स्त्री-त्याग पर प्रभु की शिक्षा का संदर्भ (19:1-2)

"जब यीशु ये बातें [मत्ती 18 में दर्ज की गई बातें] कह चुका, तो वह गलील से चला गया" (19:1)। वह पुनरुत्थान से पहले फिर कभी गलील नहीं लौटा। मत्ती ने प्रभु की गलीली सेवकाई के समापन और उन घटनाओं की शुरुआत के बीच हुई कई घटनाओं को छोड़ दिया जो तेजी से क्रूस की ओर ले गईं। छोड़ी गई घटनाएँ लूका 9:51-17:11 और यूहन्ना 7:2-11:54 में दर्ज हैं।

मत्ती 19 हमें "यरदन के पार" पेरिया नामक भूमि की ओर ले जाता है, जिसका सीधा सा अर्थ है "परे"। पेरिया उत्तर में पेला से लेकर दक्षिण में मैकाएरस तक फैला हुआ था। यह गलील की दक्षिणी सीमा के विपरीत यरदन पर शुरू होकर मृत सागर के पूर्वी तट के लगभग आधे रास्ते पर मोआब तक विस्तृत था। पेरिया हेरोदेस अन्तिपास द्वारा शासित क्षेत्र का हिस्सा था। बाइबल के समय में यह एक उपजाऊ भूमि थी जिसमें कई शहर और कई बेहतरीन इमारतें बनी हुई थीं। लोग मूल रूप से किसान थे और शहर के लोगों की तुलना में फरीसियों की शत्रुता से कम प्रभावित थे।

इसी कृषि क्षेत्र में प्रभु ने तलाक के कष्टदायक विषय पर अपनी एक पूर्ण और निर्णायक शिक्षा दी। यह शिक्षा फरीसियों द्वारा उनसे पूछे गए एक गंभीर प्रश्न से प्रेरित थी।

ख. स्त्री-त्याग पर प्रभु की शिक्षा की विषय-वस्तु (19:3-12)

वहाँ बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई थी। "तब फरीसी उस की परीक्षा करने के लिये पास आकर कहने लगे, क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है" (19:3)? यह प्रभु को दुविधा में फंसाने का जानबूझकर किया गया प्रयास था, उसे दो प्रतिद्वंद्वी संप्रदायों हिलेल और शम्माई के बीच पहले से मौजूद विवाद में उलझाने की कोशिश थी। हिलेल संप्रदाय का मानना था कि एक आदमी अपनी पत्नी को किसी भी तरह के कारणों से तलाक दे सकता है: वह अब उससे प्रेम नहीं करता, या उसे कोई और मिल गया है जो उसे ज़्यादा पसंद है, या उसने उसका खाना जला दिया है, या वह खुले सिर के साथ सार्वजनिक स्थानों पर जाती है, या वह उसके माता-पिता के बारे में अपमानजनक बातें करती है, या वह बाँझ है। जबकि शम्माई संप्रदाय के लोग सख्त थे और केवल व्यभिचार, बुरी चाल या किसी अन्य प्रकार की अनैतिकता के लिए ही तलाक की अनुमति देते थे।

तलाक पर प्रभु की शिक्षा जटिल है। जब पवित्रशास्त्र के किसी जटिल भाग से निपटना हो, खास तौर पर वह जो अत्यधिक विवादास्पद हो (उदाहरण के लिए मत्ती 24 या इब्रानियों के चेतावनी वाले अंश), तो सावधानीपूर्वक और गहन संरचनात्मक विश्लेषण से शुरुआत करना सबसे अच्छा है। तो आइए सबसे पहले मत्ती 19:3-12 की संरचना को देखें। रूपरेखा विश्लेषण प्रदान करती है:

(1) प्रभु और उसके शत्रु - उसने ईश्वरीय आदर्श को पुनः दोहराया (19:3-9)

(a) पहली चुनौती और आदम की दलील (19:3-6)

(b) आगे की चुनौती और मूसा की दलील (19:7-9)

(2) प्रभु और उसके मित्र—उसे इसमें शामिल कठिनाइयों का एहसास था (19:10-12)

(a) अपने लोगों की व्यावहारिक प्रतिक्रिया (19:10)

(b) गुरु की व्यावहारिक प्रतिक्रिया (19:11-12)

i. ग्रहणशील होने पर (19:11)

ii. पुनः विवाह करने पर (19:12)

इस संरचनात्मक विश्लेषण को देखते हुए, हम एक नज़र में देख सकते हैं कि प्रभु ने दो प्रकार के लोगों के साथ व्यवहार किया। अपने शत्रुओं के साथ व्यवहार करते समय वह कठोर था, लेकिन अपने मित्रों के साथ व्यवहार करते समय उसने कुछ रियायतें दीं।

(1) प्रभु और उसके शत्रु - उसने ईश्वरीय आदर्श को पुनः दोहराया (19:3-9)

(a) पहली चुनौती और आदम की दलील (19:3-6)

ऐसा लगता है कि फरीसी उस जीवंत विवाद में प्रभु को उलझाना चाहते थे जो उस समय के धार्मिक समुदायों में चल रहा था। प्रभु ने केवल तर्कों को दरकिनार कर दिया और अपने प्रश्न पूछने वालों को वापस पवित्रशास्त्र और आदि में ले गया। उसने अदन के बगीचे में उस सुखद स्थिति की तस्वीर को फिर से चित्रित किया जहाँ एक प्रेमी जोड़ा एक परिपूर्ण वातावरण में पाप रहित पूर्णता में रहता था।

विवाह परमेश्वर का विचार था। मनुष्य इतिहास की शुरुआत में जब उसने पहले दो मनुष्यों को बनाया था, तब ही उसने इसकी स्थापना की थी। (संयोग से, सृष्टि के उत्पत्ति विवरण का उल्लेख करके, यीशु ने विकास के सिद्धांत को झूठा साबित कर दिया और आदम और हव्वा के बाइबल इतिहास के शाब्दिक सत्य का समर्थन किया।) परमेश्वर ने विवाह को समाज में व्यवस्था का मूल सिद्धांत बनाया, और विवाह संबंध को बच्चे-माता-पिता के रिश्ते से भी अधिक जुड़ा हुआ बनाया। परमेश्वर की योजना के अनुसार, जब कोई पुरुष विवाह करता है, तो वह अपनी पत्नी के साथ इस तरह का बंधन स्थापित करता है कि वह उसका उतना ही हिस्सा है जितना उसका अपना शरीर है।

प्रभु ने इन पवित्रशास्त्रीय सत्यों को उनके तार्किक निष्कर्ष तक पहुँचाया: परमेश्वर ने विवाह को स्थायी बनाने का इरादा किया था। मूल व्यवस्था में बहुविवाह या तलाक के लिए कोई जगह नहीं थी। एक पुरुष (आदम) का विवाह परमेश्वर ने एक स्त्री (हव्वा) से कराया था। उसे ईश्वरीय इच्छा के एक अलग आदेश द्वारा नहीं बनाया गया था; परमेश्वर ने उसे सीधे आदम की देह से लिया था ताकि वह सचमुच उसकी हड्डी की हड्डी और उसके मांस का मांस हो। मूल इरादा यह था कि एक पुरुष एक स्त्री से तब तक विवाहित रहेगा जब तक कि मृत्यु उस रिश्ते को खत्म न कर दे। इसलिए प्रभु ने अपना स्वयं का आधिकारिक आदेश दिया: "इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे" (मत्ती 19:6)।

इस प्रकार मसीह मूल अनंत सिद्धांत की ओर वापस गया और हिलेल, शम्माई और रब्बियों की शिक्षाओं को अनदेखा कर दिया। प्रभु के उत्तर ने फरीसियों को संतुष्ट नहीं किया, क्योंकि यह पतन से पहले की स्थितियों पर केंद्रित था, इसलिए उसके चुनौती देने वालों ने फिर से प्रयास किया।

(b) आगे की चुनौती और मूसा की दलील (19:7-9)

शुरुआत में प्रचलित पाप रहित पूर्णता के संदर्भ में, तलाक का कोई सवाल ही नहीं था। इसकी आवश्यकता कभी नहीं उठती। लेकिन मनुष्य अब स्वर्ग में नहीं रह रहा है। हम पाप से श्रापित हुए संसार में रहते हैं और हमारे पास पतित आदम का स्वभाव है। यहाँ तक कि विश्वासी, जो पवित्र आत्मा से प्रेरित हैं, वे भी प्रलोभन का दबाव महसूस करते हैं। विवाह संबंध में सभी प्रकार की बुराई छिपी हो सकती है। इसलिए फरीसियों ने मूसा की दलील देते हुए मसीह के आदर्शवादी कथन का जवाब दिया।

फरीसियों ने पूछा, "फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया, कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे?" वे व्यवस्थाविवरण 24:1 का उद्धरण दे रहे थे, जिसमें लिखा है, "यदि कोई पुरूष किसी स्त्री को ब्याह ले, और उसके बाद उसमें लज्जा की बात पाकर उस से अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर से निकाल दे।" तलाक ने विवाह को भंग कर दिया। व्यवस्था में आगे कहा गया कि इस तरह कानूनी रूप से तलाकशुदा स्त्री किसी दूसरे व्यक्ति की पत्नी बनने के लिए स्वतंत्र थी। उसके पहले पति को किसी भी हालत में उससे दोबारा विवाह करने की अनुमति नहीं थी। यह महत्वपूर्ण है कि यह व्यवस्था व्यवस्थाविवरण में पाई जाती है, जो कि महान व्यवस्था निर्माता की मृत्यु से ठीक पहले निर्गमन के चालीसवें वर्ष के ग्यारहवें महीने में लिखी गई थी (व्यवस्थाविवरण 1:3)। यह निर्णय सीनै पर्वत पर दिए गए मूल व्यवस्था का हिस्सा नहीं था।

फरीसियों की इस दूसरी चुनौती का उत्तर देते हुए, यीशु ने कहा, "मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी अपनी पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी" (मत्ती 19:8)। तलाक का मूल कारण मानवीय हृदय की कठोरता है।

मूसा को इस कठोरता का सामना करना पड़ा। अगर उसने सृष्टि के समय अदन में दिए गए शुरूआती विवाह नियम को संहिताबद्ध किया होता, जब संसार युवा था और मनुष्य का मन अभी पाप से कलंकित नहीं हुआ था, तो इस्राएलियों ने विवाह करने से इनकार करके प्रतिक्रिया व्यक्त की होती। हमारे अपने उदारवादी और व्यवस्थाहीन समाज की तरह, वे एक अटूट बंधन के जोखिम को उठाने की बजाय अवैध संबंधों में रहना पसंद करते। अगर कोई आदमी विवाह करता और उसकी पत्नी उसके प्रति असंगत निकलती, तो वह उसके साथ दुर्व्यवहार कर सकता था या उसकी हत्या भी कर सकता था।

इसलिए मूसा ने परमेश्वर के मार्गदर्शन में, व्यवस्था में स्त्री-त्याग का प्रावधान जोड़ा। उसने तलाक का आदेश नहीं दिया, जैसा कि फरीसी दावा करते थे; उसने कुछ परिस्थितियों में इसकी अनुमति दी। उसने जो आदेश दिया वह यह था कि यदि विवाह को समाप्त करना है, तो यह कानूनी रूप से, उचित औपचारिकता के साथ, और इस तरह से किया जाना चाहिए जिससे महिला की रक्षा हो। इसके अलावा तलाक स्थायी होना चाहिए। "तलाक का त्यागपत्र" वही था जो मूसा ने आदेश दिया था (19:7)। एक महिला को उसके पति के घर से मौखिक रूप से या मजबूरन निष्कासित करके नहीं निकाला जा सकता था। एक लिखित दस्तावेज या त्यागपत्र की आवश्यकता थी।

मूसा ने दो आधारों पर तलाक देने से इनकार कर दिया: (1) अगर कोई व्यक्ति अपनी पत्नी पर अशुद्धता का झूठा आरोप लगाता है तो उसे व्यवस्था द्वारा उस महिला को आगे कभी भी तलाक देने से मना किया जाता है (व्यवस्थाविवरण 22:13-19)। (2) अगर कोई पुरुष किसी महिला को बहकाता है और उसके विरूद्ध मामला साबित हो जाता है, तो उसे व्यवस्था द्वारा उससे विवाह करने के लिए मजबूर किया जाता है और उसे कभी भी तलाक देने के अधिकार से वंचित कर दिया जाता है (व्यवस्थाविवरण 22:28-29)।

मूसा की व्यवस्था उस समय मानवीय हृदय की कठोरता के लिए एक गुंजाइश थी। उस समय तलाक, पत्नी के साथ दुर्व्यवहार या अवैध संबंधों से कम बुराई थी। मूसा पुरुषों के हृदय को बदलने की आशा नहीं कर सकता था। वह केवल तलाक की अनुमति देकर और इसके अभ्यास को सुनियोजित करके इसकी कठोरता को कम करने का प्रयास कर सकता था।

प्रभु ने आगे कहा, "परन्तु आरम्भ में ऐसा नहीं था" (मत्ती 19:8)। विवाह की मूल स्थापना में तलाक का कोई प्रावधान नहीं था। शुरू में विवाह मनुष्य द्वारा बनाया गया कोई नागरिक अनुबंध नहीं था। विवाह मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की योजना थी। यह ऐसी चीज़ नहीं थी जिसे मनुष्य निरस्त या भंग कर सकता था।

यहाँ परमेश्वर द्वारा फिर से बताई गई विवाह की अवधारणा ईश्वरीय आदर्श थी। यह अभी भी ईश्वरीय आदर्श है। विवाह पुरुष और स्त्री के लाभ के लिए है, सभी मानवीय रिश्तों में सबसे अंतरंग को पवित्र रखने के लिए है, विवाह से होने वाले बच्चों की सुरक्षा के लिए है, और एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए है।

ईश्वरीय आदर्श बुनियादी है, लेकिन क्या होता है जब ईश्वरीय आदर्श को किसी एक साथी की अनैतिकता के कारण सुधार से परे तोड़ दिया जाता है? प्रभु ने उस मुद्दे को अपने एक शानदार "मैं तुमसे कहता हूँ" कथन के साथ संबोधित किया: "मैं तुम से कहता हूँ, कि जो कोई व्यभिचार [पोर्निया[11]] को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को त्यागकर, दूसरी से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है: और जो उस छोड़ी हुई को ब्याह करे, वह भी व्यभिचार करता है" (19:9)। विवाह के भागीदारों में से किसी एक का अनैतिक व्यवहार विवाह बंधन को भंग कर देता है। व्यभिचार के आधार पर तलाक के लिए एक आधुनिक कार्रवाई में, यह व्यवस्था नहीं है जो विवाह बंधन को रद्द करता है; व्यवस्था केवल व्यभिचार द्वारा पहले से लाए गए निरस्तीकरण को कानूनी प्रभाव प्रदान करता है।

ध्यान दें कि पहाड़ी उपदेश में, जहाँ प्रभु ने सर्वोच्च नैतिक आचरण को स्थापित किया, उसी तरह उसने मत्ती 19 में तलाक के मामले में भी व्यवहार किया। उसने टूटे हुए और भंग किए गए विवाह में निर्दोष पक्ष के लिए भी यही प्रावधान रखा: "जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को त्यागकर, दूसरी से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है: और जो उस छोड़ी हुई को ब्याह करे, वह भी व्यभिचार करता है" (मत्ती 5:32)। इस प्रकार प्रभु ने निर्दोष पक्ष के लिए कृपापूर्वक बचाव का रास्ता भी प्रदान किया। उसे बिना किसी बाधा के तलाक की अनुमति है और वह पुनर्विवाह करने के लिए स्वतंत्र है - उसके विपरीत जो अन्य किसी तुच्छ आधार पर विवाह को समाप्त करना चाहता है। व्यभिचार विवाह बंधन को तोड़ता है और परिणामस्वरूप तलाक घायल साथी को फिर से विवाह करने के लिए स्वतंत्र कर देता है। किसी को भी ऐसे व्यक्ति पर पत्थर फेंकने या निर्दोष पक्ष के साथ ऐसा व्यवहार करने का कोई अधिकार नहीं है मानो कि वह दोषी पक्ष में हो।

कुछ मसीही विशेष रूप से कठोर और अत्याचारी दृष्टिकोण रखते हैं जो टूटे हुए विवाह के निर्दोष शिकार के लिए प्रभु के बचाव पक्ष को अनदेखा करते हैं। यदि निर्दोष पक्ष एक महिला है और वह पुनः विवाह करती है, तो वे उसे विशेष रूप से बुरे तरीके से पत्थर मारते हैं। वे उस पर दो जीवित पति होने का आरोप लगाते हैं। उनका आरोप एक मानहानिपूर्ण बयान के करीब होता है, क्योंकि यह व्यावहारिक रूप से उसे 'द्वि-विवाही' कहता है। इस तथ्य के साथ कि उनके बयान में कोई वास्तविकता नहीं है, यह निर्दयता है।

यहाँ एक उदाहरण को देखते हैं: एक स्त्री अपने पति के विश्वासघात के कारण कई सालों तक पीड़ित रहती है। अंत में उसे सार्वजनिक रूप से उजागर किया जाता है और युवा किशोरियों से छेड़छाड़ करने के लिए उस पर मुकदमा चलाया जाता है। महिला तलाक की शरण लेती है और अपने जीवन के बिखरे हुए टुकड़ों को समेटना शुरू करती है। इस बिंदु पर उसका पति उसे छोड़ देता है और उसे अपने हाल पर जीने के लिए छोड़ देता है। अंततः वह एक ऐसे व्यक्ति से मिलती है जो विवाह का प्रस्ताव रखता है। वह प्रभु का एक भ्रमणकारी सेवक है, एक ऐसा व्यक्ति जिसका वह सम्मान करती है। प्रभु के अपने नियम के अनुसार, महिला निर्दोष है; उसके पास तलाक के लिए पचास पवित्रशास्त्रीय आधार हैं। इसलिए विवाह हो जाता है। लगभग तुरंत ही उस व्यक्ति को उन मसीहियों के एक समूह से एक पत्र मिलता है, जिनके बीच उसने कई अवसरों पर सेवा की थी; उसे बताया जाता है कि अब उनकी कलीसिया में वक्ता के रूप में उसका स्वागत नहीं किया जाएगा क्योंकि उसकी पत्नी के दो जीवित पति हैं। बेचारी महिला को अब एक नया क्रूस उठाना है। उसे यह महसूस कराया जाता है कि वह एक बहिष्कृत महिला है। ऐसी निर्दयता मसीह के आत्मा की नहीं हो सकती।

(2) प्रभु और उसके मित्र—उसे इसमें शामिल कठिनाइयों का एहसास था (19:10-12)

(a) उसके लोगों की व्यावहारिक प्रतिक्रिया (19:10)

चेलों ने तुरन्त प्रतिक्रिया व्यक्त की: " यदि पुरूष का स्त्री के साथ ऐसा सम्बन्ध है, तो ब्याह करना अच्छा नहीं।" ईश्वरीय आदर्श - अर्थात् एक पुरुष, एक स्त्री, एक शरीर, कोई तलाक नहीं - का सामना करते हुए उन्होंने तुरन्त आपत्ति व्यक्त की, जो मानव हृदय की कठोरता और तलाक से संबंधित व्यवस्था को शामिल करने में मूसा की व्यवस्था की बुद्धिमता दोनों को दर्शाती है।

चेले साधारण, व्यावहारिक लोग थे। वे किसी तपस्वी संप्रदाय के याजक नहीं थे; वे कामकाजी संसार में रोजमर्रा की जिंदगी के प्रति सजग थे। चेलों को ऐसी कई स्थितियों के बारे में पता था, जहाँ विवाह बंधन असहनीय बन जाता है। अगर हम अपने आc-पास की दुनिया से परिचित हैं, तो हम भी ऐसा कर सकते हैं। ऐसे पति-पत्नी हैं जो अपने साथी के प्रति विश्वासघाती हैं, कभी-कभी तो हद से ज्यादा विश्वासघाती। अगर किसी स्त्री की विवाह ऐसे पुरुष से हो जो वेश्याओं के साथ अक्सर संबंध बनाता है या समलैंगिक है, तो उसे क्या करना चाहिए? क्या उसके पास कोई सुरक्षा नहीं है? क्या उसकी विवाह की शपथ उसे उसके घृणित जीवनशैली और उससे किसी संक्रामक बीमारी के जोखिम के बावजूद उसके साथ बांधती है? अगर ऐसे किसी पुरुष की पत्नी मन में फेरबदल करनेवाली, आत्मा को नष्ट करने वाली दवाओं का सेवन करती है या उसे नशे की लत में डालने की कोशिश करती है, तो उसे क्या करना चाहिए? अगर किसी महिला का पति शराबी है और वह उसे आदतन गाली देता है या पीटता है या उसे अपना शरीर बेचने के लिए मजबूर करता है, तो उसे क्या करना चाहिए?

ये काल्पनिक प्रश्न नहीं हैं। कई जीवनसाथी विवाह की शपथ से ऐसी स्थिति में बंधे होते हैं जो एक जीवित नरक के तुल्य है। एक खुशहाल विवाहित व्यक्ति को ऐसे मामलों में ईश्वरीय आदर्श का उपदेश देना आसान लग सकता है, लेकिन अगर उसके पैर में खराब फिटिंग वाला जूता हो या अगर लगातार दुर्व्यवहार का शिकार होने वाला उसका प्रिय बच्चा हो तो वह इतना हठधर्मी कभी नहीं होगा।

(b) गुरु की व्यावहारिक प्रतिक्रिया (19:11-12)

i. ग्रहणशील होने पर (19:11)

इसलिए चेलों ने आपत्ति की। और प्रभु तुरंत ऊंचे पठार से नीचे उतरकर उस निचली भूमि पर आ गया, जिस पर वे खड़े थे। उन्होंने अपने शत्रुओं के साथ ऐसा करने से इनकार कर दिया। उनके लिए पैमाने को कम नहीं किया जा सकता था; वह उनके मनों को अच्छी तरह से जानता था। उसने उनके सामने सिद्धता की सलाह को बरकरार रखा: ईश्वरीय आदर्श के अनुसार, स्त्री-त्याग कोई विकल्प नहीं है।

प्रभु ने अपने चेलों को तुरंत और सटीक जवाब दिया। इस तथ्य को अच्छी तरह से समझते हुए कि सभी लोग विवाह और तलाक पर उसकी शिक्षा के अनुसार नहीं जी सकते, प्रभु ने अपने मित्रों से कहा, "सब यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते, केवल वे जिन को यह दान दिया गया है।" प्रभु ने दो बातों को पहचाना: (1) विवाह की पूर्ण पवित्रता, जिसमें इसे नष्ट करने या इसका मूल्य कम करने के किसी भी प्रयास से इसे सुरक्षित रखने का महत्व शामिल है; और (2) दुःखद लेकिन निर्विवाद तथ्य यह है कि, परमेश्वर के विशेष अनुग्रह के अलावा, सभी लोग, यहाँ तक कि उसके अपने सभी लोग भी, ईश्वरीय आदर्श द्वारा मांगे गए अनुशासन को स्वीकार नहीं कर सकते। निश्चित रूप से हमें उन अनुशासनों को, विश्वास के नियम के रूप में, अन्य लोगों पर थोपना नहीं चाहिए। प्रभु ने उन लोगों को तुच्छ नहीं समझा जिनके पास उसकी शिक्षा को ग्रहण करने के लिए आवश्यक योग्यता नहीं है। न ही उसने हमें उन लोगों पर दोष लगाने का अधिकार दिया है जो उसके पैमाने को बहुत ऊँचे स्थान पर पाते हैं।

ii. पुनः विवाह करने पर (19:12)

पद 12 तलाकशुदा व्यक्तियों के पुनर्विवाह के प्रश्न से संबंधित है। मुद्दा सरल है: क्या तलाकशुदा व्यक्ति को ब्रह्मचारी बने रहने के लिए विवश किया जाना चाहिए?

प्रभु ने बताया कि तीन तरीके हैं जिनसे किसी व्यक्ति को ब्रह्मचर्य जीवन में लाया जा सकता है, या तो विवाह से पहले या फिर गलत विवाह के परिणामस्वरूप। उसने कहा, "कुछ नपुंसक ऐसे हैं जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे; और कुछ नंपुसक ऐसे हैं, जिन्हें मनुष्य ने नपुंसक बनाया: और कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जिन्हों ने स्वर्ग के राज्य के लिये अपने आप को नपुंसक बनाया है।"

तो ब्रह्मचर्य के तीन प्रकार हैं। पहला, संविधान पर आधारित है। कुछ लोग शारीरिक, भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक रूप से इस तरह से बने होते हैं कि वे स्वाभाविक रूप से ब्रह्मचारी होते हैं। विपरीत लिंग उन्हें आकर्षित नहीं करता। इस तरह के स्वभाव का होना कोई विशेष गुण नहीं है। ऐसे लोग विवाह से मुक्ति को सकारात्मक राहत मान सकते हैं और उन्हें दूसरा विवाह करने की कोई इच्छा नहीं होती। उन्हें पुनर्विवाह पर प्रतिबंध लगाने वाली शिक्षा से कोई परेशानी नहीं होगी।

दूसरे प्रकार का ब्रह्मचर्य मजबूरी पर आधारित है। कुछ लोगों को "मनुष्यों द्वारा नपुंसक बना दिया जाता है।" पूर्वी समाज में हरम में सेवा करने वाले पुरुषों को अक्सर उनकी इच्छा के विरुद्ध खोजा बना दिया जाता था। यह प्रथा काफी क्रूर थी, लेकिन संवैधानिक किन्नरों के मामले में, अनिवार्य ब्रह्मचर्य अनिवार्य रूप से सद्गुण का संकेत नहीं था।

आजकल हमारे समाज में शारीरिक रूप से नपुंसक नहीं बनाए जाते, लेकिन कई कलीसियाएँ तलाकशुदा व्यक्तियों पर पुनर्विवाह की मनाही करके ब्रह्मचर्य थोप देती हैं, भले ही तलाक के लिए पवित्रशास्त्रीय आधार मौजूद हों। ये कलीसिया अपने द्वारा लागू की गई अप्राकृतिक जीवनशैली के कारण होने वाली पीड़ा को अनदेखा करते हैं। सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, वे तलाकशुदा लोगों को नपुंसक बना देते हैं। एक कलीसिया जो तलाक पर सख्त रुख अपनाती है, वस्तुतः तलाकशुदा व्यक्ति को अविवाहित रहने के लिए मजबूर करती है या फिर उसे बहिष्कार या कलीसिया की अप्रसन्नता का सामना करना पड़ता है। एक ऐसा नियम काफी कठोर और अव्यवहारिक होता है जो एक युवा तलाकशुदा व्यक्ति से कहता है, "तुम फिर कभी विवाह नहीं कर सकते।" ऐसा नियम एक सामान्य स्वस्थ व्यक्ति पर बहुत कठिनाई डालता है, उसे भयंकर प्रलोभन के सामने कमज़ोर कर देता है, और अक्सर उसे कलीसिया से बाहर निकाल कर संसार के हाथों सौंप दिया जाता है। या वह किसी अन्य कम कठोर कलीसिया में संगति करने की तलाश कर सकता है।

तीसरे प्रकार का ब्रह्मचर्य दृढ़ विश्वास पर आधारित है। कुछ लोग "स्वर्ग के राज्य के लिए" खुद को नपुंसक बना लेते हैं। इस प्रकार का ब्रह्मचर्य स्वैच्छिक होता है। एक व्यक्ति जानबूझकर अपनी प्राकृतिक इच्छाओं और आवेगों को बहुत अधिक व्यक्तिगत दर्द और नुकसान की कीमत पर दबाता है। परमेश्वर के विशेष अनुग्रह के द्वारा, वह मसीह के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए ईश्वरीय आदर्श को कायम रखता है। ब्रह्मचर्य का ऐसा कदम अविवाहित व्यक्ति या तलाकशुदा व्यक्ति द्वारा लिया जा सकता है। इसका उद्देश्य विवाहित जीवन के आकर्षणों से खुद को मुक्त रखना है ताकि पृथ्वी पर अपना शेष समय परमेश्वर की बातों के प्रति समर्पित कर सके। यीशु ने स्वयं इसी तरह का जीवन जिया।

प्रभु ने ब्रह्मचर्य पर अपनी शिक्षा का समापन इन शब्दों के साथ किया: "जो इस को ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे।" स्पष्टतः वह 19:11 में दिए गए अपने कथन का उल्लेख कर रहा था जहाँ उसने अपने चेलों से कहा था कि हर कोई उसके ईश्वरीय आदर्श को प्राप्त नहीं कर सकता।

2. तलाक के मामले में खामोश पहलू (19:13-15)

क. छोटे बच्चों को यीशु के पास लाया गया (19:13)

यह निश्चित रूप से कोई संयोग नहीं था कि इस बिंदु पर मत्ती ने बच्चों का विषय पेश किया, क्योंकि जब माता-पिता तलाक लेते हैं, तो सबसे ज्यादा नुकसान बच्चों को होता है। उसने लिखा, "तब लोग बालकों को उसके पास लाए।" "बालकों" के लिए मूल रूप से अनुवाद किया गया शब्द पेडियन का बहुवचन है, जिसका अर्थ है "छोटा बच्चा।" लूका ने अपने विवरण में ब्रेफोस शब्द का इस्तेमाल किया, जिसका अर्थ है "नवजात शिशु" (लूका 18:15)।

माता-पिता यीशु के प्रति इतने आकर्षित थे कि वे अपने बच्चों पर उसकी आशीष चाहते थे। लेकिन चेले इस बात से नाराज़ थे कि लोग छोटे बच्चों और शिशुओं को गोद में लेकर उसके पास प्रार्थना करने के लिए लाकर गुरु का समय बर्बाद कर रहे थे। प्रभु चेलों से "बहुत नाराज़" हुआ, क्योंकि उसे छोटे बच्चों को आशीष देना बहुत पसंद था (मरकुस 10:14)। मरकुस का तात्पर्य था कि वह क्रोधित था। सुसमाचारों में बहुत कम ही हम यीशु के क्रोधित होने के बारे में पढ़ते हैं, और यह उन अवसरों में से एक था।

ख. यीशु द्वारा आशीषित छोटे बच्चे (19:14-15)

प्रभु ने कहा, "बालकों को मेरे पास आने दो: और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है" (19:14)। उसने बच्चों को अपनी बाहों में इकट्ठा किया और उन्हें आशीष दी। उसका मन आज भी संसार के सभी बच्चों के प्रति तरस से भरा है। धन्य है वे लोग जो बच्चों को उसके पास लाने की कोशिश करते हैं।

जो माता-पिता आपस में झगड़ते हैं, एक-दूसरे को धोखा देते हैं और अपने घर को नरक बना देते हैं, वे वास्तव में कठोर हृदय वाले और स्वार्थी होते हैं। उस घर में बच्चों के लिए प्रभु का मन कितना शोकित होता होगा! लेकिन दुःखद तथ्य यह है कि ऐसे कई माता-पिता हैं जो अपने आप को मसीही होने का दावा करते हैं। लेकिन अपने व्यवहार से वे उन छोटे बच्चों को नुकसान पहुँचाते हैं जिन्हें यीशु अपनी बाहों में लेना चाहता है। पति-पत्नी के बीच संघर्ष उनके बच्चों को प्रभु से दूर कर सकता है, वह भी शायद हमेशा के लिए। एक दिन इसका कितना बड़ा हिसाब देना होगा!

ङ. राज्य में उद्देश्य (19:16-20:16)

1. एक प्रस्ताव (19:16-22)

क. मनुष्य ने क्या चाहा (19:16)

राज्य में उद्देश्यों का विषय एक रूकावट के द्वारा परिचित किया गया है। एक युवक यीशु के पास एक प्रस्ताव लेकर आता है। लूका 18:18 कहता है कि वह एक "सरदार" था; अर्थात्, वह आराधनालय का सरदार था। वह अनन्त जीवन चाहता था और उसे प्राप्त करने के लिए उसने कुछ अच्छा करने का प्रस्ताव रखा। उसकी इच्छा तो अच्छी थी, लेकिन प्रस्ताव गलत था।

अनंत जीवन पाने की आशा में लोगों ने अविश्वसनीय कार्य किए हैं, जैसे नामान अपनी शुद्धि के लिए बड़ी कीमत चुकाने या कोई महान कार्य करने के लिए पूरी तरह तैयार था (2 राजाओं 5:5,13)। एक धर्म तब झूठा साबित होता है जब वह अपने अनुयायियों से आने वाले जीवन में आनंद प्राप्त करने के लिए कुछ करने की अपेक्षा करता है। झूठा धर्म भुगतान, तपस्या, तीर्थयात्रा, उपवास, कोड़े मारना, कर्म और आत्म-त्याग पर जोर देता है।

ख. मनुष्य ने क्या पाया (19:17)

(1) प्रभु का दावा (19:17a)

सबसे पहले प्रभु ने उस व्यक्ति के "भला" शब्द के इस्तेमाल को चुनौती दी। जब युवा सरदार ने प्रभु को "उत्तम गुरु"[12] कहकर संबोधित किया, तो उसने जवाब दिया, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम

नहीं, केवल एक, अर्थात परमेश्वर।" यीशु उस युवक को चुनौती दे रहा था कि वह उसे परमेश्वर के रूप में स्वीकार करे। प्रभु वास्तव में कह रहा था, "मुझे उत्तम कहने का तुम्हारा क्या तात्पर्य है? क्या तुम्हारा मतलब है कि मैं अपेक्षाकृत अच्छा हूँ, क्योंकि एक आदमी दूसरे लोगों की तुलना में अच्छा हो सकता है? या तुम्हारा मतलब है कि मैं बिल्कुल अच्छा हूँ, क्योंकि परमेश्वर अच्छा है? क्या तुम कह रहे हो कि मैं सिर्फ़ एक अच्छा इंसान हूँ, या तुम कह रहे हो कि मैं परमेश्वर हूँ?" संसार में इन सब बातों का बहुत अंतर पाया जाता है। यहाँ तक कि कई अविश्वासी भी यह कहने के लिए तैयार हैं कि यीशु एक भला मनुष्य था।

(2) व्यवस्था का दावा (19:17b)

फिर प्रभु ने युवक की अच्छाई को चुनौती दी। उसने कहा, "यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर।" सरदार ने भले कामों के आधार पर अपनी दलील पेश की थी, और यीशु ने उसी आधार पर उसका जवाब दिया। प्रभु ने प्रभावी रूप से कहा, "यदि तू अनन्त जीवन पाना चाहता है, तो एक सिद्ध जीवन जी।" एक पापी व्यक्ति के लिए परमेश्वर की आज्ञाओं का सिद्धता से पालन करना एक असंभव कार्य है।

दस आज्ञाओं को 613 अलग-अलग विधानों में विस्तारित किया गया था, जो परमेश्वर और अपने संगी मनुष्य के प्रति एक व्यक्ति के कर्तव्य के सभी पहलुओं को शामिल करते थे। अनंत जीवन पाने के लिए, सरदार के लिए यह आवश्यक था कि वह हर समय उन सभी आज्ञाओं का पालन पूरी तरह से करें। यही स्वर्ग पहुँचने की अपरिवर्तनीय न्यूनतम सीमा थी और आगे भी रहेगी। परमेश्वर सिद्धता से कम कुछ भी स्वीकार नहीं कर सकता और न कभी करेगा।

इसलिए प्रभु ने उस व्यक्ति को चुनौती दी कि क्या वह मसीह को सिद्ध मानता है या क्या वह स्वयं को सिद्ध मानता है।

ग. मनुष्य ने क्या प्रदर्शित किया (19:18-19)

युवा सरदार ने खुद को बड़ी दुविधा में पाया। जब वह झिझका, तो प्रभु ने दस आज्ञाओं में से पाँच का उल्लेख किया, जिसमें से वे आज्ञाएँ चुनी गईं जो मनुष्य के मनुष्य के प्रति कर्तव्य और व्यक्तिगत नैतिकता के बाहरी पहलुओं (आज्ञाएँ छह से नौ और पाँच) पर ज़ोर देती थीं। उसने पहली चार आज्ञाएँ नहीं पढ़ीं, जो परमेश्वर के प्रति पूरी तरह से अटूट प्रेम की माँग करती हैं, या दसवीं आज्ञा, जो आंतरिक इच्छा से संबंधित है। पाँचवीं आज्ञा परमेश्वर के प्रति कर्तव्य थी,[13] लेकिन इसमें मनुष्य के प्रति कर्तव्य (माता-पिता के प्रति कर्तव्य) भी निहित था; इसलिए प्रभु ने इसे उस भयानक दसवीं आज्ञा के स्थान पर प्रतिस्थापित किया (संभवतः इसलिए क्योंकि इसका पालन करना आसान था), जो बुरी इच्छाओं को रोकती है।

प्रभु ने एक कथन जोड़ा जो छह से नौ और पांच आज्ञाओं को एक साथ जोड़ता है: "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना" (19:19)। वह सारांश कथन उन आज्ञाओं के अक्षर से आगे बढ़कर उनके पीछे की भावना तक गया। उसने भलाई को व्यवस्था के दायरे से बाहर निकालकर प्रेम के दायरे में रखा। उसने भलाई को बाहरी अनुपालन की व्यवस्था से हटाकर आंतरिक बाध्यता के दायरे में ला दिया।

घ. मनुष्य ने क्या घोषणा की (19:20)

युवक के जवाब से उसके आत्म-छलावे की गहराई का पता चलता है। उसने कहा, "इन सब को तो मैं ने माना है अब मुझ में किस बात की घटी है?" उसने व्यवस्था के सभी नियमों का यथावत पालन किया था, लेकिन वह व्यवस्था की भावना से संबंधित सारांश कथन को अनदेखा कर रहा था। वह लक्ष्य से चूक गया था।

सच है, उसने किसी की हत्या नहीं की थी। वह किसी और की पत्नी के साथ घिनौने संबंध का दोषी नहीं था। उसने चोरी नहीं की थी। उसने झूठ बोलकर किसी की प्रतिष्ठा को नष्ट नहीं किया था। उसने अपने माता-पिता का सम्मान किया था। उसने व्यवस्था का अक्षरशः पालन किया था। इसलिए उसने प्रभावी रूप से कहा, "जब से मैं जवाबदेह होने की उम्र में पहुंचा हूँ, तब से मैंने हमेशा अपने पड़ोसी से अपने समान ही प्रेम रखा है।"

हम भी यह कह सकते हैं, लेकिन हम अपने पड़ोसियों से उतना प्रेम नहीं करते जितना हम अपने आप से करते हैं। ए.पी. गिब्स इस तथ्य को अपने अनोखे अंदाज में समझाते थे। "आप किसी शहर से घर आ रहे हैं," वे आगे कहते हैं, "और आप आगे धुआं देखते हैं, जहाँ आप रहते हैं। एक घर में आग लगी है। दमकल गाड़ियाँ आपके सामने से चीखती हुई सायरन और घंटियाँ बजाती हुई गुज़रती हैं। आप अपनी गति तेज़ करते हैं और एक कोने में पहुँचते हैं। आग आपकी गली में है! आप दौड़ पड़ते हैं। फिर आप राहत की साँस लेते हैं। आप कहते हैं, "मैं बहुत खुश हूँ! यह मेरा घर है! मुझे खुशी है कि यह मेरे पड़ोसी का नहीं है।" क्या कभी किसी ने ऐसा कहा है?

ङ. मनुष्य ने क्या समझा (19:21-22)

उस व्यक्ति ने दावा किया कि उसने अनंत जीवन पाने के लिए जो कुछ भी करने की आवश्यकता थी, वह सब किया है, लेकिन ध्यान दें कि जब यीशु ने उसे परखा तो उसकी प्रतिक्रिया क्या थी। प्रभु ने कहा, "यदि तू सिद्ध होना चाहता है; तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले" (19:21)। अब युवा सरदार को बात समझ में आ गई। यीशु ने उसे साबित कर दिया था कि वह अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम नहीं करता, कि उसने व्यवस्था की मूल आत्मा का पालन नहीं किया, कि उसने अनंत जीवन नहीं कमाया है। वह इस संसार की वस्तुओं में तो धनी था, लेकिन भले कामों में दिवालिया था। मत्ती 19:22 हमें बताता है कि "वह जवान यह बात सुन उदास होकर चला गया।"

2. एक समस्या (19:23-30)

क. प्रभु का दावा (19:23-24)

(1) सिद्धान्त का प्रकटीकरण (19:23)

युवा सरदार के साथ मुलाकात ने धन से जुड़ी एक समस्या से अवगत कराया। प्रभु ने अपने चेलों से कहा कि एक धनी व्यक्ति के लिए स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना बहुत कठिन है। धन व्यक्ति को यहाँ नीचे अधिकांश स्थानों पर तो प्रवेश दे सकता है, लेकिन वे स्वर्ग के द्वार नहीं खोल सकते। धन सामर्थ में बदल जाता है; सामर्थ अहंकार को उत्पन्न करती है; और अहंकार स्वर्गराज्य के द्वार को बंद कर देता है। एक धनी व्यक्ति के लिए "मन का दीन" बनना काफी कठिन है (5:3)।

(2) सिद्धांत को दोहराया गया (19:24)

19:24 में प्रभु ने उस सिद्धांत का उदाहरण दिया जिसे उसने 19:23 में प्रकट किया था। उसने कहा, "परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।" "सुई के नाके" स्पष्ट रूप से एक दीवार वाले पूर्वी शहर के द्वार में छोटे दरवाजे को संदर्भित करता है। जब मुख्य द्वार रात के लिए बंद हो जाते थे, तो देर से आने वाले व्यापारी को छोटे पीछे के द्वार से प्रवेश करने के लिए मजबूर होना पड़ता था। आमतौर पर उसे अपने ऊँटों से सभी माल को उतारना पड़ता था ताकि वे अंदर जा सकें।

ख. चेलों का आश्चर्य (19:25-26)

(1) अतुल्य (19:25)

धन एक समस्या है क्योंकि लोग उस पर भरोसा करते हैं, लेकिन प्रभु ने यह स्पष्ट कर दिया कि धन से उद्धार को नहीं खरीदा जा सकता। चेले इस शिक्षा से आश्चर्यचकित थे क्योंकि धनवान लोग अक्सर वही पाते हैं जो वे चाहते हैं क्योंकि वे धनी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि धन इस जीवन में मार्ग को आसान बना सकता है। इसके अलावा लगभग हर कोई धनवान बनना चाहता है। "फिर किस का उद्धार हो सकता है?" चेलों ने पूछा।

(2) असंभव (19:26)

मनुष्य के लिए, अपनी सामर्थ से, अपने संसाधनों पर निर्भर रहकर, परमेश्वर का अनुग्रह पाना असंभव है। धनवान युवा सरदार की संपत्ति उसके गले में एक चक्की के पाट की तरह था। उसके मामले में, अपनी संपत्ति के साथ सबसे अच्छा काम यह था कि वह उसे दान कर देता।

चूँकि मनुष्य के लिए खुद को उद्धार दिलाना असंभव है, इसलिए उद्धार परमेश्वर की ओर से है। वह असंभव का परमेश्वर है, वह परमेश्वर जो सबसे कठोर मानव हृदय पर भी काम कर सकता है ताकि अंत में वह उस अनुग्रह के आगे झुक जाए जिससे उद्धार मिलता है। इसीलिए यीशु ने कहा, "परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।"

ग. प्रभु का आश्वासन (19:27-30)

(1) पतरस द्वारा पूछा गया प्रश्न (19:27)

पतरस हमेशा की तरह चेलों का प्रवक्ता था। धनी युवा सरदार से प्रभु के वायदे को सुनने के बाद (19:21), पतरस ने प्रभावी रूप से पूछा, "हमें क्या मिलेगा?" वह उद्धार के बारे में नहीं सोच रहा था। वह इस बारे में सोच रहा था कि प्रेरितों को वादा किए गए राज्य में क्या प्रतिफल मिलेगा।

(2) पतरस के प्रश्न का उत्तर (19:28-30)

(a) एक वादा (19:28-29)

i. बारह चेलों के लिए, सहस्त्राब्दी की आशीष (19:28)

यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि नई सृष्टि से जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिहांसन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे।" प्रभु का जवाब कलीसियाई युग से आगे निकल गया। जिसे प्रभु ने “नई सृष्टि” कहा है, वह सहस्राब्दी युग की ओर देखता है - अर्थात् सभी चीजों को नया बनाने का समय, आने वाला स्वर्णिम युग जब पृथ्वी से अभिशाप काफी हद तक हटा दिया जाएगा, आगे को लोग युद्ध नहीं सीखेंगे, रेगिस्तान गुलाब के बगीचे की तरह खिलेंगे, और एक सौ वर्षीय व्यक्ति बिल्कुल एक युवा होगा।

सहस्त्राब्दी के दौरान, प्रभु सारे संसार पर राज्य करेगा। यरूशलेम पूरी दुनिया की राजधानी होगी और यहूदी सांसारिक साम्राज्य का प्रशासन करेंगे।[14] बारह प्रेरितों के पास इस्राएल के बारह पुनर्गठित गौत्रों पर अधिकार होगा। प्रत्येक प्रेरित अपार संपत्ति को नियंत्रित करेंगे और अपार सामर्थ का उपयोग करेंगे। धनी युवा सरदार ने अपनी छोटी धन की थैली की खातिर सहस्त्राब्दी राज्य में अपना स्थान खो दिया। यहूदा ने तीस चांदी के सिक्कों की खातिर अपना प्रतिफल फेंक दिया। वे दोनों एक साम्राज्य पर शासन करने में मददगार हो सकते थे।

ii. सभी सच्चे चेलों के लिए, कई गुना आशीषें (19:29)

युगांतर में मिलने वाले प्रतिफल के अलावा, सभी के पास अनंत धन को हासिल करने का एक मौका है। यीशु ने कहा, "जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या लड़केवालों या खेतों को मेरे नाम के लिये छोड़ दिया है, उस को सौ गुना मिलेगा: और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा।" पृथ्वी पर कौन सा बैंक "सौ गुना [10,000 प्रतिशत]" जितना बड़ा लाभ देने की गारंटी दे सकता है? प्रभु ने उन चीज़ों को गिनाया जिन पर लोग अक्सर अपना मन लगाते हैं। उसने घर से शुरुआत की और खेत पर खत्म किया। इसके बीच में उसने परिवार के सबसे प्रेमी सदस्यों की सूची को जोड़ा। जो लोग मसीह के लिए कुछ भी त्यागने को तैयार हैं, वे एक दिन बहुत बड़ा प्रतिफल पाएँगे।

हालाँकि इस वायदे में निस्संदेह सहस्राब्दी और अनंतकाल का अर्थ निहित हैं, लेकिन परमेश्वर के कई सेवक जिन्होंने प्रभु के लिए अपने घर की सुविधाओं और धन की सुरक्षा को त्याग दिया है, उन्होंने खुद को सैकड़ों परमेश्वर के लोगों के अभिभावक के रूप में पाया है और इस जीवन में करूणा के अनगिनत कार्यों के पात्र बने हैं। इसलिए रोमियों 16:13 में पौलुस इस तरह से लिख सका, "रूफुस को जो प्रभु में चुना हुआ है, और उस की माता को जो मेरी भी है, दोनों को नमस्कार।" डैन क्रॉफोर्ड ने एक बार कहा था कि रूफुस की माँ को पौलुस ने मसीह में अपनी दस हज़ार माताओं में से एक बताया था।

(b) एक सिद्धांत (19:30)

प्रभु ने राज्य के उद्देश्यों के बारे में अपनी चर्चा का एक चेतावनी (19:30) और एक दृष्टांत (20:1-16) के साथ समापन किया। उसने चेतावनी दी, "परन्तु बहुतेरे जो पहिले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहिले होंगे।" दूसरे शब्दों में, हम इस बारे में मानवीय अनुमानों पर भरोसा नहीं कर सकते कि कौन पहला है या कौन अंतिम, कौन सबसे बड़ा या सबसे छोटा है। मसीह के न्याय आसन के सामने कई अचंभित बातें होंगी। इस बात की संभावना है कि जब प्रभु ने यह चेतावनी दी थी तो उसके मन में यहूदा था। यहूदा को चेलों में सबसे प्रमुख माना जाता था। वह प्रेरितों के समूह की आर्थिक बातों का प्रभारी था - और वह लालच

के कारण गिर गया। प्रभु ने यह भी संकेत दिया कि पतरस को घमंड की भावना से सावधान रहने की ज़रुरत है क्योंकि वह खुद की तुलना उस धनवान युवा सरदार से कर रहा था।

3. एक दृष्टान्त (20:1-16)

दाख की बारी में काम करने वाले मजदूरों का दृष्टांत बताकर, प्रभु ने 19:30 में दिए गए चेतावनी के पीछे के सिद्धांत को स्पष्ट किया: कुछ जो पहिले हैं, पिछले होंगे; और कुछ जो पिछले हैं, पहिले होंगे॥ एक ऐसे प्रतिभाशाली उपदेशक को मैं जानता था, जो अपने अपरिवर्तित दिनों में इस दृष्टांत को लेकर बहुत परेशान था। अपने मन-परिवर्तन से पहले वह ब्रिटिश लेबर पार्टी और ट्रेड यूनियनवाद के लिए एक कुशल वक्ता था। उसकी भीड़ को प्रभावित करने वाली वाकपटुता उसे प्रधानमंत्री बनने में सक्षम बना सकती थी अगर उसने अपने वरदान को एक उच्च उद्देश्य के लिए समर्पित नहीं किया होता। उद्धार पाने से पहले, उसने इस दृष्टांत को 'श्रमिक आंदोलन' और 'समान काम के लिए समान वेतन' के सिद्धांत का अपमान माना। उसने इस तथ्य को नजरअंदाज कर दिया था कि जिन श्रमिकों के पास अनुबंध था, उनके साथ अनुबंध की शर्तों के अनुसार पूरी ईमानदारी से व्यवहार किया गया था।

लेबर पार्टी का यह प्रवक्ता इस कहानी के मूल मुद्दे को समझने में चूक गया। दृष्टांत का उद्देश्य पतरस की स्वार्थी भावना को झकझोरना था, जिसने उसे यह पूछने के लिए प्रेरित किया था, "तो हमें क्या मिलेगा?" यहाँ विषय-वस्तु उद्धार सत्य नहीं बल्कि राज्य सत्य है, अनंत जीवन नहीं बल्कि सेवा के लिए प्रतिफल है।

क. मजदूरों की भर्ती (20:1-7)

सुबह-सुबह ही पहले भर्ती किए गए लोगों को नियम की गारंटी के साथ काम पर रखा गया। उनके पास एक अनुबंध था, जिसे वे उचित मानते थे। तीसरे, छठे और नौवें घंटे में दाख की बारी के स्वामी ने और भी अधिक मजदूरों की भर्ती की। उन्हें भी स्वामी की गारंटी के साथ काम पर रखा गया था। उसने वादा किया कि जब हिसाb-किताब का समय आएगा तो वह उन्हें जो सही होगा वह देगा। ग्यारहवें घंटे में उसने अतिरिक्त श्रमिकों को काम पर रखा जो दाख की बारी के स्वामी की उदारता पर और भी अधिक निर्भर थे।

दिन भर जब स्वामी बाज़ार में जाता था, तो वह कई लोगों को "बेकार खड़े" देखता था (20:3)। उसने पूछा कि जब इतना सारा काम पड़ा था, तो वे बेकार क्यों खड़े थे। उन्होंने अवसर मिलने पर काम करने की इच्छा व्यक्त की, और जब बुलावा आया, तो उन्होंने जाकर काम किया। जिन्हें भेजा गया, वे सभी काम पर गए। ध्यान दें कि वे बाज़ार में खड़े थे, वह स्थान जहाँ उन्हें अवसर मिल सकता था। वे घर पर मौज-मस्ती करने या आराम करते हुए समय बर्बाद करने नहीं गए थे।

यह सब आत्मिक जीवन के लिए भी सत्य है। सेवा के लिए अवसर में असमानता है। कुछ लोग युवावस्था में ही उद्धार नहीं पाते। कुछ को अपने परिवर्तन के तुरंत बाद दाख की बारी में काम करने के लिए नहीं बुलाया जाता। कुछ को हज़ारों लोगों को उपदेश देने या महान कलीसियाओं का रखवाला बनने के लिए नहीं बुलाया जाता। कुछ लोग अपनी सेवकाईयों में जागृति को होते हुए नहीं देखते। प्रभु के सेवकों के बीच सेवकाई की अवधि और प्रतिभा में असमानता पाई जाती है।

दृष्टांत में "दिन" मानव जीवन की अवधि को दर्शाता है। हमें प्रभु की किसी अन्य स्थान पर कही गई बात याद आती हैं जहाँ उसने कहा था, "जिस ने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है: वह रात आनेवाली है जिस में कोई काम नहीं कर सकता।" (यूहन्ना 9:4)।

तो हम इस दृष्टांत को अपने जीवन में लागू करना शुरू कर रहे हैं, लेकिन हम अभी तक इसकी मूल गहराई तक नहीं पहुँचे हैं। दृष्टांत का सार मत्ती 20:8-16 में स्पष्ट रूप से सामने आता है।

ख. मजदूरों को प्रतिफल देना (20:8-16)

(1) आदेश (20:8-12)

(a) वे लोग जो पिछले थे, अब पहिले हैं (20:8-9)

देर से शुरू करने वालों ने स्वामी की उदारता पर भरोसा करने की हिम्मत की। उनके पास कोई अनुबंध नहीं था और उन्होंने कोई सौदेबाजी नहीं की थी। उन्होंने यह नहीं कहा, "हम इन शर्तों पर आपकी सेवा करेंगे।" न ही उनमें पतरस की तरह कोई भावना थी, क्योंकि उन्होंने यह नहीं कहा, "हमें क्या मिलेगा?"

इन मजदूरों को तब काफी आश्चर्य हुआ कि उन्हें पूरे दिन की मजदूरी दी गई, मानो उन्हें सुबह-सुबह बुलाया गया हो। स्वामी ने उन्हें उनकी सेवा की अवधि के लिए नहीं, बल्कि उनकी इच्छा, निष्ठा और भरोसे के लिए प्रतिफल दिया था। इसी तरह प्रभु हमें मिलने वाले अवसरों और उनका उपयोग करने के तरीके को मापता है, न कि केवल हमारी सेवा की अवधि को।

(b) जो पहिले थे, वे अब अंतिम हैं (20:10-12)

सबसे पहले शुरुआत करने वाले लोग अपने सौदे पर भरोसा करना चाहते थे। उनकी भावना शुरू से ही गलत थी। ये मजदूर पहले से ही जानना चाहते थे कि उन्हें दाख की बारी में काम करने से क्या मिलेगा और उन्हें वही मिला जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी: प्रेमपूर्वक दिए गए प्रतिफल की बजाय केवल कानूनी मजदूरी।

दिन के अंत में भी उनकी भावनाएँ गलत ही रही। उन्होंने देखा कि जिन लोगों ने कम समय के लिए दाख की बारी में काम किया था, उन्हें पूरे दिन की मजदूरी मिल रही थी, इसलिए जिन्होंने सुबह जल्दी काम शुरू किया था, वे इसके आधार पर जोड़ करने लगे। अगर एक घंटे के काम से एक "दीनार" मिलता है, तो बारह घंटे के काम का मूल्य बारह दीनार होना चाहिए। लेकिन उन्हें ठीक वही मिला जिसके लिए वे सहमत हुए थे, लेकिन वे ईर्ष्यालु और उग्र हो उठे। उनकी ईर्ष्या की भावना स्पष्ट दिख रही थी। उनके पास उस व्यक्ति की तरह एक दयालु, करुणामय भावना नहीं थी जिसके लिए उन्होंने काम किया था।

इस दृष्टांत से हम सीखते हैं कि जब तक हम अपने दिए गए अवसर की उपेक्षा नहीं करते, तब तक हम प्रभु की सेवा में जितना समय बिताते हैं, वह उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि हमारी सेवा की भावना। शायद अगर दृष्टांत में मजदूरों ने उस स्वामी के समान भावना दिखाई होती, तो उनका प्रतिफल बारह गुना बढ़ गया होता।

(2) स्वामी (20:13-15)

(a) उसकी सरकार (20:13-14a)

असंतुष्ट मजदूरों को जवाब देते हुए, स्वामी ने (जो स्पष्ट रूप से परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है) उनके प्रवक्ता से कहा, " हे मित्र, मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता" (20:13)। वह क्रोधित नहीं था, क्योंकि उसने उस व्यक्ति को "मित्र" कहा। उन मजदूरों को एक अलग दृष्टिकोण अपनाने में बहुत देर नहीं लगी थी। स्वामी ने भी कोई अन्याय नहीं किया था। मजदूरों को उचित मजदूरी मिली - न अधिक, न कम, जितने में वे सहमत हुए थे। उन्हें एक दृढ़ समझौते के अनुसार प्रतिफल दिया गया।

(b) उसका अनुग्रह (20:14b)

स्वामी ने आगे कहा, "मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे, उतना ही इस पिछले को भी दूं।" देर से आने वालों को उनकी अपेक्षा से कहीं ज़्यादा मिल रहा था क्योंकि उन्होंने कोई मोल-भाव नहीं किया था। स्वामी ने प्रभावी रूप से कहा, "उन्होंने मुझ पर भरोसा किया और क्योंकि उन्होंने मुझ पर भरोसा किया और मेरी ईमानदारी से सेवा की, इसलिए मैं उनके साथ अपनी कृपा के अनुसार व्यवहार करूंगा।"

(c) उसकी महानता (20:15a)

स्वामी ने पूछा, "क्या उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूँ सो करूं?" वह अपने सभी साधनों पर पूर्ण, निर्विवाद स्वामी था। वह उसके साथ जो चाहे कर सकता था। वह उसके साथ क्या करता था, यह उसका अपना मामला था। इसी तरह हमारा प्रभु ब्रह्मांड का निर्विवाद प्रभु और स्वामी है। वह उन लोगों को उचित रूप से प्रतिफल देने में सक्षम है जो उस पर भरोसा करते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं।

(d) उसकी भलाई (20:15b)

अंत में स्वामी ने दावा किया कि वह भला है। उसने पूछा, "क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है?" क्योंकि वह भला था, इसलिए उसने उन लोगों के साथ उचित व्यवहार किया जिन्होंने एक अनुबंध की मांग की थी। उसने उन्हें उदार शर्तें दीं जिन्हें वे स्वीकार करने में प्रसन्न थे। क्योंकि वह भला था, इसलिए उसने "पूरा नाप, दबा-दबाकर, हिला-हिलाकर, और उभरता हुआ" दिया (लूका 6:38) और साथ ही उन लोगों को भी दिया जो दिन के अंत में साँझ के समय उसकी सेवा में आए थे। इसी तरह हमारा प्रभु भी पूर्ण रूप से भला है और उन सभी के लिए भी भला है जो उस पर भरोसा करते हैं।

(3) अवलोकन (20:16)

"इसी रीति से जो पिछले हैं, वह पहिले होंगे, और जो पहिले हैं, वे पिछले होंगे"। यहाँ प्रयुक्त पूर्ण कथन और 19:30 में "बहुतेरे" शब्द पर ध्यान दें। प्रभु ने "सभी" शब्द का प्रयोग नहीं किया। जब हिसाब का दिन आएगा तब कुछ जो पहिले हैं वे अभी भी पहिले ही रहेंगे, और कुछ जो अंतिम हैं वे अभी भी अंतिम ही रहेंगे। इसलिए आइए, हम सुनिश्चित करें कि हम अपनी सेवा में अपने प्रभु के साथ सौदेबाजी करने की कोशिश न करें; इसकी बजाय हमें उस पर भरोसा करना चाहिए और उसी भावना से उसकी सेवा करनी चाहिए जिस भावना से वह हमारी सेवा करता है।

च. राज्य में सेवकाई (20:17-34)

1. कीमत का खुलासा (20:17-19)

यहाँ हम प्रभु के अब तक के सबसे विस्तृत कथन को पढ़ते हैं जो उसके आने वाले क्रूसीकरण के बारे में है। क्रूसीकरण हमारे उद्धार की कीमत थी, वास्तव में एक बहुत ही भयानक कीमत। अपने कथन में उसने ईश्वरीय पूर्वज्ञान के एक विस्मयकारी प्रदर्शन में एक के बाद एक विवरण दिए। मिश्रित संभावनाओं के नियम के अनुसार, किसी भविष्यद्वाणी के सच होने की संभावनाएँ प्रत्येक विशिष्ट विवरण के साथ बहुत अधिक बढ़ जाती हैं। और निश्चित रूप से विवरण जितना अधिक असंभावित होगा, पूर्ति उतनी ही अधिक असंभावित होगी।

मान लीजिए मैंने अपनी पत्नी से कहा, "मैं शिकागो जा रहा हूँ। वहाँ रहते हुए मुझे गिरफ़्तार कर लिया जाएगा और मुझ पर झूठा आरोप लगाया जाएगा। मुझे न्यायालय में न्यायाधीश द्वारा अपमानित किया जाएगा। मुझे मृत्युदंड दिया जाएगा और फांसी पर लटका दिया जाएगा। लेकिन चिंता मत करो। कुछ भी मत बेचना। मेरी किताबें बेच मत देना। मेरी वसीयत को प्रमाणित मत करना। मैं अपने अंतिम संस्कार के तीन दिन बाद वापस जी उठकर आ जाऊँगा।" मैं ऐसा बयान तब तक नहीं देता जब तक कि मेरे पास कुछ असाधारण जानकारी न होती, या मैं पागल न होता, या मैं कोई विचित्र व्यावहारिक मज़ाक करने की कोशिश न कर रहा होता।

प्रभु यीशु निश्चित रूप से पागल नहीं था, न ही वह इतिहास में सबसे बड़े धोखे के लिए मंच तैयार कर रहा था। लेकिन उसके पास ऐसी जानकारी थी जो केवल परमेश्वर के पास थी, अर्थात् भविष्य के बारे में उसके पास ठोस जानकारी थी।

प्रभु ने अपनी मृत्यु के बारे में जो भविष्यद्वाणी की थी, वह वास्तव में सच हुई। वह यरूशलेम में मार डाला गया। उसे मुख्य याजकों और शास्त्रियों के हाथों पकड़वाया गया। उसे यहूदी लोगों के अगुवों ने मौत की सज़ा सुनाई। उन्होंने उसे अन्यजातियों के हाथ सौंप दिया ताकि उसे मृत्युदंड दिया जा सके। अन्यजातियों ने उसका मज़ाक उड़ाया, क्योंकि हेरोदेस और उसके योद्धाओं ने "उसका अपमान करके ठट्ठों में उड़ाया" (लूका 23:11)। प्रभु को कोड़े मारे गए और उसे क्रूस पर लटकाकर मार डाला गया। सबसे बढ़कर, और भविष्यद्वाणी के विरुद्ध सभी बाधाओं के विपरीत, वह मरे हुओं में से जी उठा। इसके अलावा, वह ठीक तीसरे दिन जी उठा जैसा कि उसने कहा था। एक के बाद एक विवरण पूरे हुए, जिससे यह ठोस सबूत मिला कि यीशु कुछ ऐसा कर सकता था जो कोई और नहीं कर सकता था: वह भविष्य को सटीक, अचूक और सूक्ष्म रूप से बता सकता था।

प्राचीन काल के सबसे प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ता डेल्फ़िक ऑरैकल थे। लोग अजगर द्वारा दी गई शैतानी शक्ति से प्रेरित भविष्यद्वाणी के फव्वारे से पीने के लिए हर जगह से आते थे। हालाँकि, डेल्फ़िक ऑरैकल के भविष्यसूचक कथनों को एक रहस्यमय, अस्पष्ट प्रकृति का माना जाता था। जब लिडिया का राजा क्रोएसस फारस के साथ युद्ध पर विचार कर रहा था, तो उसने डेल्फ़िक ऑरैकल से सलाह ली और उसे बताया गया, "यदि क्रोएसस फारस के साथ युद्ध करता है तो वह एक महान राष्ट्र को नष्ट कर देगा।" उसने भविष्यद्वाणी का अर्थ यह निकाला कि वह फारस को नष्ट कर देगा, लेकिन जिस राष्ट्र को उसने नष्ट किया वह उसका अपना ही था। यह अफ़सोस की बात है कि वह दानिय्येल को नहीं जानता था, जो उसे बता सकता था कि फारस विजयी होगा! (दानिय्येल 7:5)

2. मार्ग प्रकट किया गया (20:20-28)

क. दो चेलों की महत्वाकांक्षा (20:20-23)

(1) उनकी माता (20:20-21)

कितना विरोधाभास है: प्रभु अपने चेलों से क्रूस के बारे में बात कर रहा था, और उनमें से दो उसके पास मुकुट के बारे में बात कर रहे थे! उनकी माता उनकी प्रवक्ता बनी थी। मत्ती 20:20 उसे "ज़ब्दी के पुत्रों की माता" कहता है; दूसरे शब्दों में वह याकूब और यूहन्ना की माँ थी। उसका नाम शलोमी था (मत्ती 27:56; मरकुस 15:40; 16:1)। कुछ लोगों का मानना है कि वह अब विधवा हो गई है। माना जाता है कि वह प्रभु की माँ मरियम की बहन थी (यूहन्ना 19:25), जिस कारण याकूब और यूहन्ना प्रभु के चचेरे भाई रहे होंगे। शायद यह उसके पारिवारिक संबंध थे जिसने उन्हें यह सोचने पर मजबूर किया कि आने वाले राज्य में खुद के लिए एक पसंदीदा स्थान हासिल करने के लिए उनके पास दूसरों की तुलना में एक बेहतर मौका है।

जाहिर है कि चेलों को अभी भी लगता था कि प्रभु एक सांसारिक राज्य स्थापित करने वाला है। यह असाधारण है कि उन्होंने प्रभु की आने वाली मृत्यु की सभी चेतावनियों को कितनी सुविधाजनक रूप से अनदेखा किया। यहाँ तक कि जब उसकी मृत्यु उसकी बार-बार की गई भविष्यद्वाणियों के बिल्कुल अनुरूप हुई, तब भी उन्होंने उसके पुनरुत्थान के वायदे पर विश्वास नहीं किया।

शलोमी की यह विनती कि उसके दोनों बेटों को प्रभु के दाहिने और बाएं हाथ पर बैठने की अनुमति दी जाए, एक गलती थी, लेकिन इससे प्रभु पूरी तरह से नाराज़ नहीं हुआ। कम से कम उन्हें यह तो विश्वास था कि वह मसीहा है और वह एक राज्य स्थापित करने जा रहा है। काश सभी माता-पिता की इच्छा होती कि उनके बच्चे प्रभु के राज्य में महानता प्राप्त करें! उसकी महत्वाकांक्षा उन महत्वाकांक्षाओं से कहीं ज़्यादा प्रशंसनीय थी जो कई माता-पिता को प्रेरित करती है।

(2) उनकी गलती (20:22-23)

शलोमी के पुत्रों को भी इसी तरह के लक्ष्य से प्रेरित किया गया था, लेकिन वे नहीं जानते थे कि वे क्या मांग रहे थे। प्रभु ने तुरंत उनकी गलती को प्रकट कर दिया। सच है, यीशु ने दूर के दिन में सभी बारह प्रेरितों के सिंहासन पर बैठने की बात की थी जब उसका राज्य आएगा (मत्ती 19:28)। लेकिन वे सिंहासन की कीमत या उसके राज्य में इसे सुरक्षित करने के सिद्धांत को नहीं जानते थे।

एक प्याला था जिसे पूरी तरह से पीया जाना था, वह प्याला दुःख और पीड़ा का प्याला था (मत्ती 26:39, 42)। उस प्याले के विचार मात्र से गतसमनी में उसके माथे पर लहू की बूंदों के समान पसीना बहने लगा था (लूका 22:44)। मृत्यु के उस ठंडे बर्फीले पानी में पीड़ा का बपतिस्मा लिया जाना था। सिंहासन से पहले कब्र का आना अवश्य था। बिना क्रूस के कोई मुकुट नहीं होता। क्या वे दो चेले उस प्याले और बपतिस्मा में भाग ले सकते थे? उन्होंने दावा किया कि वे ऐसा कर सकते थे।

उनके निवेदन और उनके जवाब के पीछे विश्वास था। वे अभी भी मानते थे कि यीशु एक राजा था। कोई भी व्यक्ति उस व्यक्ति के साथ नहीं खड़ा होना चाहेगा जो फांसी पर चढ़ने वाला हो। उन्हें अभी तक यह तथ्य समझ में नहीं आया था कि वह मरने वाला था। यहां तक कि जब उसने दो अध्यादेशों के संदर्भ में

उनके सामने क्रूस को रखा, जिन्हें उसने बाद में कलीसिया में नियमित रूप से करने की आज्ञा दी (कटोरा जो हमारे लिए उसकी मृत्यु का प्रतीक है, और बपतिस्मा जो उसके साथ हमारी मृत्यु का प्रतीक है), तब भी उन्होंने उसकी भविष्यवाणी को काफी सहजता से लिया।। उन्हें यकीन था कि वे अपने रास्ते में आने वाली किसी भी परीक्षा को सहन करने में सक्षम हैं। "हम पी सकते हैं," उन्होंने कहा (20:22)।

"तुम मेरा कटोरा तो पीओगे, [और जो बपतिस्मा मैं लेनेवला हूँ उसे तुम भी लोगे]" उसने कहा (20:23)। और याकूब और यूहन्ना ने उसके कटोरे से पिया, लेकिन पूरा नहीं पी पाए। वे मौत के ठंडे पानी में डूबे थे, लेकिन उनका पानी उतना बर्फीला नहीं था। याकूब शहीद होने वाला पहला प्रेरित था और वह मसीह के लिए शहीद हुआ। यूहन्ना मरने वाले प्रेरितों में सबसे आखिरी था।

प्रभु के पास एक स्थान है जिसे "उस मुकुट के दिन में जो जल्दी आने वाला है" भरा जाना है।[15] लेकिन उस जगह को किसी को देने का अधिकार उसका नहीं है। इसे कमाना होगा। हालाँकि परमेश्वर बिना किसी योग्यता के उद्धार देता है, लेकिन वह कभी भी बिना किसी योग्यता के प्रतिफल नहीं देता। इस वास्तविकता को हमारी आत्माओं में हमें गहराई से समझना चाहिए।

ख. बाकी दस चेलों का क्रुद्ध होना (20:24-28)

(1) एक विस्फोट (20:24)

जब अन्य चेलों ने शलोमी के निवेदन के बारे में सुना, तो उनका क्रोध अपनी चरम पर पहुँच गया। उन्हें लगा कि याकूब और यूहन्ना ने यीशु के साथ अपने रिश्ते का अनुचित लाभ उठाया है। वे सभी राज्य में सर्वोच्च पदों की आकांक्षा रखते थे, जिसके बारे में वे अभी भी कल्पना करते थे कि वह बस आसपास ही कहीं है। वे सभी अपनी आँखें खुद पर ही लगाए हुए थे। इससे प्रभु का हृदय कितना दुखी हुआ होगा! वह अभी उनके सामने क्रूस की बात रख ही रहा था कि, जैसा कि मत्ती ने लिखा, वहाँ राज्य में पदों को लेकर यह सारा हंगामा शुरू हो गया। चेलों ने शायद उनकी कही एक भी बात पर गौर नहीं किया था। कटोरा और बपतिस्मा के बारे में उसके पीड़ादायक शब्द अभी भी उनके कानों में गूंज रहे थे, और उन्होंने अपनी बहस शुरू कर दी।

(2) एक स्पष्टीकरण (20:25-27)

प्रभु का अपने लोगों के प्रति धीरज काफी अद्भुत है। उसने चेलों को डांटा नहीं। उसने इस बात के प्रति उनके सम्मान को स्वीकार किया कि वे अभी भी उसे राजा मानते हैं। प्रभु समझ गया कि उन्हें अभी तक पवित्र आत्मा प्राप्त नहीं हुआ है और वे आत्मिक रूप से अपंग हैं। तब उसने उन्हें धीरे से सांसारिक सामर्थ के बीच का अंतर समझाया, जैसा कि अन्यजातियों द्वारा प्रयोग किया जाता है, और आत्मिक सामर्थ जिसे चेलों को सौंपा जाएगा और उनके द्वारा प्रयोग किया जाएगा।

(a) सांसारिक सामर्थ के विषय में - सांसारिक अवधारणा (20:25)

मसीह ने कहा, "तुम जानते हो, कि अन्यजातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं।" "अधिकार जताना" शब्द का अनुवाद अधिकार के कठोर उपयोग को दर्शाता है। उस समय की ज्ञात आधी दुनिया रोम के लोहे के पंजे के नीचे थी, इसलिए यहूदी जानते थे कि अन्यजातियों

के शासक कितने कठोर हो सकते हैं। रोमियों ने अपनी सामर्थ बढ़ाने, अपने अहंकार की सेवा करने और अपने स्वयं के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अधिकार का प्रयोग किया। ऐसी महत्वाकांक्षा प्रभु यीशु की भावना के बिल्कुल विपरीत है।

(b) आत्मिक सामर्थ के विषय में—अद्‌भुत विरोधाभास (20:26-27)

मसीह के राज्य में, चाहे वह कलीसिया के विशुद्ध आत्मिक क्षेत्र में हो या सहस्राब्दी साम्राज्य के अधिक वैश्विक क्षेत्र में, सामर्थ और अधिकार उन लोगों के पास होगा जिनके पास विनम्र सेवा करने की भावना है, न कि वे जो अभिमानी स्वार्थी भावना से भरे हैं। यीशु ने कहा, "परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक [डायकोनोस] बने। और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास [डोउलोस] बने।"

मैं मसीह में एक भाई को जानता हूँ जिसने इन आयतों की भावना को अच्छी तरह से समझा है। वह कोई वाकपटु उपदेशक या किसी बड़े कलीसिया का पास्टर नहीं है। बल्कि, वह एक सफल व्यवसायी है जिसका परमेश्वर के प्रति शांत प्रभाव पूरे बाज़ार में महसूस किया जाता है। वह परमेश्वर के लोगों के एक छोटे से झुंड का एक बुद्धिमान और कोमल रखवाला भी है। मैं उसके घर की ओर अपनी यात्राओं को हमेशा याद रखूँगा। वह हमेशा मुझे घर में सबसे आरामदायक कुर्सी देता है और जो भी कोना उसे मिलता है, उसी में संतुष्ट हो जाता है। अब वह बूढ़ा हो रहा है और चलने के लिए लाठी का इस्तेमाल करता है, लेकिन चुपचाप और दृढ़ता से और एक दरबारी की शालीनता के साथ वह अपने आगंतुक को सम्मान की कुर्सी, अपनी खुद की आरामकुर्सी पर बैठाता है।

सोने के समय वह कहता है, "मुझे अपने जूते दे दो।" जब मैं पहली बार उसके घर गया तो मैं चौंक गया और मैंने पूछा, "आपको मेरे जूते क्यों चाहिए?"

उसने जवाब दिया, "मैं इन्हें साफ और चमकाने जा रहा हूँ।"

मैंने आपत्ति जताते हुए कहा, "उन्हें इसकी जरूरत नहीं है।"

"हाँ, उन्हें ज़रुरत हैं," उसने उत्तर दिया। "इसके अलावा, मैं प्रभु के लिए भी ऐसा करता हूँ।"

चाहे उसके पास कितने भी मेहमान क्यों न हों, कोई भी उन बातों से बच नहीं सकता। अपने जूते देने से इनकार करने से इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता। अगली सुबह आने वाले मेहमान का सबसे पहला स्वागत उसके बिस्तर के पास रखे उसके जूतों को देखकर होता है, जो नए जैसे चमक रहे होते हैं। मेरे दोस्त में सेवा करने की एक प्रबल भावना है।

कई साल पहले जब मैं मूडी बाइबल संस्थान के कर्मचारियों में शामिल हुआ था, तब वहाँ के रेडियो पास्टर रॉबर्ट लिटिल (बॉब) थे। बॉब एक प्रतिभाशाली व्याख्याता थे और मूडी नेटवर्क पर कई दैनिक और साप्ताहिक प्रसारण आयोजित करते थे। इसके अलावा उन्होंने पूरे देश में कलीसियाओं और सम्मेलनों में कई भाषण दिए हैं। उनका रेडियो प्रसारण लाखों लोगों तक फैला हुआ था और शहर-दर-शहर पहुँचता था। लोग उनसे मिलने आते थे या अपनी समस्याओं के बारे में बताते थे, चाहे वे बड़ी हों या छोटी, इसलिए उनका मनन करने का समय लगातार बाधित हो जाता था। उनका कार्यभार बहुत अधिक था, लेकिन किसी भी तरह बॉब उन सभी के लिए समय निकाल लेता था।

एक बार जब हम कैम्पस में साथ में कॉफी पी रहे थे, तो उसने मुझे यह कहानी सुनाई: एक दिन टेलीफोन की घंटी बजी और एक आवाज आई, "क्या यह पास्टर लिटिल हैं?"

"हाँ, मैं हूँ," बॉब ने उत्तर दिया। "मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?"

"क्या आप मेरे कुत्ते को दफना देंगे?"

"मुझे माफ करें, आपने क्या कहा?"

"क्या आप आकर मेरे कुत्ते को दफना देंगे? मेरा कुत्ता अभी-अभी मरा है। यह मेरा अकेला दोस्त है और मैं चाहता हूँ कि इसे मसीही रीति-रिवाज से दफनाया जाए। मैं आपके रेडियो प्रसारण पर आपकी बात सुनता हूँ। मैं यहां शिकागो में रहता हूँ। मैं किसी अन्य पास्टर को नहीं जानता। क्या आप आकर मेरे कुत्ते को दफनाएंगे?"

तब, मैंने बॉब से पूछा कि उसने इस विचित्र अनुरोध पर क्या प्रतिक्रिया दी। उसने कहा, "बेशक मैं गया। इसे इस तरह से देखें। यहाँ एक आदमी था जिसका दुनिया में सिर्फ़ एक ही दोस्त था - उसका कुत्ता। जब उसका कुत्ता मर गया, तो वह उसके शव का सम्मान करना चाहता था। इसलिए उसने अपने दूसरे दोस्त की ओर देखा - यानि मैं।"

"तुमने क्या किया?" मैंने पूछा.

"खैर, हमने उसके कुत्ते को एक बक्से में डाला। वह बगीचे में गया, एक गड्ढा खोदा, और बक्से को गड्ढे में रख दिया। फिर मैंने अपनी टोपी उतारी और उस आदमी के लिए प्रार्थना की।" बॉब थोड़ा रूका। "आप जानते हैं," उसने कहा, "वह आदमी अब भी रेडियो पर मुझे सुनता रहेगा। कौन जानता है? एक दिन वह मसीह की ओर मुड़ जाएं।"

बॉब लिटिल ने वास्तविक महानता का रहस्य जान लिया था। उसने एक सेवक बनना सीख लिया था।

(3) एक उदाहरण (20:28)

यीशु ने अपने स्पष्टीकरण का समापन स्वयं को एक सेवक के उदाहरण के रूप में उपयोग करके किया: "मनुष्य का पुत्र, वह इसलिये नहीं आया कि उस की सेवा टहल करी जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों की छुडौती के लिये अपने प्राण दे।" फिर से वही था - अर्थात् क्रूस। यहाँ प्रभु के शब्द हमें पौलुस के शानदार ख्रीस्तीय पद्यांश की याद दिलाते हैं जिसमें उसने समझाया कि भले ही यीशु मसीह स्वयं परमेश्वर के तुल्य था, फिर भी उसने मनुष्य का सेवक बनकर (डोउलोस, "दास") और यहाँ तक कि 'क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी" बनकर खुद को नम्र किया। क्योंकि उसने खुद को नम्र किया, इसलिए अब वह अति महान है और उसका नाम अन्य सभी नामों से ऊपर और श्रेष्ठ है। एक दिन हर घुटना उस नाम के आगे झुकेगा और हर जीभ उसे प्रभु के रूप में अंगीकार करेगी (फिलिप्पियों 2:5-11)।

क्या हम प्रभु के उदाहरण का अनुसरण कर रहे हैं? क्या हम चाहते हैं कि हमारी सेवा-टहल की जाएँ या हम सेवा टहल करना चाहते हैं? यीशु हर दिन हर पल सेवा में अपना जीवन देने के लिए तैंतीस साल से भी ज़्यादा समय तक इस संसार में रहा। वह उस शर्मनाक क्रूस पर अपना जीवन बलिदान करने के लिए आया था। राज्य में सेवा का मार्ग ऐसा ही है।

3. सामर्थ्य प्रकट हुई (20:29-34)

क. पुरुष (20:29-30)

यरूशलेम जाने वाले रास्ते पर बहुत बड़ी भीड़ थी। वे फसह का पर्व मनाने के लिए उस पवित्र नगरी जा रहे थे। जाहिर है कि प्रभु भीड़ से कुछ आगे था क्योंकि वह यरदन से आया था और यरीहो के पूर्वी द्वार से प्रवेश किया था। वह जल्द ही अपने एक और अनुग्रहकारी चमत्कार को करने वाला था।

मत्ती ने कहा कि वहाँ दो अंधे लोग थे और यह चमत्कार तब हुआ जब यीशु यरीहो से निकल रहा था। मरकुस ने अपने समानांतर लेख में मुख्य अंधे व्यक्ति, बरतिमाई का उल्लेख किया, और संकेत दिया कि चमत्कार तब हुआ जब यीशु यरीहो से निकल रहा था, और यरीहो में प्रभु के प्रवेश का भी उल्लेख किया (मरकुस 10:46-52)। लूका ने अपने समानांतर लेख में मुख्य अंधे आदमी का उल्लेख किया और संकेत दिया कि जब यीशु यरीहो के पास पहुँचा तो वह "सड़क के किनारे बैठा हुआ भीख माँग रहा था" (लूका 18:35)।

संभवतः ऐसा हुआ था कि बरतिमाई और उसका साथी शहर के पूर्वी द्वार के पास भीख मांग रहे थे। भीड़ से आगे निकलकर यीशु उनके पास से निकलकर आगे बढ़ गया। फिर भीड़ आई और बरतिमाई को पता चला कि भीड़ यीशु के पीछे पड़ी हुई है। बरतिमाई ने जीवन का सबसे बड़ा अवसर खो दिया था। प्रभु यरूशलेम के रास्ते से गुजरा था और अब उस रास्ते से कभी नहीं आने वाला था। यीशु और वह उत्साहित भीड़ अब यरीहो में चले गए थे और उन अंधे लोगों को शहर में उनसे मिलने की कोई निश्चित उम्मीद नहीं थी, इसलिए वे दीवार के चारों ओर से दक्षिणी द्वार की ओर भागे, जहाँ से यीशु अंततः बाहर निकलने वाला था।[16]

नगर में प्रभु ने जक्कई को ढूंढ़ निकाला और उसे बचाया (लूका 19:1-10)।

इस बीच दोनों अंधे लोग एक सही स्थान पाकर वहाँ जगह बैठ गए और उन्होंने अपनी दृष्टि वापस पाने के अपने आखिरी अवसर को बर्बाद न करने का संकल्प लिया। समय आने पर उन्होंने यरीहो से भीड़ को आते हुए सुना और ऊँची आवाज़ में चिल्लाने लगे, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर" (मत्ती 20:30)। "दाऊद की सन्तान" मसीहा के लिए एक लोकप्रिय यहूदी उपाधि थी।

वे दोनों अंधे आदमी अपने प्रति मसीह की सख्त ज़रूरत के बारे में जानते थे। आज लोग सुसमाचार का विरोध इसलिए करते हैं क्योंकि वे खुद को अंधा और खोया हुआ नहीं मानते। हमें पाप और उसके परिणामों पर पवित्र आत्मा से प्रेरित उपदेशों की ज़रूरत है। हमें सुसमाचार के लिए नैतिक आधार तैयार करने के लिए दस आज्ञाओं को सिखाने की ज़रूरत है। शायद कोई भी व्यक्ति वास्तव में तब तक परिवर्तित नहीं होता है जब तक कि उसे पहले पूरी तरह से अपराध-बोध नहीं होता (यूहन्ना 16:8-11)। जब लोगों के "हृदय छिद गए" तो उन्होंने चिल्लाकर पूछा, "हे भाइयो, हम क्या करें?" (प्रेरितों 2:37)

हमारी कलीसियाओं में इतने सारे झूठे दावे होने का कारण यह है कि लोगों को उनके खोए होने के बारे में पहले से अवगत कराए बिना ही "मसीह को ग्रहण करने" के लिए कहा जाता है। पुराने समय के सुधारक कहा करते थे कि आत्माओं पर काम करते समय, उद्धार के धागे को खींचने की कोशिश करने से पहले दृढ़ विश्वास की तेज सुई को चुभोना आवश्यक था। यीशु ने मत्ती 9:12 में भी यही कहा: "वैद्य भले चंगों को नहीं परन्तु बीमारों को अवश्य है।"

ख. भीड़ (20:31)

उस समय वहाँ भिखारियों का होना एक आम दृश्य था। वे तब भी लोगों को परेशान करते थे जब वे अपनी जगह पर रहते थे और चुपचाप भीख मांगते थे, लेकिन जब वे जोर से मसीह को पुकार रहे थे, तो भीड़ को वैसे भी कोई सहानुभूति नहीं होती थी। अंधे लोगों के पीछे से गुज़र रहे लोगों ने उन्हें डांटकर सीधे तौर पर चुप रहने के लिए कहा। लेकिन दोनों लोगों को पता था कि उन्हें मसीह की ज़रूरत है और चाहे भीड़ हो या न हो, विरोध हो या न हो, वे चुप रहने वाले नहीं थे। वे बेरहम भीड़ से भयभीत नहीं हुए। अंधों ने अपने आलोचकों को अनदेखा कर दिया। मत्ती ने लिखा, "पर वे और भी चिल्लाकर कहने लगे, हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।"

लोगों को अपनी विशेष भीड़ के डर से कितनी आसानी से मसीह से दूर रखा जाता है! यहां तक कि जब यह एक लोकप्रिय आंदोलन का हिस्सा होता है जो कुछ समय के लिए स्वामी और उनके लोगों की सराहना करता है, लेकिन वही भीड़ वास्तव में खोजी आत्माओं के प्रति कोई सहानुभूति नहीं रखती। जब सब कुछ कहा और किया जाता है, तो भी भीड़ आखिर भीड़ ही रहती है। यह आज बधाई देगी और कल क्रूस पर चढ़ा देगी।

भीड़ को परेशान होना पसंद नहीं है। उन लोगों के बारे में सोचें जो आपकी भीड़ का हिस्सा हैं - आपके नौकरीपेशा साथी, शायद स्कूल के बच्चे, गिरोह, आपके क्लब के सदस्य आदि। यदि आप मसीह के पास आने की किसी हार्दिक इच्छा को व्यक्त करने के लिए अपनी आवाज़ उठाते हैं, और यदि आप इसे इस तरह से करते हैं कि आपकी भीड़ असहज महसूस करती है, तो वे आपको चुप कराने की कोशिश करेंगे। कोई न कोई कटु टिप्पणी अवश्य करेगा।

वे दोनों अंधे व्यक्ति भीड़ में से उन लोगों द्वारा चुप कराये जाने या मसीह से दूर रखे जाने से कहीं अधिक कठोर थे, जिन्होंने उन्हें "चुप रहने" के लिए कहा था। उनकी ज़रूरत की भावना, यीशु तक पहुँचने के उनके रास्ते में बाधा डालने वाली भीड़ के साथ शांति से रहने की किसी भी इच्छा से अधिक मजबूत थी। इसलिए "वे और भी चिल्लाकर” बोलने लगे।"

ग. प्रभु (20:32-34)

(1) उसकी पुकार (20:32)

"यीशु रूक गया..." वह जानता था कि अंधे व्यक्ति वहाँ थे; वह उनके बारे में सब कुछ जानता था। रूककर खड़े होकर उसने उनके लिए आखिरकार अपने पास आना संभव बनाया। हम कल्पना कर सकते हैं कि भीड़ भी चुपचाप खड़ी रही। यह उन क्षणों में से एक था जब पूरा ब्रह्मांड अपनी सांस रोक लेता है। दो लोग मसीह के पास आ रहे थे।

प्रभु ने अंधे लोगों को अपनी ज़रूरत बताने का मौक़ा दिया। अक्सर अति-उत्सुक आत्मा-विजेता उस व्यक्ति के मुँह में शब्द डालता है जिसे वह यीशु के पास ला रहा होता है। सवाल पूछना अधिक बेहतर होगा ताकि खोया हुआ व्यक्ति अपनी ज़रूरत और विश्वास दोनों को अपने शब्दों में व्यक्त कर सके। "तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं?" यीशु ने प्रभावी ढंग से पूछा।

(2) उसकी तरस की भावना (20:33-34a)

दोनों अंधे लोग उस तरस से भरे, सम्मोहक आवाज़ की दिशा में मुड़े। अपने मन की भूख और आशा को प्रकट करते हुए, उन्होंने कहा, " हे प्रभु; यह कि हमारी आंखे खुल जाएं" (20:33)। प्रभु का हृदय उनके लिए तरस से भर उठा। मत्ती ने कहा, "यीशु ने तरस खाकर उन की आंखे छूई" (20:34)। उनकी हताशा और दृढ़ संकल्प ने उसके हृदय को छू लिया और उसने उनकी आँखों को छुआ।

उनकी मांग की विशालता प्रभु को रोक नहीं पाई। जैसा कि जॉन न्यूटन ने लिखा, "यीशु को प्रार्थना का उत्तर देना पसंद है"; उसने आगे कहा:

तुम एक राजा के पास आ रहे हो;

अपने साथ बड़ी-बड़ी याचना लाए हो;

क्योंकि उसका अनुग्रह और सामर्थ्य ऐसा है,

कि कभी भी कोई उससे बहुत अधिक नहीं मांग सकता।[17]

(3) उसके परिवर्तित लोग (20:34b)

वहाँ एक हैरतअंगेज आश्चर्यकर्म हुआ: "वे तुरन्त देखने लगे।" अंधी आँखों को अब देखने योग्य बना दिया गया और पहली चीज़ जो उन्होंने देखी वह यीशु था। कल्पना कीजिए कि अंधकार से निकलकर दिन के उजाले में आना, जो केवल अंधकार ही था और अब यीशु को सामने देखना! "और उसके पीछे हो लिए," मत्ती ने समाप्त किया। बेशक उन्होंने ऐसा ही किया। अपनी नई खुली आँखों के सामने इस तरह के दर्शन के साथ, बेशक उन्होंने ऐसा ही किया।

उन्होंने बहुत सी अन्य चीज़ें भी देखीं जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थीं: प्रकृति की सुंदरता, यरीहो की दीवारें, मानव चेहरों पर अलग-अलग भाव, रंग, लगातार बदलती भीड़ की चलती-फिरती मनोदशा। लेकिन उनकी आँखें सिर्फ़ यीशु पर ही टिकी थीं। उनके मन में दस हज़ार नई संवेदनाएँ दर्ज हो रही थीं। उनके सामने एक नई दुनिया खुल गई थी। उन्होंने स्वयं को देखा, लेकिन वे यीशु के पीछे हो लिए। यह तब होता है जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के प्रिय पुत्र से सच्ची मुलाक़ात करता है।

II. सार्वजनिक विवाद (21:1-23:39)

हम मत्ती के सुसमाचार में एक और महत्वपूर्ण मोड़ पर आ गए हैं: यहाँ निजी चर्चाएँ सार्वजनिक विवादों में बदल जाती हैं, जो प्रभु के यरूशलेम में विजयी प्रवेश से शुरू होती हैं। इस घटना के साथ पृथ्वी पर प्रभु का अंतिम भीड़ भरा सप्ताह शुरू होता है। वह अपने कार्य को शुरू करता है, क्योंकि चूँकि इस्राएल राष्ट्र ने उसे अस्वीकार कर दिया है, इसलिए अब वह राष्ट्र को अस्वीकार करता है।

क. संकट (21:1-22)

1. भविष्यद्वाणी की गई विजय का चिह्न (21:1-17)

क. इस्राएल के मसीहा का संदेश (21:1-7)

विजयी प्रवेश से कुछ समय पहले, यीशु ने लाज़र को मृतकों में से जीवित किया था। उस चमत्कार ने महासभा को इस बात का यकीन दिला दिया था कि उसे हमेशा के लिए मिटा देना चाहिए, नहीं तो इस अनचाहे मसीहा के लिए लोगों का उत्साह रोमी हस्तक्षेप को बढ़ावा देने लगेगा (यूहन्ना 11:47-54)। लाज़र को मरे हुओं में से जिलाने के बाद, यीशु ने बैतनिय्याह को छोड़ दिया था, लेकिन जाहिर है कि वह बाद में वापस आ गया था। अब वह फिर से उस खुशहाल, शांतिपूर्ण घर को छोड़कर यहूदियों से टकराव के लिए यरूशलेम की ओर चल पड़ा।

एडर्सहेम के अनुसार "यह शुरुआती वसंत में एक उजला दिन था।"[18] मत्ती 21:2 हमें बताता है कि प्रभु ने अपने कुछ चेलों को "अपने सामने के गाँव" (मुख्य सड़क से कुछ दूर) में भेजा, संभवतः बैतफगे, गधे के बच्चे को अपने पास लेकर आने के लिए।[19]

(1) स्थान (21:1)

बैतफगे के स्थान के बारे में कुछ अनिश्चितता है। बैतफगे, जिसका अर्थ है "अंजीर का घर", एक ऐसे क्षेत्र के लिए उपयुक्त नाम था जो शानदार अंजीर के पेड़ों से भरा हुआ था। ऐसा लगता है कि यह नाम सामान्य रूप से जिले से, और विशेष रूप से यरूशलेम के बाहरी इलाकों की सीमाओं के भीतर एक छोटे से गाँव से जुड़ा हुआ है। कभी-कभी कहा जाता है कि वे सीमाएँ शहर की दीवारों से दो हज़ार हाथ (लगभग एक मील) दूर थीं। इसलिए बैतफगे शहर की दीवारों और बैतनिय्याह के बीच में हो सकता है।

(2) योजना (21:2-3)

दोनों चेलों ने उस जानवर को पा लिया जैसा यीशु ने उन्हें निर्देश दिया था, और निर्देशानुसार उसके उपयोग की अनुमति भी मिल गई।

हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि वर्ष के इस समय में फसह के पर्व के लिए यरूशलेम में भारी भीड़ उमड़ आई थी। लोगों ने शहर को खचाखच भर दिया था और आc-पास के गांवों में हर उपलब्ध घरों में उमड़ पड़े थे। भीड़ में यह खबर तेजी से फैल गई कि यीशु आ रहा है, और उसने एक गधे के बच्चे का इस्तेमाल अपनी सवारी के लिए किया है, और वह यरूशलेम में विजय के साथ प्रवेश करने वाला है। लोगों में इसे लेकर उत्सुकता बढ़ गई और एक बड़ी भीड़ उससे मिलने के लिए आगे बढ़ी। उनमें से कई लोग उस व्यक्ति को देखने के लिए उत्सुक थे जिसने अभी-अभी एक व्यक्ति को मृतकों में से जीवित किया था, लेकिन भीड़ में कई फरीसी भी थे जिनके हृदय कड़वाहट, ईर्ष्या और घृणा से भरे हुए थे।

इसी बीच, रास्ते में कहीं यीशु और उसके साथियों को अपने दो चेले मिले, जिनके साथ वह गधी का बच्चा था।

(3) भविष्यद्वाणी (21:4-5)

प्रभु का उद्देश्य असाधारण था, यह दृश्य यरूशलेम में उसके सामान्य प्रवेश और लोकप्रिय प्रदर्शनों को हतोत्साहित करने के उसके सामान्य अभ्यास के विपरीत था। मत्ती ने हमें बताया कि उसने जकर्याह 9:9 की भविष्यद्वाणी को पूरा करने के लिए जानबूझकर इस प्रदर्शन को किया था। प्रभु कभी भी उस भीड़ के

शोरगुल के सामने नतमस्तक नहीं हुआ; उसने वास्तव में शोर मचाया - उस भविष्यद्वाणी को पूरा करने के उद्देश्य से।

मत्ती ने भविष्यद्वाणी का उद्धरण देते हुए कहा, "देख, तेरा राजा तेरे पास आता है; वह नम्र है और गदहे पर बैठा है; वरन लादू के बच्चे पर" (21:5)। पूर्व में राजाओं द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले तेज़ चलने वाले गधों की एक नस्ल थी (न्यायियों 10:4; 1 राजाओं 1:33), लेकिन मत्ती 21:5 में जिस गधे का वर्णन किया गया है वह बोझा ढोने वाले जानवर के रूप में पाला गया था। इस दृश्य में रोमी अधिकारियों को परेशान करने वाली कोई बात नहीं थी। पिलातुस जैसे लोग रथों, युद्ध के घोड़ों, चमचमाते कवच में कदमताल करने वाली सेनाओं, ललकार, हथियारों और बंदियों की लंबी कतारों के साथ एक सम्राट के विजयी प्रवेश से परिचित थे। एक किसान के घर के बने वस्त्र में एक आदमी के साथ उत्साही यहूदियों के इस जुलूस में उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी, जब वह एक बोझा ढोने वाले जानवर पर सवार होकर यरूशलेम में प्रवेश कर रहा था। खजूर की डालियों को लहराते और भजन गाते हुए असभ्य देशवासियों और मछुआरों के काफिले से उन्हें खतरा पैदा करने वाली कोई बात नहीं लगी।

(4) प्रस्तुति (21:6-7)

लेकिन यरूशलेम में प्रभु का प्रवेश भी उतना ही विजयी था। इसके बाद की सभी शताब्दियों में, संसार ने इसे 'खजूर रविवार" के रूप में मनाया है। सम्राटों के गौरवपूर्ण उत्सव लगभग भुला दिए गए हैं, लेकिन आज भी उस विनम्र राजा का जुलूस याद किया जाता है जो गधे पर बैठा था और जिसने पुराने कपड़ों को काठी और खजूर के पत्तों को चादर के रूप में इस्तेमाल किया था।

नम्रता और महिमा को एक साथ जोड़ते हुए, प्रभु शहर में आता है। उसका विजयी प्रवेश यरूशलेम से उनके राजा को पहचानने की उसकी अंतिम अपील थी।

ख. इस्राएल की भीड़ द्वारा होशन्ना (21:8-14)

(1) उल्लास (21:8-9)

हम भीड़ की यात्राओं को फिर से देख सकते हैं। कुछ लोग बैतनियाह से यीशु के पीछे आए और अन्य कुछ लोग यरूशलेम से उससे मिलने आए थे। और हम दो भीड़ को एक साथ मिलकर एक जुलूस बनाते हुए देख सकते हैं। एडर्सहेम ने इस दृश्य का वर्णन इस प्रकार किया है:

वह लंबा जुलूस ऊपर की ओर बढ़ा और उस पठारी क्षेत्र के ऊपर से गुजरा जहाँ से यरूशलेम की ओर "जैतून पहाड़ की ढलान" शुरू होती है। इस बिंदु पर शहर के दक्षिण-पूर्वी कोने का पहला दृश्य दिखाई देता है। मंदिर और अधिक उत्तरी भाग दाईं ओर जैतून की ढलान से छिपे हुए हैं; जो दिखाई देता है जो सिय्योन पहाड़ का भाग है... उस समय यह मैकाबीज़ के महल और महायाजक के महल से, छत पर छत, उभरा हुआ, महलों का एक बहुत ही सुन्दर शहर था, जब तक कि आंख उस महल, शहर और महल के शिखर पर टिकी नहीं, उसके भौंहें सिकोड़ने वाले मीनार और शानदार बगीचे, हेरोदेस का राजकीय निवास, जो कि दाऊद के महल के ठीक स्थान पर था... यह शायद तब हुआ होगा जब सड़क के सटीक बिंदु पर पहुंचा गया था, जहां "दाऊद का नगर" पहली बार अचानक दिखाई देता है। यह वही "जैतून पहाड़ की ढलान थी,"

जहाँ "चेलों की सारी मण्डली उन सब सामर्थ के कामों के कारण जो उन्होंने देखे थे, आनन्दित होकर बड़े शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगी" [लूका 19:37]।[21]

भीड़ ने जो गीत गाया वह हलेल से था जिसे हर फसह पर गाया जाता था: "दाऊद की सन्तान को होशाना (अब बचा लो), धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है, आकाश में होशाना।" (मत्ती 21:9; भजन 118:25-26 देखें)। यहूदी परंपरा कहती है कि भजन 118:25-28 को यरूशलेम के लोगों द्वारा पर्व के लिए आने वाले तीर्थयात्रियों का स्वागत करते समय प्रतिध्वनि के रूप में गाया जाता था। यरूशलेम के नागरिक प्रत्येक पद के पहले खंड को गाते थे और आने वाले यात्री दूसरे खंड के साथ प्रतिक्रिया देते थे। जब वे भजन के अंतिम पद (भजन 118:29) पर पहुँचते, तो दोनों समूह इसे एक साथ गाने के लिए अपनी आवाज़ें मिलाते और फिर निष्कर्ष के रूप में भजन 103:17 को जोड़ देते थे।

हालाँकि, यीशु का स्वागत एक सामान्य यात्री से कहीं बढ़कर किया गया। घाटी में जय की ललकार गूंज उठी। लूका के सुसमाचार में हमें बताया गया है कि इस शोरगुल से फरीसी क्रोधित हो उठे, जिन्होंने यीशु से माँग की वह अपने चेलों को चुप रहने को कहें। लेकिन प्रभु ने मना कर दिया। उसने कहा, "कि तुम से कहता हूँ, यदि ये चुप रहें, तो पत्थर चिल्ला उठेंगे" (लूका 19:40)।

भीड़ अपने रास्ते पर आगे बढ़ती रही। सड़क नीचे की ओर झुकी और एक पल के लिए शहर जैतून की पहाड़ी के पीछे गायब हो गया। लेकिन जल्द ही रास्ता फिर से ऊपर दिखाई दिया और ऊबड़-खाबड़ इलाके पर चढ़ता गया जब तक कि वह चिकनी चट्टान के एक बाहरी हिस्से तक नहीं पहुंच गया, जहां से पूरा शहर साफ़ दिखाई देने लगा। सीधे आगे किद्रोन घाटी थी, जो यहां पर अपनी सबसे निचली गहराई पर दिखाई देती है जहां यह हिन्नोम की घाटी से जुड़ती है। इस बिंदु से यरूशलेम एक ऐसा शहर लग रहा था जो "एक गहरी खाई से निकल रहा हो।"[22]

(2) यरूशलेम (21:10-11)

अंत में प्रभु यरूशलेम में पहुंचा जहाँ मत्ती ने वर्णन किया, "तो सारे नगर में हलचल मच गई; और लोग कहने लगे, यह कौन है" (21:10)? "हलचल" के लिए मूल अनुवादित यूनानी शब्द से “भूचलन” शब्द पाया है। प्रभु के विजयी प्रवेश ने यरूशलेम को नैतिक और आत्मिक रूप से शुरू से अंत तक पूरी तरह से हिला दिया। हम निश्चिंत रूप से कल्पना कर सकते हैं कि यद्यपि रोमी अधिकारी चिंतित नहीं थे क्योंकि वे ऐसे यहूदी प्रदर्शनों के आदी थे, फिर भी उन्होंने ऐसे सभी लोकप्रिय शोरगुल पर सतर्कता पूर्वक नज़र रखी। वहीं यहूदी अधिकारी काफी क्रोधित थे। पूरे प्रवासी समुदाय से आए यहूदी (वे फसह के लिए यरूशलेम में थे) आश्चर्यचकित थे और जानना चाहते थे कि वह व्यक्ति कौन था जिसके शहर में प्रवेश करने से इतनी हलचल मच गई थी। जवाब था, "यह गलील के नासरत का भविष्यद्वक्ता यीशु है" (21:11)।

(3) न्याय (21:12-13)

इस मसीहा की गतिविधियाँ अभी समाप्त नहीं हुई थीं। यीशु मंदिर के प्रांगण में गया,[23] जैसा कि उसने पहले भी किया था (यूहन्ना 2:13-16), लेकिन इस बार उसमें उसे शुद्ध करने का स्पष्ट उद्देश्य मौजूद था। इस प्रकार प्रभु की सेवकाई मंदिर के शुद्धीकरण के साथ शुरू हुई और समाप्त हुई। जब यहूदी अधिकारी, जो

मंदिर के व्यापार से लाभ कमाते थे, तुरंत मंदिर को अपवित्र करने के लिए लौट गए, तो बाद में यीशु ने इस तथ्य की भी घोषणा की कि पूरी इमारत को ढा दिया जाएगा (मत्ती 24:1-2)।

मंदिर का वह हिस्सा जो "डाकुओं की खोह" बन गया था (21:13) अन्यजातियों का प्रांगण का इलाका था। इसे पवित्र स्थान के परिवेश से पत्थर के विभाजन द्वारा अलग किया गया था। अन्यजातियों के प्रति सामान्य यहूदी घृणा ने याजकों को उनके प्रांगण के व्यावसायीकरण को मंजूरी देने के लिए प्रेरित किया और निस्संदेह प्रभु के क्रोध को भड़का दिया। व्यापारियों और सर्राफों को रियायतें देना यहूदी अधिकारियों के लिए आर्थिक रूप से फायदेमंद था।

सामान्य बलिदान के लिए बैलों, भेड़ों और कबूतरों की लगातार मांग रहती थी। जैसे-जैसे फसह का समय नजदीक आता गया और प्रत्येक परिवार को एक मेमने की आवश्यकता होती गई, मेमनों की मांग भी उसी अनुपात में बढ़ती गई। जोसेफस के अनुसार फसह के पर्व के लिए दो लाख मेमनों की आवश्यकता होना असामान्य नहीं था। अगर हम अतिशयोक्ति की अनुमति भी दें, तो यह आंकड़ा इस बात का कुछ अंदाजा देता है कि अन्यजातियों के प्रांगण में किस तरह का लेनदेन होता था।

फिर भी, अदार महीने के पच्चीसवें दिन (फसह से अठारह या उन्नीस दिन पहले), कर-अधिकारियों ने वार्षिक आधा शेकेल मंदिर कर इकट्ठा करने के लिए उस प्रांगण में व्यवसाय स्थापित किया। मूर्तिपूजक शिलालेख या मूर्तिपूजक राजा की छवि वाले सिक्के मंदिर के खजाने में नहीं दिए जा सकते थे, इसलिए सर्राफों ने भी विदेशी मुद्रा या अन्य सिक्कों को आधे शेकेल में बदलने के लिए - एक कीमत पर- अपना व्यवसाय स्थापित किया । प्रत्येक इस्राएली जिसने अपने गृहनगर में पहले से कर का भुगतान नहीं किया था, उसे मंदिर में कर-वसूल करने वाले को भुगतान करना पड़ता था, इसलिए व्यापार तेज़ी से बढ़ रहा था। ये सभी सर्राफें सांसारिक धन को पवित्र धन में बदलने और शायद गरीबों के लिए ऋण की व्यवस्था करने से अच्छा लाभ कमाते थे।

(a) पवित्रस्थान को शुद्ध किया गया (21:12)

मंदिर प्रांगण में प्रभु का अचानक प्रकट होना, दरअसल इस्राएल राष्ट्र के साथ उनके पूर्व-नियोजित टकराव का हिस्सा था। उसकी सर्वज्ञ आँखों ने शहर में कई अन्य सामाजिक दुराचारों को देखा होगा, लेकिन वे सीधे मंदिर में गया, वह भी ठीक शहर के केंद्र में, क्योंकि "पहिले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए" (1 पतरस 4:17)। यदि मंदिर गलत था, तो सब कुछ गलत था।[24] राजनीतिक सुधारक हमेशा यह सोचने की गलती करते हैं कि वे मनुष्यजाति की सामाजिक बुराइयों पर हमला करके समाज को शुद्ध कर सकते हैं। जरूरत सुधार की नहीं बल्कि उत्थान की है। अगर मानव हृदय बदल जाए तो समाज अपने आप बदल जाएगा। इसीलिए यीशु मंदिर गया; उसे यहीं से शुरुआत करनी थी। इस्राएल को सिर्फ़ एक मरहम-पट्टी की नहीं, बल्कि इस कट्टरपंथी हृदय को शल्य-चिकित्सा की जरूरत थी। सच्ची अंतर्दृष्टि के साथ, यीशु ने कुछ समय के लिए सामाजिक दुर्व्यवहारों को अनदेखा कर दिया और आत्मिक दुर्व्यवहारों से व्यवहार किया।

प्रकाशितवाक्य में, यूहन्ना ने एक ऐसा शहर देखा जिसमें कोई मंदिर नहीं था (प्रकाशितवाक्य 21:22); पूरा शहर एक मंदिर बन गया था। एक ऐसा दिन आएगा जब पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है (यशायाह 11:9 को देखें), लेकिन यह मसीह के दूसरे आगमन तक नहीं होगा।

प्रभु ने मंदिर में से उन लोगों को बाहर निकाल दिया जो लेन-देन करते थे। उसके बारे में कुछ ऐसा अधिकारपूर्ण था, कुछ ऐसा जो इतना भयानक था कि वे उससे दूर भाग गए। शानदार घृणा का प्रदर्शन करते हुए उसने "सर्राफों के पीढ़े...उलट दीं" और उनके सिक्के दूर-दूर तक बिखर गए और खन-खनाने लगे; वहीं शानदार संयम का प्रदर्शन करते हुए उसने "कबूतरों के बेचने वालों की चौकियां उलट दीं" (मत्ती 21:12)। एक पल के लिए भी उसने उन निर्दोष पक्षियों को नुकसान पहुँचाने के बारे में नहीं सोचा, जिन पर उनके पिंजरे रखे हुए थे। मंदिर के अधिकारियों ने इसमें हस्तक्षेप करने की हिम्मत नहीं की।

(b) पवित्रशास्त्र की पुष्टि (21:13)

फिर मुख्य याजकों द्वारा प्रायोजित पूरी व्यापारिक योजना की तीखी निंदा करते हुए, प्रभु ने गंभीरता के साथ कहा, "लिखा है, कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा; परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो।" उसके शब्द यशायाह 56:7 और यिर्मयाह 7:11 का एक मिश्रित हवाले थे। यीशु मुख्य याजकों द्वारा संचालित मंदिर की तुलना डाकुओं की खोह से कर रहा था। उन्होंने पवित्र प्रांगण को एक अपवित्र खोह में बदल दिया था जहाँ लुटेरे अपनी बुरी कमाई के लिए लड़ते-झगड़ते थे।

(4) यीशु (21:14)

मंदिर के शुद्धीकरण की कहानी में एक प्रेम समापन कथन भी दिया गया है। उस मलबे के बीच में - जहाँ उलटी पड़ी हुई मेज़ें और कुर्सियाँ और फ़र्श पर बिखरे हुए कई देशों के सिक्के थे - यीशु ने उन अंधे और लंगड़ों को चंगा किया जो मंदिर में उसके पास लाए गए थे।

भविष्यद्वक्ता यशायाह का उद्धरण देते हुए, प्रभु ने केवल एक वाक्य का उपयोग किया था, लेकिन मंदिर के अधिकारी पूरे संदर्भ को जानने के लिए पवित्रशास्त्र में पर्याप्त रूप से माहिर थे: "मेरा भवन सब देशों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा। प्रभु यहोवा, जो निकाले हुए इस्राएलियों को इकट्ठे करने वाला है, उसकी यह वाणी है कि जो इकट्ठे किए गए हैं उनके साथ मैं औरों को भी इकट्ठे कर के मिला दूंगा" (यशायाह 56:7-8)। और उसने ऐसा ही किया। तब और वहीं उस शुद्ध किए गए अन्यजातीय प्रांगण में, प्रभु ने इस्राएल के निकाले गए लोगों को अपने पास इकट्ठा किया, जैसे कि सहस्राब्दी युग में वह सभी राष्ट्रों को पुनः निर्मित मंदिर में आराधना करने के लिए इकट्ठा करेगा।

ग. इस्राएल के अगुवों का द्वेष (21:15-17)

(1) अप्रसन्नता (21:15-16)

मुख्य याजकों को सार्वजनिक रूप से फटकार लगाई गई और सभी लोगों के सामने उन्हें लज्जित किया गया था, इसलिए वे अंदर ही अंदर नपुंसक क्रोध से उबल रहे थे। वे "बहुत क्रोधित" थे, जैसा कि मत्ती ने कहा (21:15)। उस समय वे प्रभु को रोकने में असमर्थ थे, लेकिन उन्होंने विरोध करने का साहस किया। "जब महायाजकों और शास्त्रियों ने इन अद्भुत कामों को, जो उस ने किए, और लड़कों को मन्दिर में दाऊद की सन्तान को होशाना पुकारते हुए देखा, तो क्रोधित होकर उस से कहने लगे, क्या तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं?" बेशक उसने सुना था। सच है, बच्चे अपने बड़ों के शब्दों को दोहरा रहे थे, लेकिन इससे उद्धारकर्ता की आत्मा प्रसन्न हुई। यह उसके कानों में स्वर्ग के संगीत की तरह गूँज रहा था। वह याजकों से पलटकर सीधे यह सवाल कर सकता था: "क्या तुम सुनते हो कि ये क्या कह रहे हैं?"

बच्चे कह रहे थे, "होशाना।" जैसा कि हमने देखा, इस शब्द का मूल शाब्दिक अर्थ है "अब बचा लो।" दूसरे शब्दों में, वे गा रहे थे, "हे दाऊद की संतान, अब हमें बचा लो" - जो ब्रिटिश नारे "परमेश्वर राजा को बचाए!" का इब्रानी संस्करण है।

इन मुख्य याजकों और शास्त्रियों की घोर दुष्टता के बारे में हम क्या कह सकते हैं, जिन्हें इस्राएल के आत्मिक अगुवों के रूप में जाना जाता था? "उन्होंने उसके द्वारा किए गए अद्भुत कामों को देखा" और वे क्रोधित हो उठे! जैसा कि कैंपबेल मॉर्गन ने कहा, "हम उनके बारे में और कुछ अधिक नहीं जानना चाहते।"[25]

यीशु ने इस्राएल के अगुवों को पवित्रशास्त्र का उद्धरण देकर जवाब दिया, जैसा कि वह अक्सर करता था। मत्ती 21:16 कहता है, "हां; क्या तुम ने यह कभी नहीं पढ़ा, कि बालकों और दूध पीते बच्चों के मुंह से तू ने अपार स्तुति कराई?" (भजन 8:2 देखें)। मुख्य याजक और शास्त्री प्रभु की पवित्रशास्त्र के ज्ञान से उतने ही भयभीत थे जितने कि वे उससे भय खाते थे।

(2) प्रस्थान (21:17)

इस अंतिम प्रहार के साथ प्रभु ने धार्मिक अगुवों से अपना मुंह मोड़ लिया। वह बैतनिय्याह वापस चला गया और वहां रात बिताई। ऐसा करके उसने अपने पक्ष में एक लोकप्रिय विद्रोह और खुद पर एक रात्रिकालीन हमले दोनों को टाल दिया।

2. फलरहित पेड़ का चिह्न (21:18-22)

क. प्रभु का पेड़ के पास आना (21:18-19a)

मरकुस का विवरण (मरकुस 11), जो मत्ती के विवरण से अधिक कालानुक्रमिक है, यह दर्शाता है कि अंजीर के पेड़ से जुड़ी घटना भी विजयी प्रवेश के अगले दिन, लेकिन मंदिर के शुद्धीकरण से पहले हुई थी।

पवित्र भूमि में अंजीर के पेड़ों को इतना मूल्यवान माना जाता था कि अगर कोई व्यक्ति एक पेड़ काटता था, भले ही उससे बहुत कम फसलें ही क्यों न हों, तो माना जाता था कि उसे परमेश्वर के हाथों मौत की सज़ा दी जाती थी। आम तौर पर अंजीर का पेड़ बहुत फलता-फूलता था। एक उपयुक्त स्थान पर एक पेड़ साल में तीन फसलें देता था और साल के दस महीनों तक उस पर पके हुए अंजीर लटके रहते थे। पहली फसल पकने से पहले यह दो महीने (अप्रैल और मई) तक बंजर रहता था। पहली फसल जून के अंत में पकती थी; दूसरी फसल अगस्त में पकती थी; तीसरी फसल, जो अक्सर छोटी और कम व्यावसायिक मूल्य की होती थी, सितंबर में पकती थी और पूरी सर्दी पेड़ पर लटकी रहती थी।

हालाँकि यहूदियों के बीच फल देने वाले अंजीर के पेड़ को नष्ट करना अपराध माना जाता था, लेकिन बाँझ पेड़ के लिए ऐसी कोई सुरक्षा नहीं थी। बाँझ पेड़ न तो कोई फल देता था, बल्कि वह मूल्यवान जगह भी घेर लेता था जो किसी अच्छे पेड़ को दी जा सकती थी। इसके अलावा, इसकी जड़ें मिट्टी के पोषक तत्वों को खत्म कर देती थीं।

अंजीर के पेड़ से जुड़ी घटना अप्रैल में हुई थी। आम तौर पर एक पेड़ इतनी जल्दी नया फल नहीं देता, लेकिन हो सकता है कि उस पर पिछले साल के कुछ अंजीर लगे हों। इसके अलावा पवित्र भूमि में अंजीर के पेड़ों की कम से कम दो किस्में पाई जाती थीं, और एक किस्म (जिसका उल्लेख यशायाह 28:4 में किया

गया है) वह फल उत्पन्न करता था जिसे "ग्रीष्मकाल से पहिले पके अंजीर" कहा जाता था; इस किस्म की एक विशेषता यह थी कि इसके फल इसके पत्तों से पहले दिखाई देते थे।

मत्ती 21:19 में पेड़ पूरी तरह से परिपक्व था, और जाहिर तौर पर असामान्य रूप से अनुकूल स्थान का आनंद ले रहा था। यह एक विशिष्ट स्थान पर सड़क के किनारे अकेला खड़ा था। जब प्रभु, जो विभिन्न अंजीर के मौसमों के बारे में गलत नहीं हो सकता था, ने उस पेड़ को देखा, तो उसने उम्मीद की कि यह अपने उत्पादन में खरा उतरेगा और उसे और उसके भूखे चेलों को कुछ फल प्रदान करेगा। पत्तियों ने जोरदार जीवन का बाहरी दावा तो किया, लेकिन उनका दावा केवल बंजर ही था। डालियों में न तो पिछले साल के फल का कोई अवशेष था और न ही "ग्रीष्मकाल से पहिले पके अंजीर" मौजूद थे। पेड़ के पास अपने सृष्टिकर्ता को देने के लिए कुछ भी नहीं था।

ख. प्रभु द्वारा पेड़ को शाप दिया जाना (21:19b-20)

यीशु ने पेड़ से कहा, "अब से तुझ में फिर कभी फल न लगे [ईस टोन ऐओना, 'युग के अंत तक']।" मत्ती ने बताया, "और अंजीर का पेड़ तुरंत सूख गया" (21:19)। "तुरंत" का मूल अनुवाद पैराक्रेमा है, जिसका अर्थ है "जल्द ही" या "तत्काल।" चेले अचंभित थे। "यह अंजीर का पेड़ क्योंकर तुरन्त सूख गया!" उन्होंने कहा।

अंजीर के पेड़ का चमत्कार यीशु की सेवकाई में अद्वितीय है क्योंकि यह उसका एकमात्र न्यायी चमत्कार था। अंजीर के पेड़ को शाप देना एक प्रतीकात्मक कार्य था, न कि प्रतिशोधात्मक कार्य। अंजीर का पेड़ इस्राएल के अत्यधिक अनुग्रहित राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता था, जिसके पास परमेश्वर और संसार को देने के लिए बहुत कुछ होना चाहिए था। यीशु फल की तलाश में आया था, लेकिन उसे पत्तियों के अलावा कुछ नहीं मिला। ठीक एक दिन पहले, धार्मिक अगुवों ने मंदिर में बालकों की मासूम प्रशंसा में उसकी आलोचना करके राष्ट्र के बांझपन का एक और सबूत दिया था। अब इस प्रतीकात्मक कार्य में उसने आधिकारिक तौर पर राष्ट्र से अपने आशीष को वापस ले लिया। जल्द ही इस्राएल मुरझा जाएगा और मर जाने वाला था और फिर युग के अंत तक राष्ट्रीय जीवन और आत्मिक फल से वंचित रहेगा। मत्ती 23 में इस प्रतीकात्मक शाप को राष्ट्र के विशिष्ट शाप से बदल दिया गया है जिसने अपने अभियान को बहुत ही तुच्छ बना दिया था।

ग. पेड़ पर प्रभु की टिप्पणी (21:21-22)

इस समय प्रभु ने अंजीर के पेड़ को शाप देने के प्रतीकात्मक महत्व को नहीं समझाया। इसकी बजाय उसने इसका व्यावहारिक प्रयोग बताया। बाँझ पेड़ के तुरंत सूखने के बारे में चेलों की टिप्पणी को ध्यान में रखते हुए, उसने उन्हें विश्वास का पाठ पढ़ाया।

इस्राएल राष्ट्र के प्रतीकात्मक शाप के पीछे यहूदियों का हठी अविश्वास था, लेकिन इब्रानी राष्ट्र की स्थापना विश्वास पर हुई थी (उत्पत्ति 12:1-4; 15:6) और विश्वास पर ही उसका पालन-पोषण भी हुआ था (इब्रानियों 11)। प्रभु ने अपने चेलों को सिखाया कि वे विश्वास में कभी डगमगाएँ नहीं, क्योंकि विश्वास पहाड़ों को हिला सकता है; विश्वास सभी बाधाओं को दूर कर सकता है।

प्रभु अप्रत्यक्ष रूप में विश्वास या अस्पष्ट भावना के साथ विश्वास रखने की बात नहीं कर रहा था। यहां तक कि बिना उद्धार पाए लोग भी बड़ी सहजता से कहते हैं, "केवल विश्वास रखो।" वे किसमें या किसपर विश्वास

रखते हैं? केवल विश्वास से कुछ नहीं होता। विश्वास प्रभु में होना चाहिए। विश्वास केवल एक कड़ी है, केवल वह सामर्थ रेखा है जो हमें एक छोर पर आवश्यकता और दूसरे छोर पर सामर्थ से जोड़ती है।

यीशु ने कहा, "जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम को मिलेगा" (मत्ती 21:22)। उसके कथन में निश्चित रूप से उसकी इच्छा से जुडी हुई है (1 यूहन्ना 5:14-16)। मत्ती 21:22 में हमें प्रार्थना के लिए एक व्यापक सामान्य नियम मिलता है। यह नियम उदार, अनुग्रहपूर्ण और अपनी क्षमता में अचंभित करने वाला है, लेकिन यह पवित्रशास्त्र में अन्यत्र बताई गई धार्मिक और उचित सीमाओं द्वारा सिद्ध होता है (याकूब 4:2-3; 2 कुरिन्थियों 12:7-9; लूका 22:42)।

ख. कारण (21:23-22:14)

1. ज़िम्मेदारी का दृष्टांत (21:23-32)

सार्वजनिक विवाद तब शुरू हुआ जब प्रभु ने इस्राएल राष्ट्र के पाप और तिरस्कार पर निर्देशित तीन दृष्टांत बताए। पहला दृष्टांत महासभा के एक आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल की मांग के जवाब में दिया गया था, जिसने उनके द्वारा किए गए कामों और उनके द्वारा सिखाए गए तरीकों को करने के अधिकार को चुनौती दी थी।

क. दृष्टांत का संदर्भ (21:23-27)

(1) आराधनालय के अधिकारियों की मांग (21:23)

प्रभु ने मंदिर से लाभदायक व्यापार को समाप्त करके अधिकारियों को एक सीधा और विनाशकारी झटका दिया था, जिसमें महासभा के सदस्यों के स्वार्थ निहित थे। उसने उनके पूरे समूह को "डाकुओं की खोह" कहा था (21:13)।

लोगों ने प्रभु की शिक्षा देने की शैली में एक जबरदस्त अंतर देखा था। "क्योंकि वह उन के शास्त्रियों के समान नहीं परन्तु अधिकारी की नाईं उन्हें उपदेश देता था" (7:29)। यहूदी अगुवे हथियार उठा चुके थे, लेकिन वे उससे सामना करने से डरते थे, वे उसकी बुद्धि और सामर्थ से डरते थे, लोगों पर उसके प्रभाव से भय खाते थे। उन्होंने फैसला किया कि सबसे अच्छी रणनीति लोगों की नज़रों में उसे बदनाम करना था; अगर वह विफल हो गया, तो वे उसे कुछ गलत कहते हुए पकड़ लेंगे और उसके ही वचनों का इस्तेमाल उसके विरुद्ध करेंगे; अगर वह विफल हो गया, तो वे उसे मौत के घाट उतारने के लिए गुप्त रूप से और तेज़ी से आगे बढ़ेंगे।

अन्यजातियों के प्रांगण की शुद्धीकरण के अगले दिन, प्रभु मंदिर में वापस आया। वह महासभा के संरक्षण में चल रहे लेनदेन को ख़त्म कर रहा था और उनके अधिकार को चुनौती दे रहा था (या ऐसा उन्हें लग रहा था, क्योंकि प्रभु हमेशा स्थापित अधिकार को बनाए रखता था, भले ही उस तरीके से न हो जैसा कि उन्हें इस्तेमाल किया जाता था)। वह एक सराहनीय भीड़ को सिखा रहा था जो उसके वचनों पर इस तरह से टिकी हुई थी जैसे वे कभी शास्त्रियों के शब्दों पर नहीं टिके थे। अगुवों को लगा कि उनके सत्ता का आधार खत्म हो रहा है, और केवल सत्ता ही उनके लिए मायने रखती थी - सत्ता और पैसा।

यह स्पष्ट था कि यीशु के पास आने वाला प्रतिनिधिमंडल आधिकारिक था। मत्ती ने लिखा, "महायाजकों और लोगों के पूर्वजों ने उसके पास आकर पूछा..." मरकुस और लूका ने संकेत दिया कि शास्त्री (व्यवस्था के शिक्षा) भी उसके पास आए थे (मरकुस 11:27; लूका 20:1), इसलिए महासभा के सभी वर्ग के लोग मौजूद थे। ऐसा लगता है कि यह पहली बार था जब इस आधिकारिक सभा ने प्रभु के दावों और कार्यों पर औपचारिक ध्यान दिया।

अगुवों ने यरूशलेम में विजयी प्रवेश, लोगों की जोरदार होशाना की ललकार, मंदिर का शुद्धीकरण, उसके प्रांगणों में चंगाई के चमत्कार और ऐसी शिक्षा देखी थी जो पहले कभी किसी नश्वर मनुष्य के होठों से नहीं निकली थी। फिर भी उसे मुकुट पहनाने की बजाय, अगुवों ने उसका सामना किया। "तू ये काम किस के अधिकार से करता है? और तुझे यह अधिकार किस ने दिया है?" उन्होंने पूछा। यही समस्या थी। वह उस व्यवस्था का हिस्सा नहीं था; उसने उनके स्कूल से स्नातक की डिग्री नहीं ली थी; वह उनकी संस्था से बाहर काम करता था; उसने मंदिर के प्रांगण में पढ़ाने के लिए उनकी अनुमति नहीं मांगी थी; उसने उनके हितों के विरुद्ध एक उन्नत तरीके से काम किया था। वह खुद को क्या समझता था? उसने जो किया, उसे करने का उसे किसने अधिकार दिया था? उसने उन्हें और उनके द्वारा स्थापित चीजों को चुनौती देने की हिम्मत कैसे की?

खैर, सबसे पहले, वह दाऊद की संतान था। यह कुछ ऐसा था जिसे वे मंदिर के अभिलेखों में खुद जाँच सकते थे। इसके अलावा वह परमेश्वर का पुत्र था। यहीं से उसका अधिकार उसे मिला था, हालाँकि उसने उन्हें ऐसा कभी नहीं बताया। उसका जवाब उसकी बुद्धि का एक अद्भुत प्रदर्शन था।

(2) आराधनालय के अधिकारियों की दुविधा (21:24-26)

(a) प्रस्ताव (21:24-25a)

प्रभु ने महासभा के प्रश्न का उत्तर एक अन्य प्रश्न से दिया। "यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि मैं भी तुम से एक बात पूछता हूँ; यदि वह मुझे बताओगे, तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा; कि ये काम किस अधिकार से करता हूँ। यूहन्ना का बपतिस्मा कहां से था? स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से था?" प्रभु का अधिकार उसी स्रोत से प्राप्त हुआ था जहाँ से यूहन्ना को प्राप्त हुआ था : अर्थात् स्वर्ग। मसीह के प्रश्न ने वास्तव में उनके प्रश्न का उत्तर दे दिया, लेकिन उसने उन्हें दुविधा में डाल दिया।

(b) समस्या (21:25b-26)

महासभा ने यूहन्ना बपतिस्मादाता की सेवकाई को स्वीकार नहीं किया था। वास्तव में यूहन्ना ने इस्राएल के धार्मिक अगुवों को "सांप के बच्चों" (3:7) कहकर धिक्कारा था। लेकिन आम लोगों ने यूहन्ना को शहीद भविष्यद्वक्ता के रूप में बहुत सम्मान दिया; फिलहाल उन्हें यकीन था कि मसीह भी एक भविष्यद्वक्ता था (21:11) और वे उत्साहपूर्वक उसका समर्थन कर रहे थे। मंदिर के प्रांगण में ऐसे लोगों की भीड़ होने के कारण, अगुवों ने यह कहने की हिम्मत नहीं की कि यूहन्ना "परमेश्वर द्वारा भेजा गया व्यक्ति" नहीं था (यूहन्ना 1:6)। दूसरी ओर, यदि वे स्वीकार करते हैं कि यूहन्ना परमेश्वर द्वारा भेजा गया था, तो उन्हें यीशु को भी स्वीकार करना होगा क्योंकि यूहन्ना ने यीशु को मसीह के रूप में पहचाना था। यूहन्ना ने केवल मसीह का अग्रदूत होने का दावा किया था।

(3) आराधनालय के अधिकारियों का निर्णय (21:27)

प्रभु के प्रश्न का सामना करने पर, अगुवों ने टाल-मटोल का रास्ता अपनाया - और यहाँ अंग्रेजी के किंग जेम्स संस्करण में हम शब्दों का एक शानदार खेल पाते हैं। उन्होंने कहा, "हम नहीं बता सकते।" यीशु ने उत्तर दिया, "तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता, कि ये काम किस अधिकार से करता हूँ।"

प्रभु ने अपने अधिकार के स्रोत को क्यों नहीं बताया? क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं होता। परमेश्वर ने उन अगुवों के पास जो आखिरी रोशनी भेजी थी, वह यूहन्ना की थी और उन्होंने उस रोशनी को अस्वीकार कर दिया था। अगर वे यूहन्ना के अधिकार के स्रोत के प्रति जानबूझकर अंधे थे, तो वे मसीह के अधिकार के स्रोत के प्रति भी उतने ही अंधे होंगे। परमेश्वर हमें तभी और रोशनी देता है जब हम अपने पास मौजूद रोशनी के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं।

ख. दृष्टांत की विषय-वस्तु (21:28-32)

हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि यीशु महासभा के सदस्यों से प्रेम करता था। वे भटके हुए, अंधे, कटु, सांसारिक, बेईमान और स्वार्थी थे, लेकिन वह उनसे प्रेम करता था। वह उनके लिए मरने जा रहा था। उसका दृष्टांत, अपनी सच्चाई में स्पष्ट होने के बावजूद, उनकी भ्रमित आत्माओं के लिए प्रेम से बोला गया था।

यह दृष्टांत (21:28-32) और अगला दृष्टांत (21:33-46) दोनों ही दाख की बारी से संबंधित हैं। दोनों दृष्टांत इस्राएल राष्ट्र के बारे में थे, क्योंकि दाखलता उस समय तक इस्राएल का प्रतिनिधित्व करती है जब तक कि राष्ट्र ने मसीह को अस्वीकार नहीं कर दिया था। (अंजीर वर्तमान युग में इस्राएल का प्रतिनिधित्व करता है, और जैतून आने वाले दिन में इस्राएल का प्रतिनिधित्व करता है जब राष्ट्र अंततः मसीह की ओर मुड़ता है; रोमियों 11 को देखें)। दाख की बारी के सभी दृष्टांत यशायाह के दाख की बारी के गीत (यशायाह 5) पर आधारित हैं।

(1) दृष्टान्त कितना उचित था (21:28-31a)

पहला दृष्टांत जिम्मेदारी और जवाबदेही के बारे में था। एक आदमी ने अपने दो बेटों से कहा कि वे जाकर उसकी दाख की बारी में काम करें। पहले बेटे ने जाने से इनकार कर दिया, लेकिन बाद में उसे पछतावा हुआ और काम करने चला गया। दूसरे बेटे ने वादा किया कि वह वैसा ही करेगा जैसा उसे बताया गया था, लेकिन उसने ऐसा कभी नहीं किया। पहला बेटा, जो विद्रोही लग रहा था, धर्मी साबित हुआ। दूसरा बेटा, जो धर्मी लग रहा था, विद्रोही साबित हुआ।

कहानी सुनाने के बाद प्रभु ने उन धार्मिक अगुवों को विवश किया, जिन्होंने यूहन्ना की सेवकाई के अधिकार के बारे में सार्वजनिक रूप से अपने आप को समर्पित करने से इनकार कर दिया था, कि वे इस सवाल का जवाब देकर अपने आप को साबित करें। उसने उनसे बस इतना पूछा कि दोनों बेटों में से किसने अपने पिता की इच्छा पूरी की। जवाब स्पष्ट था। उनके पास "पहला" (21:31) कहने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

(2) दृष्टांत कितना लागू करने योग्य था (21:31b-32)

प्रभु का उसे लागू करना उनके लिए घातक था। इसमें कोई संदेह नहीं था कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला "धार्मिकता के मार्ग से" उनके पास आया था (21:32)। उसकी जीवनशैली यहूदी अगुवों को पसंद आनी चाहिए थी, क्योंकि उसने वही प्रदर्शित किया था जो वे धार्मिकता के बारे में सोचते थे: प्रार्थना, उपवास और दान देना। लेकिन उन्होंने यूहन्ना की सेवकाई को अस्वीकार कर दिया था। वे बाहर से तो धार्मिक प्रतीत होते थे, लेकिन वे चुंगी लेने वालों और वेश्याओं से भी अधिक विद्रोही साबित हुए।

कर वसूलने वालों और वेश्याओं से यह अपेक्षा नहीं की जाती थी कि वे यूहन्ना के पश्चाताप की बुलाहट पर प्रतिक्रिया देंगे, लेकिन उन्होंने दृष्टांत में उस बेटे की तरह काम किया जो शुरू में तो विद्रोही था लेकिन बाद में पश्चाताप करने लगा। वे विद्रोही प्रतीत हुए, लेकिन वे धर्मी ठहराए गए। यीशु ने तब उन अगुवों से कहा:

“मैं तुम से सच कहता हूँ, कि महसूल लेने वाले और वेश्या तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं। क्योंकि यूहन्ना धर्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया, और तुम ने उस की प्रतीति न की: पर महसूल लेने वालों और वेश्याओं ने उस की प्रतीति की: और तुम यह देखकर पीछे भी न पछताए कि उस की प्रतीति कर लेते॥”

इस प्रकार धार्मिक अगुवों ने यूहन्ना के अधिकार को अस्वीकार कर दिया और अब मसीह के अधिकार को भी अस्वीकार कर दिया, और चुंगी लेने वालों और वेश्याओं के पश्चाताप और आज्ञाकारिता के कारण वे दोषी ठहराए गए, जिन्हें वे सबसे अधिक घृणा करते थे। परमेश्वर के सामने उन अगुवों की जिम्मेदारी कितनी बड़ी और भयानक थी!

प्रभु ने इस्राएल राष्ट्र के इन आत्मिक रूप से अंधे अगुवों को जवाब देने का कोई अवसर नहीं दिया। जब जवाबदेही के दृष्टांत की तलवार उनकी आत्माओं के ऊपर घूम रही थी, तभी उसने उन्हें एक और दाख की बारी की कहानी सुनाई। पहले दृष्टांत ने उनके अविश्वास के चरित्र पर जोर दिया था। प्रतिशोध से संबंधित अगला दृष्टांत उनके अविश्वास के अपराध को प्रकट करने वाला था।

2. पलटा लेने का दृष्टांत (21:33-46)

क. प्रभु और उसकी दाख की बारी (21:33-39)

(1) गृहस्थ (21:33a-c)

गृहस्थ, जो दाख की बारी का स्वामी था, उसने मिट्टी जोती, दाख की बारी लगाईं, सुरक्षा के लिए चारों ओर बाड़ा बांधा और निगरानी रखने के लिए गुम्मट बनाया, और फलों को संसाधित करने के लिए एक दाखरस का रस निकालने का कुंड खोदा। उसने दाख की बारी की भलाई के लिए वह सब कुछ किया जो सावधानी और दूरदर्शिता से सुझाया जा सकता था।

गृहस्थ परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है, और दाख की बारी इस्राएल के विशिष्ट राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है। इस्राएल का अस्तित्व परमेश्वर के प्रत्यक्ष रोपण के कारण है। इसके संस्थापक पिता अब्राहम को परमेश्वर ने बुलाया और बताया कि उसके बीज से एक राष्ट्र उत्पन्न होगा (उत्पत्ति 12-13)। इस्राएल की दाखलता को मिस्र में पोषित किया गया और फिर तैयार और वादा किए गए देश में उसे सावधानीपूर्वक

रोपित किया गया। आज यह भूमि छोटी है, लेकिन जब परमेश्वर के वायदे का पूरा दायरा पूरा होगा, तो यह फरात नदी से नील नदी तक फैल जाएगी (उत्पत्ति 15:18)।

परमेश्वर ने इस्राएल को जो भूमि दी थी, वह प्राचीन काल के सभी महान राष्ट्रों के लिए केंद्रीयबिंदु थी। तीन महाद्वीप (यूरोप, अफ्रीका और एशिया) इसके केंद्र से तीलियों की तरह फैले हुए थे। इस्राएल के रणनीतिक स्थान को पहचानते हुए, मिस्र, असीरिया, बाबुल, फारस, ग्रीस और रोम के साम्राज्यों ने इसकी भूमि पर कब्जा करने की लालसा की। बहुमुखी और विविधतापूर्ण, इस्राएल की भूमि पर चार मौसम पाए जाते थे और यह आश्चर्यजनक रूप से बहुत उत्पादक थी - अर्थात् "दूध और मधु बहने वाला देश।"

इस्राएल पहाड़ियों और रेगिस्तानों द्वारा सुरक्षित है, फिर भी इसका मुख्य सुरक्षा गढ़ परमेश्वर ही है। दुनिया के सभी राष्ट्रों में से, केवल इस्राएल ही परमेश्वर के साथ संधि संबंध में मौजूद है। वह इसका स्वामी है; उस देश को परमेश्वर की भूमि कहा जाता है। एक से अधिक बार परमेश्वर ने यहूदियों के साथ किसी भी तरह के दुर्व्यवहार के विरुद्ध अन्य राष्ट्रों को चेतावनी दी है (उत्पत्ति 12:3; 15:13-14)। इस्राएल को बाकी दुनिया में अपने राजदूत के रूप में अपनी भूमिका के लिए तैयार करने में, परमेश्वर ने राष्ट्र को न केवल अपने वायदे दिए, बल्कि अपने उपदेश और महान और प्रतिभाशाली पुरुषों का एक क्रम भी दिया, जिन्होंने इसकी अनूठी पुस्तक के पवित्र पृष्ठों को लिखा।

(2) किसान (21:33d-39)

दृष्टांत में किसान इस्राएल के याजकों, अगुवों और पूर्वजों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें परमेश्वर ने इस्राएल के दाख की बारी की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी सौंपी थी। वे कितने अभागे लोग थे! उन्होंने दाख की बारी के साथ ऐसा व्यवहार किया मानो वह उनकी अपनी हो। प्रभु ने उनके लगातार विद्रोही रवैये को स्पष्ट रूप से चित्रित किया: "[गृहस्थ] ने अपने दासों को उसका फल [दाख की बारी] लेने के लिये किसानों के पास भेजा। पर किसानों ने उसके दासों को पकड़ के, किसी को पीटा, और किसी को मार डाला; और किसी को पत्थरवाह किया" (21:34-35)। ऐसा बार-बार हुआ। इस्राएल के भविष्यद्वक्ताओं के साथ दुर्व्यवहार का यह लंबा इतिहास दृष्टांत के इस भाग पर एक टिप्पणी है (1 राजा 18:13; 22:24-27; 2 राजा 6:31; 2 इतिहास 24:19-22; 36:15-16; इब्रानियों 11:35-38)।

फिर प्रभु ने कहानी को आगे बढ़ाया और वर्तमान समय तक पहुँचाया: "अन्त में उस [गृहस्थ] ने अपने पुत्र को उन [किसानों] के पास यह कहकर भेजा, कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे" (मत्ती 21:37)। यह अंतिम संदेशवाहक गृहस्थ के सेवकों से बिल्कुल अलग क्षमता और चरित्र का था। इसी तरह मूसा और यीशु के बीच दुनिया भर में बहुत अंतर था (इब्रानियों 3:3-6); यूहन्ना बपतिस्मादाता और यीशु के बीच एक बहुत बड़ी खाई थी। सबसे महान भविष्यद्वक्ताओं और यीशु के बीच न केवल स्तर का बल्कि किस्म का भी अंतर था। वह स्वामी का पुत्र था। आशय बिल्कुल स्पष्ट था: यीशु परमेश्वर का पुत्र होने का दावा कर रहा था।

ख. प्रभु और उसका प्रतिशोध (21:40-46)

(1) निवेदन (21:40-41)

(a) पूछा गया प्रश्न (21:40)

प्रभु ने इस्राएल के धार्मिक अगुवों को दिखाया कि उनकी दुष्टता उन्हें कहाँ ले जा रही थी। परमेश्वर के पुत्र के प्रति आदरभाव (पवित्र भय होने) की बजाय, वे उसकी मृत्यु का षडयंत्र रच रहे थे। शानदार समझदारी के साथ, प्रभु ने उन्हें खुद अपने ऊपर स्वयं के न्यायी के रूप में कार्य करने और खुद पर सजा सुनाने के लिए विवश किया। उसने पूछा, "इसलिये जब दाख की बारी का स्वामी आएगा, तो उन किसानों के साथ क्या करेगा?" कहानी इतनी मनोरंजक थी और इसे इतनी वास्तविकता के साथ बताया गया था कि वे लोग इसके साथ बहते चले गए। यीशु के प्रति अपनी घृणा को भूलने के लिए विवश होने पर, उन्होंने आखिरकार सच उगल ही दिया।

(b) प्रश्न का उत्तर दिया गया (21:41)

उन्होंने कहा, "[गृहस्थ] उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा।" अगुवे कहानी की भावना में इतने फंस गए थे कि उन्होंने एक असामान्य लेकिन ज्वलंत अलंकार का इस्तेमाल किया जिसे पैरोनोमेसिया ("ध्वनि में समान शब्दों की पुनरावृत्ति, लेकिन जरूरी नहीं कि अर्थ में समान हो") के रूप में जाना जाता है।[26] उसने जो शब्द इस्तेमाल किए वे काकौस काकोस थे, इसलिए उनके उत्तर का अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है, "वह उन बुरे लोगों को बुरी तरह से नष्ट कर देगा" या "वह उन दुष्टों को एक बहुत बुरी मौत देगा।"

(2) लागू करना (21:42-46)

(a) एक गंभीर प्रकाशन (21:42-44)

i. पवित्रशास्त्र से (21:42)

प्रभु को अब और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं थी। धार्मिक अगुवों ने खुद अपने आप पर निर्णय सुना दिया था, जब उन्हें जल्द ही इसका एहसास हो गया। हालाँकि, हम मत्ती 21:42 में पढ़ते हैं कि उसने इसमें एक गंभीर प्रकाशन को जोड़ा: "क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया?" (भजन 118:22-23 के हवाले से लिया गया एक पद्यांश)। इस प्रकार प्रभु ने उन्हें उनकी मूर्खता का एहसास करा दिया।

वे लोग मसीहा की राज्य की स्थापना के प्रति काफी उत्सुक थे। उन्हें इससे अधिक कुछ भी पसंद नहीं आता कि एक आन्दोलनकारी मसीहा हो जो रोम के शासन को नष्ट कर दे और यरूशलेम को एक नए विश्व साम्राज्य की राजधानी बना दे और खुद उन सबका मुख्य प्रशासक बन जाए। लेकिन अपनी अंधता में वे उसी मसीहा का तिरस्कार कर रहे थे जो उस राज्य की आधारशिला था।

ii. उद्धारकर्ता की ओर से (21:43-44)

इस्राएल सब कुछ खोने वाला था। यीशु ने उसके अगुवों से कहा, "इसलिये मैं तुम से कहता हूँ, कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा; और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा। जो इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा: और जिस पर वह गिरेगा, उस को पीस डालेगा।"

स्वयं मसीह ही वह पत्थर है। उन धार्मिक अगुवों ने भी इसे पहचाना था। हालाँकि, वे प्रतीकवाद के सभी आशयों को समझ नहीं पाए। इस्राएल के लिए, उसी समय, मसीह एक ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान

था (यशायाह 8:14-15; रोमियों 9:32-33; 1 कुरिन्थियों 1:23; 1 पतरस 2:8) क्योंकि वह धूमधाम और वैभव के साथ एक क्रांतिकारी मसीहा के रूप में नहीं आया था, बल्कि नासरत से एक विनम्र कार्यकर्ता के रूप में आया था। वह राष्ट्र ऐसे मसीह के कारण ठोकर खा गया।[27]

इस्राएल के अविश्वास के कारण, परमेश्वर का राज्य यहूदियों से छीना जाने वाला था। जब नबूकदनेस्सर विश्व सामर्थ के रूप में उभरा, तो इस्राएल ने राष्ट्रों पर से अपना राजनीतिक प्रभुत्व खो दिया और इसे "अन्यजातियों का समय पूरा होने तक" (लूका 21:24) वापस नहीं लौटाया जाएगा, जब तक कि मसीह शासन करने के लिए वापस नहीं आएगा।[28] कलवरी के कारण, इस्राएल ने राष्ट्रों पर से अपना आत्मिक प्रभुत्व खो दिया और जब तक कलीसिया के स्वर्गारोहण के समय "अन्यजातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर ले" (रोमियों 11:25) तब तक वापस नहीं प्राप्त होगा। तब परमेश्वर फिर से यहूदियों के द्वारा मनुष्यजाति से बात करेगा, जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पाते हैं।

लगभग दो हज़ार वर्षों से परमेश्वर कलीसिया [29] को संसार में अपने उपकरण के रूप में इस्तेमाल कर रहा है। यहूदी निचले जलाशयों में हैं और बाढ़ की लहरें अन्यजातीय देशों में बह रही हैं। लेकिन यह युग परमेश्वर के मनुष्यजाति के साथ व्यवहार में केवल एक कोष्ठक मात्र है। जब उसके वर्तमान उद्देश्य पूरे हो जाएँगे, तो "परमेश्वर का राज्य...ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा।" यह राष्ट्र इस्राएल का नया राष्ट्र होगा जो मसीह की वापसी पर अस्तित्व में आएगा। एक राष्ट्र के रूप में यहूदी अंततः उसकी ओर मुड़ेंगे और पृथ्वी पर सहस्राब्दी राज्य का केंद्र बनेंगे। यशायाह ने इस्राएल के ऐसे एक नए राष्ट्र की भविष्यद्वाणी की थी (यशायाह 66:7-14)। नया राष्ट्र कलीसिया नहीं हो सकती, क्योंकि कलीसिया एक राष्ट्र नहीं है; यह सभी राष्ट्रों से परे है।

मत्ती 21:44 में पत्थर की भविष्यद्वाणी उस दिन मसीह को सुनने वालों के लिए करूणा और न्याय की थी। यीशु ने कहा, "जो इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा।" लेकिन एक टूटा हुआ आदमी ठीक हो सकता है। इस्राएल का राष्ट्र मसीह पर तब गिरा जब यह पिलातुस के सामने इकट्ठा हुआ, और मसीह की मृत्यु की कामना करने लगा। लेकिन परमेश्वर की करूणा से, पिन्तेकुस्त के दिन और उसके बाद के दिनों में कई यहूदी ठीक हो गए, और कई लोगों ने कलीसिया की ओर अपना रास्ता बनाया।

यीशु ने आगे कहा, "और जिस पर वह [यह पत्थर] गिरेगा, उस को पीस डालेगा।" लगातार मिले अवसर के बावजूद पश्चाताप न करने से आए ऐसे न्याय से कोई बच नहीं सकता। मन न फिराने वाले लोगों के लिए पूरी तरह बर्बादी के अलावा कुछ नहीं बचता।

(b) एक तीव्र प्रतिक्रिया (21:45-46)

i. अगुवों की चिंता (21:45)

"महायाजक और फरीसी उसके दृष्टान्तों को सुनकर समझ गए, कि वह हमारे विषय में कहता है।" हालाँकि, उन्होंने पश्चाताप के कोई लक्षण नहीं दिखाए। संभवतः मत्ती ने यहाँ मुख्य रूप से फरीसियों का उल्लेख किया क्योंकि वे महासभा में बहुत अधिक महत्व रखते थे। कलवरी से पहले, यह फरीसी ही थे जो यीशु के प्रति अपने द्वेष में इस्राएल में सबसे आगे थे; पुनरुत्थान और पिन्तेकुस्त के बाद, सदूकियों में अधिक द्वेष था।

ii. अगुवों की चेतावनी (21:46)

अगर वे हिम्मत करते, तो महासभा ने यीशु को मंदिर प्रांगण में ही गिरफ्तार कर लिया होता। लेकिन उनके विवेक और भीड़ के डर ने उन्हें पीछे धकेल दिया। उन्होंने समय को अपने अनुकूल करने का फैसला किया, क्योंकि वह दिन जल्द ही आने वाला था जब यह चंचल भीड़, जो अब "उसे एक भविष्यद्वक्ता समझ रही थी," उसकी मौत के लिए चिल्ला उठेगी।

3. तिरस्कार का दृष्टांत (22:1-14)

मत्ती ने आगे कहा, "इस पर यीशु फिर उन से दृष्टान्तों में कहने लगा" (22:1)। वह जानता था कि मुख्य याजक और फरीसी क्या सोच रहे थे और उसने एक और दृष्टांत बताकर उनके मन में जो था, इसका जवाब दिया। इस कहानी में दाख की बारी के स्वामी का ठुकराया हुआ पुत्र अब राजा का बेटा है जिसके लिए विवाह के एक भोज की तैयारी की जा रही है।

यह इस्राएल राष्ट्र और राजा को तिरस्कृत करने के राष्ट्रीय परिणामों के बारे में त्रित्व में उसका अंतिम दृष्टांत था। जैसा कि हमने देखा है, पहला दृष्टांत जिम्मेदारी का दृष्टांत था; दूसरा पलटा लेने का दृष्टांत था। और यह अंतिम दृष्टांत तिरस्कार का दृष्टांत था।

इस तीसरी कहानी में, हम देखते हैं कि इस्राएल राष्ट्र को अलग कर दिया गया है और वर्तमान युग के लिए, कलीसिया को उसकी जगह लेने के लिए बुलाया जा रहा है। दृष्टांत का पहला भाग इस्राएल के तिरस्कार से संबंधित है। दूसरा भाग भविष्यद्वाणी के तौर पर सुसमाचार के पर्व के लिए अन्यजातियों की बुलाहट से संबंधित है।

प्रभु अपनी सांसारिक सेवकाई के अंत के करीब था। वास्तव में वह यरूशलेम में मरने के लिए ही आया था। वह यहूदियों को उस विशिष्ट स्थान से बाहर निकालने के लिए भी आया था जिनपर लगभग दो हज़ार वर्षों से उनका अधिकार था, ताकि वे महासभा का सामना कर सकें और राष्ट्र के अगुवों को बेनकाब कर सकें और अंततः उन्हें निष्कासित कर सकें। इसलिए उसने यह भविष्यसूचक दृष्टांत बताया जिसका दायरा बहुत दूरगामी है।

क. इब्रानी जाति के लिए राजा का विशेष निमंत्रण (22:1-7)

(1) राजा की घोषणा (22:1-6)

दृष्टांत में तीन निमंत्रणों की कल्पना की गई है, जिनमें से पहले दो निमंत्रण इस्राएल को दिए गए थे। जिस समय यीशु ने कहानी सुनाई, उस समय पहला निमंत्रण (22:1-3) पहले ही दिया जा चुका था। यह यूहन्ना बपतिस्मादाता, स्वयं प्रभु और उसके द्वारा नियुक्त चेलों द्वारा यहूदी लोगों को दिया गया था। संभवतः पवित्र भूमि का कोई ऐसा कोना या इलाका नहीं था जहाँ उस निमंत्रण को न सुना गया हो। यहूदी रोटियाँ और मछलियाँ खाने और प्रभु के चंगाई चमत्कारों से लाभ उठाने के लिए काफी इच्छुक थे, लेकिन वे उसे उसकी शर्तों पर मसीहा के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। अगर उन्होंने सही प्रतिक्रिया दी होती, तो आनंद से भरपूर विवाह का दिन जल्दी आ जाता।

दूसरा निमंत्रण (22:4-6) यहूदियों को पिन्तेकुस्त के दिन और उसके तुरंत बाद जारी किया गया था। प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में सुसमाचार का निमंत्रण प्रस्तुत करने का नियम उनकी मातृभूमि में "पहले यहूदियों

को" था, और फिर प्रवासी यहूदियों को। लेकिन यहूदियों का विशाल बहुमत अभी भी इस दायरे में नहीं आया। कुछ उदासीन थे, और संदेश से ज़्यादा अपने व्यापार के विषय में चिंतित थे। कुछ सक्रिय रूप से द्वेष रखते थे, जैसा कि दृष्टांत में है कि "औरों ने जो बच रहे थे उसके दासों [प्रेरितों] को पकड़कर उन का अनादर किया और मार डाला" (मत्ती 22:6; प्रेरितों के काम 4:1-3; 5:40-41; 7:54-60; 8:1; 11:19; 12:2-5 देखें)।[30]

(2) राजा का क्रोध (22:7)

दृष्टांत में 22:6 में "जो बच रहे थे", उनके व्यवहार ने राजा के क्रोध को भड़का दिया। उसने "अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों को नाश किया, और उन के नगर को फूंक दिया" (22:7)। और जब इस्राएल ने इस दूसरे निमंत्रण को भी अस्वीकार कर दिया, तो परमेश्वर का धैर्य समाप्त हो गया; तब यरूशलेम को नष्ट करने, राष्ट्र को उखाड़ फेंकने और मंदिर पर अपने क्रोध को उंडेलने के लिए रोमी सेनाएँ भेजी गईं। यरूशलेम का विनाश ईस्वी 70 में हुआ और निज भूमि से अंतिम निष्कासन ईस्वी 135 में 'बार-कोखबा' विद्रोह की विफलता के बाद हुआ।

ख. मनुष्यजाति के लिए राजा का विस्तृत निमंत्रण (22:8-14)

(1) विवाह के मेहमानों की खोज (22:8-10)

जिन लोगों को पहले दो राजकीय निमंत्रण मिले थे, उन्होंने आने से इनकार कर दिया था, इसलिए राजा ने अपने दूतों को सुसमाचार के साथ जीवन के राजमार्गों की ओर भेजा। निमंत्रण अब इस्राएल के घराने तक सीमित नहीं था, जैसा कि सुसमाचारों द्वारा सुझाई गई अवधि के दौरान था। उस समय के दौरान प्रभु ने सुरुफिनिकी (कनानी) महिला को इन शब्दों से फटकार लगाई थी, "इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया हूँ" (15:24)। लेकिन अब वह कह सकता था, "और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं; मुझे उन का भी लाना अवश्य है" (यूहन्ना 10:16)।

दृष्टांत में भोज के आयोजन में कोई कसर नहीं छोड़ी गई थी और अब लोगों को आमंत्रित करने में किसी तरह की कमी नहीं छोड़ी गई। "और ब्याह का घर जेवनहारों से भर गया।।" लोगों के एक झुण्ड ने प्रतिक्रिया दी, जिनमें "बुरे और भले" दोनों शामिल थे (मत्ती 22:10)। यहाँ "बुरे" शब्द का मूल अनुवाद पोनेरोस है, जो मनुष्यजाति की स्वाभाविक भ्रष्टता या हमारे बुरे स्वभाव के दुष्ट व्यवहार को संदर्भित करता है। सुसमाचार "बुरे" लोगों तक पहुँचता है। यह "भले," नैतिक रूप से ईमानदार, धार्मिक लोगों तक भी पहुँचता है। सभी प्रकार के लोगों को बुलाया गया है और कई प्रकार के लोगों के समूह प्रतिक्रिया देते हैं।

यह दृष्टांत प्रभु के विश्व सुसमाचारीय प्रचार कार्यक्रम के समानांतर है। प्रेरितों को "यरूशलेम और सारे यहूदिया में" शुरू करना था। फिर उन्हें सामरिया जाना था। उसके बाद ही उन्हें "पृथ्वी के छोर तक" पहुँचना था (प्रेरितों 1:8)। लगभग दो हज़ार वर्षों से आमंत्रण देने का काम चल रहा है और विवाह का भोज कक्ष जल्दी भरता जा रहा है। लेकिन अभी भी काफी जगह बाकी है।

(2) विवाह के वस्त्र का प्रश्न (22:11-14)

सुसमाचार के निमंत्रण के प्रति बाहरी प्रतिक्रिया देना ही पर्याप्त नहीं है। सुसमाचार प्रचार अभियानों में उत्साही आत्मा-विजेताओं द्वारा उद्धार पाने के लिए प्रेरित किए जाने पर उद्धार पाने का दावा करने वाले लोगों की भीड़ में, ऐसे हज़ारों लोग हैं जिन्होंने कभी वास्तव में नया जन्म नहीं पाया है। इनमें से प्रत्येक व्यक्ति जिसका वास्तव में मन-परिवर्तन नहीं हुआ है, उसने शायद बौद्धिक या भावनात्मक रूप से सुसमाचार के प्रति प्रतिक्रिया तो व्यक्त की है, लेकिन उसका विवेक कभी भी जागृत नहीं हुआ है, उसका हृदय कभी भी शुद्ध नहीं हुआ है, उसकी इच्छा को कभी स्पर्श नहीं किया गया है, और उसकी आत्मा को कभी भी जिलाया नहीं गया है। दूसरे शब्दों में, उसने कभी भी विवाह का वस्त्र नहीं पहना है।

पुराने समय में, जब राजा राजकीय भोज का आयोजन करता था, तो वह प्रत्येक मेहमान को उस अवसर पर पहनने के लिए एक उत्सवी वस्त्र भेंट करता था। दृष्टांत में राजा ने निस्संदेह उस प्रथा का पालन किया। उसने जो विवाह वस्त्र प्रदान किया (जिसे अब कफ्तान कहा जाता है) वह मसीह की धार्मिकता के निर्दोष वस्त्र का प्रतीक है, जो उन सभी को दिया जाता है जो उद्धार पाने के लिए वास्तव में उस पर भरोसा करते हैं, वे सभी जो वास्तव में बचाए गए हैं। केवल यही वस्त्र ही एकमात्र ऐसा वस्त्र है जिसे राजा स्वीकार करेगा। हमारी अपनी धार्मिकता का वस्त्र परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं है। इस तरह के वस्त्र पहनकर विवाह भोज में उपस्थित होना उसकी पवित्रता का अपमान है। प्रेम के साथ भोज दिया जाता है, लेकिन पवित्रता की कीमत पर कोई प्रेम नहीं होता। गलत वस्त्र पहनकर उपस्थित होने का कोई बहाना काम नहीं आएगा क्योंकि आवश्यक वस्त्र परमेश्वर का अपने मेहमानों को दिया गया उपहार है।

(a) एक शीघ्र पर्दाफ़ाश (22:11-13)

i. लापरवाह मनुष्य का पाप (22:11-12a)

दृष्टांत में वह व्यक्ति जिसने विवाह का वस्त्र नहीं पहना था, उन लोगों को दर्शाता है जो उद्धार पाने का दावा तो करते हैं, लेकिन वास्तव में उनके पास उद्धार नहीं है। उन्होंने सुसमाचार के प्रति अपर्याप्त तरीके से प्रतिक्रिया व्यक्त की है। वे कल्पना करते हैं कि उनकी अपनी अच्छाई ही परमेश्वर के लिए पर्याप्त है।

ध्यान दें कि 22:11-12 में दो अलग-अलग यूनानी शब्दों का अनुवाद "नहीं" के लिए किया गया है: "जब राजा जेवनहारों को देखने के लिए भीतर आया; तो उस ने वहां एक मनुष्य को देखा, जो ब्याह का वस्त्र नहीं [ओऊ] पहिने था। उस ने उससे पूछा हे मित्र; तू ब्याह का वस्त्र पहिने बिना [मे] यहां क्यों आ गया??"। विन्सेंट ने बताया कि 'ओऊ' का इस्तेमाल हमेशा तब किया जाता था जब संदर्भ किसी तथ्य के मामले से जुड़ा होता था। तथ्य यह था कि उस आदमी के पास ऐसा वस्त्र नहीं था जो विवाह के भोज में उसकी उपस्थिति को स्वीकार्य बनाता। "मे" का इस्तेमाल हमेशा तब किया जाता था जब संदर्भ किसी विचार के मामले से जुड़ा होता था। उस आदमी के पास विवाह का वस्त्र तो था लेकिन उसने जानबूझकर उसे नहीं पहना था।

उस व्यक्ति ने सोचा कि उसका अपना वस्त्र उतना ही अच्छा है जितना कि उसे दिया गया था। समस्या यह नहीं थी कि उसके पास कोई विवाह का वस्त्र उपलब्ध नहीं था। या वह उसे पहनना भूल गया था। यह जानबूझकर की गई चूक का मामला था। उसका कारण चाहे जो भी रहा हो—और कौन समझ सकता है कि लोग मसीह की धार्मिकता को न पहनने के लिए क्या बहाने बनाते हैं?—उस आदमी में इतना साहस था

कि वह खुद को स्वीकार्य बनाने की कोशिश कर रहा था जबकि वह एक ऐसी चीज को अस्वीकार कर रहा था जो उसे स्वीकार योग्य बनाती।

ध्यान दें कि 22:12 में राजा उस व्यक्ति को "मित्र" कहकर संबोधित करता है, जो मूल शब्द “हेटैरोस” का अनुवाद है। केवल मत्ती ने ही प्रभु द्वारा इस शब्द के उपयोग को दर्ज किया है। यह 11:16-17 के संदर्भ में भी पाया जाता है: "मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से दूं? वे उन बालकों के समान हैं, जो बाजारों में बैठे हुए एक दूसरे [हेटैरोस] से पुकारकर कहते हैं कि हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई, और तुम न नाचे; हम ने विलाप किया, और तुम ने छाती नहीं पीटी।" इसलिए इस शब्द का उपयोग उन लोगों का वर्णन करने के लिए किया गया था जो इतने स्वार्थी हैं कि वे किसी भी बात से प्रसन्न नहीं है। यह शब्द 26:50 में भी पाया जाता है; यहूदा द्वारा चूमे जाने के ठीक बाद, प्रभु ने अपने पकडवाने वाले से कहा, "हे मित्र [हेटैरोस], जिस काम के लिये तू आया है, उसे कर ले।" सच है, यह शब्द मित्र के लिए प्रयोग किया गया है, लेकिन नए नियम में इसका उपयोग उन लोगों के लिए किया गया है जिन्होंने परमेश्वर की भलाई और उद्धार का तिरस्कार किया है।

ii. उस लापरवाह आदमी की चुप्पी (22:12b)

दृष्टांत में वर्णित व्यक्ति ने भोज को तुच्छ नहीं समझा। वह विवाह में मेहमान बनने के निमंत्रण के जवाब में आगे आया था। लेकिन उसने उस शर्त को तुच्छ समझा जिस पर वह स्वीकार्य किया जाएगा। राजा ने उसे तुरंत पहचान लिया, लेकिन निर्णय लेने में जल्दबाजी नहीं की। वह सम्मानीय वैभव के साथ उस स्थान पर गया जहाँ वह व्यक्ति बैठा हुआ था और अचानक हर किसी की नज़र इस दयनीय अतिथि पर पड़ी। राजा ने उसे संयमित शब्दों के साथ संबोधित किया, लेकिन एक स्पष्टीकरण भी माँगा।

यह उस व्यक्ति के न्याय का दिन था। उसका मुंह बन्द हो गया, जैसा कि सभी लापरवाह लोग तब होंगे जब परमेश्वर उनसे यह बताने के लिए कहेगा कि उन्होंने कलवरी पर इतनी भारी कीमत पर प्रदान किए गए उद्धार के वस्त्र को पहनने से इनकार करके उसकी महिमा और अनुग्रह का अपमान क्यों किया।

iii. लापरवाह आदमी की सजा (22:13)

लापरवाह व्यक्ति का न्याय तुरंत और सुनिश्चित, न्यायपूर्ण और काफी भयानक था। उसने "ऐसे बड़े उद्धार" (इब्रानियों 2:3) को अस्वीकार करके राजा का अपमान किया था। उस व्यक्ति के लिए, उसके जैसे सभी लोगों के लिए, "बाहरी अंधकार" और "रोने और दांत पीसने" के अलावा कुछ भी नहीं हो सकता था।

(b) एक गंभीर उदाहरण (22:14)

यह उल्लेखनीय दृष्टांत उन लोगों पर लागू होता है जिन्होंने इसे सबसे पहले सुना था - अर्थात् यहूदी और उनके अगुवे जो प्रभु पर विश्वास नहीं करते थे। यह उन लोगों पर भी लागू होता है जिन्होंने पूरे सुसमाचारीय युग में राजकीय निमंत्रण सुना है। इस विषय पर प्रभु का अंतिम वचन गंभीर है: "क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।" इस प्रकार हमें अपनी बुलाहट और चुनाव को सुनिश्चित करने के लिए चेतावनी दी जाती है।

ग. विषय (22:15-46)

1. योजना बनाई गई (22:15)

प्रभु के शत्रुओं द्वारा बहुत कुछ सुना जा चुका था। लेकिन मन-फिराने के बजाय, वे जानबूझकर उसकी मृत्यु का षडचंत्र रच रहे थे - ठीक वैसे ही जैसे प्रभु के अंतिम दृष्टांत में उस व्यक्ति ने जानबूझकर किया था जिसने फैसला किया था कि वह राजा के विवाह के वस्त्र के बिना भी काम चला सकता है। यहूदी अगुवों ने फैसला किया कि वे यीशु जैसे मसीहा के बिना और उसके द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए राज्य के बिना काम चला सकते हैं।

जब प्रभु अभी भी मंदिर में ही था, तब फरीसी, सदूकी और हेरोदियाई उसके विरूद्ध साजिश रच रहे थे। उनकी घृणित साजिश, जो फरीसियों द्वारा भड़काई गई प्रतीत होती है, का उद्देश्य "उसे उसकी बातों में उलझाना [फंसाना] था।" हालाँकि, वे देहधारी सर्वज्ञता के विरूद्ध थे। बाइबल में कुछ अध्याय हमें मत्ती 22 से भी बेहतर प्रभु की बुद्धि की झलक प्रदान करते हैं।

2. योजना विकसित की गई (22:16-45)

क. राजभक्त लोग प्रभु को फँसाने की कोशिश करते हैं (22:16-22)

(1) उनका छल (22:16)

सबसे पहला हमला हेरोदियों ने किया, एक ऐसा समूह जिसे हम राजभक्त कहेंगे। उन्होंने प्रभु को चापलूसी से फंसाने की कोशिश की: उन्होंने कहा, "हे गुरू; हम जानते हैं, कि तू सच्चा है; और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है; और किसी की परवा नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखकर बातें नही करता।" उन्होंने अपना सवाल मीठे शब्दों में डुबोकर पूछा, लेकिन वे एक पल के लिए भी प्रभु को धोखा नहीं दे पाए।

हेरोदियाई, जो वास्तव में यहूदियों के बीच एक राजनीतिक दल था, ने हेरोदेस के राजवंश का समर्थन किया। हेरोदेस ने यीशु के सिंहासन पर कब्जा कर लिया था और हेरोदियों ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया था कि एक एदोमी रोम के कठपुतली राजा के रूप में दाऊद के सिंहासन पर बैठा था। वे अपने देश पर रोमी कब्जे के साथ भी सहमत हो गए थे। धर्म के मामलों में हेरोदियों का झुकाव फरीसियों की तुलना में सदूकियों की ओर अधिक था। आम तौर पर फरीसियों और हेरोदियों के बीच बहुत कम प्रेम था, लेकिन मसीह के विरोध ने उन्हें एक ऐसा सामान्य कारण दिया जिसमें वे आपस में सहमत थे।

हेरोदियों से बहुत अधिक निकटता की पहचान से खुद बचाने के लिए, जिनसे वे नफरत करते थे, फरीसियों ने संभवतः अपने संप्रदाय के कुछ युवा पुरुषों (जो तरसुस के शाऊल की तरह, गमलीएल द्वारा संचालित रब्बीनी पाठशालाओं में प्रशिक्षण ले रहे थे) को मसीह के साथ इस नए टकराव में हेरोदियों के साथ खड़े होने के लिए भेजा। शायद फरीसियों ने सोचा कि मसीह उन युवा पुरुषों के स्पष्ट ईमानदारी से पूछे गए सरल, नागरिक सवालों के झांसे में फँस जाएगा। अगर यहूदियों ने सोचा कि वे इस तरह से परमेश्वर के मसीह को धोखा दे सकते हैं, तो वे गलत थे।

(2) उनका लक्ष्य (22:17-18)

(a) जाल बिछाया गया (22:17)

यह सवाल राजनीति से जुड़ा हुआ था। "कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं?" अगर वह हाँ कहता, तो वह अपने मसीहा होने के दावों को त्याग रहा होता। उन्हें लगता था कि मसीहा कभी भी किसी अन्यजातीय सामर्थ को कर देने के लिए सहमत नहीं होगा, खासकर रोम जैसी क्रूर और लालची शक्ति को। उसे तो एक छुड़ाने वाला होना था। उसे एक शानदार वैश्विक साम्राज्य स्थापित करना था जो पुराने नियम के कई भविष्यद्वक्ताओं का मुख्य विषय था। यीशु को उन मंदिर प्रांगणों में दाऊद के पुत्र के रूप में घोषित किया गया था, लेकिन अगर वह हाँ कहता, तो उसे मसीहा के पद से गिराकर बदनाम कर दिया जाता।

यदि वह 'नहीं' कहता, तो हेरोदियों के लोग उसे एक गद्दार, एक खतरनाक आदमी के रूप में रोमियों के सामने पेश कर देते, जो उनके राष्ट्र पर रोमियों के कब्जे के विरोध की वकालत कर रहा था।

(b) फंदे को पहचान लिया गया (22:18)

प्रभु ने प्रश्न को समझ लिया और उसने उन लोगों को भी पहचान लिया। उसने सीधे पूछा, "हे कपटियों; मुझे क्यों परखते हो?" वह उनसे नहीं डरता था। उन्हें लगता था कि वे उसे अपनी जाल में फँसा चुके हैं, लेकिन वे उसे कितना कम जानते थे!

वह उनके विचारों को पढ़ सकता था। मत्ती ने लिखा, "यीशु ने उन की दुष्टता जानकर कहा।" यहाँ "दुष्टता" का अनुवाद पोनेरिया (पोनेरोस के समान) है। ईमानदारी के उनके बाहरी दिखावे ने भ्रष्टाचार और धोखे को छिपा रखा था। यहाँ "जानकर" का मूल अनुवाद 'गिनोस्को' है, जिसका अर्थ है "अनुभव से जानना।" प्रभु पहले भी उनके जैसे लोगों के विरोध का सामना कर चुका था। वह उनसे कहीं ज़्यादा बेहतर था। उन्हें लगा था कि वह एक अशिक्षित किसान है जो एक कच्ची पृष्ठभूमि और पिछड़े गाँव से आया है, लेकिन उसके पास ब्रह्मांड में सबसे तेज़ दिमाग था।

(3) उनकी सरकार (22:19-21b)

(a) कैसर का सिक्का (22:19-21a)

i. उसे सौंप दिया गया (22:19)

प्रभु ने कहा, "कर का सिक्का मुझे दिखाओ।" उसने हेरोदियों से एक रोमी सिक्का देने को कहा, एक तरह का दीनार जो रोम को कर के रूप में दिया जाता था। इब्रानी कर शेकेल में चुकाए जाते थे, जो पुराने यहूदी सिक्के हुआ करते थे। बेशक उन लोगों ने सोचा कि प्रभु उनकी चाल में फँस गया है लेकिन उन्हें नहीं पता था कि वह खुद उन्हें कहाँ ले जा रहा है, इसलिए उन्होंने तुरंत एक दीनार उसके हाथों में दे दिया। रोमी सिक्के का एक नमूना दीनार एक मजदूर की दैनिक मजदूरी के बराबर था।

ii. उनके द्वारा वर्णित किया गया (22:20-21a)

प्रभु ने उस दीनार को उठाया और पूछा, "यह छाप और नाम किस का है?" (22:20) उस छोटे चांदी के सिक्के पर रोमी सम्राट के सिर की छवि और कुछ अक्षर (TICAESARDIVIAVGFAVGVSTVS) अंकित थे। ये अक्षर लैटिन वाक्यांश, *तिबेरियस कैसर, डिवी ऑगुसुस्टी फिलियस ऑगस्टस* का प्रतिनिधित्व करते थे, जिसका अर्थ है "तिबेरियस कैसर, ईश्वरीय ऑगस्टस का प्रतापी पुत्र।" ये शब्द स्वयं यहूदियों के लिए अपमानजनक थे। सिक्के के पीछे एक बैठी हुई महिला आकृति और यह लेख "पोंटिफ़ मैक्सिम" (PONTIF

MAXIM) खुदा हुआ था, जो कैसर को रोम की मूर्तिपूजक धार्मिक प्रणाली का संप्रभु पोप घोषित करता था।

वायदा किए गए उस देश के यहूदियों के बीच इस तरह का आपत्तिजनक सिक्का प्रचलन में था, जो रोम के अधीन होने का सबसे बड़ा सबूत था। रब्बीनियों के दृष्टिकोण से भी, सिक्के बनाने का अधिकार राज्य के मुखिया का था और यह वास्तविक सरकार का सबूत था, जिसका विरोध करना गैर-कानूनी था। सामान्य लेन-देन में दीनार का उपयोग यह दर्शाता है कि यहूदी राष्ट्र रोम पर निर्भर था। यहूदी लोग रोम के अधीन थे और रोम द्वारा उन पर शासन किया जा रहा था और उन्होंने रोमी मुद्रा का उपयोग करके इस स्थिति को स्वीकार कर लिया था। तुरंत ही एक दीनार प्रस्तुत करके, हेरोदियों ने वहाँ की राजनीतिक स्थिति का एक ज्वलंत प्रदर्शन प्रस्तुत किया।

(b) कैसर का दावा (22:21b)

अपने शत्रुओं से उलझने की बजाय, यीशु ने उन्हें एक ऐसा जवाब दिया जिस पर वे लोग अचंभित हो उठे: "जो कैसर का है, वह कैसर को दो।" वे कैसर के सिक्कों का उपयोग कर रहे थे, इसलिए उन्हें कैसर को उसका हक देना चाहिए था। साथ ही प्रभु यीशु ने देश की स्थापित सरकार को भी कायम रखा, क्योंकि सरकार परमेश्वर की थी। रोमी लोग बेबीलोनियों, फारसियों और यूनानियों के राजकीय उत्तराधिकारी थे, जिनका शासन देश पर परमेश्वर के न्याय का हिस्सा था। अन्यजातियों का समय अभी लागू था और वे समय अभी तक पूरे नहीं हुए थे (लूका 21:24)।

रोमियों 13:1 हमें बताता है कि "जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं।" सभी मानवीय सिंहासनों के ऊपर परमेश्वर का सिंहासन है। हमें व्यवस्था का पालन करने वाले नागरिक होना चाहिए, राज्य पर शासन करने वालों को वह देना चाहिए जिसकी मांग करने का उन्हें संवैधानिक अधिकार है। हमें वैधानिक अधिकार की अवज्ञा करने का अधिकार नहीं है, तब भी जब, यहूदियों के मामले में, अधिकार एक ऐसा प्रकार का हो जिससे हम स्वाभाविक रूप से घृणा करते हैं।

(4) उनका परमेश्वर (22:21c-22)

(a) उसकी आराधना (22:21c)

लेकिन अभी और भी कुछ था। यीशु ने कहा, "और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।" प्रभु हमें राज्य या अपने लिए व्यवस्था से स्वतंत्र नहीं बनाता, लेकिन हमारा एक कर्तव्य है जो सभी नागरिक कर्तव्यों से बढ़कर है, अर्थात् परमेश्वर के प्रति हमारा कर्तव्य। हमें अपने करों का भुगतान करना चाहिए और व्यवस्था का पालन करना चाहिए, अगर ऐसा करना परमेश्वर के प्रति हमारी आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता के साथ संघर्ष का कारण नहीं बनता है। विवेक के ऐसे मामलों में, किसी को भी दूसरे व्यक्ति को यह बताने का अधिकार नहीं है कि उसका कर्तव्य क्या है। लेकिन अधिकतर मामलों में, हमारे देश के शासकों के प्रति हमारा कर्तव्य किसी भी तरह से परमेश्वर के प्रति हमारे कर्तव्य से असंगत नहीं होता है।

(b) उनका अचम्भा (22:22)

मत्ती ने आगे कहा, "यह सुनकर उन्होंने [राजभक्तों] अचम्भा किया, और उसे छोड़कर चले गए।" यीशु की बुद्धि किसी भी अन्य शिक्षक की बुद्धि से कहीं अधिक बढ़कर थी जिसे उन्होंने कभी सुना था। उसने हेरोदियों और फरीसियों के दलीय संघर्ष में खुद को उलझाए बिना उनके सवाल का जवाब दिया था। हेरोदियों ने उसके उत्तर में कुछ भी देशद्रोह या सत्ताविरोधी बात नहीं पाया और वे लज्जित होकर वहाँ से चले गए। फरीसियों ने उसके जवाब में कुछ भी देशद्रोही बात नहीं पाई और वहाँ से वापस चले गए। उसने कैसर को उसके सिंहासन पर और परमेश्वर को उसके सिंहासन पर ही स्थापित रखाथा। "किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न कीं" (यूहन्ना 7:46)।

ख. तर्कवादी लोग प्रभु को फँसाने की कोशिश करते हैं (22:23-33)

यीशु अभी भी मंदिर के प्रांगण में था और अब तर्कवादी सदूकियों की बारी थी, जो मसीह के अधिकार को चुनौती देते थे। उनका अविश्वास उनकी सबसे बड़ी समस्या थी। उन्होंने पवित्रशास्त्र की अचूकता और अधिकार को चुनौती दी। उन्होंने मानवीय तर्क को पवित्र शास्त्र के समक्ष लाने की बजाय बाइबल को ही मानवीय तर्क के सामने लाकर खड़ा कर दिया।

(1) उनके अविश्वास की व्याख्या (22:23)

"उसी दिन सदूकी जो कहते हैं कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं उसके पास आए।" सदूकी संशयवादी थे। हालाँकि वे धार्मिक थे और बाइबल में जो कुछ भी था, उसे स्वीकार तो करते थे, लेकिन वे अलौकिकता को स्वीकार नहीं करते थे। उन्हें फरीसियों की पसंदीदा रीति-रिवाजों के प्रति कोई रुचि नहीं थी और उन्होंने शास्त्रों की पारंपरिक व्याख्याओं को अस्वीकार कर दिया था। सदूकियों ने शारीरिक पुनरुत्थान की अवधारणा की वैधता को सिरे से नकार दिया था।

सदूकी भी उस समय के भौतिकवादी थे और सभी गरीबी को परमेश्वर की अप्रसन्नता का प्रमाण मानते थे। उनके विचार में, गरीबों को राहत पहुँचाना दरअसल परमेश्वर की शासन प्रणाली में हस्तक्षेप करना था। सदूकी एक धार्मिक समूह के रूप में काफी धनी, कुलीन और सामर्थशाली थे; उनके हाथों में उच्च पुरोहित वर्ग था। और क्योंकि वे विदेशी शासन और मूर्तिपूजक रीति-रिवाजों के आगे झुके हुए थे, इसलिए उन्हें रोम का समर्थन भी प्राप्त था। धर्म और राजनीति दोनों में उदार होने के कारण सदूकी एक ऐसा समूह था जिनसे डरने की ज़रुरत थी।

फिर भी उन्हें डर था कि यह गरीब गलीली किसान अपने साधारण वेश-भूषा और अनुसरण करने वाले अनुयायियों के साथ कुछ ऐसा कर सकता है जिससे रोम में एक तीखी प्रतिक्रिया हो और नागरिक और धार्मिक स्वतंत्रताएँ खत्म हो जाएँ जो अभी भी उनके पास थीं। मसीह के प्रति सदूकियों के रवैये का सारांश उनके एक सदस्य, काइफा, जो वर्तमान महायाजक (ईस्वी 18-36) ने दिया था। यीशु के विरूद्ध कार्रवाई करने के लिए महासभा को उकसाने के लिए उसने परिषद से कहा: " तुम कुछ नहीं जानते [तुममें कोई समझ नहीं है], और न यह सोचते हो, कि तुम्हारे लिये यह भला है, कि हमारे लोगों के लिये एक मनुष्य मरे, और न यह, कि सारी जाति नाश हो।" (यूहन्ना 11:49-50)। सुविधावाद ही उनके जीवन का नियम था।

सदूकी अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए इस अनचाहे मसीहा का बलिदान देने के लिए तैयार थे, लेकिन मत्ती 22:23 के समय में ऐसा करना उचित नहीं था क्योंकि वह भीड़ के बीच काफी लोकप्रिय था। उसे

गिरफ्तार करने से विद्रोह भड़क सकता था जो बदले में रोमी प्रतिशोध को भड़का सकता था जिससे वे खुद डरते थे। ऐसी परिस्थितियों में सबसे अच्छा काम उसे बदनाम करना था। इसलिए वे एक विशिष्ट उदार धार्मिक तर्क के साथ उसके पास आए।

(2) उनका अविश्वास व्यक्त किया गया (22:24-28)

(a) वह आज्ञा जिसका उन्होंने उद्धरण दिया (22:24)

सदूकियों ने निःसंतान विधवा के बारे में मूसा की प्रसिद्ध व्यवस्था का उद्धरण दिया (व्यवस्थाविवरण 25:5)। इस आज्ञा के अनुसार मृतक के भाई को उसकी विधवा से विवाह करना जरूरी था। इस विवाह से पैदा होने वाले ज्येष्ठ पुत्र को कानूनी रूप से मृतक का पुत्र माना जाता था। इस आज्ञा का उद्देश्य विधवा की रक्षा करना और उसके मरे हुए पति की संपत्ति को परिवार में बनाए रखना था। (यह वह व्यवस्था है जो रूत की पुस्तक की कहानी का आधार है।)

(b) वह मामला जिनका उन्होंने उद्धरण दिया (22:25-28)

सदूकियों ने एक कहानी सुनाई जो उनके अनुसार शारीरिक पुनरुत्थान में विश्वास करने की मूर्खता को उजागर करती है। कहानी एक महिला के चारों ओर घूमती है जो सात बार विधवा हुई थी। एक-एक करके, सात भाइयों ने उस संतानहीन महिला से विवाह किया, क्योंकि उनके मरने के बाद उस बेचारी विधवा को अगले व्यक्ति के साथ विवाह करना पड़ता था। अंत में वह स्त्री भी मर गई, और मूसा की व्यवस्था के अनुसार, वह सभी सात भाइयों की विवाहिता थी। उनमें से कोई भी "अपने भाई के लिए संतान उत्पन्न करने" में सक्षम नहीं रहा (22:24)। अब वह बांझ महिला खुद भी सभी सात पुरुषों के साथ मृत्यु में शामिल हो गई थी। कोई भी व्यक्ति उस आत्मसंतुष्टि को महसूस कर सकता है जिसके साथ उन सदूकियों ने अंत में यह धूर्ततापूर्ण पंक्तियां कही: "सो जी उठने पर, वह उन सातों में से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सब की पत्नी हो चुकी थी" (22:28)।

(3) उनका अविश्वास सबके सामने प्रकट किया गया (22:29-33)

प्रभु उनके इस दार्शनिक तर्क से ज़रा सा भी प्रभावित नहीं हुआ। उसने उन्हें सीधे पवित्रशास्त्र की ओर मोड़ा, जिसे वे प्रेरित, अचूक, आधिकारिक और विश्वास और नैतिकता के मामलों में एकमात्र सुरक्षित मार्गदर्शक कुँजी मानते थे।

(a) उनकी अज्ञानता को फटकारा गया (22:29-30)

i. परमेश्वर के प्रकाशन की प्रकृति के बारे में उनकी अज्ञानता (22:29)

यीशु ने उत्तर कहा, "तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़ गए हो।" जो लोग पवित्रशास्त्र से अनभिज्ञ हैं, वे सब भूल में पड़े हैं; वे स्वयं को धोखा दे रहे हैं। सदूकियों के पास शास्त्र को न जानने का कोई बहाना नहीं था। वे असमर्थ नहीं थे; लेकिन वे उन्हें जानने के प्रति अनिच्छुक थे। यह उनकी अनिच्छा ही थी जिसके लिए प्रभु ने उन्हें फटकार लगाई।

प्रभु द्वारा धार्मिक उदारवाद और तर्कवाद पर तीन बार फटकार लगाए जाने पर ध्यान दें। उसने उनकी (1) अपने आप को धोखा देने की प्रवृत्ति (रोमियों 1:21-22); (2) पवित्रशास्त्र की आत्मिक सच्चाई के प्रति

अज्ञानता (प्रेरितों 13:27); और (3) घटनाओं के प्राकृतिक क्रम में परमेश्वर के सामर्थशाली संप्रभु हस्तक्षेप के तथ्य को स्वीकार करने के प्रति अनिच्छा के लिए फटकार लगाई। तर्कवादियों की समस्या यह नहीं है कि वे विश्वास नहीं कर सकते, बल्कि यह है कि वे विश्वास नहीं करेंगे। यदि वे स्वीकार कर लें कि परमेश्वर सर्वसामर्थी और सर्वज्ञ है, तो सभी समस्याएँ गायब हो जाएँगी। सदूकी, अपने सभी प्रकार की तरह, परमेश्वर के वचन और परमेश्वर की सामर्थ के प्रति पूरी तरह से अंधे थे।

ii. मनुष्य के पुनरुत्थान की प्रकृति के प्रति उनकी अज्ञानता (22:30)

सदूकियों का काल्पनिक मामला उनकी अज्ञानता का एक उत्तम उदाहरण था। उन्होंने मान लिया था कि मृत्यु के बाद का जीवन मृत्यु से पहले के जीवन जैसा ही है। लेकिन ऐसा नहीं है। पुनरुत्थान में सभी रिश्ते बदल जाते हैं। "जी उठने पर वे विवाह नहीं करेंगे; परन्तु वे स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों के समान होंगे।"

प्रभु ने स्वर्गदूतों और आत्माओं के अस्तित्व के सदूकियों के इनकार को पूरी तरह अप्रासंगिक और चर्चा के लायक न मानते हुए इसे अनदेखा कर दिया। वे अस्तित्व में थे। पुराने नियम के शास्त्रों में उनके बारे में अक्सर बात की गई है। उसने सदूकियों के अविश्वास के लिए कोई छूट नहीं दी।

पुनरुत्थान में हम अविनाशी स्वर्गदूतों के समान होंगे। उन्हें विवाह की कोई ज़रूरत या इच्छा नहीं होती। हम स्वर्गदूतों की तरह अमर होंगे। अमर होने के कारण, उन्हें अपनी प्रजाति के प्रसार की कोई ज़रूरत या इच्छा नहीं होती। विवाह, जो यहाँ पृथ्वी की प्रजातियों के प्रसार के लिए परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया गया है, अब पुनरुत्थान में जीवन का हिस्सा नहीं रहेगा। हम अब मानवीय इच्छाओं या कामनाओं के अधीन नहीं होंगे। हम कभी थकेंगे नहीं, कभी भूखे नहीं रहेंगे, कभी बूढ़े नहीं होंगे, कभी प्रलोभन में नहीं पड़ेंगे। आत्मा और शरीर का सदियों पुराना संघर्ष हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा।

पुनरुत्थान में हम निश्चित रूप से एक दूसरे को जानेंगे और एक दूसरे से प्रेम करेंगे, लेकिन विवाह संबंध और उससे जुड़ी सभी चीजें खत्म हो जाएंगी। इस प्रकार सदूकियों की मूर्खतापूर्ण कहानी जानबूझकर अविश्वास में निहित अज्ञानता पर आधारित थी।

यीशु के लिए पुनरुत्थान के वास्तविक तथ्य को साबित करना अनावश्यक था, क्योंकि उसने पहले ही तीन लोगों को मृतकों में से जीवित कर दिया था (लूका 7:12-15; 8:49-55; यूहन्ना 11:43-44)। उनमें से अंतिम लाजर का मामला हाल ही में हुआ था और यरूशलेम में लोगों के आस इसकी एक आम धारणा थी, जैसा कि सदूकियों के साथ था (यूहन्ना 11:46-53; 12:9-11)। इसके अलावा पुराने नियम के शास्त्रों ने शारीरिक पुनरुत्थान के सिद्धांत की पुष्टि की है (अय्यूब 19:26) और इसके तीन उदाहरण दिए गए हैं (1 राजा 17:17-23; 2 राजा 4:32-37; 13:21)।

(b) उनकी अज्ञानता प्रकट हुई (22:31-33)

i. इन विद्वान पुरुषों के लिए (22:31-32)

प्रभु ने सदूकियों की अज्ञानता को भी फटकारा। फिर से उन्हें बाइबल का उद्धरण देते हुए, जिस पर वे विश्वास नहीं करते थे, उसने मूसा द्वारा लिखे गए एक पद्यांश निर्गमन 3:6 का उद्धरण दिया। इस पद्यांश का उद्धरण देकर उसने पुष्टि की कि यह ईश्वरीय प्रेरणा से लिखा गया था, अर्थात् साक्षात परमेश्वर का वचन है।

"परन्तु मरे हुओं के जी उठने के विषय में," उसने कहा, "क्या तुम ने यह वचन नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने तुम से कहा। कि मैं अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ वह तो मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर है।" दूसरे शब्दों में, मृत्यु अस्तित्व की समाप्ति नहीं होती है।

सदूकियों का मानना था कि जब कोई व्यक्ति मर जाता है, तो उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है; वह नष्ट हो जाता है। यीशु ने उस तर्कवादी विश्वास पर आधिकारिक रूप से उसे "निरर्थक" करार कर दिया। उस दृष्टिकोण के अनुसार, निर्गमन 3:6 में परमेश्वर ने खुद को अस्तित्वहीन व्यक्तियों का परमेश्वर घोषित किया था! तर्कवाद हमेशा असंगत परिस्थियों में फँसा देता है।

परमेश्वर ने मूसा से ये वचन तब कहे थे जब उसने उसे इस्राएल का छुड़ानेवाले कुटुम्बी बनने के लिए बुलाया था। उस समय तक याकूब, इसहाक और अब्राहम सदियों पहले मर चुके थे। लेकिन चूँकि "परमेश्वर मरे हुओं का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है," इसलिए वे लोग अभी भी जीवित थे। परमेश्वर ने मनुष्य को इस तरह से बनाया है कि वह अपने शरीर के बिना अधूरा है, लेकिन वह मृत्यु के बाद भी एक देहरहित आत्मा के रूप में अस्तित्व में रह सकता है और रहता भी है। पुनरुत्थान के लिए मनुष्य की देह की ज़रूरत परमेश्वर की सामर्थ, योग्यता और ऐसे शरीर को प्रदान करने के उद्देश्य से पूरी होती है।

यह सब सदूकियों ने खुद ही समझ लिया होता अगर वे जानबूझकर अपनी अज्ञानता और अविश्वास से अंधे न हुए होते। हमें यह नहीं बताया गया है कि सदूकियों ने निजी तौर पर क्या जवाब दिया, लेकिन मसीह के प्रति उनके निरंतर द्वेष से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उन्होंने उनकी शिक्षा को सिरे से नकार दिया होगा। जैसा कि कहावत है,

एक आदमी को उसकी इच्छा के विरुद्ध राजी कर लिया गया,

लेकिन अभी भी उसकी यही राय है।

हम जानते हैं कि यीशु ने सार्वजनिक रूप से "सदूकियों का मुंह बन्द कर दिया" था (मत्ती 22:34)।

ii. सुनने वाली भीड़ के लिए (22:33)

आम जनता "उसके उपदेश से चकित हुए।" प्रभु ने उनके लिए पवित्रशास्त्र की अकल्पनीय गहराई को खोल दिया था और इसकी ईश्वरीय प्रेरणा और पूर्ण अधिकार की पुष्टि की थी।

लूका ने टिप्पणी में यह भी कहा कि वहाँ उपस्थित कुछ शास्त्री, जो निस्संदेह फरीसी दल के थे, अपने पुराने शत्रुओं, सदूकियों की सार्वजनिक पराजय से प्रसन्न थे। उन्होंने कहा, "हे गुरू, तू ने अच्छा कहा" (लूका 20:39)।

ग. कट्टर धार्मिक लोग प्रभु को फँसाने की कोशिश करते हैं (22:34-45)

अब बारी थी फरीसियों की, जो धर्म के कट्टर अनुयायी थे। मत्ती ने उनके समर्थक को "व्यवस्थापक" कहा (22:35)। वह एक शास्त्री था जो व्यवस्था की शिक्षा दिया करता था। इस व्यक्ति को फरीसियों ने इस

उम्मीद में आगे रखा था कि उसका कानूनी प्रशिक्षण उसे हेरोदियों और सदूकियों से भी अधिक सामर्थी विरोधी बना देगा।

(1) आज्ञाओं के विषय में व्यवस्थापक का प्रश्न (22:34-40)

(a) पूछा गया प्रश्न (22:34-36)

फरीसियों के प्रतिनिधि ने पूछा, "हे गुरू; व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?" (22:36) मत्ती ने उसके उद्देश्य को प्रकट किया: वह दरअसल मसीह को "परख" रहा था (22:35)। उस व्यवस्थापक के प्रश्न में बहस की बहुत गुंजाइश मौजूद थी। रब्बियों ने व्यवस्था को 248 सकारात्मक और 365 नकारात्मक आज्ञाओं में विभाजित किया था। इनमें से कुछ आज्ञाओं को हल्का और अन्य को भारी कहा गया था। कुल मिलाकर 613 थे (दशवचन में अक्षरों की गिनती)। चाहे प्रभु कोई भी आज्ञा क्यों न चुनता, उसे चुनौती देना संभव था।

रब्बियों ने बाल की खाल निकालने में महारत हासिल कर रखी थी, और उन्होंने व्यवस्था में हर तरह के सूक्ष्म सुधार किए थे। वे एक साधारण से कथन जैसे कि "तुम बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में न पकाना" पर कई वर्षों तक बहस करते रह सकते थे। तो भला, यह शिक्षक रब्बी पाठशालाओं में सिखाए जा रहे सभी भारी भरकम विचारों के सामने कैसे खड़ा होगा?

(b) प्रश्न का उत्तर (22:37-40)

i. पुराने नियम की विधियों की दो महान मूल बातें (22:37-39)

a. सर्वोच्च आज्ञा (22:37-38)

प्रभु ने व्यवस्थापक को व्यवस्थाविवरण 6:4-5; 10:12; 30:6, इब्रानी लोगों के पंथ, हर यहूदी द्वारा अपनी भक्ति में दोहराए जाने वाले शब्दों, उनके विश्वास के अंगीकार पर उसे वापस ले गया। "हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना" (व्यवस्थाविवरण 6:4-5)। यहाँ "एक" शब्द का मूल अनुवाद बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह एक मिश्रित एकता को दर्शाता है, न कि अकेले होने को। पद 4 के इब्रानी पाठ में, "सुन" के मूल अनुवादित शब्द का अंतिम अक्षर बड़ा है (अन्य अक्षरों की तुलना में) और अंतिम शब्द का अंतिम अक्षर भी बड़ा है ताकि "बड़ी और मुख्य आज्ञा" पर जोर दिया जा सके (मत्ती 22:38)।[31]

इस प्रकार प्रभु ने दस आज्ञाओं को दरकिनार कर दिया और एक प्रसिद्ध और सर्वव्यापी आज्ञा को चुना। दस आज्ञाओं में से नौ आज्ञाएँ नकारात्मक रूप में कही गई हैं, लेकिन यीशु ने उन सभी को सकारात्मक रूप में संक्षेप में प्रस्तुत किया। उन चीज़ों पर ज़ोर देने की बजाय जो हमने की हैं और जो हमें नहीं करनी चाहिए थीं, "बड़ी और मुख्य आज्ञा" उन चीज़ों पर ज़ोर देती है जो हमने नहीं की हैं और जो हमें करनी चाहिए थीं। यीशु के अलावा और किसने कभी अपने हृदय की हर धड़कन के साथ, अपनी आत्मा की सभी क्षमताओं और वरदानों के साथ, और अपनी सामर्थ की सभी ताकत और गतिशीलता के साथ परमेश्वर से प्रेम किया है? परमेश्वर को अपने पूरे अस्तित्व के साथ प्रेम किया जाना चाहिए, और उसके सामने किसी भी चीज़ को प्राथमिकता नहीं दी जानी चाहिए।

b. अतिरिक्त आज्ञा (22:39)

प्रभु यहीं नहीं रूका, क्योंकि कुछ लोग "बड़ी और मुख्य आज्ञा" को एक सैद्धांतिक सारांश मान सकते हैं। इसलिए उसने लैव्यव्यवस्था 19:18 पर आधारित एक ठोस वास्तविकता को उसके साथ जोड़ा। "और उसी के समान यह दूसरी भी है," उसने कहा, "कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख (मत्ती 22:39)। प्रकृति और विस्तार में, सार्वभौमिक और व्यक्तिगत रूप में इसे लागू करने में, दूसरी महान आज्ञा पहली से विकसित होती है। परमेश्वर के प्रति कर्तव्य और मनुष्य के प्रति कर्तव्य - दोनों को प्रेम शब्द में अभिव्यक्त किया गया है।

ii. पुराने नियम के पवित्रशास्त्र की दो महान मूल बातें (22:40)

यीशु ने आगे कहा, "ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है।" ये दो आज्ञाएँ बुनियादी थीं, जो जीवन के सभी रिश्तों को छूती थीं। व्यवस्था के उपदेश और भविष्यद्वक्ताओं का उपदेश, दो बुनियादी बातों की व्याख्या मात्र थे। व्यवस्था के शिक्षकों और परंपरा के आविष्कारकों की उबाऊ किताबों को किनारे किया जा सकता है। परमेश्वर की व्यवस्था को समझने के लिए व्यवस्थापकों की ज़रूरत नहीं है। केवल प्रेम की ज़रूरत है। हर कोई प्रेम की व्यवस्था को समझता है।

(2) मसीह के विषय में प्रभु के प्रश्न (22:41-45)

(a) मसीहा की वंशावली से संबंधित प्रश्न (22:41-42)

i. पूछा गया प्रश्न (22:41-42a)

प्रभु ने उन कट्टर धार्मिक अगुवों का मुँह बंद कर दिया था। लेकिन अचानक आई उस शांति में उसने एक प्रश्न पूछा। यह मुख्य रूप से फरीसियों को संबोधित करते हुए एक सवाल था, जो मसीह होने के उसके दावों पर हमला करने में सबसे आगे थे। उसने शायद उनके धर्मशास्त्र में से सबसे परिचित विषय उठाया: मसीहा की वंशावली। "मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो?" उसने कहा। "वह किस का सन्तान है?" (22:42)

किसी भी कलीसिया, संप्रदाय, पंथ या धर्म का उस प्रश्न का उत्तर उस समूह को प्रकट कर देगा कि वह क्या है। यह प्रश्न सत्य की कसौटी है। यदि वह समूह मसीह के व्यक्तित्व के बारे में गलत है, तो उनकी शिक्षा झूठी है।

ii. प्रश्न का उत्तर दिया गया (22:42b)

फरीसियों के पास एक तैयार जवाब था: "दाऊद का।"[32] इसी तरह भीड़ ने प्रभु के विजयी प्रवेश के दौरान उसका स्वागत किया था। और मंदिर में बच्चों ने उसे दाऊद की संतान कहकर जयजयकार की थी। प्रभु ने अब उन फरीसियों को पूरी तरह से घेर लिया था।

लेकिन वे यह देखने में इतने अंधे थे कि अभी उनसे सवाल करने वाला वही व्यक्ति दाऊद की संतान था। अगर वे उस उपाधि को यीशु से जोड़ने से कतराते, तो वे उसके परमेश्वर के पुत्र होने के दावे पर कैसी प्रतिक्रिया देते?

(b) मसीहा की प्राथमिकता के बारे में सवाल (22:43-45)

i. आशय - प्रभु के पूर्वजों ने मसीह के परमेश्वरत्व को स्वीकार किया (22:43-44)

फरीसियों का उत्तर सही था, लेकिन अपर्याप्त था। मसीहा दाऊद की संतान से कहीं बढ़कर था। प्रभु के पास मसीहा के मानवीय वंश के बारे में उनका जवाब था; अब उन्हें अपने मसीहा के ईश्वरीय वंश के बारे में सच्चाई बतानी थी। यीशु ने फरीसियों को भजन 110:1 का संदर्भ दिया। वे सहज रूप से भजन 110 को दाऊद और मसीहा से संबंधित मानते थे। इसलिए उसने कहा, "तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है? कि प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे न कर दूं।"[33]

ii. लागू करना - प्रभु के विरोधियों ने मसीह के ईश्वरत्व का सामना किया (22:45)

किसी ने भी इस तथ्य को चुनौती नहीं दी कि मसीहा को दाऊद की संतान होना था। और मसीह के दिनों में कोई भी इस तथ्य को चुनौती नहीं दे सकता था कि दाऊद ने ईश्वरीय प्रेरणा से बोलते हुए मसीह को "प्रभु" कहा था। फिर भी कोई भी व्यक्ति अपने पुत्र को "प्रभु" नहीं पुकारता, इसलिए यहाँ एक विरोधाभास प्रतीत होता है। मसीहा को दाऊद की संतान और दाऊद का प्रभु दोनों ही होना था। इसका स्पष्टीकरण मसीह के परमेश्वरत्व में निहित है। फरीसी बिल्कुल चुप थे।

3. योजना विफल हुई (22:46)

"उसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका; परन्तु उस दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का हियाव न हुआ॥" फरीसियों ने यीशु को दाऊद की संतान और परमेश्वर के पुत्र के रूप में तिरस्कार कर दिया था। वे उसके शत्रु बन गए थे और अब वे उस दिन का इंतजार कर रहे हैं जब वे उसके चरणों की चौकी बनेंगे।

घ. शाप (23:1-39)

यीशु अभी भी मंदिर के प्रांगण में था, और उसके चेले उसके चारों ओर इकट्ठे थे, साथ ही उनके सामने एक भीड़ फैली हुई थी, और उनके साथ इस्राएल के राष्ट्रीय अगुवे भी शामिल थे। अगुवे अभी भी प्रभु द्वारा इतने प्रभावी ढंग से चुप कराए जाने से दुखी थे। पहले से ही क्रोधित, वे उससे छुटकारा पाने के लिए कोई भी कीमत चुकाने को तैयार थे। अब उनके पाखंड के प्रति उसकी तीखी फटकार ने उसके मृत्यु के अधिपत्र पर हस्ताक्षर कर दिए थे।

मत्ती 23 में प्रभु ने रब्बानी यहूदी धर्म को और विस्तृत रूप से सभी झूठे धर्मों को सिरे से नकार दिया। यहूदी धर्म के अगुवों पर उनके द्वारा की गई हाय की घोषणा के बाद उसने यरूशलेम को अस्वीकार कर दिया।

1. प्रभु द्वारा यहूदी धर्म को अस्वीकार करना (23:1-36)

क. सम्मान का स्थान (23:1-3)

सम्मान का पद शास्त्रियों और फरीसियों के पास था। शास्त्री व्यवस्था के व्याख्याकार थे। एक आदेश के रूप में, वे एज्रा के दिनों में स्वाभाविक तरीके से उभरे थे। बेबीलोन की बंधुवाई से लौटे हुए लोगों को अपने

इब्रानी शास्त्रों की व्याख्या करने की सख्त जरूरत थी, खासकर जब अधिकांश विदेशी भूमि से लौटे हुए लोग अब इब्रानी भाषा नहीं समझते थे। एज्रा और उनके सहयोगियों ने इस जरूरत को पूरा किया (नहेमायाह 8:1-8) और उस विनम्र शुरुआत से, शास्त्रियों के क्रम का विकास हुआ। हालांकि, समय बीतने के साथ, उनकी व्याख्याएं सत्य और त्रुटि के एक विशाल मिश्रण में विकसित होती गई, जिसे तल्मूड के रूप में जाना जाता है।[34] नए नियम में हम कभी भी याजकों को शिक्षक के रूप में कार्य करते हुए नहीं देखते हैं, क्योंकि उनके शिक्षण कार्य को पूरी तरह से शास्त्रियों ने अपने हाथ में ले लिया था।

मत्ती 23:2 में शास्त्री स्पष्ट रूप से फरीसी संप्रदाय से संबंधित थे क्योंकि प्रभु ने उन्हें फरीसियों के साथ जोड़ा था। यीशु ने कहा, "शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं।" कैम्पबेल मॉर्गन ने इस कथन को इस तरह से फिर से लिखा: "शास्त्री और फरीसियों ने अपने आप को मूसा की गद्दी पर बैठा दिया हैं।"[35] वे बैठ गए और झूठा दावा किया कि वे 'एक्स कैथेड्रा' (23:2 में "गद्दी" के लिए अनुवादित मूल यूनानी शब्द कैथेड्रा है) की बातें बोल रहे हैं। लैवीय या याजक की बुलाहट के लिए ईश्वरीय मंजूरी थी, लेकिन शास्त्री की बुलाहट के लिए ऐसा कोई प्रत्यक्ष ईश्वरीय आदेश नहीं था।

जहाँ तक शास्त्रियों ने मूसा की व्यवस्था में से जो कुछ भी सिखाया या आदेश दिया, उनका सम्मान किया जाना चाहिए और उनका पालन भी किया जाना चाहिए। वे एक समय में उस व्यवस्था के सच्चे व्याख्याकार थे, लेकिन कई वर्षों के दौरान उन्होंने व्यवस्था में बहुत सारी व्यर्थ परंपराएँ, व्याख्याएँ, टाल-मटोल, निषेधाज्ञाएँ और गलत अनुवाद जोड़ दी थीं। अन्य कई स्थानों पर (उदाहरण के लिए 16:11-12) प्रभु ने उनकी गलतियों के विरूद्ध चेतावनी दी थी और उसने सब्त और अनुष्ठानिक स्नान से संबंधित बाइबल से बाहर की परंपराओं को अनदेखा करके एक उदाहरण स्थापित किया।

अब उसने अपने श्रोताओं को न केवल परमेश्वर के वचन और मनुष्य की परंपराओं के बीच की रेखा खींचने के लिए चेतावनी दी, बल्कि शास्त्रियों और फरीसियों के पाखंड से भी बचने के लिए कहा। "वे कहते तो हैं, पर करते नहीं," उसने समझाया (23:3)। किसी को भी इतना मूर्ख नहीं होना चाहिए कि उनके उदाहरण का अनुसरण करे। और यद्यपि उनके पास सम्मान का पद था, फिर भी किसी को इतना अंधा नहीं होना चाहिए कि उनकी शिक्षाओं को बिना परखे स्वीकार कर ले, और परमेश्वर के वचन में उनके द्वारा जोड़ी गई दस हजार बातों को निगल जाए।

ख. पाखंड का अभ्यास (23:4-36)

प्रभु ने उन धार्मिक अगुवों के पाखंड का पर्दाफाश करते हुए उस चेतावनी को विस्तार से बताया। उनकी भर्त्सना करते हुए वे सभी धार्मिक पाखंड और धर्म में खाली बाहरी रूप की निरर्थकता को भी उजागर कर रहा था। हमें पाखंडी होने के प्रति सावधान रहना चाहिए, क्योंकि उसकी नज़र हमारे जीवन के सभी छोटे से छोटे मुखौटे को भी भेद सकती है।

(1) अगुवे किसकी तलाश में थे (23:4-12)

(a) मनुष्यों का अनुपालन (23:4)

"वे एक ऐसे भारी बोझ को जिन को उठाना कठिन है, बान्धकर उन्हें मनुष्यों के कन्धों पर रखते हैं।" उदाहरण के लिए, रब्बियों ने सब्त को विश्राम के दिन से बदलकर अनगिनत थका देने वाले नियमों के पालन करने में बदल दिया था।[36]

शास्त्रियों के अनुसार एक सामान्य सब्त-दिन की यात्रा दो हज़ार क्यूबिट (लगभग एक हज़ार गज) तक सीमित थी; हालाँकि, शुक्रवार को एक व्यक्ति उस दूरी की सीमा पर दो बार के भोजन के लिए पर्याप्त खाना रख सकता था, इस प्रकार सैद्धांतिक रूप से अपने घर को इतना आगे बढ़ा सकता था कि शनिवार को वह दो हज़ार क्यूबिट तक और चल सकता था। सब्त के दिन एक दर्जी को अपनी सुई के साथ बाहर जाने की अनुमति नहीं थी; न ही एक कलम के साथ बाहर जाने की अनुमति थी। किसी भी सामग्री को घोल में तब तक नहीं मिलाया जा सकता था जब तक कि वह सब्त से पहले पूरी तरह से घुल न जाए। ऊन को तब तक रंगा नहीं जाना चाहिए जब तक कि सब्त से पहले पूरी प्रक्रिया पूरी न हो जाए। रब्बियों ने इस बात पर बहस की कि अगर सब्त के दिन मोमबत्ती को बुझाने से उसकी लौ से दूसरी मोमबत्ती जल जाए तो एक व्यक्ति को कितना अपराध बोध होना चाहिए। एक रब्बी ने सब्त के दिन एक व्यक्ति को अपने ऊपर गर्म पानी डालने से इसलिए मना किया था, क्योंकि ऐसा करने से फर्श की सफाई हो सकती थी। एक व्यक्ति सब्त के दिन कुर्सी नहीं खींच सकता था क्योंकि ऐसा करने से जमीन में गड्ढे बन सकते थे। सब्त के दिन एक महिला को आईने में देखने की अनुमति नहीं थी क्योंकि वह अपने सफ़ेद बाल को देखकर उसे उखाड़ सकती थी, जो कि एक प्रकार का काम होता। इसी तरह एक व्यक्ति सब्त के दिन नकली दांत नहीं लगा सकता था। सब्त के दिन गाँठ बाँधना, गाँठ खोलना, दो टाँके लगाना, दो बीज बोना, घास का एक पत्ता तोड़ना या फल का एक टुकड़ा चुनना काम माना जाता था। सब्त के दिन वर्णमाला के दो अक्षर लिखना या एक को दूसरे में बदलना पाप माना जाता था, लेकिन दो छोटे अक्षरों के स्थान पर एक बड़ा अक्षर लिखना पाप नहीं था। पेड़ पर चढ़ना या ताली बजाना सब्त के दिन का उल्लंघन करना था।

रब्बियों ने ऐसे मुद्दों पर अंतहीन बहस की। एडर्सहेम के अनुसार, बेबीलोनीय तल्मूड के चौबीस अध्याय (156 दोहरे पृष्ठ) सब्त के कानूनों के लिए समर्पित हैं। उन्होंने लिखा, "ऐसे मामलों पर गंभीरता से चर्चा की जाती है जो अत्यंत धार्मिक महत्व के हैं, जिनके बारे में शायद ही कोई सोच सकता है कि कोई समझदार बुद्धि वाला व्यक्ति गंभीरता से विचार करेगा।"[37] प्रभु की फटकार को स्वीकार करने की बजाय, शास्त्री और रब्बी सदियों तक इन असहनीय बोझ को बढ़ाते ही रहे हैं।

(b) मनुष्यों की प्रशंसा (23:5)

यीशु ने उन धार्मिक अगुवों के विषय में कहा, "वे अपने ताबीजों को चौड़े करते, और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते हैं।" ताबीज छोटे, चौकोर, चमड़े से ढके हुए डिब्बे होते थे जिनमें चर्मपत्र के छोटे-छोटे ताम्र-पत्र (स्क्रॉल) होते थे जिन पर निर्गमन 13:1-10,11-16 और व्यवस्थाविवरण 6:4-9; 11:13-21 के पाठ लिखे होते थे। उन्हें माथे पर लंबी चमड़े की पट्टियों से बांधा जाता था और हृदय के पास बाएं हाथ पर भी पहना जाता था। समय के साथ, तावीज़ों के प्रति अंधविश्वासीय श्रद्धा जुड़ गई और उन्हें जादुई टीका माना जाने लगा। भक्त यहूदियों के वस्त्रों के कोर पर बांधे जाने वाले झालर (गिनती 15:37-41; व्यवस्थाविवरण 22:12), सफेद और नीले धागों से बने होते थे और व्यवस्था के 613 उपदेशों का प्रतिनिधित्व करने लगे।

मूसा के आदेश के अनुसार व्यवस्था के अनुच्छेदों को पहना जाना चाहिए, जिसका मूल उद्देश्य यहूदियों को परमेश्वर के उन पर दावों की याद दिलाना था; झालरों का उद्देश्य उन्हें दुनिया से उनके अलगाव की याद दिलाना था। अब ताबीज और झालरें धर्म के दिखावटी बाहरी सामग्रियाँ बन गए थे। फरीसी उन्हें "लोगों को दिखाने के लिए" पहनते थे, ताकि लोगों को उनकी श्रेष्ठ धर्मनिष्ठता से प्रभावित किया जा सके।

(c) मनुष्य के सामने सम्मान (23:6)

धार्मिक अगुवे भोज में सबसे अच्छी जगह और सभास्थलों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान पसंद करते थे। सम्मान पाने की इस चाहत में वे अकेले नहीं हैं। आज भी ऐसे लोग हैं जो पद, सामर्थ और वरीयताओं के कारण बड़ी कलीसियाओं के पास्टर बनना चाहते हैं। ऐसे लोग भी हैं जो उन्हीं कारणों से डीकन (सेवक) या एल्डर (प्राचीन) बनना चाहते हैं। मसीही कार्य के सभी क्षेत्रों में पदोन्नति और पद के लिए अक्सर तीव्र प्रतिस्पर्धा होती है।

(d) मनुष्यों की चापलूसी (23:7-12)

i. प्रभु द्वारा वर्णित अगुवों का सांसारिक लक्ष्य (23:7)

शास्त्री और फरीसी चाहते थे कि सब उन्हें रब्बी, पिता और गुरु (अगुवा) कहकर अभिवादन करें। उन्हें बाज़ार में ऐसी उपाधियों से अभिवादन किया जाना, सार्वजनिक रूप से पहचाना जाना, और उन्हें उनके मनचाहे स्थान पर बैठाया जाना काफी पसंद था।

ii. अगुवों के इस सांसारिक लक्ष्य को प्रभु द्वारा खारिज किया जाना (23:8-12)

हम कल्पना कर सकते हैं कि पृष्ठभूमि में खड़े ये लोग प्रभु की फटकार के प्रहार के नीचे कैसे सिकुड़ गए होंगे। मंदिर के प्रांगण में हर कोई उन्हें देखता होगा, सामान्य चापलूसी वाले सम्मान के साथ नहीं, बल्कि उनके दिखावटी दिखावे के लिए अचानक आँखें खोलकर उन्हें निहारते होंगे। जब प्रभु ने अपने चेलों को यह सिखाते हुए कि परमेश्वर की सेवा कैसे न करें, शास्त्रियों और फरीसियों को वस्तु पाठ के रूप में इस्तेमाल किया, तो वे अंदर से कैसे उबल पड़े होंगे। उसने आगे कहा, "और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात् मसीह" (23:10)।

हमें खुद को विश्वास और नैतिकता के मामलों पर अंतिम अधिकार के रूप में खुद को स्वामी के रूप में स्थापित करने का कोई अधिकार नहीं है। हमारे पास किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन के व्यवहार को निर्देशित करने या उसके और मसीह के बीच हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। उसे सीधे मसीह के पास जाना चाहिए, क्योंकि हम रीति या किसी अन्य तरीके से उसकी आत्मा को आत्मिक जीवन प्रदान करने में सक्षम नहीं हैं।

(2) अगुवों ने क्या सिखाया (23:13-22)

जिस तरह राजा की सार्वजनिक सेवकाई आठ आशीर्वचनों (मत्ती 5:1-12) के साथ शुरू हुई थी, उसी तरह यह उस राष्ट्र पर आठ शापों के साथ समाप्त हुई जिसने उसे अस्वीकार कर दिया था। हमें केवल मत्ती 23 में दिए गए आठ भर्त्सनाओं पर नज़र डालने की ज़रूरत है ताकि यह देखा जा सके कि इस्राएल के प्रति उसकी नाराजगी कितनी प्रचंड थी। उसने उन धार्मिक अगुवों को "कपटी", "मूर्ख और अंधे", "चूना फिरी

हुई कब्रें" और "साँपों के बच्चों" कहा। प्रभु ने उनसे किसी व्यक्तिगत प्रतिशोध से बात नहीं की - एक पल में वह उनके लिए रोने वाला था। वह केवल ऐसे लोगों की स्थिति का सारांश दे रहा था जो उस एक मसीहा को अस्वीकार कर रहे थे और ऐसे लोग अपने कर्मों का अनिवार्य फल भुगतने वाले थे।

(a) उनके उपदेश का पाखण्ड (23:13)

प्रभु ने उनके उपदेश के पाखंड की निंदा की। उन्होंने स्वर्ग के राज्य को अवरुद्ध करके और बंद करके लोगों को उस मसीहा को स्वीकार करने से रोका। उन अगुवों में खुद उसमें प्रवेश करने का कोई इरादा नहीं था और उन्होंने किसी अन्य को अंदर जाने से रोकने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी। जब पिन्तेकुस्त का दिन आया और कलीसिया का जन्म हुआ, तो उन्होंने प्रेरितों के कदमों के निशान का पीछा करके "स्वर्ग के राज्य के द्वार को बंद करना" जारी रखा। यहूदी धर्म के अगुवों ने सुसमाचार का विरोध किया, दंगे भड़काए, मसीह के पुनरुत्थान को नकार दिया और इसे घोषित करने वालों की कड़ी निंदा की।

(b) उनकी प्रार्थनाओं का पाखण्ड (23:14)

प्रभु ने कहा: "हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम विधवाओं के घरों को खा जाते हो, और दिखावे के लिए बहुत देर तक प्रार्थना करते हो।" प्रार्थना को उसकी लंबाई से नहीं बल्कि उसकी गहराई से मापा जाता है। विधवाएँ और अनाथ उन लोगों की दया और सुरक्षा के हकदार होते हैं जो परमेश्वर से प्रेम करने का दावा करते हैं, लेकिन (ऐसे तरीकों से जो नहीं बताए गए हैं) उन धार्मिक अगुवों ने उनके साथ दयालुता से पेश आने के परमेश्वर के आदेशों के बावजूद (व्यवस्थाविवरण 10:18; 27:19; भजन 68:5) इन विधवाओं की कमज़ोरी का फायदा उठाया।

लूका के सुसमाचार में इस भर्त्सना के बाद विधवा के दान की कहानी आती है (लूका 20:47-21:4)। प्रभु को उन लोगों की प्रार्थनाओं से कोई मतलब नहीं था जो प्रार्थनाओं को अपनी दुष्टता और लालच को छिपाने के लिए एक आवरण के रूप में इस्तेमाल करते थे।

(c) उनके द्वारा परिवर्तित लोगों का पाखंड (23:15)

यहूदियों के पास परिवर्तित लोगों के दो वर्ग थे: (1) वे जो खतना किए हुए थे और जिन्हें "धार्मिकता के परिवर्तित लोग" कहा जाता था; और (2) वे जो अभी तक खतना नहीं किए हुए थे और जिन्हें "फाटक के परिवर्तित लोग" कहा जाता था। (परिवर्तित शब्द का मूल अर्थ है "यहाँ आना") यीशु ने कहा कि शास्त्री और फरीसी किसी को अपने मत में लाने के लिए "सारे जल और थल में फिरते है," या किसी भी हद तक जा सकते हैं। लेकिन इसका परिणाम क्या हुआ? उन्होंने उसे खुद से "दूना नारकीय बना" दिया। शाब्दिक अनुवाद में, वाक्यांश "गेहेना के संतान से दोगुना" है। अक्सर ऐसा होता है कि किसी धर्म में परिवर्तित व्यक्ति उस धर्म में जन्मे और पले-बढ़े लोगों से दोगुना उत्साही होता है। लेकिन जब कोई व्यक्ति किसी झूठी मान्यता की ओर फिर जाता है, तो यह एक दोहरी त्रासदी होती है।

प्रभु मनुष्यजाति के लिए इस्राएल के मिशन की भर्त्सना नहीं कर रहा था। सच्चे और जीवित परमेश्वर के बारे में संसार को गवाही देना इस्राएल की नियति थी; और सहस्राब्दी में इस्राएल का मिशन भी यही होगा। यीशु दरअसल यहाँ फरीसी, रब्बीनी यहूदी मत में आने वाले लोगों को फटकार लगा रहा था।

(d) उनके उपदेशों का पाखण्ड (23:16-22)

i. उनकी मूर्खता को प्रकट किया गया (23:16-19)

फिर प्रभु ने अगुवों के कृत्रिम मूल्यों पर अपने भर्त्सना को बरसाया। यदि कोई व्यक्ति मंदिर की शपथ लेता है, तो फरीसी कहते थे, "कुछ नहीं है" (23:16)। शपथ बाध्यकारी नहीं थी। लेकिन यदि वह मंदिर के सोने की शपथ लेता है, तो फरीसी कहते थे, "वह ऋणी है।" उसे अपनी शपथ निभानी होती थी। ऐसा माना जाता था कि यह एक धार्मिक शपथ थी। इसी तरह वेदी की शपथ लेने का कोई मतलब नहीं था, लेकिन वेदी पर बलिदान की शपथ लेने से यह बाध्यकारी हो जाता था। फरीसी शपथों को ऐसे मूर्खतापूर्ण और कृत्रिम भेदों के अनुसार वर्गीकृत करते थे। यदि कोई व्यक्ति किसी ऐसी वस्तु की शपथ लेता है जिसे पवित्र नहीं माना जाता है, तो उसे शपथ-भंग का दोषी नहीं माना जाता था यदि वह अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने में विफल रहता है।

ii. उनकी मूर्खता प्रकट हुई (23:20-22)

प्रभु ने उन धार्मिक अगुवों के उपदेशों की घोर मूर्खता को सबके सामने उजागर किया। मंदिर पवित्र था क्योंकि यह पृथ्वी पर परमेश्वर का निवास स्थान था। यही बात मंदिर में मौजूद हर चीज़ को पवित्र बनाती थी। सोने को जो भी पवित्रता प्राप्त थी, वह मंदिर से प्राप्त हुई थी और मंदिर के बिना वह कुछ भी नहीं था। इसी तरह वेदी ही बलिदान को पवित्र करती थी। फरीसियों ने सच्चाई को इतना तोड़-मरोड़ कर पेश किया था कि सब कुछ उल्टी दिशा में जा रहा था। यीशु ने बताया कि मंदिर या वेदी की शपथ खाना परमेश्वर की शपथ खाने के तुल्य है।

फरीसी और उनके जैसे लोगों ने पुष्टि की कि स्वर्ग की शपथ लेना भी किसी तरह से बाध्यकारी नहीं था। ऐसी सभी धारणाओं को आधिकारिक रूप से "निरर्थक" करार देते हुए, प्रभु ने कहा, "जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिहांसन की और उस पर बैठने वाले की भी शपथ खाता है" (23:22)।

इस तरह से सबसे सामने बात का खुलासा होने पर उन अगुवों को कितना गुस्सा आया होगा! अपने वायदे को पूरा करने से बचने के लिए किए गए उनके सभी बचकाने कामों ने उन्हें दोषी साबित कर दिया था। उनके द्वारा सावधानी से बुने गए उपदेशों में कई सारे छिद्र थे।

(3) धार्मिक अगुवों ने क्या किया (23:23-28)

(a) धर्म का दिखावा (23:23-24)

i. व्यवस्था के छोटे-मोटे मामलों को विकसित करना (23:23a)

आगे जारी रखते हुए, प्रभु ने उन धार्मिक अगुवों के दिखावे को व्यर्थ बताया। उसने दशमांश के मामले में शास्त्रियों और फरीसियों की बोझिल परंपराओं को निरर्थक बताया। जो हर्ष और कृतज्ञता से भरा एक हृदय होना चाहिए था, उसे उन्होंने एक कठिन काम बना दिया था।रब्बी के सूक्ष्म नियमों के अनुसार मिट्टी की सबसे छोटी उपज, जैसे पुदीना, सौंफ और जीरा, का भी दसवां हिस्सा देना पड़ता था। व्यवहार में दशमांश देने का मूसा का नियम अनाज, दाखरस, तेल और भेड़-बकरियों के पहलौठों तक विस्तृत था

(व्यवस्थाविवरण 14:23), लेकिन फरीसियों ने लैव्यव्यवस्था 27:30 का सहारा लिया और सख्ती से दशमांश देने के नियम को हर एक चीज पर लागू किया।

ii. व्यवस्था की प्रमुख बातों को महत्वहीन बनाना (23:23b-24)

क. उनके व्यवहार की गंभीरता (23:23b)

प्रभु ने दशमांश देने की व्यवस्था को कायम रखा, परन्तु व्यवस्था के बाहरी अनुपालन के लिए फरीसियों की संतुष्टि हेतु अपनी चिकित्सीय छुरी उठा ली। "व्यवस्था के गंभीर मामलों के बारे में क्या किया जाना चाहिए?" उसने प्रभावी रूप से पूछा। "न्याय, दया और विश्वास के बारे में क्या कहते हो?" प्रभु के शब्द मीका 6:8 की प्रतिध्वनि थी। व्यवस्था के नैतिक मुद्दों की उपेक्षा करते हुए दशमांश को लेकर ऐसा मुद्दा बनाना फरीसीवाद का सार था (और है)।

ख. उनके व्यवहार की मूर्खता (23:24)

प्रभु ने फरीसियों के छोटी-छोटी बातों के प्रति प्रेम का वर्णन बहुत ही स्पष्ट रूप से किया। उसने कहा, "हे अन्धे अगुवों, तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊंट को निगल जाते हो।" छोटी-छोटी बातों के प्रति इतनी सावधानी बरतना और बड़े मुद्दों के प्रति इतनी लापरवाही बरतना कितनी मूर्खतापूर्ण बात है!

(b) आदर का दिखावा (23:25-26)

अगुवों द्वारा दिए जाने वाले सम्मान का दिखावा भी व्यर्थ था। वे बाहरी तौर पर धर्म के सभी नियमों का पालन करते थे, जबकि भीतर से भ्रष्ट थे, वे उस व्यक्ति के समान थे जो कप के बाहर से तो धोता है, लेकिन अंदर से नहीं।। वे दिखावे के प्रति सावधान थे, लेकिन प्रभु ने, जिसने उनके हृदय को पढ़ लिया था, घोषित किया कि भीतर से वे "अन्धेर असंयम से भरे हुए थे" (23:25)। "हे अंधे फरीसी," यीशु ने आरोप पर जोर देने के लिए एकवचन का उपयोग करते हुए कहा (23:26)। किसी के रहस्यों का इस तरह स्पष्ट रूप से उजागर हो जाना कितना भयानक होता है!

(c) धार्मिकता का दिखावा (23:27-28)

अगुवों का धार्मिकता का दिखावा भी व्यर्थ था। प्रभु ने उनकी तुलना "चूना फिरी हुई कब्रों" से की (23:27)। वे बाहर से तो बहुत सुंदर दिखते थे, लेकिन अंदर " मुर्दों की हिड्डयों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं।" वास्तव में यीशु ने फरीसियों से कहा, "तुम बाहरी दिखावा तो अच्छा करते हो।" लेकिन उसे यह भी जोड़ना पड़ा, "परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो" (23:28)। बाहरी शुद्धता आंतरिक शुद्धता से ही आनी चाहिए। जब तक आंतरिक शुद्धता पहले नहीं आती, बाहरी औपचारिक शुद्धता का कोई मायने नहीं है।

एक पल के लिए उस दृश्य की फिर से कल्पना करें। वहाँ प्रभु हैं, जिनकी दयालु लेकिन खोजी नज़र उन घावों को देखने में सक्षम है जिन्हें शर्म छिपा सकती है। उसके द्वारा कहे गए हर वचन, ऐसा कहा जा सकता है कि उसके ताबूत में एक और कील ठोकने के तुल्य है। वह जानता है कि वह क्रूस की ओर अग्रसर हो रहा है।

वहाँ चेले भी हैं, जो राष्ट्र के सामर्थशाली धार्मिक अगुवों पर प्रभु के सीधे हमले से स्तब्ध हैं।

साथ ही, वहाँ बहुत से लोग भी मौजूद हैं। उन्होंने अगुवों के दिखावे के बारे में अस्पष्ट रूप से सोचा है, लेकिन कभी भी अपने विचारों को शब्दों में व्यक्त करने में सक्षम या इच्छुक नहीं रहे हैं। उनके पूरे जीवन के अनुभव में कभी किसी और ने पाखंड के बारे में इतनी संक्षिप्तता, स्पष्टता और साहस के साथ बात नहीं की थी।

और वहाँ शास्त्री और फरीसी अपने बढ़िया वस्त्र पहने हुए खड़े हैं। वे स्तब्ध, सदमे में हैं, और उनके दिल पर चोट लगी है, क्योंकि नासरत के उपदेशक ने उनका पूरी तरह से पर्दाफाश कर दिया है। क्या वे पश्चाताप करेंगे? नहीं। प्रतिशोध उनकी पुकार है। सप्ताह समाप्त होने से पहले ही वे उस व्यक्ति को, जो स्वयं को उनका राजा होने का दावा करता है, मरवाकर कब्र में रखवा देने वाले थे।

(4) अगुवों ने क्या सोचा (23:29-36)

(a) उनकी मूर्खतापूर्ण गलती (23:29-31)

यरूशलेम में कब्रें कभी-कभी पहाड़ियों या चट्टानों के किनारों पर चट्टानों से खोदकर बनाई जाती थीं। ऐसी कब्रों के प्रवेश द्वार अक्सर सजाए जाते थे, लेकिन भूतकाल के भविष्यद्वक्ताओं की कब्रों को सजाकर उनका सम्मान करने का क्या फायदा था? किसी भविष्यद्वक्ता का सम्मान करने का एकमात्र वास्तविक तरीका उसकी आज्ञा का पालन करना था।

23:29 में हम एक और फटकार को देखते हैं, यह भर्त्सना उन लोगों के लिए था जिन्होंने भविष्यद्वक्ताओं की कब्रों पर सोना तो मढ़ा लेकिन जिन लोगों ने उन भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला था उनके प्रति हठ और अविश्वास के साथ अपनी सहमति में सिर हिलाया था। यह केवल राष्ट्रीय गौरव था, न कि पश्चाताप, जिसने शास्त्रियों और फरीसियों को "कब्रों को सजाने" के लिए प्रेरित किया। उनके मन उसी अहंकार, विद्रोह, अविश्वास और घृणा से भरे हुए थे, जिसने उनके पूर्वजों को अतीत में भविष्यद्वक्ताओं और धर्मी लोगों को सताने और शहीद करने के लिए प्रेरित किया था। यीशु के दिनों के अगुवे भविष्यद्वक्ताओं के आत्मिक उत्तराधिकारी नहीं थे, जिनकी कब्रें राष्ट्रीय तीर्थस्थल बन गई थीं, बल्कि उनके हत्यारों के उत्तराधिकारी थे। शास्त्री और फरीसी भविष्यद्वक्ताओं के साथ नहीं, बल्कि उन्हें मारने वालों के साथ संगति में थे। वही उग्र घृणा जिसने शास्त्रियों और फरीसियों के पूर्वजों को भविष्यद्वक्ताओं को मारने के लिए प्रेरित किया था, अब उन्हें मसीह की हत्या करने के लिए प्रेरित कर रही थी।

फिर भी उन कपटी अगुवों ने कहा, "यदि हम अपने बाप-दादों के दिनों में होते तो भविष्यद्वक्ताओं की हत्या में उन के साझी न होते" (23:30)। यही उनकी मूर्खतापूर्ण गलती थी! शास्त्री और फरीसी जल्द ही अपने हाथों को उनसे भी उत्तम लहू से लाल रंग में रंगने वाले थे। उनके पूर्वजों ने परमेश्वर के भक्तों को शहीद किया था; वे परमेश्वर के पुत्र की हत्या करने वाले थे।

(b) उनका पूरा माप (23:32-36)

i. प्रभु ने उनका वर्णन कैसे किया (23:32-33a)

प्रभु ने उनके अपराध की पूरी सीमा का वर्णन किया। उसने शास्त्रियों और फरीसियों को "सांप" और "करैतों की संतान" कहा (23:33)। वे वास्तव में एक विषैली नस्ल थे, उस पुराने सर्प अर्थात् शैतान की वास्तविक

संतान थे (यूहन्ना 8:44)। उनके चरित्र का क्या ही सटीक मूल्यांकन था! याद रखें, ये उस समय के धार्मिक अगुवे थे, जो लोगों के बीच धर्मनिष्ठा के लिए जाने जाते थे और विश्वास और नैतिकता के मानदंड निर्धारित करते थे। वे कैन के आत्मिक वंशज थे, जिसने सच्चे विश्वास के पहले शहीद हाबिल की हत्या की थी।

ii. प्रभु ने उन्हें कैसे धिक्कारा (23:33b-35)

क. वे नरक के लिए नियुक्त थे (23:33b)

प्रभु ने उनसे पूछा, "तुम नरक [गेहेन्ना] के दण्ड से क्योंकर बचोगे?" ध्यान दें कि उसने यह नहीं कहा कि कोई बचाव नहीं है। बचने का एक रास्ता था, लेकिन उन्होंने यीशु के लहू के द्वारा पवित्रतम स्थान में जाने के उस नए और जीवित मार्ग का तिरस्कार कर रहे थे (इब्रानियों 10:19-20)। किसी भी मत के फरीसी के लिए परमेश्वर के अनुग्रह के माध्यम को स्वीकार करना कितना दुर्लभ है! प्रभु उन लोगों से बात कर रहा था जिन्होंने उद्धार की शर्तों को अस्वीकार कर दिया था। महान श्वेत सिंहासन का न्याय और अनन्त आग की लपटें उनके जैसे पश्चाताप-हीन व्यवहार का अनिवार्य अंत हैं।

ख. वे नरक के योग्य थे (23:34-35)

1. उनकी भयानक गतिविधियाँ प्रकट की गई (23:34)

यीशु ने कहा था, "अतः तुम अपने बाप-दादों के पाप का घड़ा भर दो" (23:32)। और वास्तव में शास्त्री और फरीसी अपने पूर्वजों का पैमाना भरने वाले थे। प्रभु उनके पास भविष्यद्वक्ताओं को भेजेगा, क्योंकि प्रेरित दरअसल वही थे। नये युग के उद्घाटन, कलीसिया के परिचय, तथा नये नियम के लेखन के लिए पिन्तेकुस्त के बाद इस्राएल में भविष्यद्वाणी के वरदान को पुनर्जीवित किया गया।

प्रभु स्तिफनुस और फिलिप्पुस जैसे बुद्धिमान लोगों को भेजेगा जो सुसमाचार प्रचारक थे (प्रेरितों 6:3-5; 7:1-60)। ऐसे लोग बुद्धि और पवित्र आत्मा से भरे हुए होंगे। इन बुद्धिमान लोगों के सामने, तरसुस के शाऊल जैसा बुद्धिमान फरीसी भी टिक नहीं पाएगा।

प्रभु शास्त्रियों की एक नई शाखा भेजेगा, जो प्रेम के नियमों और स्वर्ग के राज्य के सभी रहस्यों की शिक्षा देने वाले व्याख्याकार होंगे (मत्ती 13:52)।

फरीसी इन भविष्यद्वक्ताओं, बुद्धिमान लोगों और व्याख्याकारों के साथ वैसा ही व्यवहार करने वाले थे जैसा उनके पूर्वजों ने अपने समय में परमेश्वर के दूतों के साथ किया था। अगुवे उन्हें शहर-शहर खदेड़ेंगे और कुछ को मार डालेंगे, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक गवाही देती है।[38]

2. उनकी भयानक जवाबदेही का खुलासा (23:35)

यहाँ पर हमारे पास परिणाम का कथन है: "जिस से धर्मी हाबिल से लेकर बिरिक्याह के पुत्र जकर्याह तक, जिसे तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला था, जितने धर्मियों का लहू पृथ्वी पर बहाया गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर पड़ेगा।"

यहाँ "जकर्याह" कौन था, इस बारे में राय अलग-अलग हैं। एक असमर्थित दृष्टिकोण यह है कि वह यूहन्ना बपतिस्मादाता का पिता था। दूसरा दृष्टिकोण यह है कि वह भविष्यद्वक्ता जकर्याह था, जो बिरिक्याह का

पुत्र था (जकर्याह 1:1); यह जकर्याह पुराने नियम के अंतिम भविष्यद्वक्ताओं में से एक था, लेकिन पुराने नियम में ऐसा कुछ नहीं कहा गया है जिससे यह संकेत मिले कि वह शहीद हुआ था।

सबसे संभावित दृष्टिकोण यह है कि मत्ती 23:35 में शहीद हुआ व्यक्ति जकर्याह था, जो परमेश्वर के याजक यहोयादा का पुत्र था। यहोयादा वह व्यक्ति था जिसने शिशु योआश को अतल्याह की जानलेवा नफरत से छुपाया और अंततः युवा राजकुमार को दाऊद के सिंहासन पर बिठाया। किसी व्यक्ति के दो नाम होना बिल्कुल भी असामान्य बात नहीं थी, इसलिए ऐसी संभावना है कि जकर्याह के पिता यहोयादा के दो नाम थे, उनमें से एक बिरिक्याह था।

जकर्याह द्वारा राजा की मूर्तिपूजा में गलती करने के कारण फटकारे जाने के बाद योआश ने यहोयादा की दयालुता का बदला उसके बेटे की हत्या करके चुकाया। जब जकर्याह मर रहा था, तो उसने कहा, "यहोवा इस पर [उसकी शहादत] दृष्टि कर के इसका लेखा ले" (2 इतिहास 24:22)। इस प्रकार उसका लहू भी भूमि पर से बदला लेने के लिए चिल्ला उठा, जैसा कि हाबिल के लहू ने किया था। एडर्सहेम द्वारा दर्ज एक यहूदी मान्यता के अनुसार, जकर्याह का लहू सूखा नहीं था, बल्कि ढाई शताब्दियों तक फुटपाथ पर उबलता रहा जब तक कि बेबीलोन के लोग नहीं आए और इसका बदला नहीं लिया गया।[39]

जकर्याह को याजकों के आँगन में खुले स्थान पर मारा गया था, जो मंदिर के पवित्र स्थान और बलिदान की बड़ी पीतल की वेदी के बीच का हिस्सा था। यह तथ्य कि परमेश्वर के दासों में से एक की हत्या ऐसे पवित्र स्थान पर की गई थी, अपराध को और भी गंभीर बना देता है। चूँकि यहूदियों ने इतिहास की पुस्तक को अपने धर्मग्रंथ के अंत में रखा था, इसलिए यहूदी पवित्रशास्त्र में हाबिल पहला शहीद था और जकर्याह अंतिम था; इस प्रकार पुस्तकों के क्रम ने प्रभु के वचनों को और भी अधिक महत्वपूर्ण बना दिया।

प्रभु अपने समय के हठी और मन न फिराने वाले लोगों से जो कह रहा था, वह वास्तव में काफी गंभीर था। वह उनसे कह रहा था कि यदि परमेश्वर पुराने नियम के समय में बहाए गए सभी निर्दोष लहू को उनके सिर पर डाल दे, यदि परमेश्वर उन्हें पुराने समय की सभी हत्याओं और नरसंहारों के लिए जवाबदेह ठहराए, तो भी वे अब की तुलना में कम दोषी होंगे, क्योंकि वे परमेश्वर के प्रिय पुत्र का लहू बहाने वाले थे।

iii. प्रभु ने उन्हें कैसे दंडित किया (23:36)

यीशु ने आगे कहा, "ये सब बातें इस समय के लोगों पर आ पड़ेंगी।" "इस समय के लोगों" के भाव पर ध्यान दीजिये, क्योंकि हम इसे 24:34 में फिर से पाएँगे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह एक वास्तविक पीढ़ी को संदर्भित करता है। 23:37-39 में प्रभु ने यरूशलेम के आने वाले न्याय और पतन का वर्णन किया, जो कि ईस्वी 70 में हुआ था, जो कि उन लोगों के जीवनकाल में ही हुआ था जिन्होंने उसे 23:36 में दर्ज वचनों को कहते हुए सुना था। उनकी पीढ़ी ही "इन सब बातों" को घटित होते हुए देखेगी।

"पीढ़ी" शब्द कुछ हद तक लचीला है। हम यह ठीक से नहीं बता सकते कि एक पीढ़ी कब शुरू होती है या कब खत्म होती है। इसे आम तौर पर तीस या चालीस साल की अवधि के रूप में माना जाता है। 23:36 के संदर्भ में एक पीढ़ी सौ साल तक चल सकती है। प्रभु ने ईस्वी 33 के आसपास न्याय के ये शब्द कहे थे, और यहूदी राष्ट्रीय जीवन का अंतिम विघटन ईस्वी 135 में 'बार-कोखबा' विद्रोह के समय तक नहीं हुआ था।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि यरूशलेम के विनाश को चिह्नित करने वाले भयानक संघर्षों में, एक और "जकर्याह" शहीद हुआ था। उसे बारूक का पुत्र जकर्याह कहा जाता था और उसे मंदिर में उग्रपंथियों (जेलोतेस) द्वारा मार डाला गया था।[40]

2. प्रभु द्वारा यरूशलेम का तिरस्कार किया जाना (23:37-39)

क. उसके तिरस्कार का वर्णन (23:37)

यरूशलेम ने अपने राजा को अस्वीकार कर दिया था। दाऊद के बाद से एक हज़ार साल तक, इस्राएल की आशा महान दाऊद के महान पुत्र के आने पर केंद्रित थी। और वह आ चुका था। यरूशलेम के लोग, उल्लास की लहर में, होशन्ना चिल्ला रहे थे, परन्तु वह जानता था कि भीड़ की क्षणिक प्रशंसा पर भरोसा करना ठीक नहीं है। एक या दो दिन के भीतर वही नासमझ भीड़ उसकी मृत्यु की माँग करते हुए चिल्लाने लगेगी।

अब राजा ने यरूशलेम को अस्वीकार कर दिया। उसने उसके आने वाले अनिवार्य विनाश पर शोक व्यक्त किया: "हे यरूशलेम, हे यरूशलेम; तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पत्थरवाह करता है, कितनी ही बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे कर लूं, परन्तु तुम ने न चाहा!" यही मूल समस्या थी: "परन्तु तुम ने न चाहा।"

ख. इसके विनाश की घोषणा (23:38)

प्रभु अपनी मन की आँखों से आने वाली घेराबंदी को देख सकता था। वह शहर के चारों ओर की पहाड़ियों को क्रूस से काला होते हुए देख सकता था और हर क्रूस पर एक यहूदी को टंगे हुए देख सकता था। और इस दृश्य ने उसका दिल तोड़ दिया।

यरूशलेम की घेराबंदी इतिहास की सबसे भयानक घेराबंदियों में से एक थी। रोमी सैनिकों ने सबसे पहले भयंकर युद्धों की एक श्रृंखला में गलील को व्यवस्थित रूप से अपने अधीन कर लिया, कई बार तो शहर के सभी निवासियों का नरसंहार कर दिया गया, खासकर तब जब उस शहर के लोगों ने विशेष रूप से अपने बचाव के कठोर कदम उठाए हो।। इस बीच यरूशलेम में, एक आम अगुवे के नेतृत्व में एकजुट होकर आगामी घेराबंदी की तैयारी करने के बजाय, विभिन्न गुटों ने एक-दूसरे के साथ क्रूरतापूर्वक लड़ाई लड़ी।।

एक गुट का नेतृत्व गिस्चला के उग्र यूहन्ना ने किया, जबकि दूसरे गुट का नेतृत्व अधिक उदारवादी अननस द्वारा किया गया था, जो मुख्य याजकों में सबसे बड़ा था। गिस्चला के यूहन्ना का जेलोतेस के गुट में स्वागत किया गया, जिनका नेतृत्व एलीएज़र कर रहा था और जिन्हें अधिक कानून का पालन करने वाले नागरिकों द्वारा मंदिर में धकेल दिया गया था। यूहन्ना ने जेलोतेस को सुझाव दिया कि वे इदुमियों के साथ मिलकर काम करें, जो अरब मूल के लोग थे जो ग्रामीण इलाकों को लूट रहे थे। यूहन्ना और उसके सहयोगियों ने इदुमियों को यरूशलेम में घुसपैठ करवाया, जहाँ उन्होंने आंतरिक संघर्ष को और बढ़ा दिया। नरसंहार और अत्याचार के भयानक दृश्य हर ओर दिख रहे थे। इसके बाद इदुमियों ने जेलोतेस को छोड़ दिया और वापस लौटकर चले गए। हालाँकि, सबसे पहले, उन्होंने जेल के दरवाज़े खोले और हज़ारों कैदियों को रिहा किया। कैदी भागकर गियोरस के बेटे शिमौन के गुट में शामिल हो गए, जो मसादा में बसे हुए अराजक बदमाशों के एक और गिरोह का मुखिया था।

अराजकता की स्थिति रोमी सेनापति वेस्पासियन को पता थी। उसने केवल सही समय का इंतजार किया और यहूदियों को इस आंतरिक कलह से स्वयं कमजोर होने दिया। आखिरकार, विशाल रोमी सेना सामरिया से आगे बढ़ी, यरूशलेम की ओर बढ़ी, और यरूशलेम से लगभग तीन मील दूर थॉर्न्स की घाटी में डेरा डाला। पड़ोसी ऊंचाइयों से वे शहर की मीनारें और दीवारें स्पष्ट रूप से देख सकते थे।

फिर कूच करने का आदेश आया, और अपनी प्रभावशाली सामर्थ के साथ वेस्पासियन की सेना ने सभी प्रतिरोधों पर विजय प्राप्त की और पहले से बर्बाद शहर की दीवार के सामने डेरा डाल दिया। युद्ध आगे-पीछे होता रहा, लेकिन अथक और अपरिहार्य रूप से रोमी सेना ने साहस और नरसंहार दोनों के दृश्यों के बीच यरूशलेम के एक के बाद एक हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया।

अकाल ने त्रस्त सड़कों पर अपना कहर बरपाया और शहर की रक्षा करने वाले सैनिक स्वयं भोजन की तलाश में निर्दयी बन गए थे। उन्होंने उन लोगों को पकड़ लिया जिन पर उन्हें भोजन छिपाने का संदेह था और उन्हें प्रताड़ित किया, उनसे मांग की कि वे खाद्य भंडार के बारे में ऐसे रहस्य बताएं जो अक्सर उनके पास नहीं होते थे। भूख की महामारी के आगे स्वाभाविक स्नेह और उदार भावना गायब हो चुकी थी। लोगों ने अपशिष्ट और गंदगी खाना शुरू की और कुछ तो नरभक्षी बन गए और अपने ही बच्चों को खा गए। एक माप गेहूँ सोने के वजन के बराबर था।

जब तीतुस ने अभियान की कमान संभाली, तो उसने इसमें नई भयानकताओं को जोड़ दिया। उसने यहूदी कैदियों को क्रूस पर टंगवा दिया, एक बार में पाँच सौ लोगों तक। कैदियों को हर रात उस स्थान पर लाया जाता था और ये सैनिक पीड़ितों को हर तरह की हास्यास्पद स्थिति में क्रूस पर चढ़ा देते थे। जल्द ही क्रूस पर चढ़ाने के लिए चुनी गई जगहों को क्रूस से ढक दिया गया और रोमी सेना के पास लकड़ी खत्म हो गई। जेलोतेस (उग्रपंथियों) ने इस भयानक दृश्य की ओर इशारा किया, ताकि असहाय लोगों की पलायन की इच्छा को किसी भी तरह से रोका जा सके।।

इस बीच शहर में विश्वासघात जारी रहा। रोमनों के साथ पत्र-व्यवहार करने के आरोप में महायाजक मत्तियाह की हत्या कर दी गई, लेकिन तब तक नहीं जब तक कि उसके तीन बेटों की हत्या उसकी आंखों के सामने नहीं कर दी गई। लोग इधर-उधर भागने लगे। रोमियों के अरब और सीरियाई सहयोगियों ने भगोड़ों के एक बड़े समूह को पकड़ लिया और उन्हें जीवित ही चीर डाला, तथा सोने और जवाहरात की तलाश की, जिनके निगल जाने का संदेह था।

अंत में रोमनों ने अन्तोनिया के मीनार पर कब्ज़ा कर लिया। मंदिर के गुम्मद अधिक नरसंहार और आगजनी का दृश्य बन गए। अगस्त की दसवीं तारीख को (जिस दिन नबूकदनेस्सर ने सुलेमान के मंदिर को नष्ट कर दिया था) तीतुस, जो हेरोदेस के भव्य मंदिर को बचाना चाहता था, ने आदेश जारी किया कि इसके चारों ओर की आग बुझा दी जाए। लेकिन युद्ध की गर्मी में एक क्रोधित सैनिक अपने साथी के कंधों पर चढ़ गया और छोटे से सोने के दरवाजे से एक जलती हुई मशाल को बरामदे में फेंक दिया। जल्द ही पूरी इमारत आग की लपटों में घिर गई।

जब घेराबंदी पूरी हो गई, तो रोमियों के पास 97,000 बंदी मौजूद थे। युद्ध में मारे गए या अकाल से मरने वालों की गिनती 1,300,000 आंकी गई है। तीतुस की रोम में विजयी वापसी को दर्शाने के लिए इनमें से सबसे लंबे और सबसे मजबूत दिखने वाले बंदियों को चुना गया था। बूढ़े और बीमार लोगों सहित बड़ी

गिनती में लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। हज़ारों लोगों को साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में खदानों में भेज दिया गया या अखाड़ों में लोगों के मनोरंजन के लिए प्रांतों में वितरित कर दिया गया।

इस प्रकार यरूशलेम का पतन हुआ। इस घटना की पूरी भयंकरता को पहले से देखते हुए, यीशु ने कहा, "देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है" (23:38)। यह कितना उजाड़ होगा, यह तो केवल समय ही बताएगा। 'बार-कोखबा' विद्रोह (ईस्वी 132-135) के बाद रोमी यहूदिया से पूरी तरह तंग आ चुके थे; उन्होंने सभी यहूदियों को देश से निकाल दिया, देश को उनके लिए सीमा से बाहर कर दिया, अपने पुराने शत्रुओं पलिश्तियों के सम्मान में इसका नाम बदलकर फिलिस्तीन रख दिया और यरूशलेम का नाम बदलकर "एलिया कैपिटोलिना" रख दिया।

ग. उसकी वापसी का निर्णय (23:39)

मंदिर से बाहर निकलने से पहले प्रभु ने कहा, "अब से तुम मुझे तब तक नहीं देखोगे, जब तक तुम यह न कहो कि धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।" वह आशा के एक अंतिम वचन के बिना नहीं जा सकता था, इसलिए अपने "हाय! हाय! हाय!" के साथ उसने वह शब्द "धन्य" जोड़ दिया। फिर उसने भीड़ से अपनी उपस्थिति वापस ले ली। वह फिर कभी उन मंदिर आँगनों में नहीं जाएगा। कुछ ही दिनों में वह मृत्यु द्वारा उनसे अलग हो जाएगा, क्योंकि उसके पुनरुत्थान के बाद वह केवल अपने लोगों के सामने प्रकट होगा।

लेकिन कई सदियों के बीतने पर, एक अजन्मे युग में, वह फिर से आएगा। तब इस्राएल भी मिलकर कहेगा, "धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है।" यहूदी राष्ट्र अभी भी ऐसा कहने के लिए तैयार नहीं है। समय अभी नहीं आया है, लेकिन वह दिन निकट आ रहा है।

III. भविष्यद्वाणी का उपदेश (24:1-25:46)

निजी चर्चाएँ और सार्वजनिक वाद-विवाद समाप्त हो चुके थे। राजा ने इस्राएल राष्ट्र पर अपना अंतिम निर्णय सुनाया था। अब केवल क्रूस ही बचा था। लेकिन सबसे पहले, एक आश्चर्यजनक भविष्यसूचक उपदेश में, राजा ने अपने चेलों को नई कलीसियाई युग के सामान्य स्वर का एक प्रारूप दिया जो आने वाले समय में पूरा होने वाला था, और फिर अंत समय की घटनाओं के बारे में बात की जो उसके वापस आने की घोषणा थी। यह महत्वपूर्ण भविष्यसूचक उपदेश पुराने नियम की अंत समय की भविष्यद्वाणी के मुख्य धागों और नए नियम की भविष्यद्वाणी के धागों को एक साथ बुनता है, उन्हें युगांतशास्त्र के एक प्रभावशाली ताने-बाने में बुनता है, और प्रभु के सर्वज्ञ पूर्वज्ञान से अंतर्दृष्टि की झलकियों के साथ ताने-बाने को सजाता है।

मत्ती ने प्रभु की सार्वजनिक सेवकाई को दो उपदेशों के बीच में रखा: पहाड़ी उपदेश, जिसमें व्यावहारिकता पर जोर दिया गया था; और जैतून के पहाड़ पर प्रवचन, जिसमें भविष्यद्वाणी पर जोर दिया गया था। एक उपदेश में हम राज्य के नियमों के बारे में पढ़ते हैं; दूसरे में हम राजा की वापसी के बारे में पढ़ते हैं। पहाड़ी उपदेश देने से पहले, प्रभु का बपतिस्मा हुआ; जैतून के पहाड़ पर प्रवचन देने के बाद, प्रभु को दफनाया गया। पहले उपदेश से पहले उसने साबित किया कि प्रलोभन देने वाला उस पर कभी विजयी नहीं हो सकता; अंतिम उपदेश के बाद उसने साबित किया कि कब्र उससे जीत नहीं सकती।

जैतून के उपदेश को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: मत्ती 24 में प्रभु की अंतिम समय की भविष्यद्वाणी और मत्ती 25 में प्रभु के अंतिम समय के दृष्टांत। भविष्यद्वाणी इस युग की अवधि से संबंधित है, और दृष्टांत इस युग के चरमोत्कर्ष से संबंधित है। भविष्यद्वाणी मनुष्यजाति के साथ परमेश्वर के न्यायिक व्यवहार से संबंधित है; दृष्टांत मनुष्यजाति के साथ परमेश्वर के न्यायपूर्ण व्यवहार से संबंधित हैं। भविष्यद्वाणी और दृष्टांत दोनों ही अंतिम दिनों से संबंधित हैं क्योंकि वे यहूदियों, अन्यजाति राष्ट्रों और कलीसिया को प्रभावित करते हैं।

बहुत से लोग जैतून के उपदेश में कलीसिया को नहीं देख पाते हैं। उनका दावा है कि मत्ती का सुसमाचार यहूदियों का सुसमाचार है और इसलिए इसकी सभी भविष्यवाणियाँ यहूदी हैं। लेकिन मत्ती के सुसमाचार में व्याप्त मूल यहूदीपन कलीसिया के बारे में सच्चाई को नहीं रोकता है। वास्तव में इस सुसमाचार में कलीसिया का दो बार उल्लेख किया गया है, जो इसके सार्वभौमिक और स्थानीय दोनों पहलुओं को सबसे जोरदार तरीके से दर्शाता है (मत्ती 16; 18)। इसके अलावा कलीसिया को अन्य स्थानों पर स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है, जैसे कि मोती के दृष्टांत में। यह वास्तव में विचित्र होता अगर जैतून के उपदेश में, प्रभु के सबसे व्यापक भविष्यसूचक उपदेश में, उसके पास कलीसिया के बारे में कहने के लिए कुछ भी नहीं होता, क्योंकि यह उसके हृदय के सबसे करीब और सबसे प्रिय विषय है।

क. अन्त समय के बारे में प्रभु की धारणा (24:1-3)

आराधनालय के विषय में चेलों के मन में उत्पन्न हुए गर्व के कारण यह भविष्यद्वाणी की गई थी। हेरोदेस महान एक खलनायक था, लेकिन वह वास्तुकला के प्रति अति-उत्साही था। बेबीलोन से वापस लौटे यहूदियों द्वारा कुस्रू के दिनों में बनाया गया मंदिर एक मामूली संरचना थी, लेकिन हेरोदेस ने इसे और इसके आसपास के क्षेत्र को शानदार बनाने का बीड़ा उठाया था। मसीह के दिनों में इस पर काम अभी भी जारी था। वास्तव में 64 ईस्वी तक इसमें अंतिम रूप से काम चलता रहा था।

लेकिन प्रभु इससे प्रभावित नहीं हुआ। उसने उस भूमि, नगर और मंदिर पर जो होने वाला था उसके विषय में विलाप किया। उसने इसके विषय में भविष्यद्वाणी की, “मैं तुम से सच कहता हूँ, यहां पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा” (24:2)। और ईस्वी 67 में, हेरोदेस के मंदिर के पूरा होने के तीन साल बाद, रोम के साथ यहूदियों का युद्ध छिड़ गया। तीतुस ने अपने सैनिकों को मंदिर पर हमला न करने का आदेश दिया, लेकिन मसीह के भविष्यसूचक कथन के सामने उसका आदेश बेकार था। मंदिर में भीषण आग लगने के साथ यह युद्ध समाप्त हुआ।

मत्ती के जैतून के पहाड़ी उपदेश (24:4-25:46) का विवरण मंदिर के आने वाले विनाश से संबंधित नहीं है। मत्ती ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि राजा ने अंतिम समय की घटनाओं के बारे में क्या कहा था जो उसके वापस आने के दौरान अपनी चरम पर पहुँचेंगी।

ख. अंतिम समय के बारे में प्रभु की भविष्यद्वाणी (24:4-51)

मत्ती 24 में दिया गया भविष्यद्वाणी संबंधी प्रवचन एक विषय-आधारित उपदेश था और इसमें प्रभु ने तीन शीर्षकों के अंतर्गत अंत समय की घटनाओं पर चर्चा की थी: पहला- अन्यजाति राष्ट्र; दूसरा - यहूदी लोग; और तीसरा विषय-कलीसिया।

सबसे पहले उसने अंत समय की घटनाओं को देखा क्योंकि वे अन्यजाति राष्ट्रों से संबंधित होंगी (24:4-14)। चूँकि राष्ट्रों के साथ उसका व्यवहार अंत तक जारी रहेगा, इसलिए उसकी टिप्पणियों में महाक्लेश के साथ-साथ अंत के उस समय तक की घटनाओं को भी शामिल किया गया, क्योंकि उन घटनाओं में राष्ट्र शामिल हैं।

फिर प्रभु ने उस विषय को छोड़ा और अंत समय की घटनाओं पर चर्चा की क्योंकि वे बातें यहूदी लोगों को प्रभावित करेंगी (24:15-31)। चूँकि महाक्लेश मुख्य रूप से "याकूब के संकट का समय" होगा (यिर्मयाह 30:7), और चूँकि यह यहूदी इतिहास का सबसे भयानक काल होगा, और चूँकि यह यहूदी लोगों के बचे हुए अवशेष को मसीह की ओर ले जाएगा, इसलिए प्रभु ने भविष्यसूचक उपदेश के इस भाग में मुख्य रूप से महाक्लेश पर जोर दिया।

अंत में प्रभु ने अंतिम समय की घटनाओं के बारे में बात की क्योंकि वे कलीसिया को प्रभावित करेंगी (24:32-51)। कलीसिया का नाम नहीं लिया गया है, लेकिन यह स्पष्ट रूप से इसमें निहित है। वास्तव में गैर-यहूदी राष्ट्रों और इस्राएल से संबंधित किसी भी घटना के सामने आने से पहले ही कलीसिया को स्वर्ग में उठा लिया जाएगा। कलीसिया इस सन्देश में केवल उपदेशात्मक क्रम में अंतिम स्थान पर आता है। जिसने भी सामयिक उपदेश दिए हैं, वे समझते हैं कि एक ही सामान्य विषय से संबंधित तीन विषय हमेशा सख्त कालानुक्रमिक क्रम में नहीं हो सकते हैं, हालाँकि प्रत्येक विषय के अंतर्गत विषय कालानुक्रमिक क्रम में हो सकते हैं।

प्रभु ने इतिहास के क्रम में अपने तीन विषयों पर चर्चा की। बाइबल के इतिहास के पहले दो हज़ार वर्षों में, परमेश्वर ने केवल राष्ट्रों के साथ व्यवहार किया। अब्राहम की बुलाहट के बाद, उसने यहूदियों के साथ सर्वोच्च तरीके से व्यवहार किया; राष्ट्र अभी भी वहाँ थे, लेकिन ईश्वरीय लक्ष्य बदल गया था। इतिहास की वह अवधि भी लगभग दो हज़ार वर्षों तक चली। पिन्तेकुस्त के बाद से दो हज़ार वर्षों तक, वह कलीसिया पर ही अपना ध्यान केंद्रित करता रहा है।

इस व्याख्या के आलोचक कहते हैं कि जब हम मत्ती 24 के अंत को कलीसिया से जोड़ते हैं, तो हमारा तात्पर्य यह होता है कि कलीसिया को महाक्लेश से होकर गुजरना होगा। यह आपत्ति अमान्य है क्योंकि उपदेश अपनी प्रकृति में सामयिक है। तीनों विषयों में से प्रत्येक एक अलग उपदेशात्मक इकाई है। कलीसिया के संबंध में, प्रभु ने महाक्लेश का बिल्कुल भी उल्लेख नहीं किया, और वह भी एक बहुत अच्छे कारण से। महाक्लेश राष्ट्रों और इस्राएल को प्रभावित करेगा, और इस प्रकार यह उपदेश के पहले दो खंडों में है कि प्रभु ने इस विषय पर चर्चा की। चूंकि इसका कलीसिया से कोई संबंध नहीं है, इसलिए तीसरे खंड में महाक्लेश का उल्लेख नहीं किया गया है।

1. संसार के राष्ट्र (24:4-14)

क. अन्त समय की समस्याएँ (24:4-8)

(1) राष्ट्रीय विपत्तियाँ (24:4-7a)

(a) भरमाने वाले पंथ (24:4-5)

प्रभु ने भविष्यद्वाणी की शुरुआत एक चेतावनी के साथ की: "सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए" (24:4)। वह अंतिम समय के मसीही आंदोलनों पर ध्यान केंद्रित कर रहा था जो हिटलर और मार्क्स जैसे पंथीय व्यक्तित्वों के इर्द-गिर्द केंद्रित थे। पश्चिमी देशों द्वारा अपनी पारंपरिक मसीही-यहूदी विरासत को त्यागने से अनगिनत अवसरवादी पंथों के लिए द्वार खुल गए हैं। कई पूर्वी झूठे धर्मों ने नई जड़ें जमा ली हैं; झूठे "मसीही" पंथ बेलगाम हो गए हैं; और तेल-समृद्ध अरब राज्यों के विशाल संसाधनों द्वारा समर्थित इस्लाम आगे बढ़ रहा है। मेघारोहण (बादलों पर उठाए जाने) के बाद शैतानी दर्शनशास्त्र पनपने लगेंगे। शैतान का मसीहा आएगा और संसार के अधिकांश लोगों को धोखा देगा।

(b) भयानक लड़ाइयाँ (24:6-7a)

यीशु ने कहा, "तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे...परन्तु उस समय अन्त न होगा" (24:6)। यहाँ "अंत" शब्द का अनुवाद टेलोस है, जिसका अर्थ है "बिल्कुल अंत।" उस कथन में प्रभु ने युग के अंतहीन संघर्षों को शामिल किया। फिर उसने एक नए प्रकार के युद्ध पर ध्यान केंद्रित किया: " जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा" (24:7)। प्रथम विश्व युद्ध तक, युद्ध सेनाओं के बीच होते थे, लेकिन अब युद्ध राष्ट्रों के बीच होते हैं। अतीत में युद्ध अक्सर लगातार और क्रूर होते थे, लेकिन बीसवीं सदी के आने के साथ साथ "संपूर्ण युद्ध" भी आया। पूरे राष्ट्र के सभी संसाधन संघर्ष के लिए समर्पित होते हैं। ज़रा सोचिये कि हमारे सकल राष्ट्रीय उत्पाद और राष्ट्रीय बजट का कितना हिस्सा हथियारों से संबंधित है। राष्ट्रों के बीच युद्ध तब तक जारी रहेंगे जब तक कि वे हर-मगिदोन में जाकर समाप्त नहीं हो जाते।

(2) प्राकृतिक विपदाएँ (24:7b-8)

प्रभु ने चेतावनी दी कि "जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भुईंडोल होंगे" (24:7), और ये सब अब इतना साधारण और व्यापक हो गया है कि इन्हें लगभग सामान्य ही मान लिया जाता है। दुनिया के कई हिस्से अकाल की चपेट में हैं। दुनिया के लाखों भूखे लोगों की समस्या इस तथ्य से और भी बढ़ जाती है कि दुनिया के सबसे गरीब देशों में लोगों की सबसे घनी आबादी पाई जाती है।

वे आशावादी दिन अब बीत चुके हैं जब हम सोचते थे कि चिकित्सा विज्ञान सभी बीमारियों को खत्म कर देगा। अब तो भयानक नए वायरस सामने आ रहे हैं। कुछ वर्षों पहले तक किसी ने एड्स के बारे में नहीं सुना था। जब यह पहली बार 1980 के दशक की शुरुआत में सामने आया था, तब यह पुरुष समलैंगिकों, नसों में नशीली दवाओं के सेवन करने वालों, हैतियों और हीमोफिलिया रोगियों तक ही सीमित था। अब माना जाता है कि लाखों लोग एचआईवी से संक्रमित हैं, जो इस बीमारी को फैलाने वाला वायरस है। मूल रूप से समलैंगिकों का अभिशाप है (या ऐसा लगता है), यह भयावह संकट बाकी समाज को प्रभावित कर रहा है, जो कि कामुक जीवन शैली और परमेश्वर के नैतिक नियमों की अवहेलना पर बढ़ते निर्णय का हिस्सा है। तपेदिक और मलेरिया जैसी अन्य संक्रामक बीमारियाँ, साथ ही साधारण वायरस उन लोगों के शरीर में पनप सकते हैं जिनकी प्रतिरक्षा प्रणाली एड्स द्वारा नष्ट हो गई है।

अब तक ज्ञात है कि पृथ्वी के गर्म क्षेत्रों और भूमध्यरेखीय जंगलों में छिपे वायरस कहीं अधिक खतरनाक हैं। इनमें से एक वायरस इबोला है, जो अपने शिकार के आंतरिक अंगों को नष्ट कर देता है, और अत्यधिक संक्रामक है और इसका कोई इलाज नहीं है। ये सभी महामारियाँ आने वाले भयानक महामारियों का संकेत मात्र हैं।

भूकंपों की गिनती में वृद्धि होती हुई दिख रही है, या कम से कम उनके बारे में हमारी जागरूकता में वृद्धि हुई है। अब हम जानते हैं कि दुनिया के कौन से क्षेत्र भूकंप के लिए सबसे अधिक संवेदनशील हैं। एक प्रमुख भूगर्भीय भूकंपीय क्षेत्र फिलिस्तीन और मध्य पूर्व से होकर गुजरता है। अमेरिका के कई बड़े शहर उच्च जोखिम वाली भूकंपीय क्षेत्र पर बने हैं।

ख. अन्त के समय में होने वाले सताव (24:9-10)

(1) भय से चिह्नित लोग (24:9)

अंत के समय की समस्याओं के साथ-साथ सताव भी आएगा। बीसवीं सदी में ऐसे पैमाने पर क्रूर सताव का उत्थान हुआ है जिसे पहले कभी नहीं देखा गया है। पूरी की पूरी नस्ल को खत्म करने के लिए उन्हें चिह्नित किया जाता है। नाज़ियों ने अविश्वसनीय बर्बरता की स्थितियों में छह मिलियन (साठ लाख) यहूदियों को मौत के घाट उतार दिया। कहा जाता है कि सत्ता के लिए अपने विश्वव्यापी अभियान में साम्यवादियों ने लैटिन अमेरिका की पूरी स्पेनिश-भाषी आबादी के बराबर जनसंख्या को खत्म कर दिया। वियतनाम, कंबोडिया और इथियोपिया जैसे स्थानों में अवांछित लोगों का निर्दयी सताव इतना आम है कि हम उस क्रूस्ता को देखने के प्रति अपने आँखें मूंद लेते हैं और सुनने से कतराते हैं। और अभी तो सबसे बुरा होना बाकी है।

महाक्लेश का महाप्रलय पिछले सभी उत्पीड़नों को एक रक्तपात में बदल देगा जो अपने दायरे में विश्वव्यापी होगा, चरित्र में निर्दयी होगा, उद्देश्य में क्रूरतम होगा, और संचालन में हृदयहीन होगा। हालाँकि इसका मुख्य ध्यान दुनिया के यहूदियों पर होगा, लेकिन यह उन सभी गैर-यहूदियों को शामिल करेगा जो पशु के चिह्न को लेने से इनकार करते हैं और जो किसी यहूदी की मदद करते हैं या उसे शरण देते हैं।

(2) विश्वासघात से चिह्नित लोग (24:10)

प्रभु ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि अंत के समय में होने वाले सताव विश्वासघात द्वारा चिह्नित होंगे। विश्वासघाती हमेशा से ही काफी सामान्य रहे हैं। उदाहरण के लिए, साम्यवादी विश्वासघात को उकसाने के लिए दिमाग को बस में करने की तकनीकों का उपयोग करने में विशेषज्ञ बन गए है। महाक्लेश के दौरान कई लोग पशु के प्रति विश्वासयोग्यता के ऐसे प्रदर्शन से अपने लिए कुछ हद तक प्रतिरक्षा खरीदने की उम्मीद में अपने पड़ोसियों, दोस्तों और परिवार तक को धोखा देंगे।

ग. अंतिम समय के भविष्यद्वक्ता (24:11-14)

प्रभु ने अंत समय के झूठे और सच्चे दोनों भविष्यद्वक्ताओं की ओर ध्यान आकर्षित किया है। उसने कहा, "बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे" (24:11)। सच्चे भविष्यद्वक्ता भी होंगे, क्योंकि परमेश्वर स्वयं को बिना किसी गवाह के नहीं छोड़ेगा, यहाँ तक कि महाक्लेश के युग में भी। हम अंत के समय के विषय में दिए गये प्रकाशन से सीखते हैं कि वह अपने दो महान गवाहों को खड़ा करेगा (प्रकाशितवाक्य 11), जो 144,000 गवाहों को जीतेंगे (प्रकाशितवाक्य 7; 14), जो बदले में एक ऐसी भीड़ को जीतेंगे जिसे कोई भी व्यक्ति गिन नहीं सकता। यीशु ने कहा, " राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत [ओइकौमेने, 'बसे हुए संसार'] में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त [टेलोस, 'बिल्कुल अंत'] आ जाएगा (मत्ती

24:14)। महाक्लेश के युग में प्रचारित किया जाने वाला "राज्य का सुसमाचार" मसीह के आने वाले राज्य के विषय में विशेष मेघारोहण के पश्चात का संदेश होगा।

पशु क्रोधित होकर इन गवाहों पर हमला करेगा। जो लोग उसका चिह्न स्वीकार नहीं करेंगे और उसकी मूर्ति की आराधना नहीं करेंगे, उन्हें बड़ी क्रूरता के साथ सताया जाएगा और मार डाला जाएगा। "परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा [टेलोस], वही उद्धार पाएगा" (24:13) - "उद्धार" जिसका अर्थ छुटकारा भी है, जैसा कि 1 थिस्सलुनीकियों 1:10 में है। जो लोग मत्ती 24:13 पर पतन-सिद्धांत को आधार बनाते हैं, वे संदर्भ के साथ हिंसा करते हैं। इस पद का अनुग्रह के युग में उद्धार खोने से कोई लेना-देना नहीं है; इसका सब कुछ मसीह के दूसरे आगमन द्वारा उसके सहस्राब्दी राज्य की स्थापना करने के द्वारा महाक्लेश से छुटकारा पाने से है।

2. इस्राएल का राष्ट्र (24:15-31)

प्रभु का टेलोस और "अंत तक धीरज धरने" का संदर्भ पहले विषय (संसार के राष्ट्र) से दूसरे विषय (इस्राएल के राष्ट्र) तक एक प्राकृतिक पुल बनाता है। अब तक इस्राएल के लिए सबसे नाटकीय और भयानक अंत-समय की घटनाएँ मसीह विरोधी का आना, महाक्लेश और हर-मगिदोन की लड़ाई होंगी। ये राष्ट्रीय विपत्तियाँ अंजीर के पेड़ से उसके सभी बुरे फलों को काट देंगी और बचे हुओं को मसीह की वापसी के लिए तैयार करेंगी।

भविष्यद्वाणी के उपदेश का दूसरा विषय इस धारणा पर आधारित है कि इस्राएल, एक राष्ट्र के रूप में पुनर्गठित होकर, अपने देश में वापस आ जाएगा और हमेशा की तरह मसीह का तिरस्कार करेगा। प्रभु ने मान लिया कि उसके सुननेवालों को पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों, विशेष रूप से दानिय्येल की भविष्यद्वाणियों का व्यावहारिक ज्ञान था। यीशु ने उसे पूरे विश्वास के साथ संदर्भित किया कि वह भविष्य के लिए एक वास्तविक, आत्मा-प्रेरित, सटीक और आधिकारिक मार्गदर्शक था। उदाहरण के लिए प्रभु ने 24:15 में "दानिय्येल भविष्यद्वक्ता द्वारा कही गई उजाड़ने वाली घृणित वस्तु" के उल्लेख से शुरुआत की, जो दानिय्येल 9:27; 11:31; 12:11 का स्पष्ट संदर्भ है।

भविष्यद्वाणी की गई घटनाओं का क्रम इस प्रकार है:[41] कलीसिया के स्वर्ग में उठा लिए जाने के तुरंत बाद, यूरोप में एक प्रतिभाशाली नेता उभरेगा। वह दस प्रमुख यूरोपीय देशों को दस "राजाओं" के अधीन एकजुट करेगा और रोमी साम्राज्य को पुनर्जीवित करेगा। विश्व वर्चस्व के लिए अपनी समग्र रणनीति के हिस्से के रूप में, वह इस्राएल राष्ट्र के साथ सात साल की संधि पर हस्ताक्षर करेगा। इस संधि की आड़ में धार्मिक यहूदी यरूशलेम में अपने मंदिर का पुनर्निर्माण करेंगे; उनके दुश्मनों को इस शासक (जिसे महाक्लेश में पशु तथा कहीं और मसीह-विरोधी कहा जाता है) की भारी सैन्य सामर्थ द्वारा रोका जाएगा। इस्लामी राष्ट्र रूस से दलील करेंगे। पुनर्जीवित पश्चिम (पशु के नेतृत्व में) की गतिशीलता और दृढ़ संकल्प से अपनी वैश्विक स्थिति को नष्ट होते देख, रूस इस्राएल पर आक्रमण करने का घातक निर्णय लेगा। अभूतपूर्व परिमाण की एक सैन्य आपदा संयुक्त यहूदी विरोधी ताकतों को पछाड़ देगी (यहेजकेल 38-39)। यह एक विशाल भू-राजनीतिक शून्य पैदा करेगा, जो पशु के लिए वैश्विक शासन को संभालना संभव बना देगा।

अब इस पशु का इस्राएल के लिए कोई उपयोग नहीं रह जाएगा। वह पुनः निर्मित मंदिर पर कब्ज़ा कर लेगा, भीतरी पवित्र स्थान में अपनी एक प्रतिमा स्थापित करेगा, और आदेश देगा कि उसे और उसकी मूर्ति को सार्वभौमिक आराधना चढ़ाई जाए। फिर वह यहूदियों के विरुद्ध एक व्यापक नरसंहार शुरू कर देगा; वह उन सभी लोगों के साथ-साथ उनका भी नाश करने के लिए निकल पड़ेगा जो उसका चिह्न लेने से इनकार करते हैं और उसकी मूर्ति की आराधना करते हैं। यही वह मूर्ति है जिसे दानिय्येल और यीशु दोनों ने उजाड़ने वाली घृणित वस्तु के रूप में संदर्भित किया है।

क. इस्राएल का आनेवाला सर्वनाश (24:15-26)

(1) उस समय के दौरान पवित्र लोगों का पलायन (24:15-20)

आने वाले भय के शासन के विषय पर चर्चा करते हुए, प्रभु ने इस बात पर जोर दिया कि विश्वासियों को यरूशलेम से भागना होगा। एक बार जब पशु ने मंदिर को अपवित्र कर दिया, तो किसी भी कारण से वहाँ रुकना मूर्खता ही होगी। पहाड़ों की ओर उनकी उड़ान में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। उन लोगों के लिए दुःख की बात है जो गर्भावस्था जैसी शारीरिक स्थिति या धार्मिक संकोच के कारण भागने में असमर्थ होते हैं, या अपवित्रता की खबर सब्त के दिन आती है। कई लोग सोचते हैं कि इन शरणार्थियों के लिए छिपने और सुरक्षा का अंतिम स्थान पेट्रा में स्थित प्राचीन चट्टानी शहर होगा।

(2) उस समय के दौरान तूफान का प्रकोप (24:21-22)

(a) महाक्लेश की गंभीरता (24:21)

दानिय्येल 12:1 का उद्धरण देते हुए प्रभु ने कहा, "क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा।" पाप से शापित इस संसार में परमेश्वर के लोगों को हमेशा सताया गया है, लेकिन हमें साधारण सताव को महाक्लेश से भ्रमित नहीं करना चाहिए। यह साढ़े तीन साल (1,260 दिन) की एक विशेष अवधि होगी, जिसके दौरान शैतान को विशेष रूप से परमेश्वर के लोगों और सामान्य रूप से मनुष्यजाति के विरुद्ध अपना सबसे बुरा करने की अनुमति दी जाएगी। यह एक ऐसा समय होगा जब परमेश्वर इस ग्रह पर अपना क्रोध उंडेलेगा, और यहूदी लोगों को अंततः उनके मसीह को अस्वीकार करने वाले आत्म-निर्भरता और अभिमान के चरम तक पहुंचाया जाएगा।

(b) महाक्लेश की अल्पावधि (24:22)

प्रभु ने आगे कहा, "और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे।" यह पवित्रशास्त्र में उन कथनों में से एक है जो यह दर्शाता है कि लापरवाह और अविश्वासी संसार को अपने बीच परमेश्वर के लोगों की उपस्थिति के लिए कितना ऋणी होना चाहिए।

(3) उस समय के दौरान पापियों की मूर्खता (24:23-26)

उस समय शैतान लोगों को जबरदस्तचिह्नों, चमत्कारों और झूठे आश्चर्यकर्मों से चकाचौंध करके लुभाएगा। ऐसी अफ़वाहें फैलेंगी कि मसीह वापस आ गया है और यहाँ तक कि चुने हुए लोगों के पास भी ऐसे क्षण होंगे जब वे लगभग विश्वसनीय प्रमाणों के सामने झुक जाएँगे। बहुत से "चिह्न" झूठे भविष्यद्वक्ता द्वारा बनाए जाएँगे, जो प्रकाशितवाक्य 13 का दूसरा पशु है। झूठा भविष्यद्वक्ता, मसीह-विरोधी और वह बड़ा लाल

अजगर साथ मिलकर शैतानी त्रितत्व बनाते हैं। झूठा भविष्यद्वक्ता अकेला नहीं होगा, क्योंकि यहाँ, वहाँ और हर जगह "झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे" (24:24)। उनमें से प्रत्येक के पास कोई न कोई महान चिह्न या धोखा देने वाला चमत्कार होगा। प्रभु ने अपने लोगों को चेतावनी दी कि वे उनसे भरमाए न जाएँ, अपने छिपने के स्थान से बाहर न निकलें, क्योंकि उसकी वापसी बहुत ही निकट होगी।

ख. इस्राएल का आने वाला उद्धारकर्ता (24:27-31)

(1) वह तेज़ी जिसके साथ वह लौटेगा (24:27)

प्रभु ने कहा कि उसकी वापसी "जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है", उसी प्रकार होगी। महीनों तक क्रोधित तूफानी बादल बनते रहेंगे और फिर बिजली की तेज़ी से चमकते हुए प्रभु वापस आएगा। पश्चाताप या पछताने के लिए कोई समय नहीं होगा। लोग जहाँ भी होंगे और जो भी कर रहे होंगे, वे रंगे हाथों पकड़े जाएँगे—चाहे वे मगिद्दो के मैदानों में इकट्ठा हों, या यरूशलेम शहर पर हमला बोल रहे हों, या परमेश्वर के लोगों की हत्या कर रहे हों, या उस पशु की आराधना कर रहे हों, या किसी व्यापारिक सौदे को पूरा करने के लिए उसका चिह्न प्रदर्शित कर रहे हों।

(2) वह नर-संहार जिसके साथ वह लौटेगा (24:28)

प्रभु की वापसी के साथ ही मगिद्दो में अपनी सामर्थ से एकत्रित लाखों लोगों का सामूहिक वध किया जाएगा। भय का पूरा दौर उस युद्ध के मैदान में समाप्त होगा, जहाँ पूर्व और पश्चिम की सेनाएँ आएँगी। हर-मगिदोन की भयावहता का सबसे उत्तम चिह्न यह होगा कि हज़ारों शिकारी पक्षी उस क्षेत्र में इकट्ठे होंगे जिन्हें परमेश्वर के अंतिम अंत्येष्टिकर्ता के रूप में बुलाया जाएगा। वे उन एकत्रित सेनाओं के ऊपर से उड़ेंगे और दुष्टों के विनाश की घोषणा करेंगे।

यीशु के जन्म से सदियों पहले, परमेश्वर ने अय्यूब से पूछा था, "क्या उकाब तेरी आज्ञा से ऊपर चढ़ जाता है, और ऊंचे स्थान पर अपना घोंसला बनाता है? वह चट्टान पर रहता और चट्टान की चोटी और दृढ़स्थान पर बसेरा करता है। वह अपनी आंखों से दूर तक देखता है, वहां से वह अपने अहेर को ताक लेता है। उसके बच्चे भी लहू चूसते हैं; और जहां घात किए हुए लोग होते [यानी युद्ध के मैदान में] वहां वह भी होता है" (अय्यूब 39:27-30)। मत्ती 24:28 में हर-मगिदोन का वर्णन भी कुछ ऐसा ही है: "जहां लोथ हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे॥"

(3) वे चिह्न जिनके साथ वह लौटेगा (24:29-30)

प्रभु की वापसी के चिह्न झूठे नहीं होंगे जैसे कि पशु और उसके बहकाने वाले भविष्यद्वक्ता द्वारा दिखाए गए थे। ये ऐसे भयानक चिह्न होंगे, जो ऊपर आकाश और नीचे पृथ्वी को हिला देंगे, "तब मनुष्य के पुत्र का चिह्न आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे" (24:30)।

अब बहुत देर हो चुकी है, शैतान के सभी ब्रांडेड मूर्खों के सामने सच्चाई आ आएगी। वे स्वयं एक-दूसरे के सामने स्वीकार करेंगे: "बाइबल, जिसे हमने तुच्छ जाना, हमेशा सही थी। भविष्यवाणियाँ रूपक नहीं थीं, बल्कि वास्तविकताएँ थीं। वह जिसका अद्वितीय नाम हम आम तौर पर एक शापित शब्द के रूप में

इस्तेमाल करते हैं, वह जीवित परमेश्वर का अनंत, असृजित पुत्र है। देखो, यह वही है, जैसा उसने कहा था, वापस आ रहा है, एक बढ़ई के रूप में नहीं बल्कि एक जयवंत के रूप में, अपनी महिमा को छिपाकर नहीं, बल्कि उस महिमा के साथ जो दोपहर के सूरज की चमक को भी कम कर देती है।"

(4) वह आवाज़ जिसके साथ वह लौटेगा (24:31)

अपने आगमन पर मनुष्य का पुत्र "तुरही के बड़े शब्द के साथ, अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे।।" मूसा ने राष्ट्रीय पाप के कारण पृथ्वी के सभी भागों में इस्राएल के न्याय के रूप में बिखराव की भविष्यद्वाणी की थी; उसने इस्राएल के सभी बचे हुए बहिष्कृत लोगों के अंतिम समय में इकट्ठे होने की भी भविष्यद्वाणी की थी। व्यवस्थाविवरण 30:3-5 में उसने भविष्यद्वाणी की थी कि राष्ट्रीय पश्चाताप के बाद राष्ट्रीय पुनः एकत्रीकरण होगा:

“तब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को बन्धुआई से लौटा ले आएगा, और तुझ पर दया करके उन सब देशों के लोगों में से जिनके मध्य में वह तुझ को तित्तर बित्तर कर देगा फिर इकट्ठा करेगा। चाहे धरती के छोर तक तेरा बरबस पहुंचाया जाना हो, तौभी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को वहां से ले आकर इकट्ठा करेगा। और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उसी देश में पहुंचाएगा जिसके तेरे पुरखा अधिकारी हुए थे, और तू फिर उसका अधिकारी होगा; और वह तेरी भलाई करेगा, और तुझ को तेरे पुरखाओं से भी गिनती में अधिक बढ़ाएगा।”

हमारे समय में इस्राएल के राज्य का पुनर्जन्म और यहूदी लोगों का अपने पैतृक देश में पुनः एकत्रित होना मूसा की भविष्यद्वाणी को पूरी तरह से पूरा नहीं करता है। निर्वासितों का इकट्ठा होना केवल आंशिक भाग है और यह अविश्वास में पूरा हो रहा है। इस्राएल, जो अभी भी मसीह को अस्वीकार कर रहा है, अभी तक वह जैतून की डाली नहीं है जिसे उसके पूर्व आत्मिक विशेषाधिकार में वापस जोड़ा जा रहा है (रोमियों 11); यह अंजीर का पेड़ है जो मसीह की सेवा करने के लिए सभी बातों में बाँझ है, लेकिन इसमें से अंतिम समय के पत्ते बाहर निकल रहा है। इस्राएल आज मसीह के राज्य करने के लिए आने की आशा में नहीं, बल्कि विनाश के लिए मसीह-विरोधी के आने की प्रत्याशा में फिर से इकट्ठा हो रहा है।

प्रभु ने इस उपदेश के दूसरे विषय का समापन तुरही की ध्वनि के साथ किया। तुरही की ध्वनि इस्राएल के वार्षिक तुरही पर्व (लैव्यव्यवस्था 23:23-25) के भविष्यसूचक पहलू की पूर्ति की घोषणा करती है। तुरही का पर्व प्रायश्चित के पर्व और मण्डपों के आनन्दमय सहस्राब्दी पर्व का अग्रदूत है। मत्ती 24:32 में अंजीर के पेड़ का चिह्न तीसरे विषय, कलीसिया के लिए एक प्राकृतिक पुल है।

3. स्वर्ग के नागरिक (24:32-51)

कालक्रम के संदर्भ में प्रभु अब समय में पीछे चले जाता हैं। कलीसिया का उठाया जाना, जो इस पद्यांश का विषय है, पिछले दो अंशों में वर्णित घटनाओं से पहले होगा, जो गैर-यहूदी राष्ट्रों और इस्राएल के संबंध में परमेश्वर के अंतिम समय के उद्देश्यों की पूर्णता से संबंधित थे। विषयगत रूप से, कलीसिया के बारे में अंतिम समय का सत्य सबसे अंत में आता है क्योंकि कलीसिया सबसे अंत में दृश्य में आयी थी; वास्तव में जब जैतून का प्रवचन दिया गया था तब इसका जन्म भी नहीं हुआ था। कालानुक्रमिक रूप से, कलीसिया के बारे में अंतिम समय का सत्य सबसे पहले आता है और पहले दो विषयों की चर्चा में प्रभु ने जो कुछ भी प्रकट किया है, उससे पहले आता है।

24:3 में चेलों ने प्रभु के आगमन और कलीसिया के बारे में कोई प्रश्न नहीं पूछा था; उस समय उनके पास कलीसिया की कोई वास्तविक अवधारणा नहीं थी, हालाँकि इसके बारे में उन्हें सच्चाई बता दी गई थी। उन्होंने अंत-समय की घटनाओं, विशेष रूप से यहूदी अंत-समय की घटनाओं के बारे में एक अधिक सामान्य प्रश्न पूछा था। प्रभु ने पहले उनके तात्कालिक प्रश्नों का उत्तर दिया, फिर अपने हृदय के सबसे करीब की बात कही अर्थात् इस्राएल और अन्य राष्ट्रों के साथ अपने न्यायिक व्यवहार से पहले स्वर्ग के नागरिकों के लिए उसका पुनः आगमन।

क. दो प्रकार की पुष्टियां (24:32-39)

इस्राएल के प्रतीक के रूप में अंजीर के पेड़ का उपयोग उस समय से किया जाता है जब पृथ्वी पर कोई कलीसिया नहीं थी (न्यायियों 9:10-11)। हालाँकि, मत्ती 24 में, अंजीर के पेड़ का उपयोग आनेवाले मेघारोहण के चिह्न के रूप में किया गया है, जो कलीसिया के लिए एक चिह्न, इस्राएल राष्ट्र और उसके अविश्वास पर आधारित एक चिह्न है। जल-प्रलय का चिह्न उस समय से लिया गया था जब पृथ्वी पर इस्राएल राष्ट्र मौजूद नहीं था। जल-प्रलय भी मेघारोहण का चिह्न है अर्थात् कलीसिया के लिए एक चिह्न, अन्यजाति राष्ट्रों और उनके अविश्वास पर आधारित एक चिह्न। अंजीर का पेड़ एक महत्वपूर्ण राजनीतिक चिह्न की ओर इशारा करता है - अर्थात् इस्राएल राज्य का पुनर्जन्म। जल-प्रलय एक महत्वपूर्ण नैतिक चिह्न की ओर इशारा करता है।

(1) अंजीर का चिह्न (24:32-36)

अंजीर के पेड़ का चिह्न यह स्पष्ट करने के लिए दिया जाएगा कि "ग्रीष्म काल निकट है" (24:32), जब वसंत ऋतु आएगी और मसीह की अनुपस्थिति की लम्बी सर्दी की ऋतु समाप्त होने वाली है, तो प्रभु के आगमन का समय अति निकट होगा।

(a) एक तुलना (24:32-33)

केवल एक या दो दिन पहले ही, प्रभु ने अंजीर के पेड़ का "चमत्कार" किया था (21:18-20)। अब प्रभु ने अंजीर के पेड़ का एक "दृष्टांत" प्रस्तुत किया (24:32)। अंजीर के पेड़ की कलियाँ निकलना इस बात का संकेत है कि हम अंतिम समय में पहुँच चुके हैं।

पवित्र शास्त्र में तीन पेड़ इस्राएल राष्ट्र के प्रतीक हैं। दाख इस्राएल राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है जब से वह एक राष्ट्र बना और जब तक कि उसने मसीह का तिरस्कार नहीं कर दिया (मत्ती 21:33-44; यशायाह 5:1-7)। ऊपरी कोठरी में प्रभु ने अपने चेलों से कहा कि अब से वह सच्ची दाखलता है और उसका पिता किसान है (यूहन्ना 15:1-6)। इस्राएल की राष्ट्रीय विफलता पूरी हो चुकी थी।

जैतून का पेड़ मसीह की वापसी और इस्राएल के राष्ट्रीय पश्चाताप (रोमियों 11) के बाद के इस्राएल का प्रतिनिधित्व करता है। हमारे वर्तमान युग में यहूदियों को उनको मिलने वाले आत्मिक विशेषाधिकार के पद से अलग कर दिया गया है जो पुराने नियम के समय में उनका अधिकार था। अन्यजातियों (जंगली जैतून की डालियों) को इनके साथ साटा गया है और अब वे उस स्थान पर दाखिल हो चुके हैं जिसे यहूदियों ने तब खो दिया था जब उन्होंने मसीह को अस्वीकार कर दिया था।

कलीसिया की संरचना मुख्य रूप से गैर-यहूदी लोगों की है। हालाँकि, आने वाले दिनों में परमेश्वर यहूदी लोगों को उनके आत्मिक विशेषाधिकार के स्थान पर वापस लाएगा, इसलिए गैर-यहूदियों को उन समृद्ध आत्मिक चीज़ों के बारे में घमंड नहीं करना चाहिए जिनका वे अभी आनंद उठाते हैं। पौलुस ने प्रभावी रूप से कहा, "क्योंकि यदि तू उस जलपाई से, जो स्वभाव से जंगली है काटा गया और स्वभाव के विरूद्ध अच्छी जलपाई में साटा गया तो ये जो स्वाभाविक डालियां हैं, अपने ही जलपाई में साटे क्यों न जाएंगे?" खैर, हम जानते हैं कि यह कैसा होगा; यह सहस्राब्दी में होगा!

अंजीर का पेड़ इस्राएल को दर्शाता है, जब से राष्ट्र ने मसीह को अस्वीकार किया था, उस समय से लेकर जब इस्राएल एक राष्ट्र के रूप में मसीह को स्वीकार करता है। इस्राएल द्वारा तिरस्कृत राजा द्वारा शापित अंजीर के पेड़ को शाप देना एक प्रतीकात्मक कार्य था। यह एक दृष्टांत के साथ-साथ एक चमत्कार भी था। प्रतीकात्मक शाप (मत्ती 21) के बाद उस राष्ट्र को शाप दिया गया जिसका प्रतीक पेड़ था (मत्ती 23)।

प्रभु ने कहा, “अंजीर के पेड़ का दृष्टांत सीखो” (24:32)। अपने सृष्टिकर्ता के अभिशाप के अंतर्गत मरने वाला अंजीर का पेड़ (इस्राएल का राष्ट्र) फिर से जीवित हो जाएगा। पेड़ पर फिर से पत्तियाँ लहलहाने लगेगी - फल नहीं, बल्कि पत्तियाँ। दूसरे शब्दों में, इस्राएल का राष्ट्र, जो ईस्वी 70 में विघटित होना शुरू हुआ और अंततः ईस्वी 135 में ‘बार-कोखबा’ विद्रोह के समय वादा किए गए देश से बेदखल कर दिया गया, अंत समय की घटनाओं के समापन से ठीक पहले एक राष्ट्र के रूप में उभरेगा। राष्ट्र का पुनर्गठन अविश्वास में होगा; इस्राएल अभी भी मसीह को अस्वीकार कर रहा होगा। इसी लिए प्रभु ने संकेत नहीं दिया कि अंजीर का पेड़ फिर से जीवित होने पर फल देने लगेगा।

ठीक यही हुआ है। फिलिस्तीन में पुनर्जीवित राज्य के लिए अपने धर्मयुद्ध में सिय्योनवादियों को भविष्यद्वाणी पूरी करने का कोई विचार नहीं था। आंदोलन के सभी अगुवे धर्मनिरपेक्ष थे और उन्होंने एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की कल्पना की थी। सिय्योनवाद के संस्थापक थियोडोर हर्ट्ज़ल पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष व्यावहारिक और दूरदर्शी थे।[42] ठीक उसी तरह, हमारे जीवनकाल में इस्राएल राज्य का पुनर्गठन एक असाधारण चमत्कार है; यह एक चिह्न है कि कलीसियाई युग लगभग अपना काम पूरा कर चुका है, कि मेघारोहण निकट है, और यह कि परमेश्वर यहूदी लोगों के साथ अपने अंतिम समय के व्यवहार को शुरू करने वाला है। वह वहीं से शुरू करेगा जहाँ उसने तब छोड़ा था जब कलीसियाई-युग के कोष्ठक को मनुष्यजाति के साथ उसके व्यवहार में शामिल किया गया था।

(b) एक पुष्टिकरण (24:34-35)

प्रभु ने पुष्टि की, "जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी" (24:34)। हम पहले ही देख चुके हैं कि 23:36 में "यह पीढ़ी" शब्द शाब्दिक पीढ़ी को संदर्भित करता है। यदि 23:36 में इस शब्द का अर्थ शाब्दिक पीढ़ी है, तो इसका अर्थ 24:34 में भी शाब्दिक पीढ़ी ही होना चाहिए - भले ही इस शब्द को किसी और चीज़ के लिए संदर्भित करके पद के प्रभाव को कम करने के अच्छे इरादे वाले प्रयास किए गए हों।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि 24:34 में वर्णित "न" शब्द ग्रीक शब्द ou mē का अनुवाद है, जो एक बहुत ही मजबूत शब्द है जिसका शाब्दिक अनुवाद "किसी भी तरह से नहीं" के रूप में किया जा सकता है। "पूरा

होना" के अनुवाद का अर्थ "शुरू होना" हो सकता है। इसलिए प्रभु कह रहा था, "जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी।"

प्रभु किस पीढ़ी की बात कर रहा था? स्पष्ट है कि उसका मतलब उस पीढ़ी से नहीं था, जिसके बारे में वह बात कर रहा था। यह 23:36 की पीढ़ी थी, वह पीढ़ी जिसने अंजीर के पेड़ को शाप देते हुए देखा था। वे रोमी युद्ध, यरूशलेम और मंदिर के विनाश और यहूदी राष्ट्रीय जीवन के अंत की शुरुआत को देखने के लिए जीवित रहे। यदि 24:34 में यह वह पीढ़ी नहीं थी, जिसके बारे में वह बात कर रहा था, तो निश्चित रूप से यह वह पीढ़ी होनी चाहिए, जिसके बारे में वह बात कर रहा था - अर्थात् वह पीढ़ी जो इस्राएल राज्य के पुनर्गठन, अंजीर के पेड़ के अंकुरण और "ये सब बातें" के अंत की शुरुआत को देखेगी।

जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, सवाल उठता है, एक "पीढ़ी" कितनी लंबी होती है? यह अभिव्यक्ति जानबूझकर परमेश्वर द्वारा चुनी गई थी क्योंकि इसमें लचीलापन है। एक पीढ़ी किसी के जन्म के समय से लेकर उसकी मृत्यु के समय और उसके समकालीनों की मृत्यु तक फैली हो सकती है। या यह अपेक्षाकृत संक्षिप्त अवधि भी हो सकती है जब किसी की पीढ़ी उन चीजों के लिए जिम्मेदार होती है जो घटित हो रही हैं। किसी भी मामले में कोई सटीक और निश्चित रेखा नहीं खींची जा सकती है जहां एक पीढ़ी शुरू होती है और जहां वह खत्म होती है क्योंकि जन्म और मृत्यु का अंतहीन प्रवाह होता रहता है। एक पीढ़ी बहुत धीरे-धीरे दूसरी पीढ़ी में विलीन हो जाती है।

(c) एक चेतावनी (24:36)

पीढ़ी के पैमाने का उपयोग करने में प्रभु का उद्देश्य स्पष्ट रूप से तिथि निर्धारण के विरुद्ध सावधान रहने का था, क्योंकि उसने चेतावनी दी, "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, परन्तु केवल पिता।" यह पद कलीसिया के मेघारोहण का स्पष्ट संदर्भ है, जिसे हमेशा हमारे सामने एक ऐसी घटना के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिसके तारीख के विषय में कोई जानकारी नहीं हैं।

इसके विपरीत, प्रभु का अपने राज्य की स्थापना के लिए अंत में वापस आना एक निर्धारित तिथि की घटना है। परमेश्वर ने पुराने नियम के अपने लोगों के लिए लगातार तिथियाँ निर्धारित कीं (उत्पत्ति 15:13-16; दानिय्येल 9:24-27)। बाइबल के जानकार यहूदी पलायन के समय और क्रूस पर चढ़ने की वास्तविक तिथि की गणना कर सकते थे। इसी तरह उजाड़ने वाले घृणित वस्तु की स्थापना के समय रहने वाले यहूदी मसीह की वापसी की उल्टी गिनती कर सकेंगे। बीच की अवधि का काल प्रकाशितवाक्य 13:5 में बयालीस महीने के रूप में दिया गया है; प्रकाशितवाक्य 12:14 में "एक समय, और समयों, और आधे समय" (साढ़े तीन साल) के रूप में; और प्रकाशितवाक्य 11:3 में और भी अधिक विशिष्ट रूप से 1,260 दिन के रूप में वर्णित किया गया है। यहूदी घटनाओं के लिए तिथियाँ दी गई हैं क्योंकि इस्राएल परमेश्वर के सांसारिक लोग हैं। कलीसिया की घटनाओं के लिए कोई तिथि नहीं दी गई है क्योंकि कलीसिया परमेश्वर के स्वर्गीय लोग हैं; कलीसिया अनंतकाल में निहित है।

इसलिए यद्यपि यहूदी लोग तिथियाँ निर्धारित कर सकते थे, लेकिन हमें कलीसिया के मेघारोहण की तारीख निर्धारित करने का कोई प्रयास नहीं करना चाहिए। यह तारीख पूर्ण रूप से एक रहस्य है। हालाँकि, हम इस्राएल राज्य के ;पुनर्गठन से जान पाते हैं कि "ग्रीष्म काल निकट है" (मत्ती 24:32)।

(2) जल प्रलय का चिह्न (24:37-39)

(a) एक निवेदन (24:37)

जल प्रलय एक और चिह्न है कि अंत समय की घटनाएँ और कलीसिया का उठाया जाना काफी निकट है। नूह की कहानी का उद्धरण देते हुए, प्रभु ने हमारा ध्यान उत्पत्ति 4-6 की ओर आकर्षित किया, जिसे उसने पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित, आधिकारिक और ऐतिहासिक घटना के रूप में समर्थन दिया। इन अध्यायों पर कोई भी हमला मसीह के परमेश्वरत्व पर सीधा हमला है।

(b) मूल्यांकन (24:38-39a)

प्रभु ने घोषणा की कि उसके वापस लौटने के समय पृथ्वी पर स्थितियाँ नूह के दिनों की स्थितियों के समान ही होंगी। (लूका 17:28-32 संकेत देता है कि प्रभु के लौटने से पहले के दिन लूत के दिनों के समान होंगे। नूह एक अश्लीलता से भरे समाज में रहता था; लूत एक विकृत समाज में रहता था। दोनों ही हमारे समय की भी पहचान हैं।)

नूह के दिनों में सात विशेषताएँ थीं: आत्मिक पतन, सामाजिक दुविधा, निर्लज्ज भ्रष्टता, वैज्ञानिक विकास, कुछ भक्ति, प्रबल भ्रम और अचानक होने वाला विनाश है। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए प्रभु ने इनमें से सिर्फ़ एक विशेषता को चुना: प्रबल भ्रम। उसने कहा कि उन्हें "कुछ भी मालूम न पड़ा" (मत्ती 24:39)। जितनी भी बातों को यीशु रेखांकित कर सकता था, उनमें से उसने इस तथ्य पर अधिक ज़ोर देने को चुना कि अंतिम समय के लोग धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद और घोर भौतिकवाद से भ्रमित होंगे, जो नूह के युग पर बहुत ही हावी था।

जल प्रलय से पहले इस बात के विषय में अनजान रहना उनके लिए कोई बहाना नहीं था कि परमेश्वर सीधे मानवीय मामलों में हस्तक्षेप करने वाला था, क्योंकि नूह "धर्म का प्रचारक" था (2 पतरस 2:5)। परमेश्वर कभी भी अपने आप को बिना किसी गवाह के नहीं छोड़ता। समय जितना अधिक पतित होता है, गवाही उतनी ही अधिक निश्चित होती जाती है।

नूह दिन-प्रतिदिन जहाज़ पर काम करता रहा; रात-रात भर वह एक लापरवाह दुनिया से प्रचार करता रहा। लेकिन वह अपने परिवार के सदस्यों के अलावा किसी को भी मन फिराने की ओर नहीं मोड़ पाया। उसे बिल्कुल अनदेखा कर दिया गया। लोग अपने काम में लगे रहे। उन्होंने भोजन और विवाह की योजना इतनी बेपरवाही से बनाई जैसे कि नूह जैसा कोई व्यक्ति था ही नहीं, या कोई परमेश्वर है ही नहीं, और न्याय जैसी कोई संभावना कभी नहीं होगी। यीशु ने उनके "खाने-पीने, और उन में ब्याह शादी" होने का उल्लेख किया (मत्ती 24:38), लेकिन वह उत्पत्ति 6 में पवित्र आत्मा द्वारा संदर्भित घोर पापों के विषय में ही बना नहीं रहा। वास्तव में खाना-पीना ज़रूरी था। और ऐसे एक युग में जब समाज द्वारा विवाह के परमेश्वर के आरंभिक नियम को अनदेखा किया जा रहा था, इसलिए विवाह करने वाले लोग औसत से बेहतर रहे होंगे। लेकिन क्योंकि वे कुछ "नहीं जानते थे," इसलिए वे वेश्याओं, विकृत लोगों और अश्लीलता में खोए लोगों की तरह ही खो गए थे जो उनकी दुनिया में बहुतायत में थे।

नूह के समकालीनों को स्वर्ग की अदालत द्वारा परमेश्वर के बारे में उनकी अज्ञानता, उनके द्वारा प्रदान किए गए उद्धार के बारे में उनकी अज्ञानता, उनके खो जाने के बारे में उनकी अज्ञानता और समय के संकेतों के

बारे में उनकी अज्ञानता के लिए जवाबदेह ठहराया गया था। मत्ती 24:39 में "मालूम" का मूल रूप से अनुवाद किया गया शब्द 'गिनोस्को' है, जिसका अर्थ है "ज्ञान प्राप्त करना, परिचित होना, सीखना, समझना।" अंजीर के पेड़ की कलियों के संबंध में 24:32 में भी यही शब्द इस्तेमाल किया गया है: "तुम जानते हो कि ग्रीष्म काल निकट है"।

(c) लागू किया जाना (24:39b)

"वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।" यह महत्वपूर्ण कथन इस बात को दर्शाता है कि प्रभु के आगमन से पहले के दिनों में भी विश्वासयोग्य प्रचार और पूर्ण भविष्यद्वाणी के प्रति इसी तरह की लापरवाही देखी जाएगी। नूह के दिनों में न्याय का समय मंडरा रहा था, और अब भी मंडरा रहा है।

ख. दो प्रकार के मसीही (24:40-51)

तो फिर, प्रभु ने अंजीर के पेड़ और जलप्रलय के दृष्टांतों का उपयोग करके उस बात के लिए मंच तैयार किया जो उसे कलीसिया के मेघारोहण के बारे में कहना था। इस बिंदु पर हमें उन मसीहियों के बीच अंतर करना चाहिए जो वास्तव में उद्धार पाए हुए हैं, जो मसीह के साथ रहने के लिए स्वर्ग में उठाए जाएंगे, और वे जो केवल दावा करते हैं कि उन्होंने उद्धार पाया हैं, वे उठाए जाने के समय पीछे छोड़ दिए जाएंगे (उसके मुंह से उगल दिया जाएगा, प्रकाशितवाक्य 3:16)।

(1) पहली चेतावनी (24:40-44)

(a) वे जो मसीह द्वारा मेघारोहण के समय ग्रहण किए गये (24:40-42)

प्रभु ने चेतावनी दी, "उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी" (24:40-41)। ये वचन मेघारोहण को दर्शाते हैं। जो लोग इस व्याख्या से असहमत हैं, वे संदर्भ और व्युत्पत्ति (शब्द की उत्पत्ति और विकc) की ओर इशारा करते हैं।

संदर्भ का उद्धरण देते हुए, वे दावा करते हैं कि संदर्भ मेघारोहण का नहीं हो सकता क्योंकि चेतावनी महाक्लेश से संबंधित भविष्यद्वाणियों के बाद आती है। उनके विचार में, यह कहना कि चेतावनी मेघारोहण को संदर्भित करती है, यह कहना है कि कलीसिया महाक्लेश से गुज़रेगी। ऐसा नहीं है! अध्याय की संरचना इसे तीन-भाग के विषयगत उपदेश के रूप में दिखाती है, जिसमें प्रत्येक विषय को एक अलग इकाई के रूप में माना जाता है। 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-5:11 और 2 थिस्सलुनीकियों 2:6-8 से स्पष्ट है कि कलीसिया महाक्लेश से होकर नहीं गुज़रती है। बाद का संदर्भ यह स्पष्ट करता है कि महाक्लेश के दौरान पवित्र आत्मा अब और नहीं रोकेगा और कलीसिया अब यहाँ नहीं रहेगी। यह रोकने वाले (कलीसिया में पवित्र आत्मा) का हटाया जाना है जो मसीह-विरोधी को मंच पर प्रकट होने में सक्षम करेगा, और जब तक मसीह-विरोधी नहीं आता तब तक महाक्लेश शुरू नहीं हो सकता।

व्युत्पत्ति शास्त्र में किया जाने वाला तर्क मत्ती 24:39 में "ले गया" शब्द पर टिका है: "जब तक जल-प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया।" तर्क यह है कि 24:39 में ले जाना न्याय में ले जाना है, इसलिए 24:40-41 में ले जाना न्याय में ले जाना है; प्रभु के वास्तविक राज्य में लौटने के समय, एक को न्याय में ले जाया

जाएगा और दूसरे को सहस्राब्दी राज्य में जाने के लिए छोड़ दिया जाएगा। यह व्याख्या तब तक काफी प्रशंसनीय लगती है जब तक हम प्रभु द्वारा इस्तेमाल किए गए वास्तविक शब्दों की जांच नहीं करते।

24:39 में उल्लेखित "ले गया" शब्द का मूल अनुवाद ऐरो है, जो जल-प्रलय की तरह ही हिंसात्मक तरीके में ले जाने का सुझाव देता है। यदि प्रभु 24:40-41 में न्याय में इसी तरह के ले जाने का सुझाव देना चाहता था, तो उसने निश्चित रूप से फिर से लक्ष्य का उपयोग किया होता। इसकी बजाय उसने 'परालम्बनो' शब्द का उपयोग किया। इस शब्द का उपयोग नकारात्मक अर्थ में किया जा सकता है, लेकिन इसे अक्सर नए नियम में बहुत ही कोमल तरीके से इस्तेमाल किया गया है। इसका अर्थ "शांति और आशीष के साथ किसी की तरफ से लिया जाना" हो सकता है। जेम्स स्ट्रॉन्ग की परिभाषा इस प्रकार है - (किसी भी परिचित या अंतरंग कार्य या संबंध में) "खुद के साथ जुड़ना।"[43] यह निश्चित रूप से लगता है कि प्रभु ने जानबूझकर एक अलग शब्द पेश करके एक अलग विचार पेश किया, जिसका अक्सर विपरीत अर्थ होता है।

उदाहरण के लिए, इस शब्द का प्रयोग दुल्हन को लेने के लिए किया जाता है, जैसा कि नए नियम में इस शब्द के पहले प्रयोग में है: "तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर" (मत्ती 1:20)। इसका प्रयोग रूपांतरण के अनुभव में हिस्सा लेने के लिए कुछ चेलों को चुनने के संबंध में किया गया है: "यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया" (मत्ती 17:1)। इसका प्रयोग प्रभु द्वारा अपने चेलों को उनके सुसमाचारीय अभियान से लौटने के बाद विश्राम के लिए ले जाने के वर्णन के लिए किया गया है: "और वह उन्हें अलग करके बैतसैदा नाम एक नगर को ले गया" (लूका 9:10)। सबसे बढ़कर, इस शब्द का प्रयोग प्रभु द्वारा अपने लोगों के लिए वापस आने का वर्णन करने के लिए किया गया है: "मैं फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा (यूहन्ना 14:3)।

जो लोग मत्ती 24:40-41 में कलीसिया के मेघारोहण को देखने से इनकार करते हैं, वे मत्ती के सुसमाचार की यहूदी स्वभाव का बहुत अधिक उपयोग करते हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि सुसमाचारों में मत्ती की पुस्तक में सबसे अधिक यहूदी झुकाव है, लेकिन यह एकमात्र ऐसा सुसमाचार भी है जिसमें कलीसिया का उल्लेख है। जैसा कि हम पहले भी देख चुके हैं, कलीसिया का उल्लेख प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह से किया गया है। यह कल्पना करना कठिन है कि प्रभु हमें कलीसिया और उसके मेघारोहण का उल्लेख किए बिना अंतिम समय की अपनी एक पूरी व्याख्या दे रहा है, जो उसके हृदय के सबसे करीब और प्रिय हैं।

मेघारोहण की आकस्मिकता और गंभीरता को देखते हुए, प्रभु ने अपने लोगों को काम करने और जागते रहने की चेतावनी दी। "इसलिए जागते रहो," उसने कहा, "क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा" (24:42)। यह भी बिना किसी तारीख के, गुप्त घटना के रूप में मेघारोहण का एक और संदर्भ है।

(b) वे लोग जिन्हें मसीह ने मेघारोहण के समय अस्वीकार कर दिया (24:43-44)

फिर से प्रभु ने अपने सुननेवालों को सावधान और तैयार रहने के बारे में चेतावनी दी। इसलिए उसने कहा, "जिस घड़ी के बारे में तुम सोचते भी नहीं, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा" (24:44)।

यहाँ "मनुष्य के पुत्र" की उपाधि के उपयोग पर बहुत अधिक चर्चा की गई है। यह मूलतः मसीह के पृथ्वी से सम्बन्ध से जुड़ी उपाधि है। यह उपाधि सुसमाचारों में चौरासी बार आती है, जिसमें परमेश्वर के लिए इस पृथ्वी को पुनः प्राप्त करने के विशेष उद्देश्य से उसके आगमन का अभिलेख है। पाप में गिरने के

परिणामस्वरूप, शैतान द्वारा इस पृथ्वी का अधिकार प्रथम मनुष्य से छीन लिया गया; यीशु उस अधिकार को पुनः प्राप्त करने के लिए मनुष्य के पुत्र के रूप में आया। पृथ्वी पर शासन करने का अधिकार केवल उसी का है (यहेजकेल 21:27)।

इस शीर्षक का उपयोग सुसमाचारों के बाहर शायद ही कभी किया गया है। यह प्रेरितों के काम 7:56 में आता है, जहाँ स्तिफनुस ने प्रभु को कलीसिया के पहले शहीद के रूप में उसका स्वागत करने के लिए परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़े देखा, उस दिन की आशा में जब वह शासन करने के लिए आएगा और कलीसिया को अपने साथ वापस ले जाएगा। इब्रानियों 2:6 में "मनुष्य के पुत्र" का एक संदर्भ पाया जाता है, जो वास्तव में भजन 8:4 से लिया गया एक उद्धरण है; इसमें इब्रानियों का लेखक प्रभु के संदर्भ में प्रथम मनुष्य आदम का उल्लेख कर रहा है। यह शीर्षक अंतिम विनाश के समय तक फिर से नहीं पाया जाता है, जहाँ इसका दो बार उपयोग किया गया है (प्रकाशितवाक्य 1:13; 14:14) और एक पुनर्निर्मित ग्रह पर धार्मिकता के साथ शासन करने के लिए प्रभु के आने की आशा करता है।

हम देख सकते हैं कि "मनुष्य का पुत्र" सच्ची कलीसिया से जुड़ी एक उपाधि नहीं है। कलीसियाई युग में हम "परमेश्वर के पुत्र" उपाधि का उपयोग करते हैं। मत्ती 24:39 में "मनुष्य का पुत्र" का उपयोग दर्शाता है कि कलीसिया का उठाया जाना प्रभु के सांसारिक लक्ष्यों को एक बार फिर ध्यान में लाएगा। 24:44 में "मनुष्य का पुत्र" का उपयोग दर्शाता है कि संबोधित किए गए लोग एक ऐसी दुनिया में छोड़ दिए जाएँगे जो हड़पने वाले द्वारा हड़पी जाने वाली है, एक ऐसी दुनिया जो इस ग्रह पर परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मनुष्य के पुत्र के रूप में यीशु के अंतिम आगमन की उम्मीद कर सकती है।

"मनुष्य का पुत्र" शीर्षक का उपयोग मेघारोहण के बाद की पृथ्वी की ओर इशारा करता है। हम 2 थिस्सलुनीकियों 2 से उन लोगों के भाग्य के बारे में सीखते हैं जो पीछे छोड़ दिए गए हैं, जो केवल मसीह को जानने का दावा करते हैं, जो सच्ची कलीसिया से संबंधित नहीं हैं। वे पाप के मनुष्य द्वारा पूरी तरह से धोखा खा जाएंगे। इसलिए मत्ती 24:44 में चेतावनी और उसके पेन्तेकुस्त से पूर्व और मेघारोहण के बाद की उपाधि का स्पष्ट उपयोग किया गया है।

(2) आगे की चेतावनी (24:45-51)

जैतून के उपदेश के इस भाग में प्रभु की सेवा में व्यस्त रहने पर अधिक ज़ोर दिया गया है। 24:40-41 में दो लोग खेत में थे और दो चक्की पीस रहे थे; प्रत्येक जोड़े में, उनमें कोई भी ऐसी बाहरी बात अलग नहीं थी जो मेघारोहण में उठाए गए व्यक्ति और न्याय के लिए पीछे छोड़े गए व्यक्ति के बीच दिखती थी। 24:45-51 में दो दासों के बीच का अंतर स्पष्ट है। (इन आयतों में "प्रभु" शीर्षक पर ज़ोर दिया गया है।)

(a) बुद्धिमान दास - जिसे उठा लिया गया (24:45-47)

यह दास व्यस्त है, और प्रभु ने उसे जो कार्य सौंपा है, उसे पूरी लगन से पूरा कर रहा है। क्योंकि वह "विश्वासयोग्य और बुद्धिमान" है (24:45), इसलिए उसे मसीह के सिंहासन के सामने प्रतिफल मिलने की निश्चितता है। प्रभु ने उसे "धन्य" कहा (24:46), क्योंकि सहस्त्राब्दी युग में उसे अधिकारी बनाया जाएगा।

(b) दुष्ट दास—जिसे छोड़ दिया गया (24:48-51)

यह व्यक्ति खुद को बिल्कुल भी सच्चा दास साबित नहीं करता। यीशु ने उसे "वह दुष्ट दास" (24:48) बुलाया। यहाँ "दुष्ट" का मूल अनुवाद 'काकोस' है, जिसका अर्थ है "अधर्मी, स्वभाव से बुरा।" दुष्ट सेवक एक बुरा स्वभाव वाला व्यक्ति होता है। उसे प्रभु के आने के बारे में कोई विश्वास नहीं है। वह अपने अधिकार का दुरुपयोग करता है; वह अपने अधीन लोगों को गाली देता है; वह शराबियों के साथ संगति करता है। प्रभु का आना उसे पूरी तरह से आश्चर्यचकित में डाल देगा। उसे महान श्वेत सिंहासन के सामने लाया जाएगा और उसे पाखंडियों के साथ "रोने और दाँत पीसने" की जगह पर भेजा जाएगा। मसीही होने के अपने सभी दिखावों के बावजूद, दरअसल उसने कभी उद्धार नहीं पाया है।

ग. प्रभु के अंत समय के दृष्टांत (25:1-46)

मत्ती 25 वास्तव में मत्ती 24 की भविष्यद्वाणीय उपदेश का एक दृष्टांतिक पूरक है। भविष्यवाणी की तरह, दृष्टान्त मनुष्यजाति के तीन भागों पर प्रकाश डालते हैं: यहूदी, अन्यजाति, और कलीसिया। पहला दृष्टांत इस्राएल से संबंधित है, दूसरा कलीसिया से, और तीसरा अन्यजाति राष्ट्रों से। क्रम अलग है, लेकिन विषय समान ही हैं।

1. इस्राएल राष्ट्र के लिए: कुँवारियों का दृष्टान्त (25:1-13)

बुद्धिमान और मूर्ख कुंवारियों का दृष्टांत बहुत प्रसिद्ध है, लेकिन इसका बहुत दुरुपयोग किया जाता है। दुल्हन के लिए दूल्हे का आना कलीसिया के उठाए जाने का एक स्पष्ट संदर्भ है, लेकिन उस बिंदु से, कलीसिया तस्वीर से लगभग बाहर हो जाती है और पूरा ध्यान इस्राएल के लोगों पर केंद्रित हो जाता है। यह मेघारोहण के बाद का एक दृष्टांत है और इसे उसी प्रकाश में समझा जाना चाहिए।

मेघारोहण के बाद परमेश्वर इस्राएल और अन्य राष्ट्रों के साथ व्यवहार करने के अपने पुराने नियम के तरीकों पर लौट आएगा। कलीसियाई युग मनुष्यजाति के साथ परमेश्वर के व्यवहार में एक स्पष्ट रूप से चिह्नित कोष्ठक है, एक ऐसा कोष्ठक जो पिन्तेकुस्त के दिन से शुरू हुआ और मेघारोहण के साथ समाप्त होगा। पैतृक युग की अनोखी विशेषता पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने वाला कार्य है।

क. विवाह का बुलाहट (25:1-5)

यह दृश्य इस्राएल का है जो कलीसिया के मेघारोहण के तुरंत बाद का है। प्रभु मंच पर आता है, साथ ही दस कुँवारियाँ भी आती हैं। दस की संख्या पूर्णता को दर्शाती है, जैसा कि दस आज्ञाओं में है। (कलीसिया में नियंत्रित संख्या दस नहीं, बल्कि "दो या तीन" है, जैसा कि मत्ती 18:20 में वर्णित है।) दस कुँवारियाँ (दूल्हे की सहेलियाँ) दूल्हे से मिलने के लिए आगे बढ़ती हैं। वे कलीसिया का प्रतिनिधित्व नहीं करती हैं; दुल्हन कलीसिया का प्रतिनिधित्व करती है। न ही कुँवारियाँ मेघारोहण में थीं, लेकिन उन्हें स्वागत समारोह में आमंत्रित किया गया था।

(1) स्वर्गीय दूल्हा (25:1)

बाइबल के समय में दूल्हा सबसे पहले अपनी दुल्हन के घर जाता था और फिर उसे अपने घर ले आता था। रास्ते में उसके कई मित्र शामिल होते थे जब तक कि जुलूस पूरा नहीं हो जाता था। फिर वे सभी शादी के भोज में जाते थे। दृष्टांत में स्वर्गीय दूल्हा अपनी दुल्हन, कलीसिया के लिए आया है, और जुलूस में शामिल

होने के लिए इस्राएल को बुलाया जाता है। समय आने पर दूल्हा और दुल्हन से मिलने के लिए आगे बढ़ने के लिए इच्छुक और तैयार लोगों का एक समूह बनाया जा रहा है। यहाँ बेशक दूल्हा मसीह है। मूर्ख कुँवारियों द्वारा उसे "प्रभु" (25:11) और स्वयं यीशु द्वारा "मनुष्य का पुत्र" (25:13) के रूप में संदर्भित किया गया है।

बहुत से लोग कलीसिया के उठाए जाने (प्रकाशितवाक्य 7) के बाद बचाए जाएँगे। बेशक वे कलीसिया में नहीं होंगे क्योंकि कलीसिया स्वर्ग में होगी, लेकिन वे राज्य में होंगे। महाक्लेश के युग के दौरान वे राजा के वापस आने की उत्सुकता से प्रतीक्षा करेंगे - कम से कम बुद्धिमान लोग तो ऐसा ही करेंगे। बहुत से अन्य लोग बचाए जाने का केवल दावा करेंगे।

(2) पवित्र आत्मा (25:2-5)

(a) परमेश्वर के आत्मा की उपेक्षा करना (25:2-4)

दृष्टांत में, कुछ कुँवारियाँ तेल की उपेक्षा करती हैं, जो पवित्र आत्मा का प्रतीक है। कई मायनों में सभी दस कुँवारियाँ एक जैसी हैं। उन सभी के पास मशालें तो हैं; वे सभी दूल्हे से मिलने के लिए निकलती हैं; बाद में वे सभी सो भी जाती हैं। बाहरी तौर पर सभी कुँवारियाँ एक जैसी दिखती हैं; जो बात उन्हें अलग करती है वह है उनके पास तेल की आपूर्ति। बुद्धिमान कुँवारियों के पास उनकी मशालों में और उनकी कुप्पियों (बर्तनों) में अतिरिक्त तेल मौजूद है। मूर्ख कुँवारियों की मशालों में तो तेल है, लेकिन उन्होंने अपनी कुप्पियों में तेल नहीं लिया। यही महत्वपूर्ण अंतर है।

मशालें परमेश्वर के वचन (भजन 119:105) का प्रतीक हैं, जो पापभरी इस अंधेरी दुनिया में आत्मिक ज्योति का एकमात्र स्रोत है। प्रत्येक कुंवारी के पास एक मशाल है और वह जानती है कि अंधेरे में मार्ग खोजने में इसका उपयोग करना आवश्यक है। मशालों में तेल यह दर्शाता है कि उनमें से प्रत्येक के पास परमेश्वर का वचन है जो उनके लिए परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्रकाशित है, क्योंकि केवल परमेश्वर के आत्मा के कार्य से ही परमेश्वर का वचन अपना प्रकाश फैलाता है (1 कुरिन्थियों 2:14)। प्रत्येक कुँवारी को पवित्र आत्मा के आरंभिक प्रकाशमय कार्य से लाभ मिला है।

ये कुप्पियाँ व्यक्तियों के निजी जीवन को दर्शाती हैं (भजन 31:12; प्रेरितों के काम 9:15; 1 पतरस 3:7)। हमारे जीवन में परमेश्वर के कार्य के विषय में, हमें स्मरण दिलाया गया है कि "परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ हमारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर ही की ओर से ठहरे" (2 कुरिन्थियों 4:7)।

दृष्टांत में सभी दस कुँवारियाँ अपनी मशालों में तेल लेकर निकलती हैं। उपेक्षा के कारण सभी दसों की मशालें बुझने लगी। सभी को शुरू में ज्ञान प्राप्त हुआ, लेकिन बाद में उन्होंने परमेश्वर के वचन की सच्चाई की उपेक्षा की। हालाँकि, पाँच कुँवारियों की कुप्पियों में तेल भी है। दूसरे शब्दों में, पाँच के जीवन में पवित्र आत्मा है और पाँच के जीवन में नहीं। बाहरी तौर पर वे एक जैसे दिखते हैं, लेकिन अंदर से वे बिल्कुल अलग हैं। कुछ वास्तव में बचाए गए हैं, अन्य बचाए नहीं गए। उन्होंने उस नया जन्म देने वाले पवित्र आत्मा को प्राप्त करने के सभी महत्वपूर्ण कदमों की उपेक्षा की जो वचन के द्वारा उनके जीवन में चमका था।

(b) परमेश्वर के पुत्र की उपेक्षा करना (25:5)

जब दूल्हे के आने में देरी होने लगती है, तो सभी दस कुँवारियाँ सो जाती हैं। आत्मिक अनुभव को सुस्त करने की शरीर की प्रवृत्ति खुद कार्य करने लगती है।

ख. आधी रात की पुकार (25:6-10)

(1) अतिथियों को जगाया गया (25:6-9)

आधी रात को कुछ ऐसा होता है जो सबको जगा देता है—अंतिम समय की घटनाओं की कुछ अधिक तीव्रता, परमेश्वर की कोई स्पष्ट पुकार का सुनाई देना। ठीक आखिरी क्षण में एक पुकार सुनाई देती है: "देखो, दूल्हा आ रहा है, उस से भेंट करने के लिये चलो" (25:6)। इस समय उन मूर्ख कुँवारियों को अपनी दुःखद गलती का एहसास होता हैं कि उनके बर्तनों में तेल नहीं है। बुद्धिमान कुँवारियाँ अपनी मशालें फिर से जलाने में सक्षम रहती हैं; उनके पास वह सब है जो बाइबल की सच्चाई को एक बार फिर से समझने के लिए चाहिए। वे मूर्ख कुँवारियाँ चाहती हैं कि बुद्धिमान कुँवारियाँ उनके साथ अपना तेल बाँटें, लेकिन किसी को भी किसी और के आत्मिक अनुभव के बल पर नहीं बचाया जा सकता। केवल परमेश्वर ही पवित्र आत्मा प्रदान कर सकता है। मूर्ख कुँवारियाँ अपने बर्तनों को भरने के लिए बहुत देर तक इंतज़ार करती हैं; लेकिन अंततः वे तेल की व्यर्थ तलाश में ठोकर खाती हैं।

(2) दूल्हा आता है (25:10)

जब मूर्ख कुँवारियाँ दूर ही होती हैं, तो दूल्हा आ जाता है। जो तैयार हैं वे उसके साथ विवाह में जाती हैं, और दरवाज़ा बंद हो जाता है (नकारात्मक शब्द)। मूर्ख कुँवारियाँ न केवल मेघारोहण से चूक जाती हैं; बल्कि वे स्वागत समारोह से भी चूक जाती हैं। उन्हें हर चीज़ से बाहर कर दिया जाता है।

ग. गलत दावा (25:11-13)

(1) पुकार (25:11-12)

जब मूर्ख कुँवारियाँ वापस लौटती हैं, तो वे दरवाज़ा खटखटाती हैं और कहती हैं, "हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिये द्वार खोल दे," लेकिन वह जवाब देता है, "मैं तुम्हें नहीं जानता।" उनके पास एक विश्वासी की भाषा है, लेकिन एक विश्वासी का जीवन नहीं है। बाइबल यह नहीं बताती कि उनके साथ क्या होता है। यह बस इतना कहती है कि दरवाज़ा बंद है। वे गलत छोर पर हैं, और वे उस प्रभु द्वारा तिरस्कृत कर दी जाती हैं जिसका नाम वे इतनी निर्लज्जता से लेती थी।

(2) लागू किया जाना (25:13)

यह दृष्टांत एक चेतावनी के साथ समाप्त होता है: "इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को, जब मनुष्य का पुत्र आएगा।" यह चेतावनी पाप से भरे, शैतान द्वारा शासित पृथ्वी में सभी पर लागू होती है। उन्हें चेतावनी दी जाती है कि वे ईश्वरीय ज्योति और ईश्वरीय जीवन के अधिकार की उपेक्षा न करें। इसमें कोई संदेह नहीं कि बहुत से लोग कलीसिया के मेघारोहण और "दो गवाहों" और "एक लाख चौवालीस हजार" द्वारा शुरू की गई नई आत्मिक जागृति के उदय से जागृत हुए होंगे (प्रकाशितवाक्य 11:3; 7:4)। लेकिन ऐसे बहुत से लोग होंगे जो - यद्यपि मेघारोहण, महाक्लेश और राज्य के सत्य के प्रति जागृत हैं - लेकिन मसीह को व्यक्तिगत रूप से ग्रहण करने के सबसे महत्वपूर्ण कदम की उपेक्षा करेंगे। वे

सो जाएंगे, और फिर जब तक कि बहुत देर न हो जाए, वे कभी नहीं जागेंगे। वे समय के संकेतों और प्रभु के आगमन की 1,260 दिन की उल्टी गिनती के प्रति उदासीन रहेंगे।

2. स्वर्ग के नागरिकों के लिए: तोड़ों का दृष्टान्त (25:14-30)

यह स्पष्ट रूप से कलीसिया के लिए दिया गया एक दृष्टांत है। धनवान व्यक्ति के जाने और वापस आने के बीच की अवधि प्रभु के स्वर्गारोहण और कलीसिया के मेघारोहण के बीच की अवधि को दर्शाती है। यह दृष्टांत जवाबदेही का है और यह हम पर लागू होता है जो इस युग में जी रहे हैं जबकि प्रभु अभी दूर हैं। यह दो दिनों से संबंधित है: जिम्मेदारी का दिन (वर्तमान युग) और लेखा देने का दिन (मसीह के न्याय आसन के सामने)।

क. जिम्मेदारी का समय (25:14-18)

जब राज्य का युग आएगा, तो प्रभु को अपने कार्यों का प्रबंधन करने के लिए बहुत से लोगों की आवश्यकता होगी। वर्तमान परीक्षण के युग में हमें तोड़े और प्रतिभाएँ दी गई है, और जिस तरह से हम उनका उपयोग करते हैं, वह सहस्त्राब्दी राज्य में हमारी स्थिति को निर्धारित करेगा। प्रतिभाएँ (तोड़े) वे आत्मिक वरदान हैं जो परमेश्वर द्वारा सभी विश्वासियों को प्रदान किये जाते हैं।।

इब्रानियों (इस्राएलियों) के बीच इस्तेमाल होने वाला सबसे भारी वजन "तोड़े" हुआ करते थे। इसका वजन उतना ही था जितना एक आदमी इसे उठा सकता था। इसलिए एक तोड़ा पाने वाले दास को भी कुछ ऐसा मिला था जो अतुलनीय था। प्रतिभा की महानता को कभी कम नहीं आंकना चाहिए। हमारे प्रभु ने हम में से हर एक को बहुत बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है।

कहानी में तीन दासों में से दो तुरंत काम पर लग जाते हैं। तीसरे दास ने अपने तोड़े को छिपा लिया। स्वामी, जो लोगों का चतुर न्यायी था, जानता था कि तीसरे दास में कुछ योग्यता है, भले ही वह दूसरों की तुलना में कम क्यों न हो। उसके पास अपने तोड़े को छिपाने का कोई बहाना नहीं था। उसे प्रभु की वापसी पर प्रशंसा के शब्द प्राप्त करने के लिए वह सब कुछ करना चाहिए था जो वह कर सकता था। उपेक्षा के कारण वह एक निकम्मा दास बन गया।

ख. लेखा देने का समय (25:19-30)

"बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी आकर उन से लेखा लेने लगा" (25:19)। यह एक कथन इस दृष्टान्त की व्याख्या को हमारे अपने युग के अनुसार निर्धारित करता है। प्रभु महाक्लेश के दौरान भी दूर रहेगा, लेकिन वे दिन कम किए जाएंगे (24:22)। यह वर्तमान युग है जो प्रभु की लंबी अनुपस्थिति से चिह्नित किया गया है।

लेखा देने का दिन आ रहा है जब "हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के साम्हने खड़े होंगे" (रोमियों 14:10; 2 कुरिन्थियों 5:10 को भी देखें)। न्याय सिंहासन विश्वासियों के लिए है, अविश्वासियों के लिए नहीं।

(1) योग्य सेवक (25:19-23)

पहले दो दासों को उनकी विश्वासयोग्य सेवा के लिए सराहा गया और उन्हें "बहुत वस्तुओं का अधिकारी" बनाकर पुरस्कृत किया गया। एक मुकुट (2 तीमुथियुस 4:8), एक सिंहासन (प्रकाशितवाक्य 3:21), और

एक राज्य (मत्ती 25:34) हमें विश्वासयोग्य सेवा के प्रति प्रोत्साहन के रूप में दिया गया है। कलीसिया के युग में हम जो हासिल करते हैं, उसका आनंद हम राज्य के युग में उठाएँगे।

(2) निकम्मा दास (25:24-30)

तीसरे दास के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। आइए हम ध्यान से उसकी स्थिति पर विचार करें। प्रभु, जो आम तौर पर अपना काम उद्धार पाए हुए लोगों को सौंपता है, ने तीनों लोगों को तोड़ें सौंपी। उन तीनों को "उसके अपने दास" (25:14) कहा गया था, इसलिए तीसरे दास को, पहले दो दासों की तरह ही, प्रभु ने अपने में से एक के रूप में अपना लिया। इस दृष्टांत में "दास" शब्द का अर्थ "सेवक" है, इसलिए तीसरा व्यक्ति वह था जिसे स्वामी ने खरीदा था। उसका न्याय दूसरों के साथ ही किया गया था - यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है क्योंकि उद्धार न पाए हुए लोगों का न्याय मसीह के न्याय आसन पर नहीं, बल्कि बाद में महान श्वेत सिंहासन पर किया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:11-15)। उसका न्याय एक सेवक के रूप में किया गया था - और मसीह के न्याय आसन पर जो देखा जाएगा वह सेवा है, पुत्रत्व नहीं। तीनों दासों का न्याय उनके प्रदर्शन के आधार पर किया गया था, न कि उनके व्यक्तित्व के आधार पर।

(a) उसका बहाना (25:24-25)

चोट पर नमक छिड़कते हुए उस निकम्मे दास ने उत्तर दिया, "हे स्वामी, मैं तुझे जानता था, कि तू कठोर मनुष्य है, सो मैं डर गया।" उसके बहाने पूरी तरह से खारिज कर दिए गए।

(b) उसका पर्दाफ़ाश (25:26-30)

i. उसका दण्ड (25:26-29)

वह किसी घोर पाप का दोषी नहीं था। वह कोई हत्यारा या चोर या पियक्कड़ नहीं था, जैसा कि 24:49 में वर्णित है। उस पर केवल लापरवाही का आरोप लगाया गया था। न्याय के समय वह केवल वही तोड़ा दिखा सका जो उसे सौंपा गया था, इसलिए उसे दोषी ठहराया गया। उसे "दुष्ट" घोषित किया गया (25:26; यहाँ "दुष्ट" शब्द का मूल अनुवाद पोनेरोस है, जिसका उपयोग अक्सर गलत व्यवहार की दुर्भावना का वर्णन करने के लिए किया जाता है)। उस व्यक्ति के पास एक बची हुई आत्मा और एक खोया हुआ जीवन था। उससे उसका तोड़ा छीन लिया गया, जिसे बाद में पहले दो सेवकों में से अधिक योग्य सेवक को दे दिया गया।

ii. उसकी नियति (25:30)

यह बताए जाने के बाद कि उसे अपने तोड़े के साथ क्या करना चाहिए था, उसे "बाहर के अँधेरे" में डाल दिया गया, जहाँ "रोना और दाँत पीसना" है। यह पद निश्चित रूप से इस दृष्टांत में सबसे कठिन कथन है क्योंकि यह दर्शाता है कि उस दास ने बिल्कुल उद्धार नहीं पाया था, एक ऐसा निष्कर्ष जो दृष्टांत के बाकी हिस्सों के विरोधाभासी है।

इस कथन का और क्या तात्पर्य हो सकता है? यह किसी तरह के यातना-स्थल का उल्लेख नहीं करता है, क्योंकि बाइबल ऐसी किसी जगह के बारे में नहीं जानती है; यातना-स्थल कैथोलिक धर्मशास्त्रियों की खोज है। इस कथन का यह अर्थ नहीं हो सकता कि मनुष्य एक बार बचाया गया था और किसी तरह उसने अपना

उद्धार खो दिया, क्योंकि ऐसा विचार पूरे नए नियम के मूल भाव के बिल्कुल विपरीत है, जो इस बात से इनकार करता है कि उद्धार किसी भी तरह से हमारे कार्यों पर निर्भर है।

इस पद में निहित कठिनाई से बचने के लिए, कुछ लोगों ने "बाहर के अँधेरे" के स्थान को राज्य में किसी दूरस्थ स्थान के रूप में देखा है, लेकिन यकीनन यरूशलेम में केंद्रीय महिमा से बहुत दूर का एक स्थान। लेकिन बाइबल ऐसे किसी स्थान के बारे में नहीं बताती है। और यह सिद्धांत "रोने और दांत पीसने" की व्याख्या नहीं करता है, जो कि अन्यत्र नरक में खोए हुए लोगों की पीड़ा को संदर्भित करने के लिए इस्तेमाल की गई एक अभिव्यक्ति है।

तो फिर हम उस निकम्मे दास की नियति के बारे में क्या जानते हैं? हम जानते हैं कि व्यक्तिगत उद्धार का प्रश्न मसीह के न्याय सिंहासन के सामने नहीं उठाया जाएगा। हम यह भी जानते हैं कि फटकार और प्रतिफल, जैसा भी मामला हो, उपेक्षा या सेवा के अनुरूप ही मिलेंगे। चूँकि यह दास प्रभु के अपने लोगों में से एक था, इसलिए हम उसे खोई हुई अनंतता की ज्वाला में व्यक्तिगत पीड़ा को सहते हुए नहीं देख सकते। लेकिन क्या ऐसा नहीं हो सकता कि उसके जैसे अविश्वासी दासों को "बाहर के अँधेरे" के उस स्थान पर ले जाया जाएगा, पीड़ा सहने के लिए नहीं बल्कि देखने के लिए? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि उसे वहाँ ले जाया जाए जहाँ "रोना और दाँत पीसना" हो, न कि उसे दण्डित या यातना देने के लिए, बल्कि उन आत्माओं को देखने के लिए जिन्हें वे प्रभु में जीत सकते थे - या अपनी पापपूर्ण विफलता और उपेक्षा का परिणाम देखने के लिए? ऐसा हो सकता है।

फिर अनुग्रह में प्रभु उनके आँसू को पोंछ डालेगा, और न्याय समाप्त हो जाएगा। कलीसिया फिर हमेशा के लिए दोष से मुक्त हो जाएगी। प्रतिफल पाए हुए लोग मसीह के साथ राज्य करेंगे। अन्य लोग, दृष्टांत में वर्णित उस अविश्वासी दास की तरह, “आप बच जाएगा परन्तु जलते जलते” राज्य में प्रवेश करेंगे और, कम से कम सहस्राब्दी युग के लिए, नुकसान उठाएँगे (1 कुरिन्थियों 3:12-15)।

3. पृथ्वी के राष्ट्रों के लिए: भेड़ों और बकरियों का दृष्टांत (25:31-46)

इस पद्यांश में, पहली और आखिरी बार प्रभु यीशु ने खुद को राजा के रूप में संदर्भित किया। दृष्टांत बताने के तुरंत बाद वह एक ठट्ठा उड़ाने वाले संसार के द्वारा काँटों का मुकुट पहनाए जाने के लिए अपने रास्ते पर चल पड़ा। क्रूस केवल उससे तीन दिन दूर था।

क. एक सिंहासन (25:31)

जब महाक्लेश और हर-मगिदोन का युद्ध खत्म हो जाएगा, तो मनुष्यजाति के जो लोग बचे रहेंगे (युद्ध, अकाल, भूकंप, महामारी और सर्वनाश की पीड़ा के बाद) उन्हें न्याय के लिए यरूशलेम के पास यहोशापात की घाटी में इकट्ठा किया जाएगा (योएल 3:2,12)। उस घाटी में प्रभु एक सिंहासन स्थापित करेगा अर्थात् "अपनी महिमा का सिंहासन।" प्रभु यीशु का इस ग्रह पर सामर्थ्य और महिमा के साथ विराजमान होना, कुछ हद तक बिलकुल सही होगा।

राष्ट्रों का यह न्याय पवित्रशास्त्र में वर्णित अन्य न्यायों से अलग होगा। इसका उद्देश्य यह तय करना होगा कि पृथ्वी पर अभी भी जीवित लोगों में से किसे सहस्त्राब्दी राज्य में प्रवेश करने की अनुमति दी जाए।

ख. एक भीड़ (25:32-33)

सिंहासन के सामने तीन अलग-अलग समूह इकट्ठे होंगे: जिन्हें "भेड़" कहा गया है, जिन्हें "बकरी" कहा गया है, और जिन्हें प्रभु ने "मेरे भाई" कहा है (25:40)। उसका तात्पर्य किन भाइयों से था? हम नए नियम में तीन "पारिवारिक मंडलियों" का पता लगा सकते हैं: (1) वे जो प्रभु के भाई हैं क्योंकि वे नया जन्म पाए हुए हैं और परमेश्वर उनका पिता है (इब्रानियों 2:11); (2) वे जो यीशु के पृथ्वी पर रहने के समय उसी मानवीय परिवार से संबंधित थे, मरियम और यूसुफ की स्वाभाविक संतान (मत्ती 12:47); और (3) इब्रानी राष्ट्र के सदस्य, जिन्होंने हमेशा राष्ट्रीय भाईचारे की एक मजबूत भावना का आनंद उठाया (व्यवस्थाविवरण 17:15-20)। यही वह तीसरा मंडल था जिसका उल्लेख प्रभु ने दृष्टांत में किया था जब उसने "मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक" के बारे में बात की थी। वे यहूदी थे; वे उसी राष्ट्र के थे जिसमें वह था।

राष्ट्रों के बचे हुए लोग, मनुष्यजाति के बचे हुए लोग जो सिंहासन के संमुख इकट्ठे हुए हैं, दो वर्गों में विभाजित किये जायेंगे: भेड़ और बकरियाँ। भेड़ों को प्रभु अपने लोग मानेगा; जबकि बकरियों को वह अस्वीकार करेगा। यह ध्यान रखना दिलचस्प होगा कि बकरी स्वाभाविक रूप से झगड़ालू, कामुक, विनाशकारी और बुरी गंध वाला जानवर है, जिसे अक्सर शैतानवाद और जादू-टोने से जोड़ा जाता है।

इस न्याय की पृष्ठभूमि महाक्लेश होगी। यह पशु साढ़े तीन साल तक उत्पात मचाता रहेगा, और सच्चे परमेश्वर की उपासना के सभी चिह्नों को बेरहमी से मिटाता रहेगा। क्रूर बर्बरता और भय उसकी नीति के साधन होंगे; उसकी घृणा का विशेष लक्ष्य, यहूदी होंगे। यहाँ-वहाँ कुछ साहसी गैर-यहूदी भागते हुए और परमेश्वर के अनुग्रह से उस प्रलय से बचे हुए यहूदियों को शरण देंगे। ऐसे "धर्मी गैर-यहूदी", जैसा कि यहूदी उन्हें पुकारते हैं, गिनती में बहुत कम होंगे। अधिकांश लोग पशु के भय से इतने भयभीत हो गए होंगे कि वे मदद करने का साहस नहीं जुटा पाएंगे।।

इस निर्णय की कसौटी सरल होगी। न्यायी पूछेगा, "तुमने मेरे भाइयों के साथ क्या किया? तुमने यहूदियों के साथ क्या किया? क्या तुमने उन्हें शरण दी या उन्हें सताया और धोखा दिया? जो कुछ हो रहा था, क्या तुमने उस के प्रति अपनी आंखें मूंद लीं थी?" कसौटी यह नहीं होगी कि "तुमने यीशु के साथ क्या किया?" बल्कि यह होगी कि "तुमने यहूदियों के साथ क्या किया?" यह परमेश्वर की ओर से एक परीक्षा होगी। राष्ट्रों के न्याय के समय प्रभु यहूदियों के प्रति व्यक्तिगत रवैये को इस बात के प्रतीक के रूप में स्वीकार करेगा कि यदि उन्होंने प्रभु के बारे में सुना होता तो उसके प्रति उनका रवैया कैसा होता। वहीं उस व्यक्ति ने यहूदियों के साथ जो किया, वह इस बात का प्रमाण होगा कि उसने यीशु के साथ क्या किया होगा। सताए गए यहूदियों का विश्वव्यापी फैलाव, सभी को यहूदियों के प्रति सद्भावना का संकेत देने का अवसर देगा।

इसलिए इस ग्रह के बचे हुए लोग इस महान् मुकद्दमे के लिए यरूशलेम और यहोशापात की घाटी की ओर आकर्षित होंगे। जो यहूदी अभी भी जीवित हैं, जो सभी अब विश्वासी हैं, वे मसीह के साथ खड़े होंगे; वे शायद ही यह विश्वास करने की हिम्मत कर पाएँगे कि उनका दुःस्वप्न समाप्त हो चुका है। अन्यजातियों की विविधतापूर्ण, फटेहाल और दुमदार भीड़, जो हजारों भाषाएं बोलती है, राजा के सामने इकट्ठी होगी; वे पशु के सात वर्षीय शासन को झेल चुके होंगे, लेकिन उनमें से कईयों पर उसके सड़ते हुए चिह्न के साथ अनंत काल तक दाग लगा रहेगा। "जिसे उन्होंने बेधा है, उस पर दृष्टि करेंगे" (यूहन्ना 19:37)।

ग. एक रोमांच (25:34-46)

यहोशापात की घाटी (जिसे यीशु के दिनों में किद्रोन घाटी कहा जाता था) यरूशलेम और जैतून के पहाड़ के बीच स्थित है। यरूशलेम के उस पार गतसमनी का बगीचा मनुष्यों के हाथों राजा को होने वाले कष्टों की गंभीर गवाही देगा।

उस महान मुकद्दमे में, भेड़ के रूप में वर्णित लोगों को राजा के दाहिनी ओर खड़ा किया जाएगा - अर्थात् यरूशलेम की ओर। बकरियों के रूप में वर्णित लोगों को उसके बाई ओर खड़ा किया जाएगा - अर्थात् हिन्नोम की अशुभ तोपेत घाटी की ओर। जो लोग जीवन के लिए चुने गए हैं उनके लिए आनन्द का माहौल होगा, और जो लोग न्याय के लिए चुने गए हैं उनके लिए भय का माहौल होगा।

(1) छुड़ाए गए लोगों का आनन्द (25:34-40)

"भेड़ें" आश्चर्य के साथ खड़ी होंगी और राजा उनसे कहेगा, "हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया..." (25:34-36) तब वे आनन्द और आश्चर्य से उत्तर देंगे, "हमने कब तुझे भूखा देखा...?" (25:37-39)

"बकरियाँ" भी उसी तरह जवाब देंगी: "कब...?" (25:44)। दोनों में से कोई भी वर्ग राजा को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता होगा। उन्हें इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं रहा होगा कि उनका व्यवहार परमेश्वर के प्रति एक दृष्टिकोण का विज्ञापन था जिसमें सर्वज्ञता संभावित विश्वास या अडिग अविश्वास देख सकती थी।

पवित्र आत्मा उन लोगों को "धर्मी" कहता है जिन्हें मसीह के दाहिने हाथ खड़े होने के लिए चुना जाएगा (25:37), इसलिए उनके हृदय में कम से कम विश्वास का बीज अवश्य होगा।। रोमियों 4:3 हमें बताता है कि "अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया।" अपने दिलों में विश्वास के बीज के साथ ये गैर-यहूदी अब्राहम की आशीष में शामिल हो जाएँगे: परमेश्वर ने उससे वादा किया था, "जो तुझे आशीष दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे" (उत्पत्ति 12:3)।

मत्ती 25:40 में प्रभु ने वह सिद्धांत बताया जो इन "धर्मी" अन्यजातियों की स्वीकृति का आधार होगा: " तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।" वह जो सभी हृदयों को पढ़ लेता है और जिसका अपना हृदय सभी संकीर्णताओं से मुक्त है, वह यह स्वीकार करेगा कि "भेड़ों" ने यहूदी के लिए जो कुछ किया है, वह उसके लिए किया गया है। जैसा किसी कवि ने लिखा है, "परमेश्वर की दया में एक विशालता है / समुद्र की विशालता के समान।"[44]

(2) तिरस्कृत लोगों की भयानकता (25:41-46)

जो लोग उसके बाई ओर इकट्ठे होंगे, उनके पास अब कोई उम्मीद नहीं होगी। बहुतों पर पशु का चिह्न लगा होगा। सभी को याद होगा कि उन्होंने यहूदी को कोसा या लात मारी थी, या यहूदी को यातना देने वालों के हवाले किया था, या यहूदी को एक कटोरा ठंडा पानी देने से मना किया था। प्रभु उनके जीवन में कुछ भी मूल्यवान चीज़ नहीं ढूँढ़ पाएँगा। वह उन पर हत्या, घोर यौन संबंधी पाप या गरीबों को लूटने का आरोप नहीं लगाएगा। उनके दंडनीय पाप चूक के पाप होंगे, न कि जो उन्होंने किया है बल्कि जो उन्होंने नहीं किया है। उन्होंने उसे रोटी, पानी या वस्त्र नहीं दिए थे।

ये "बकरियाँ" अपने दण्ड के विषय में कड़वी शिकायत करेंगी। वे कहेंगे, "हे प्रभु, हम ने तुझे कब भूखा, या प्यासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की?" (25:44) तब जवाब आएगा: "तुम ने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया" (25:45)। आगे फिर कोई चर्चा नहीं होगी। ये लोग “अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे" (25:46)।

यहाँ पर जैतून पहाड़ी पर दिया गया उपदेश समाप्त होता है - लेकिन वास्तव में एक गंभीर टिप्पणी के साथ। प्रभु की नियति अब उसे क्रूस, कब्र और उसके पिता के सिंहासन की महिमा तक ले जाएगी।

खंड 2

उसके तिरस्कार का स्वरूप (26:1-27:66)

1. फंदा (26:1-5)
    1. उद्धारकर्ता की चेतावनी (26:1-2)
        1. जैतून पहाड़ी के उपदेश का सारांश (26:1)
        2. उसकी अपनी मृत्यु की निकटता (26:2)
            1. आने वाला फसह का पर्व (26:2a)
            2. आने वाला दुःखभोग (26:2b)
    2. महासभा की दुष्टता (26:3-5)
        1. लोग (26:3a)
        2. स्थान (26:3b)
        3. योजना (26:4-5)
            1. चतुराई से काम लेना (26:4)
                1. प्रभु की गिरफ्तारी को सुनिश्चित करने के लिए (26:4a)
                2. प्रभु के क्रूसीकरण को सुनिश्चित करने के लिए (26:4b)
            2. सावधानी बरतना (26:5)
2. सत्य (26:6-13)
    1. स्त्री का आगमन (26:6-7)
        1. जहाँ उसने प्रभु को खोजा (26:6)
        2. वह प्रभु के लिए क्या लेकर आई (26:7)
            1. उसके कार्य की महँगी कीमत (26:7a)
            2. उसके कार्य की विशिष्टता (26:7b)
    2. स्त्री के आलोचक (26:8-9)
        1. उन्होंने उसकी आराधना को व्यर्थ बताया (26:8)

2. उन्होंने उसकी आराधना के कार्य को दुष्टतापूर्ण बताया (26:9)

3. स्त्री की सराहना (26:10-13)

प्रभु ने प्रशंसा की:

1. उसकी शानदार भक्ति (26:10)
2. उसकी आत्मिक समझ (26:11-12)
    1. गरीबों के विषय में (26:11)
    2. उसके व्यक्तित्व के विषय में (26:12)
3. उसकी खास विशिष्टता (26:13)

3. पकड़वानेवाला (26:14-16)

1. उसके साथी षडचंत्रकारी (26:14)
2. उसका भयानक अपराध (26:15)
    1. उसका प्रस्ताव (26:15a)
    2. उसका मूल्य (26:15b)
3. उसका भावी आचरण (26:16)

4. मेज़ (26:17-29)

1. अतीत—प्रभु और फसह (26:17-20)
    1. जगह का चयन किया गया (26:17-19)
        1. चेलों का अवलोकन (26:17-18)
            1. पुरुषों ने क्या मांगा (26:17)
            2. प्रभु ने क्या प्रकट किया (26:18)
        2. चेलों की आज्ञाकारिता (26:19)
    2. मंच तैयार था (26:20)
2. वर्तमान—प्रभु और उसके लोग (26:21-25)
    1. विस्फोट हुआ (26:21-22)
        1. प्रकाशन (26:21)
        2. प्रतिक्रिया (26:22)
    2. विश्वासघात का पर्दाफाश (26:23-25)
        1. यीशु ने क्या कहा (26:23-24)
            1. एक घृणित कार्य का पर्दाफाश (26:23)
            2. एक घिनौना काम प्रकट हुआ (26:24)
        2. यहूदा ने क्या कहा (26:25)
    3. संभावना—प्रभु और उसका उद्देश्य (26:26-29)
        1. पवित्र वाचा (26:26-28)
            1. प्रभु की देह (26:26)

2. प्रभु का लहू (26:27-28)
1. प्रकार (26:27)
2. सत्य (26:28)
2. दूसरा आगमन (26:29)
1. दाख की बारी का फल (26:29a)
2. जयवंत का विश्वास (26:29b)

5. आँसू (26:30-46)

1. योजना (26:30-32)
1. अंतिम भजन (26:30)
2. एक और चोट (26:31)
3. भविष्य की आशा (26:32)
2. प्रतिज्ञा (26:33-35)
1. पतरस ने शपथ खाई (26:33-35a)
1. अहंकार में बात की गई (26:33)
2. घमंडी को डांटा गया (26:34)
3. घमंड दोहराया गया (26:35a)
2. पतरस की शपथ कई गुना बढ़ी (26:35b)
3. स्थान (26:36-38)
1. यीशु और उसके सबसे करीबी मित्र (26:36)
1. आगमन (26:36a)
2. व्यवस्था (26:36b)
2. यीशु और उसके सबसे करीबी मित्र (26:37-38)
1. उसका दुःख (26:37-38a)
2. उसकी प्रार्थना (26:38b)
4. विनती (26:39-45a)
1. पहली विनती (26:39-41)
1. प्रार्थना (26:39)
1. दूरी (26:39a)
2. हताशा (26:39b)
3. भक्ति (26:39c)
2. विरोध (26:40-41)
1. उसने क्या देखा (26:40a)
2. उसने क्या कहा (26:40b-41)
1. पतरस की असफलता (26:40b)
2. पतरस की मूर्खता (26:41)

2. आगे की याचना (26:42-43)
    1. अपने पिता के पास वापस (26:42)
    2. अपने अनुयायियों के पास वापस (26:43)
3. अंतिम विनती (26:44-45a)
    1. वही शब्द (26:44)
    2. वही कमज़ोरी (26:45a)

5. अंतिम डुबकी (26:45b-46)
    1. समय निकट है (26:45b)
    2. विश्वासघाती पास ही है (26:46)

6. मुकद्दमें (26:47-27:26)

1. गिरफ़्तारी (26:47-56)
    1. षडचंत्रकारी (26:47-49)
        1. भीड़ (26:47)
            1. उनके सामने: उनका मार्गदर्शक (26:47a)
            2. उनके पीछे: उनकी सरकार (26:47b)
        2. वह मनुष्य (26:48)
            1. हमारे लिए उसका वर्णन कैसे किया गया (26:48a)
            2. वह हमारे द्वारा कितना तुच्छ जाना गया (26:48b)
        3. रब्बी (26:49)
    2. मुठभेड़ (26:50-54)
        1. यहूदा को अंतिम क्षण में सुधार का वचन (26:50)
            1. मनुष्य से दलील (26:50a)
            2. भीड़ से दलील (26:50b)
        2. पतरस को अंतिम क्षण में प्रकाशन का एक वचन (26:51-54)
            1. तलवार (26:51-52)
                1. इसका उपयोग कैसे किया गया (26:51)
                2. यह कितना व्यर्थ था (26:52)
            2. संप्रभु (26:53)
                1. उसकी जीवन रेखा (26:53a)
                2. उसकी सेनाएँ (26:53b)
            3. पवित्रशास्त्र (26:54)
                1. इसकी सटीकता (26:54a)
                2. इसका अधिकार (26:54b)
    3. कायर लोग (26:55-56)
        1. यहूदा के पीछे आए हुए लोग (26:55-56a)

1. यीशु ने क्या पूछा (26:55)
1. क्या मैं लड़ने के लिए इतना खतरनाक व्यक्ति हूँ? (26:55a)
2. क्या मुझे पाना इतना मुश्किल है? (26:55b)
2. यीशु ने क्या स्वीकार किया (26:56a)
2. यीशु के अनुयायी (26:56b)
2. अभियोग (26:57-27:26)
1. यहूदियों के धार्मिक अगुवों के सामने (26:57-75)
1. जहाँ पतरस जाकर बैठा (26:57-58)
1. भीतरी आँगन जहाँ यीशु पर मुकदमा चलाया गया (26:57)
2. बाहरी आँगन जहाँ पतरस की परीक्षा हुई (26:58)
2. पतरस ने क्या देखा (26:59-68)
1. झूठे गवाह (26:59-63a)
1. वे लोग जो ऐसी गवाही लेकर आए जिसे महासभा ने अनिर्णायक माना (26:59-60a)
1. उनकी खोज (26:59)
2. उनमें से छानना (26:60a)
2. वे लोग जो ऐसी गवाही लेकर आए जिसे महासभा ने दोषी माना (26:60b-63a)
1. दो लोग जिन्होंने महासभा को प्रसन्न किया (26:60b)
2. महासभा को प्रसन्न करने वाली गवाही (26:61-63a)
1. यीशु की बातें तोड़-मरोड़ कर कही गयीं (26:61)
2. यीशु की खामोशी विचलित करने वाली थी (26:62-63a)
2. विश्वासयोग्य गवाह (26:63b-68)
1. शपथ (26:63b-64)
1. मसीह को दिलाई गई (26:63b)
2. मसीह द्वारा जवाब दिया गया (26:64)
1. मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ, जैसा कि तुमने कहा है (26:64a)
2. मैं मनुष्य का पुत्र हूँ, जैसा कि तुम्हारे पवित्रशास्त्र में प्रमाणित है (26:64b)
2. परिणाम (26:65-68)
1. महासभा द्वारा मृत्युदंड का निर्णय सुनाया गया (26:65-66)
1. काइफा द्वारा अपने वस्त्र फाड़ना (26:65)

2. महासभा द्वारा निर्णय की वापसी (26:66)
2. महासभा द्वारा प्रदर्शित भयंकर तिरस्कार (26:67-68)
1. थूकना (26:67a)
2. मारना (26:67b)
3. उपहास उड़ाना (26:68)
3. पतरस ने क्या कहा (26:69-75)
1. पतरस का इनकार (26:69-74)
1. पहला इनकार (26:69-70)
1. युवती ने क्या घोषणा की (26:69)
2. चेले ने क्या इनकार किया (26:70)
2. आगे का इनकार (26:71-72)
1. एक गुज़रती हुई टिप्पणी (26:71)
2. एक दयनीय शपथ (26:72)
3. अंतिम इनकार (26:73-74)
1. भीड़ की टिप्पणी (26:73)
1. उनके आरोप का सार (26:73a)
2. उनके आरोप की पुष्टि (26:73b)
2. कायर का शाप (26:74a)
3. मुर्गे की बांग (26:74b)
2. पतरस का टूटना (26:75)
1. उसका विलम्बित स्मरण (26:75a)
2. उसका गहरा पश्चाताप (26:75b)
2. यहूदियों के रोमी शासकों के सामने (27:1-26)
1. यहूदा की आत्महत्या (27:1-10)
1. विश्वासघाती का दुःख (27:1-5)
1. उसने जो देखा (27:1-3a)
1. महासभा की सम्मति (27:1)
2. उद्धारकर्ता का गंतव्य मार्ग(27:2-3a)
2. जिसे वह खोजता था (27:3b)
3. उसने क्या कहा (27:4)
1. यहूदा का विलम्बित पश्चाताप (27:4a)
2. महासभा का क्रूर जवाब (27:4b)
4. जहाँ वह खड़ा था (27:5)
1. उसने मंदिर आँगन में क्या किया (27:5a)
2. वह मंदिर के आँगन से क्यों चला गया (27:5b)
2. विश्वासघाती का धन (27:6-10)

1. महायाजकों ने चाँदी के टुकड़ों से कैसा व्यवहार किया (27:6-8)
    1. उनकी धार्मिक शंकाएँ (27:6)
    2. उनका तर्कपूर्ण समाधान (27:7-8)
        1. उन्होंने जो खेत खरीदा वह कैसा था (27:7)
        2. उन्होंने जो खेत खरीदा उसका नाम (27:8)
2. महायाजकों ने पवित्रशास्त्र की बातें कैसे पूरी कीं (27:9-10)
    1. भविष्यद्वाणी सबसे पहले यिर्मयाह नामक एक निर्वासित भविष्यद्वक्ता द्वारा की गई थी (27:9a)
    2. भविष्यद्वाणी अंततः जकर्याह नामक एक निर्वासित भविष्यद्वक्ता द्वारा लिखी गई (27:9b-10)

2. यीशु को सज़ा सुनाई गई (27:11-26)
1. आरोप (27:11-14)
    1. यीशु की संप्रभुता का मामला (27:11)
        1. पूछा गया प्रश्न (27:11a)
        2. प्रश्न का उत्तर दिया गया (27:11b)
    2. यीशु की चुप्पी का रहस्य (27:12-14)
        1. यहूदियों के सामने (27:12)
        2. न्यायी के सामने (27:13-14)
            1. अत्यधिक उत्तेजना (27:13)
            2. अत्यधिक उलझन (27:14)
2. चुनाव (27:15-26)
    1. अपराधी (27:15-18)
        1. एक सुविधाजनक प्रथा (27:15)
        2. एक सुविधाजनक अपराधी (27:16)
        3. एक सुविधाजनक विरोधाभास (27:17-18)
            1. पिलातुस ने स्पष्ट रूप से क्या रेखांकित किया (27:17)
            2. पिलातुस ने जो अच्छी तरह समझा (27:18)
    2. सन्देश (27:19)
        1. जब वह आया (27:19a)
        2. इसका दावा क्या है (27:19b)
    3. भीड़ (27:20-25)
        1. वास्तविक दोषी (27:20)
        2. ज़बरदस्त कोलाहल (27:21-23)
            1. निर्णय (27:21)

2. दुविधा (27:22-23)
1. मुझे क्या करना चाहिए? (27:22)
2. उसने क्या किया है? (27:23)
3. भयानक अभिशाप (27:24-25)
1. न्यायी और उसकी घोषित निर्दोषता (27:24)
2. यहूदी और उनका भड़काने वाला आग्रह (27:25)
4. हत्या (27:26)
1. पिलातुस द्वारा अपराधी को मुक्त किया जाना (27:26a)
2. पिलातुस द्वारा अपराध का औपचारिक वर्णन (27:26b)

7. पेड़ (27:27-56)

1. सैनिक (27:27-31)
1. उनकी पलटन (27:27)
2. उसका उपहास (27:28-30)
1. प्रभु के मसीहा के पद के विषय में (27:28-29)
1. उन्होंने उसे कैसे वस्त्र पहनाए (27:28-29a)
2. उन्होंने उसका कैसे उपहास उड़ाया (27:29b)
2. प्रभु के महिमामय व्यक्तित्व के विषय में (27:30)
1. उनकी दुष्टता (27:30a)
2. उनकी हिंसा (27:30b)
3. उनका मार्ग (27:31)
1. आखिरी उपहास (27:31a)
2. अंतिम यात्रा (27:31b)
2. स्थल (27:32-38)
1. वह व्यक्ति जिसने क्रूस उठाया (27:32)
2. ऐसे लोग जिन्होंने अपराध किए थे (27:33-37)
1. सिरका (27:33-34)
1. गुलगुता (27:33)
2. पित्त (27:34)
2. पीड़ित (27:35a)
3. उसके कपड़े (27:35b)
4. चौकसी (27:36-37)
1. एक पूर्ण कार्य (27:36)

2. एक अंतिम वचन (27:37)

3. वे लोग जो मसीह के साथ दोषी ठहराये गये (27:38)

3. ठट्ठा करनेवाले (27:39-44)

1. भीड़ (27:39-40)

1. वे कौन थे (27:39)

1. उनका चरित्र कितना क्षणिक है (27:39a)

2. उनका अहंकार कितना भयानक है (27:39b)

2. वे क्या चाहते थे (27:40)

1. प्रभु को ग़लत साबित करने के लिए (27:40a)

2. प्रभु को सच्चा साबित करने के लिए (27:40b)

2. रब्बी लोग (27:41-43)

1. उनके पद (27:41)

2. उनका उपहास (27:42-43)

उन्होंने उसके इस दावे का उपहास किया:

1. उनका उद्धारकर्ता (27:42a)

2. इस्राएल का संप्रभु (27:42b)

3. परमेश्वर का पुत्र (27:43)

3. डाकू (27:44)

4. चिह्न (27:45-54)

1. सूर्य (27:45-50)

1. ऐसा अंधकार जो पहले कभी नहीं देखा गया (27:45)

1. जब यह शुरू हुआ (27:45a)

2. जब यह समाप्त हुआ (27:45b)

2. ऐसी निराशा जो पहले कभी नहीं देखी गयी थी (27:46-49)

1. पीड़ा भरी कराह (27:46)

1. समय (27:46a)

2. भयानकता (27:46b)

2. चिन्तित भीड़ (27:47-49)

1. अधिक दयालु लोग (27:47-48)

1. उनका निष्कर्ष (27:47)

2. उनका हस्तक्षेप (27:48)

2. अधिक आलोचनात्मक (27:49)

3. ऐसी मृत्यु जो पहले कभी नहीं देखी गयी थी (27:50)

1. ऊंची आवाज़ (27:50a)

2. अंतिम विजय (27:50b)

2. पवित्रस्थान (27:51a)

3. चट्टानें (27:51b)
4. कब्रें (27:52-53)
    1. अद्‌भुत दृश्य (27:52a)
    2. पुनर्जीवित पवित्र लोग (27:52b-53)
        1. उनके प्रकट होने का केन्द्र बिन्दु (27:52b-53a)
        2. उनके प्रकट होने का वास्तविक प्रमाण (27:53b)
5. सूबेदार (27:54)
    1. वे कहाँ खड़े थे (27:54a)
    2. उन्होंने क्या देखा (27:54b)
    3. उन्होंने क्या कहा (27:54c)

5. सहानुभूति रखने वाले (27:55-56)
    1. वे कहाँ थे (27:55)
    2. वे कौन थे (27:56)

8. कब्र (27:57-66)

1. कब्र दी गई (27:57-61)
    1. यूसुफ की मध्यस्थता (27:57-58)
        1. उसकी महान संपत्ति (27:57)
        2. उसका महान कार्य (27:58)
    2. यीशु का गाढ़ा जाना (27:59-61)
        1. अंतिम प्रेमपूर्ण उपहार (27:59-60)
            1. उज्ज्वल चादर (27:59)
            2. स्वच्छ स्थान (27:60)
                1. पूर्णतः समर्पित (27:60a)
                2. सावधानी से सुरक्षित (27:60b)
        2. अंतिम झलक (27:61)
2. कब्र की सुरक्षा की गई (27:62-66)
    1. महासभा की दुविधा (27:62-64)
        1. क्या स्मरण किया गया (27:62-63)
        2. क्या माँगा गया (27:64)
            1. इस कथित उद्धारकर्ता की कब्र की पहरेदारी (27:64a)
            2. एक कथित पुनरुत्थान की कहानी की रोक (27:64b)
    2. महासभा की सावधानी (27:65-66)
        1. हाकिम की अनुमति (27:65)
        2. पहरूओं की तैनाती (27:66)

मत्ती 25 में हमने राजा की एक झलक देखी जो मुकुट पहने हुए, अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठा हुआ, राष्ट्रों का न्याय कर रहा था, और शीघ्र ही पृथ्वी पर शासन करने वाला था। अध्याय 27 में हम राजा को क्रूस पर चढ़ा हुआ, दो चोरों के बीच पीड़ा और शर्म के साथ मरते हुए देखेंगे। बीच में अध्याय 26 है, जिसमें षडयंत्र घना होता है और घटनाएँ तेज़ी से क्रूस की ओर बढ़ती हैं।

I. फंदा (26:1-5)

क. उद्धारकर्ता की चेतावनी (26:1-2)

1. जैतून पहाड़ी के उपदेश का सारांश (26:1)

26:1 में जो बात हमारा ध्यान अपनी ओर खींचती है, वह शब्द "समाप्त" है। हम पढ़ते हैं, "जब यीशु ये सब बातें कह चुका..." मत्ती 7:28; 11:1; 13:53; 19:1 में भी इसी तरह के समान कथन हैं। ये आयतें प्रभु की सार्वजनिक सेवकाई में महत्वपूर्ण मोड़ को दर्शाती हैं। 26:1 के महत्वपूर्ण मोड़ पर, प्रभु के पास यहूदियों से कहने के लिए और कुछ नहीं था। अगली बार जब वह उनसे बात करता है, तो वे उसे "मेरे भाइयों" के रूप में संदर्भित करते हुए सुनेंगे, जैसा कि जैतून पहाड़ी के उपदेश के समापन दृष्टांत में पाया जाता है। तब तक राष्ट्र महाक्लेश में पूरी तरह से छाँट दिया जाएगा और उसकी वापसी से शुद्ध हो जाएगा।

2. उसकी अपनी मृत्यु की निकटता (26:2)

क. आने वाला फसह का पर्व (26:2a)

प्रभु और उसके चेलों के लिए दो घटनाएँ उनके सामने थीं। प्रभु ने सबसे पहले आने वाले फसह का उल्लेख किया: "तुम जानते हो, कि दो दिन के बाद फसह का पर्व होगा।" फसह का पर्व, जो हर साल होने वाला एक मुख्य उत्सव था, उसकी बचपन की सबसे पुरानी यादों में से एक था, और स्कूल में उसके सबसे आकर्षक विषयों में से एक था। लेकिन अब उसने यह जानते हुए बात की कि इस वर्ष वह खुद फसह का मेम्ना था। यह आखिरी साल था जब परमेश्वर की इच्छा से यह पर्व मनाया जाएगा। उस फसह के प्रति उसके मन में एक तीव्र आकर्षण था; यह हमारे लिए भी एक जबरदस्त आकर्षण है। एडर्सहेम ने लिखा:

इस्राएल में हर कोई पर्व के बारे में सोच रहा था। पिछले महीने से यह अकादमियों में चर्चा का विषय रहा था, और कम से कम पिछले दो सब्त के दिनों से आराधनालयों में प्रवचन का विषय रहा था। हर कोई यरूशलेम जा रहा था... यह विश्वव्यापी इस्राएल का जमावड़ा था, राष्ट्र के जन्म-रात्रि का एक स्मारक था।[1]

ख. आने वाला दुःखभोग (26:2b)

प्रभु ने आने वाले दुःखभोग का भी उल्लेख किया: "मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा।" वह सबसे बड़े विश्वासघात, सभी अपराधों से बढ़कर अपराध को रेखांकित कर रहा था।

यहूदा की पहली उज्ज्वल आशाएँ, जो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के उपदेशों से प्रज्वलित हुई थीं, प्रभु के चमत्कारों से बढ़ी थीं, और उसकी बढ़ती लोकप्रियता से उत्साहित हुई थीं, अब फीकी पड़ने लगी थीं।। यह विश्वासघाती प्रभु द्वारा भीड़ के उत्साह का लाभ उठाने से इंकार करने, उसके बार-बार पीछे हटने, तथा

यरूशलेम में खुद को खुले तौर पर दिखाने और मौजूदा व्यवस्था के साथ समझौता करने की उसकी अनिच्छा से निराश था। उसने सोचा कि ऐसा कौन सा राजा होगा जो सत्ता तक पहुंचने के सभी सामान्य रास्तों से परहेज करेगा?

यहूदा उस समय सक्रिय विश्वासघाती बन गया था जब उसने गरीबों के लिए रखे गए धन को अपने गुप्त बैंक खाते में जमा करने के लिए पहली बार थैले में हाथ डाला (यूहन्ना 12:6)। उसने सोचा कि मैं अपने लिए भी कुछ धन बचा सकता हूँ। प्रत्येक हेराफेरी उसके लिए बाद में आसान होती गई, और अंत में वह यीशु पर भी मूल्य लगा सका।

यहूदा ने चेले होने और विश्वासघाती होने के बीच की बड़ी खाई को कब पार किया था? कुछ लोग सोचते हैं कि यह प्रभु के जीवन की रोटी पर दिए गए उपदेश के ठीक बाद हुआ था, जब मसीह ने कहा कि जो कोई भी उसके जीवन को साझा करने की उम्मीद करता है उसे उसका मांस खाना होगा। उस कठोर कथन ने कई लोगों को उसके विरूद्ध कर दिया था - इतना अधिक कि यीशु ने यहाँ तक कि अपने चेलों को भी चुनौती दी, "क्या तुम भी चले जाने चाहते हो?" (यूहन्ना 6:67)

ख. महासभा की दुष्टता (26:3-5)

1. लोग (26:3a)

"महायाजक, शास्त्री और प्रजा के पुरनिए" इकट्ठे हुए। याजक वर्ग के सभी मुखिया, मंदिर के अधिकारी, प्रमुख महासभा (शास्त्री और पुरनिये) और यहूदी राष्ट्र के सभी अगुवे वहाँ मौजूद थे - वे लोग जो धार्मिक अभिजात वर्ग माने जाते थे। सभी लोग परमेश्वर के प्रिय पुत्र के प्रति एक समान घृणा के साथ एकजुट थे।

2. स्थान (26:3b)

वे "महायाजक के आँगन" में में इकट्ठे हुए थे, जो उनका सामान्य बैठक स्थल नहीं था। यहूदी व्यवस्था के अनुसार सभी आपराधिक मामलों में, सजा को महासभा की नियमित बैठक स्थल में ही सुनाया जाना चाहिए। महल में इकट्ठे होना मूलतः मंदिर रक्षक के कप्तान और उसके अधिकारियों के साथ नेतृत्व में बैठे धार्मिक अधिकारियों की ख़ास बैठक थी। वे इस अनचाहे मसीहा को फंसाने, गिरफ्तार करने और मारने के तरीकों और साधनों पर चर्चा करने के लिए इकट्ठे हुए थे। महायाजक काइफा ने इस सत्र की अध्यक्षता की।

3. योजना (26:4-5)

उन्होंने चालाकी और सावधानी दोनों का इस्तेमाल करने की योजना बनाई। स्वभाव से धूर्त, उन्होंने "यीशु को छल से पकड़ने" का फैसला किया (26:4)। यहाँ "छल" का मूल अनुवाद डोलोस है, जिसका इस्तेमाल पौलुस ने भी किया था जब उसने जादूगर इलीमास को संबोधित किया था: "हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए शैतान की सन्तान, सकल धर्म के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा?" (प्रेरितों के काम 13:10) इस्राएल के उन धार्मिक अगुवों का वर्णन करने के लिए इससे अधिक उपयुक्त शब्द नहीं मिल सकता था जो काइफा के घर के आँगन में इकट्ठे हुए थे।

बड़ी सावधानी बरतते हुए उन्होंने कहा, "पर्व के समय नहीं; कहीं ऐसा न हो कि लोगों में बलवा मच जाए" (मत्ती 26:5)। हाल ही में यरूशलेम में यीशु के विजयी प्रवेश के दौरान उसके प्रति लोगों के समर्थन के प्रदर्शन ने उन दुष्ट लोगों को एक विराम दिया था। वे दंगे से डरते थे, वे हिंसक तरीके से बदला लेने के लिए पिलातुस की प्रवृत्ति से भय खाते थे। यहूदी अगुवे किसी तरह से यीशु से छुटकारा पाने के लिए दृढ़ थे; वे केवल पर्व से बचना चाहते थे।

लेकिन परमेश्वर ने पहले ही तय कर दिया था कि यीशु को पर्व के दिन ही पकड़वाया जाएगा। मसीह को फसह के मेमने के रूप में मरना था। यीशु ने कहा था, "दो दिन के बाद फसह का पर्व होगा; और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा" (26:2)। शुरू से ही, क्रूस पर चढ़ाए जाने की तिथि के रूप में फसह को निर्धारित किया जा चुका था, ठीक उसी तरह जैसे पिन्तेकुस्त को कलीसिया के जन्मदिन की तिथि के रूप में निर्धारित किया गया था। वे दुष्ट लोग, अपनी सारी शक्ति और योजनाओं के बावजूद, ईश्वरीय आदेश को उसी प्रकार नहीं बदल सकते थे, जैसे वे अंतरिक्ष में अपनी धुरी पर विश्व की गति को उलट नहीं सकते थे।

यहूदा के आने से उनकी योजनाएँ बदल गईं। उन्हें अचानक अपनी मुश्किलों से बाहर निकलने का रास्ता दिख गया। अब वे आगे बढ़ सकते थे। यहूदा उनसे यीशु के ठिकाने के बारे में संपर्क बनाए रखेगा; फिर किसी उपयुक्त एकांत स्थान पर, सुविधाजनक शांत समय पर, वे उसे पकड़ सकते थे और किसी के प्रभावी विरोध को भड़काने से पहले ही उसे गिरफ्तार कर सकते थे, उस पर मुकदमा चला सकते थे और उसे सजा सुना सकते थे।

मत्ती ने विश्वासघात के बारे में लिखा, लेकिन पहले उसने एक सुखद दृश्य और एक ऐसे व्यक्ति द्वारा भक्ति का सुंदर कार्य वर्णित किया जो अच्छी तरह से समझता था कि उसके लिए आगे क्या होने वाला है।

II. सत्य (26:6-13)

क. स्त्री का आगमन (26:6-7)

1. जहाँ उसने प्रभु को खोजा (26:6)

यह घटना शमौन नामक कोढ़ी के घर में घटित हुई थी, जो यकीनन एक ऐसा व्यक्ति था जिसे यीशु ने चंगा किया था। परंपरा के अनुसार मान्यता यह है कि वह या तो लाजर और उसकी बहनों का पिता था या मार्था का पति। किसी भी मामले में, ऐसा लगता है कि शमौन का बैतनियाह के इस बहुत प्रिय परिवार के साथ कुछ करीबी रिश्ता था।

2. वह प्रभु के लिए क्या लेकर आई (26:7)

यूहन्ना ने उस महिला की पहचान लाजर की बहन मरियम के रूप में की।[2] उसके हाथ में कीमती इत्र से भरी एक संगमरमर की बोतल थी। मरकुस 14:3 हमें बताता है कि यह जटामांसी का इत्र था, जिसमें लोहबान और जटामांसी थी और यह सीरिया, भारत और हिमालय में पाई जाती थी। इस तीव्र सुगंध वाले मलहम को बहुत अधिक कीमत पर आयात किया गया था और इसे बहुत ज्यादा कीमत पर बेचा गया था।

उस कमरे में जाकर, जहाँ यीशु मेज पर बैठा था, मरियम ने प्रेम भेंट चढ़ाई। उसने कुप्पी की मोहर तोड़ी और उसमें से सुगंधित इत्र प्रभु के सिर पर डाला, उसका अभिषेक किया और इस तरह पूरा कमरा उस सुंदर सुगंध से भर गया। यह सुन्दर एवं सार्थक भाव, एक समर्पित भक्ति एवं व्यक्तिगत प्रेम की शानदार अभिव्यक्ति थी।

मरियम ने जटामांसी कब खरीदी थी? उसने इसके लिए कितने समय तक पैसे बचाए थे? क्या उसने इसे अपनी शादी के दिन को ध्यान में रखकर खरीदा था? क्या उसने जानबूझकर इसे लाज़र से उस समय छिपा रखा था जब उसके शरीर को दफनाने के लिए अभिषेक किया जा रहा था? हम केवल इतना जानते हैं कि मरियम ने इस जटामांसी के लिए बहुत बड़ी रकम चुकाई थी और उसने इसे अपने प्रिय प्रभु की आराधना के लिए उंडेला दिया था।

ख. स्त्री के आलोचक (26:8-9)

1. उन्होंने उसकी आराधना को व्यर्थ बताया (26:8)

चेलों में एक आक्रोशपूर्ण विरोध प्रदर्शन शुरू हो गया। यहूदा के उकसावे में आकर उन्होंने पूछा, "इस का क्यों सत्यनाश किया गया?" यूहन्ना 12:5 हमें बताता है कि यहूदा ने जटामांसी की कीमत "तीन सौ दीनार" लगाई। चूँकि एक दीनार एक मज़दूर की दैनिक मज़दूरी थी, इसलिए वह तेल एक साल की कमाई का सबसे अच्छा हिस्सा था। यीशु के सिर पर इसे उंडेलना उन सुस्त चेलों को फिजूलखर्ची लगा। लेकिन प्रेम हमेशा फिजूलखर्ची होता है। प्रेम कभी भी कीमत नहीं गिनता। प्रेम हमेशा देने के लिए उत्सुक रहता है, और बिना किसी संकोच के देता है।

हमें इस बात में कोई संदेह नहीं हो सकता कि चेलों के बीच मतभेद के पीछे यहूदा का घातक प्रभाव था। हम उसके चेहरे पर निराशा देख सकते हैं जब वह रूपांतरण के पर्वत पर चढ़ने के लिए चुने गए लोगों में से एक के रूप में नहीं चुना गया था। मार्ग में होने वाले उन सभी विवादों में कि कौन सबसे बड़ा होगा, चेलों के बीच होने वाली उन सभी छोटी-छोटी गलतफहमियों में, क्या हम उस विश्वासघाती की आवाज़ की प्रतिध्वनि नहीं सुन सकते? क्या हम उसकी उपस्थिति के घातक खमीर को नहीं पहचान सकते? जब मरियम यीशु के लिए अपना उपहार लेकर आई, तो सबके सामने उस विश्वासघाती का पर्दाफाश हो गया।

2. उन्होंने उसकी आराधना के कार्य को दुष्टतापूर्ण बताया (26:9)

यह संकेत देते हुए कि मरियम का कार्य दुष्ट था, चेलों ने कहा, "यह तो अच्छे दाम पर बिक कर कंगालों को बांटा जा सकता था।" इस दुनिया में बहुत ज़रूरतें हैं, बहुत से गरीब हैं, और हमेशा ऐसे लोग होते हैं जो इसे दुष्ट फिजूलखर्ची कहते हैं जब पैसा सामाजिक उद्देश्यों के बजाय आत्मिक उद्देश्यों के लिए दिया जाता है। लेकिन गरीबों की शारीरिक दुर्दशा को नजरअंदाज करना और उनकी आध्यात्मिक जरूरतों को पूरा करने की उपेक्षा करना खतरनाक है।

कई लोगों के लिए, सबसे अधिक अपमानजनक बर्बादी किसी ऐसी चीज के लिए धन देना है जो केवल मसीह की सेवा करेगी, ऐसी चीज जिसका कोई अन्य उपयोगितावादी उपयोग नहीं होगा।। बहुत कम लोग ही होमबलि देने के पहलू को समझते हैं। यहाँ तक कि कुछ नेकदिल मसीहियों ने भी इसे बर्बादी कहा, जब

पांच युवकों ने जंगली भारतीय जनजाति के बीच सुसमाचार के लिए एक मार्ग खोलने के प्रयास में इक्वेडोर के जंगल में अपने जीवन को "नष्ट" कर दिया।।

ग. स्त्री की सराहना (26:10-13)

लेकिन यीशु ने मरियम का बचाव किया। उसने जो शब्द इस्तेमाल किए, उनसे पता चलता है कि वह शर्मिंदगी से घिरी हुई थी या अपने प्रेम उपहार की तीखी आलोचना से घबरा गई थी। यीशु ने कहा कि आराधना के इस कार्य को करके "उस ने मेरे साथ भलाई की है" (26:10)। जहाँ तक गरीबों का प्रश्न है, ऐसा कभी नहीं होगा जब प्रभु के लोगों को उनकी सेवा करने का अवसर न मिले। हालाँकि, वह जल्द ही चले जाने वाला था। उस स्त्री ने दरअसल अवसर का लाभ उठाया था; हम अनुमान लगा सकते हैं कि उसके आलोचक उनसे चूक गए थे।

यीशु ने कहा, "उस ने मेरी देह पर जो यह इत्र उण्डेला है, वह मेरे गाढ़े जाने के लिये किया है" (26:12)। अंततः यह बात खुलकर सामने आ गई: प्रभु को शीघ्र ही मरना था और उसे दफनाया जाना था।

हम मरियम को क्रूस के पास नहीं पाते। हम वहाँ कुछ अन्य नए नियम की मरियमों को पाते हैं, लेकिन बैतनिय्याह की इस मरियम को नहीं, क्योंकि वह पहले से ही कलवरी का अनुमान लगा चुकी थी। हम उसे कब्र पर भी नहीं पाते, क्योंकि वह पहले से ही प्रभु के गाढ़े जाने में अपना योगदान दे चुकी थी। इसके अलावा उसे कब्र पर जाने की कोई ज़रूरत भी नहीं थी, क्योंकि प्रभु की मृत्यु और दफ़न की सच्चाई को समझने के बाद, मरियम ने यह विश्वास करना शुरू कर दिया था कि प्रभु फिर से जी उठेगा।

ऐसा लगता है कि इस समय, उसके सभी चेलों में से केवल उसी स्त्री को प्रभु के पुनरुत्थान की सच्चाई समझ में आई थी। कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु ने मरियम के प्रेम उपहार को स्वीकार किया, उसके आलोचकों के विरुद्ध उसका बचाव किया, उसकी सराहना की, और वादा किया कि उसकी प्रसिद्धि पूरी दुनिया में फैलेगी, जैसा कि वास्तव में हुआ भी। उसका स्मारक संगमरमर का कोई स्मारक नहीं है जिस पर अंततः समय अपना अथक कार्य करेगा। उसका स्मारक पवित्रशास्त्र के अमर पन्नों में है। मरियम की कहानी हज़ारों भाषाओं में पढ़ी जाती है, और उसकी आराधना के कारण पृथ्वी एक समृद्ध स्थान बन गई है।

III. पकड़वानेवाला (26:14-16)

क. उसके साथी षडयंत्रकारी (26:14)

जटामांसी की "बर्बादी" यहूदा को प्रेरित करने के लिए पर्याप्त थी। हम कल्पना कर सकते हैं कि उसने खुद से क्या कहा होगा: "अगर मैं उन तीन सौ दीनार को अपने हाथों में ले पाता, तो मैं कितना बड़ा कमीशन प्राप्त कर सकता था! खैर, मैं इस पराजय से, राजा और राज्य के इस मूर्खतापूर्ण नाटक से कुछ पैसे कमाने का कोई रास्ता खोज लूंगा। मैं इस मसीहा को उसके शत्रुओं को बेचकर इस व्यवसाय से पैसे कमाऊंगा। अगर वह खुद को छुड़ा लेता है, जैसा कि उसने अतीत में कई बार किया था जब उसके दुश्मनों ने कोई खुला कदम उठाया था, तो और भी बढ़िया। मैं और अधिक अमीर हो जाऊंगा और कोई भी इतना समझदार नहीं होगा कि इसे समझ सके। अगर वह बच नहीं पाता है, तो यह साबित हो जाएगा कि वह एक नकली

व्यक्ति है और मेरे लिए इस धंधे से बाहर निकलना ही बेहतर होगा। इससे मुझे कुछ पैसे कमाने और साथ ही ऊंचे पदों पर कुछ दोस्त बनाने में कोई दिक्कत नहीं होगी।"

प्रभु के शत्रुओं ने पहले से ही मसीह की गतिविधियों पर कड़ी नज़र रखने का फ़ैसला कर लिया था। "महायाजकों और फरीसियों ने भी आज्ञा दे रखी थी, कि यदि कोई यह जाने कि यीशु कहां है तो बताए, कि उसे पकड़ लें" (यूहन्ना 11:57)। इस प्रकार यहूदा मसीह को धोखे से पकड़वाके देशभक्त होने का दिखावा कर सकता था। इसलिए मत्ती 26:14 में दर्ज है कि "तब यहूदा इस्करियोती नाम के बारह चेलों में से एक महायाजकों के पास गया।" वे अब आने वाले युगों के सबसे भयानक अपराध में समान रूप से भागीदार थे।

ख. उसका भयानक अपराध (26:15)

1. उसका प्रस्ताव (26:15a)

"यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो मुझे क्या दोगे?" यह उस विश्वासघाती का शैतानी प्रस्ताव था। यह यहूदा की आत्मा की नीचता का पैमाना था। वह यीशु को चंद पैसों के लिए बेच देने वाला था। यह बदनामी की कीमत थी।

महासभा के सदस्य यह सुनकर बहुत खुश हुए होंगे। यीशु को "पकड़ने" में उनकी मुश्किलें यहीं खत्म हो गईं थी। वे इस अवसर को हाथ से जाने नहीं देना चाहते थे; ऐसा मौक़ा फिर कभी मिलने वाला नहीं था। लेकिन उन्होंने यहूदा को समान रूप से अपने जैसा षडयंत्रकारी नहीं माना। उन्होंने उससे दूरी बनाए रखी और उसके साथ एक सामान्य खबरी, एक जासूस जैसा व्यवहार किया।।

यहूदा ने अपना प्रस्ताव रखा और उन्होंने अपने आदमी के बारे में सोचना शुरू कर दिया। वे उतना ही देंगे जितना वे सोचेंगे कि वह लेगा। वह दरअसल खुद को और यीशु को बेच रहा था।

2. उसका मूल्य (26:15b)

मत्ती ने कहा, "उन्होंने उसे तीस चान्दी के सिक्के तौलकर दे दिए।" यहाँ "तौलकर देने" शब्द का मूल अनुवाद हिस्टेमी है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "तराजू में रखना, वजन तौलना।" इस प्रकार मत्ती के कथन का अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है, "उन्होंने उसे तीस चाँदी के सिक्के तौलकर दिए।" ऐसा करके वे एक भविष्यद्वाणी को पूरा कर रहे थे जिसे वे स्पष्ट रूप से भूल गए थे: "तब उन्होंने मेरी मजदूरी में चान्दी के तीस टुकड़े तौल दिए" (जकर्याह 11:12)।

चाँदी के तीस टुकड़े पवित्रस्थान के शेकेल थे, माना जाता है कि यह पैसा बलिदान खरीदने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। यह राशि उस कीमत के बराबर थी जो किसी बैल द्वारा किसी दूसरे के दास को सींग मारने पर चुकाई जाती थी (निर्गमन 21:32); यह एक गुलाम का बाजार मूल्य था। यह महासभा द्वारा उस व्यक्ति के मूल्य का तिरस्कारपूर्ण मूल्यांकन था जिसने उनके बीमारों, उनके अंधे, उनके लंगड़ों, उनके दुष्टात्मा-ग्रस्त लोगों को चंगा किया था; जिसने उनके मृतकों को जीवित किया था और उनकी भीड़ को खिलाया था। यहूदा ने अपने अपराध के लिए इसे एक बहुत ही कम इनाम माना होगा। लेकिन अब वह उनके हाथों में एक हथियार बन चुका था। उन्होंने उसे और उसके साथ ही प्रभु को भी खरीद लिया था।

ग. उसका भावी आचरण (26:16)

"और वह उसी समय से उसे पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ने लगा।" महासभा ने अब पर्व के खत्म होने का इंतज़ार करना ज़रूरी नहीं समझा। तब से लेकर, यहूदा ने अपनी आँखें खुली रखीं, और अपने भयानक "अधर्म की मजदूरी" (2 पतरस 2:15) को पाने के लिए अनुकूल अवसर की तलाश में रहा।

IV. मेज़ (26:17-29)

क. अतीत - प्रभु और फसह (26:17-20)

जब हम प्रभु के अंतिम फसह के बारे में विचार करते हैं, तो हमें सबसे पहले अतीत को देखना होगा, क्योंकि इस पर्व की सभी जड़ें वहीं हैं। लगभग पंद्रह सौ वर्षों तक यहूदी लोगों ने मेमने के लहू द्वारा अपने महान छुटकारे और मिस्र की भूमि से अपने पलायन का आनंद मनाया था (निर्गमन 12; लैव्यव्यवस्था 23:5-8)।

फसह का मेमना निसान के चौदहवें दिन बलिदान किया गया था। अखमीरी रोटी का पर्व निसान के पंद्रहवें दिन शुरू हुआ और सात दिनों तक चला (गिनती 28:17)। यहूदियों के लिए फसह के मेमने का बलिदान, फसह का भोज और अखमीरी रोटी के पर्व को एक साथ मिलाना और पूरे उत्सव को एक महान त्यौहार के रूप में देखना आम बात थी। उन्होंने पूरे आठ-दिवसीय अवधि का वर्णन करने के लिए फसह और अखमीरी रोटी के नामों का कमोबेश एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया। यहूदियों की यह परंपरा थी कि वे निसान की तेरहवीं और चौदहवीं के बीच की रात को अपने घरों से सारा खमीर निकाल देते थे, चौदहवीं की शाम को फसह का पर्व खाते थे और पंद्रहवीं को "मुख्य विश्राम" मनाते थे।

मत्ती 26-28 में दिन-प्रतिदिन की घटनाओं के क्रम को निर्धारित करने में जटिल कारकों में से एक यह है कि यहूदी दिन सुबह के बजाय सूर्यास्त से शुरू होता था। और इस बात पर काफी असहमति है कि प्रभु को बुधवार या शुक्रवार को क्रूस पर चढ़ाया गया था। एडर्सहेम ने अपना विचार व्यक्त किया कि फसह "14वें निसान को शुरू हुआ, यानि बुधवार की शाम (जो 13वीं शाम थी) को पहले तीन सितारों के दिखने से, और गुरुवार की शाम (जो 14वें निसान की शाम थी) को पहले तीन सितारों के साथ समाप्त हुआ।"[3]

एक और जटिल कारक सब्त का प्रश्न है। तीन प्रमुख वार्षिक पर्वों (फसह, पिन्तेकुस्त और झोपड़ियों) में से प्रत्येक का पहला दिन "पवित्र सम्मेलन" था, एक ऐसा सब्त जिस पर कोई काम नहीं किया जाना चाहिए था (लैव्यव्यवस्था 23:7,24-25; निर्गमन 12:16)। पर्व का पहला दिन सामान्य साप्ताहिक सब्त को पूरी तरह से प्रभावित करता था। यूहन्ना 19:31 का सब्त या मुख्य दिन एक ऐसा ही पवित्र सम्मेलन था। इस मुख्य सब्त को अक्सर सामान्य साप्ताहिक सब्त के रूप में गलत समझा जाता है, इस प्रकार क्रूस पर चढ़ाए जाने से जुड़ी घटनाओं की तिथि को लेकर भ्रम पैदा होता है।

प्रभु ने कहा कि वह "तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के गर्भ में रहेगा" (मत्ती 12:40), यह एक ऐसा कथन है जो किसी भी तरह के संदेह की गुंजाइश नहीं छोड़ता। यह सच है कि यहूदी मुहावरा "तीन दिन" (या "तीन साल") का अर्थ तीन दिनों (या सालों) के कुछ हिस्सों से लिया जा सकता है। लेकिन यहाँ ऐसा कुछ नहीं है जहाँ प्रभु ने तीन दिनों के अलावा तीन रातों की बात की है। घटनाओं के क्रम का पता लगाने के किसी भी प्रयास में प्रभु की देह को पूरे तीन दिन और रात तक कब्र में रहने की अनुमति देनी होगी।

घटनाक्रम बहुत कठिन है और इसमें सभी प्रकार की स्थितियां अपनाई गई हैं। यहाँ लिया गया दृष्टिकोण यह है कि, परंपरा के विपरीत, प्रभु को निसान के चौदहवें दिन (मंगलवार सूर्यास्त से बुधवार सूर्यास्त तa) क्रूस पर चढ़ाया गया और फिर गाढ़ा गया, जो तैयारी का दिन भी था। सभी चार सुसमाचार इस बात की पुष्टि करते हैं कि उसे तैयारी के दिन गाढ़ा गया था (मत्ती 27:62; मरकुस 15:42; लूका 23:54; यूहन्ना 19:31)। सब्त के दिन (फसह का मुख्य सब्त, न कि सामान्य साप्ताहिक सब्त) के दौरान क्रूस पर चढ़ाए गए लोगों के शवों को उजागर करने की अनुमति देना अकल्पनीय होता।

यदि यह दृष्टिकोण सही है, तो अंतिम भोज निसान के चौदहवें दिन मंगलवार की शाम को शुरू हुआ होगा। रात्रिभोज और नई वाचा के उद्घाटन के बाद, प्रभु गतसमनी की ओर गया। उसे वहाँ गिरफ्तार कर लिया गया और पूरी रात उसके विभिन्न मुकद्दमे चलते रहे। लगभग छठे घंटे (हमारे मंगलवार की मध्यरात्रि को) पिलातुस ने अपना ऐतिहासिक कथन कहा, "देखो, यही है, तुम्हारा राजा!!" (यूहन्ना 19:14)। प्रभु को बुधवार की सुबह तीसरे पहर (नौ बजे) क्रूस पर चढ़ाया गया।

छठे पहर में पूरे देश में अंधेरा छा गया (बुधवार दोपहर)। यह समय का एक महत्वपूर्ण बिंदु है, क्योंकि प्रतिदिन के बलि के मेमने को छठे घंटे में मारा जाता था। बलिदान सातवें पहर में चढ़ाया गया था क्योंकि प्रभु पाप के भारवाहक के रूप में क्रूस पर लटका हुआ था। दैनिक बलिदान चढ़ाने के ठीक बाद, पूरे देश में फसह के मेमनों को मारना शुरू हो गया।

प्रभु ने नौवें पहर (दोपहर तीन बजे) को अपना अंतिम वचन कहा और मर गया। उसे सूर्यास्त से पहले शीघ्र ही दफनाया गया - यानि, मुख्य दिन (फसह पर्व का पहला दिन) शुरू होने से पहले (बुधवार को छह बजे से पहले)।

हालाँकि यह दृष्टिकोण कब्र में तीन पूरे दिन और रात रहने तथा तीसरे दिन, "सप्ताह के पहले दिन" (मत्ती 28:1-10; मरकुस 16:1-18; लूका 24:1-49; यूहन्ना 20:1-23) को पुनरुत्थान की अनुमति देता है, फिर भी यह व्याख्या स्वयं में समस्याओं से रहित नहीं है। मुख्य समस्या यह है कि यदि प्रभु उस समय क्रूस पर था जब फसह के मेमने मारे जा रहे थे, तो यह देखना मुश्किल है कि उसने फसह का पर्व कैसे मनाया। कुछ लोगों का मानना है कि प्रभु ने एक पूर्व-नियोजित पर्व मनाया।[4] कुछ लोग कहते हैं कि उसने बिना किसी नियमित मेमने के उस पर्व को मनाया, क्योंकि वह स्वयं वह मेमना था जिसका बलि किया जाना था।

हालाँकि, चलिए हम कालानुक्रमिक समस्याओं को हल करते हैं, मत्ती 26:17 में फसह का समय आ गया था। यह महान पर्व, जो इस्राएल के महत्वपूर्ण अतीत में निहित है, हर किसी के मन में सबसे ऊपर था। यह "अखमीरी रोटी के पर्व का पहला दिन" था और चेले जानना चाहते थे कि फसह खाने की व्यवस्था कहाँ की जानी चाहिए। उनके सवाल से पता चलता है कि वह दिन निसान का चौदहवाँ दिन था।

स्पष्ट था कि शहर में किसी के पास एक बड़ी ऊपरी कोठरी थी जो स्वामी के उपयोग के लिए थी। प्रभु ने व्यवस्था करने के लिए पतरस और यूहन्ना को भेजा (मरकुस 14 और लूका 22 विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं), इस प्रकार अंतिम क्षण तक यहूदा से स्थान को गुप्त रखा गया। कोठरी सुसज्जित थी, निस्संदेह एक मेज के चारों ओर बैठने की व्यवस्था थी। हमें नहीं बताया गया है कि ऊपरी कोठरी वाला घर किसका था। कुछ लोगों ने अनुमान लगाया है कि यूहन्ना मरकुस अपने माता-पिता के साथ वहाँ रहता था। मरकुस की

माँ बरनबास की बहन थी (कुलुस्सियों 4:10) और निश्चित रूप से उसका घर बड़ा था (प्रेरितों के काम 12:12)।

इस प्रकार तैयारियां की गईं और चेलों ने ऊपरी कोठरी को अपने अधिकार में कर लिया, वह कमरा जहां फसह के पर्व के स्थान पर प्रभु की मेज रखी गई थी और जहां सात सप्ताह बाद कलीसिया का जन्म हुआ था। वहाँ यीशु उनके बीच में था, और "जब सांझ हुई, तो वह बारहों के साथ भोजन करने के लिये बैठा" (मत्ती 26:20)।

ख. वर्तमान - प्रभु और उसके लोग (26:21-25)

बाइबल के विवरणों में ऐसा बहुत कम उल्लेख है जो यह दर्शाता हो कि प्रभु ने फसह के पर्व के विवरण का पालन किया था; उदाहरण के लिए, मेमने का कोई उल्लेख नहीं है। हम रब्बीनी लेखकों से जान पाते हैं कि पारंपरिक परिस्थितियों में परिवार का मुखिया मिश्रित दाखरस और पानी का एक कटोरा लेता था, उसे आशीष देता था, चखता था और मेहमानों को देता था। फिर उसने अपने हाथ धोए और पात्रों को मेज पर रख दिए गए। कड़वे पौधे पर विशेष आशीर्वाद दिया गया, जिसे फिर सभी ने लिया, चाशनी में डुबोया और खाया। इसके बाद अखमीरी रोटी का एक टुकड़ा तोड़ा गया और एक रीतिपूर्ण विधि के साथ उठाया गया। फिर एक दूसरा प्याला भरा गया और फसह का इतिहास सुनाया गया। भजन 113 और 114 गाए गए और प्याला पिया गया। फिर वहीं पर फसह का भोज को मनाया गया। फिर हाथ धोए गए, मेमने को काटा गया और सभी को कुछ अखमीरी रोटी के टुकड़े और चाशनी में डूबे कड़वे पौधे (यूहन्ना 13:26 का "टुकड़ा") के साथ एक हिस्सा दिया गया। भोजन के अंत में तीसरा प्याला पिया गया (1 कुरिन्थियों 10:16 के अनुसार "धन्यवाद का कटोरा") और भोज का समापन एक गंभीर आशीष के साथ हुआ।

हम निश्चिंत रूप से कह सकते हैं कि ऊपरी कोठरी में सब कुछ वैसा ही चल रहा था जैसा प्रभु ने योजना बनाई थी। यूहन्ना 13:1-17 हमें बताता है कि उसने चेलों के पैर धोए, लेकिन मत्ती ने हमें बहुत कम या कुछ भी नहीं बताया कि वास्तव में क्या हुआ था। इस अवसर की उसकी स्मृति में यहूदा के विश्वासघात और सदियों पुराने फसह के लिए एक नए स्मरणोत्सव के प्रतिस्थापन की गंभीर घटना हावी थी।

1. विस्फोट हुआ (26:21-22)

क. प्रकाशन (26:21)

"जब वे खा रहे थे," तब प्रभु ने एक विस्फोटक बात कही। उसने पहले भी कई बार इसके बारे में कहा था, लेकिन अब उसने विस्फोट कर दिया। जब सभी लोग भोज का आनंद उठा रहे थे, तो उसने अचानक घोषणा की, "तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा [मुझे सौंप देगा]।"

ख. प्रतिक्रिया (26:22)

आनन्द तुरन्त ही दुःख में बदल गया। इस बात से हताश कि कहीं कोई अप्रत्याशित विश्वासघात उसके भीतर न छिपा हो, हर चेले ने अपने हृदय को टटोला। "क्या मैं हूँ?" पतरस ने पूछा। "प्रभु, क्या मैं हूँ?" थोमा ने पूछा। सभी ने अपने-अपने आत्म-संदेह को अपनी आवाज़ में व्यक्त किया।

2. विश्वासघात का पर्दाफाश (26:23-25)

केंद्रीय आकृति की एक ओर, यूहन्ना "यीशु की छाती की ओर झुका हुआ बैठा था" (यूहन्ना 13:23)। यहूदा, जो शायद यीशु के बगल में दूसरी ओर बैठा था, इस अप्रत्याशित घोषणा से अपनी आत्मा की गहराई तक स्तब्ध और छुरा घोंपा हुआ सा लगा था। उसने भी हकलाते हुए पूछा, "क्या यह मैं हूँ?" बोलते समय उसके बटुए में खून के पैसे थे। "तू कह चुका," यीशु ने उत्तर दिया (मत्ती 26:25)।

अन्य प्रचारक हमें और भी बहुत कुछ बताते हैं, लेकिन मत्ती ने बहुत कुछ कहा। उसने हमें दिखाया कि यीशु ने यहूदा को उसके अंदर तक देखा और उससे साफ-साफ कह दिया, "तू ही वह आदमी है।" फिर मत्ती ने बिना कुछ और कहे यहूदा की ओर पीठ फेर ली और उसे वहां उस मंच से हटा दिया।

ग. संभावना - प्रभु और उसका उद्देश्य (26:26-29)

1. पवित्र वाचा (26:26-28)

क. प्रभु की देह (26:26)

प्रभु ने फिर से भोज को बाधित किया और एक नए युग के लिए एक नए भोज की शुरूआत की। मत्ती ने कहा, "जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांग कर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो, खाओ; यह मेरी देह है।" रोटी बेशक एक रूपक थी, लेकिन कितना जीवंत रूपक है!

रोटी प्रभु की देह का प्रतिनिधित्व करती है। रोटी को उसकी देह के तोड़े जाने का प्रतिनिधित्व करने के लिए तोड़ा गया था। यह कितना आश्चर्यजनक है कि यीशु ने रोटी को आशीष दी और इसके लिए धन्यवाद दिया (1 कुरिन्थियों 11:23-24)! जीवित परमेश्वर के पुत्र यीशु ने, अपने आगे आने वाली घोर यातना के बारे में पूरी जानकारी के साथ, वास्तव में अपनी देह के तोड़े जाने के लिए धन्यवाद दिया। बस कुछ ही घंटों बाद उसके शत्रु उसके पवित्र हाथों को एक पेड़ पर ठोंकने जा रहे थे - फिर भी उसने धन्यवाद दिया। वे उसके पैरों को जकड़ने जा रहे थे, जो मनुष्यों की संतानों की सेवा में कई मील बिना थके चले थे, और उन्हें एक क्रूस पर कील से ठोंकने के लिए लेके जा रहे थे - फिर भी उसने धन्यवाद दिया। उसकी कुचली हुई और तोडी गयी देह को पूरी दुनिया के पाप के वजन के नीचे झुकना था - फिर भी उसने इसके लिए धन्यवाद दिया।

ख. प्रभु का लहू (26:27-28)

"फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।" भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने इस नई वाचा के लागू होने की भविष्यद्वाणी की थी और इसके प्रावधानों को स्पष्ट किया था (यिर्मयाह 31:31)। इसमें दो तरह के खंड शामिल थे। इसके युगांतशास्त्रीय खंड विशेष रूप से इस्राएल से संबंधित हैं और कलवरी के मेमने के बहाए गए लहू द्वारा छाप दी गई हैं। उद्धार संबंधी खंड इस्राएल राष्ट्र और कलीसिया दोनों से संबंधित हैं, और उन सभी लोगों के उद्धार का प्रावधान करते हैं जो प्रभु यीशु मसीह के बहाए गए लहू के द्वारा मिलने वाले उद्धार पर विश्वास करते हैं।

इस इम्मानुएल राजकुमार की नसों से शाही लहू निकाला जाना था। इसकी कीमत बहुत ज़्यादा थी; उसकी पीड़ा किसी भी मानवीय कल्पना से परे होगी - फिर भी उसने धन्यवाद दिया। उसने धन्यवाद दिया क्योंकि

वह आंसुओं से परे, पीड़ा से परे, कष्ट और दर्द से परे उस बड़ी भीड़ को देख सकता था, जो मनुष्यजाति की सभी जातियों और समय के सभी युगों में मौजूद थी जिसकी कोई गिनती नहीं कर सकता था। वह उन्हें छुड़ाए हुए, चंगे होते हुए, पुनर्स्थापित होते हुए, क्षमा किए हुए, अपने लहू से धुलते हुए, अपने पापों से बचाए हुए, हमेशा के लिए अपने समान देख सकता था। वह उन्हें अपनी स्तुति गाते, परमेश्वर की आराधना करते, और अनंतकाल तक अपनी आत्मा से वास करते देख सकता था। इसलिए उसने पवित्र वाचा को मुहरबंद कर दिया।

2. दूसरा आगमन (26:29)

दूसरे आगमन के बारे में बोलते हुए, प्रभु ने आगे कहा, "मैं तुम से कहता हूँ, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं॥" इस प्रकार वह अपने चेलों को आगे की अंधेरी घाटी से होते हुए उस धूप की ओर ले गया जो उस पार थी। जब पुरानी व्यवस्था ढह रही थी, तो उसने सहस्त्राब्दी युग की महिमा और अनन्त युगों के अवर्णनीय आश्चर्यों की आशा की।

V. आँसू (26:30-46)

परछाइयाँ लंबी होती गईं। रात का अंधेरा पहले से ही उस ऊपरी कोठरी में काफ़ी गहरा था। यहूदा एक ऐसे अंधेरे में चला गया था जहाँ से वह कभी वापस लौटने वाला नहीं था। कलवरी की यात्रा का अगला पड़ाव गतसमनी होगा।

क. योजना (26:30-32)

1. अंतिम भजन (26:30)

फसह का पर्व महान हालेल, अर्थात् हालेलुयाह के भजन गाने का समय था। भजन 113 और 114 दूसरे प्याले के खाली होने से पहले गाए गए थे। वे परमेश्वर के स्वयं को दीन करने, इस्राएल के बढ़ते पैरों की ध्वनि, तथा पृथ्वी के हिलने के बारे में बताते हैं। फसह के भोज के समापन पर हालेल का शेष भाग गाया गया: भजन 115-118 और संभवतः भजन 136 भी।

हम प्रभु को अपने सबसे प्रिय मित्रों के साथ ऊपरी कोठरी की शांति में उन अंतिम कीमती क्षणों के लिए कुछ समय रुकते हुए देख सकते हैं। कुछ ही देर बाद सारा नरक खुल जाने वाला था, लेकिन उस पल के लिए सब शांत था और उसने भजन गाने के लिए मुँह खोला। हम उन शब्दों को स्पष्ट सुन सकते हैं जो उन दीवारों के चारों ओर गूंज रहे थे:

"मैं उद्धार का कटोरा उठा कर, यहोवा से प्रार्थना करूंगा" (भजन 116:13)।

"मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें...पूरी करूंगा" (भजन 116:14)। यह योना की आखिरी प्रतिज्ञा थी जब वह "अधोलोक के उदर" में था (देखें योना 2:2, 9)।

"मैं ने सकेती में परमेश्वर को पुकारा, परमेश्वर ने मेरी सुन कर, मुझे चौड़े स्थान में पहुंचाया। यहोवा मेरी ओर है, मैं न डरूंगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?" भजन 118:5-6 के ये शब्द यहोवा के उद्देश्य और भविष्य के बारे में बहुत ही सटीक रूप से बोलते हैं।

"राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था वही कोने का सिरा हो गया है।" प्रभु ने कुछ समय पहले ही अपने शत्रुओं को भजन 118:22 से ये शब्द कहे थे।

"आज वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है; हम इस में मगन और आनन्दित हों।" (भजन 118:24)। यह आश्चर्यजनक है कि प्रभु क्रूस के दिन से पहले की उस अंधेरी रात में इस पद को गाने में सक्षम था, जो इस दुनिया के दुःखद इतिहास को बदनाम करने वाला अब तक का सबसे अंधकारमय दिन था।

"धन्य है वह जो यहोवा के नाम से आता है!" (भजन 118:26)। एक सप्ताह से भी कम समय पहले, यह विजय-ध्वनि यरूशलेम की सड़कों पर गूंज उठी थी। प्रभु जानता था कि एक दिन ये शब्द फिर से उन सड़कों पर गूंज उठेगा।

"यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी करूणा सदा बनी रहेगी!" (भजन 118:29)। इस अंतिम स्तुतिगान ने स्वाभाविक रूप से भजन 136 (निर्गमन का महान गीत) को जन्म दिया, जिसमें उसका दोहा (छब्बीस बार दोहराया गया) था, "क्योंकि उसकी करूणा सदा की है।"[5]

प्रभु ने एक आखिरी बार चारों ओर देखा और फिर रात में बाहर चला गया। लेकिन उसने अपने मन में ये आश्वस्त करने वाले वचन भर लिए थे, "उसकी दया सदा की है।"

2. एक और चोट (26:31)

जब प्रभु और ग्यारह चेले बाहरी सीढ़ी से नीचे उतरे और अंधेरे से होते हुए गतसमनी के बगीचे की ओर बढ़े, तो उसने फिर से उन्हें चेतावनी दी कि आगे क्या होने वाला है। उसने भजनकार से लेकर भविष्यवक्ताओं तक के हवाले दिए और अपने मित्रों को याद दिलाया कि चरवाहे को मार डाला जाएगा; भेड़ों को तितर-बितर कर दिया जाएगा (जकर्याह 13:7)। उसके सभी चेले उसे त्याग देंगे। वह इसे जानता था; वह इसे समझता था; इसलिए उसने उन्हें क्षमा कर दिया। परमेश्वर अभी भी अपने सिंहासन पर बैठा था।

3. भविष्य की आशा (26:32)

प्रभु ने अपने चेलों से कहा कि जब यह सब खत्म हो जाएगा, तो वह उनसे गलील में मिलेगा। यही उसकी योजना थी। मृत्यु एक छोटी सी बात थी, केवल मात्र एक घटना, जो उसकी प्रस्तावित मुलाकात में बाधा डालने में पूरी तरह असमर्थ रहेगी! वे इसे भूल जाने वाले थे और उन्हें याद दिलाने की जरूरत होगी, लेकिन वह नहीं भूलेगा। नियुक्ति पहले से तय हो चुकी थी।

ख. प्रतिज्ञा (26:33-35)

1. पतरस ने शपथ खाई (26:33-35a)

उस रात मसीह के कारण ठोकर खाने (ठुकराने) का विचार पतरस के लिए बहुत भारी था। उसने शपथ खाई कि भले ही दूसरे सभी लोग ठोकर खाएँ, लेकिन वह कभी उसका इनकार नहीं करेगा। वह एक चट्टान था - या ऐसा उसने सोचा था। वह अपने हृदय को नहीं जानता था। जितना वह खुद को जानता था उससे अधिक यीशु उसे जानता था। यहाँ तक कि प्रभु को सब कुछ विस्तार से पता था। उसने कहा, "आज ही रात को मुर्गे के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा" (26:34)। इस बात से विचलित हुए

बिना, पतरस ने जोर देकर कहा, "यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तौभी, मैं तुझ से कभी न मुकरूंगा" (26:35)।

2. पतरस की शपथ कई गुना बढ़ी (26:35b)

पतरस की ईमानदारी से प्रभावित होकर और उससे पीछे न रह जाने के इरादे से अन्य चेलों ने भी इसी तरह की शपथ ली। यहाँ प्रभु ने इस मुद्दे पर उनसे बहस नहीं की। वह शरीर की भयानक कमज़ोरी को जानता था। समय आने पर वे उन बातों को जान लेंगे जो वह पहले से ही जानता था।

ग. स्थान (26:36-38)

1. यीशु और उसके सबसे करीबी अनुयायी (26:36)

चाँद पूरा चमक रहा था और उसकी चाँदनी गतसमनी के रास्ते को अपने उजाले से नहला रही थी। एडर्सहेम ने इस प्रकार लिखा, "सड़कें सुनसान नहीं थीं, क्योंकि कई घरों में पर्व के दीप जल रहे थे, और बहुत से लोग अभी भी यहाँ वहाँ एकत्रित थे; और हर जगह मंदिर जाने की तैयारी की हलचल थी, जिसके द्वार आधी रात को खोल दिए गए थे।"[6]

यीशु और उसके चेले यरूशलेम से मंदिर के उत्तर की ओर स्थित द्वार से बाहर निकले और किद्रोन की ओर उतरे, जो उस समय वर्ष के एक जलप्रपात में बह जाता था। उन्होंने नदी पार की और बाईं ओर मुड़ गए जहाँ सड़क जैतून के पहाड़ की ओर जाती थी। जल्द ही वे सड़क से दाईं ओर चले गए और गतसमनी ("तेल-कुण्ड") पर पहुँच गए, जो एक छोटा सा चारों ओर से बंद उद्यान था जहाँ निस्संदेह जैतून के पेड़ उगे हुए थे। एडर्सहेम का अनुमान है कि यह मरकुस के पिता का बगीचा था।

2. यीशु और उसके सबसे करीबी मित्र (26:37-38)

प्रभु अपने अन्य आठ चेलों को छोड़कर पतरस, याकूब और यूहन्ना को बगीचे में ले गया, जहाँ पीड़ा और संकट से भरकर वह "उदास और व्याकुल होने लगा" (26:37)। उसने अपने सबसे प्रिय तीन मानवीय मित्रों से कहा: " मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकलना चाहते है" (26:38)। विचार यह है कि वह उस पीड़ा से कुचला हुआ महसूस कर रहा था।। कलवरी की छाया अब उसकी आत्मा पर पड़ने लगी थी।

उसने उन तीनों चेलों को आदेश दिया, "तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।" (26:38)। वह ज़्यादा कुछ नहीं माँग रहा था, लेकिन वे बस इतना ही कर सकते थे। यीशु का मानवीय पक्ष यह जानने के लिए तरस रहा था कि कम से कम कुछ लोग तो ऐसे हो जो उसके साथ जागने के प्रति तैयार रहे।। उन्हें न केवल उसके लिए, बल्कि अपनी स्वयं की आत्माओं के लिए भी जागने की ज़रूरत थी।

जब प्रभु ने अपनी सेवकाई शुरू की थी, तो उसके पास बड़ी भीड़ उमड़ पड़ती थी, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, वे कम होते गए। जीवन की रोटी पर उसके उपदेश के बाद, उसके कई अनुयायियों ने भी उसे छोड़ दिया, लेकिन तब भी उसके पास ये बारह चेले थे। अब उनमें से एक विश्वासघाती हो गया था; कहीं बाहर यहूदा भीड़ के मुखिया के रूप में खुद को स्थापित कर रहा था। यीशु के पास अभी भी ग्यारह चेले थे, लेकिन आठ फिर से द्वार पर ही थे। वह अब घटकर केवल तीन रह गए थे।[7]

वास्तव में यीशु ने उन तीनों से कहा, "यदि तुम कुछ और नहीं कर सकते, तो कम से कम मेरे साथ जागते तो रह सकते हो।" उसने बहुत ही कम अपनी पीड़ा के बारे में बात की है, लेकिन अब उसने इसे उनके सामने रखा। पापी संसार की पीडाओं का उफनता हुआ सागर, विशाल गहराई से बहकर उसकी आत्मा पर गरजने लगा था। वह वास्तव में अब "दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी (यशायाह 53:3)।

घ. विनती (26:39-45a)

मत्ती ने कहा, " फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर..." (26:39)। हमें सोचना चाहिए कि वह पहले ही कितनी दूर आ चुका था। वह महिमा से गलील तक आया था - एक कुंवारी के गर्भ के माध्यम से; बैतलहम, मिस्र, नासरत से होने हुए; एक चरनी से; एक बढ़ई की मेज़ से। वह गलील से गतसमनी तक आया था - यरदन के रास्ते से होते हुए; कफरनहूम के रास्ते से होते हुए; कई मील की दूरी तय करके, दया और चमत्कार के कई मिशन के साथ एक व्यक्ति के रूप में वह आया था। अब वह गतसमनी से होकर गब्बता, फिर गब्बता से होकर कब्र तक, और अंततः कब्र से वापस महिमा की ओर जाने वाला था।

लूका ने कहा कि वह बगीचे में "उन से अलग एक ढेला फेंकने के टप्पे भर गया" (लूका 22:41)। याद रखें कि लूका को यहूदियों द्वारा मृत्युदंड के तरीके के बारे में सब कुछ अच्छी तरह पता था। यह वही था जिसने स्तिफनुस को पत्थरवाह करके मार डालने की घटना के बारे में बताया था। यह लूका ही था जिसने इकुनियुम में एक उग्र भीड़ द्वारा पौलुस पर पत्थरवाह की घटना के बारे में बताया था, जिसे पिसिदिया के अन्ताकिया के क्रोधित यहूदियों ने उकसाया था। "एक ढेला फेंकने के टप्पे भर" की दूरी मृत्यु की दूरी थी। प्रभु ने मृत्यु की उस अंधेरी घाटी में अपना स्थान ग्रहण किया।

उसका प्राण मानो घोर वेदना से भर उठा और वह प्रार्थना करने लगा। लूका 22:44 हमें बताता है कि "वह अत्यन्त संकट में व्याकुल होकर और भी हृदय वेदना से प्रार्थना करने लगा; और उसका पसीना मानो लहू की बड़ी बड़ी बून्दों की नाईं भूमि पर गिर रहा था।" उसने विनती की, "हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो" (मत्ती 26:39)।

शैतान कई साल पहले जंगल में यीशु के पास आया था और उसे क्रूस के बिना ही मुकुट देने की पेशकश की थी। शैतान, पतरस की आवाज़ का उपयोग करते हुए, कैसरिया फिलिप्पी में फिर से उसके पास आया था; जब उसने पहली बार अपने चेलों के सामने क्रूस के विषय पर चर्चा की, तो पतरस ने कहा था, "हे प्रभु, परमेश्वर न करे; तुझ पर ऐसा कभी न होगा" (16:22)। अब शैतान फिर से वापस आ गया था, चाँदनी से परे अंधेरी छाया में वह कहीं दुबका हुआ था। वह फुसफुसा रहा था, "क्रूस नहीं!" यीशु ने, एक मनुष्य के रूप में, क्रूस से दूर हटना चाहा, लेकिन आगे जो कुछ भी होने वाला था उसकी भयानकता "परमेश्वर की परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा" (रोमियों 12:2) के सामने फीकी पड़ गई थी।[8]

और वह क्या था जिसने उसके कटोरे को भय से भर दिया था? क्या वह क्रूस था? कोई भी व्यक्ति क्रूस से कतराता, क्योंकि यह मरने का एक बहुत ही भयानक तरीका था। लेकिन कई लोग इस तरह से मर चुके थे और कई और मरने वाले भी थे। नहीं, यह मृत्यु का भौतिक साधन नहीं था जिसके कारण उसे लहू की नाई अपना पसीना बहाना पड़ा। यह दरअसल हमारा पाप था। यह पाप बनने का विचार था, पाप के लिए मरने

का, परमेश्वर द्वारा शापित होने का। यह अकेले होने का विचार था, जिसमें दया करने वाली कोई आँख नहीं थी और बचाने वाला कोई हाथ नहीं था।

प्रभु को जल्द ही उस भयानक अकेलेपन का कड़वा स्वाद चखना था, क्योंकि उसने पाया कि पतरस, याकूब और यूहन्ना सभी गहरी नींद में सो रहे थे। डींगे मारने वाले पतरस से उसने कहा, "क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके?" (26:40) इसलिए उसने उनके काम को थोड़ा और बढ़ा दिया। उसने कहा, "जागते रहो और प्रार्थना करते रहो" (26:41)। उसने लोगों से, उन तीन खास लोगों से, उन लोगों से अपनी आखिरी दलील की, जिन्हें सभी लोगों में से, उसके साथ खड़ा होना चाहिए था।

अब चेलों को उसके लिए नहीं बल्कि अपने लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता थी। प्रभु ने कहा, "जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो," "कि तुम परीक्षा में न पड़ो।" जागते रहना शत्रु को दूर करता है; जबकि प्रार्थना शत्रु से लड़ता है। अदन बगीचे का पुराना साँप वापस एक बगीचे में था, अर्थात् गतसमनी के बगीचे में। यीशु को छूने में असमर्थ होने के कारण, वह उन चेलों पर हमला करेगा। इसलिए यीशु ने अपने थके हुए चेलों के लिए समझ और करुणा के ये शब्द जोड़े: "आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है।"

वह फिर से प्रार्थना करने के लिए वापस गया कि कोई और रास्ता मिल जाए, लेकिन अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए फिर से उसने प्रतिज्ञा की। इस प्रकार भयानक रात बीत गई। कुल मिलाकर तीन बार वह प्रार्थना करने गया; तीनों बार उसने अपने पिता की इच्छा के आगे समर्पण किया। इसी तरह पौलुस ने बाद के वर्षों में अपने "शरीर में काँटे" से कुछ राहत के लिए तीन बार प्रार्थना की, लेकिन अंत में, अपने धन्य गुरु की तरह, परमेश्वर की इच्छा के आगे उसने भी समर्पण कर दिया (2 कुरिन्थियों 12:7-9)। पौलुस को अनुग्रह दिया गया। जबकि यीशु को क्रोध का सामना करना पड़ सकता था।

यीशु फिर से उन सोए हुए चेलों के पास उनके लिए जागने और प्रार्थना करने के लिए वापस आया। लेकिन उसने कहा, "अब सोते रहो, और विश्राम करो" (मत्ती 26:45)।

ङ. अंतिम डुबकी (26:45b-46)

निस्संदेह कुछ समय बाद ही उसने एक भीड़ की आवाज सुनीं, पेड़ों के बीच लालटेनें देखीं, और जोर से घोषणा की: "देखो, घड़ी आ पहुंची है, और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है। उठो, चलें; देखो, मेरा पकड़वाने वाला निकट आ पहुंचा है।" चौबीस घंटे से भी कम समय में वह मर चुका होगा।

VI. मुकद्दमें (26:47-27:26)

क. गिरफ़्तारी (26:47-56)

1. षडयंत्रकारी (26:47-49)

क. भीड़ (26:47)

मत्ती ने प्रभु यीशु की गिरफ़्तारी और मुकद्दमे के वर्णन के लिए काफ़ी जगह दी है। भीड़ के आने से शुरू करते हुए, उसने उन्हें "महायाजकों और लोगों के पूर्वजों की ओर से बड़ी भीड़, तलवारें और लाठियां लिए हुए" के रूप में वर्णित किया। स्पष्ट रूप से षडयंत्रकारी किसी और के द्वारा अपने उस दुष्ट कार्य को पूरा

करने देने के लिए तैयार थे। और जाहिर तौर से उन्हें यकीन नहीं था कि यह मसीहा आखिरी समय में उनसे संघर्ष करेगा या नहीं। वे जानते थे कि उसके साथ ग्यारह आदमी थे और उनमें से कम से कम दो हथियारबंद थे (लूका 22:38,49-50)। इसके अलावा, इस प्रसिद्ध गलीली के पास रहस्यमयी सामर्थ थीं जिसे वे समझ नहीं पाए थे, हालाँकि वे उसे शैतान का मानने को तैयार थे। उन्हें डर था कि अगर उसने उन सामर्थों को उनके विरूद्ध इस्तेमाल किया तो क्या होगा। मुख्य याजकों और पूर्वजों ने फैसला किया कि यहूदा और हथियारबंद लोगों की एक भीड़ को आगे भेजना ही सबसे सुरक्षित होगा।

ख. वह मनुष्य (26:48)

मत्ती 26:47 में यहूदा को "बारहों में से एक" कहा गया है, ताकि उसकी बदनामी को रेखांकित किया जा सके। अब 26:48 में उसे "पकड़वाने वाले" के रूप में वर्णित किया गया है। सभी सुसमाचार प्रचारकों ने यहूदा को इसी प्रकार से चिह्नित किया, तथा जब भी आवश्यक हुआ, उसके विषय में शर्मनाक शब्द का प्रयोग किया।।

यहूदा ने अपने पीछे खड़ी भीड़ को एक संकेत दिया था: "जिस को मैं चूम लूं वही है; उसे पकड़ लेना।" - मानो वह जो अपनी सामर्थ के वचन से सबको थामे हुए हैं (इब्रानियों 1:3) उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध भी ऐसे लोग पकड़ सकते हैं! ऐसा लगता है कि यहूदा का इरादा था कि जैसे ही वह अपना भयानक संकेत देगा, और जैसे ही उसका वह कलंकित काम पूरा हो जाएगा, वह तुरंत रास्ते से हट जाएगा। क्योंकि यदि यह नम्र और विनम्र मसीहा अचानक आग की चिंगारी दिखाता है तो वह खुद तो बच जाएगा और दूसरों को जोखिम उठाने देगा।।

ग. रब्बी (26:49)

"और तुरन्त [यहूदा ने] यीशु के पास आकर कहा; हे रब्बी नमस्कार; और उस को बहुत चूमा।" यीशु केवल वहीं खड़ा रहा और उसे ऐसा करने दिया, जैसा कि उसने पहले भी हज़ार बार किया था। 26:49 में "बहुत चूमा" का अनुवाद किया गया मूल शब्द 'काटाफिलेओ' है, जिसका अर्थ है "उत्साहपूर्वक चूमना।" उद्धारकर्ता के गाल पर दिया गया उस विश्वासघाती का शर्मनाक चुंबन, अभिवादन के सामान्य चुंबन से ज़्यादा प्रदर्शनकारी था। यह एक दिखावटी चुंबन था - जो दरअसल चेहरे पर मारे जाने वाले थप्पड़ से भी दस हज़ार गुना ज़्यादा बुरा था।

2. मुठभेड़ (26:50-54)

क. यहूदा को अंतिम क्षण में सुधार का वचन (26:50)

"हे मित्र," यीशु ने यहूदा से कहा, "जिस काम के लिये तू आया है, उसे कर ले।" हम पहले भी देख चुके हैं कि यीशु ने इस शब्द "मित्र [साथी, अनुयायी]" का इस्तेमाल पहले कैसे किया था (11:16; 20:13; 22:12)। यकीनन यीशु जानता था कि यहूदा क्यों आया था। यह टिप्पणी किसी प्रश्न से अधिक एक विस्मयकारी कथन था। यह यहूदा के विवेक के शेष बचे अंश के लिए प्रभु की अंतिम पुकार थी। जहाँ तक यीशु का सवाल है, घटनाओं के आगे बढ़ने को कुछ भी नहीं पलट सकता था, लेकिन यहूदा पर अभी भी दया हो सकती थी। प्रभु जानता था कि अगर इस आदमी को वापस नहीं लाया गया तो उसके लिए क्या होने वाला है: आत्महत्या द्वारा मौत और नरक की सबसे गर्म लपटों में अनंत पीड़ा का दण्ड।

वह क्षण जितनी जल्दी आया था उतनी ही जल्दी चला भी गया। भीड़ ने योजना के अनुसार हमला किया और यहूदा को दरकिनार कर दिया गया - उसके होंठ अभी भी बंद थे, उसकी आत्मा अब दूसरे विचारों का शिकार थी।

ख. पतरस को अंतिम क्षण में प्रकाशन का एक वचन (26:51-54)

(1) तलवार (26:51-52)

(a) इसका उपयोग कैसे किया गया (26:51)

अब पूरी तरह से नींद से जगे और पहले की तरह उत्साही होकर पतरस स्वयं मसीह की रक्षा के लिए आगे आया। हाथ में तलवार लेकर, उसने महायाजक के दासों में से एक का दाहिना कान काट दिया। स्पष्ट रूप से पीड़ित उन लोगों में से एक था जिन्होंने यीशु को पकड़ा था। लेकिन प्रभु का बचाव इस तरह नहीं किया जाना था, जैसा कि पतरस को पता चल सकता था अगर उसने पिछले कुछ घंटे सोने के बजाय जागते और प्रार्थना करते हुए बिताया होता। अन्य एक स्थान में हमें बताया गया है कि यीशु ने महायाजक के उस पीड़ित सेवक को कोमलता से चंगा किया (लूका 22:51)।

(b) यह कितना व्यर्थ था (26:52)

यह घटना बिना किसी सबक के यूहीं नहीं बताई गई है। उद्धारकर्ता का बचाव करने की कोशिश में, मसीह के कई अति उत्साही चेलों ने कई अविश्वासियों के कान काट दिए हैं और उन तक पहुँचना और भी मुश्किल बना दिया है। बिना उद्धार पाया एक व्यक्ति उन शब्दों और कार्यों के बारे में ही सोच सकता है जिसने उसे चोट पहुंचाई है या जिस घिनौने तरीके से कुछ सत्य को उसके गले में जबरन डाला गया है। ऐसे अविश्वासी के लिए अनुग्रह के एक विशेष चमत्कार की आवश्यकता होती है ताकि उसकी आत्मिक सुनने की शक्ति पुनर्स्थापित हो सके ताकि वह फिर से यीशु को सुनने के लिए तैयार हो जाए। हमें कितना सावधान रहना चाहिए कि हम यीशु को गलत तरीके से प्रतिनिधित्व न करें!

हालाँकि, प्रभु के पास पतरस के लिए एक अलग सबक था। यीशु ने उसे अपनी तलवार रख देने को कहा। मसीह के उद्देश्य को ऐसे तरीकों से आगे नहीं बढ़ाया जाना चाहिए। "जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे।" हिंसा का सहारा लेने से केवल हिंसक प्रतिक्रिया ही होती है।

(2) संप्रभु (26:53)

प्रभु को पतरस की तलवार की जरूरत नहीं थी। यीशु वह देख सकता था जो पतरस नहीं देख सकता था। स्वर्ग में ऊपर स्वर्गदूतों की बारह सेनाएँ (उनमें से बहत्तर हज़ार) युद्ध की व्यूहरचना में तैयार खड़ी थीं, जो ईश्वरीय शहर की दीवारों पर दबाव डाल रही थीं। केवल एक शब्द पर ही वे हमला बोल सकते थे। एक ही पल में वे उस भीड़ को तितर-बितर करने, महासभा को खत्म करने, मनुष्यजाति पर संक्षिप्त रूप से प्रतिशोध करने और हर-मगिदोन की लड़ाई शुरू करने के लिए तैयार हो सकते थे। लेकिन वह शब्द कभी नहीं आया, क्योंकि "जिस प्रकार भेड़ ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला" (यशायाह 53:7)।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि मत्ती 26:53 का प्रकाशन पतरस को दिया गया था, पिलातुस को नहीं। इसका उद्देश्य जानकारी देना था, डराना नहीं।

(3) पवित्रशास्त्र (26:54)

"परन्तु," यीशु ने पूछा, "पवित्र शास्त्र की वे बातें कि ऐसा ही होना अवश्य है, क्योंकर पूरी होंगी?" "ऐसा ही होना अवश्य है" शब्द पर ध्यान दें। निस्संदेह यही उत्तर उसे एक या दो घंटे पहले अपनी पीड़ादायक प्रार्थना के समय मिला था: "ऐसा ही होना अवश्य है।" क्यों? क्योंकि पवित्रशास्त्र ने ऐसा कहा है। पुराने नियम के उदाहरण - जैसे कि मोरियाह पहाड़ पर इसहाक, लैवीय चढ़ावे, फसह, नूह का जहाज़, योना आदि - पूरे होने थे। प्रत्यक्ष भविष्यवाणियाँ - जैसे कि यशायाह 53, भजन 22, भजन 69 - पूरी होनी अवश्य थी। ईश्वरीय प्रेरणा से लिखे गए, अटल पवित्रशास्त्र को पूरा होना अवश्य था। अपनी पीड़ा के समय में भी प्रभु ने परमेश्वर के पवित्र वचन के अधिकार पर अपनी मुहर लगाई।

3. कायर लोग (26:55-56)

क. यहूदा के पीछे आए हुए लोग (26:55-56a)

(1) यीशु ने क्या पूछा (26:55)

हम देख सकते हैं कि भीड़ पृष्ठभूमि में यह देखने के लिए कि क्या होगा, तलवारों और लाठियों से सुसज्जित होकर खड़ी थी। प्रभु उन्हें बाहर खींचकर खुले में ले आया और प्रभावी रूप से पूछा, "क्या मैं डाकू हूँ?" 26:55 में "डाकू" शब्द का अनुवाद वही शब्द है जिसका उपयोग उन दो लोगों का वर्णन करने के लिए किया गया है जिन्हें यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था (27:38)।

इसी वाक्य में अन्य प्रश्न भी निहित थे: तुम हथियार लेकर ऐसे क्यों आए हो जैसे कि मैं खतरनाक हूँ? तुम रात में क्यों आए हो? प्रभु ने उस भीड़ को याद दिलाया कि मंदिर में उसने खुद को उनके लिए कितना सुलभ बना लिया था। लेकिन उनकी साजिश, या जैसा कि उन्होंने कल्पना की थी, अंधेरे की आड़ में एकांत स्थान पर उसे बलपूर्वक पकड़ने की थी।

(2) यीशु ने क्या स्वीकार किया (26:56a)

प्रभु को गिरफ्तार करने के लिए जो दल आया था, वह बहुत बड़ा था। यूहन्ना ने इसके एक भाग को "पलटन" (यूहन्ना 18:3,12) बताया है। "पलटन" का अनुवाद किया गया मूल शब्द “स्पीरा” है, जो रोमी सेना के दल का एक विभाग होता है। यह संभव नहीं कि पूरा दल मौजूद हो, लेकिन स्पष्ट रूप से उसे गिरफ्तार करने के लिए पर्याप्त लोग मौजूद थे। लूका 22:52 कहता है कि भीड़ के अलावा, महायाजक और मन्दिर के पहरूओं के सरदार और पुरनिये भी मौजूद थे। स्पष्ट है कि महासभा को डर था कि यीशु अपना बचाव अवश्य करेगा। अगर उसने ऐसा किया होता, तो दुनिया की कोई भी सेना उसके विरूद्ध खड़ी नहीं हो सकती थी। लेकिन यह ईश्वरीय उद्देश्य नहीं था। जैसा कि मत्ती ने स्वयं टिप्पणी की, "परन्तु यह सब इसलिये हुआ है, कि भविष्यद्वक्ताओं के वचन के पूरे हों।"

ख. यीशु के अनुयायी (26:56b)

हम बड़े दुःख के साथ यीशु के उन कायर अनुयायियों को देखते हैं। "सब चेले उसे छोड़कर भाग गए।" उसने उन्हें बार-बार बताया था कि उसे पकड़वाया जाएगा और मार डाला जाएगा, लेकिन उसकी चेतावनियाँ उन्हें उस भारी भय से नहीं बचा पाईं जो उसकी गिरफ़्तारी के समय उन पर हावी हो गया था। अकेलेपन, विश्वासघात और त्यागे जाने के दुःख ने उद्धारकर्ता की आत्मा को अधिक झकझोर दिया।

ख. अभियोग (26:57-27:26)

1. यहूदियों के धार्मिक अगुवों के सामने (26:57-75)

अगली घटनाएँ यहूदियों और अन्यजातियों के सामने प्रभु के अभियोग की पृष्ठभूमि में दर्ज की गईं है। यहूदी धार्मिक अगुवों के समक्ष मसीह के प्रकट होने का विवरण मत्ती के वृत्तांत में लगातार पतरस के सन्दर्भों द्वारा दर्शाया गया है। इसलिए अतः हम इस दुःखद मुकदमे को पतरस की आंखों से देख सकते हैं और पतरस के कानों से सुन सकते हैं।

क. जहाँ पतरस जाकर बैठा (26:57-58)

(1) भीतरी आँगन जहाँ यीशु पर मुकदमा चलाया गया (26:57)

महायाजक की सभा में एक आँगन से प्रवेश किया जाता था जिसमें एक द्वार था। द्वार और आँगन के बाहर एक ऊंचा और स्तंभित फ़र्श था जो एक दर्शक कक्ष बनाता था। आँगन के दोनों किनारों पर अन्ना और काइफा के महल थे, जो भूतपूर्व और वर्तमान महायाजक थे। प्रभु को दर्शक कक्ष में अभियोग लगाया गया होगा। कुछ ही दूरी पर पतरस एक ऐसे स्थान पर छिप कर बैठ गया जहाँ से वह प्रभु को देख सकता था। हम यूहन्ना 18:18 से जान पाते हैं कि रात बहुत ठंडी थी और आँगन में कुछ लोगों ने गर्मी के लिए कोयले की एक छोटी सी आग जला रखी थी।

(2) बाहरी आँगन जहाँ पतरस की परीक्षा हुई (26:58)

"पतरस दूर से उसके पीछे पीछे महायाजक के आंगन तक गया।" यह मत्ती का अपने मित्र और सह-चेले के व्यवहार का वर्णन करने का अल्पभाषी तरीका था। जब हम पतरस के पतन का पता लगाते जाते हैं, तो वह पहले भजन में वर्णित प्रभु की सलाह के विरुद्ध कार्य कर रहा है। हम उसे दुष्टों की युक्ति पर चलते हुए, पापियों के मार्ग में खड़े होते हुए, और ठट्ठा करने वालों की मंडली में बैठे हुए देखते हैं।

ख. पतरस ने क्या देखा (26:59-68)

(1) झूठे गवाह (26:59-63a)

(a) वे लोग जो ऐसी गवाही लेकर आए जिसे महासभा ने अनिर्णायक माना (26:59-60a)

स्वर्ग के प्रियतम के विरुद्ध कुछ हानिकारक और दोषपूर्ण टिप्पणी करने के लिए आए अनेक लोगों के समक्ष, हमारे प्रभु ने एक अध्ययनपूर्ण और सरल मौन बनाए रखा। वह जानता था कि धार्मिक अगुवों ने अपने मन में उसे पहले से ही दोषी ठहराया दिया था और अब उस पर दोष लगा रहे थे। अब जो झूठी और कमजोर कहानियां गढ़ी जा रही हैं और सबूत के तौर पर पेश की जा रही हैं, उनका खंडन करना बेकार है।

महासभा का एक ही लक्ष्य था: उसे मौत की सज़ा देना। उसने अपनी महिमामय खामोशी से उन आरोपों का जवाब दिया।

"क्या तू कोई उत्तर नहीं देता?" आरोप लगाने वाले चिल्लाते हैं,

कोई उत्तर न देना ही उसका कठोर जवाब था।

(b) वे लोग जो ऐसी गवाही लेकर आए जिसे महासभा ने दोषी माना (26:60b-63a)

i. दो लोग जिन्होंने महासभा को प्रसन्न किया (26:60b)

यहूदी व्यवस्था के अनुसार, किसी न्याय को पारित करने से पहले कम से कम दो गवाहों की सहमति की गवाही की आवश्यकता होती थी। कई झूठे गवाह आए; मत्ती ने उस दुःखद तथ्य को दो बार दर्ज किया है। अंत में दो झूठे गवाह आए जिनकी गलत गवाही इतनी एकजुट और सत्य के इतने करीब थी कि महायाजक ने उसे सबूत के तौर पर स्वीकार कर लिया।

ii. महासभा को प्रसन्न करने वाली गवाही (26:61-63a)

झूठे गवाहों ने गवाही दी, "उस ने कहा है; कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूँ और उसे तीन दिन में बना सकता हूँ" (26:61)। उसके होठों से कभी भी ऐसा कोई शब्द नहीं निकला था। उसने यह कभी नहीं कहा था कि वह मंदिर को नष्ट कर देगा। उसने कहा था, "इस मंदिर को नष्ट कर दो," न कि "मैं नष्ट करूँगा।" इसके अलावा अधिकारियों ने उसके शब्दों के तात्पर्य को गलत समझा था। वह अपनी देह, अर्थात् पृथ्वी पर परमेश्वर के सच्चे मंदिर का उल्लेख कर रहा था, न कि हेरोदेस के उस मंदिर का (यूहन्ना 2:19-22)।

हालाँकि, महासभा ने उन गवाहों की सटीकता या उद्धारकर्ता के प्रतीकात्मक शब्दों की कोई परवाह नहीं की। वे केवल एक दोष लगाने के कारण को पाने में रुचि रखते थे जिसे कानूनी जामा पहनाकर कुछ दिखावे के साथ प्रस्तुत किया जा सकता था। उन्हें अपने दो गवाह मिल गए थे और इसलिए उन्होंने अपने कानूनी तरीके को संतुष्ट कर लिया था (व्यवस्थाविवरण 17:6; 19:15)।

"परन्तु यीशु चुप रहा" (मत्ती 26:63)। अविचलित और शांत होकर, उसने न्याय के इस उपहास को सहन कर लिया।

(2) विश्वासयोग्य गवाह (26:63b-68)

(a) शपथ (26:63b-64)

i. मसीह को दिलाई गई (26:63b)

महायाजक मसीह के दावों को जानता था। वह यह भी जानता था कि वह उन दावों का इस्तेमाल उसके विरूद्ध कैसे कर सकता है, या उनका इस्तेमाल एक धार्मिक आवेश को भड़काने के लिए कर सकता है। जब वह गवाहों का एक पूरा दरबार बना सकता है तो उसे झूठे गवाहों से क्यों परेशान होना चाहिए? जब

परमेश्वर द्वारा शपथ दिलाई जाती है तो कैदी चुप नहीं रह सकता। उसकी चुप्पी एक सकारात्मक कथन की तरह ही निंदनीय मानी जायेगी (लैव्यव्यवस्था 5:1)। इसलिए काइफा ने जानबूझकर मसीह को एक ऐसे सवाल का जवाब देने के लिए मजबूर किया जो तकनीकी रूप से अवैध था। यह एक ऐसा सवाल था जिसके लिए अमेरिकी व्यवस्था के अंतर्गत संविधान के पांचवें संशोधन में प्रावधान किया गया है। यह एक ऐसा प्रश्न था जिसके लिए आत्म-दोषी उत्तर की आवश्यकता थी।

काइफा ने प्रभु को परमेश्वर की शपथ दिलाई। शपथ दिलाने के लिए कानूनी शब्दावली का इस्तेमाल करते हुए उसने कहा, "मैं तुझे जीविते परमेश्वर की शपथ देता हूँ।" प्रभु को वास्तव में शपथ दिलाई जा रही थी, ठीक वैसे ही जैसे हमारे न्यायालयों में एक गवाह से यह पुष्टि करने के लिए कहा जाता है कि वह "सत्य, संपूर्ण सत्य और केवल सत्य" ही कहेगा। फिर काइफा ने प्रश्न पूछा - वास्तव में एक में ही दो प्रश्न: "यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे।"

ii. मसीह द्वारा जवाब दिया गया (26:64)

शपथ के अंतर्गत मसीहा होने का दावा यीशु को रोमियों की नज़र में दंड के दायरे में ला सकता था; परमेश्वर का पुत्र होने का दावा यहूदियों की नज़र में उसे दोषी ठहरा सकता था। यह दावा उसे देशद्रोही के रूप में मृत्युदंड दिला सकता था; या, परमेश्वर की निंदा करने वाले के रूप में मृत्युदंड के योग्य बना सकता था। लेकिन प्रभु ने जानबूझकर इब्रानी व्यवस्था के अंतर्गत अपने संवैधानिक अधिकारों की दलील करने से परहेज किया। उसका उत्तर तत्काल, स्पष्ट और निर्विवाद था: "तू ने आप ही कह दिया" - दूसरे शब्दों में, "यह वैसा ही है जैसा तूने कहा है।" प्रभु का उत्तर इस बात की स्पष्ट और सरल पुष्टि थी।

लेकिन प्रभु का काम अभी पूरा नहीं हुआ था। उसने महायाजक के चेहरे पर दिख रहे क्रोध और अविश्वास का सीधा जवाब दिया: " वरन [तुम्हारे अविश्वास के बावजूद] मैं तुम से यह भी कहता हूँ, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।" काइफा ने तब मसीह के परमेश्वरत्व को नहीं देखा था, लेकिन वह इसे आने वाले दिनों में देखने वाला था। जब मसीह आएगा, तो वह चट्टानों और पहाड़ियों को अपने ऊपर गिरने के लिए कहेगा और अपने आप को उस मेमने के क्रोध से छिपाएगा। एक दिन वे सभी उसे देखेंगे जिन्होंने उसे भेदा था।

काइफा को आने वाली घटनाओं का अंदाजा तब हुआ जब कुछ दिनों बाद घबराया हुआ पहरेदार खुली कब्र से पुनरुत्थान की खबर लेकर भागता हुआ उसे पास आया। महायाजक को एक और पूर्वाभास तब हुआ जब उसके दोषी साथियों के साथ उसका सामना प्रेरितों के एक समूह से हुआ। वे यरूशलेम को जी उठे मसीह के समाचार से भर रहे थे और उन्हें डराने-धमकाने और चुप कराने के सभी प्रयासों का दृढ़ता से विरोध कर रहे थे। "तुम...देखोगे," यीशु ने किसी अहंकार में नहीं, बल्कि उस व्यक्ति की आत्मा की स्थिति के प्रति दुखीं होकर कहा।

(b) परिणाम (26:65-68)

i. महासभा द्वारा मृत्युदंड का निर्णय सुनाया गया (26:65-66)

अब इसका परिणाम भी सुनिश्चित था। इस बात को मानने से इंकार करते हुए कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था, महायाजक ने अपना वस्त्र फाड़ा और जोर से चिल्लाया, "इस ने परमेश्वर की निन्दा की है, अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन?" (26:65)

महायाजक के वस्त्र को "एपोद का वस्त्र" (निर्गमन 39:22-23) के नाम से जाना जाता था। यह पूरी तरह नीले रंग के सूक्ष्म सनी के कपडे से बुना जाता था, जो स्वर्ग का रंग है, ताकि याजक और लोगों को उसकी उच्च और पवित्र बुलाहट की याद दिलाई जा सके। इसके किनारों पर अनार और शुद्ध सोने की घंटियों का घेरा होता था, जो याद दिलाते थे कि उसे परमेश्वर के लिए एक शानदार गवाही देनी थी और उसे परमेश्वर की सेवा में अत्यधिक फलदायी होना था। गले को "एक बखतर" से सुरक्षित किया गया था, जिसका शाब्दिक अर्थ "कवच का एक कोर" है; इसमें पवित्र आत्मा ने जोड़ा, "ताकि यह फटने न पाए।" जब हारून के बेटों नादाब और अबीहू को उनके सेवकाई को अपवित्र करने के लिए परमेश्वर द्वारा मार डाला गया, तो हारून, एलीआजर और ईतामार (मृतकों के पिता और भाई) को स्पष्ट रूप से चेतावनी दी गई थी कि वे निराशा की अभिव्यक्ति के रूप में अपने वस्त्र न फाड़ें (लैव्यव्यवस्था 10:6)।

अपने वस्त्र को फाड़कर दुष्ट काइफा ने उसने इतना अधिक अपराध किया, जितना उसे एहसास भी नहीं था। उसने उस पद को, जिसका उसने इतना अपमान किया था, शून्य और निरर्थक बना दिया। परमेश्वर ने उसे फाड़कर फेंक दिया, ठीक वैसे ही जैसे महायाजक ने अपने वस्त्र को नष्ट कर दिया था। परमेश्वर को अब उसके पद की कोई आवश्यकता नहीं थी; उसके पास एक नया महान महायाजक था, जिसे वह जल्द ही स्वर्ग में स्थापित करने वाला था। कुछ घंटों बाद परमेश्वर ने मंदिर के पर्दे को भी दो भागों में फाड़ डाला, जिससे मंदिर, उसके बलिदान और सेवाएं, और उसमें निहित यहूदी धर्म के रीति=रिवाज़ सबकुछ अप्रचलित हो गए और ईश्वरीय अर्थव्यवस्था में अब उनका कोई उपयोग नहीं रहा।

काइफा ने फिर महासभा से उनका फैसला मांगा। उन्होंने कहा, "यह वध होने के योग्य है" (मत्ती 26:66)।

ii. महासभा द्वारा प्रदर्शित भयंकर तिरस्कार (26:67-68)

मसीह को परमेश्वर की निंदा का दोषी ठहराने और उसे मृत्यु की सज़ा सुनाने से संतुष्ट न होकर, महासभा के सदस्यों ने उसे सताना शुरू कर दिया। "तब उन्होंने उस के मुंह पर थूका, और उसे घूंसे मारे, औरों ने थप्पड़ मार के कहा। हे मसीह, हम से भविष्यद्वाणी करके कह: कि किस ने तुझे मारा?"

हो सकता है कि स्वर्गदूतों की बारह टुकड़ियों ने इस दृश्य को देखकर अपनी तलवारें खींच ली होंगी; हो सकता है कि वे सितारों के आकाशमार्गों से उतरकर उन दुष्ट प्राणियों का अंत करने के लिए उत्सुक हों जो परमेश्वर के प्रिय पुत्र का इतना अपमान कर सकते थे। लेकिन पलटा लेने का समय अभी नहीं आया था। सबसे पहले परमेश्वर को समय के क्षेत्र में अपना असीम प्रेम और अविश्वसनीय अनुग्रह प्रदर्शित करना था। इसलिए ठट्ठा करने वालों ने उसे थप्पड़ मारे; उन्होंने उसके चेहरे पर थूका; उन्होंने उसका मजाक उड़ाया। उसने यह प्रकट किया कि मनुष्य कैसा होता है; साथ ही उसने यह भी प्रकट किया कि परमेश्वर कैसा है। अत्यधिक उत्तेजना के सामने उद्धारकर्ता की चुप्पी ईश्वरीय प्रेम के प्रकटीकरण का आरंभिक कार्य था।

मसीह के साथ अपने व्यवहार में इस्राएल के धार्मिक अगुवों की क्रूरता उनके, उनके राष्ट्र और दुनिया के लिए एक भयानक अभियोग थी। उनकी बर्बरता को परमेश्वर ने उद्धार के राजमार्ग को प्रशस्त करने के बड़े

उद्देश्य के लिए पहले से ही देख लिया था, भविष्यद्वाणी कर दी थी और अनुमति भी दे दी थी। उस राजमार्ग पर आदम की नष्ट हुई जाति के दोषी पुत्र पाप के अंधेरे रास्तों से निकलकर महिमा के द्वारों और परमेश्वर के सिंहासन तक पहुँच सकते थे।

पाप को उजागर करने के लिए अब मंच तैयार हो चुका था। अब परमेश्वर के लिए अपने प्रेम को प्रदर्शित करने का मंच भी तैयार था। उसने सृष्टि में अपनी बुद्धि और सामर्थ प्रकट की थी, लेकिन उसका प्रेम केवल कलवरी में ही पूरी तरह से प्रकट हो सकता था। कलवरी में हुई घटनाएँ दिखाती हैं कि मनुष्य परमेश्वर के प्रति अपनी घृणा व्यक्त करने में किस हद तक जा सकता है और परमेश्वर मनुष्य के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करने में किस हद तक जा सकते हैं।

ग. पतरस ने क्या कहा (26:69-75)

(1) पतरस का इनकार (26:69-74)

(a) पहला इनकार (26:69-70)

सबसे पहले एक दासी, संभवतः एक महिला दरबान, ने पतरस को यह कहकर चुनौती दी कि वह प्रभु के चेलों में से एक है। उसने कहा, "तू भी यीशु गलीली के साथ था" (26:69)। स्पष्टतः उसने यूहन्ना को एक चेले के रूप में पहचाना और क्योंकि यूहन्ना के पीछे पतरस ने भी आँगन में प्रवेश पाया था, इसलिए उसे संदेह हुआ कि पतरस भी एक चेला था (यूहन्ना 18:16)। पतरस ने यह महसूस करते हुए कि हर कोई उसकी ओर देख रहा है, प्रभु के साथ अपने रिश्ते को स्पष्ट रूप से नकार दिया। उसने कहा, " मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है" (मत्ती 26:70)।

(b) आगे के इनकार (26:71-72)

चारों सुसमाचारों की तुलना करने पर, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पतरस का दूसरा इनकार चार विभिन्न पक्षों के प्रति एकाधिक इनकार था, परन्तु इतनी शीघ्रता से कि वे एक ही प्रतीत होते हैं। इस बार पतरस ने शपथ लेकर प्रभु के साथ अपने रिश्ते को फिर से नकार दिया। न्याय की अदालत में, इस तरह की शपथ लेने वाला व्यक्ति अपने बयान के झूठे होने पर खुद पर शाप लाता है। "मैं उस मनुष्य को नहीं जानता," पतरस ने कहा। ऐसा लगता है कि इस बिंदु पर मुर्गे ने बाँग दी, लेकिन पतरस ने चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया।

(c) अंतिम इनकार (26:73-74)

पतरस की शपथ ने कुछ समय के लिए संदेह को शांत कर दिया, लेकिन कुछ समय बाद (लूका 22:59 कहता है कि यह लगभग एक घंटे बाद हुआ) उसे फिर से टोका गया। जो लोग आc-पास खड़े थे, उन्होंने तीसरी बार उससे पूछा। उन्होंने कहा, "सचमुच तू भी उन में से एक है; क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है" (मत्ती 26:73)। यह कितनी शानदार गवाही है: "तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है। तू यीशु के साथ रहा है"!

पतरस ने जल्द ही उस धारणा को खत्म कर दिया। वह लगातार यह कहता रहा कि यदि उसकी कही गई बातें झूठी निकलीं तो वह स्वयं पर परमेश्वर का शाप लगाएगा और उसने अपने इनकार में अपवित्र बातें भी

साथ में जोड़ दीं।। जब लोगों ने यह सुना तो उन्होंने उसे यीशु का चेला होने का आरोप लगाना बंद कर दिया। बुरी भाषा से ज्यादा जल्दी कोई भी चीज एक मसीही गवाही को खत्म नहीं कर सकती।

पतरस के इनकार भी ऐसे ही थे। हममें से बहुत कम लोग उस पर पत्थर फेंकने का जोखिम उठा सकते हैं। हममें से ज़्यादातर लोगों ने अपने दिलों में इसी तरह कायरता का अनुभव किया है और देखा है कि यह किस ओर ले जाता है।

(2) पतरस का टूटना (26:75)

मुर्गे ने अब दूसरी बार बाँग दी और अचानक यीशु के वचन कि —"मुर्ग के बांग देने से पहिले तू तीन बार मेरा इनकार करेगा"—पतरस के मन में उभर आया। "वह बाहर जाकर फूट फूट कर रोने लगा।"

हमें यह नहीं बताया गया है कि वह कहाँ गया? अगर हम पतरस का पीछा कर पाते, तो शायद हम उसे किद्रोन की ओर वापस लौटते, नदी पार करते और उस बगीचे में जाते हुए देख पाते जहाँ यीशु द्वारा जागने और प्रार्थना करने के लिए कहे जाने पर वह सो गया था। शायद वह उस दूसरी दूरी पर, उस पत्थर के फेंके जाने के टप्पे की जगह पर चला गया होगा, जहाँ कुछ घंटे पहले उसके प्रिय गुरु ने रोते हुए प्रार्थना की थी। हो सकता है कि वहाँ पतरस ने पीड़ा और दर्द की अपनी निजी गतसमनी का अनुभव किया हो।

2. यहूदियों के रोमी शासकों के सम्मुख (27:1-26)

धार्मिक अगुवों के सामने मुकदमा खत्म हो चुका था और अब रोमी शासकों, पिलातुस और हेरोदेस के सामने यीशु का मुकदमा लाया गया। मत्ती ने हेरोदेस के सामने हुई इस घटना को नज़रअंदाज़ किया और इसकी बजाय हमें यहूदा के भयानक अंत के बारे में बताया।

क. यहूदा की आत्महत्या (27:1-10)

(1) विश्वासघाती का दुःख (27:1-5)

हम यहूदा के बारे में सोचे बिना नहीं रह सकते। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह मसीह के राज्य में पद, प्रतिष्ठा, समृद्धि और सामर्थ प्राप्त करने की आशा रखता था। मसीह ने जिस सांसारिक राज्य पर अपनी दृष्टि रखी थी, उसे साकार करने में मसीह की असफलता से निराशा ने संभवतः मसीह को यहूदी अधिकारियों को बेचने के उनके निर्णय में एक बड़ी भूमिका निभाई।

हालाँकि, ऐसा लगता है कि उसे अब भी उम्मीद थी कि मसीह अपने शत्रुओं के जाल से खुद को छुड़ा लेगा। यहूदा को ऐसे अन्य अवसरों के बारे में पता था जब यीशु को भीड़ की हिंसा और गिरफ़्तारी का सामना करना पड़ा था। इससे पहले उसने हमेशा उन लोगों को असमंजस में डाल दिया था जो उन्हें हानि पहुँचाना चाहते थे। संभावना यह है कि यहूदा ने अपनी तीस चाँदी की सिक्कों को जेब में रख लिया था और उसने आशा की होगी कि मसीह सुरक्षित बच निकलेगा। यीशु बच निकलता, यहूदा आर्थिक रूप से संपन्न हो जाता, और कोई भी इस समझदारी को भांप नहीं पाता। लेकिन चीजें उस तरह से नहीं हुईं।

(a) उसने जो देखा (27:1-3)

काइफा की महासभा की आड़ में खड़े होकर, यहूदा ने यीशु के मुकदमे को देखा। महासभा के अनौपचारिक रात्रि सत्र ने यीशु की मृत्यु पर निर्णय सुनाया था। सुबह का सत्र औपचारिक था; यह सजा को पूरा करने का संतोषजनक तरीका खोजने के लिए बुलाया गया था। महासभा की आशा रोमनों पर इस लज्जा और दोष को डाल देना था। रोमनों को परमेश्वर की निंदा के यहूदी आरोप को मृत्युदंड के रूप में मानने की संभावना नहीं थी, इसलिए पिलातुस के सामने मामला पेश करने से पहले कोई और आधार तलाशना पड़ा। निंदनीय रूप से महासभा ने प्रभु के इस दावे का उपयोग करने का निर्णय लिया कि वह इस्राएल का मसीहा और वास्तविक राजा है। वे इस दावे को इस तरह से तोड़-मरोड़ कर पेश करेंगे कि पिलातुस को कैसर के विरूद्ध राजद्रोह के मामले में फंसाया जा सके, एक ऐसा मामला जिसे वह अनदेखा या हल्के में नहीं ले सकता था। इस मुद्दे को सुलझाने के बाद, महासभा ने अपने बिना प्रतिरोध करने वाले उस कैदी को बांध दिया और उसे रोमी हाकिम पिलातुस को सौंप दिया।

जब यहूदा ने देखा कि धार्मिक अधिकारी यीशु के साथ दुर्व्यवहार कर रहे हैं, उसे बाँध रहे हैं और पिलातुस के पास ले जा रहे हैं, तो वह मन में पछताने लगा।

(b) जिसे वह खोजता था (27:3ख)

"जब उसके पकड़वाने वाले यहूदा ने देखा कि वह दोषी ठहराया गया है तो वह पछताया और वे तीस चान्दी के सिक्के महायाजकों और पूर्वजों के पास फेर लाया।" "पछताया" का अनुवाद मेटामेलोमाई है, जिसका मूल शाब्दिक अर्थ है "खेद करना।" यह वास्तविक पश्चाताप को नहीं दर्शाता है। यह पाप के परिणामों को संदर्भित करता है न कि पाप को। यहूदा की आत्मा में अपने किए पर कोई गहरा पछतावा नहीं था; केवल इस बात का खेद था कि चीजें उस तरह नहीं हुईं जैसी उसने उम्मीद की थी या योजना बनाई थी। अपने पछतावे में वह उद्धारकर्ता के पास नहीं गया। अगर वह जाता, तो उस देर रात में भी उसे क्षमा मिल जाती। इसकी बजाय वह याजकों के पास गया। परिणाम वही थे जिनकी हम ऐसे भक्तिहीन लोगों से अपेक्षा कर सकते हैं।

यहूदा अपने साथ अपनी लज्जा की कीमत भी लेकर आया था, चाँदी के तीस सिक्के जो उसे मसीह को धोखा देने के लिए मिले थे। उसने अपनी बेईमानी से कमाई गई रकम का एक पैसा भी खर्च नहीं किया था। सिक्के उसकी जेब में लाल-गर्म अंगारों की तरह थे; उन्होंने उसके हाथ को जला दिया और झुलसा दिया था; वे उसके विवेक में ज्वाला की तरह जल रहे थे। वह उन्हें याजकों के पास वापस क्यों ले गया? क्या उसने सोचा था कि वह अपनी इज्जत वापस खरीद सकता है या इतनी कम रकम में उद्धारकर्ता की रिहाई खरीद सकता है? क्या उसने सोचा था कि उसके पश्चाताप की दृष्टि उन कठोर याजकों को पिघला देगी? अगर ऐसा है, तो उसे जल्द ही याजकीय राजनीति का सबक सिखाया जाना वाला था।

(c) उसने क्या कहा (27:4)

i. यहूदा का विलम्बित पश्चाताप (27:4a)

यहूदा ने याजकों से कहा, "मैं ने निर्दोषी को घात के लिये पकड़वाकर पाप किया है।" उसकी आत्मा अपने पाप के परिणामों के भय से भर उठी थी।

हम यहूदा को देखते हैं और हम एक खोई हुई आत्मा के भय को भी यहाँ देखते हैं। हम पाप के कारण होने वाले आत्मिक अंधेपन को देख सकते हैं। वह अपना पाप दुष्ट लोगों के पास ले गया जो परमेश्वर के याजकों के वेश में छिपे थे। वे याजक चाहकर भी उसकी आत्मा को नहीं बचा सके। वे केवल इतना कर सकते थे कि उसे नरक में दण्डित कर सकते थे।

ii. महासभा का क्रूर जवाब (27:4b)

उन्होंने उस दुखी, पीड़ित व्यक्ति को देखा, उसे घृणा से ऊपर से नीचे तक देखा, और उसके पाप की पीड़ा भरे अंगीकार को सुना। फिर उन्होंने बेरहमी से कहा, "इससे हमें क्या? तू ही जान।" कम से कम वे उन पुरोहितों से ज़्यादा ईमानदार थे जो पापों को क्षमा करने की सामर्थ होने का दावा करते हैं। हालाँकि, वे यहूदा के अपराध के प्रति उतने ही उदासीन थे जितने कि वे यीशु की बेगुनाही के प्रति थे। "यह तुम्हारा काम है, श्रीमान," उन्होंने प्रभावी रूप से कहा, "हमें इससे कुछ नहीं लेना देना।"

(d) जहाँ वह खड़ा था (27:5)

उस समय याजकगण महायाजक के महल से आँगन के पार हाकिम के महल की ओर बढ़ रहे थे। दीवार के ठीक ऊपर मंदिर के आँगन थे। निराशा के अंतिम संकेत के साथ, यहूदा ने लहू के उस धन को दीवार के पार पवित्र स्थान में फेंक दिया। शायद याजक मंदिर आँगन के संगमरमर के भित्तिचित्र पर चांदी के टुकड़ों के लुढ़कने और खड़खड़ाने की आवाज़ सुन सकते थे। इससे पहले कि वे खुद को संभाल पाते, यहूदा ने अपनी एड़ी घुमाई, अंधे की नाई वहाँ से भाग खड़ा हुआ, और खुद को एक खोए हुए अनंतकाल में फेंक दिया।

पछतावे या खेद और सच्चे पश्चाताप के बीच अंतर को समझने के लिए हमें केवल पतरस और यहूदा के बीच के अंतर को देखने की जरूरत है। पतरस "बाहर गया और फूट-फूट कर रोने लगा" (26:75) यहूदा ने "जाकर अपने आप को फांसी दे दी" (27:5)।

(2) विश्वासघाती का धन (27:6-10)

(a) महायाजकों ने चाँदी के टुकड़ों से कैसा व्यवहार किया (27:6-8)

याजकों में यहूदा से भी कम विवेक था, क्योंकि उन्होंने सावधानीपूर्वक उस धन को इकट्ठा किया। इस बात पर कुछ देर चर्चा हुई कि उन शापित सिक्कों का क्या किया जाना चाहिए। कुछ लोग पैसे को मंदिर के खजाने में वापस डालने के पक्ष में थे, लेकिन अन्य लोग इस बारे में संदेहास्पद थे क्योंकि सिक्के "लहू की कीमत" (27:6) का प्रतिनिधित्व करते थे। उन्होंने उस बुरे पैसे को खजाने में न डालने का फैसला किया, बल्कि इसे किसी पुण्यकर्म में उपयोग में लगाने का फैसला किया।

इतिहास में सबसे अधिक दुष्ट कार्य करते हुए, उन याजकों ने लहू से सने उन चांदी के सिक्कों के संबंध में व्यवस्था और विवेक की बारीकियों पर चर्चा की। उन्होंने एक कुम्हार का खेत खरीदने और उसे अजनबियों को दफनाने के लिए इस्तेमाल करने का फैसला किया। हालाँकि, कोई भी इस बात से मूर्ख नहीं बना, क्योंकि लोगों ने तुरंत उस शापित भूमि को "लहू का खेत" (27:8) कहा।

(b) महायाजकों ने पवित्रशास्त्र की बातें कैसे पूरी कीं (27:9-10)

जबकि यह सब गंभीर धार्मिक नाटक चल रहा था, तो दरअसल याजक अपने अपराध और लालच में अंधे होकर वास्तव में पुराने नियम की एक भविष्यवाणी को पूरा कर रहे थे।। यह भविष्यद्वाणी सबसे पहले यिर्मयाह द्वारा "कही गई" थी और बाद में जकर्याह द्वारा परमेश्वर की पुस्तक में लिखी गई थी, पवित्र आत्मा ने दोनों पुरुषों को प्रेरित किया था (देखें जकर्याह 11:12-13)। मत्ती ने यहूदियों को ध्यान में रखते हुए, परमेश्वर की संप्रभुता को दिखाने के लिए अपने अभिलेख में भविष्यद्वाणी लिखी, यहाँ तक कि उसके शत्रुओं को भी उसके वचन को पूरा करने के लिए कार्य करने के लिए मजबूर किया गया।

अगर उन दुष्ट याजकों ने अपनी बुद्धि को बनाए रखा होता, तो वे भविष्यद्वाणी को याद कर लेते और उसे पूरा होने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास करते। लेकिन जैसा कि हुआ, उन्होंने अनजाने में वैसा ही किया जैसा कि भविष्यद्वाणी में बताया गया था। बाद में जब उनके द्वारा किए गए काम को बदलने के लिए बहुत देर हो चुकी थी, तो परमेश्वर का लिखित वचन उनके विरूद्ध गवाही के रूप में उठ खड़ा हुआ।

ख. यीशु को सज़ा सुनाई गई (27:11-26)

(1) आरोप (27:11-14)

(a) यीशु की संप्रभुता का मामला (27:11)

यहूदा की आत्महत्या के मामले को स्पष्ट करने के बाद, मत्ती यीशु की सज़ा के बारे में लिखने के लिए तैयार था। जब हम पिलातुस द्वारा यीशु के मुकदमे के बारे में मत्ती के विवरण को पढ़ते हैं, तो हम यीशु की संप्रभुता से प्रभावित होते हैं। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि दोनों में से कौन संप्रभु था, यीशु या पिलातुस; न ही इस बात में कोई संदेह है कि वास्तव में किस पर मुकदमा चल रहा था।

कुछ लोगों का मानना है कि पिलातुस गुलामी में से होकर अपने उस उच्च पद पर पहुंचा था। निश्चय ही उसने अच्छा विवाह किया था, क्योंकि उसकी पत्नी कैसर से संबंधित थी। लेकिन पिलातुस अपने दोस्तों के बीच लोकप्रिय व्यक्ति नहीं था। वह कठोर, बर्बर और गणना करने वाला था, उसके स्वभाव में क्रूरता की एक लकीर थी। कुछ ही समय पहले, उसने एक नहर बनाने के हेतु धन जुटाने के लिए मंदिर के पैसे जब्त कर लिए थे और परिणामस्वरूप उसने खुद को यहूदियों के साथ एक विद्रोह में उलझा हुआ पाया, जिसे उसने कठोरता से कुचल दिया था। वह यहूदियों के स्वभाव, चिड़चिड़ेपन और कठोरता और दुनिया भर में उनके प्रभाव को अच्छी तरह से जानता था। उस समय पिलातुस यह नहीं चाहता था कि यरूशलेम में और अधिक दंगे हों।

i. पूछा गया प्रश्न (27:11a)

मूल रूप से महासभा चाहती थी कि पिलातुस उनके फैसले को स्वीकार करे, उसका समर्थन करे, और यीशु को मृत्युदंड के लिए उनके हवाले कर दे। फिर वे उसे परमेश्वर की निंदा करने वाला मानकर पत्थरवाह करके मार डालते। परन्तु ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि इस स्थिति में यीशु सर्वोच्च था। भविष्यद्वाणी बहुत पहले लिखी जा चुकी थी: "वह मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं" (भजन 22:16)। वह भविष्यद्वक्ता एक यहूदी चरवाहा लड़का था जिसने शायद ही कभी क्रूस पर चढ़ाए जाने से होने वाली मृत्यु के बारे में सुना था।

पिलातुस ने स्वयं यीशु पर मुकदमा चलाने पर जोर दिया। चूँकि परमेश्वर की निंदा का आरोप पिलातुस को पसंद नहीं आया (हालाँकि इसने कुछ हद तक अंधविश्वासी भय को जगाया), इसलिए यहूदियों ने उसके आरोप को राजद्रोह में बदल दिया। यीशु ने राजा होने का दावा किया था और जिसने हाकिम को एक पल के लिए भी धोखा नहीं दिया, लेकिन यहूदियों ने स्पष्ट पाखंड के साथ,उसे याद दिलाया, "कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं" (यूहन्ना 19:15)। हालाँकि यीशु ने कभी पिलातुस को धोखा नहीं दिया गया था, लेकिन इस सूक्ष्म, घमंडी टिप्पणी ने उसे मुश्किल में डाल दिया। मत्ती उन सभी विवरणों में नहीं गया। उसने केवल पिलातुस के प्रश्न को दर्ज किया: "क्या तू यहूदियों का राजा है?" (27:11)

ii. प्रश्न का उत्तर दिया गया (27:11b)

प्रभु ने फिर से एक संक्षिप्त लेकिन पर्याप्त उत्तर दिया: "तू आप ही कह रहा है" - दूसरे शब्दों में, "यह वैसा ही है जैसा आप कह रहे हैं।" मत्ती ने कोई स्पष्टीकरण दर्ज नहीं किया, न ही उसकी वंशावली के बारे में कोई दलील नहीं दी (हालांकि पिलातुस की तुलना में वह कहीं अधिक महान था) - यह तो उसकी राजकीय सत्ता की मात्र एक स्वीकृति है।

सुसमाचार हमें यह बताने में एकमत हैं कि यह पिलातुस और यीशु के बीच पहली बातचीत थी। पिलातुस के लिए यीशु का राजा होना बेतुका विचार था। उसने यह सवाल इसलिए पूछा ताकि कैदी आरोप से इनकार कर सके और मामला खारिज हो सके। मारा-पीटा गया और घायल यीशु किसी राजा की तरह नहीं दिख रहा था। उसने किसी भी तरह से एक राजा की तरह व्यवहार नहीं किया जिसे पिलातुस जानता था। यह देखकर हाकिम को आश्चर्य हुआ कि उसके सामने खड़ा गरिमामय और शांत व्यक्ति यह पुष्टि कर रहा था कि, सभी दिखावे इसके विपरीत हैं, वही वास्तव में यहूदियों का राजा था।

(b) यीशु की चुप्पी का रहस्य (27:12-14)

प्रभु की पुष्टि ने मुख्य याजकों और पूर्वजों द्वारा उस दोषारोपण की झड़ी लगा दी, लेकिन यीशु ने "कुछ भी उत्तर नहीं दिया" (27:12)। यीशु के मौन ने पिलातुस को चकित कर दिया क्योंकि वह औसत यहूदी कैदी के मुखर और उग्र विरोधों का आदी था। उसने पूछा "क्या तू नहीं सुनता, कि ये तेरे विरोध में कितनी गवाहियां दे रहे हैं?" (12:13)। मत्ती ने उल्लेख किया, "परन्तु उस ने उस को एक बात का भी उत्तर नहीं दिया, यहां तक कि हाकिम को बड़ा आश्चर्य हुआ" (27:14)। आप चुप्पी से बहस नहीं कर सकते।

(2) चुनाव (27:15-26)

अब गेंद पिलातुस के पाले में थी और उसे यह पसंद नहीं आया। इस राजा में कुछ तो ऐसा था जो उसके घावों और थूक से लथपथ दाढ़ी के बावजूद राजकीय था। वह उस महिमामय मौन में भी राजकीय था जिसके साथ उसने अपने आरोप लगाने वालों का सामना किया, उन उपद्रवी याजकों का, जिनके आचरण और निन्दा से पता चलता था कि वे नरक के दूत हैं।। यीशु को राजा घोषित करने के लिए किसी चमकदार मुकुट, किसी राजकीय बैंगनी वस्त्र, किसी हाथीदांत के सिंहासन, किसी शाही पहरेदार, किसी हीरे से जड़े राजदंड या सांसारिक राजशाही के किसी दिखावे की ज़रूरत नहीं थी। पिलातुस को लगा कि वह कैसर से भी बड़े किसी राजा की मौजूदगी में था, क्योंकि यीशु एक राजा से बढ़कर था।

जब मत्ती ने मुकदमे का वर्णन किया, तो उसने अधिकांश विवरणों को छोड़ दिया। उसने विवरण को केवल उन आवश्यक बातों तक ही सीमित कर दिया जो उसके यहूदी पाठकों को यह साबित कर सकें कि यीशु उनका राजा था। पिलातुस ने पूछा, "क्या तू राजा है?" और यीशु ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं हूँ," और केवल इतना ही। जहाँ तक मत्ती का सवाल है, बाकी सब कढ़ाई की बातें थी। एक अपवाद था: मत्ती ने हमें बताया कि कैसे पिलातुस ने स्वयं को उस दुविधा से मुक्त करने का प्रयास किया जिसमें वह फंसा हुआ था।

पिलातुस को दो विकल्पों में से एक चुनना था: (1) वह सही काम कर सकता था और इस स्पष्ट रूप से निर्दोष व्यक्ति को छोड़ सकता था, जो ऐसा राजा था जो रोम के कैसर के लिए कोई खतरा नहीं था। अगर पिलातुस ने यीशु को रिहा कर दिया, तो वह यरूशलेम में एक और विद्रोह का जोखिम उठाएगा और यह खतरनाक संभावना होती कि कैसर को पता चल जाएगा कि उसने एक ऐसे व्यक्ति को रिहा किया है जो राजा होने का दावा करता है। दूसरा, पिलातुस गलत काम कर सकता था और यीशु को मृत्यु की सजा सुना सकता था, और अपने जीवन के अंत तक एक कुचले हुए विवेक के साथ जी सकता था।

(a) अपराधी (27:15-18)

पिलातुस जानता था कि यीशु निर्दोष है; चाहे वह राजा हो या न हो, वह कैसर या किसी और के लिए कोई खतरा नहीं था। हम पूरी तरह से आश्वस्त हो सकते हैं कि रोमी शासक ने पिछले कुछ वर्षों में नासरत के इस यीशु की गतिविधियों के बारे में अपने जासूसों के द्वारा कई सूचनाएं अपने पास रखी होंगी। गलील के पिछड़े इलाकों से एक लोकप्रिय शिक्षक जिसने यहूदी धार्मिक प्रतिष्ठान का विरोध किया और भलाई के काम और शांति का प्रचार किया, वह रोम का कभी भी शत्रु नहीं था।

हालाँकि, पिलातुस इतना बड़ा कायर था कि उसने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के महासभा के निर्णय के बावजूद उसे रिहा नहीं किया। फिर उसे याद आया कि हाकिम के लिए फसह के समय यहूदियों को एक कैदी को रिहा करना एक स्थानीय प्रथा थी। आम तौर पर लोग जिसे चाहें चुन सकते थे, लेकिन उसके पास एक शानदार विचार था: इस साल वह चुनाव को सीमित कर देगा। ऐसा हुआ कि उसके पास एक "कुख्यात कैदी" था, जिसका नाम बरअब्बा था (27:16)। क्यों न लोगों को बरअब्बा और यीशु में से किसी एक को चुनने के लिए विवश किया जाए?

पिलातुस को कुछ दिन पहले यरूशलेम में गूंजे होशन्ना के नारे याद आए जब यीशु शहर में आया था। याजकों को विफल करने, लोगों को खुश करने और खुद को बचाने के लिए इससे बेहतर तरीका क्या हो सकता था कि लोगों को यीशु या बरअब्बा में से एक चुनने का मौका दिया जाए? बरअब्बा एक विद्रोही, लुटेरा और उपद्रवी था। निश्चित रूप से लोग यीशु को चुनेंगे, जिसने उनके बीमारों को ठीक किया था, उनके कोढ़ियों को शुद्ध किया था, दुष्टात्माओं को भगाया था, उनकी भीड़ को खाना खिलाया था और उनके मृतकों को जीवित किया था।

बरअब्बा, जिसका शाब्दिक अर्थ है "पिता का पुत्र", एक नाम के बजाय एक उपाधि थी, और कुछ प्राचीन पांडुलिपियों में कैदी का नाम यीशु बरअब्बा दिया गया है। इसलिए चुनाव स्पष्ट था: यीशु जिसे बरअब्बा (एक चोर, डाकू, हत्यारा और विद्रोही) कहा जाता था; या यीशु जिसे मसीह (मसीहा, दाऊद का पुत्र और पिता का पुत्र) कहा जाता था। ऐसा लगता है कि पिलातुस को परिणाम के बारे में कोई संदेह नहीं था, लेकिन उसने याजकों की दुर्भावना को कम आंका था।

(b) संदेश (27:19)

जबकि पिलातुस न्याय सिंहासन पर बैठा था और याजक बाहर भीड़ को भड़का रहे थे, तो पिलातुस की पत्नी ने, जिसे बुरे सपने आते थे, अपने झिझकते पति को एक ज़रूरी संदेश भेजा। संदेश में कहा गया था, "तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना; क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुःख उठाया है।"

पिलातुस की पत्नी यीशु के बारे में खबरों से अलग नहीं रही होगी। निस्संदेह समय-समय पर जब पिलातुस को जानकारी मिली होगी, तो उसने अपनी पत्नी से इस बारे में बात की होगी। उसने अपने दासों की गपशप और इस यहूदी राजा के बारे में कुलीन वर्गों के चुटकुले सुने होंगे, जिसके विचार सांसारिक नहीं थे और जो बढ़ई के काम से जुड़ा हुआ था। उसके असाधारण सपने ने उसे यकीन दिलाया था कि यीशु, अगर कुछ भी नहीं हो फिर भी एक "धर्मी [भला] व्यक्ति" था। अपने पति की कमजोरी और याजकों की चालाकी को जानते हुए, उसके मन में अपने पति के लिए डर पैदा हुआ और उसने उसे अपना संदेश भेजा।

रोम के लोग पूर्वाभास, भविष्यद्वक्ता, स्वप्न और शगुन के बारे में बहुत अधिक सोचते थे। सुएटोनियस के अनुसार, जूलियस कैसर और कैसर ऑगस्टस दोनों ही अंधविश्वासी थे। पिलातुस अपनी पत्नी के संदेश से बहुत अधिक परेशान हुआ होगा, लेकिन इतना भी परेशान नहीं हुआ कि वह खुद को इस विपत्ति से बचा सके।

(c) भीड़ (27:20-25)

i. वास्तविक दोषी (27:20)

इसके बाद जो हुआ उसके असली दोषी “मुख्य याजक और पुरनिये” थे, जो इस्राएल के धार्मिक अगुवे थे। मत्ती ने कहा कि इन दुष्ट लोगों ने कहा, “वे बरअब्बा को मांग ले, और यीशु को नाश कराएं।”

ii. ज़बरदस्त कोलाहल (27:21-23)

हम उन याजकों की कल्पना कर सकते हैं जो लोगों के बीच इधर-उधर दौड़ रहे थे, और उनसे यीशु का तिरस्कार करने और बरअब्बा को चुनने का आग्रह कर रहे थे। अगुवों ने भीड़ को एक ईश्वरीय व्यक्ति की बजाय एक दोषी व्यक्ति को चुनने के लिए राजी किया, लोगों की मदद करने वाले की बजाय लोगों को हानि पहुँचाने वाले को चुनने, एक नेक इंसान की बजाय एक हिंसक व्यक्ति को चुनने, एक उद्धारकर्ता की बजाय एक डाकू को चुनने और परमेश्वर के पुत्र के रूप में देहधारण किए हुए की बजाय एक परमेश्वर-विहीन विद्रोही को चुनने के लिए उभारा।

याजकों ने लोगों को कैसे उभारा? उन्होंने कौन से शब्द इस्तेमाल किए होंगे? उन्होंने कौन से तर्क दिए होंगे? शायद उन्होंने कहा, "हे भाइयों और पुरुषों, इस्राएल को नासरत के इस यीशु जैसे नम्र मसीहा की नहीं, बल्कि बरअब्बा जैसे क्रांतिकारी मसीहा की ज़रूरत है। हमें ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो हमें लड़ना सिखाए, न कि माफ़ करना। बरअब्बा हमारे लिए सही व्यक्ति है! बरअब्बा हमारे लिए सही राजा है। बरअब्बा एक नायक है, एक मर्दाना व्यक्ति है। वह रोमियों से नहीं डरता। बरअब्बा की जय हो!" याजकों ने भीड़ को तब तक प्रोत्साहित किया जब तक कि वे नारा लगाने नहीं लगे, "बरअब्बा को छोड़ दो! हमें बरअब्बा चाहिए!" वह बहुत ही जबरदस्त शोर था।

iii. भयानक अभिशाप (27:24-25)

a. न्यायी और उसकी घोषित निर्दोषता (27:24)

एक औपचारिक लेकिन निरर्थक इशारे के साथ, पिलातुस ने भीड़ के सामने घुटने टेक दिए। उसने पानी का एक पात्र मंगवाया और अपने हाथ धोए, इस प्रकार प्रतीकात्मक रूप से यीशु की हत्या की जिम्मेदारी यहूदियों के ऊपर डाल दी। उसने कहा, "मैं इस धर्मी के लहू से निर्दोष हूँ; तुम ही जानो।" (उसने यीशु का वर्णन उसी तरह किया जिस तरह उसकी पत्नी ने अपने संदेश में उसका वर्णन किया था: "धर्मी।")

क्या हाथ धोने से पिलातुस का अपराध मिट सकता था, क्योंकि उसने एक ऐसे व्यक्ति को दोषी ठहराया था, जिसके बारे में वह जानता था कि वह निर्दोष है? क्या केवल एक विधि उसे उस व्यक्ति को दोषी ठहराने के अपराध से मुक्त कर सकती थी, जिसके बारे में उसका अर्ध-विश्वास था कि वह यहूदियों का मसीहा है, जिससे वह मन ही मन डरता था, जिसका परमेश्वर होने का दावा इतना विश्वसनीय था कि उसके अंधविश्वासों को सक्रिय रूप से जगा दिया? नहीं, उसके हाथ धोने का कोई मतलब नहीं था। इतिहास ने पिलातुस पर बहुत पहले ही अपना फैसला सुना दिया है, जैसा कि कैसर ने मसीह को क्रूस पर चढ़ाए जाने के कई वर्षों बाद किया था।

b. यहूदी और उनका भड़काने वाला आग्रह (27:25)

पिलातुस ने कहा, "तुम ही जानो," और याजकों और लोगों ने तुरंत इसके प्रति अपनी प्रतिक्रया दी। "इस का लहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो," वे चिल्ला उठे। और ऐसा ही हुआ भी। लगभग दो हज़ार साल से वह लहू और वह स्वघोषित अभिशाप यहूदियों का एक देश से दूसरे देश तक पीछा करता रहा है।[9] फिर भी एक राष्ट्र के रूप में वे अभी भी मसीह को तिरस्कार करने वाले अविश्वास में बने हुए हैं।

(d) हत्या (27:26)

"इस पर उस ने बरअब्बा को उन के लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।"

रोम के कोड़े एक भयानक यंत्र होता था जो हड्डी या धातु के टुकड़ों से लदे पट्टों से बना होता था। कोड़े मारने के दौरान पीड़ित को नंगा करके एक छोटे से खंभे से इस तरह बांध दिया जाता था कि उसकी पीठ की त्वचा खिंच जाती थी। पहली मार से ही खून बहने लगता था। जैसे-जैसे कोड़े मारे जाते थे, उसकी पीठ की त्वचा फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाती थी। कई बार महत्वपूर्ण अंग उजागर हो जाते थे और कट भी जाया करते थे। अक्सर पीड़ित की मौत हो जाती थी।

शायद पिलातुस को उम्मीद थी कि यीशु को कोड़े मारने से प्रभु के शत्रुओं में कुछ दया पैदा होगी और अंतिम समय में उसे कुछ राहत मिल सकेगी। अगर उसने ऐसा सोचा था, तो उसे निराशा ही हाथ लगेगी। दया करने के लिए कोई आँख बाकी नहीं थी और बचाने के लिए कोई हाथ नहीं था।

इस प्रकार उसका मुकद्दमा समाप्त हुआ। यहूदी और गैर-यहूदी दोनों ने उस परमेश्वर के समक्ष निष्पक्ष सुनवाई से इनकार कर दिया जिसके समक्ष सभी को खड़ा होना होगा।

"फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करूं?" यह पिलातुस की करुण पुकार थी जब भीड़ ने बरअब्बा को चुना था। देर-सवेर यह प्रश्न सभी को पूछना होगा और उसका उत्तर देना होगा। हमें या तो उसे मुकुट पहनाना है या उसे क्रूस पर चढ़ाना होगा। जैसा कि पुराने मसीही भजन में कहा गया है:

यीशु पिलातुस के भवन में खड़ा है—

मित्रहीन, त्यागा हुआ, सभी के द्वारा धोखा खाया हुआ:

ध्यान दो! अचानक बुलावे का क्या अर्थ है?

आप यीशु के साथ क्या करेंगे?

आप यीशु के साथ क्या करेंगे?

आप तटस्थ नहीं रह सकते;

एक दिन आपका दिल आप से पूछेगा,

"वह मेरे साथ क्या करेगा?"[10]

VII. पेड़ (27:27-56)

क. सैनिक (27:27-31)

1. उनकी पलटन (27:27)

प्रभु ने बगीचे में मानसिक पीड़ा सहन की थी; उसे महासभा द्वारा धमकाया और पीटा गया था; उसे पिलातुस, हेरोदेस और फिर पिलातुस के पास दोबारा ले जाया गया था; पिलातुस ने उससे कड़ी पूछताछ की थी। वह थक चुका था और फिर भी वह कोड़ों की मार से नहीं बच पाया। यह प्रभु की देह के बारे में कुछ कहता है, लेकिन अब तक उसका शरीर दर्द से कांप रहा होगा। इससे पहले कि उसे कलवरी ले जाया जाए, इस स्थिति में उसे सैनिकों द्वारा और अधिक अपमान, यातना और क्रूर पीड़ा के लिए ले जाया गया।

सबसे पहले सैनिक उसे "सामान्य किले" अर्थात् प्रेटोरियम में ले गए, और वहाँ "सैनिकों की पूरी पलटन" ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया - अर्थात्, पूरी पलटन ने।

2. उसका उपहास (27:28-30)

मत्ती ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि सैनिकों ने यहूदियों के राजा होने के प्रभु के दावे का किस तरह से उपहास उड़ाया। उन्होंने उसे नकली शाही वस्त्र पहनाए, उसके कटे हुए कंधों पर किरिमजी (लाल रंग

का) बागा पहनाया, उसके सिर पर काँटों का मुकुट रखा, राजदंड के लिए उसके हाथ में एक सरकंडा थमा दिया, उसके सामने घुटने टेके और चिल्ला उठे, "हे यहूदियों के राजा नमस्कार!" (27:29) सैनिकों को यह नहीं पता था कि काँटों का मुकुट यहाँ कितना उपयुक्त था। काँटे अभिशाप का प्रतीक हैं (उत्पत्ति 3:17-18) और यीशु ने हमारे लिए उस शाप को उठाया ताकि अभिशाप को हटाया जा सके, जिसमें प्रकृति की दुनिया के अभिशाप भी शामिल है (रोमियों 8:19-22)।

हम रोमी सैनिकों का भद्दे मज़ाक, फूहड़ हँसी और ठट्ठा उड़ाते हुए सुन सकते हैं। इस तरह के एक भयानक समूह में, ऐसे बाजीगर या रेजिमेंटल जोकर होते थे जो इस आदमी पर, जो इनके हाथों में सौंपे गए इस व्यक्ति पर कई कलाबाजियों को आजमाकर अपने हुनर को तेज़ कर लेते थे। यहाँ तक कि उच्च पदों में नियुक्त अधिक परिष्कृत सैनिक भी उनके कुछ हास्य करतबों को देखकर अपनी हंसी रोक नहीं पाते थे। समूह में गुंडे किस्म के लोग भी होते थे, जो एक असहाय व्यक्ति का फ़ायदा उठाने से खुद को नहीं रोक पाते। मत्ती ने कहा कि वे बड़ी क्रूरता के साथ "उसके सिर पर मारने लगे" (27:30)। यहाँ "मारना" शब्द का अनुवाद "मारते रहना" है जिसका अर्थ है "निरंतर मार जारी रखना।"

इस उपहास और कर्कश हंसी में विशेष रूप से द्वेष को जोड़ते हुए, यहूदियों के विरूद्ध गैर-यहूदियों द्वारा पोषित एक अंतर्निहित यहूदी-विरोधी भावना, घृणा और तिरस्कार को जोड़ा गया था। रोमी सैनिकों को यहूदियों का राजा होना बहुत ही हास्यास्पद लगता था।

3. उनका मार्ग (27:31)

लेकिन फिर सभी चीजें खत्म हो जाती हैं। एक आदेश के शब्द ने उस क्रूर शरारत को समाप्त कर दिया और रोमी अनुशासन ने फिर से अपना काम शुरू कर दिया। प्रभु के अपने बिना सिले हुए वस्त्र को उसके कंधों पर वापस फेंक दिया गया और उसे कलवरी तक पैदल चलने का आदेश दिया गया।

ख. स्थल (27:32-38)

1. वह व्यक्ति जिसने क्रूस उठाया (27:32)

क्रूस की लकड़ी की पट्टियों के भार के नीचे लड़खड़ाते हुए, प्रभु उस किले के सामान्य प्रांगण से बाहर निकला। उसका मुँह अब गुलगुता की ओर था। अंत में उसकी महान शक्ति भी विफल हो गई और सैनिकों ने, एक और कदम आगे बढ़ने में उसकी शारीरिक अक्षमता को पहचानते हुए, भीड़ में से एक व्यक्ति की सेवा लीं।

उस आदमी का नाम शमौन था और वह उत्तरी अफ्रीका के कुरेनी शहर से था। कुछ लोग सोचते हैं कि वह एक अश्वेत व्यक्ति था। अगर ऐसा है, तो वह शायद यहूदी धर्म में परिवर्तित एक परिवर्तित व्यक्ति था, क्योंकि उसका एक यहूदी नाम था। कुरेनी यहूदियों के यरूशलेम में कई सभास्थल थे (प्रेरितों के काम 2:10; 6:9)। पिन्तेकुस्त के बाद कुरेनी सुसमाचार फैलाने में काफ़ी सक्रिय थे (प्रेरितों के काम 11:20; 13:1), और यह संभव है कि शमौन उनमें से एक था। मरकुस 15:21 में शिमौन के पुत्र- सिकन्दर और रूफुc- का उल्लेख है और यह संभावना है कि रूफस वही व्यक्ति था जिसका उल्लेख रोमियों 16:13 में पौलुस ने किया था। अगर ऐसा है, तो मत्ती 27:32 में हुई मुलाकात एक ईश्वरीय मुलाकात थी और हम कल्पना कर सकते हैं कि बाद के वर्षों में शमौन, सिकंदर, रूफस और उनकी माँ इस बारे में बात करते-करते कभी नहीं

थकते होंगे। हालाँकि, क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय, शमौन उस क्रूस को उठाने से कतराया होगा। हो सकता है कि उसे उस क्रूस उठाने से जुड़ी शर्म और मजबूरी से चिढ़ हो, लेकिन किसी तरह यीशु ने उसके दिल को जीत लिया था।

2. ऐसे लोग जिन्होंने अपराध किए थे (27:33-37)

क. सिरका (27:33-34)

मत्ती ने अपराध स्थल के लिए इब्रानी शब्द का इस्तेमाल किया: गुलगुता, अर्थात् "खोपड़ी की जगह।" जब यीशु उस भयानक स्थान पर पहुँचा, तो सैनिकों ने उसे अपनी चेतना को सुन्न करने के लिए "उन्होंने पित्त मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया" (27:34)। इसे चखने और इसके चरित्र और उद्देश्य को समझने के बाद, उसने इसे पीने से इनकार कर दिया। वह अबोध अवस्था में क्रूस पर अपनी देह में हमारे पापों को सहन नहीं करने वाला था। उस असहनीय दर्द को सहने के लिए उसकी देह की हर नस, हर तंतु को जागृत रहना होगा। उसे शरीर और आत्मा की क्षमताओं के पूर्ण नियंत्रण में मृत्यु का सामना करना था।

ख. पीड़ित (27:35a)

सभी प्रचारकों की तरह, मत्ती ने भी क्रूस पर चढ़ने के बारे में बहुत कम बात की। उसने केवल इतना कहा, "तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया।" क्रूस पर चढ़ाए जाने से हुई मृत्यु के भयानक विवरण के बारे में जानकारी के लिए हम अन्य स्रोतों की ओर आकर्षित होते हैं।[11]

सबसे पहले क्रूस की सीधी तख़्त को ज़मीन में मजबूती से गाड़ा जाता था। यह इतनी ऊँची थी कि पीड़ित को ज़मीन से लगभग दो फ़ीट ऊपर उठा सके और उसके सिर पर शिलालेख (दोषपत्र) लिखने के लिए जगह हो। इसके बाद लिटे हुए तख़्त को ज़मीन पर रखा जाता था, पीड़ित को नीचे फेंका जाता था और उसकी बाँहें फैलाकर लकड़ी के उस टुकड़े से बाँध दी जाती थी। फिर उसके हाथों में दो लंबी, नुकीली कीलें उस लकड़ी में ठोंक दी जाती थी। इसके बाद पीड़ित को रस्सियों से, शायद सीढ़ियों के ज़रिए, ऊपर खींचा जाता था और लिटे हुए तख़्त को या तो कीलों से ठोंक दिया जाता था या सीधे तख़्त से बाँध दिया जाता था। आमतौर पर शरीर को टेक देने के लिए एक सहारा दिया जाता था। सबसे आखिर में, पैरों को सीधी तख़्त के ऊपर रखा जाता और मजबूती से कीलों से ठोंक दिया जाता था। वहाँ उस पीड़ित को मरने के लिए छोड़ दिया जाता था, वह भी खून की कमी से नहीं, बल्कि थकावट और पीड़ा से।

क्रूस पर चढ़ाए जाने से मृत्यु उतनी ही दर्दनाक और धीमी हो गई जितनी कि पतित मानवीय बुद्धि और शैतानी प्रेरणा से हो सकती थी। मरने की प्रक्रिया कई दिनों तक चल सकती थी। पीड़ित द्वारा ऐंठन, प्यास, घायल हाथ और पैर, और सूजी हुई धमनियों से होने वाली पीड़ा को शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। मनुष्य ने महिमा के प्रभु के साथ इस तरह व्यवहार किया।

ऐसी क्रूर मौत के लिए वह मर गया,

उसे बाहर निकाल दिया गया और क्रूस पर चढ़ा दिया गया;

वो प्यार भरे हाथ जिन्होंने इतने भले काम किए,

उन्होंने उसे लकड़ी के एक क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया।

ग. उसके कपड़े (27:35b)

मत्ती ने दृश्य के दूसरे पहलू पर जल्दी से थोड़े विस्तार से बात की। उसने बताया कि कैसे सैनिकों ने "और चिट्ठियां डालकर उसके कपड़े बांट लिए: ताकि भविष्यद्वक्ता द्वारा कही गई बात पूरी हो।" मत्ती ने भजन संहिता 22:18 से एक उद्धरण जोड़ा, जो पवित्रशास्त्र का एक ऐसा भाग है जिसे सैनिक न तो जानते थे और न ही उसे पूरा करने का उनका कोई उद्देश्य था।

एक क्वार्टरनियन, जो चार सैनिकों की एक टुकड़ी होती थी, ने उसे क्रूस पर चढ़ाने का वास्तविक कार्य किया। रोमी व्यवस्था ने उन्हें पीड़ित के वस्त्र लूट के रूप में दिए। इसलिए प्रभु की जूती, कमरबंद, बाहरी वस्त्र और सिर का कपड़ा उन चार सैनिकों के बीच तुरन्त बाँट दिया गया, और यह निर्धारित करने के लिए कि किसे क्या मिलेगा, चिट्ठियाँ डाली गईं। आंतरिक वस्त्र बचा था, एक अंगरखा जो कंधों से घुटनों तक पहुँचता था। आम तौर पर यह वस्त्र दो टुकड़ों से बुनकर बना होता था, जिसे कंधों पर बांधा जाता था। लेकिन मसीह का आंतरिक वस्त्र, महायाजक द्वारा पहने जाने वाले वस्त्र की तरह, बिना सिले ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था। संभवतः इसे उसके लिए किसी ने अपने प्रेमपूर्ण हाथों से बुना था। इस बिना सिले हुए वस्त्र को फाड़ने की बजाय, सैनिकों ने इसके लिए एक विशेष चिट्ठी डाली।

घ. चौकसी (27:36-37)

(1) एक पूर्ण कार्य (27:36)

मत्ती ने उस गुनाह करने वाले लोगों के बारे में लिखा, "और वहां बैठकर उसका पहरा देने लगे।" उनका काम पूरा हो चुका था। सम्पूर्ण ब्रह्मांड के इतिहास में कभी भी इतना भयानक काम नहीं किया गया था। मनुष्य की दुष्टता इससे आगे कभी नहीं बढ़ सकती। पाप का अंतिम परिणाम यही है: मनुष्य अपने सृष्टिकर्ता को क्रूस पर कीलों से ठोंकते हैं और उसे मरते हुए देखने के लिए बैठ जाते हैं। और उनका काम बढ़ई के औजारों से किया गया था!

(2) एक अंतिम वचन (27:37)

क्रूस की छाया में बैठे सैनिक उसके शीर्ष पर पिलातुस के उस शिलालेख को पढ़ सकते थे जिस पर लिखा था: "यह यहूदियों का राजा यीशु है।" हमें कहीं अन्य भाग में बताया गया है कि ये शब्द लैटिन, ग्रीक और इब्रानी में लिखे गए थे। एक शिलालेख को आम तौर पर एक पट्टी पर लिखा जाता था और उस कैदी के सामने मृत्युदंड की जगह पर ले जाया जाता था ताकि दुनिया के सामने उस अपराध की घोषणा की जा सके जिसके लिए दोषी व्यक्ति को मौत की सज़ा दी जानी थी। पिलातुस ने प्रभु के दोषपत्र को यहूदियों के लिए जितना संभव हो सके उतना उत्तेजक और अपमानजनक बनाया। यहूदी अगुवे इससे काफी नाराज़ और क्रोधित थे। यूहन्ना 19:21 हमें बताता है कि उन्होंने पिलातुस को उस दोषपत्र के शब्दों को हल्का करने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन पिलातुस ने इसे बदलने से साफ इनकार कर दिया।

पिलातुस द्वारा लिखा गया दोषपत्र बिल्कुल सही था। यीशु यहूदियों का राजा था, दाऊद के सिंहासन का अंतिम वैध उत्तराधिकारी था। दाऊद से मसीह तक दो अलग-अलग शाही वंश चले। एक वंश सुलैमान से लेकर यहूदा के राजाओं से होते हुए यूसुफ तक चला। लेकिन, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, उस वंश पर एक अभिशाप था, जो यहोयाकीन (जिसे यकोनिया, जेकोन्याह और तिरस्कारपूर्वक कोन्याह भी कहा जाता है) पर केंद्रित था। "इस पुरुष को निर्वंश लिखो" - यिर्मयाह 22:30 में ईश्वरीय आदेश ऐसा था। वास्तव में यहोयाकीन के कई बेटे थे (1 इतिहास 3:17-18), लेकिन उसका कोई भी बेटा या वंशज कभी भी दाऊद के सिंहासन पर नहीं चढ़ सकता था। यूसुफ (यहोयाकीन का सीधा वंशज) का कोई भी स्वाभाविक-जन्मा बेटा मसीहा नहीं हो सकता था; अभिशाप ने इसे रोक रखा था।

लेकिन दाऊद और बतशिबा का सुलैमान के अलावा एक और बेटा था। उसका नाम नातान था, निस्संदेह परमेश्वर के विश्वासयोग्य भविष्यद्वक्ता के सम्मान में यह नाम रखा गया होगा। नातान की शाही वंशावली भी इतिहास में अपना रास्ता बनाती रही, हालाँकि यह पीछे की गलियों में चली गई और पवित्र इतिहासकार को छोड़कर सभी ने इसे अनदेखा कर दिया। मरियम इस वंश के द्वारा दाऊद की सीधी वंशज थी। यीशु मरियम कुंवारी से जन्मा पुत्र था और इस प्रकार दाऊद का सीधा वंशज था। उसे मरियम के पति यूसुफ ने गोद लिया था और गोद लेने के द्वारा वह दाऊद के सिंहासन का कानूनी उत्तराधिकारी भी बन गया। इस प्रकार यहोयाकीन पर शाप लागू किया गया और टाला भी गया। केवल प्रभु यीशु के व्यक्तित्व में ही ऐसा हो सकता था। वह जन्म से दाऊद का पुत्र था और गोद लिए जाने के द्वारा दाऊद का उत्तराधिकारी था। उसके द्वारा शाही वंश पूरी तरह से, अंततः और हमेशा के लिए अपने समापन में आ गया।

यीशु वास्तव में यहूदियों का राजा था। पिलातुस ने हठपूर्वक उस तथ्य की घोषणा करने पर जोर दिया, और उसके अभिलेख पर यहूदियों की आपत्तियों को परमेश्वर ने खारिज कर दिया।

3. वे लोग जो मसीह के साथ दोषी ठहराए गए (27:38)

एक घटना को दूसरी घटना से बिल्कुल अलग रखते हुए, मत्ती ने बताया, "तब उसके साथ दो डाकू एक दाहिने और एक बाएं क्रूसों पर चढ़ाए गए।" ऐसा लगता है कि पिलातुस ने यहूदियों को परेशान करने के लिए यह भी जानबूझकर किया था। यह काफी बुरा था कि उसने यीशु को उनका राजा घोषित किया, लेकिन फिर उसे चोरों के बीच क्रूस पर चढ़ाना, जैसे कि वह कोई आम अपराधी हो, यह उसका चरम अपमान था - याजकों, यहूदियों और महिमा के राजकुमार का अपमान।

ग. ठट्ठा करनेवाले (27:39-44)

1. भीड़ (27:39-40)

"और आने जाने वाले सिर हिला हिलाकर उस की निन्दा करते थे" (27:39)। "आने जाने वाले लोग" वे बेकार की भीड़, गुज़रने वाले अजनबी, यरूशलेम के लोग थे। यीशु ने उनके लिए अनगिनत चमत्कार किए थे, उनसे प्यार किया था, उन्हें परमेश्वर की दया दिखाई थी; और उन्होंने बदले में उसका मज़ाक उड़ाकर उसके प्रति आभार दिखाया। जानबूझकर उसकी ओर सिर हिलाते हुए, उन्होंने झूठे गवाहों के कथन को उसके मुँह की ओर फेंक दिया: "हे मन्दिर के ढाने वाले और तीन दिन में बनाने वाले, अपने आप को तो बचा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ" (27:40)।

प्रभु की सार्वजनिक सेवकाई उसी तरह समाप्त हुई जैसे कि वह शुरू हुई थी - शैतान की यह चुनौती "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है" उसके कानों में गूंजता रहा (27:40; 4:3, 6)। वह परमेश्वर का पुत्र था, लेकिन परमेश्वर चुप रहा। यद्यपि हम परमेश्वर की पीड़ा और चुप्पी की समस्या तथा अधर्म के रहस्य के बारे में बात करते हैं, पाप, पीड़ा और चुप्पी के बारे में सबसे बड़े और सबसे अनुत्तरित प्रश्न, सभी कलवरी में ध्यान में लाए जाते हैं। वहाँ वे हमारे लिए हल हो जाते हैं - और अगर वहाँ नहीं, तो कहीं नहीं होंगे। परमेश्वर इस उकसावे के सामने चुप रहा क्योंकि अगर उसने प्रतिक्रिया की होती, तो यह क्रोध के तीरों के साथ होता। जैसा कि वास्तव में, परमेश्वर मसीह में होकर संसार को अपने साथ मेलमिलाप के लिए प्रेरित कर रहा था। यह चुप्पी कठोर उदासीनता की नहीं थी, बल्कि प्रेम, करुणा, अनुग्रह और अलौकिक सुव्यवस्था और अनंत स्तर के धैर्य की थी।

2. रब्बी लोग (27:41-43)

क. उनके पद (27:41)

लापरवाह भीड़ द्वारा मरते हुए उद्धारकर्ता का अपमान करना काफी बुरा था, लेकिन हम मुख्य याजकों, शास्त्रियों और पूर्वजों के बारे में क्या कह सकते हैं? लोगों में से महान लोग, बुद्धिजीवी, कुलीन वर्ग, यहूदी समाज के श्रेष्ठ लोग, महासभा के अगुवे, इस्राएल के कुलीन वर्ग, राष्ट्र के सामाजिक, धर्मनिरपेक्ष और आत्मिक प्रमुखों ने उसको ठट्ठों में उड़ाया। क्या बड़ी अंधता थी! क्या घिनौना अपमान था! क्या ही शैतानी अंधकार था! उनकी कितनी नारकीय घृणा थी!

ख. उनका उपहास (27:42-43)

"इस ने औरों को बचाया," उन्होंने उपहास किया। "लेकिन अपने आप को नहीं बचा सकता।" यह तो "इस्राएल का राजा है"। अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें। उस ने परमेश्वर का भरोसा रखा है, यदि वह इस को चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, कि "मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ"।"

"इसने औरों को बचाया।" क्या मनोहर कथन है! लूका ने अपने सुसमाचार में उसे इसी तरह से प्रस्तुत किया है - पापियों के उद्धारकर्ता के रूप में। "इस्राएल का राजा।" इसी तरह मत्ती ने भी उसे शुरू से अंत तक प्रस्तुत किया। "उसने परमेश्वर का भरोसा रखा है।" मरकुस ने भी उसे इसी तरह प्रस्तुत किया - ईश्वरीय सेवक के रूप में, जिसने पूरी निर्भरता और आज्ञाकारिता के साथ परमेश्वर पर भरोसा रखा। "परमेश्वर का पुत्र।" यूहन्ना ने उसे इसी तरह से चित्रित किया। इसलिए मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना के सुसमाचार, सभी को एक साथ लिया जाए, तो हमें इस अद्‌भुत व्यक्ति की बेजोड़ कहानी मिलती है। और देखो, इस्राएल के अविश्वासी, परमेश्वर को बदनाम करने वाले धार्मिक अगुवों ने, पूरी अज्ञानता और दुर्भावनापूर्ण इरादे से, उसे वह सब घोषित कर दिया जो उसने कभी होने का दावा किया था। वास्तव में परमेश्वर मनुष्य के क्रोध को भी अपनी प्रशंसा में बदल देता है।

3. डाकू (27:44)

"इसी प्रकार डाकू भी जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे उस की निन्दा करते थे।" यहाँ तक कि उन डाकूओं ने भी अपने आप को उस उद्धारकर्ता से श्रेष्ठ महसूस किया और धार्मिक अगुवों के उदाहरण का

अनुसरण करते हुए, उस पर अपनी ईशनिंदा भरी गालियाँ बरसाईं। यहाँ दो पाप से लदे हुए लोग थे, जो पीड़ा में मर रहे थे। उन्हें अनंत काल में फेंका जाने वाला था, लेकिन वे इतने अंधे, इतने खोए हुए थे कि वे अपनी दम तोड़ती साँस से परमेश्वर के पुत्र को गाली दे रहे थे। हम शायद उनके लिए कोई बहाना ढूँढ़ सकें, क्योंकि वे दर्द से पागल थे और मृत्यु के विचार से पीड़ित थे। लेकिन इसने हमारे प्रभु के दुःख के कटोरे में एक और कड़वी बूंद डाल दी कि ये अपराधी उसे अपने से नीच, उनके शाप के योग्य, उनके अपशब्दों के लिए उपयुक्त साधन के रूप में देख रहे थे।

घ. चिह्न (27:45-54)

1. सूर्य (27:45-50)

क. ऐसा अंधकार जो पहले कभी नहीं देखा गया (27:45)

दोपहर के समय अचानक एक अलौकिक अंधकार छा गया और पूरे देश में तीन घंटे तक आधी रात का अँधेरा छाया रहा। किसी भी इंसान की आँखों को प्रभु के अंतिम घंटों को देखने की अनुमति नहीं थी। उन भयानक घंटों में क्या हुआ, इसके बारे में हम कुछ नहीं जानते। प्रभु अपने शरीर, प्राण और आत्मा के अंधकार में चला गया, पीड़ा के एक भेद में जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता और जिसके बारे में हमें नहीं जानना चाहिए।

ख. ऐसी निराशा जो पहले कभी नहीं देखी गयी (27:46-49)

(1) पीड़ा भरी कराह (27:46)

हमें बस इतना ही जानने की अनुमति है कि जैसे ही अंधकार के तीन घंटे समाप्त हुए, प्रभु ने पुकारा, "ली, एली, लमा शबक्तनी अर्थात हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?" प्रभु भजन 22:1 को उद्धृत कर रहा था और इस प्रकार अपनी अंतिम सांस के साथ वह पुराने नियम का समर्थन कर रहा था। उसने खोई हुई आत्मा की अंतिम भयानकता का स्वाद चखा: अर्थात् परमेश्वर द्वारा त्याग दिया जाना। उस रहस्यमयी अकेलेपन में वह जो पाप को नहीं जानता था, हमारे लिए पाप बन गया और उसने नरक में आत्मा की पीड़ा का अनुभव किया।

पुराने नियम का एक उदाहरण हमें मसीह की पीड़ा का एक ज्वलंत चित्रण प्रस्तुत करता है। प्रायश्चित के दिन ली गई दो बकरों में से एक को पाप वहन करने वाला बकरा कहा जाता था। उसके सिर पर महायाजक इस्राएल की संतानों के पापों को अंगीकार करता था। जब लंबी सूची समाप्त हो जाती थी, तो बकरे को "एक योग्य व्यक्ति" को सौंप दिया जाता था, जो उसे "एक निर्जन देश" में ले जाता था (लैव्यव्यवस्था 16:21-22)। वहाँ, मानवीय निवासों से दूर, अपनी प्रजाति से दूर, उसे भयावह उजाड़ के दृश्यों के बीच छोड़ दिया जाता था। वहाँ, पानी की एक बूँद, घास का एक तिनका भी नहीं होता, अवर्णनीय अकेलेपन और अलगाव में, वह अपनी करुण पुकार लगाता - जिसका उत्तर पूर्ण और भयानक मौन से दिया जाता। इस प्रकार हमारे उद्धारकर्ता ने भी पीड़ा को सहन किया। उसकी अनाथ पुकार स्वर्ग तक पहुँची और अंधेरे में उसका एकमात्र जवाब अभेद्य, अकल्पनीय और पूर्ण मौन था।

(2) चिन्तित भीड़ (27:47-49)

क्रूस के पास खड़े कुछ लोगों ने प्रभु की पुकार का गलत अर्थ लगाया और सोचा कि वह भविष्यद्वक्ता एलिय्याह को पुकार रहा है। देर से आई करुणा के साथ, उन में से एक तुरन्त दौड़ा, और स्पंज लेकर सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया। अपने पूरे होशो-हवास में, प्रभु ने एक भविष्यद्वाणी को याद किया जो अभी भी पूरी होने का इंतजार कर रही थी - "और मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका पिलाया" (भजन 69:21) - और उसी प्रकार उस खट्टे पेय को स्वीकार किया।

ग. ऐसी मृत्यु जो पहले कभी नहीं देखी गयी थी (27:50)

यीशु ने "फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए।" वह पीड़ित के रूप में नहीं, बल्कि विजेता के रूप में मरा। किसी मनुष्य ने उसका जीवन उससे नहीं छीना; बल्कि उसने खुद ही उसे अर्पण किया (यूहन्ना 10:18)। जब वह सब कुछ हो गया जो पूरा किया जाना था, तो उसने जबरदस्त महिमा के साथ अपनी आत्मा को अपने पिता की देखभाल में सौंप दिया। छुटकारे का काम पूर्ण हो चुका था।

2. पवित्रस्थान (27:51a)

अन्य चिह्न तेजी से एक के बाद एक आते गए। मत्ती जिन यहूदियों को लिख रहा था, उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण पवित्र स्थान का चिह्न था। “मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया”, जो यहूदी धर्म और उसके रीतिपूर्ण धर्म के अंत, पुराने नियम की अर्थव्यवस्था के अंत का एक अशुभ चिह्न था। एडर्सहेम ने कहा कि परदा साठ फीट लंबा, बीस फीट चौड़ा था, हथेली के आर-पार नापने पर एक आदमी के हाथ जितना मोटा और बहुत भारी था।[12] बैलों का जोड़ा उस परदे को फाड़ नहीं सकता था। यह कि यह ऊपर से दो टुकड़ों में फटा था, इस प्रतीकात्मक विपत्ति की ईश्वरीय हस्तक्षेप को दर्शाती है।

हमें यह नहीं बताया गया है कि यहूदियों ने बाद में उस परदे का क्या किया। संभवतः उन्होंने इसे फिर से सील दिया होगा और अब उस मृत हो चुके धर्म की सेवा-टहल करने लगे, जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। अगर ऐसा है, तो यह ज़्यादा समय तक नहीं चलने वाला था। जैसा कि मत्ती ने लिखा, परमेश्वर पूरे मंदिर को गिराने की तैयारी कर रहा था।

3. चट्टानें (27:51b)

परदे के चिह्न के साथ चट्टानों के चिह्न भी शामिल थे। वहाँ एक भयानक भूकंप आया। उद्धारकर्ता के लहू से भीगी हुई चट्टानों को तोड़ते हुए, उन्होंने मनुष्यों द्वारा अपने सृष्टिकर्ता की हत्या के विरोध में अपनी आवाज उठाई।

4. कब्रें (27:52-53)

एक और चिह्न कब्रों का खुलना, और कब्र में दबे लोगों का फिर से जी उठना और यरूशलेम में कई लोगों के सामने उन पवित्र लोगों का प्रकट होना था। बाद के वर्षों में राजा अग्रिप्पा से बात करते हुए, पौलुस सच्चाई के साथ कह सका, "यह घटना तो कोने में नहीं हुई" (प्रेरितों के काम 26:26)। प्रभु यीशु को मृत्यु के राज्य में ले जाना और वापस बाहर लाना, चिह्नों और चमत्कारों के साथ हुआ, जो सबसे हठी और पत्थर दिलों को छोड़कर बाकी सभी को प्रभावित करने के लिए किए गए थे।

5. सूबेदार (27:54)

उस दिन के चिन्हों में "सूबेदार और जो उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे", उनका मन परिवर्तन भी कम महत्वपूर्ण नहीं था। यीशु को देखते हुए, उन्होंने एक व्यक्ति को अपने पूर्ण गरिमा और शालीनता से मरते हुए देखा था, अपने शत्रुओं को क्षमा करते हुए, एक चोर को जो कुछ क्षण पहले उसे कोस रहा था, स्वर्ग का वादा करते हुए, अपनी माँ की भलाई के लिए अंतिम व्यवस्था करते हुए, पिता के रूप में परमेश्वर से बात करते हुए, और शरीर की प्यास और आत्मिक पीड़ा की अथाह पीड़ा में कराहते हुए देखा था। उन्होंने प्रकृति के सुनियोजित अत्याचार को देखा था, जब अंधकारमय आकाश और फटी हुई चट्टानें उसकी मृत्यु का विरोध कर रही थीं।

ये रोमी सूबेदार, जिन्होंने उस निर्दयी युग में कई भयानक् दृश्य देखे थे, "अत्यंत डर गए।" रोमी सेना में उनका कठोर प्रशिक्षण, उनका कठोर अनुशासन, और खतरे का सामना करने में उनका प्रतिष्ठित साहस, सभी ने उन्हें निडर पुरुष बनाने की साजिश रची, लेकिन फिर भी वे "अत्यंत डर गए।" इन सैनिकों के अंदर जो बात डर पैदा कर रही थी, वह यह थी कि जिसे उन्होंने क्रूस पर चढ़ाया था, वह परमेश्वर का पुत्र था। उन्होंने भीड़ को मसीह के दावे का मजाक उड़ाते सुना था, उन्होंने रब्बियों को इसका उपहास करते सुना था, और उन्होंने डाकूओं को भी ठट्ठा करते सुना था, लेकिन इन रोमी सैनिकों ने इस पर विश्वास किया।

हम उन लोगों के पूर्णतया अनुचित प्रयासों की निंदा करते हैं जो सूबेदार और उसके साथियों के अंगीकार को कमजोर करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने यह नहीं कहा, "यह परमेश्वर का एक पुत्र था।" बल्कि उन्होंने कहा था, "निश्चय, यह परमेश्वर का पुत्र था।" वे गैर-यहूदियों के विशाल समूह के पहले फल थे जिन्होंने तब से वही अंगीकार किया है। मत्ती ने यहूदियों के अविश्वास की अधिक निंदा करने तथा उसके विपरीत विचार प्रस्तुत करने के लिए उनके मन-परिवर्तन पर जोर दिया।।

ङ. सहानुभूति रखने वाले (27:55-56)

यूहन्ना को छोड़कर, प्रभु के प्रति सहानुभूति रखने वालों में से कोई भी पुरुष वहाँ उपस्थित नहीं था। महिलाएँ क्रूस के पास आईं थी और पूरे समय वहाँ खड़ी सब देखती रहीं। उनमें से तीन की पहचान मत्ती ने की: (1) मरियम मगदलीनी, जिस पर बहुत कुछ कर्जा था, जिसका बहुत कुछ क्षमा किया गया, और जिसे बहुत अधिक प्रेम किया गया था। (2) दूसरी मरियम भी थी, जो क्लोपास की पत्नी और छोटे याकूब और योसेस की माता थी। (ऐसा माना जाता है कि वह तद्दै और शिमौन जेलोतेस की माँ भी थी। एडर्सहेम का विचार था कि क्लोपास यूसुफ़ का भाई था जो प्रभु की माँ का पति था। [13]) (3) फिर वहाँ शलोमी भी थी, जो जब्दी के पुत्र (याकूब और यूहन्ना) की माँ और कुंवारी मरियम की बहन थी।

इस प्रकार प्रभु की दो मौसियाँ क्रूसीकरण के समय वहाँ मौजूद थीं और उनके साथ एक और स्त्री भी थी, जिसमें से प्रभु ने सात दुष्टात्माओं को निकाला था। ऐसा लगता है कि ये महिलाएँ पहले तो क्रूस के पास खड़ी थीं। उनके साथ प्रभु की माँ और यूहन्ना भी थे (यूहन्ना 19:25-27)। जब यूहन्ना प्रभु की माँ को घटनास्थल से दूर अपने घर ले गया, तो ऐसा प्रतीत होता है कि अन्य महिलाएँ कुछ दूरी पर चली गईं (शायद अपनी सुरक्षा के डर से), और प्रभु यीशु को अकेले ही अपनी पीड़ा सहने के लिए छोड़ दिया।

VIII. क़ब्र (27:57-66)

और इस तरह जीवन का स्वामी मर गया। जिसने तारों को आकाशमंडल में सजाया था, जिसने शून्य से पृथ्वी बनाई थी, जो आदम को आकार देने के लिए मिट्टी लेने नीचे झुका था, जिसने उसके नथुनों में जीवन की सांस फूँकी थी, वह अब मर गया। प्रभु ने हर वह अपमान सहा था जिसे मनुष्य कभी कल्पना कर सकता था। उसने नरक की सेना का सामना किया था। वह परमेश्वर के क्रोध और शाप के बोझ के नीचे झुक गया था। अब वह मर चुका था और, मर जाने के कारण, उसे एक कब्र की आवश्यकता थी।

क. कब्र दी गई (27:57-61)

1. यूसुफ की मध्यस्थता (27:57-58)

यह दिलचस्प है कि जब प्रभु का जन्म हुआ तो उसके लिए सुरक्षा प्रदान करने के लिए परमेश्वर के पास एक यूसुफ नाम का व्यक्ति था, और जब उसे गाड़ा गया तो उसको सुरक्षा प्रदान करने के लिए भी एक यूसुफ था। एक यूसुफ बढ़ई था; दूसरा सलाहकार था। एक गरीब था; दूसरा समृद्ध था। दोनों पुरुषों को "धर्मी" के रूप में वर्णित किया गया है (मत्ती 1:19; लूका 23:50)। दोनों पवित्रशास्त्र के पवित्र पृष्ठ पर एक पल के लिए चमके और फिर गुमनामी में विलीन हो गए।

यह अरिमतियाह का यूसुफ था जो यीशु की मृत देह को अपने अधिकार में लेने की अनुमति मांगने के लिए पिलातुस के पास गया। यह यूसुफ महासभा का एक सदस्य था, जो यीशु के संबंध में हन्ना और काइफा की नीति से असहमत होने वाले कुछ लोगों में से एक था। अन्य धार्मिक धनी यहूदियों की तरह, यूसुफ भी अपने और अपने परिवार के लिए यरूशलेम में एक कब्र बनवा रहा था।

इसकी संभावना कम ही है कि यूसुफ ने यशायाह 53:9 को न पढ़ा हो, जिसमें भविष्यद्वाणी की गई थी कि मसीहा अपनी “मृत्यु के समय धनवान का संगी हुआ” और, यह मानते हुए कि यीशु ही मसीहा है, उसने भविष्यद्वाणी को पूरा करने के लिए यीशु के लिए अपनी खुद की कब्र तैयार करने का काम जानबूझकर शुरू किया था। यदि ऐसा है, तो यूसुफ ने संभवतः अधिकारियों को अपनी परियोजना में हस्तक्षेप करने से रोकने के लिए यीशु के प्रति अपनी निष्ठा को छिपा रखा था। लेकिन जब यीशु की मृत्यु हुई, तो यूसुफ ने दृढ़तापूर्वक अपनी गोपनीयता के आवरण को उतार फेंका और उसी प्रकार अपने कार्य को अंजाम दिया जैसा कि सुसमाचार प्रचारकों ने बताया कि उसने किया।

2. यीशु का गाड़ा जाना (27:59-61)

क. अंतिम प्रेमपूर्ण उपहार (27:59-60)

किसी भी मामले में, यूसुफ ने जो कब्र खुदवाई थी, वह प्रभु की देह को दफनाने के लिए तैयार और उपलब्ध थी। मत्ती ने कहा कि यह "उसकी अपनी नई कब्र" थी (27:60)। यहाँ "नई" के लिए मूल शब्द काइनोस है, जिसका अर्थ है "ताज़ा बनाया गया", इसलिए मत्ती कह रहा था कि कब्र को अभी तक उपयोग नहीं किया गया था, या किसी भी मृत शरीर से उसे अपवित्र नहीं किया गया था।

मत्ती ने हमें यीशु के गाड़े जाने के बारे में बहुत कम जानकारी दी है। उसने बस इतना कहा कि यूसुफ ने “लोथ को लेकर उसे उज्ज़वल चादर में लपेटा" (27:59)। यूहन्ना ने अन्य विवरण जोड़ते हुए बताया कि कैसे यूसुफ के सहयोगी निकुदेमुस बड़ी मात्रा में गन्धरस और एलवा ले आया, जो मृतकों को दफ़नाने के

लिए इस्तेमाल किए जाने वाले सुगंधद्रव्य होते हैं (यूहन्ना 19:39)। आने वाले सब्त के कारण, जो कुछ भी किया गया, वह जल्दबाजी में किया गया। उस समय केवल आंशिक शव-संरक्षण करने की ही अनुमति थी। एक बड़े पत्थर को उस जगह पर लुढ़काया गया और लोग वहाँ से चले गए।

ख. अंतिम झलक (27:61)

"मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम" वहाँ पीछे रह गईं। वे अपने आप को वहाँ से अलग नहीं कर सकीं। ऐसा लग रहा था कि गाड़े जाने के साथ कुछ समाप्त हो चुका था। अगर वे कब्र को छोड़कर बैतनिय्याह की मरियम से मिलने गए होते, तो वह उन्हें कुछ और बताती। वह क्रूस और कब्र से दूर रही, इसलिए नहीं कि उसे परवाह नहीं थी, बल्कि इसलिए कि वह जानती थी कि यीशु फिर से जी उठेगा। इसीलिए उसने अपनी कीमती जटामांसी इत्र यीशु को अर्पित किया था, जबकि वह अभी भी जीवित था, बजाय इसके कि उसे दफ़नाए जाने के लिए बचाकर रखा जाए (यूहन्ना 12:1-7)। उसे कब्र पर जाकर इंतज़ार करने और देखने और रोने की कोई ज़रूरत नहीं थी। वह अपने घर पर कहानी के बाकी हिस्से के खुलने का इंतज़ार कर रही थी।

ख. कब्र की सुरक्षा की गई (27:62-66)

1. महासभा की दुविधा (27:62-64)

क. क्या स्मरण किया गया (27:62-63)

हमें आश्चर्य होता है कि जब उस विचित्र अंधकार ने पूरे देश को अपने कब्ज़े में कर लिया था, जब भूकंप, प्रलय की दरार की तरह, हमारे प्रभु के इस जीवन से चले जाने की घोषणा करता है; जब मंदिर के पर्दे के फटने की खबर आती है, जो महायाजक के वस्त्र के फटने से मेल खाती है, तब महासभा के अगुवों ने क्या सोचा होगा। हमें आश्चर्य है कि जब यह बताया गया कि, धीमी मौत की प्रथा की अपेक्षाओं के विपरीत, यीशु ने अपनी आत्मा को त्याग दिया और मर गया, तो उन्होंने क्या सोचा होगा। यदि सैनिकों को उसके पैर तोड़कर उसकी मृत्यु को जल्दी करनी पड़ती, तो वह एक झूठा मसीहा साबित होता (निर्गमन 12:46; गिनती 9:12)। लेकिन उसके पैरों को तोड़ने की बजाय, रोमी सैनिक ने उसकी पसली में भाले से छेद किया। हमें क्या लगता है कि महासभा के अगुवों ने तब क्या सोचा होगा जब उन्होंने सुना कि रोम के अन्यजातीय सैनिकों ने यीशु को परमेश्वर का पुत्र मान लिया है। हमें क्या लगता है कि उन्होंने तब क्या सोचा होगा जब उन्हें बताया गया कि उनके दो साथियों, अत्यन्त आदरणीय निकुदेमुस और अरिमतियाह के अत्यन्त धनी यूसुफ, ने साहसपूर्वक पिलातुस के पास जाकर उससे यीशु के मृत देह को प्राप्त किया और उसे सम्मानपूर्वक दफ़नाया।

अब यह तैयारी के दिन के बाद का दिन था। यह पर्व का पहला दिन था, अर्थात् मुख्य दिन, निसान का पंद्रहवाँ दिन, और एक भयानक विचार ने देर से ही सही, महासभा के अगुवों को बुरी तरह जकड़ लिया: यीशु ने कहा था कि वह फिर से जी उठेगा। ऐसा लगता है कि बैतनिय्याह की मरियम को छोड़कर, उसके किसी भी मित्र को वह भविष्यद्वाणी याद नहीं थी, लेकिन उसके शत्रुओं को याद थी।

ख. क्या मांगा गया (27:64)

मुख्य याजक और फरीसी तुरंत पिलातुस के पास पहुंचे और आग्रह किया कि "तीसरे दिन तक कब्र की रखवाली की जाए।" उन्होंने इस बात का एक सरल स्पष्टीकरण दिया कि अगर कब्र की सुरक्षा नहीं की गई तो क्या हो सकता है: उसके चेले रात के अंधेरे में कब्र पर हमला कर सकते हैं, शव को चुरा सकते हैं और पुनरुत्थान की कहानी फैला सकते हैं। धार्मिक अगुवों ने आगे कहा, "तब पिछला धोखा पहिले से भी बुरा होगा।" पहली गलती क्या थी, यह बताने से वे बचते रहे। मेरा अनुमान है कि यह यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की उनकी सबसे बड़ी गलती थी।

स्पष्ट है कि इन दुष्ट लोगों ने प्रभु के चेलों को भी उतना ही धूर्त और चालाक समझा जितना कि वे स्वयं थे। जबकि वास्तव में, चेले इतने निराश हो चुके थे कि वे ऐसी कोई योजना बनाने में भी असमर्थ थे। अपनी मनःस्थिति में वे उस तरह की योजना को कभी अंजाम नहीं दे सकते थे, भले ही वे किसी तरह से गुरु के काम को आगे बढ़ाने पर तुले भी हुए होते।

2. महासभा की सावधानी (27:65-66)

पिलातुस ने उनकी बात सुनी। इसलिए उसने कहा, "तुम्हारे पास पहरूए तो हैं" (27:65)। मूल यूनानी शब्द में इसका अर्थ "तुम्हारे पास पहरा है" या सांकेतिक रूप से "तुम्हारे पास पहरूए हो सकते है" के रूप में लगाया जा सकता है। "पहरा" शब्द का अनुवाद कोउस्टोडिया है, जो चार सैनिकों के पहरे को संदर्भित करता है। स्पष्ट रूप से पिलातुस ने महासभा को ऐसा पहरा दे रखा था। इसलिए अगुवे कब्र के लिए एक मुहर और लोगों को उस स्थान से दूर रखने के लिए कुछ सैनिकों के साथ चले गए। अब कोई भी उस कब्र से छेड़छाड़ नहीं कर सकता था। उनकी सावधानियाँ मसीह के बाद के पुनरुत्थान को ऐतिहासिक तथ्य के रूप में और भी अधिक अकाट्य बना देती हैं।

इस तरह पृथ्वी अपनी धुरी पर अंतरिक्ष में घूमती रही। लोग अपने दैनिक जीवन की दिनचर्या में लग गए। प्रभु के चेले कहीं छिप गए। स्त्रियों ने लोथ को संरक्षित करने की तैयारी शुरू कर दी। सैनिक इधर-उधर टहलते रहे या समय बिताने के लिए पासा फेंकते रहे। प्रभु का निर्जीव शरीर उस कब्र में शांत और ठंडा पड़ा रहा। क्षण बीतते चले गए।

ऐसा लग रहा था कि मृत्यु वहाँ सर्वोच्च रूप से शासन कर रही थी, लेकिन चाहे वह कितनी भी कोशिश कर ले, वह कब्र के भीतरी अंधेरे में लिपटी और बंधी हुई उस अमर मिट्टी को दूषित नहीं कर सकती थी। ऊपर स्वर्ग और नीचे नरक उस कब्र को सांस रोककर देख रहे थे, और स्वर्गदूत इन सबकी छाया में इकट्ठे खड़े थे।

भाग 4.

राजा का जी उठना

मत्ती 28:1-20

राजा का जी उठना (28:1-20)

1. ज्योति फैल उठी (28:1-10)

1. प्रभु का स्वर्गदूत (28:1-8)
    1. एक बदलाव (28:1-4)
        1. राष्ट्रीय बातों के क्रम में (28:1)
        2. प्राकृतिक बातों के क्रम में (28:2-4)
            1. भूमि हिल उठी (28:2a)
            2. कब्र पर विजय पाई गई (28:2b)
            3. पहरेदारों की हैरानी (28:3-4)
    2. एक चुनौती (28:5-6)
        1. स्वर्गदूत ने स्त्रियों को क्या बताया (28:5)
            1. परमेश्वर की शांति—उनके डर को दूर करने के लिए (28:5a)
            2. परमेश्वर की सामर्थ—उनका विश्वास जगाने के लिए (28:5b)
        2. स्वर्गदूत ने स्त्रियों को क्या दिखाया (28:6)
            1. घोषणा के द्वारा (28:6a)
            2. प्रमाण के तौर पर (28:6b)
    3. एक आदेश (28:7-8)
        1. एक प्रकाशन (28:7)
            1. घोषणा (28:7a)
            2. नियुक्ति (28:7b)
        2. एक प्रतिक्रिया (28:8)
2. प्रभु का प्रकट होना (28:9-10)
    1. मुलाक़ात (28:9-10a)
        1. जब वह स्त्रियों से मिला (28:9a)
        2. वह स्त्रियों से क्यों मिला (28:9b-10a)
            1. सभी संदेहों को दूर करना (28:9b-c)
                1. मृतकों में से उसके पुनरुत्थान के विषय में (28:9b)
                2. उसके परमेश्वरत्व की वास्तविकता के विषय में (28:9c)
            2. सारे भय को दूर भगाना (28:10a)
    2. संदेश (28:10b)

2. झूठ बिखर गया (28:11-15)
    1. झूठ की ज़रूरत (28:11-12)
        1. पुनरुत्थान की आधिकारिक रिपोर्ट (28:11)
        2. पुनरुत्थान पर आधिकारिक प्रतिक्रिया (28:12)
            1. महासभा द्वारा बुलाई गई बैठक (28:12a)
            2. सैनिकों को दिया गया धन (28:12b)

2. झूठ की प्रकृति (28:13-14)
    1. इसमें निहित कमज़ोरी (28:13)
    2. इसकी आकस्मिक कमज़ोरी (28:14)
        1. झूठ फैलाने वाले लोगों के दृष्टिकोण से (28:14a)
        2. झूठ की योजना बनाने वाले लोगों के दृष्टिकोण से (28:14b)
3. झूठ की खबर (28:15)
    1. सिपाहियों द्वारा स्वीकार की गई आर्थिक रिश्वत (28:15a)
    2. जनता द्वारा स्वीकार किया गया कपटपूर्ण विश्वास (28:15b)
4. प्रभु ने हस्तक्षेप किया (28:16-20)
    1. चेलों को अपने दुःखभोग की महिमा से परिचित कराना (28:16-17)
        1. नियुक्ति (28:16)
        2. प्रकटीकरण (28:17)
            1. चेलों की खुशी (28:17a)
            2. संदेह करने वालों का संकोच (28:17b)
    2. अपने उद्देश्य की महानता के बारे में चेलों को आश्वस्त करना (28:18-20)
        1. उसकी सामर्थ (28:18)
        2. उसकी योजना (28:19-20)
            1. जाओ! (28:19-20a)
                1. जातियों तक पहुंचना (28:19)
                    1. सुसमाचार का सर्वश्रेष्ठ भाग (28:19a)
                    2. सबसे सर्वश्रेष्ठ नाम (28:19b)
                2. जातियों को सिखाना (28:20a)
            2. देखो! (28:20b-c)
                1. उसकी उपस्थिति को उसके अपने लोगों द्वारा व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया जाना चाहिए (28:20b)
                2. उसकी उपस्थिति को उसके अपने लोगों द्वारा स्थायी रूप से अनुभव किया जाना चाहिए (28:20c)

I. ज्योति फैल उठी (28:1-10)

ज्योति ने कब्र के अंधेरे को दूर करते हुए, प्रेरितों की उदासी और अविश्वास को दूर करते हुए, युगों को चमक और नए सत्य से भर दिया। अंधेरे के तीन दिन और तीन रातें, जो हमारे प्रभु के क्रूस पर अंतिम तीन घंटों के आसपास लिपटे रहस्यमय अंधेरे द्वारा घोषित की गई थीं, खत्म हो चुकी थीं। मृत्यु के समय फिर कभी परमेश्वर पर विश्वास करने वाले उसके संतान कभी अंधेरे में नहीं जायेंगे। अब "धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है" (नीतिवचन 4:18)।

क. प्रभु का स्वर्गदूत (28:1-8)

1. एक बदलाव (28:1-4)

क. राष्ट्रीय बातों के क्रम में (28:1)

"सब्त के अंत में।" इस प्रकार मत्ती द्वारा सुसमाचार में मसीह के पुनरुत्थान का वर्णन शुरू होता है जो विशेष रूप से इस्राएल राष्ट्र की ओर निर्देशित है। कुछ विद्वान उस पहले वाक्यांश को "सब्त के दिन के बाद" के रूप में पुनः अनुवाद करना चाहते हैं, लेकिन अंग्रेजी के किंग जेम्स अनुवाद को अपना आधार मानते हैं। यह राष्ट्रीय व्यवस्था में परिवर्तन पर एक वाक्पटु, गहन और चौंकाने वाली टिप्पणी है। यहूदी धर्म समाप्त हो गया। यहूदी सब्त प्रभु के पुनरुत्थान द्वारा अप्रचलित हो गया, ठीक उसी तरह जैसे मंदिर अब उसके परदे के फटने के कारण और याजकीय व्यवस्था महायाजक के वस्त्र के फटने से अप्रचलित हो गई थी। मत्ती ने लिखा, "सब्त के दिन के बाद"। अपने यहूदी देशवासियों और मसीही कलीसिया के उन सदस्यों के लिए जो अभी भी सब्त के दिन से संबंधित प्रश्नों से भ्रमित थे, वह चिल्लाकर कह रहा था, "यह पूरा हो गया है!"

यह सब्त का दिन ही था जब जीवन और महिमा का प्रभु, सारी सृष्टि का देहधारी सृष्टिकर्ता, सब्त का प्रभु, मृत्यु में शांत और स्थिर पड़ा रहा। सब्त का दिन एक ऐसी व्यवस्था पर आधारित था जो उद्धार नहीं दिला सकता था, एक ऐसी व्यवस्था जो लोगों को मसीह के पास लाने के लिए एक स्कूली शिक्षक के समान थी।

सृष्टि की उत्पत्ति के समय, परमेश्वर ने सातवें दिन विश्राम लिया (उत्पत्ति 2:1-2)। प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर ने अपने लोगों के विश्राम के लिए सातवें दिन को अलग रखा (निर्गमन 20:8-11)। पुनरुत्थान में सब कुछ बदल गया है। इस प्रकार प्रभु यीशु ने अपने आलोचकों को उत्तर दिया जिन्होंने उस पर सब्त को तोड़ने का आरोप लगाया था, "मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूँ" (यूहन्ना 5:17)। पुराने नियम में परमेश्वर का विश्राम एक दिन में होता था, लेकिन पाप के प्रवेश से उसका सब्त का विश्राम टूट गया। अब उसका विश्राम एक व्यक्ति में है। परमेश्वर मसीह के व्यक्तित्व में और अपने पूरे किए गए कार्य में विश्राम करता है, और हम भी ऐसा ही करते हैं। पुनरुत्थान ने "सब्त के दिन का अंत" और वह सब कुछ जो इसका प्रतिनिधित्व करता है, को दर्शाया।[1]

मत्ती 28:1 में यह केवल "सब्त का अंत" नहीं था। हम यह भी पढ़ते हैं कि "सप्ताह के पहले दिन पौ फटते ही..." आत्मिक प्रवृत्ति और अंतर्दृष्टि के साथ नवजात कलीसिया ने सब्त को विश्राम के दिन से बदलकर सप्ताह के पहले दिन को आराधना के दिन के रूप में अपना लिया (प्रेरितों के काम 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:1-2)। मूसा के निषेधों और रब्बियों की व्यवस्था से मुक्त होकर, पहला दिन मसीह की मृत्यु पर विजय में हमारे छुटकारे की पूर्णता की स्मृति में मनाया गया।

जब मरियम मगदलीनी और "दूसरी मरियम" (क्लोपास की पत्नी और छोटे याकूब की मां) "कब्र को देखने" आई, तो उन्हें इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वहां कितना बड़ा बदलाव हुआ है। वह कब्र उनकी सारी उम्मीदों की कब्र थी। इसमें उस व्यक्ति के पार्थिव अवशेष थे, जिसके जीवन और प्रेम ने उनके हृदयों पर विजय प्राप्त की थी। उन्हें वहाँ और कुछ देखने की उम्मीद नहीं थी। अपने दुःख में वे कब्र को

देखने आए थे, लेकिन इसकी बजाय उन्होंने उद्धारकर्ता को देखा। ओह, क्या ही खुशी का दिन था! यह मसीह में सभी के लिए कितनी बड़ी आशा है!

ख. प्राकृतिक बातों के क्रम में (28:2-4)

(1) भूमि हिल उठी (28:2a)

स्त्रियों को अभी तक इसका पता नहीं था, लेकिन प्राकृतिक क्रम में बड़ा बदलाव आ चुका था। मत्ती ने लिखा, "देखो एक बड़ा भुईंडोल हुआ।"

जब इसके सृष्टिकर्ता की मृत्यु हुई तो धरती किसी व्याधि के समान काँप उठी थी; जब वह फिर से जी उठा तो धरती खुशी से काँप उठी। जब यीशु अधोलोक में उतरा तो धरती काँप उठी; अपने छिदे हुए पैरों के साथ, यीशु दृढ़ता से अधोलोक में गया और फिर वहाँ से वापस आ गया, जिससे धरती की आधारशिला चट्टान उसके पैरों के नीचे किसी लावे के कटोरे की तरह काँप उठी।

(2) कब्र पर विजय पाई गई (28:2b)

"प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया।" स्वर्गदूत मसीह को कब्र से बाहर निकालने नहीं आया था; वह पहले ही बाहर आ चुका था। स्वर्गदूत दरअसल संसार को पुनरुत्थान का सबूत दिखाने आया था: अर्थात् एक खुली और खाली कब्र।

हाकिम की शाही मुहर के प्रति शानदार उपेक्षा के साथ, स्वर्गदूत ने पत्थर को पीछे की ओर लुढ़का दिया। याजक और दोष लगाने वालों के प्रति एक राजकीय तिरस्कार को प्रदर्शित करते हुआ, स्वर्गदूत पत्थर पर बैठ गया। यरूशलेम और रोम को उसके साथ ज़रा हस्तक्षेप तो करने की कोशिश करने दें! उसे महासभा की साज़िशों या कैसर की ताकत की क्या परवाह थी? स्वर्गदूत को याजकों के दरबार या शाही सेना की क्या परवाह थी? केवल एक स्वर्गदूत ने एक रात में सन्हेरीब की सारी सेनाओं को उखाड़ फेंका था (2 राजा 19:35)। प्रभु की कब्र पर वह स्वर्गदूत उन बारह सेनाओं में से केवल एक था जिन्हें जीवित मसीह ऊपर से बुला सकता था (मत्ती 26:53)।

हम कल्पना कर सकते हैं कि स्वर्ग की सेना अपने विरोधी को चुनौती दे रही है: "हे कैसर, अपने सैनिकों को बुलाओ। अपने सैनिकों को आवाज़ दो; उन्हें ब्रिटेन से, ग्रीस और गाओल से, फ़रात नदी और यूक्साइन सागर से वापस ले आओ। हिम्मत है तो उन्हें उस अकेले स्वर्गदूत के विरूद्ध पाँति बांधकर युद्ध करने दो। और अपने साम्राज्य को समय से पहले ही बर्बाद होने दो!"

पृथ्वी की कोई भी ताकत उस पत्थर को वापस नहीं लुढ़का सकती थी ताकि कब्र को फिर से बंद किया जा सके। कोई भी यहूदी महासभा या रोमी शासक उस खाली कब्र के कपड़ों को उस मिट्टी के चारों ओर फिर से नहीं लपेट सकता था जिसे उज्ज़वल चादर से कुछ ही दिनों पहले बांधा गया था।

(3) पहरेदारों की हैरानी (28:3-4)

28:3 में हमें स्वर्गदूतों के बारे में पवित्रशास्त्र में दिए गए दुर्लभ विवरणों में से एक यहाँ मिलता है: "उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाईं उज्ज़वल था।" स्वर्गदूत चकाचौंध करने वाली महिमा से भरा हुआ था, और किसी दूसरी दुनिया की अगम्य रोशनी में नहाया हुआ था। या जैसा किसी पहरेदार ने

उसे वहाँ देखा। प्राणघातक भय से वे काँप उठे और स्वर्गदूत के चरणों में सिर के बल गिर पड़े, मानो वे मर गए हों।

2. एक चुनौती (28:5-6)

स्वर्गदूत के उस भयानक तेज़ से भरे चेहरे को उन स्त्रियों ने भी देखा। उनके स्वाभाविक भय को समझते हुए, उसने एक सांत्वनापूर्ण शब्द कहकर उनकी आशंका को दूर करने की जल्दीबाज़ी की: "तुम मत डरो: मै जानता हूँ [ओइडा, 'अंतर्ज्ञान से, बिना प्रयास के जानना'] कि तुम यीशु को जो क्रुस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो। वह यहाँ नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ, यह स्थान देखो, जहाँ प्रभु पड़ा था।" महिलाएँ "कब्र को देखने" आई थीं, और एक कोमल व्यंग्य के साथ स्वर्गदूत ने प्रभावी रूप से उनसे कहा, "तो ठीक है, आओ और इसे देखो!"

खाली कब्र, पुनरुत्थान का सबसे महान प्रमाण, मसीहियत को दुनिया के अन्य धर्मों से अलग करता है। किसी भी झूठे धर्म के पास मृत्यु की भयानक वास्तविकता का सच्चा जवाब नहीं है। केवल मसीहियत ही दुनिया को आमंत्रित करती है कि वे आएं और उस खाली कब्र को देखें।

सबसे पहले उस निमंत्रण को देने वाला एक स्वर्गदूत था। जब मसीह ऊपर से नीचे उतर आया था तो स्वर्गदूतों ने ही उसके देहधारण की घोषणा की थी, और अब जब मसीह नीचे से ऊपर आया तो स्वर्गदूतों ने (लूका 24:4) ही पुनरुत्थान की घोषणा की। वे छुटकारे की प्रक्रिया में बहुत रुचि रखते हैं क्योंकि उनका प्रियतम शुरू से अंत तक इसमें शामिल है।

सोचिए कि पतरस ने मसीह को इनकार करने के कारण क्या खो दिया था। सोचिए कि मत्ती और अन्य चेलों ने अपने अविश्वास के कारण क्या खो दिया था। यदि उन्होंने प्रभु के आने वाले विश्वासघात, मुकद्दमा, मृत्यु, गाढ़े जाने और पुनरुत्थान के बारे में बार-बार कहे गए कथनों को गंभीरता से लिया होता, तो वे अपनी गवाही देने के लिए न्यायालयों में उपस्थित होने और अपराध का विरोध करने के लिए कलवरी में उपस्थित होने के लिए पर्याप्त साहस जुटा पाते। वे पुनरुत्थान की सुबह कब्र के बाहर जागते रहते, मुर्दों में से जी उठे प्रभु का स्वागत करने वाले पहले व्यक्ति बनने के लिए उत्सुक होते। वे इतिहास की सबसे बड़ी घटना की प्रत्यक्षदर्शी रिपोर्ट देने में सक्षम हो सकते थे। इसकी बजाय खाली कब्र की खबर सबसे पहले स्वर्गदूतों द्वारा घोषित की गई, और शानदार सुसमाचार सबसे पहले उन विश्वासयोग्य स्त्रियों द्वारा पहुँचाया गया, जो अपने अविश्वास के बावजूद, कब्र पर सुबह-सुबह पहुँची थीं।

वह खाली कब्र प्रेरिताई प्रचार की आधारशिला बन गई। युवा कलीसिया ने यहूदी और अन्य-जातियों, यूनानी और बर्बर, बंधुआ और स्वतंत्र, अमीर और गरीब, बड़े और छोटे सभी को खाली कब्र, जी उठे मसीह पर विचार करने के लिए आमंत्रित किया। पौलुस ने अरियुपगुस (मंगल पहाड़ी) पर और राजा अग्रिप्पा के सम्मुख पुनरुत्थान का उपदेश दिया। पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन इसका प्रचार किया। "परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया" पौलुस के महान सुसमाचारीय लेखनी (रोमियों 10:9) का केंद्र बिंदु है।

स्वर्गदूत की घोषणा दरअसल अंधकार में ज्योति, मृतकों में से जीवन, निराश लोगों के लिए आशा, उद्धार का आश्वासन, और सुसमाचार का सार थी। इस समाचार के साहसिक प्रचार ने महासभा में बड़ी हलचल मचा दी।

ऐसे कठोर अविश्वासी, जो कभी विश्वास नहीं करेंगे, वे उस खाली कब्र से वापस क्रोधित होकर चले जाते हैं। वे इसके लिए अप्रमाणित सिद्धांतों का आविष्कार करते हैं। दुःखद सच्चाई यह है कि लोग अविश्वासी बने रहते हैं, इसलिए नहीं कि वे विश्वास नहीं कर सकते (क्योंकि मसीह के पुनरुत्थान का प्रमाण बहुत बड़ा है), बल्कि इसलिए कि वे विश्वास नहीं करना चाहते। मृत्यु पर मसीह की विजय के कठिन और असुविधाजनक सबूतों को दूर करने के महासभा के प्रयास से अधिक वह अनिच्छा कहीं भी अधिक स्पष्ट नहीं है।।

उन डगमगाते विश्वासियों ने "आओ, यह स्थान देखो" शब्द सुने, और खाली कब्र और जी उठे मसीह के प्रमाण ने उनमें एक नया विश्वास भर दिया, ठीक वैसे ही जैसे पिन्तेकुस्त ने चेलों में नया साहस भर दिया था। कब्र से ऊपर उठे मसीह और महिमा से नीचे आए एक सहायक ने कलीसिया और एक नई व्यवस्था को जन्म दिया।

3. एक आदेश (28:7-8)

क. एक प्रकाशन (28:7)

स्वर्गदूत ने उन स्त्रियों को आदेश दिया, "शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है; और देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है, वहाँ उसका दर्शन पाओगे, देखो, मैं ने तुम से कह दिया।"

गलील ही वह जगह थी जहाँ यह सब शुरू हुआ था। यहीं पर प्रभु बड़ा हुआ था, यहाँ उसने अपने चेलों को बुलाया था, यहाँ उसने अधिकांश चमत्कार किए थे, यहाँ उसके सबसे महान संदेशों का प्रचार किया गया था। अब वह गलील में ही सबसे पहले अपने चेलों से मुलाकात करेगा।

प्रेरितों का समूह अभी अस्त-व्यस्त था। चेलों में से एक मर चुका था; एक अभी भी इनकार के बोझ से झुका हुआ था; सभी डर में जी रहे थे; सभी भ्रमित थे। प्रभु समूह को फिर से संगठित करने और इसे फिर से नियुक्त करने का इरादा रखता था। वह उनसे एक पहाड़ पर मिलने वाला था और उन्हें नए सिरे से कलीसिया के केंद्र में ढालेगा, जिसका जन्म शीघ्र ही होने वाला था।।

ख. एक प्रतिक्रिया (28:8)

उन्हें मिले इस शानदार खबर के साथ, स्त्रियाँ अपने सुखद मिशन की ओर दौड़ पड़ीं। भय और बड़े आनन्द ने उनकी आत्माओं पर प्रभुत्व के लिए संघर्ष किया होगा - भय उस संदेशवाहक के कारण (उसके आश्वासनों के बावजूd) और आनन्द उस संदेश के कारण जो उसे सुनाया गया। वे इस प्रकाशन से अभिभूत हो उठी थीं कि प्रभु जी उठा है।

ख. प्रभु का प्रकट होना (28:9-10)

1. मुलाक़ात (28:9-10a)

क. जब वह स्त्रियों से मिला (28:9a)

फिर स्त्रियाँ स्वयं यीशु से मिलीं। मत्ती ने इस मुलाकात का आश्चर्यजनक संक्षिप्त विवरण दर्ज किया है।

यह तब हुआ जब वे "उसके चेलों को समाचार देने के लिये" जा रही थी कि प्रभु उन्हें मिला। यदि हम अधिक और महान् प्रकाशन चाहते हैं तो परमेश्वर की प्रकट इच्छा के प्रति तत्परता से आज्ञाकारिता के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

प्रभु का इरादा केवल सुनी-सुनाई बातों पर निर्भर रहने का नहीं था, भले ही स्रोत एक चमकता हुआ स्वर्गदूत ही क्यों न हो। स्वर्गदूतों का दिखना ध्यान देने योग्य तथ्य है, लेकिन हमारा सुसमाचार किसी स्वर्गदूत के वचन पर आधारित नहीं है, चाहे उसका चेहरा कितना भी चमकीला क्यों न हो या उसका आत्मविश्वास कितना भी साहसिक क्यों न हो। प्रभु ऐसे किसी मध्यस्थ को नहीं चाहता। हमारा विश्वास "स्वर्गदूतों के दर्शन" (लूका 24:23) से कहीं अधिक ठोस चीज़ पर आधारित होना चाहिए। यह स्वयं प्रभु के साथ व्यक्तिगत मुलाकात पर आधारित होना चाहिए। फिर भी, जब स्त्रियाँ अपने पास मौजूद ज्योति का अनुपालन कर रही थीं, तो उन्हें और अधिक दिया गया। परमेश्वर का हमेशा यही तरीका है।

ख. वह स्त्रियों से क्यों मिला (28:9b-10a)

प्रभु का स्त्रियों के सामने प्रकट होना सभी संदेह और भय को दूर करने के लिए था। स्वर्गदूत हमें भय के अवशेष के साथ छोड़ सकते हैं, लेकिन अगर हम प्रभु से प्रेम करते हैं तो वह कभी ऐसा नहीं करेगा। "सिद्ध प्रेम भय को दूर करता है" (1 यूहन्ना 4:18)। प्रभु ने कहा, "डरो मत" (मत्ती 28:10)।

"और देखो, यीशु उन्हें मिला और कहा; ‘सलाम’और उन्होंने पास आकर और उसके पाँव पकड़कर उस को दण्डवत किया" (28:9)। "सलाम" का अर्थ है "आनन्द मनाओ!" स्त्रियाँ आनंद से भरी थीं। इसलिए उसे तुरंत पहचानकर, वे उसके पैरों पर गिर पड़ीं। उन्होंने कीलों के उन निशानों को देखा, श्रद्धापूर्वक उसके पैरों को अपने हाथों में पकड़ा, उसकी पुनरुत्थानित देह की ठोस वास्तविकता को महसूस किया, विस्मय से भरकर झुकी, और अपने हृदय से उसकी आराधना की जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। स्वर्गदूत के वचन सच्चे थे - शानदार, आश्चर्यजनक रूप से सत्य थे। प्रभु वास्तव में जी उठा था!

2. संदेश (28:10b)

स्त्रियों के संदेह और भय को दूर करने के बाद, प्रभु ने स्वर्गदूत के निर्देश को दोहराया। उन्हें चेलों से कहना था कि वे गलील में उससे मिलें। चेलों को कुछ समय के लिए यरूशलेम से दूर चले जाने की आवश्यकता थी, क्योंकि अभी यह घृणा और द्वेष का एक बड़ा भण्डार था।

"मेरे भाइयों से जाकर कहो," उसने कहा। पहली बार प्रभु ने अपने चेलों को "भाइयों" कहा। उनकी गलतियों और असफलताओं के बावजूद, उनके संदेह और अव्यवस्था के बावजूद, उसने उन्हें "मेरे भाईयों" कहा। उसका अनुग्रह ऐसा है। मृत्यु, दफनाए जाने और पुनरुत्थान ने उसके हृदय को नहीं बदला। वह वही प्रेम करने वाला, धैर्यवान, क्षमा करने वाला, प्रोत्साहित करने वाला यीशु था। "वहाँ वे मुझे देखेंगे" उसका अंतिम हर्षित शब्द था।

II. झूठ बिखर गया (28:11-15)

दो समूह शहर में जल्दी से दाखिल होते हैं: स्त्रियाँ और पहरेदार। स्त्रियाँ जीत से अभिभूत थीं; वहीं पहरेदार भय से भरे थे। स्त्रियाँ इतिहास के सबसे महिमामय तथ्य के साथ दुनिया का सामना करने वाली थीं; जबकि

पहरेदार जल्द ही इतिहास के सबसे ज़बरदस्त झूठ के साथ दुनिया का सामना करने वाले थे। बड़ी ही कुशलता का परिचय देते हुए एक कलाकार के कौशल और प्रेरणा की प्रतिभा के साथ मत्ती उन दोनों को एक साथ लाया और कहा: "जब वे [मसीह की आज्ञाकारिता में स्त्रियाँ] जा रही थीं, तो देखो, पहरूओं में से कितने नगर में आए" (28:11)।

क. झूठ की ज़रूरत (28:11-12)

1. पुनरुत्थान की आधिकारिक रिपोर्ट (28:11)

भयभीत पहरेदारों ने जो खबर महासभा को सुनाई, उससे यहूदियों के धार्मिक अगुवे असमंजस्य में पड़ गए। एक अविश्वसनीय घटना घटी थी। एक या दो घंटे में यह खबर पूरे यरूशलेम में फैल जाएगी। उन्हें पुनरुत्थान के दावे का डर था और उन्होंने कब्र को किसी भी छेड़छाड़ से बचाने के लिए पिलातुस के पहरेदारों से उसे सुरक्षित कर लिया था। पहरूओं की खबर की सत्यता पर कोई संदेह नहीं था; अलौकिक रूप से कोई घटना घटी थी और कब्र अब खाली थी।

2. पुनरुत्थान पर आधिकारिक प्रतिक्रिया (28:12)

नासरत के यीशु के मामले में हस्तक्षेप करके महासभा ने एक बहुत बड़ी गलती की थी, लेकिन वे जिस रास्ते पर चल पड़े थे, वे अभी भी उस पर अड़े हुए थे। वे निश्चित रूप से मसीह के दावों को स्वीकार करने वाले नहीं थे या समय के इतिहास में सबसे बड़े अपराध के लिए खुद को दोषी मानने वाले भी नहीं थे। नहीं, इसलिए उन्हें एक कहानी गढ़नी होगी। लेकिन पहले उन्हें पहरेदारों की चुप्पी और उनका सहयोग सुनिश्चित करना होगा। महासभा यहूदा को एक गुलाम की कीमत पर खरीदने में सक्षम रही थी। उन पहरेदारों को खरीदने के लिए "बहुत सारा पैसा" चाहिए था, एक बहुत बड़ी रकम चाहिए थी। "हर आदमी की अपनी एक कीमत होती है" यह दुनिया की एक प्रसिद्ध व्यंगात्मक कहावत है। उन लोगों ने निश्चित रूप से इसकी कीमत चुकाई, और उनकी कीमत यकीनन बहुत अधिक थी।

ख. झूठ की प्रकृति (28:13-14)

1. इसमें निहित कमज़ोरी (28:13)

पहरेदारों को यह कहानी प्रचारित करने के लिए पैसे दिए गए थे कि जब वे सो रहे थे, तब प्रभु के चेले आए और उसकी देह चुरा कर ले गए। यह कितना कमज़ोर और मूर्खतापूर्ण झूठ था! क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि कोई गवाह अदालत में पेश होकर न्यायधीश और अदालत के सामने यह घोषणा करे, "सज्जनों, मैं खुद को उस घटना का विश्वसनीय गवाह मानता हूँ जिसका मैं वर्णन करने जा रहा हूँ क्योंकि जब यह हुआ तब मैं गहरी नींद में था"? कहानी बिल्कुल हास्यास्पद थी। अगर पहरेदार सो रहे थे, तो उन्हें कैसे पता चल सकता था कि क्या हुआ था?

2. इसकी आकस्मिक कमज़ोरी (28:14)

क. झूठ फैलाने वाले लोगों के दृष्टिकोण से (28:14a)

पहरेदार रोमी सैनिक थे। रोम के किसी सैनिक के लिए अपने काम के दौरान सोना या अपनी पहरेदारी की कोई वस्तु खोना मृत्युदंड के योग्य अपराध था। अगर यह कहानी सच होती, तो पहरेदार सबसे पहले इसका खंडन करते। वैसे भी, वे इस बात से घबराए हुए थे कि कहीं ऐसी कोई खबर हाकिम के कानों तक न पहुँच जाए। उन लोगों को यह भरोसा दिलाने के लिए याजकों की पूरी ताकत लगी कि उन्हें कोई नुकसान नहीं होगा, कि पिलातुस इस धोखे को स्वीकार करेगा, और महासभा यह सुनिश्चित करेगी कि वह इसे स्वीकार करे।

ख. झूठ की योजना बनाने वाले लोगों के दृष्टिकोण से (28:14b)

अगर चेलों ने शरीर चुराया था, तो महासभा या रोमी हाकिम ने उन चेलों को क्यों नहीं गिरफ्तार किया, उन पर मुकदमा क्यों नहीं चलाया, शव के ठिकाने के बारे में उनसे पूछताछ क्यों नहीं की और उन्हें चोरी करने, हाकिम की मुहर से छेड़छाड़ करने और कब्र से लूटने का दोषी क्यों नहीं ठहराया? पुनरुत्थान की खबर को इससे अधिक तीव्र गति से समाप्त करने वाला कुछ भी नहीं हो सकता था कि एक शरीर की पहचान नासरत के यीशु के रूप में की गई है। बेशक, कोई शव पेश करने के लिए वहाँ नहीं था।

महासभा के सदस्य मूर्ख नहीं थे। वे चतुर और चालाक लोग थे। लेकिन वे जो सबसे अच्छा कर सकते थे, वह था कि सत्य के विरुद्ध प्रचार अभियान चलाना। पुनरुत्थानित मसीह को देखे जाने और उसे छूने की बढ़ती खबरों के सामने, महासभा उस खाली कब्र पर सार्वजनिक शोरगुल से बचने के लिए केवल इस तरह का एक मूर्खतापूर्ण झूठ ही गढ़ सकता था। यह तथ्य कि उनका प्रचार पाँच मिनट की गंभीर जाँच को भी बर्दाश्त नहीं कर सकता, यह दर्शाता है कि मसीह के पुनरुत्थान से धार्मिक अगुवे किस हद तक स्तब्ध थे। वह जीवित था और वे इसे अस्वीकार नहीं कर सकते थे।

ग. झूठ की खबर (28:15)

कई वर्षों बाद लिखते हुए, मत्ती ने कहा, "सो उन्होंने रूपए लेकर जैसा सिखाए गए थे, वैसा ही किया; और यह बात आज तक यहूदियों में प्रचलित है।" हाँ, और आज तक भी। लोग भोले होते हैं, खासकर जब धार्मिक विश्वास और मान्यताएं शामिल हों। महासभा की थोड़ी राहत मिली जब विचारहीन भीड़ ने उस झूठ को स्वीकार कर लिया। जैसा कि प्रचारवादियों के बीच एक कहावत प्रचलित है, "यदि झूठ को बार-बार दोहराया जाएँ, तो लोग उस पर विश्वास करेंगे।" मृत देह की चोरी की "खबर" शुरू से ही यहूदी मसीही-विरोधी शिक्षा का हिस्सा बन गई थी। झूठ को दोहराना तब से पुनरुत्थान के तथ्य का खंडन करने का एक लोकप्रिय रब्बीनी तरीका रहा है।

III. प्रभु ने हस्तक्षेप किया (28:16-20)

किसी भी स्तर का झूठ इस तथ्य को नहीं बदल सकता कि यीशु को जीवित देखा गया था। उसने अपने आप को यरूशलेम में चेलों के सामने कई बार प्रकट किया (प्रेरितों 1:3), लेकिन मत्ती ने उन देखे जाने वाली घटनाओं पर अधिक ध्यान नहीं दिया। इसकी बजाय उसने गलील में हुई एक मुलाक़ात का वर्णन किया। यह मत्ती द्वारा चित्रित अंतिम दृश्य था।

प्रभु अपने चेलों को अपने जुनून की महिमा से परिचित कराने और अपने उद्देश्य की महानता के बारे में चेलों को आश्वस्त करने के लिए स्वयं आगे आया।

क. चेलों को अपने दुःखभोग की महिमा से परिचित कराना (28:16-17)

1. नियुक्ति (28:16)

वे पूर्व-निर्धारित समय पर गलील के एक पहाड़ पर मिले। हमें यह नहीं बताया गया कि वह कौन सा पहाड़ था, लेकिन शायद यह वही था जहाँ प्रभु ने अपना पहाड़ी-उपदेश दिया था। गलील की उस निर्जन भूमि में, जो समृद्ध गैर-यहूदी दुनिया और धूमिल हुई यहूदी दुनिया के बीच स्थित थी, शांतिपूर्ण वातावरण में और अपनी सेवकाई की यादों से भरे दृश्यों के बीच, प्रभु ने अपने चेलों के मन से किसी भी तरह के संदेह को दूर करने का प्रयास किया।

मत्ती ने केवल "ग्यारह चेलों" का उल्लेख किया, लेकिन संभवतः अन्य लोग भी वहाँ उपस्थित थे। यदि यह अवसर वही था जिसका उल्लेख पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:6 में किया है, तो पाँच सौ से अधिक लोगों ने प्रभु के यहाँ प्रकट होने को देखा था।

2. प्रकटीकरण (28:17)

मत्ती ने कहा, "उन्होंने उसका दर्शन" पाया। "उन्होंने उसे प्रणाम किया।" क्या इससे अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता था! हालाँकि, मत्ती को आगे यह भी जोड़ना पड़ा, "पर किसी किसी को सन्देह हुआ।" "संदेह" का अनुवाद किया गया मूल शब्द 'डिस्टाज़ो' है, जो केवल मत्ती में ही आता है - यहाँ और 14:31 में, जहाँ इसका इस्तेमाल शमौन पतरस के संदर्भ में किया गया जब वह पानी पर चला था, फिर अपना विश्वास खो दिया, यीशु की बजाय क्रोधित लहरों की ओर देखा, और डूबने लगा। पतरस को हाथ बढ़ाकर बचाने के बाद, प्रभु ने उससे कहा, "हे अल्प-विश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया? [डगमगाया, झिझका]?"

यह काफी अविश्वसनीय लगता है कि जी उठे मसीह के ठोस प्रमाणों के सामने आने पर भी कोई संकोच कर सकता था, लेकिन कुछ लोगों ने ऐसा ही किया। इस तरह के अल्प अविश्वास का एकमात्र स्पष्टीकरण हमारे अपने हठीले हृदयों में पाया जाता है।

ख. अपने उद्देश्य की महानता के बारे में चेलों को आश्वस्त करना (28:18-20)

1. उसकी सामर्थ (28:18)

प्रभु ने चेलों के सामने अपनी सामर्थ का एक दर्शन प्रस्तुत किया। उसने प्रभावी ढ़ंग से कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।" यहाँ "सामर्थ" का मूल अनुवाद 'एक्सौसिया' है, जो अधिकार या प्रदान की गई सामर्थ के साथ-साथ इसे उपयोग करने के अधिकार को भी संदर्भित करता है। इस संदर्भ में न तो "सामर्थ" और न ही "अधिकार" एक उपयुक्त अनुवाद है। जैसा कि प्रभु ने 28:18 में इसका उपयोग किया है, 'एक्सौसिया' का अर्थ है "पूर्ण अधिकार के सभी अधिकार और पूर्ण सामर्थ के सभी संसाधन।"

मसीह स्वर्ग में अपना पूर्ण अधिकार रखता है। करूब और सराफ़, सिंहासन और प्रभुताएँ, अविनाशी स्वर्गदूत, प्रकाश के पापहीन पुत्र - सबसे ऊंचे से लेकर सबसे निचले तक वे खुशी-खुशी उसके प्रभुत्व को

स्वीकार करते हैं। जब वे छोटे बच्चों के ऊपर मंडराते हैं, याकूब की सीढ़ी पर चढ़ते और उतरते हैं, अदृश्य दुनिया में स्थानीय कलीसियाओं के मामलों की देख-रेख करते हैं, उद्धार के वारिसों की सेवा टहल करते हैं, शैतान की सेना से लड़ते हैं, या मृत्यु के समय उपस्थित रहते हैं, तो वे उसके उस अधिकार और सामर्थ में आनन्दित होते हैं।

प्रधानताएँ और सामर्थ, इस संसार के अंधकार के हाकिम, आकाशमंडल पर की दुष्ट आत्माएँ, गिरे हुए स्वर्गदूत, दुष्टात्माओं का समूह, यहाँ तक कि स्वयं शैतान - सभी को मसीह द्वारा रोका या नियंत्रित किया जाता है। चाहे वे राष्ट्रों या साम्राज्यों के मामलों को नियंत्रित कर रहे हों, शैतानी पंथों का प्रसार कर रहे हों, बच्चों को पीड़ा दे रहे हों, लोगों को युद्ध के लिए उकसा रहे हों, अकाल और दुःख फैला रहे हों, लोगों को वासना के लिए उकसा रहे हों, युवाओं को नशीली दवाओं के साथ बांध रहे हों, वयस्कों को भ्रम में डालकर अंधा कर रहे हों, परमेश्वर के कार्य में बाधा डाल रहे हों, या गेहूँ के बीच जंगली दाने बो रहे हों, अंततः उन्हें प्रभु द्वारा ही रोका जाता है। वे क्रोध में अपने दाँत पीसते हैं, लेकिन वे उस व्यक्ति के अधिकार और सामर्थ के सामने झुकते जाते हैं जो उनसे कहता है, "बस यहीं तक, और आगे नहीं।"

मसीह पृथ्वी पर भी अपना पूर्ण अधिकार रखता है। राज्य बढ़ते और घटते रहते हैं, साम्राज्य बढ़ते और गिरते हैं, राष्ट्र आते और जाते रहते हैं, पीढ़ियाँ आती और जाती हैं, लेकिन पृथ्वी पर उसकी अनुमतिपूर्ण इच्छा के बाहर कुछ भी नहीं होता। अपनी समझ में सीमित होने के कारण, हम अक्सर दुश्मन की सामर्थ और विजय को देखकर इनकार में अपना सिर हिलाते हैं। हम उन कई चीज़ों की व्याख्या नहीं कर पाते जिनकी अनुमति उसकी सर्वज्ञता देती है, ऐसी चीज़ें जिनकी हम उम्मीद करते हैं कि उसकी सर्वसामर्थत्ता उन्हें रोक सकती है। हम बस इतना जानते हैं कि वह सिंहासन पर है, पृथ्वी पर स्वर्ग की तरह सारी सामर्थ और अधिकार रखता है, चाहे कुछ भी हो जाए।

2. उसकी योजना (28:19-20)

क. जाओ! (28:19-20a)

प्रभु ने अपने चेलों और हमारे सामने अपनी योजना का एक दर्शन भी रखा। इसे दो शब्दों में सारांशित किया जा सकता है, "जाओ" और "देखो।" सबसे पहले उसने कहा, "इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो" (28:19)। "इसलिये" शब्द पर ज़रा ध्यान दें। यह हमारे अधिकार को जोड़ता है - मसीह के उद्धार दिलाने वाले सुसमाचार के साथ मनुष्यजाति के राष्ट्रों पर धावा बोलने का हमारा अधिकार - स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु के रूप में उसके अधिकार के साथ। हमारा अधिकार किसी उच्चतर स्रोत से नहीं आ सकता। अविश्वासी लोग सुसमाचार को अन्य देशों में ले जाने के हमारे अधिकार को चुनौती दे सकते हैं, लेकिन हमारे पास सभी अधिकार है। हमारे पास एक ऐसा आदेश है जो किसी भी मानवीय राजनीतिक, धार्मिक या आर्थिक सामर्थ से परे है। हमें जाने के लिए नियुक्त किया गया है, और हमें जाना ही होगा, क्योंकि शैतान ने राष्ट्रों को अंधकार में रखे रखा है। लाखों लोग साम्यवाद, मानवतावाद, बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म, कन्फ्यूशीवाद, इस्लाम और धर्मत्यागी मसीहियत के झूठे पंथों के कारण अंधे हो गए हैं।

(1) जातियों तक पहुँचना (28:19)

प्रेरितों को उस सम्मोहक शब्द "जाओ" को समझने में बहुत समय लगा। लेकिन जब तक मत्ती गलील के पहाड़ पर मसीह के प्रकट होने की अपनी यादों को लिख रहा था, तब तक मसीह के 'जाने' के आदेश को गंभीरता से लिया जा चुका था, खासकर पौलुस द्वारा, जो प्रेरिताई समूह में देर से शामिल हुआ था। कलीसिया की सीमाएँ पहले से ही उसकी प्रेरक महत्वाकांक्षा, महान उदाहरण और अदम्य उत्साह के अंतर्गत दूर-दूर तक फैल रही थीं।

राष्ट्रों तक पहुँचने का काम अभी भी पूरा नहीं हुआ है। हज़ारों जनजातियों के पास अपनी मातृभाषा में बाइबल के एक या दो पृष्ठ भी नहीं है। अनगिनत लाखों लोगों ने अभी तक सुसमाचार नहीं सुना हैं। राष्ट्रों तक पहुँचने में जनसंचार और उच्च तकनीक का उपयोग करने की हमारी क्षमता के बावजूद, हम जन्म दर के साथ तालमेल नहीं रख पा रहे हैं।

(2) जातियों को सिखाना (28:20a)

राष्ट्रों को सिखाने का काम अभी भी पूरा होने से बहुत दूर है। बुलाहट दरअसल सुसमाचार प्रचार, नियुक्ति, शिक्षा देना और चेलेपन के लिए है। हमें अपने द्वारा मन-परिवर्तित हुए लोगों को यह सिखाना है कि "सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।" इसके लिए समय, धैर्य, ज्ञान और पूर्ण समर्पण की आवश्यकता है, जो कि मसीह से भरे जीवन के सुस्पष्ट उदाहरण द्वारा समर्थित है।

राष्ट्रों को सुसमाचार सिखाने के बाद, हमें उन्हें त्रिएक परमेश्वर के नाम पर बपतिस्मा देना है। बपतिस्मा एक आंतरिक अनुभव की बाहरी अभिव्यक्ति है, मसीह का तिरस्कार करने वाले संसार के सामने मसीह का साहसिक और अक्सर खतरनाक अंगीकार है। कई देशों में बपतिस्मा अपने अतीत से एक अंतिम विच्छेद है और अक्सर सताव, भेदभाव और मृत्यु को आमंत्रित करता है।।

ख. देखो! (28:20b-c)

हमें अकेले शहर की झुग्गियों, आर्कटिक की बंजर भूमि, भूमध्यरेखीय जंगलों, कॉलेज परिसरों या अपने पड़ोस में जाने के लिए नहीं बुलाया गया है। यदि "जाओ" ही एकमात्र शब्द होता तो यह कार्य असंभव होता, इसलिए प्रभु ने इसके साथ "देखो" को भी जोड़ा। उसने वादा किया, "और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।"

इस प्रतिज्ञा की विश्वसनीयता के कई प्रमाण युगों से परमेश्वर के मिशनरियों और शहीदों की सूची से प्राप्त किए जा सकते हैं, लेकिन हम यहाँ उनमें से केवल एक की गवाही पर ही विचार करेंगे। यह गवाही पौलुस की है, जो सभी प्रेरितों और राजदूतों में सबसे महान है, या जैसा कि शेक्सपियर कहते हैं, "उन सभी में सबसे महान रोमी था।" हम पवित्रशास्त्र में वर्णित चार दृश्यों से उसकी गवाही को समझने का प्रयास करेंगे।

पहले दृश्य में हम प्रेरित पौलुस को कुरिन्थ में अपने मिशनरी अभियान के बीच में देखते हैं। वह पहले से ही अपनी देह में यीशु मसीह के दास के दाग, कई पिटाई और अभाव के निशान धारण किए हुए है। यूरोप में उसे फिलिप्पी में जेल के काठ में ठोंका गया और सताया गया, बिरीया और थिस्सलुनीके में उस पर हमला किया गया और एथेंस में उसका उपहास उड़ाया गया। कुरिन्थ में ही उसे बड़े यहूदी समुदाय द्वारा ईशनिंदा और दंगाई अविश्वास का सामना करना पड़ा। आराधनालय के दरवाजे उसके विरूद्ध मजबूती से बंद कर दिए गए थे। कुरिन्थुस में इस कड़वे और लगातार होने वाले उत्पीड़न की कहानी में उज्ज्वल बिंदु के रूप

में आराधनालय के सरदार क्रिस्पुस, और युस्तुस नामक भक्त हैं, जिसके साथ पौलुस कुछ समय के लिए अस्थायी रूप से रहा। अपनी सेवकाई में शामिल आत्मिक आशीषों के बावजूद, पौलुस आशंकाओं से भरा हुआ लगता है। वह फिलिप्पी (प्रेरितों 16:23) में मिले "बहुत बेंत" से मुश्किल से ही उबर पाया, इसलिए हम उसके संदेह और निराशा की अच्छी तरह से कल्पना कर सकते हैं। (आखिरकार, बेंत की मार ने उसके शरीर पर किसी और की तरह ही पीड़ा पहुँचाई थी - वह किसी लोहे का नहीं बना था।) जब हमें लगता है कि क्या पौलुस अब और स्थिर खड़ा रह सकता है, तो प्रभु अपना वादा पूरा करता हैं। "और प्रभु ने रात को दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, मत डर, वरन कहे जा, और चुप मत रह। क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ: और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं" (प्रेरितों 18:9-10)।

दूसरे दृश्य में पौलुस यरूशलेम में वापस आता है। वहाँ के भाई मुश्किल से ही उस वित्तीय भेंट के लिए धन्यवाद कह पाते हैं जो उसने कई देशों में अपने अन्यजातीय परिवर्तित लोगों से एकत्रित करके लाया है। कलीसिया के पूर्वजों की ज़्यादा चिंता यह है कि वे उससे कहें कि वह यहूदी होने का सबूत देने के लिए अधिक आर्थिक बोझ उठाए और मंदिर में कुछ संस्कारों में शामिल हो। जब पौलुस के दुश्मन उसे पहचान लेते हैं तो मंदिर में दंगा भड़क उठता है, और उसे उस भीड़ से समय रहते बचा लिया जाता है जो उसे वहीं मार सकती थी। उसे बचाने वाले सैनिक उसे भीड़ के सामने गवाही देने देते हैं, लेकिन फिर से दंगा शुरू हो जाता है। समस्या की तह तक पहुँचने के लिए दृढ़ संकल्पित, रोमी सूबेदार पौलुस को "कोड़े मारकर जाँचने" का आदेश देता है (प्रेरितों 22:24)। सौभाग्य से पौलुस की रोमी नागरिकता उसे इस भयानकता से बचाती है और उसे महासभा के सामने गवाही देने का अवसर प्रदान करती है। फिर से हंगामा होता है और यह स्पष्ट हो जाता है कि यहूदी अधिकारी पौलुस को किसी भी तरह से मार डालना चाहते हैं। सैनिक उसे किसी तरह उन यहूदियों से छुड़ाते हैं और उसे किले के जेल में ले जाते हैं। "उसी रात प्रभु ने उसके पास आ खड़े होकर कहा; हे पौलुस, ढ़ाढ़स बान्ध; क्योंकि जैसी तू ने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी" (प्रेरितों के काम 23:11)। प्रभु ने अपना वादा पूरा किया।

तीसरे दृश्य में हम पौलुस को रोम के रास्ते पर एक जहाज़ में यात्रा करते हुए देखते हैं। वह अभी भी एक कैदी है और उसने कैसर की दोहाई दी है। वहाँ एक भयानक तूफ़ान पौलुस और जहाज़ पर सवार सभी लोगों के जीवन को ख़तरे में डाल देता है। जहाज़ हवा और लहर की दया पर निर्भर है। सभी दिशाएँ खो गई हैं और यात्रियों और चालक दल दोनों के लिए सारी उम्मीदें खत्म हो गई हैं। लेकिन पौलुस के पास प्रोत्साहन के कुछ शब्द हैं। वह उनसे कहता है, "क्योंकि परमेश्वर जिस का मैं हूँ, और जिस की सेवा करता हूँ, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा। हे पौलुस, मत डर; तुझे कैसर के साम्हने खड़ा होना अवश्य है: और देख, परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है" (प्रेरितों के काम 27:23-24)। प्रभु ने फिर से अपने वादे को पूरा किया है।

चौथे दृश्य में नीरो की दुष्टता मसीहियों पर बड़े पैमाने पर अत्याचार के रूप में सामने आई। मुक्त होने और फिर से गिरफ्तार होने के बाद, पौलुस को आखिरी बार रोम वापस लाया जाता है। महान प्रेरित को एक भयानक कालकोठरी में कैद कर लिया गया है। (कोई भी उस कालकोठरी से बच नहीं पाया और यहाँ तक कि कुछ कैदियों को चूहों ने जिंदा ही खा लिया।) पौलुस इस खबर से परेशान है कि उसके द्वारा स्थापित कई कलीसियाओं में बुराई फैल रही है। उसे ठंड लग रही है और बार-बार कोड़े खाने और तंग हालात के कारण उसकी शारीरिक कमज़ोरियाँ उसे परेशान कर रही हैं। पौलुस कुछ पढ़ने के लिए तरसता है, क्योंकि

वह लगभग वहाँ अकेला है। उसके कुछ विश्वासयोग्य सहायक रोम से दूर उसके द्वारा शुरू किए गए कार्य को पूरा कर रहे हैं। देमास जैसे अन्य कुछ लोगों ने उसे छोड़ दिया है। पौलुस को उसके बचे हुए मित्रों ने अकेले ही उस द्वेषपूर्ण अदालत का सामना करने के लिए छोड़ दिया है। (अदालत में उसकी पहली सुनवाई काफी कठिन थी क्योंकि तांबे के कारीगर (ठठेरे) सिकन्दर ने अधिकारियों में उसके विरूद्ध पक्षपातपूर्ण रवैया भर दिया था।) अब मृत्यु निश्चित है, लेकिन प्रभु ने एक बार फिर अपने वायदे को पूरा किया। पौलुस पूरे आत्म-विश्वास के साथ यह लिख पाता है, "मेरे पहिले प्रत्युत्तर करने के समय में किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, वरन सब ने मुझे छोड़ दिया था: भला हो, कि इस का उन को लेखा देना न पड़े। परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा, और मुझे सामर्थ दी: ताकि मेरे द्वारा पूरा पूरा प्रचार हो, और सब अन्यजाति सुन ले; और मैं तो सिंह के मुंह से छुड़ाया गया" (2 तीमुथियुस 4:16-17)। कुछ ही समय के बाद पौलुस को उस कालकोठरी से बाहर निकाला जाता है, उसका सिर काट दिया जाता है (परंपरा बताती है), और "महिमा में पदोन्नत किया जाता है।"

यीशु ने वायदा किया है, "और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।" डेविड लिविंगस्टन ने इसे इस प्रकार वर्णित किया है, "यह सबसे पवित्र और बड़े सम्मान से युक्त एक सज्जन का वचन है, जो सदा अटल है।"[2] और यह ऐसा ही है।